ज्ञानपीठ मूर्तिदेवी जैन ग्रन्थमाला : अपभ्रंश ग्रन्थांक–१६

महाकवि पुष्पदन्त विरचित

महापुराण

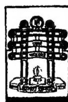
भाग–२

[नाभेयचरिउ उत्तरार्ध]

हिन्दी अनुवाद, प्रस्तावना तथा अनुक्रमणिका सहित

मूल-सम्पादक
डॉ. पी. एल. वैद्य

अनुवादक
डॉ. देवेन्द्रकुमार जैन, एम. ए., पी-एच. डी.
प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, शासकीय कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय
इन्दौर (म० प्र०)



भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन

वीर नि० संवत् २५०५ : वि० संवत् २०३६ : सन् १९७९
प्रथम संस्करण : मूल्य– चालीस रुपये

स्व. पुण्यश्लोका माता मूर्तिदेवीकी पवित्र स्मृतिमें
स्व. साहू शान्तिप्रसाद जैन द्वारा संस्थापित
एवं
उनकी धर्मपत्नी स्वर्गीया श्रीमती रमा जैन द्वारा संपोषित

भारतीय ज्ञानपीठ मूर्तिदेवी जैन ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमालाके अन्तर्गत प्राकृत, संस्कृत, अपभ्रंश, हिन्दी, कन्नड़, तमिल आदि प्राचीन भाषाओंमें उपलब्ध आगमिक, दार्शनिक, पौराणिक, साहित्यिक, ऐतिहासिक आदि विविध-विषयक जैन-साहित्यका अनुसन्धानपूर्ण सम्पादन तथा उसका मूल और यथासम्भव अनुवाद आदिके साथ प्रकाशन हो रहा है। जैन-भण्डारोंकी सूचियाँ, शिलालेख-संग्रह, कला एवं स्थापत्य, विशिष्ट विद्वानोंके अध्ययन-ग्रन्थ और लोकहितकारी जैन साहित्य-ग्रन्थ भी इसी ग्रन्थमालामें प्रकाशित हो रहे हैं।

●

ग्रन्थमाला सम्पादक
सिद्धान्ताचार्य पं. कैलाशचन्द्र शास्त्री
डॉ. ज्योतिप्रसाद जैन

●

प्रकाशक
भारतीय ज्ञानपीठ
प्रधान कार्यालय : बी/४५-४७, कॅनॉट प्लेस, नयी दिल्ली-११०००१
मुद्रक : सन्मति मुद्रणालय, दुर्गाकुण्ड मार्ग, वाराणसी-२२१००१

●

स्थापना : फाल्गुन कृष्ण ९, वीर नि० २४७०, विक्रम सं० २०००, १८ फरवरी १९४४

भारतीय ज्ञानपीठ : संस्थापना 1944



मूल प्रेरणा
दिवंगता श्रीमती मूर्तिदेवी जी
मातुश्री श्री साहू शान्तिप्रसाद जैन



अधिष्ठात्री
दिवंगता श्रीमती रमा जैन
धर्मपत्नी श्री साहू शान्तिप्रसाद जैन

JÑĀNAPĪTHA MŪRTIDEVĪ GRANTHAMĀLĀ : Apabh. Grantha No. 16

MAHĀKAVI PUṢPADANTA'S

MAHĀPURĀṆA

VOL. II

[NĀBHEYACARIU]

With
Introduction, Hindi Translation and Index of the verses etc.

Text Edited by
Dr. P. L. VAIDYA

Translated by
Dr. DEVENDRA KUMAR JAIN, M. A., PH. D.
Professor, Department of Hindi, Govt. Arts
and Commerce College,
INDORE



BHARATIYA JNANPITH PUBLICATION

VĪRA NIRVĀṆA SAṀVAT 2505 : V. SAṀVAT 2036 : A. D. 1979
First Edition : Price Rs. 40/-

BHĀRATĪYA JÑĀNAPĪTHA

MŪRTIDEVĪ JAIN GRANTHAMĀLĀ

FOUNDED BY

LATE SAHU SHANTI PRASAD JAIN

IN MEMORY OF HIS LATE MOTHER SHRIMATI MURTIDEVI

AND

PROMOTED BY HIS BENEVOLENT WIFE

LATE SHRIMATI RAMA JAIN

IN THIS GRANTHAMĀLĀ CRITICALLY EDITED JAINA ĀGAMIC, PHILOSOPHICAL, PURĀṆIC, LITERARY, HISTORICAL AND OTHER ORIGINAL TEXTS AVAILABLE IN PRAKRIT, SANSKRIT, APABHRMŚA, HINDI KANNAḌA, TAMIL, ETC., ARE BEING PUBLISHED IN THEIR RESPECTIVE LANGUAGES WITH THEIR TRANSLATIONS IN MODERN LANGUAGES.

ALSO

BEING PUBLISHED ARE

CATALOGUES OF JAINA-BHAṆḌĀRAS, INSCRIPTIONS, STUDIES ON ART AND ARCHITECTURE BY COMPETENT SCHOLARS AND ALSO POPULAR JAINA LITERATURE.

●

General Editors

Siddhantacharya Pt. Kailash Chandra Shastri
Dr. Jyoti Prasad Jain

●

Published by

Bharatiya Jnanpith

Head Office : B/45-47, Connaught Place, New Delhi-110001

●

Founded on Phalguna Krishna 9, Vira Sam. 2470, Vikrama Sam. 2000, 18th Feb., 1944

स्वर्गीय सेठ जिनवरदासजी फौजदार

होशंगाबाद (मध्य प्रदेश)

की पुण्य स्मृति को

जो, मेरे लिए सम्बन्धी होने से अधिक आत्मीय मित्र थे। सम्पन्न होते हुए भी जिनका निजी एवं सार्वजनिक जीवन सादा और साफ-सुथरा था, जो अड़तालीस वर्ष की वय में ८ फरवरी १९७७ को अचानक, भरा-पूरा परिवार छोड़कर इस दुनिया से विदा हो गये।

—देवेन्द्रकुमार जैन

पुरोवाक्

महाकवि पुष्पदन्त द्वारा अपभ्रंशमें विरचित महापुराणके नाभेय चरितके डॉ. देवेन्द्रकुमार जैनके हिन्दी अनुवादका यह दूसरा खण्ड है। वैदिक मान्यताके विपरीत जैन पौराणिक मान्यताके अनुसार जिन भरतके नामपर इस देशका नाम भारत पड़ा वे प्रथम तीर्थंकर ऋषभनाथके पुत्र थे। इस खण्डमें दिग्विजय-के बाद प्रथम चक्रवर्ती भरतके द्वारा प्रवर्तित समाज और राज्य-व्यवस्थाओंके वर्णनके साथ प्रमुख पात्रोंके पूर्व और उत्तर भवोंका वर्णन है। काव्यके अन्तमें सभी प्रमुख पात्र तप और वैराग्यके द्वारा मोक्ष प्राप्त करते हैं।

प्रस्तुत नाभेय चरित—महापुराणका महत्त्वपूर्ण अंश होते हुए भी—अपने आपमें सम्पूर्ण चरितकाव्य है, जो तीर्थंकर ऋषभनाथके चरितके द्वारा बताता है कि मानव संस्कृतिका मूल कर्म है। कर्ममूलक भोग उसका एक पक्ष है और दूसरा पक्ष है रागद्वेषसे मुक्त होते हुए अपने पूर्ण आध्यात्मिक व्यक्तित्वका विकास करना। राग-विरागके ताने-बानेसे बुने हुए मानव जीवनमें कर्म और त्याग दोनों संतुलन रखते हैं। ऋषभ-के चरितमें जिस कर्ममूलक वीतरागताका क्रमशः विकास होता है उसकी तुलना गीताके अनासक्त कर्म-योगसे की जा सकती है। ऋषभके निर्वाण प्राप्त होनेपर कहे गये ये शब्द, "मा मोहें तुहुं सचहि दुकम्मु" (37. 24. 9.) "तुम मोहके द्वारा दुष्कर्मका संचय मत करो" अनायास गीताका स्मरण दिला देते हैं, "कुतस्त्वा कश्मलमिदं विषमे समुपस्थितम् (2. 2)।" दोनोंमें जो असमानता है वह दो कालोंकी असमानता है। कर्ममूलक मानव संस्कृतिके प्रवर्तक तीर्थंकर ऋषभनाथ त्यागमूलक आध्यात्मिक मूल्योंके प्रतिष्ठाता भी थे। वे श्रीकृष्णसे पहले हुए बताये जाते हैं। प्रवृत्ति और निवृत्तिके द्वन्द्व तथा संन्यासमें पाखण्डके प्रवेशके कारण समाज व्यवस्थामें आयी विषमताको देखते हुए गीताकारने अनासक्तिकर्मयोगके द्वारा समाजको सन्तुलित किया और कहा कि फलकी आसक्तिसे शून्य कर्म, फलकी आसक्तिपूर्ण संन्याससे लाख गुना अच्छा।

महाकवियोंकी रचनाओंमें हमारे इतिहासके विभिन्न युगोंकी प्रवृत्तियोंका संवेदनशील विश्लेषण है। ऊपरसे भिन्न नामों और रूपोंवाली इन रचनाओंकी मूल प्रवृत्ति और चेतना एक है। मैं आशा करता हूँ कि वर्तमान पीढ़ी तुलनात्मक अध्ययन द्वारा एकताके उस मूल स्वरको खोजेगी जिसमें दर्शन और संस्कृतिकी आत्मा है तथा उसे अपने जीवनमें आकार देकर काव्यके महत्त्वपूर्ण प्रयोजनको सफल बनायेगी।

देवेन्द्र शर्मा
भूतपूर्व कुलपति, गोरखपुर विश्वविद्यालय
एवं कुलपति, इन्दौर विश्वविद्यालय
इन्दौर

इन्दौर,
12 मई 1979.

भूमिका

वर्ण व्यवस्था

प्रस्तुत खण्ड कविके 'नाभेय चरिउ' का उत्तरार्ध है जिसमें दिग्विजयके बाद, एक चक्रवर्ती सम्राट्के रूपमें भरतके शासनसे लेकर तीर्थंकर ऋषभ आदिके निर्वाण तकका कथानक सम्मिलित है। चूँकि ऋषभ तीर्थंकर, कर्ममूलक संस्कृति के आदि संस्थापक हैं। उनके द्वारा स्थापित समाज-व्यवस्था और प्रशासन तन्त्रको भरत विस्तार करता है। महापुराणके अनुसार ऋषभने क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र—तीन वर्णोंकी स्थापना की थी। 'ब्राह्मण' वर्ण की स्थापना बादमें उनके पुत्र चक्रवर्ती भरतने की। वैदिक मतके अनुसार ब्राह्मणोंका जन्म सबसे पहले ब्रह्माके मुखसे हुआ। यह बात दिलचस्प है। एक दिन भरत सोचता है कि दानके बिना धन शोभा नहीं पाता, उसी प्रकार जिस प्रकार हिमसे आहत कमलवन। प्रशासन तन्त्रके द्वारा संचित धनकी शोभा बढ़ानेके लिए भरत बुद्धिमान् सुपात्रोंकी खोजकर उन्हें दान देता है। उसका कहना है कि धन मरनेपर एक भी कदम साथ नहीं जाता।

"धणु मुयहो पउ वि ण गच्छइ" । 19/1

ब्राह्मण कौन?

वह दीनोंके उद्धारमें धनकी सार्थकता मानता है। भरत क्षत्रियोंको बुलवाता है और उनमें जैनधर्मके नियमोंका पालन करनेवाले धार्मिक क्षत्रियको ब्राह्मण घोषित करता है। ब्राह्मणकी परिभाषा करते हुए भरत दूसरी बहुत-सी बातोंके अलावा कहता है: जो तिल कपास और द्रव्य विशेषोंको होम कर ग्रहोंको प्रसन्न करता है, पशु और जीवको नहीं मारता, मारनेवालोंको मना करता है, जो स्व और परको समान समझता है। (वस्तुतः यह कविके समयके विचारोंकी झलक है जब सामन्तवाद अपनी चरम सीमा पर था)। कविके समय ऐसे लोगोंको जैनदीक्षा देनेकी प्रथा थी जो हिंसासे विरत थे और जैन तीर्थंकरोंमें श्रद्धा रखते थे। उन्हें न केवल वर्णाश्रममें सर्वश्रेष्ठ घोषित किया गया अपितु उन्हें सुन्दर चरित्रसम्पन्न कन्याएँ अलंकृत करके दी गयीं, उन्हें श्री-सुखसे भरपूर परतीर दिये गये, पानीसे सिंचित जमीनें दी गयीं, उन्हें मणि, रत्न, मुकुट, कटिसूत्र, कड़े, घड़े-भर दूध देनेवाली गायें, देशान्तर करसहित धरती अग्रहार नगर आराम ग्राम सीमाएँ और सरोवर प्रदान किये गये। 19/7.

ऋषभकी आलोचना

लेकिन राजा भरत खोटा सपना देखता है और उसका फल पूछनेके लिए तीर्थंकर ऋषभके पास जाता है। और दुःस्वप्नके साथ 'ब्राह्मण वर्ण'के निर्माणपर उनकी राय जानना चाहता है। ऋषभ भरतके कार्यका समर्थन नहीं करते। वह कहते हैं—"हे पुत्र, तुमने यह पापकार्य क्यों किया, क्योंकि द्विजवंश कुत्सित न्याय और नाशका कारण होगा? वे पापोंका समर्थन करेंगे" 19/9. भविष्य कथनमें वह भावी आदि महापुरुषोंके होनेकी घोषणा करते हैं। उनके अनुसार दुषमाकालमें उन्हीं सब बुराइयों, उत्पात, नैतिक पतन और अशान्तिका बोलबाला होगा, जिनका उल्लेख हिन्दू पुराणोंमें कलियुगके नामसे मिलता है।

ब्राह्मणोंके विषयमें ऋषभ जिन कहते हैं :

ये लोग (ब्राह्मण) पशु मारकर उसका मांस खायेंगे । यज्ञमें रमण करेंगे, स्वच्छन्द क्रीड़ा करेंगे, मधुर सोमपान करेंगे । पुत्रकी कामना करनेवाली परस्त्रीको ग्रहण करेंगे । दूसरों को अपनी पत्नी देंगे ? मद्यपान करते हुए भी दूषित नहीं होंगे । प्राणिवधसे भी दूषित नहीं होंगे । वे जो करेंगे उसीको धर्म कहेंगे । वे शून्यागारों, वेश्याकुलों और पापोंसे अन्धे राजकुलोंके कर्मको धर्म कहेंगे ! हे पुत्र, वहाँ मैं पापका क्या वर्णन करूँ ? वे गाय और आगको देवता कहेंगे । पृथ्वी और पवनको देवता कहेंगे । मांसके नित्य भोजनको व्रत कहेंगे । वे दूसरे-दूसरे पुराण लिखेंगे—देवोंके द्वारा यह किया गया । स्वयं अपने कुलोंको चाहकर धीवरीपुत्र (व्यास) और गर्दभी पुत्र (दुर्वासा) जैसे कपट-आगमोंका करनेवालोंको परम ऋषित्वकी संज्ञा प्रदान की जायेगी । 19/10.

ऋषभ जिन यह भी घोषित करते हैं कि कलिकालमें जैन मुनियोंको मनःपर्यय और अवधिज्ञान होगा । 19/12. और यह कि जैन मुनि भी कषाय बाँधनेवाले होंगे । 19/13.

भावलिंगी भरत

अपने पिता तीर्थंकर ऋषभसे स्वप्नफल और उपदेश सुनकर भरत अयोध्या लौटकर जिन-प्रतिमाका अभिषेक करता है । उसका विश्वास है कि जनपद राजाका अनुकरण करते हैं :

'रायाणुवट्टि जगि संचरइ
जिह णरवइ तिह जणवउ' 28/

भरत भावलिंगी है, और भारतेश्वर होकर भी जिनवरके धर्मका आचरण करता है । वह रोज यह अनुभूति करता है :

"होउ होउ रायत्तें गंथें हउं मुणिवरु परिवेढिउ वत्थें ।
अणु दिणु इय झायंतहु कयरु व उड्डिवि जंति रायपरमाणु ॥ 28/2.

हो हो, राज्यत्व और परिग्रह । मैं मुनिवर हूँ, पर वस्त्रोंसे घिरा हुआ । प्रतिदिन यह ध्यान करते हुए उसके (भरत के) रागपरमाणु धूलके समान जाने लगते हैं ।

राजनीतिशास्त्र

भरतका राजनीति विज्ञान यह है कि जिसमें शत्रु के द्वारा मन्त्रभेदन न हो, तलवारसे जिसका प्रताप दूर तक फैलता है : जो प्रातः परमात्माकी उपासना कर न्यायशासनमें मन लगाता है, प्रजाके आचरणकी चिन्ता करता है, अधिकारियोंको नियोगमें लाता है, विभिन्न क्रियाओंसे लोगोंका आदर करता है, शत्रुमण्डल-में चर भेजता है, राज्यकार्य से निवृत्त होकर घरमें स्वच्छन्द विहार करता है, भोजनके उपरान्त नृपगोष्ठीमें रहता है, घड़ीके आघातसे तीसरे प्रहरका ज्ञान होनेपर, विनोदमें वेश्याओंके साथ क्रीड़ाविलास करता है ।

पहु अच्छइ वारविलासिणिहि सहुं कीलाइ विणोएं । 28/3.

कविके इस कथनमें भरतका चरित्र एक प्रतीक है, जिसके माध्यमसे कवि अपने समयके सामन्त राजाओंके चरित्र की गिरावटका सांकेतिक वर्णन करता है, उक्त कथनकी यही व्याख्या की जा सकती है । नहीं तो, जो चक्रवर्ती सवेरे यह ध्यान करे कि मैं मुनिवर हूँ, वस्त्रोंसे लिपटा, उसी दिन शामके तीसरे पहर वारविलासिनियोंके साथ क्रीड़ा करे, इन दो बातोंमें संगति बैठाना असम्भव है, एक समाधान यह भी दिया जा सकता है कि वस्तुतः यह दसवीं सदीके भारतीय सामन्तवादी सत्ता पुरुषोंकी यथार्थ स्थितिका अंकन है जिसमें वीर लोग कभी एक कानसे युद्धकी ललकार और दूसरे कानसे नूपुरकी झंकार सुननेके आदी थे । पुष्पदन्तके समय सवेरे परम वीतरागताकी अनुभूति और शामको वारवनिताओंके साथ विलास ।

पुष्पदन्तका कहना है भरत सभी शास्त्रोंका जानकार था। कवि भरतको मन्त्र-तन्त्र और संगीत का आविष्कारक मानता है। उस भरतके समान राजा न हुआ है—और न होगा—

"तहु भरहहु सरिसु महाणिवइ
जगि ण हुयउ ण होसइ।" 28/4.

भरत राजाओंके पाँच प्रकारके चारित्र्यका उल्लेख करता है। और कहता है कि जिनवर ऋषभ क्षत्रिय कुलके विधाता हैं। 28/4-5/ वह दस लक्षण धर्मका कथन करता है! वह राजाके धर्मका आचरण अनिवार्य मानता है।

पुष्पदन्त भरतके मुखसे यह महत्त्वपूर्ण कथन करवाते हैं—

"णिक्कारणु मारणु जो राणउ
मिसु मंडिवि हलहर संघायहं
णिद्दोसहं दिय-वणिहिं वरायहं।
वुड्ढणारि डिंभय संतावणु
जो वण हरण करइ भीसावणु।
जणणीसास सिहिहिं सो डज्झइ
अण्णु वि दुक्किय कम्मं बज्झइ।
लग्गइ ण जियइ दुक्खहुयासइ
ण वसइ देसु विसइ परदेसइ।" 28/8.

जो राजा अकारण बहाना बनाकर कृषक समूहों, बेचारे ब्राह्मण, बनियोंको मारनेवाला, वृद्ध स्त्रियों और बच्चो को सतानेवाला है और भीषण वनका अपहरण करनेवाला ह वह लोगो की आहोंकी ज्वालामें जल जाता है, तथा पापकर्मसे लिप्त होता है। लगी हुई दुःखकी ज्वालासे जीवित नहीं रहता। वह देशमें नहीं रह सकता, उसे परदेश जाना पड़ता है। पुष्पदन्तसे छह सौ वर्ष बाद होनेवाले महाकवि तुलसीदास कहते हैं—

"तुलसी आह गरीब की कबहुँ न खाली जाय।
मुए चाम के योग तें लोह भस्म हुई जाय॥"

पुष्पदन्तने राजाके पाँच चारित्र्य (करने योग्य काम) का उल्लेख किया है। उसका पहला काम है अपने कुलकी रक्षा करना। दूसरा काम है, इसके लिए शुद्ध आचरण होना जरूरी है। राजाको अपना विवेक शुद्ध रखना चाहिए। मिथ्या क्रीड़ाओंसे राजाका विवेक चला जाता है अतः उसे अरहन्तोंकी शिक्षाएँ ग्रहण करनी चाहिए।

'णासइ णिवमइ मिच्छारंगें कुगुरु कुदेव कुलिंगि पसंगें' 28/6.

तीसरे, राजाको धर्माचरण करना चाहिए, प्रजाका निरीक्षण करना चाहिए; उसे न्यायका पक्ष लेना चाहिए। 28/8.

राजकुलका अस्तित्व

राजकुलकी सत्ताके विषयमें कविका कहना है कि भारतमें राजाओंके द्वारा राजकुल नष्ट किये जाते रहे हैं और समय-समयपर जिनवर उसकी स्थापना करते रहे हैं। इसलिए वह सादि-अनादि होकर भी, उत्पन्न हुआ दिखाई देता है। इस प्रकार बीजांकुर न्यायसे कुल चला आ रहा है।

"साइ अणाइ वि दीसइ जायउ बीयंकुरकमेण कुलु आयउ
भरहेरावएहिं कुलु खिज्जइ कालि कालि जिणणाहहिं किज्जइ।" 28.5.

भरहेरावएहिं पदके दो अर्थ सम्भव हैं—भरत और ऐरावत क्षेत्रोंमें अथवा भरत क्षेत्रके राजाओं-के द्वारा।

अन्तमें भरत चक्रवर्ती कहता है :

"जिह गोवउ पालइ गोमंडलु तिह पालइ गोवइ गोमंडलु।" 28.8.

जिस तरह ग्वाला गायोंके मण्डलका पालन करता है उसी तरह राजा भूमिमण्डलका पालन करता है।

कृपणका चित्रण

जिसके पास धन नहीं है, उसके कंजूस होने न होनेका प्रश्न नहीं उठता, लेकिन जो धन होते भी खर्च नहीं करता उसकी भरत आलोचना करता हुआ कहता है।

कंजूस व्यक्ति न नहाता है, न लेपन करता है, न वस्त्र पहनता है, वह सघन-स्तन स्त्रियोंको भी नहीं मानता। सिरपर रखे हुए जौ के डंठलोंके गुच्छोंवाले धान्यकण तथा द्रोणीभर अलसीका तेल रखता हुआ वह स्वजनोंको निकाल बाहर करता है। उसके मनमें निरन्तर इतना लोभधन होता है कि बड़े त्योहारके दिन भी दीनकी तरह खाता है। लोगोंका मनोरंजन करनेवाले पात्रको हाथमें लेकर नगरमें घूम-घूमकर ऋण माँगता है। एक सड़ी सुपारी इस तरह खाता है कि एक ही सुपारीमें पूरा दिन बीत जाये।

'णिव्वरयइ पूयफलु खंति किह एक्केण जि रवि अत्थवइ जिह' 19-1

वह अन्धेरे एकान्तमें धन टटोलता रहता है।

"बंधइ मेल्लइ पुणु पुणु मवइ। वसु गुज्झ पवेसहिं पुणु ठवइ॥
सा सट्ठि ण पूरइ किह भरमि। मणि जूरइ काइं दइव करमि॥
लोहिट्ठु दुट्ठु पाविट्ठु चलु। पाहुणयहु उत्तरु देइ खलु॥
घत्ता—गेहिणि गय गामहो इच्छिय कामहो मणु ण भल्लिइ भिज्जइ।
मज्झ वि दुक्खइ सिरु तुहुँ आयउ घरु भणु एवहिं कि किज्जइ॥"

धन छोड़ता है, बार-बार मापता है। धनको गुप्त स्थानमें फिर रखता है। वह साठकी संख्या पूरी नहीं होती किस प्रकार उसे भरा जाए? मनमें अफसोस करता है कि हे दैव, क्या करूँ? दुष्ट-पापी-लोभी व्यक्ति बहुत चंचल होता है। वह दुष्ट अपने अतिथिसे कहता है—"पत्नी अपने प्रिय गाँवको गयी है और मेरा मन जैसे भालोंसे छिदा जा रहा है, मेरा सिर भी फटा जा रहा है। तुम घर आये हुए हो? मेरी समझमें नहीं आ रहा है।" 19-3.

जिनभक्ति—

खराब सपने देखनेके बाद भरत ऋषभ जिनके दर्शन करनेके लिए कैलास पर्वतपर जाता है, उनकी स्तुति करते हुए कहता है—

तुम चिन्तामणि कल्पवृक्ष हो, तुम अमृतमय सरस रसायन हो, कामधेनु और अक्षयनिधि हो, तुम पुरुषोत्तम और लोगोंकी परमनिधि हो; तुम सिद्धमन्त्र और सिद्ध औषधि हो। इसके बाद नामका महत्त्व बताया गया है।

"तुह णामें णउ भक्खइ अहि वि।
तुह णामें णासइ मत्तकरि
कउं दंतु वि थक्कइ णरहु हरि।
तुह णामें हुयवहु णउ डहइ
परबलु गय पहरणु भउ वहइ,
तुह णामें संतोसिय खलउ
तुट्टेवि जंति पयसंखलउ।
तुह णामें सायरि तरइ णरु,
ओसरइ कोहु कंदप्प-जरु।
तुइ णामें केवल किरणरवि
णीरोय होंति रोयाउर वि 19/8

भरतके इन उद्गारोंमें भक्तामरस्तोत्रकी छाया स्पष्ट रूपसे है कहीं-कहीं अक्षरशः अनुवाद है। एक उदाहरण देखिये :—

"मत्तद्विपेन्द्र-मृगराज-दवानलाहि-
संग्राम-वारिधि-महोदर बंधनोत्थम्।
तस्याशु नाशमुपयाति भयं भियेव
यस्तावकं स्तवमिमं मतिमानधीते ॥" भक्ता० 46

रक्तेक्षणं समदकोकिलकंठनीलं
क्रोधोद्धतं फणिनमुत्फणमापतन्तम्।
आक्रामति क्रमयुगेन निरस्तशङ्क-
स्त्वन्नामनागदमनी हृदि यस्य पुंसः ॥" भक्ता० 41

श्रीपालको आगमें-से निकलनेपर कविकी प्रतिक्रिया इस प्रकार है—

जिनवरको स्मरण करनेवालोंको नाग नहीं खाता। विषसे दुर्मद नाग सामने नहीं आता। तलवारों के संघर्षसे उत्पन्न अग्निवाले युद्धमें जिनका नाम स्मरण करनेवालोंको अच्छेसे अच्छे योद्धा देखकर भाग जाते हैं ? 33-11

यह भाव भक्तामरस्तोत्रके श्लोक 39-40 मे देखा जा सकता है।

ऋषभदेवके महानिर्वाणपर भरतके उद्गारोंमें उसकी मनोदिशा देखी जा सकती है—

'हे जिन, आपके बिना नेत्र अन्धे हैं। अशेष दिशाएँ सूनी हैं। प्रजा हाथ उठाये रो रही है। हे विश्वरूपी बालकके पिता, तुम मेरे पिता हो, तुम्हारे बिना कलाविकल्प कौन बतायेगा ? तुम्हारे बिना इष्ट प्रजाका पालन कौन करेगा ? महान् तपश्चरण निष्ठा कौन सहन करेगा ? तुम्हारे बिना तत्त्वभेद कौन जानेगा ? हे देव, तुम्हारे बिना देवाधिदेव कौन होगा ? हे स्वामी, तुम्हारे बिना यह त्रिलोक अनाथ है।'

"पइं विणु जिण अंधइं लोयणइं
दिसउ असेसउ सुण्णियउ।
उब्भिवि हत्थ ओम्माहियउ
पयउ वरायउ रुण्णियउ ॥" 37-23

तुहुं महु बप्पु अगंडियबप्पु
पइं विणु को कहइ कलावियप्पु।
पइं विणु को पालइ दट्ठु सिट्ठु
को विसहइ गुरु तवचरण-णिट्ठु
पइं विणु को जाणइ तच्चभेउ
को होइ देव देवहिं वि देउ।
पइं विणु अणाहु सामिय तिलोउ 37-24

मेघस्वर (जयकुमार) सुन्दर वाणोमें जिनवरकी स्तुति करता है। स्तुतिमें संसारको वृक्षका रूप देते हुए जयकुमार कहता है कि यह संसाररूपी वृक्ष मिथ्यात्वके बीजसे उत्पन्न है, जो मोहकी जड़ोंसे फैला हुआ है, चार गतियाँ जिसके स्कन्ध हैं, और सुखकी आशाएँ ही शाखाएँ हैं, पुत्र-कलत्र इसके प्रारोह हैं। (तना हैं), शरीररूपी पत्तोंका यह त्याग-ग्रहण करता रहता है। पुण्य-पाप इसके फूल हैं। इस प्रकार सुख-दुःखरूपी फलोंकी श्रीसे परिपूर्ण इस संसारवृक्षपर इन्द्रियरूपी पक्षी बैठे हुए हैं, ऐसे संसारवृक्षको अपनी ध्यान-अग्निसे भस्म कर देनेवाले हे जिन, आपकी, जय हो।

"बहुमिच्छत्त-बीय उप्पण्णउ। मोह विसाल मूलु वित्थिण्णउ ॥
चउगइ खंधु सुहासासाहउ। पुत्तकलत्तलुलिय पारोहउ ॥
गहिय मुक्क बहुविह तणु पत्तउ। पुण्णपाव कुसुमेहिं णिउत्तउ ॥
सोक्ख दुक्ख फल सिरि-संपण्णउ। इंदिय पक्खि उलहिं पडिवण्णउ ॥"

घत्ता—इय भवतरु झाण-हुयासणेण पइं दड्ढउ परमेसर।
जिण जम्मि-जम्मि महुं तुहुं सरणु जय-जय जिय वम्मीसर ॥ 28-37

प्रकृति या संसारका स्वरूप समझानेके लिए वृक्षका रूपक बहुत पहलेसे प्रयुक्त है। श्वेताश्वतर उपनिषद्में उल्लेख है।

"द्वा सुवर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्षं परिषस्वजाते,
तयोरन्य. पिप्पलं स्वाद्वत्ति अनश्नन्यो अभिचाकशीति।"

दो सुन्दर पंखोंवाले साथ-साथ रहनेवाले मित्र पक्षी समान वृक्ष (प्रकृति) पर बैठे हुए हैं। उनमें-से एक पीपलको स्वादसे खाता है और दूसरा उसे नहीं खाता हुआ ही प्रकाशमान है ॥

भगवद्गीतामें संसाररूपी वृक्षकी कल्पना इस प्रकार है—

ऊर्ध्वमूलमधःशाखमश्वत्थं प्राहुरव्ययम्।
छन्दांसि यस्य पर्णानि यस्तं वेद स वेदवित् ॥
अधश्चोर्ध्वं प्रसृतास्तस्य शाखा गुणप्रवृद्धा॰विषयप्रवालाः ॥
अधश्च मूलान्यनुसंततानि कर्मानुबन्धीनि मनुष्यलोके ॥ 15-1,2

न रूपमस्येह तथोपलभ्यते नान्तो न चादिर्न च संप्रतिष्ठा।
अश्वत्थमेनं सुविरूढमूलमसङ्गशस्त्रेण दृढेन छित्वा।
ततः पदं तत्परिमार्गितव्यं यस्मिन्गता न निवर्तन्ति भूयः।
तमेव चाद्यं पुरुषं प्रपद्ये यतः प्रवृत्तिः प्रसृता पुराणी ॥ 15-3,4

श्रीकृष्ण भगवान् कहते हैं—हे अर्जुन, जो मनुष्य उस संसाररूपी वृक्षको (मूल सहित) जानता है, वह वेदके तात्पर्यको जानता है। जिस वृक्षकी जड़ ऊपर है (मायापति वासुदेव, सगुण रूपसे इस वृक्षके

कारण हैं) और शाखाएँ नीचे हैं (ब्रह्मा इस संसारका विस्तार करता है जो परमात्मासे उत्पन्न है और उनके नीचे ब्रह्मलोकमें वास करनेके कारण नीचे है) जिसे अविनाशी कहते हैं, और वेद जिसके पत्ते हैं। उस वृक्षकी जड़ें बढ़ी हुई हैं, और विषयरूपी कोंपलोंवाली शाखाएँ ऊपर-नीचे फैली हुई हैं। तथा मनुष्ययोनिमें कर्मोंके अनुसार बाँधनेवाली ममता और वासनारूप जड़ें नीचे ऊपर-फैली हुई हैं।

इस संसाररूपी वृक्षका जैसा स्वरूप कहा गया है, वैसा वह विचारकालमें नहीं पाया जाता। इसका न तो अन्त है और न आदि और न इसकी अच्छी प्रकारसे स्थिति है, अतः दृढ़ मूलोंवाले इस वृक्षको असंग (वैराग्य) रूपी शस्त्रसे काटकर उसके बाद उस परम पदकी खोज करनी चाहिए कि जिसमें गये हुए पुरुष वापस संसारमें नहीं आते। मैं उसी आदि पुरुषकी शरणमें हूँ कि जिससे संसारवृक्षकी प्रवृत्ति विस्तार पा सकी।

श्रीमद्भागवतमें संसारको सनातन वृक्ष कहा गया है जो प्रकृतिस्वरूप है—

एकायनोऽसौ द्विफलस्त्रिमूलश्चतूरसः पञ्चविधः षडात्मा।
सप्तत्वगष्टविटपो नवाक्षो दशच्छदी द्विखगो ह्यादिवृक्षः॥ 10-3-27

त्वमेक एवास्य सतः प्रसूतिस्त्वं सन्निधानं त्वमनुग्रहश्च।
त्वन्मायया संवृतचेतसस्त्वां पश्यन्ति नाना न विपश्चितो ये॥ 10-3-28.

वह संसार एक सनातन वृक्ष है, इसका आश्रय है—एक प्रकृति। इसके दो फल हैं—सुख और दुःख। तीन जड़ें हैं—सत्त्व, रज और तम। चार रस हैं—धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष। इसे जाननेके पाँच प्रकार हैं—श्रोत्र, त्वचा, नेत्र, रसना और नासिका। इसके छह स्वभाव हैं—पैदा होना, रहना, बढ़ना, बदलना, घटना और नष्ट हो जाना। इसकी सात छालें हैं—रस, रुधिर, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा और शुक्र। इसकी आठ शाखाएँ हैं—पंच महाभूत, मन, बुद्धि, अहंकार। इसमें नौ द्वार हैं (शरीरके नौ छिद्र)। प्राण, अपान, व्यान, उदान, समान, नाग, कूर्म, कृकल, देवदत्त और धनंजय ये दस प्राण दस पत्ते हैं। इस संसार-रूपी वृक्षपर दो पक्षी बैठे हैं—जीव और ईश्वर। इस संसाररूपी वृक्षकी उत्पत्तिके एकमात्र आधार आप ही हैं। आपमें ही इसका प्रलय होता है और आपके ही अनुग्रहसे इसकी रक्षा होती है। आपकी मायासे आवृत चित्तवाले जो तत्त्वज्ञानी पुरुष नहीं हैं, वे आपको नाना रूपोंमें देखते हैं। श्रीमद्भागवत 10।2।27-28

तुलनात्मक दृष्टिसे देखनेपर स्पष्ट है कि वृक्षका रूपक ईश्वर जीव और संसारकी पारस्परिक स्थिति को समझानेके लिए है। उपनिषद् यह कहती है कि संसार (प्रकृति) के वृक्षपर दो पक्षी बैठे हैं—सुन्दर पंखोंवाले, जो साथी हैं, मित्र हैं, एक वृक्षपर आसीन हैं। एक वृक्षके फलको खा रहा है, जबकि दूसरा नहीं खाता। गीताकारका कहना है कि इस संसाररूपी वृक्षके जनक वासुदेव हैं, ब्रह्मा जिसे विस्तार देते हैं, वेद उसके पत्ते हैं, इसी प्रकार वह बढ़ता जाता है, उसका न तो आदि है और न अन्त है। गीताकारके अनुसार वृक्षकी परम्पराको वैराग्यसे काटकर ही व्यक्ति परमपदको पा सकता है, यह तभी सम्भव है कि उस आदि-पुरुषकी शरणमें जाया जाये। श्रीमद्भागवत संसारको सनातन वृक्ष कहती है। वह अपने रूपकमें कुछ नयी बातें जोड़ देती है, इस वृक्षका सृजन-संहार-संरक्षण ईश्वरके हाथमें है। 'पुष्पदन्त' अपने वृक्षरूपकमें कुछ नयी बातें जोड़ देते हैं। एक तो वह जैनतत्त्वोंको इसमें घटित करते हैं। दूसरे जीव और ईश्वरके स्थानपर इन्द्रियोंको पक्षी माननेके पक्षमें हैं। तीसरे, ईश्वरको जगह मिथ्यात्वको संसारका कारण मानते हैं जिसे ध्यानकी अग्निमें भस्म किया जा सकता है। गीताकार भी कहते हैं कि दृढ़ मूलवाले इस संसाररूपी वृक्षको वैराग्यसे काटकर आदिपुरुषमें मिलाया जा सकता है। प्रश्न यह है कि जब जीव संसारवृक्षसे स्वतः नहीं बँधा, तो उस बन्धनको वह वैराग्यसे कैसे काट सकता है, यह भी एक प्रश्न है कि पहले-पहल जीवको मिथ्यात्वसे किसने बाँधा ? संसारको वृक्ष कहनेका अभिप्राय यही है कि वह एक अन्तहीन अनादि प्रवाह है।

दार्शनिक विचार

भरतकी जिज्ञासाके समाधानमें ऋषभदेव कहते हैं कि जिसमें द्रव्य स्थित रहते हैं और दिखाई देते हैं वह लोक है, उसे किसीने नहीं बनाया, और न कोई उसे धारण किये हुए है। जड़-चेतनसे भरा हुआ वह स्वभावसे रचित है। किसी चीजकी रचनाके लिए उपादान और निमित्त कारणोंका होना जरूरी है। शिव, पृथ्वी आदि उपादान कारण कहाँ पाता है? किसी रचनाके मूलमें इच्छा होती है, व्याधिहीन शिवमें इच्छा कैसे? कुम्भकार अपनेसे भिन्न घड़ेकी रचना करता है—यानी रचनासे रचयिता भिन्न है। कर्ता-कर्म एक नहीं हो सकते, और कर्ताके बिना कर्म नहीं हो सकता। कुम्भकारके बिना यदि घड़ा बन सकता है तो मिट्टीका पिण्ड स्वयं कलश बन सकता है। जो सम्भव नहीं है। शिव यदि इस सृष्टिका परित्राण करता है तो उसने दानवोंकी रचना ही क्यों की? यदि वत्सलताके कारण सृष्टिकी रचना की जाती है तो सभीके लिए भोगोंकी रचना क्यों नहीं की गयी?

जइ वच्छलेण जि कियउ लोउ।
तो किं ण कियउ सव्वहु विहोउ॥

ऋषभ तीर्थंकरके कथनका निष्कर्ष यह है कि लोक (Space) में जो कुछ स्थित और दृश्य है, वह स्वतः है, वह अनादि-अनन्त है। किसीको (चाहे वह कोई हो) उसका कर्ता मानना मानवी तर्ककी अवहेलना करना है।

राजा महाबलका मन्त्री स्वयंबुद्धि अपने साथी मन्त्रियोंके दार्शनिक मतों का खण्डन करता हुआ चार्वाक मतको भूतयोगवादी कहता है। उसका मुख्य तर्क है कि पृथ्वी आदि चार महाभूतोंके मेलसे जीवकी उत्पत्ति मानना ठीक नहीं। क्योंकि एक तो इनमें परस्पर विरोध है, आग पानीको सोख लेती है, और पानी आगको बुझा देता है। दोनोंका मिश्रण असम्भव है। जड़ और चेतन, दोनों भिन्न स्वरूपवाले हैं; अतः उनमें मिलाप सम्भव नहीं। क्षणिकवादका खण्डन करते हुए स्वयंबुद्धि कहता है कि संसारमें अन्वयके बिना कोई वस्तु नहीं। जो चीज है ही नहीं उसका अस्तित्व क्षणमें कैसे हो सकता है। यदि प्रत्येक वस्तु क्षणभंगुर है, तो वासना क्षणमें नाशको प्राप्त क्यों नहीं होती? अतः वस्तु क्षणजीवी नहीं है, प्रत्युत क्षणान्तर-गामी है। वस्तुतः जिसके रहनेसे काल परिणमन करता है, वह काल है। जहाँ वह काल है वह आकाश-तल है, गतिमें सहायक धर्म द्रव्य है और स्थिरतामें सहायक अधर्म द्रव्य है। पुद्गल अचेतन है। सचेतनमें ज्ञानका कारण जीव है। बिना जीवके पुद्गल न देख सकता है, न चिल्ला सकता है। अतः जड़में क्रिया चेतनाके बिना सम्भव नहीं हो सकती।

प्रकृति-चित्रण

नाभेयचरितके इस उत्तरार्ध भागमें प्रकृति-चित्रणका विस्तार नहीं है। काशीराज-पुत्री सुलोचनाके स्वयंवरके प्रसंगके पूर्व वसन्तका वर्णन है। सुलोचनाका रूप-चित्रण करते-करते मन्त्री कहता है—

लीलान्दोलनकी युक्तियाँ वसन्तके आगमनपर शीघ्र आ गयीं। वसन्तके आगमनका समय अंकुरित, कुसुमित और पल्लवित होकर खिल उठा। जिस ऋतुमें चेतनाशून्य वृक्ष खिल उठते हैं वहाँ मनुष्यका मन क्यों नहीं खिलेगा?

'वियसंति अचेयण तरु वि जहिं।
तहिं णरु किं णउ वियसइ॥' 28-13.

कवि प्रकृतिके एक-एक वृक्षकी हलचलका अंकन मानवी चेतनाके प्रतिक्रियाके द्वारा करता है : "यदि आम्रवृक्ष कंटकित होता है तो वसन्तकी शोभा उसे आलिंगनमें बाँध लेती है। यदि चम्पकवृक्ष अंकुरोंसे

अंचित होता है तो ऐसा लगता है कामदेव रोमांचित हो उठा हो। थोड़ा-थोड़ा पल्लवित अशोक ऐसा लगता है जैसे विधाताकी चित्रकारी हो। मन्दारकी डालमें यदि कोंपल फूटे हैं तो लगता है कि वसन्तने चलदलको नचा दिया हो। यदि पुन्नागवृक्षमें कलियाँ आती हैं तो लगता है कि वह शीघ्र मतवाले चकोरों और शुकोंके शब्दोंसे भर उठा हो। वनमें खिला हुआ पलास (टेसू) ऐसा मालूम होता है जैसे राहगीरोंके लिए विरहकी आग जला दी गयी हो। मालती फूलोंका समूह क्या खिल गया मानो रमणीजनोंमें रतिका लालच फैल गया। कुन्दवृक्ष अपने कुसुमरूपी दाँतोंसे हँसने लगे। और कोयलने कामका नगाड़ा बजाना शुरू कर दिया।" 28-14.

उस अवसरपर जो केलिगृह बनाये गये उनका निराला ठाठ-बाट था—

"सघन मधुके छिड़कावोंसे और परागोंकी रंगोलीसे धरती व्याप्त हो उठी। वसन्त राजा उपवन-रूपी भवनमें, नवपुष्पोंकी कलियों-रूपी दीपों, मयूरोंकी नृत्यमुद्राओं, धवल कुसुम मंजरियोंकी पुष्पमालाओंपर गूँजते हुए भ्रमरोंकी गीतावलियों तथा राज-हंसिनियोंकी रमणशील क्रीड़ाओंके साथ आसन ग्रहण करते हैं।" 28-15.

नारीरूप चित्रण

बहुपत्नी प्रथा सामन्तवादकी सबसे बड़ी विशेषता रही है। नारियोंकी भरमार होनेसे उनके रूपके चित्रणकी बहुलता होनी स्वाभाविक है। स्त्रीको लेकर होनेवाले द्वन्द्वके मूल, उसके प्रति दो पुरुषोंका आकर्षण है, और जहाँ ऐसा है—वहाँ युद्ध होना अनिवार्य है। कविके शब्दों में—

"एक्कहि भिसिणिहि दो हंसवर।
एक्कहि किसकलियहि दो भमर॥
जइ होंति होंतु ण घडइ अवरु।
सरु संधउ विंधउ कुसुमसरु॥"

एक कमलिनी और दो श्रेष्ठ हंस हों, एक दुबली-पतली कली और दो भ्रमर हों, तो वह होना नहीं घट सकता, केवल कामदेव सर-सन्धान करता है और बेधता है। एक तरुणीके उरोजोंका क्या दो आदमी अपने कोमल हाथोंसे आनन्द ले सकते हैं?—यह सोचकर दोनों विद्याधर कुमारोंमें लड़ाई ठन गयी। यह दुहरानेकी आवश्यकता नहीं कि अपभ्रंश काव्योंमें वर्णित अधिकांश युद्धोंका कारण 'नारीरूप' है। और यह सामन्तवादी समाजकी या पुरुष प्रधान समाज व्यवस्थाकी विशेषता नहीं—प्रत्युत मनुष्य प्रकृतिकी विशेषता है। यह मनुष्यकी ही प्रकृति नहीं, समूचे चेतन जगत्की प्रकृति है, चेतनाके विकासस्तरके साथ रागचेतनाका विकास होता जाता है। सारी आध्यात्मिक साधनाएँ इसी रागचेतनाकी प्रतिक्रियासे जन्मी साधनाएँ हैं। आस्तिक दर्शन इस चेतनाको ईश्वरकी आत्मरतिका बाह्य विस्तार मानते हैं, अनीश्वरवादी दर्शन उसे क्षणिक दुःखमूलक या परभाव मानते हैं। नारीरूप चित्रण या शृंगारकी अभिव्यक्ति पुष्पदन्तका अन्तिम उद्देश्य नहीं है? परन्तु वैराग्यकी अनुभूतिके लिए रागकी मांसल अनुभूतिका वर्णन जरूरी है। सभी देशों और समयोंके मनुष्य प्रेमके मामलेमें जो एकाधिकारवादी रहे हैं, वह इसलिए कि अपनी प्रिय वस्तुपर एकाधिकारकी भावना प्रेमकी विशेषता है।

श्रीमतीका नख-शिख वर्णन करता हुआ पुष्पदन्तका कवि स्वीकार करता है: कुंकुमसे आरक्त उसके पैरोंको मैं कामदेवकी मुद्राएँ मानता हूँ। पद्मराग मणियोंकी तरह लाल-लाल पैर क्या नक्षत्रोंकी तरह नहीं जान पड़ते? उस युवतीके घुटनोंके जोड़ोंको देखकर मुनि कामदेवका सन्धान करने लगते हैं। ऐसा कौन है कि जिसकी बेचारी मनरूपी गेंद-अश्वक्रीड़ा मैदानमें (चौगानके खेलके मैदानमें) चंचल नहीं हो उठती?

"तंबइं पोमराय रुइ चोक्खइं
रत्तउ किं रावंति ण णक्खइं
पेच्छिवि तरुणि जाणु संधाणइं
मुणिवि करंति मयणसंधाणइं
ऊरूयाहूयालि अंतरि चुउ
कासु ण चलइ बप्प मणर्खेदुउ" 22-7.

श्रीमतीके विवाहके अवसरपर वरवधूको आशीर्वाद देते हुए लोग कहते हैं—

जाव गंगाणई जाव मेरुगिरी
ताम्व भुंजेह तुम्हे वि णिच्चं सिरी।
होंतु पुत्ता महंता पहाभासुरा
जंतु अच्छिण्णणेहेण वो वासरा ॥ 24-13.

जबतक गंगानदी और सुमेरुपर्वत है तबतक तुम भी नित्य श्रीका उपभोग करो। तुम्हारे महाप्रभाव शाली पुत्र हों, तुम्हारे दिन अविच्छिन्न स्नेहसे बीतें।

इसके बाद कवि दोनोंकी सम्भोगसमाधिका जो वर्णन करता है वह यथार्थवादको भी मात देनेवाला है। लेकिन उसे श्रीमती और वज्रबाहुके समूचे जीवन (जो जन्म-जन्मान्तरोंमें भी व्याप्त है) के सन्दर्भमें देखना चाहिए। शृंगारके इस प्रकार खुले वर्णनके कई कारण है। उनमें एक कारण यह है कि कवि बताना चाहता है, रागानुभूति जितनी तीव्र होगी, उसकी प्रतिक्रिया भी उतनी ही तीव्र होगी।

देवी सुलोचनाके रूपचित्रणमें कवि प्रश्नवाचक चिह्न लगा देता है। जिसका अर्थ है कि उसका रूप सीमातीत है।

किं तरुणीवयणहु उवमिज्जइ।
वामु सरिच्छउ तं जि भणिज्जइ ॥ 28-13.

पुष्पदन्तकी सबसे प्रिय प्रवृत्ति है नर-नारी रूपकी तुलना प्रकृतिसे करना। जयकुमार अपनी पत्नी सुलोचनाके साथ गंगा पार करते हुए उसके बीचमें पहुँचता है। वह गंगामें अपनी नववधू सुलोचनाका प्रतिबिम्ब देखता है।

उसमें तैरता हुआ सारस-जोड़ा देखकर देखता है प्रियाके स्तनकलश युगल। गंगाकी सुन्दर तरंगोंको देखकर प्रियाकी त्रिवलितरंगको देखता है। गंगाके आवर्त भ्रमणको देखकर प्रियाके श्रेष्ठ नाभिरमण को देखता है, गंगाके खिले कमलको देखकर प्रियाके मुखकमलको देखता है, गंगाके फैले हुए मत्स्योंको देखकर प्रिया के चंचल और दीर्घतर नेत्रोंको देखता है। गंगामें मोतियोंकी पंक्तियोको देखकर प्रियाकी दन्तपंक्तिको देखता है। गंगामें मतवाली भ्रमरमाला देखकर कान्ताकी नीली चोटी देखता है ? 29-7.

इस तुलनाका उद्देश्य यह बताना है कि सुलोचना कामकी नदी है।

"णिय गेहिणि वम्महवाहिणि देवि सुलोयण जेही
मंदाइणि जणसुहदाइणि दीसइ राएँ तेही।" 29-7.

अपनी गृहिणी कामकी नदी देवी सुलोचना जैसी है जनोंको सुखदेनेवाली गंगानदी भी उसे वैसी दिखाई देती है।

युद्धवर्णन

नाभेयचरिउके इस उत्तरार्ध भागमें युद्धके प्रसंग भी कम हैं। प्रमुख उल्लेखनीय युद्ध भरतके पुत्र अर्ककीर्ति और जयकुमारके बीच हुआ, वह भी सुलोचनाके स्वयंवरको लेकर। सुलोचना जयकुमारको

वरमाला डालती है। अर्ककीर्ति आक्रमणसे उसे छीनना चाहता है। मन्त्रीका समझाना आगमें घीका काम करता है। (णं घएण सित्तउ धूमद्धउ) अर्ककीर्ति जयकुमारसे पहलेसे ही चिढ़ा हुआ था—वरण तो एक बहाना था। अर्ककीर्ति कहता है :

वारिउ छण्ण पउत्तिहि बप्पें
अज्जु सयंवर-माला-तुप्पें
सो दूसहु पज्जलियउ वट्टइ
रिउ लोहियसित्तउ ओहट्टइ 28-25

"जिस आगका पिताने प्रच्छन्न उक्तियोंसे निवारण किया था आज वह स्वयंवरकी मालारूपी घीसे असह्य रूपसे प्रज्वलित हो उठी है अब वह शत्रुके रक्तसे सींची जानेपर ही शान्त होगी"।

फिर क्या था? समरभेरि बज उठी, कलकल होने लगा। एक पलमें चतुरंग सेना दौड़ी। प्रशिक्षित और सुरक्षित वीर योद्धा महागजोंपर बैठ गये। महावतोंसे प्रेरित वे गरजते हुए महामेघकी तरह दौड़े। तीखे खुरोंसे धरतीको खोदते हुए, उत्तम कामिनियोंके मनके समान चंचल घोड़े चला दिये गये।

रथोंके हिलते हुए ध्वजाडम्बरवाले दीप्ति और विचित्र छत्रोंसे आकाशको आच्छन्न करनेवाले, चक्रोंकी चपेटसे विषधरोंके सिरोंको चूर-चूर करनेवाले, तलवार, झस, मूसल, लकुटि और हल हाथोंमें लिये हुए—बड़े-बड़े योद्धा युद्धके मैदानमें पहुँचे। 28-24.

लड़ते हुए प्रगलित व्रण रुधिरवाले सैन्य ऐसे मालूम पड़ते हैं; मानो युद्धकी लक्ष्मीने दोनोंको टेसूके फूल बाँध दिये हों।

जुज्झंतइं दिट्ठइं विसरिसइं पयलियवणरुहिरुल्लइं
वेण्णि वि सेण्णइं णं रणसिरिए बद्धइं केसुअ फुल्लइं॥ 28-26.

हारते हुए अर्ककीर्तिकी ओरसे सुनमि जयकुमारको ललकारता है तो वह उसका मुँह-तोड़ उत्तर देता है—

"परस्त्रीके (अपहरणके) तुम प्रमुख कारक हो, अर्ककीर्ति स्वयं कर्ता है। मैं न्यायनियुक्त हूँ और इस धरतीपर अपने स्वामीका भक्त हूँ"। 28-3.

तुहुं कारउ परयारउ पमुहु अक्ककित्ति सइ कत्तउ।
हउं णायणिउंजउ धरणियले णिय पहुपायहं भत्तउ॥ 28-35.

अन्तमें सोमप्रभके पुत्र जयकुमारने दुष्ट शत्रुओंको पीड़ा देनेवाले दृढ़ नागपाशसे चक्रवर्ती भरतके प्रिय पुत्रको पकड़ लिया।

"कूरारितासेण दढणायवासेण
धरिओ रूसारुणउ चक्कवइपिउ तणउ" 28-36.

निर्नामिकाकी गरीबी

अपनी गरीबीका वर्णन करती हुई निर्नामिका कहती है—

आठ भाई-बहन। पीतलके दो हण्डे। खल और चनोंका मुट्ठीभर आहार करनेवाले। कमरपर छालके वसन लपेटे हुए, स्फुट हाड़, रूखे बाल, इस प्रकार हम दस स्वजन, आपसमें लड़ते हुए और एक दूसरेको गाली-गलौज देते हुए। सफेद विरल लम्बे दाँत, दूसरोंका काम करनेवाले॥ 22-15

अट्ठभाउ हंडइं दो पियरइं।
कय खल चणय मुट्ठि आहारइं॥
फडियल वेढिय वक्कल वासइं।
हड हड फुट्ट फरुस सिर केसइं॥

अम्हइं यह जणाइं तहिं सयणइं ।
कलहंतइं भासिय दुव्वयणइं ॥
पंडुर पविरल दीहर दंतइं ।
जावच्छहुं परकम्मु करंतइं ॥ 22-16.

निर्नामिकाका यह कथन वस्तुतः कवि पुष्पदन्तका कथन है, जो इस बातका प्रमाण है कि गरीबी—भारतीय इतिहासको जन्मघुटीसे मिली। आध्यात्मिकताकी सामन्तवादी व्याख्याओंने उसमें चार चाँद लगा दिये। जिस घर में दस-दस खानेवाले हों, कमानेका साधन मजदूरी हो वहाँ मुट्ठीभर चना और खल ही भूखकी ज्वाला शान्त करनेका एकमात्र साधन है! गरीबीका यह चित्र दसवीं सदीका है। यह काल्पनिक नहीं, बल्कि वास्तविकताका प्रतीक कथन है। ऋषभ तीर्थंकर जैन मान्यताके अनुसार करोड़ों वर्ष पहले हुए, निर्नामिकाका परिवार, उनके तीर्थंकर बननेसे बहुत पहले हुआ। इसका अर्थ है कि इस देशमें घी-दूधकी नदियाँ कभी नहीं बहीं, यह सफेद झूठ है कि यह देश कभी सोनेकी चिड़िया था। वह जितना सोनेकी चिड़िया था उतना अमीरोंका भारत था। इसमें कोई शक नहीं कि निर्नामिकाकी गरीबी दूर हुई, पिहितास्रव मुनिके सदुपदेशसे वह जैनधर्म ग्रहण करती है, और कई उत्तम पर्यायोंके बाद—श्रेयांस राजा बनती है। ऐसे उदाहरण दूसरे मतोंके पुराणोंमें भी मिलते हैं। भगवान् रामको शबरीके जूठे बेर जितने पसन्द हैं, उतने सेठका ऐश्वर्य नहीं। परन्तु भगवान्की पूजा-उपासनाका काम तो धनसे ही चलता है, गरीबोंसे नहीं। मुझे इसमें सन्देह नहीं कि निर्नामिकाकी गरीबी मिट गयी, परन्तु क्या इसे देशकी गरीबी मिटानेका नुसखा बनाया जा सकता है? भारतीय आध्यात्मिक विचार समाजमें सन्तुलन बनाये रखनेके लिए त्याग, सादगी और सीमित भोग पर जोर देते हैं, जिससे विषमताकी खाई कम हो, व्यक्ति तनावोंसे मुक्त हो।

समयचक्र : काल-रहट्ट

अच्युतेन्द्र देव पुष्पमाला मुरझानेपर मृत्युकी कल्पनासे काँप उठता है। वह कहता है :

अइ सोमसहाव महारउद् ।
संचल्लिय चल ससि रवि बलद् ॥
किह वंचवि काल रहट्ट चारु ।
घडिमालइ लंघिउ आउणीरु ॥

इस महाकालरूपी रहटके संचारसे मैं कैसे बच सकता हूँ। उसके चंचल चन्द्र और सूर्यरूपी बैल चल रहे हैं, उनमें एक सौम्यभावका है और दूसरा महारौद्र है। घड़ियों (घटिका) की मालाओंसे आयुरूपी जल छलक रहा है।

भाग्य ही सब कुछ है

प्रथम भवमें जयवर्मा (ऋषभ) के पिता श्रीषेणने दीक्षा लेते समय छोटे पुत्र श्रीवर्माको राज्य दे दिया। जयवर्माको बुरा लगा। वह सोचता है :

सुहडत्तणु बुद्धिबुहत्तणु ।
घिवहि असेसु वि जलहि जले ॥
किं गुणगणु मण्णइ सज्जणु वण्णइ
पुण्णु जि भल्लउ भुवणयले ॥ 12-4.

सुभटपन बुद्धिका बुधपन सब समुद्रके जलमें फेंक दो। गुणगणको क्यों माना जाता है, सज्जनका वर्णन क्यों किया जाता है, संसारमें पुण्य ही भला है।

स्वर्गसे च्युत होनेके पूर्व ऋषभ जिनके पूर्वभवका जीव ललितांग देव कहता है :—

जायइं पुणु वि पणट्ठाइं रंगणडा इव भावविचित्तइं ।
मेल्लिवि सासय सिद्धि सिरि दुल्लहाइं णउ होंति सुरत्तइं ॥

रंगनटकी तरह भावकी विचित्रताएँ उत्पन्न होती हैं और फिर नाशको प्राप्त होती है, शाश्वत सिद्धिश्रीको छोड़कर सुरतिचेतनाएँ (कामचेतनाएँ) दुर्लभ नहीं होतीं ।

जयवर्मा जिस वनमें वर्णन करने जाता है उसमें सुअरों द्वारा अंकुर खाये जा रहे थे, दूसरी ओर मेघ आसमानको छू रहे थे, वह वन स्वरोंसे आवाज कर रहा था, बड़े-बड़े बाँसोंसे युक्त था, जो लताओं और प्रिया लताओंसे सहित था, जो शबरियोंके लिए प्रिय था, जिसमें अंकुर निकल रहे थे, जिसमें विचित्र अंकुरोंका समूह था, जिसमें भ्रमर गन्धका पान कर रहे थे, जिसमें नागराजोंका वास है, जो मधुसे आर्द्र है, और जो दावानलसे प्रज्वलित है, जहाँ पीलू वृक्ष बढ़ रहे है और पीलू (गज) गर्जना कर रहे हैं ।

"कीडी खद्धकंदं णयासीण कंदं
सरेण सवंतं महावंससवंतं
सवेल्लो पियालं पुलिंदी पियालं
विणित्तं कुरोहं विचित्तंकुरोहं
अलीपीयवासं फणिंदाहिवासं
महूहिं पलित्तं दवग्गी पलित्तं
पवड्ढंतपीलुं पगज्जंतपीलुं" 21-6.

कुछ उक्तियाँ

'महापुराण'में कुछ उक्तियाँ ऐसी हैं जिनके उद्धरणका लोभ संवरण कर पाना कठिन है । कुमार वज्रजंघ श्रीमतीकी धाय द्वारा प्रदर्शित चित्रपटमें अपने पूर्वभवकी लीलाओंका अंकन देखकर कहता है :

"पट्टइ लिहियउ हियवइ लिहियउ
को तं पुसइ णिडालइ लिहियउ" 24-9.

जो चीज चित्रपटपर अंकित है, हृदयमें अंकित है और ललाटमें लिखी है—उसे कौन मेट सकता है !

तं णरणाहें वयणु समत्थिउ ।
खिच्चहु उप्परि घिउ ओमत्थिउ ॥ 24-11.

राजाने उस वचनका समर्थन किया मानो खिचड़ीमें घी उडेल दिया ।

"कम्मयरहु दिण्णउ सरसु भोज्जु
लुद्धुवि दाणेण करेइ कज्ज । 25-20.

लोभी आदमी भी दान (घूस) देकर अपना काम बना लेता है । उसने कर्मकर (मजदूर) को सरस भोजन दिया ।

रंगगउ णडु बहुरूवधारि अणवरय दुविह कम्माणुयारि ।
सा णत्थि थत्ति जहिं जिउ ण जाउ ॥ 27-11.

रंगमंचपर गये हुए नटकी तरह बहुरूप धारण करनेवाला, अनवरत दुविध कर्मोंका धारण करनेवाला यह जीव, ऐसी स्थिति नहीं है कि जिसमें न जन्मा हो ।

संसारमें इतनी चीजें कठिन हैं—

'णिगव्वसीलु को संपयाइ' 33-13.

(गर्वरहित शीलका सम्पादन कौन कर सकता है ?)

'पारद्धिउ को सेविउ दयाइ' 33-13.

(ऐसा कौन अहेरी है जो दयासे सेवित है ?)

मणु सासिउ रायपसाउ कासु 33-13.

(बताओ किसे शाश्वत रूपसे राजप्रासाद मिलता है ?)

'सघरत्थु विर्न ण डहइ हुयासु' 33-13.

(अपने घरमें भी रहनेवाली आग किसे नहीं जलाती ?)

ऋषभनाथके पूर्वभव :

कथानककी दृष्टिसे नाभेयचरितके पूर्वार्द्धमें ऋषभ तीर्थंकरका उत्तरचरित (इस जीवनका चरित है) है, जब कि उत्तरार्द्धमें पूर्व चरित, क्योंकि इसमें उनके पूर्वभवोंका कथन है। भरतके अनुरोधपर ऋषभ तीर्थंकर अलकापुरीके राजा अतिबलसे अपनी पूर्वभव कथा शुरू करते है। अतिबलकी पत्नी मनोहरा है। पुत्र महाबलको राजपाट देकर वह दीक्षा ग्रहण कर लेता है। महाबलके मन्त्री महामति सम्भिन्नमति और स्वयंमति उसे गलत परामर्श देते है परन्तु स्वयंबुद्ध उसे सही मार्ग बताता है। स्वयंबुद्ध जैन श्रावक है। नाना दृष्टान्त और पूर्वजन्म-कथनके द्वारा वह राजाकी जैनधर्ममें आस्था दृढ़ करता है। राजा अरविन्दके आख्यानके बाद महाबलको उसके पितामह सहस्रबल और शतबलका पूर्वजन्म बताता है। स्वयंबुद्धि और महाबल सुमेरुपर्वतकी वन्दनाभक्ति करने जाते हैं; स्वयंबुद्ध चारण युगल मुनि (आदित्यगति और अरिंजय) से अपना और राजाका पूर्वभव पूछता है। बड़े मुनि बताते है कि यह विद्याधर राजा दसवें भवमें तीर्थंकर होगा। पश्चिम विदेहके गन्धिल्ल देशके सिंहपुरमें राजा श्रीषेण है, उसकी रानी सुन्दरी देवी। उनके दो पुत्र जयवर्मा और श्रीवर्मा। दीक्षा लेते समय श्रीषेणने छोटे पुत्रको राज्य दे दिया। बड़ा भाई जयवर्माको इससे बुरा लगा। दैवको बलवान् मानकर वह वैराग्य धारण कर लेता है। नवप्रव्रजित संन्यासी (जयवर्मा) महीधर विद्याधरका वैभव देखकर निदान करता है कि मैं भी वैसा हो बनूँ। साँपके काटनेसे उसकी मृत्यु होती है, वही जयवर्मा यह महाबल है। महाबल मन्त्री स्वयंबुद्धका उपकार मानता है। अतिबलको राजपाट देकर उसने दीक्षा ग्रहण कर ली। संलेखना मरणसे वह ईशान स्वर्गमें देव हुआ। उसका नाम ललितांग था। स्वयंप्रभा और कनकप्रभा उसकी महादेवियाँ थी। वहाँसे वह उत्पलखेट नगरके राजा वज्रबाहुकी वसुन्धरा रानीसे वज्रजंघके नामका पुत्र उत्पन्न हुआ। ईशान स्वर्गमें देवी स्वयंप्रभा विलाप करती है। वह पुण्डरीकिणी नगरीमें राजा वज्रदन्तकी श्रीमती नामकी कन्या हुई। एक रात यशोधर मुनिके उद्यानमें आने-पर उसकी नींद खुलती है और उसे पूर्वभवका स्मरण हो आता है, वह पूर्वजन्मके प्रिय ललितांगके लिए व्याकुल हो उठती है। पिता उसे सान्त्वना देते हैं। श्रीमती धायको पूर्वजन्म बताती है कि वह गन्धिल्ल देशके पाटली गाँवमें नागदत्त बनिया था। उसके पाँच पुत्र और तीन पुत्रियाँ थीं, सबसे छोटी निर्नामिका (श्रीमती) थी। सिरपर लकड़ियोंका गट्ठा और झोलीमें माहुर भरकर जब वह जंगलसे लौटती है तो पिहितास्रव मुनिकी धर्मसभामें पहुँचती है। मुनिसे अपने पूर्व जन्मके निन्द्य कर्मको जानकर (मुनिके शरीरपर सड़ा कुत्ता फेंका था) वह जैनधर्म ग्रहण करती है, और १५० उपवास करनेका निश्चय करती है। मरकर वह स्वयंप्रभा देवी हुई। दोनोंका (वज्रजंघ और श्रीमतीका) विवाह। वज्रबाहुकी कन्या अनुन्धराका विवाह वज्रदन्तके पुत्र अमिततेजसे। दोनों संन्यास ग्रहण करते हैं। लक्ष्मीवती वज्रजंघकी सहायता माँगती है। रास्तेमें वह चारणयुगल मुनिकी वन्दना करता है। मुनि अपना परिचय देते हैं, वे पूर्वभवके

दमवर और मतिसेन थे। दैवयोगसे धूपके धुएँसे वज्रजंघ दम्पति मर जाते हैं और उत्तर कुरुभूमिमें जन्म लेते हैं। स्वयं ऋषभ तीर्थंकर कहते हैं—

मूलतः 1. मैं जयवर्मा था। 2. फिर धर्मका आचरण कर विद्याधरेन्द्र हुआ। 3. फिर महाबल हुआ। स्वयंबुद्धिसे धर्म संचित किया। 4. ईशान स्वर्गमें ललितांग। 5. च्युत होकर वज्रजंघ। 6. कुरुभूमिका मनुष्य। 7. श्रीधर देव। 8. सुविधि। 9. अहमेन्द्र। 10. वज्रनाभि। 11. सर्वार्थसिद्धिमें अहमेन्द्र। और अब तीर्थंकर। इसी प्रकार 1. निर्नामिका 2. ललितांगकी पत्नी 3. वज्रजंघकी श्रीमती। 4. स्वयंप्रभ देव 5. केशव 6. प्रतीन्द्र 7. धनदेव 8. सर्वार्थसिद्धिमें अहमेन्द्र 10. राजा श्रेयांस जो कुरुवंशके सरोवरका हंस है। 27-9.

वस्तुतः 'नाभेयचरित' का उत्तरार्द्ध ऋषभ तीर्थंकर और उनसे सम्बद्ध प्रमुख व्यक्तियोंके पूर्वजन्म कथनोंसे भरा पड़ा है। प्रारम्भमें वर्णाश्रम, राजनीति और समाजव्यवस्था, विभिन्न दर्शन और संसारके स्वरूपका कथन है।

जयकुमारका आख्यान

जयकुमार, कुरुवंशी राजा सोमप्रभका सबसे बड़ा पुत्र है जो अपने चौदह भाइयोंमें जेठा है। राजा श्रेयांस उसके चाचा थे। एक बार वह नन्दन वनमें नागके जोड़ेको मुनिसे धर्म सुनते हुए देखता है। सालभर बाद, जब वह नन्दनवनमें जाता है तो देखता है कि नाग नहीं है, और नागिन किसी दूसरी जातिके नागसे क्रीड़ारत है। जय उसे लीलाकमलसे आहत करता है। नागिन वहाँसे भाग जाती है। राजा राजभवन वापस आता है। रातमें वह नागिनका किस्सा अपनी पत्नीको बताने जा रहा था कि एक देव अवतरित होकर उसे नागिनको चोट पहुँचानेकी बात कहता है। वह बताता है कि मैं (यार नाग) भवनवासी नाग हुआ हूँ तथा नागिन गंगामें काली हुई है। नागदेव जयकुमारको उपहार देता है। एक मन्त्री जयको काशी-राजकी कन्या सुलोचनाके स्वयंवरकी बात करता है। जयकुमार स्वयंवरमें सम्मिलित होता है। सुलोचना जयकुमारका वरण करती है। भरतपुत्र अर्ककीर्ति क्रुद्ध होकर अकम्पन राजा और जयकुमारसे भिड़ता है यह जानते हुए भी कि जब कन्या किसीका वरण कर ले तो उसका अपहरण करना नीतिविरुद्ध है। अर्ककीर्तिको युद्धमें मुँहकी खानी पड़ती है। जयकुमार उसे बन्दी बनाकर छोड़ देता है। अकम्पन अर्ककीर्तिको मनाता है और सुलोचनाकी बहन लक्ष्मीवतीसे उसका विवाह कर देता है। अर्ककीर्ति जब भरतके सम्मुख पहुँचता है तो वह उसकी आलोचना करता है। राजा अकम्पन अपने मन्त्री सुमतिके द्वारा राजा भरतके सम्मुख अपने तीन दोष स्वीकार करता है—यह कि उसने अर्ककीर्तिको कन्या नहीं दी, यह कि उसने स्वयंवर किया, यह कि सुलोचनाने जयकुमारका वरण किया। यह कि परस्त्रीका अपहरण करनेवाले तुम्हारे पुत्रसे मेरे बेटेने युद्ध किया। भरतकी न्यायप्रियता और उदारता यह है कि वह मन्त्रीके सम्मुख स्वीकार करता है कि वह पिता ऋषभकी जगह राजा सोमप्रभको मानता है। भरतके उत्तरसे कुरुवंशी सोमप्रभ और नागवंशी अकम्पन राजा सन्तुष्ट हुए। रास्तेमें लौटते समय राजा गंगाके तटपर डेरा डालता है। सुलोचनाको वहीं छोड़कर जयकुमार साकेत जाकर भरतसे भेंट करता है। सुलोचनाके हाथीको मगर पकड़ लेता है। वनदेवी उसका उद्धार करती हुई अपने पूर्वभवका परिचय देती है कि वह विन्ध्याचलके राजा विन्ध्यकेतुकी पत्नी प्रियंगुश्री-की पुत्री विन्ध्यश्री है, जिसे पिताने कलाएँ सिखानेके लिए तुम्हारे पास सौंप दिया था और एक दिन वनमें साँपके काटनेपर तुमने णमोकार मन्त्र सुनाया था। वह कालीका भी पूर्वभव (नागिन) सुनाती है। घर आकर विद्याधरकी जोड़ी देखकर दोनों मूर्च्छित हो जाते हैं। होश आनेपर सुलोचना पूर्वभवका कथन करती है जो इस प्रकार है :

शोभापुरके राजा प्रजापालका सामन्त शक्तिषेण था। उसकी पत्नी अटवीश्री थी। दोनों एक बालकको पालते हैं (जिसे सौतेली माँके व्यवहारके कारण घरसे निकाल दिया गया था) शक्तिषेण अनागार वेलाव्रती

था। शक्तिषेण दम्पति पालितपुत्र सत्यदेवके साथ ससुराल आते हुए सर्पसरोवरके तटपर ठहरते हैं। मृणालवती नगरीके सेठ सुकेतुका पुत्र भवदेव दुष्ट था। वह अवधि देकर बाहर जाता है। श्रीदत्त और विमलश्री अपनी कन्या रतिवेगाका विवाह अशोकदत्त और जिनदत्ताके पुत्र सुकान्तसे कर देते हैं। भवदेव इतनेमें लौट आता है और वह नवदम्पतिका पीछा करता है। सुकान्त और रतिवेगा भागकर जंगलमें शक्तिषेणकी शरण लेते हैं। वह उनकी रक्षा करता है। इस बीच सार्थवाह मेरुदत्त वहाँ ठहरता है। शक्तिषेण वहाँ दो चारणयुगल मुनियोंको आहार देता है। मेरुदत्त निदान करता है—शक्तिषेण अगले जन्ममें मेरा पुत्र हो। भूतार्थ अपने पुत्र सत्यदेवको लेने आता है परन्तु वह नहीं आता। पिता संन्यास ग्रहण कर लेता है। शक्तिषेणने नवदम्पतिको सेठ सुदत्तको सौंपा कि वह इसे राजाके पास रख दे। परन्तु शक्तिषेण शीघ्र ससुरालसे लौट आया। शक्तिषेणने सुकान्त दम्पतिको बसा दिया। भवदेव दोनोंको जला देता है। वे नगरसेठके घरमें कबूतर होते हैं और पूर्वजन्मकी कथा कहते हैं। मेरुदत्त मरकर कुबेरमित्र नामका वणिक् हुआ। धारिणी सेठानी हुई। सुकान्त दम्पतिने इन्हींके घर जन्म लिया। कबूतरी सुलोचना थी और जयकुमार कबूतर (क्रमशः रतिसेना और रतिवेग)। शक्तिषेण कुबेरमित्रका पुत्र हुआ कुबेरकान्तके नामसे। पूर्वजन्मकी अटवीश्री सेठ सागरदत्तकी कन्या हुई प्रियदत्ताके नामसे। कुबेरकान्त और प्रियदत्ताका विवाह। वे दोनों चारणयुगल मुनिको आहार देते हैं, कबूतर-कबूतरी अपना पूर्वपरिचय देते हैं। प्रियदत्ता तपस्या ग्रहण करती है, कबूतर-कबूतरीको बिलाव खा लेता है। कबूतर (रतिवेग) विद्याधर पुत्र हिरण्यवर्माके नामसे उत्पन्न हुआ, और दूसरी, रतिषेणा कबूतरी प्रभावतीके नामसे उत्पन्न हुई। हिरण्यवर्मा नन्दनवनमें कबूतरका जोड़ा देखकर अपनी पूर्वजन्म-कथा लिख देता है। प्रभावती विरहसे पीड़ित हो उठी। स्वयंवरके बजाय दोनोंका विवाह। धान्यमालक वनमें भ्रमण करते हुए सर्पसरोवरके चिह्न देखकर हिरण्यवर्मा विरक्त हो गया। प्रभावतीने भी दीक्षा ले ली। आगे चलकर ये जयकुमार और सुलोचनाके रूपमें उत्पन्न हुए।

जयकुमारके दीक्षा ग्रहण करने पर सुलोचना भी उसी मार्गपर आनेका आग्रह पूर्वजन्म परम्पराके उल्लेखके साथ करती है :

जइयहुं वणिवरकुलि वणि वराइं। रिउ भइयइं छड्डिय मंदिराइं॥
कय कम्म-पहावें विणडियाइं। णासंतइं काणणि णिवडियाइं॥
णिय कंतइ सहुं सुहि हिययवेण। जइयहुं सरि मिलियउ सत्तिसेणु॥
जइयहुं मुणिवेज्जावच्चु कियउ। हिय उल्लउं काइं वि धम्मि थियउ॥
जइयहुं जायइं पारावयाइं। लइयइं दोहिं वि सावय वयाइं॥
जइयइं उप्पण्णइं खेयराइं। लीलालंघिय विउलंबराइं॥
रिसि दंसणेण विंभिय मणाइं। जइयहुं सुराइं विण्णि वि जणाइं॥
तइयहुं लग्गिवि वहु पइ णिरुत्तु। भो तुज्झु चरित्तु जि सहु चरित्तु॥

इन पंक्तियोंमें वणिककुल (सुकान्त-रतिवेगा) से लेकर जय-सुलोचनाके जन्मोंके कथनके बाद सुलोचना इस निष्कर्षपर पहुँचती है कि हम दोनों वर-वधूकी भूमिकाका निर्वाह करते रहे हैं। तुम्हारा-मेरा चरित्र एक है। और इसलिए प्रिय यदि विरक्तिके मार्गपर जाता है तो वह भी जायेगी। विकारके अवलोकन छोड़ती हुई सुलोचना तपश्चरण अंगीकार कर लेती है। जन्म-जन्मान्तरोंमें फैली हुई, आत्माको कसनेवाली रागचेतनासे कटकर 'आत्मसत्य' की अनुभूतिके पथपर चल देती है।

महावीर जयन्ती
९-४-७९

—देवेन्द्रकुमार जैन

कारणं मच्चुणो किं जणो कंखए
होइ सत्थं सिरीसं पि आउक्खए ।

26/1

क्या मनुष्य मृत्युका कारण चाहता है ? आयुके क्षय होनेपर शिरीष भी हथियार हो जाता है ।

अरहंतु सरंतहं होइ धम्मु
मा मोहें तुहुं संचहि दुकम्मु ।

37/24

अरहन्तका स्मरण करनेवालोंको धर्म होता है । मोहसे तुम पाप कर्मका संचय मत करो ।

विषय-सूची

पूजा-वन्दना। संल्लेखनासे मरण। (१३) महाबलका देवकुलमें उत्पन्न होना। अवधि-ज्ञानसे वह सारी बात जान लेता है।

●

महापुराण

भाग २

पुप्फयंतविरइयउ महापुराणु

संधि १९

चिंतइ भरहेसरु महिपरमेसरु दविणें किं किर किज्जइ ॥
जइ णियमियचित्तहं एउं सुपत्तहं दियहि दियहि णउ दिज्जइ ॥ ध्रुवकं ॥

१

एक्कहिं दिणि पयणा[1]वियणिवइ वसुहाहिवु[2] णियमणि चिंतवइ ।
किं छज्जइ विणु चंदें गयणु किं छज्जइ छिण्णणासु[3] वयणु ।
किं छज्जइ णाणु णिरुवसमउं किं छज्जइ रज्जु अविक्कमउं[4] ।
किं छज्जइ तणय[5]विरहिउ कुलु किं छज्जइ पिक्कउं[6] कडुयफलु ।
किं छज्जइ भीरुहि गज्जियउं किं छज्जइ अडयणलज्जियउं ।
किं छज्जइ मयडहु भूसणउं किं छज्जइ अविणियरूसणउं[7] ।
किं छज्जइ हिमहयकमलवणु किं छज्जइ सलिल[8]विरहिउ घणु ।
किं छज्जइ परवसजीवें[9] जणु किं छज्जइ तिट्ठालुयदविणु ।

घत्ता—जं दिण्णु ण पत्तहु गुणगणवंतहु एहउं बुहयणु पेच्छइ ॥
मणुयहु मलबंधणु तं संचिउं[10] घणु[11] मुयहो पउ वि णउ गच्छइ ॥१॥

२

णउ ण्हाणु विलेवणु परिहणउं तेयविंदु[1] ण माणिउ घणथणउं ।
जवणाल[2]तंबसित्थइं खरइं ताइं वि सीसक्कभारधरइं ।
एसीरसु[3] दोण्णि कुलत्थकर्णे[4] अच्छउ कंजिउ धाडिवि सयण[5] ।
असरालु लोहधणु धरिवि मणे जेवंति खीणें[6] गरुए वि छणे ।
रिणु मग्गमाण हिंडंति पुरे जणरंजणु पत्तु करेवि करे ।
णिव्वरयरु[7] पूयफलु खंति किह एक्केण[8] जि रवि अत्थवइ[9] जिह ।

MBP give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza :—

श्यामरुचि नयनसुभगं लावण्यप्रायमङ्गमादाय ।
भरतच्छलेन संप्रति कामः कामाकृतिमुपेतः ॥ १ ॥

१. १. MBP °णामिय° । २. MBP वसुहाहिउ । ३. M किं ण तासु । ४. MBP णि विक्कमउं । ५. MBP तणएं रहिउ । ६. MBP कडुयउं पिक्कफलु । ७. MBP विप्पियरूसणउं । ८. MBP सलिलें रहिउ । ९. MBPK °जीवि । १०. B संचियघणु । ११. P मुयहहु पउ वि ण गच्छइ ।

२. १. MBP तियविंदु । २. MB जवणालवंत । ३. M एरसीरसु । ४ MBP °कणु । ५. MBP सयणु । ६. P हीण । ७. M णिब्भरु पूयप्फलु; BP णिव्वरु पूयप्फलु । ८. MP एक्केण वि; B पक्केण वि । ९. MBP अत्थमइ ।

पुष्पदन्त-विरचित महापुराण

(हिन्दी अनुवाद)

सन्धि १९

धरतीका परमेश्वर भरतेश्वर विचार करता है कि यदि संयत चित्तवाले सुपात्रोंको दिन-प्रतिदिन यह नहीं दिया जाता तो धनका क्या किया जाये ?

१

एक दिन राजाओंको अपने पैरोंमें झुकानेवाले उस पृथ्वीश्वरने अपने मनमें विचार किया, "क्या आकाश चन्द्रमाके बिना शोभा पा सकता है ? क्या नकटा मुँह शोभा देता है, क्या उपशम भावके बिना ज्ञान शोभा देता है ? क्या पराक्रमके बिना राज्य शोभा देता है ? क्या पुत्र-विहीन कुल शोभा पाता है ? क्या पका हुआ कड़वा फल शोभा पाता है ? क्या भीरु व्यक्तिकी गर्जना शोभा पाती है ? क्या वेश्याकी लज्जा शोभा पाती है ? क्या मृतकके आभूषण शोभा पाते हैं ? क्या अविनीतका रूठना शोभा पाता है ? क्या हिमसे आहत कमलवन शोभा पाता है ? क्या जलविहीन घन शोभा पाता है ? क्या दूसरोंके अधीन जीववाला मनुष्य शोभा पाता है ? क्या तृष्णा रखनेवालेका धन शोभा पाता है ?

घत्ता—बुधजनोंका कहना है कि जो धन गुणवान् बुद्धिवान् सुपात्रको नहीं दिया जाता, मनुष्यका वह संचित धन पापका कारण है और मरनेके बाद वह एक पैर भी नहीं जाता ॥ १ ॥

२

(कृपण व्यक्ति) न नहाता है, न लेप करता है, और न वस्त्र पहनता है, सघन स्तनोंवाले स्त्रीसमूहको भी नहीं मानता । जिसके पास, जौ के डण्ठलोंवाले तुषके भारसे युक्त, कठोर कुलथी-के कण और एक द्रोणी अलसीका तेल है, ऐसा कंजूस व्यक्ति अपने लोगोंको निकालकर रहता है । अपने मनमें व्यापक लोभ धारण कर, वह बड़े भारी महोत्सवके दिन दीनकी तरह खाता है । लोगोंको प्रिय लगनेवाले पात्रको हाथमें लेकर ऋण माँगता हुआ नगरमें घूमता रहता है । अत्यन्त सड़ी हुई सुपाड़ीको वह इस प्रकार खाता है कि जिससे एक सुपाड़ीमें ही सारा दिन समाप्त हो

पंचिंदियत्थु[10]° सुहुं खंचियउं लुद्धहिं अप्पाणउ वंचियउ ।
जरचीरणियासण फरुससिर दालिद्दिय सधण वि किविण णर ।
ण वियाणइ दुक्खंवी णियइ णियहत्थहु हत्थु ण पत्तियइ ।
बंधइ मेल्लइ पुणु पुणु मवइ वसु [11]गुंज्झपवेसहिं पुणु ठवइ ।
सा [12]सट्ठि ण पूरइ किह भरमि मणि जूरइ काइं दइव करमि ।
लोहिट्ठु दुट्ठु पाविट्ठु चलु पाहुणयहु उत्तरु देइ खलु ।
घत्ता—गेहिणि गय गामहो इच्छियकामहो मणु[13]° णं भल्लिइ भिज्जइ ॥
मज्झ वि दुक्खइ सिरु तुहुं आयउ घरु भणु एवहिं किं किज्जइ ॥२॥

३

किं किज्जइ थेरें कामुएण किं सत्थें [1]पावपुरिससुएण ।
[2]कुलउत्तएण किं णित्तवेण समएण वि किं किर णित्तवेण ।
अवि विज्जाहरवरकिंणरेण णिव्विणएं समएं किं णरेण ।
धरणियलरंधप[3]डिपूरएण किं लुद्धदविणपब्भारएण ।
सा [4]राई जा ससिविप्फुरिय सा कंता जा हियवइ [5]भरिय ।
सा विज्जा जा सयरु[6] वि णियइ तं रज्जु जम्मि बुहयणु जियइ ।
ते बुह जे [7]बुहहं ण मच्छरिय ते मित्त [8]णं जे विहुरंतरिय ।
तं धणु जं भुत्तउं दिणि जि दिणि जं पुणरवि दिण्णउं विहलयणि ।
घत्ता—सा सिरि जा गुणणय गुण ते जे गय [9]गुणिहिं चित्तु हयदुरियउ ॥
गुणि[10]° ते हउं मण्णमि पुणु पुणु वण्णमि जेहिं दीणु उद्धरियउ ॥३॥

४

इय चिंतिवि राएं दविणगइ हक्काराविय णाणा णिवइ ।
ते आइय संचियधम्मधण जे जोयकिरणगणसुद्धमण ।
त[1]ग्गुणपरिक्खसुपयासिरयं सज्जीयवीयणित्तंकुरयं ।
तरुपल्लवपिहियं पंगणयं णं वणसिरिदिण्णालिंगणयं ।
चप्पंति ण ते विरया गिहिणो परिपालियसावयवयविहिणो ।
कय जेहिं तसंतहुं तसहुं दय प[2]रंताविरि अलियवायविरयं[3] ।
णादिण्णउं कहिं वि समिच्छियउं णउ अण्णु कलत्तु णियच्छियउं[4] ।

---

१०. MBP °दियत्थ° । ११. MB गुज्झपएसहिं परिठवइ; P गुज्झपएहिं परिट्ठवइ । १२. M सिट्ठु । १३. MBP महु मणु भल्लिइ ।

३. १. MBP पावपसंसिएण । २. MBPK कुलउत्तएण । ३. MBP °परिपूरएण । ४. B रयणी । ५. B हरिय । ६. MBP सपरु । ७. M बहहिं ण मउच्छरिय; BP बुहहिं ण मच्छरिय । ८. P जे वि । ९. MBP गुणहिं । १०. M हउं गुण ते मण्णमि; B गुण हउं ते मण्णमि । P गुणि हउं ते मण्णमि ।

४. १. MB ते गुण° । २. MBP परताविर°; K °ताविरि but corrects it to ताविर । ३. MP and after this : परधणु परवत्थु दुगुंछियउ । ४. MBP and after this : दिण्णउं णियजोग्गु (P °जोगु) पडिच्छियउं, कुलवंतु विवाहिउ वंछियउ ।

जाये। पाँचों इन्द्रियोंके अर्थोंसे युक्त अपनेको स्वयं लोभियोंके द्वारा वंचित किया जाता है। पुराने कपड़ोंकी लंगोटी पहननेवाले और कठोर सिरवाले कंजूस लोग धनवान् होते हुए दरिद्र होते हैं। वे पास आती हुई नियतिको नहीं जानते। अपने हाथसे अपने हाथका विश्वास नहीं करते। वह बाँधता है, छोड़ता है, फिर बार-बार मापता है। फिर धनको गुह्य प्रदेशोंमें रख देता है, वह साठकी संख्या पूरी नहीं होती उसे कैसे भरूँ ? अपने मनमें पीड़ित होता है कि हे देव, क्या करूँ ? लोभी, दुष्ट, पापी और चंचल वह अतिथिको उत्तर देता है।

घत्ता—घरवाली गाँव गयी है, कामकी इच्छा रखनेवाला मेरा मन जैसे भालेसे भिद रहा है, मेरे सिरमें पीड़ा है, तुम घर आये हो, बताओ मैं इस समय क्या करूँ ॥२॥

३

बूढ़े कामुक व्यक्तिसे क्या किया जा सकता है ? पापी पुरुषके द्वारा सुने गये शास्त्रसे क्या ? लज्जासे शून्य कुलीन पुत्रसे क्या ? बिना तपके सम्यक्त्वसे क्या ? उदासीन विद्याधर और किन्नरसे क्या ? घमण्डोसे क्या ? धरणीतलके छिद्रोंको सम्पूरित करनेवाले, लोभीके धनके बढ़नेसे क्या ? रात वही है जो चन्द्रमासे आलोकित है, स्त्री वही है जो हृदयसे चाहती हो, विद्या वही है जो सब कुछ देख लेती है। राज्य वही है जिसमें विद्वान् जीवित रहता है, पण्डित वही हैं जो पण्डितोंसे ईर्ष्या नहीं करते, मित्र वे हो हैं जो संकटमें दूर नहीं होते। धन वही है जो दिन-दिन भोगा जाये, और जो फिर दीन-विकल जनोंको दिया जाये।

घत्ता—लक्ष्मी वही जो गुणोंसे नत हो, गुण वे जो गुणियोंके साथ जाते हैं, चित्त वह जो पापरहित होता है। मैं गुणी उनको मानता हूँ, और बार-बार कहता हूँ कि जिनके द्वारा दीनोंका उद्धार किया जाता है।" ॥३॥

४

धनकी गतिका, इस प्रकार विचार कर राजाने अनेक राजाओंको बुलवाया। वे आये जो धर्मधनका संचय करनेवाले और योगक्रिया-समूहसे शुद्धमनवाले थे। जो गुणोंकी परीक्षासे प्रकाशित हैं, जिनमें सजीवरूप बीज नित्य अंकुरित हैं, जो वृक्षोंके पल्लवोंसे आच्छादित हैं, ऐसे प्रांगणको, कि जिसका मानो वनश्रीने आलिंगन दिया है, जो विरक्त गृहस्थ नहीं रौंधते, जो श्रावकोंकी व्रतविधिका परिपालन करनेवाले हैं, जिन्होंने त्रसजीवोंके प्रति दया की है, जो दूसरों-को सन्ताप देनेवाली झूठ बातसे विरत हैं, जिन्होंने नहीं दिये गयेकी कभी भी इच्छा नहीं की, न

घरसंगपमाणु जेहिं गहिउ रयणीभोयणविरईसहिउ ।
दिसिविदिसागमे[5]णमाणकरणु भोगोवभोये[6]संखाधरणु ।
विरमणु अणत्थदंडासियउं भाविय‍उं जेहिं जिणभासियउं ।
घत्ता—सामाइउं पोसहु अतिहिपरिग्गहु कामकोहपरिहरणें ॥
किउ जेहिं पसँ[7]त्थहिं पवरघरत्थहिं सहुं सण्णासणमरणें ॥४॥

५

ते भरहें विप्प परिट्ठविय कर मउलिवि सइं सिरेण णविय ।
उववीयहु केरउ चिंधधरु दंसणहरि घल्लिउ एक्कु सरु ।
वयवंति णिरूविय दोण्णि सर सामाइयवड्ढि पुणु तिण्णि सर ।
पोसहवंतइ चत्तारि सर सचित्तविरत्तइ पंच सर ।
अणिसाभोयणि उं[1]दुमाण सर दढबंभचे[2]रंधरि सत्त सर ।
आरंभविवज्जिइ अट्ठ सर अपरिग्गहि कय णवसुत्त सर ।
अणुमोयणमुक्कइ दह जि सर एयारह सर हयमयणसर ।
उद्दिट्ठचायकारिहि विहिय ए दियवर राएं सुहुं णिहियं[3] ।
तं[4]बु बंभ जेण घोसंति जए बंभणकुलु संठिउ तेण वए ।
घत्ता—चिरु सव्वु जि माणुसु पुणु णीईवसु रिसहें खत्तु पवं[5]त्तिउ ॥
जिणपुज्जायारउ धम्मे[6]पियारउ भरहेण वि कउ सोत्तिउ ॥५॥

६

वणि वाणिज्जारउ जाणियउं किसियरु हलधारउ भाणियउ ।
सो सोत्तिउ जो जिणवरु महइ सो सोत्तिउ जो सु[1]तच्चु कहइ ।
सो सोत्तिउ जो ण दुट्ठु भणइ सो सोत्तिउ जो णं[2]उ पसु हणइ ।
सो सोत्तिउ जो हियँ[3]एण सुइ सो सोत्तिउ जो परँ[4]मत्थरुइ ।
सो सोत्तिउ जो णं[5] मासु गसइ सो सोत्तिउ जो ण सुयणि भसइ ।
सो सोत्तिउ जो जणु पहि थवइ सो सोत्तिउ जो सुतवें तवइ ।
सो सोत्तिउ जो संतहुं णवइ सो सोत्तिउ जो ण मिच्छु चवइ ।
सो सोत्तिउ जो ण मज्जु पियइ सो सोत्तिउ जो वारइ कुगइ ।
सो सोत्तिउ जो जिणदेसियउ पण्णासतिकिरियहिं भूसियउ ।
घत्ता—जो तिलकप्पासइं दं[6]व्वविसेसइं हुणिवि देव गह पीणइ ॥
पसु जीव ण मारइ मारय वारइ परु अप्पु वि समु जाणइ ॥६॥

---

५. B °गमणकरणु । ६. MBP °भोग° । ७. MBP समत्थहिं ।

५. १. MB उदुमाण । २. P °चेरु धरि । ३. MBP संणिहिय । ४. MBP तउ बंभु । ५. MBP पवत्तियउ । ६. MBPK धम्मवियारउ ।

६. १. M सुतच्च । २. P पसु णउ । ३. MBP हियवयणु सुणइ । ४. M परमत्थ मुणइ; P परमत्थु मुणइ । ५. B मासु ण ।

जिन्होंने दूसरेकी स्त्रीको कभी देखा, जिन्होंने अपने गृह संगके प्रमाणस्वरूप ग्रहण किया है, जो रात्रिभोजनकी विरतिसे सहित हैं। जिसने दिशा और विदिशामें जानेका परिमाण किया है, भोगोपभोगकी संख्या निर्धारित की है। अनर्थदण्डके आश्रयसे जिन्होंने विराम लिया है और जिन्होंने जिनेन्द्र भगवान् द्वारा भाषितका विचार किया है।

घत्ता—सामायिक, प्रोषधोपवास, अतिथिपरिग्रह तथा काम-क्रोधका परिहार किया है ॥४॥

५

ऐसे उन ब्राह्मणोंको भरतने प्रतिष्ठित किया, और हाथ जोड़कर सिरसे नमस्कार किया। उन्हें यज्ञोपवीतका चिह्न धारण करनेवाला बनाया। सम्यग्दर्शन धारण करनेपर एक व्रत, पाँच अणुव्रत लेनेपर दो व्रत निरूपित किये गये, सामायिकसे युक्त होनेपर तीन, प्रोषधोपवास करनेपर चार, सचित्ताचित्तसे विरत होनेपर पाँच, रात्रिभोजनके त्यागपर छह, दृढ़ब्रह्मचर्य व्रत धारण करनेपर सात, आरम्भका परित्याग करनेपर आठ, और अपरिग्रह करनेपर नौ, अनुमोदन छोड़नेपर दस, कामदेवको नष्ट करने और उद्दिष्टका त्याग करनेपर ग्यारह इस प्रकार राजाने सुखपूर्वक ये द्विजवर बनाये। चूँकि वे व्रत द्वादशविध तप या ब्रह्मको जय घोषित करते हैं इसलिए उन्हें ब्राह्मणकुलमें घोषित किया गया।

घत्ता—और भी जितने मनुष्य नीतिके वशमें थे, ऋषभने उन्हें क्षत्रिय घोषित किया। भरतने भी जिनकी पूजा करनेवाले और धर्मका प्रिय करनेवालेको ब्राह्मण बना दिया ॥५॥

६

वाणिज्य करनेवाला वणिक् जाना गया, हल धारण करनेवाला कृषक कहा गया, ब्राह्मण वह है जो जिनवरकी पूजा करता है, ब्राह्मण वह है जो सुतत्त्वका कथन करता है, वह ब्राह्मण है जो दुष्ट कथन नहीं करता, ब्राह्मण वह है जो पशुका वध नहीं करता, ब्राह्मण वह है जो हृदयसे पवित्र है, वह ब्राह्मण है जो मांस भक्षण नहीं करता, वह ब्राह्मण है जो स्वजनमें बकवास नहीं करता। वह ब्राह्मण है जो लोगोंको सुपथपर लगाता है, वह ब्राह्मण है जो सुन्दर तप तपता है, वह ब्राह्मण है जो सन्तोंको नमस्कार करता है, वह ब्राह्मण है जो मिथ्या नहीं बोलता, वह ब्राह्मण है जो मद्य नहीं पीता, वह ब्राह्मण है जो कुगतिका निवारण करता है, वह ब्राह्मण है जो जिनभगवान्‌के द्वारा उपदेशित त्रेपन क्रियाओंसे भूषित है।

घत्ता—जो तिल, कपास और द्रव्य विशेषोंको होमकर देवों और ग्रहोंको प्रसन्न करता है, पशु और जीवको नहीं मारता, मारनेवालेको मना करता है। परको और स्वयंको समान समझता है ॥६॥

७

सो सोत्तिउ जाणसु एक्कु जिह लक्खाइं दिएसहं तेण तिह ।
वण्णासमकोडिचडाविययइं गुणगणणाभेएं भावियइं ।
दिण्णाइं ताहं सुद्धासयइं भूसेप्पिणु वरकण्णासयइं
दिण्णाइं ताहं परतीरयइं सियसुहुमइं सिचयइं णीरयइं ।
दिण्णाइं ताहं मणिराइयइं कडिसुत्तकडयमउडाइयइं ।
दिण्णाइं ताहं मणमोहणइं घडपूरणदुद्धइं गोहणइं ।
दिण्णाइं ताहं देसंतरइं हयगयरहछत्तइं पंडुरइं ।
दिण्णाइं ताहं जियससहरइं धणकणभरियइं विविहइं घरइं ।
दिण्णाइं ताहं करभरधरइं सासणलिहियग्गहारपुरइं ।
आरामगामसीमइं सरइं दिण्णाइं ताहं णयरायरइं ।
घत्ता—महि कसणरवण्णी धवलि वि दिण्णी विप्पहं जिणतणुजाएं ॥
तिह जिह णउ खिज्जइ अज्जि वि दिज्जइ णिहिलें णिवइणिहाएं ॥७॥

८

अण्णहिं दिणि सुत्तें सयणहरे णरणाहें णिसि पच्छिमपहरे ।
दिट्ठी[2] दुक्किय सिविणावलिय आगामिदोसजुत्ति व मिलिय ।
सुपहायकालि गउ सज्जियउ केलासु गंपि जिणु पुज्जियउ ।
संथुउ परमेसरु परमपरु जिण तुहुं चिंतामणि अमरतरु ।
तुहुं सरसु रसायणु अमयमउ तुहुं मयरकेउ रणि लद्धजउ ।
तुहुं कामधेणु अक्खीणणिहि तुहुं पुरिसुत्तमु जणदिण्णदिहि ।
तुहुं सिद्धमंतु सिद्धोसहि वि तुह णामें णउ भक्खइ अहि वि ।
तुह णामें णासइ मत्तकरि कउं देंतु वि थक्कइ णरहु हरि ।
तुह णामें हुयवहु णउ डहइ परबलु गयपहरणु भउ वहइ ।
तुह णामें संतोसियखलउ तुट्टंति जंति पयसंखलउ ।
तुह णामें सायरि तरइ णरु ओसरइ कोहकंदप्पजरु ।
तुह णामें केवलकिरणरवि णीरोय होंति रोयाउर वि ।
घत्ता—ण फलइ दुस्सिविणउं जणि अवसवणउं तिहुवणभवणुक्किकट्ठइ ॥
पूरंति मणोरह गह साणुग्गह होंति देव पइं दिट्ठइ ॥८॥

---

६. MBP दब्भविसेसइं ।

७. १. B णीरियइं । २. MBPK धवल वि. । ३. MBP अज्ज ।

८. १. MBP सुत्तइ । २. MBP दिट्ठिय । ३. MP गमु । ४. MBP सुरसु । ५. MB रण° । ६. M कमु देंतु; B कउ देंतउ; P कमु देंतउ । ७. BP °संकलउ । ८. P सायरु । ९. MB तिहुयणु भुयणुक्किकट्ठइ ।

७

जिस प्रकार उस एक ब्राह्मणको जानते हो उसी प्रकार लाखों ब्राह्मणोंको समझो। उन्हें वर्णाश्रमकी परम्परामें सबसे ऊपर रखा गया, गुणोंके गणनाभेदसे उन्हें माना गया। उन्हें शुद्ध-भाववाली सैकड़ों उत्तम कन्याएँ विभूषित करके दो गयीं, उन्हें श्रेष्ठ किनारे दिये गये जो श्री-सुखमय थे और जलोंसे सिंचित थे। उन्हें मणिरत्नोंकी राशियाँ दी गयीं। कटिसूत्र, कड़े और मुकुट आदि दिये गये। उन्हें मनमोहन घड़ा भरकर दूध देनेवाली गायें दी गयीं। उन्हें देशान्तर, अश्व, गज, रथ और सफेद छत्र दिये गये। उन्हें चन्द्रमाको जीतने वाले, धान्यकणोंसे भरे हुए विविध घर दिये गये। उन्हें करभार धारण करनेवाली धरती और शासनके द्वारा लिखित अग्रहार नगर दिये गये। आराम, ग्राम सीमाएँ, और सर राजाके द्वारा प्रदान किये गये।

घत्ता—आदि जिनेन्द्रके पुत्र भरतने ब्राह्मणोंके लिए कृषिसे रमणीय भूमि और बैल (गाय) इस प्रकार दिये कि जिससे कि वह नष्ट न हो, और इसीलिए आज भी समस्त राजसमूहके द्वारा दान दिया जाता है ॥७॥

८

दूसरे दिन अपने शयनकक्षमें राजाने रात्रिके पिछले प्रहरमें एक अशुभ स्वप्नावलि देखी जो आगामी दोषयुक्तिके समान मिली हुई थी। प्रातःकाल वह सज्जित होकर गया और कैलास पर्वत-पर जाकर उसने ऋषभजिनकी पूजा और स्तुति की—"हे परमेश्वर परमपर जिन, तुम चिन्तामणि और कल्पवृक्ष हो, तुम अमृतमय सरस रसायन हो, युद्धमें लब्धजय तुम कामदेव हो, तुम कामधेनु और अक्षयनिधि हो, तुम जनोंके भाग्यविधाता पुरुषोत्तम हो। तुम सिद्धमन्त्र और सिद्धौषधिके समान हो, तुम्हारे नामसे साँप तक नहीं काटता। तुम्हारे नामसे मतवाला गज भाग जाता है। पैर रखता हुआ भी सिंह मनुष्यसे डर जाता है। तुम्हारे नामसे आग नहीं जलाती, गदा प्रहरण-से युक्त शत्रुसेना भय धारण करती है। तुम्हारे नामसे खल सन्तुष्ट हो जाते हैं, और पैरोंकी शृंखलाएँ टूट जाती हैं। तुम्हारे नामसे मनुष्य समुद्र तर जाता है। और क्रोध-कामका ज्वर हट जाता है। हे केवलज्ञान किरणोंवाले रवि, तुम्हारे नामसे रोगातुर मनुष्य नीरोग हो जाते हैं।

घत्ता—दुःस्वप्न नहीं फलता, और न अपश्रवण फलता है, त्रिभुवनरूपी भवनमें उत्कृष्ट तुम्हें देख लेनेपर मनोरथ सफल हो जाते हैं, और ग्रह भी सानुग्रह हो जाते हैं" ॥८॥

९

इय वंदिवि पुच्छइ[1] भरहवइ मइं दियवर णिम्मिय परमजइ।
होहिंति अहिंसपवित्तियर[2] कालेण किं णं[3] भणु तित्थयर।
किं अक्खमि हउं तुह केवलिहि णिसि दिट्ठहिं मइं सिविणावलिहिं।
फलु काइं भडारा वज्जरहि संदेहु महारउ अवहरहि।
परमेसर णाहिणरिंदसुउ पुण्णेण केण तुहुं अरुहु[4] हुउ।
पुण्णेण केण हउं चक्कवइ जायउ भारहभूयल[5]विजइ।
कंपावियसिहरिणियंबथलि पुण्णेण केण[6] बाहुबलि बलि।
उप्पण्णु पवट्टियदाणरहु पुण्णेण केण सेयंस[7]पहु।
पुण्णेण केण सोमप्पहहो हूयउ संभवु[8] सोमप्पहहो।
पुण्णेण केण पालियविणय संभूया सयल वि तुह तणय[9]।

घत्ता—ता[10] णवजलहरझुणि कहइ महामुणि सुणसु[11] पुत्त जं पुच्छिउ[12] ॥
पइं किउ दियसासणु [13]णयविद्धंसणु कालें होसइ [14]कुच्छिउ ॥९॥

१०

हा पुत्त काइं किउ पावमलु मारेप्पिणु मय खाहिंति पलु।
रमिहिंति जंणि[1] कीलइ सहरु[2] णिविहिंति सोमवाणउं महुरु।
लेहिंति सुयत्थिणि परघरिणि अण्णहु देहिंति वि णियतरुणि।
णउ दूसिहिंति पिज्जंतु महु ण वि दूसिहिंति णिव[3] पाणिवहु[4]।
कहिहिंति धम्मु जो जं करइ सो तेण जि कम्में उत्तरइ।
सूणागारहं वेसाउलहं अवरु वि पावंधहं राउलहं।
भणिहिंति कुलक्कमु पुण्णे[5] जहिं किं वण्णमि दुक्किउ पुत्त तहिं।
भणिहिंति गाइ देवय जलणु भणिहिंति पुहइ देवय पवणु।
वणसइ[6] देवय जल देवयइं भणिहिंति णत्त[7]भोयणवयइं।
मासहं मज्जइ परयारइं वि लिहिहिंति पुराणइं अवरइं वि।
एयइं[8] एयइं देविहि कियइं लइ पोसिहिंति जड दुक्कियइं।

घत्ता—सइं सकुलहु वंछिवि अवरु दुगुंछिवि जगि धीवरिखरिपुत्तहं ॥
देहिंति पहुत्तणु परमरिसित्तणु कयकवडागमधुत्तहं ॥१०॥

---

९. १. P पुछइ। २. MB °पवत्तियर°। ३. MBP णु। ४. P अरहंतु हुउ। ५. MB °भूबल°; P °भूअल°। ६. MBP केण हुउ बाहुबलि। ७. MBP सेयंसु। ८. MBP संभउ। ९. MBPK add after this मइं पइं जेहा होहिंति कइ (P पइं मइं), कइ हलहर हरि पडिसत्तु (B पत्तिसत्तु) कइ; MBP add futher तवभट्ठकामिणिहिं बद्धमइ (P तवभट्ठ य कामिणिबद्धरइ), कइ होसहिं रुद्द रउद्दमइ; कासु वि किर होसइ कवण गइ, भो मयणकरिंदमयाहिवइ; एउ (P इहु) सयलु वि अक्खहि परम जइ। १०. PK तो। ११. P णिसुणि। १२. MB पुच्छियउ; P पुंछिउ। १३. P णिय°। १४. MB कुच्छियउ।

१०. १. MB जण्णु; P जंणु। २. MBP सुहरु। ३. MBP णिव। ४. MBP पाणिवहु। ५. PK पुण्णु। ६. MBP वणसय। ७. M णित्त°। ८. MBP एयइं बेयइं।

९

इस प्रकार वन्दना करके, भरतका अधिपति भरत पूछता है—"हे परमयति, मैंने ब्राह्मण-वर्णकी रचना की है। वे भविष्यमें समयके साथ अहिंसाकी प्रवृत्तिवाले होंगे या नहीं ? हे तीर्थंकर, बताइए ? आप केवलज्ञानीको मैं क्या बताऊँ ? रात्रिमें मेरे द्वारा देखी गयी स्वप्नावलिका क्या फल होगा ? हे आदरणीय देव, कहिए और मेरा सन्देह दूर कीजिए ? हे परमेश्वर नाभि-राजके पुत्र, तुम किस पुण्यसे अरहन्त हुए हो ? किस पुण्यसे मैं चक्रवर्ती तथा भारतभूमि तलका विजेता हुआ हूँ ? पर्वतके नितम्बतटको कँपानेवाला बाहुबलि किस पुण्यसे बलवान् हुआ ? किस पुण्यसे दानरूपी रथका प्रवर्तन करनेवाला श्रेयांस राजा उत्पन्न हुआ ? किस पुण्यसे सोमप्रभके समान सोमप्रभ राजाका जन्म सम्भव हुआ ? किस पुण्यसे तुम्हारे सभी पुत्र विनयका पालन करनेवाले हुए ?"

घत्ता—तब नवमेघके समान ध्वनिवाले महामुनि ऋषभ कहते हैं—"हे पुत्र, तुमने जो पूछा है वह सुनो। तुम्हारे द्वारा निर्मित द्विजशासन, समयके साथ कुत्सित न्याय और नाश करनेवाला हो जायेगा" ॥९॥

१०

"हे पुत्र, पापकार्य क्यों किया। ये लोग (ब्राह्मण) पशु मारकर उसका मांस खायेंगे। यज्ञ-में रमण करेंगे, स्वच्छन्द क्रीड़ा करेंगे, मधुर सोमपान करेंगे। पुत्रकी कामिनी परस्त्रीका ग्रहण करेंगे, और दूसरोंके लिए अपनी पत्नी देंगे, मद्यपान करते हुए भी दूषित नहीं होंगे। हे राजन्, प्राणिवधसे भी वे दूषित नहीं होंगे। वे जो करेंगे उसीको धर्म कहेंगे, और वह भी उसी कर्मसे तरेगा। शून्यागारों, वेश्याकुलों और भी पापोंसे अन्धे राजकुलोंके कुलकर्मीको जहाँ धर्म कहा जायेगा, हे पुत्र वहाँ मैं पापका क्या वर्णन करूँ। वे गाय और आगको देवता कहेंगे। पृथ्वी और पवनको देवता कहेंगे, वनस्पतिको देवता और जलको देवता कहेंगे। मांसके नित्यभोजन-को व्रत कहेंगे, मद्य और परस्त्रियोंके साथ। और दूसरे-दूसरे पुराण वे लिखेंगे। देवीके द्वारा यह-यह किया गया, लो इस प्रकार मूर्ख पापोंका पोषण करेंगे।

घत्ता—स्वयं अपने कुलोंको चाहकर, दूसरेके कुलकी निन्दा कर धीवरी पुत्र (व्यास) गर्दभी पुत्र (दुर्वासा) जैसे कपटपूर्ण आगमोंकी धूर्तता करनेवालोंको परम ऋषित्व और प्रभुत्व देंगे ॥१०॥

११

एहा बंभण होहिंति सुय कि कियउ बप्प पइं पीणभुय।
पुणु भणइ भडारउ णउ रहमि सिविणोलि[1]फलु वि णिसुणहि कहमि।
पंचाणण जे तेवीस पइं दिट्ठा ते जिणवर मुणिय मइं।
वज्जियकुसमयकुसंगमलिण सुपसाहियधम्मतित्थपुलिण।
जो दिट्ठु सजंबुउ णट्ठु[2] मउ केसरिकिसोरु चउवीसमउ।
सो अंतमिल्लु[3] जिणु जोइयउ कामुयकुलिंगिपच्छाइयउ।
जे दिट्ठा हरि करि भारहय भज्जंतपट्ठि[4] कह कहे[5] व गय।
ते अंतिमे[6]रिसि भवपंकहरु धरिहिंति णं[7] ते चारित्तभरु।
जं दिट्ठउ जिण्णं[8]पण्णपडलु तं णीरसु होही धरणियलु।
जे दिट्ठा दुरयारूढ कइ ते णिव होहिंति कुकुल कुमइ।
जं दिट्ठु उलूयहं हुयउ रणु तं[9] होसइ बहुणयलीणु जणु।
जं दिट्ठउ भूयहं णच्चणउं करिही तं कुसुरसमच्चणउं।

घत्ता—जं मज्झि असुंदरु पइं सुक्खउं[10] सरु दिट्ठउ जलु तीरंतहिं[11] ॥
तं धम्मु महारउ उवसमगारउ थाही महिपच्चंतहिं ॥११॥

१२

जं दिट्ठइं रयणइं रयवहइं तं मुणिउलाइं मलसंगहइं।
पंचमजुगि[1] रिद्धिविवज्जियइं होहिंति सइंदियविज्जयइं[2]।
जं दिट्ठा पुंज्जिय[3] पइं कविल तं जे विड सुहे[4]लंपड कुडिल।
जे गुरु आसत्ता तरुणियणे पुज्जारुह ते होहिंति जणे[5]।
सिविणंतरि णिवकुलकुमुयससि पइं अवलोइय भो रायरिसि।
जे तरुण वसह कलकंठ[6]झुणि ते तरुणमणुय होहिंति मुणि।
जिह जिह जराइ तणु परिणविही तिह तिह धणास गुरुवी[7] हविही।
दुस्समकालइ तिट्ठाइ सहुं मरिहिंति थेर ध्रुवु[8] वयणु[9] महुं।

घत्ता—जं ससिपरिवेसउ दिट्ठु दुरासउ तं कलिकालि ससीसहं ॥
णउ णिव मणपज्जउ अवहिदुइज्जउ होही णाणु रिसीसहं ॥१२॥

---

११. १. MBP सिविणयफलु तुहुं णिसुणहि। २. MBP णट्ठमउ। ३. MBP अंतिमिल्लु। ४. P °पुट्ठि। ५. P कह वि। ६. MBP अंतिमि। ७. MBP ण जिणचारित्त°। ८. MBP जुण्ण। ९. P ता। १०. MBP सुक्कउं। ११. P तीरंतरहिं।

१२. १. K पंचमि जुगि। २. MBP °णिज्जियइं। ३. MBP पइं पुज्जिय। ४. MBP सुहड लंपड। ५. MB जिणे। ६. P कलयंठ°। ७. MBP गरुवी। ८. MBP धुउ। ९. MB वयण।

११

हे पुत्र, ये ब्राह्मण इस प्रकार होंगे। स्थूल बाँहोंवाले तूने इनका निर्माण क्यों किया ?" आदरणीय जिन पुनः कहते हैं—"मैं छिपाकर कुछ भी रखूँगा नहीं। स्वप्नावलिका फल भी कहता हूँ, सुनो। तुमने जो तेईस सिंह देखे, मैंने जान लिया कि वे जिनवर देखे हैं, जो खोटे सिद्धान्तों और खोटी संगतिकी मलिनताओंसे वर्जित और धर्मतीर्थके पुलिनको प्रसाधित करनेवाले हैं। जो तुमने जम्बूक सहित नष्टमद सिंहशावकको देखा है चौबीसवाँ, वह तुमने अन्तिम जिनवरको देखा है—जो कामुक और खोटे लिंगधारियोंका आच्छादन करनेवाले हैं। और जो तुमने भारसे आहत भग्नपीठवाले जाते हुए अश्वों और गजोंको देखा है, वे भवरूपी कीचड़को हरण करनेवाले अन्तिम मुनि हैं, जो चारित्रके भारको धारण नहीं करेंगे। तुमने जो जीर्ण पत्रपटल देखा है, वह यह कि धरणीतल नीरस हो जायेगा। जो तुमने गजोंपर आरूढ़ वानरोंको देखा है, उससे राजा खोटे कुल और खोटी मतिके होंगे। और जो तुमने उल्लुओंमें हुआ युद्ध देखा, उससे लोग बहुत-से नयोंमें लीन हो जायेंगे। जो तुमने भूतोंका नाचना देखा, उससे खोटे देवोंकी पूजा की जायेगी।

घत्ता—जो तुमने बीचमें असुन्दर और सूखा सरोवर और किनारोंके अन्तमें जल देखा, उससे हमारा उपशम करानेवाला धर्म धरतीके किनारों पर होगा ॥११॥

१२

जो तुमने धूलधूसरित मणिरत्न देखे, वे मलसे सहित मुनिकुल हैं, पाँचवें कालमें ये ऋद्धियोंसे रहित स्वेन्द्रिय चेतना (विद्या) वाले होंगे। और जो तुमने कपिलको पूजित होते हुए देखा वे विट शुभलम्पट और कुटिल जन हैं। जो गुरु तरुणीजनमें आसक्त हैं वे लोगोंमें पूजाके पात्र होंगे। हे राजर्षि, जो तुमने स्वप्नमें नृपकुल कुमुदचन्द्र देखा और जो कलकण्ठध्वनिवाले तरुण बैल देखे, उससे तरुणजन मुनि होंगे, जैसे-जैसे बुढ़ापेमे शरीर परिणत होगा, वैसे ही वैसे लोगोंमें भारी धनाशा होगी। दुषमा कालमें मुनि लोग तृष्णाके साथ मरेंगे यह मेरा ध्रुवकथन है।

घत्ता—और जो तुमने दुष्ट फलदायी चन्द्र परिवेश देखा है, वह हे नवनृप, कलिकालमें शिष्यों सहित मुनियोंका मनःपर्ययज्ञान और दूसरा अवधिज्ञान होगा ॥१२॥

१३

जं दिट्ठउ धवलहं तणउ गणु तं चरिही णउ एक्कु जि सवेंणु ।
संघाडएण भमिहिंति जइ जाणेप्पिणु दुस्समकालगइ ।
जं पइं सिविणुल्लइ तक्कियउं जं दिणयरमंडलु ढंकियउं ।
जं मेहहिं जगु अंधारियउ तं केवलु पुरउ णिवारियउ ।
जो दिट्ठउ सुक्खउ ढंखंतरु सो णरणारिहिं दुच्चरित्तंभरु ।
पुत्तइं वल्लंघियपिउवयइं होहिंति कलत्तइं पररयइं ।
किउ काइं वि णउ सहिहिंति परे काणीण दीण खल घरि जि घरे ।
होहिंति मित्त कड्ढियवइर पिप्पलबबूलपायेव खयर ।
होहिंति विडंबि णिप्फल विरस होहिंति मुणि वि बद्धामरिस ।
घत्ता—जिह जिह जिणु जंपइ वयणु समप्पइ भरहि भुवणपंकयरवि ॥
तिह तिह तमु पहरइ दसदिसु पसरइ कुंदपुप्फदंतच्छवि ॥१३॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे भरहसिविणयसंसयाउच्छणं णाम एक्कुणवीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥१९॥

संधि ॥१९॥

१३. १. MBP समणु । २. MBT ढंक° । ३. P दुचरित्तु । ४. MBPT वड्ढिय° । ५. MB °पायर । ६. MBP विडव । ७. MB भुवणु । ८. P दसदिसि । ९. MBP भरहसंसयाउच्छणं ।

१३

जो तुमने बैलोंका गण देखा है उससे एक भी श्रमण विचरण नहीं करेगा। यति लोग दुषमा कालकी गति जानकर समूहमें विचरण करेंगे। जो तुमने स्वप्नमें दिनकर-मण्डलको ढँका हुआ देखा है, वह मेघोंसे अन्धकारमय है, और केवलज्ञान सामनेसे हटा लिया गया है; और जो तुमने सूखा पत्र-पुष्प-फलरहित वृक्ष देखा है वह नर-नारियोंका दुश्चरितका भार है। पुत्र पिताके वचनोंका उल्लंघन करनेवाले होंगे। स्त्रियाँ दूसरेमें रति करनेवाली होंगी। दूसरे लोग कुछ भी किया हुआ सहन नहीं करेंगे, कुमारीपुत्र दीन और खल घर-घरमें होंगे। मित्र वैर निकालनेवाले होंगे। पीपल, बबूल और खदिर (खैर) वृक्ष होंगे एकदम विरस। मुनि भी कषाय बाँधनेवाले होंगे।"

घत्ता—जैसे-जैसे भुवनकमलरवि जिन कहते हैं और वचन समर्पित करते हैं, वैसे-वैसे भरतमें अन्धकार नष्ट होता है, और कुन्दपुष्पके समान उनके दाँतोंकी कान्ति दसों दिशाओंमें प्रसरित होती है ॥१३॥

इस प्रकार त्रेसठ महापुरुषोंके गुणालंकारोंवाले इस महापुराणमें महाकवि पुष्पदन्त द्वारा विरचित एवं महाभव्य भरत द्वारा अनुमत महाकाव्यका भरतविनय और संशयोच्छेदन नामका उन्नीसवाँ अध्याय समाप्त हुआ ॥ १९ ॥

संधि २०

रिसहेँ भरहहु भासियेइं[1] चिरु एवहिँ हउं गुज्झु ण रक्खमि ॥
भासइ गोत्तमु सेणियहो सुणि तिसट्ठिपुराणइं अक्खमि ॥ ध्रुवकं ॥

१

तहिँ तइया देवें वुत्तु एम णिसुणहि णंदण हो मणुयदेव ।
वेल्लोक्कु[2] देसु पुरु रज्जु तित्थु तेवु दाणु गईहलु[3] सुहपसत्थु ।
अट्ठ वि पारंभियपुण्णठाणि साहेवा होंति महापुराणि ।
लोलंति पलोइज्जंति जेत्थु दव्वइं तें[5] लोउ भणंति एत्थु[6] ।
सो केण वि किउ[7] ण कया वि धरिउ जीवाजीवहं णिक्खुंभु[8] भरिउ ।
चलु णिच्चलु सो ससहावघडिउ आयासणिवासु वि णेय पडिउ ।
बालिस कहंति जडयणहं हेउ देवें सिट्ठारें कियेउ[9] लोउ ।
दव्वाइं लोयउप्पायणाइं महिमारुयवेसाणरवणाइं ।
जइ णत्थि ताइं तो लहइ केत्थु णीरूवहु होइ णिरु[10] वि वत्थु ।
किं गयणि होइ पंकयपवित्ति दीवाउ दीवि पज्जलइ वत्ति ।
धम्मत्थकाम णउ अत्थि जासु कहिँ लब्भइ इच्छापसरु तासु ।
णिक्किरियहु कहिँ किरियाविसेसु णिक्कलुसहु होइ ण हरिसु रोसु ।
विणु तिट्ठा[11] तंतें णउ फलंति किह करणहरणबुद्धीउ होंति ।
विणु छत्तें किं सांवडइ[12] छाहि सिवि[13] लग्गी किं कत्तारवाहि ।

घत्ता—कुंभहु भिण्णउ कुंभयरु करउ कुंभु तं महु मणि भावइ ॥
सिवेँ[14] अप्पेंणु[15] जगु अप्पउं जि करिवि काइं गुणवंतहं सावइ ॥१॥

MBP give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza ;-

फणिनि विमुह्यतीव मेचकरुचि कचनिचयेषु योषिता-
मलकिषु मूर्च्छतीव हसतीव तमालतलेषु पुञ्जितम् ।
मदमुचि माद्यतीव लोलालिनि वरकरिगण्डमण्डले
दिशि दिशि लिम्पतीव पिबतीव निमीलयतीव खञ्जणे ॥

P Reads खण्डणे for खञ्जणे । GK do not give it ।

१. १. P भासियए । २. MBP तेलोक्क । ३. MBP तवदाणगईहलु । ४. MP सहु । ५. MBP तं लोउ । ६. P तेत्थु । ७. MBP किउ केण वि ण धरिउ । ८. MB णिक्खुत्तु; P णिखुत्तु; T णिक्खुब्भा निरंतरम् । ९. K कयउ । १०. MBP ण रूवि वत्थु; K ण णरु वि वत्थु and gloss नरोऽपि वस्त्रं पि न भवति । ११. MBP तिट्ठातत्तें; T तृष्णा करणहरणाभिलाषः सैव तन्त्रम् । १२. MBKT सावडइ; P छावडइ । १३. P लग्गउ । १४. MBP सिउ । १५. P अप्पाणु ।

सन्धि २०

"ऋषभके द्वारा भरतसे (पहले) जो कुछ कहा गया, उसे मैं इस समय छिपाकर नहीं रखूँगा। सुनो, मैं त्रिषष्टि पुराण कहता हूँ।"

१

तब वहाँ ऋषभदेवने इस प्रकार कहा, "हे मनुष्य देवपुत्र सुनो, पुराणमें—त्रिलोक-देश-पुर-राज्य-तीर्थ-तप-दान-शुभ-प्रशस्त गति फल आठों प्रारम्भिक पुण्यस्थान आदि बातें कही जाती हैं। जिसमें द्रव्य स्थित रहते हैं और दिखाई देते हैं, उसे लोक कहा जाता है। उसे न तो किसीने बनाया है, और न वह किसीके द्वारा धारण किया गया है। वह निरन्तर जीव-अजीवोंसे भरा हुआ है, चल और अचल वह अपने स्वभावसे रचित है। तथा आकाशमें स्थित होते हुए भी वह गिरता नहीं है। लेकिन मूर्ख जड़जनोंको इसका कारण बताते हैं कि सृष्टि करनेवाले देवने इस लोकका निर्माण किया है। पृथ्वी, पवन, अग्नि, जल और लोकके उपादान द्रव्य यदि नहीं हैं, तो वह स्रष्टा उन्हें कहाँ पाता है? निराकारसे क्या कोई वस्तु हो सकती है? क्या आकाशमें कमलोंकी रचना हो सकती है। दीपकसे दीपकमें बाती जलती है? परन्तु जिसमें धर्म, अर्थ और काम नहीं है, उसमें इच्छाका प्रसार कैसे हो सकता है। निष्क्रियमें क्रिया विशेष कैसे हो सकती है, जो निष्पाप है, उसमें हर्ष और क्रोध नहीं हो सकता। तृष्णारूपी तन्त्रके बिना फल नहीं हो सकते। उसके बिना (करना-हरना) आदि बुद्धियाँ नहीं हो सकतीं। क्या बिना छत्रके छाया आ सकती है? शिवको कर्ताकी व्याधि किस प्रकार लग गयी।

घत्ता—घड़ेसे भिन्न कुम्भकार घड़ेको बनाता है, यह बात मुझे जँचती है। शिव अपनेसे विश्वकी रचना करता है, फिर गुणवानोंको शाप क्यों देता है? ॥१॥

२

विंणु घडयारेण सरूव लेइ मिप्पिंडउ जइ सइं कलसु होइ ।
तो एक्कु कम्मु कत्तारु भणमि णं तो पुणु भेयविभिण्णु गणमि ।
जइ ईसरु भुवणयलहु णिमित्तु तो तासु कवणु तंगुणविचित्तु ।
जइ णिच्चु ण तो परिणामरिद्धि णिप्परिणामहु कहिं कम्मसिद्धि ।
विरएप्पिणु भंजेइ भुवणकोसु जइ एहो दीसइ कील तासु ।
जयं सयल वि पसु णिक्किरिय करइ संघारसमइ ससरीरि धरइ ।
पुणु पासु ताहं संजोयमाणु पावेण ण लिप्पइ किं अयाणु ।
जइ लिप्पइ णउ दुरिएण सिद्‌धु तो किं अयसिरलुंचणि असुद्‌धु ।
जइ पभणह ण सिवुं सिवंसु चंडु तो णाउं होइ किं हेमखंडु ।
पुरदाह वइरिवह रुहिरपाणु णच्चेवउ किं संतहु विहाणु ।
परियाणिउं होंतउ जइ हरेण तो दाणव णिम्मिय काइं तेण ।
जइ वच्छल्लेण जि कियउ लोउ तो किं ण कियउ सव्वहु विहोउ ।

घत्ता—जिणंणाहेण ण दिट्ठाइं मिच्छाविसबिंदुयणीसंदइं ॥
किं वण्णियइ कुवाइयहं सिवगयणारविंदमयरंदइं ॥२॥

३

अण्णाणु ण याणइ सइं जि मग्गु णिव णरयविवरु सग्गापवग्गु ।
जइ जाइ जीउ सिवपेरणाइ तो किं कयाग्यइ तवभावणाइ ।
को जाणइ केही हरहु चेट्ठ होसइ भीसण णिट्ठवियइट्ठु ।
कम्माणुय सा जइ भणसि एम ता पलइ सुयण संहरइ केम ।
माहेसर किं गोवइ थवंति जड मत्त पिसल्लय किं चवंति ।
अणिबद्धउं महु णरजम्मयारि पिउ बंभयारि जणणि वि कुमारि ।
जिह सिवु तिह बंभु ण विण्हु अत्थि विणु हत्थिउलेण ण होइ हत्थि ।
विणु णरसंताणें मणुउ केम अणिहणु अणाइ जगु सिद्धु एम ।
सत्तेक्कपणेक्कसुरज्जुपिहुलि अहमज्झउड्ढभुवणग्गकुयलि ।
वेत्तासणझल्लरिमुरयरूवि चोद्दहकेयाउच्छेहभावि ।
तहु मज्झि परिट्ठिउ तिरियलोउ गयसंखदीवजलणिहिसमेउ ।
एक्केण एक्कु वेढियउ ताम छेइल्लु सयंभूरमणु जाम ।

२. १. K विण । २. MB घडयारएण । ३. MBP सरूउ । ४. MBP मिहपिंडउ । ५. MT तंगुणु विचित्तु- । ६. MBP मण्णइ । ७. M जइ जयल; K जइ सयल । ८. P अयसिरि लुंचणि । ९. MBP सिउ । १०. MBP जिणणाहेण वि । ११. P दिट्ठियइं ।

३. १. MBP कयाइ । २. MBP होही । ३. MBPT कम्माणुवसा । ४. MPK अणिबद्धइं । ५. MBP बंभणु विण्हु । ६. MBP °भुयणंतकुयलि । ७. M °मरवरूवि; BP मुरवरूवि । ८. BP चउदह° । ९. MB वि ठियउ । १०. MBP छेयल्लु ।

२

घड़ा यदि बिना कुम्भकारके स्वरूप ग्रहण कर लेता है, और मिट्टीका पिण्ड स्वयं कलश हो जाता है, तो मैं कर्ता और कर्मको एक कहता हूँ और नहीं तो भेदसे दोनोंको भिन्न मानता हूँ। यदि ईश्वर भुवनतलका निमित्त है तो उसका कर्ता कौन है? यदि वह नित्य है तो उसमें परिणामवृद्धि नहीं हो सकती। परिणामरहितके कर्मसिद्धि कैसे हो सकती है? भुवनकोषकी रचना कर यदि वह उसे नष्ट कर देता है, यदि उसकी ऐसी क्रीड़ा है; यदि वह समस्त जग और जीवोंको निष्क्रिय होकर भी बनाता है, और संहारके समय अपने शरीरमें धारण कर लेता है, उनके बन्धनका संयोग करता हुआ वह पापसे लिप्त नहीं होता? तो क्या वह अज्ञानी है? यदि वह सिद्ध है और पापसे लिप्त नहीं होता तो फिर ब्राह्मणका शिर काटनेसे वह अशुद्ध क्यों है? यदि यह कहते हो कि शिव नहीं शिवका अंश चण्ड होता है, तो क्या हेमखण्ड नाग हो सकता है? (वह कहलायेगी शिवकला ही) नगरदाह, शत्रुवध, रक्तपान और नृत्य करना क्या यह सन्तोंका विधान है? यदि शिवके द्वारा परित्राण किया जाता है, तो उसने फिर दानवोंकी रचना क्यों की? यदि उसने वत्सलभावसे लोककी रचना की, तो उसने सबके लिए विशिष्ट भोग क्यों नहीं बनाये?

घत्ता—जिससे मिथ्यात्वरूपी विषकी बूँदे झरती हैं, कुवादियोंके ऐसे शिवरूपी आकाश-कमलके मकरन्दोंको जिन भगवान्‌ने नहीं देखा है, उनका क्या वर्णन किया जाये ॥२॥

३

अज्ञानी स्वयं अपना मार्ग नहीं जानता, नरक-विवर-स्वर्ग और अपवर्ग यदि जीवके लिए शिवकी प्रेरणासे होते हैं, तो फिर की गयी तपकी भावनासे क्या? कौन जानता है कि शिवकी चेष्टा कैसी है, क्या वह इष्टको नष्ट करनेवाली भीषण होगी? यदि यह कहते हो कि वह कर्मके अनुसार होती है, तो वह स्वजनोंका प्रलयमें संहार क्यों करता है? शैव उसे गोपति (इन्द्रियोंका स्वामी) क्यों कहते हैं? जड़, पिशाच और मत्त असम्बद्ध ये मुझसे क्या कहते हैं? नर जन्म देनेवाला पिता ब्रह्मचारी है और माता भी कुमारी है। जिस प्रकार शिव, उसी प्रकार ब्रह्मा और विष्णु भी नहीं हैं। हस्तिकुलके बिना हाथी नहीं हो सकता। इसी प्रकार बिना मनुष्य परम्पराके मनुष्य कैसे? इस प्रकार जग अनादि-निधन सिद्ध हो गया।" सात, एक, पाँच और एक रज्जू विस्तारवाले क्रमशः अधोलोक, मध्यलोक, ऊर्ध्वलोक (ब्रह्म-ब्रह्मोत्तर स्वर्ग तक) और उसके आगेके लोकका भूतल है। अधोलोक वेत्रासनके समान, मध्यलोक झल्लरी और ऊर्ध्वलोक मृदंगके समान, कुल चौदह रज्जू प्रमाण ऊँचा है। उसके मध्यमें तिर्यंच लोक बसा हुआ है, जो असंख्य द्वीपों और समुद्रोंसे सहित है। एकने एकको वहाँ तक घेर रखा कि जहाँ तक स्वयम्भूरमण समुद्र है।

घत्ता—तहिं लवणण्णवमेहलइ[11] मंदरमउडें[12] मंडिउ[13] भावइ ॥
जंबूदीउ पसिद्धु[14] जगि सयलहु दीवहु राणउ णावइ ॥३॥

४

दहखेत्तभाय जहिं रिद्धिवंत   छव्वरिसधारि वरसाणुमंत[1] ।
दढकुलिसकवाडंचियपहाइं[2]   चउदारहं चोद्दह णइमुहाइं ।
सप्पुरिसचित्तु जिह तिह विसालु   परिवड्ढियमरगयरयणडालु ।
फलिहमयकुसुममंजरिसुसेउ   पवरिंदणीलमयमहलणिकेउ[3] ।
जंबूतरु जंबूदेवठाणु   जसु देवहिं[4] दिट्ठउ ध्रुवु[5] णिवाणु ।
णं[6] जगलच्छिहि भूसणवियार   जसुवरि भमंति दो चंदसूर ।
णक्खत्तहं संख ण मुणि भणंति   अम्हारिस जड कइ किं मुणंति ।
तहिं दीवि मेरुपच्छिमदिसाहि   सीओयहि जलकीलियझसाहि ।
घत्ता—दक्खिणतीरि[7] रम्मि विउले णीलइरिहि उत्तरदिसि[8] मंडिवि ॥
गंधेलु[9] णामें विसयविडु थिउ महिवहु णावइ अवरुंडिवि ॥४॥

५

जो पारियायचंपयकलंब[1]मुचुकुंदकुंदमंदारसारसेरिंधगंधगुमुगुमियमहुयराली[2]-मिलंतवयमोरकीरकलहंसकुरर[3]कारंडकोइलारावरम्मो ॥१॥

जो मत्तदंतिगंडयलगलियमयतुप्पबिंदु[4]चित्तलियवारिवियरंतणहंततियसिंद-कामिणीसिहिणघुसिणपिंगलियफेणसोहियसरंतो ॥२॥

जो विविहधण्णफलणमियछेत्तकणसुरहिपरिमलामोयघुलियसउणउलकुद्ध-हलिणीविमुक्कढोक्करणकलरवोदिण्णकण्णथियचरणहरिणसंछण्णसीममग्गो ॥३॥

जो कलवकंगुजवमुग्गमाससंतुट्ठमंथरोमंथ[6]माणगोमहिसोह[7]दुब्भंतदुद्धघयदहिय-वाविमज्जंतपंथियसमूहो[8] ॥४॥

जो कुंदचंदकिरणाहिरामसामारमंतगोवालगोवियागीयगेयरसवसविसण्णसुण्हा-णिहित्तणीसासतावविहडंतगोट्ठिसोहंतगोट्ठो[9] ॥५॥

जो वसहसिंगखयखोल्लमहियलुच्छलियसरसथलकमलमंदमयरंद[10]पुंजपिंजरियतुं-गणग्गोहरोहपारोहडालडोल्लायमाण[11]जक्खीविलुंपियासण्णपामरोहो ॥६॥

---

११. MBP लवणंबुहि° । १२. MP मंदिर° । १३. P वेढिउ । १४. MBP पसत्थु ।

४. १. T साणुवंत । २. PT °कवाडइं चियपहाइ । ३. MBP °मेहलणिकेउ । ४. MBP देवें । ५. MBP धुउ । ६. MBP जगलच्छिहि णं । ७. MBP उत्तरतीरि । ८. MBP दक्खिणदिसि; T सीतोदाया उत्तरदिशि इति संबन्धः; दक्षिणतीरे णीलइरि इति संबन्धः । ९. MBPK गंधिलु ।

५. १. MBP° कयंब° । २. MBP °महुयरोलो° । ३. MB °कुरल°; P °कुरल° । ४. B °मयरुप्पबिंदु°; P °मयतोयबिंदु but gloss स्निग्ध । ५. MBP °भरिय° । ६. M °संछरोमंथ°; BP °सच्छरोमंथ° । ७. K °माहिसोह° । ८. MBP °मज्जंतजंतपंथिय° । ९. M °गोहो । १०. MP °मयरंदपुंजरिय° । ११. MBP °डोलायमाण° ।

घत्ता—उसमें लवण समुद्रकी मेखलासे घिरा हुआ और मन्दराचलके मुकुटसे शोभित सब द्वीपोंमें श्रेष्ठ जगमें प्रसिद्ध जम्बूद्वीप है ॥३॥

४

उसके ऋद्धिसे सम्पन्न दस क्षेत्रभाग हैं (भरत, हैमवत, हरि, रम्यक्, हैरण्यवत् और ऐरावत, पूर्वविदेह, अपरविदेह, कुरु और उत्तरकुरु)। श्रेष्ठ शिखरवाले छह कुलधर पर्वत हैं। दृढ़ वज्र किवाड़ोंसे जिनके पथ अंचित (नियन्त्रित) हैं, ऐसे चार द्वार और चौदह नदीमुख हैं। वहाँ जम्बूदेवका स्थान जम्बूवृक्ष है जो सत्पुरुषके चित्तकी तरह विशाल है, जिसकी मरकत रत्नोंकी शाखाएँ फैली हुई हैं, जो स्फटिकमय कुसुम मंजरियोंसे शोभित है और प्रवर इन्द्रनील मणियोंके फलोंका घर है, जिसके निर्माण संस्थानको निश्चित रूपसे देवों द्वारा देखा गया है। उसके ऊपर दो चन्द्रसूर्य घूमते हैं, जो मानो निश्चित रूपसे विश्वरूपी लक्ष्मीके भूषणविकार हैं। नक्षत्रोंकी संख्या मुनि नहीं बताते, तो फिर हम-जैसे जड़कवि उसका क्या विचार कर सकते हैं? उस द्वीपके सुमेरु पर्वतकी पश्चिम दिशामें सीतोदधि है जिसमें मत्स्य जल-क्रीड़ा करते हैं,

घत्ता—उसके रम्य और विशाल दक्षिण तटपर, नीलगिरिकी उत्तर दिशाको अलंकृत कर, गंधेलु नामका विषयविड है जो मानो धरतीरूपी वधूको आलिंगित करके स्थित है ॥४॥

५

जो पारिजात, चम्पक, कदम्ब, मुचुकुन्द, कुन्द, मंदार, सार और सैरन्ध्रके पुष्पोंकी गन्धसे गुनगुनाती हुई भ्रमरावली, और मिलते हुए बया, मयूर, कीर, कलहंस, कुरु, कारण्ड तथा कोयलोंके शब्दोंसे सुन्दर हैं ॥१॥

मदवाले हाथियोंके गण्डस्थलसे झरते हुए मदरूपी घीके बिन्दुओंसे रंग-बिरंगे जलमें विचरण करती और नहाती हुई, देवांगनाओंके स्तनोंके केशरसे पीले हुए फेनसे जिसके सरोवरोंके किनारे शोभित हैं ॥२॥

जिसके सीमामार्ग विविध धान्यफलोंसे झुके हुए क्षेत्रोंके कणोंके सुरभित परिमलके आमोदसे चंचल पक्षियोंके समूहसे क्रुद्ध कृषकबालाके द्वारा किये गये छू-छू करनेके कलरवके प्रति कान देनेके कारण, स्थिर चरणवाले हरिणोंसे आच्छन्न हैं ॥३॥

जहाँपर धान्य, कंगु, जौ, मूंग और उड़दसे सन्तुष्ट, और मन्द-मन्द जुगाली करते हुए गौ-महिष-समूहसे दुहे जाते हुए दूध-दही और घीकी वापिकाओंमें पथिकजन स्नान कर रहे हैं ॥४॥

जहाँके गोठ पूर्णचन्द्रकी किरणोंसे सुन्दर निशामें क्रीड़ा करते हुए गोपाल और गोपालनियोंके द्वारा गाये गये गेयरसके वशसे दुःखी वधुओंके द्वारा मुक्त निःश्वासोंके सन्तापसे नष्ट होती हुई गोष्ठियोंसे शोभित हैं ॥५॥

जहाँ वृषभोंके सींगोंसे क्षत गड्ढेवाली धरतीसे उछलते हुए सरस स्थलकमलों (गुलाब) के मन्द पराग समूहसे पीले और ऊँचे वटवृक्षोंके आरोहों-प्रारोहों और शाखाओंपर झूलती हुई यक्षिणियोंके कारण निकटवर्ती पामर जनसमूह लुप्त हो गया है ॥६॥

जो खयरचंचुहयपडियपिक्कमायंदगोच्छयावसवाणरोमुक्कधीरबुक्कारतसियणासंतरायरमणीपयग्गपविलुलियणेउरालग्गहेमरयणंसुफुरियवेल्लीहरंतो ॥७॥

जो रत्तचूलकीलाविथंभणुड्डाणमेत्तणिवसंतगामपुरणयरखेडकव्वडमडंबसंवाहणाइरमणीयभूपएसो ॥८॥

जो हीरणारसीहारणालसंभवकुवाइकय[12]समयविरहिओ वीयरायणतोयधोयलोयंतरंगसुद्धो सहा[13]वसोम्मो ॥९॥

जो घोरवीरतवचरणकरणपरिणयमुणिंदपायारविंदवंदणपसत्तणरमिहुणगरुअचारित्तभत्तिविद्दवियविसमपावावलेवो[14] ॥१०॥

घत्ता—[15]जहिं वेयड्ढमहासिहरि मज्झि परिट्ठिउ दीसइ केहउ ॥
रुप्पयदंडउ घल्लियउ पुहइ मवंतें विहिणा जेहउ ॥५॥

६

तहिं उ[1]त्तरसेढिहि रमियखयरि   अलयाउरि णामें अत्थि णयरि ।
प[2]प्फुल्लियसयदलपरिमलेण   परिवेढिय जा परिहाजलेण ।
पडिवक्खचित्तकयदूसणेण   जा सोहइ णाइ णियासणेण ।
आबद्धें रयणविचित्तएण   पायारकणयकडिसुत्तएण ।
णाणादुवारमणितोरणेहिं   णं छज्जइ कंठविहूसणेहिं ।
दीसइ णंदणवणणीलकेस   पुरि णं अव[3]यरिय अउव्व वेस ।
चूलामणिचुंबियणहयलाइं   जहिं घरइं सत्तभूमीयलाइं ।
णं धूव सुधूमें णीससंति   णं मुत्तावलिदंतेहिं हसंति ।
णं अलिझंकारें सरं[6] गुणंति   णं गुरुगवक्खकण्णहिं सुणंति ।
धयवड णं णियकरयल धुणंति   णं सिहिरवेहिं के के भणंति ।
अँम्हहुं सारिच्छा दिव्वगेह   जहिं सिहरोलंबियणीलमेह ।
पवसियपियाहि पेल्लियकरेहिं   संतावयार तलतंबिरेहिं ।

घत्ता—अमलियमंडणु मुहकमलु विरहिणीइ मणिभित्तिहि दिट्ठउं ॥
संझंइ सुत्तविउद्धियइ जहिं अप्पउं मण्णिउ णिक्किट्ठउं ॥६॥

७

जहिं पोमरायपहणिरसियाइं   बहुपायालत्तयविलसियाइं ।
घरु हरिणीलें णीलियउ जाम   ताविच्छहु केरी सोह ताम ।
णयणइं ण लहंति णयाणणाइ   जहिं एम कहिं मि जूरिउ धणाइ ।
णिदेप्पिणु रंगावलिपयारु   जहिं कुलबहु बंधइ कंठि हारु ।

---

१२. M °कयमय° । १३. M सहावसोमो । १४. All Mss. add:—इमो विसमसीसयछंदजाई कहिया ।
१५. MBPK तहिं ।

६. १. MB उत्तरे सेढिहि । २. MBP पप्फुल्लिय । ३. K अवयरियउव्व वेस । ४. MBP धूव सधूमें । ५. MBP दंतिहिं । ६. MBP सरु । ७. MP अम्हहं; B अम्हहं; K अम्महुं but gloss अस्मत्सदृशाः । ८. P तंबरेहिं । ९. MBPT संझहि सुत्तविउद्धियहि ।

जहाँ पक्षियोंकी चोंचोंसे आहत पड़े हुए पके आमोंके गुच्छोंके लिए दौड़ते हुए वानरोंके द्वारा मुक्त घोर बुक्कार ध्वनियोंसे त्रस्त और भागती हुई राजरमणियोंके पैरोंके अग्रभागसे गिरे हुए नूपुरोंकी लगी हुई हेमरत्न किरणोंसे लताघरोंके मध्यभाग स्फुरित हैं ॥७॥

जिसके भूप्रदेश, मुर्गोंकी क्रीड़ा विस्तारकी उड़ानकी सीमामें बसे हुए गाँव, पुर, नगर, खेड़ा, कव्वड, मडंब, संवाह और ज्ञानियोंसे रमणीय हैं ॥८॥

जो शंकर, नरसिंह, ब्रह्मा और कुवादियोंके द्वारा रचित सिद्धान्तोंसे शून्य है तथा वीतरागके नयरूपी जलसे धोये गये लोगोंके अन्तरंगोंसे शुद्ध है और स्वभावसे सौम्य है ॥९॥

घोर और वीर तपश्चरणके करनेमें परिणत मुनीन्द्रोंके चरणकमलोंके वन्दनमें लगे हुए नरयुग्मोंकी महान् चरित्र भक्तिसे जिसने पापमलके अवलेपको नष्ट कर दिया है ॥१०॥

घत्ता—जहाँ मध्यमें स्थित विजयार्ध पर्वत ऐसा दिखाई देता है, मानो पृथ्वीको मापते हुए विधाताने रजत दण्ड स्थापित कर दिया हो ॥५॥

६

उसकी उत्तर श्रेणीमें, जहाँ विद्याधर रमण करते हैं, ऐसी अलकापुरी नामकी नगरी है, जो खिले हुए कमलोंके परागवाले परिखा जलसे घिरी हुई है जो शत्रुपक्षके चित्तको क्षुब्ध करनेवाले परिधानसे शोभित है।

बँधे हुए रत्नोंसे विचित्र प्राकाररूपी स्वर्ण कटिसूत्र, नाना द्वारों, मणि-तोरणोंसे ऐसी मालूम होती है मानो कण्ठके आभूषणोंसे शोभित हो। नन्दनवनरूपी नीलकेशवाली वह नगरी ऐसी मालूम होती है जैसे कोई अपूर्व वेश्या अवतरित हुई हो। जहाँ शिखरमणियोंसे आकाशतलको चूमनेवाले सात भूमियोंवाले घर हैं, मानो वह नगरी धूपके सुन्दर धुएँसे निश्वास लेती है, मानो मुक्तावलीरूपी दाँतोंसे हँसती है, मानो भ्रमरोंकी झंकारसे हँसती स्वरोंको गिनती है, मानो विशाल गवाक्षोंके कानोंसे सुनती है। उसके ध्वजपट ऐसे हैं मानो अपने करतलको हिला रही है, मानो मयूरके स्वरोंके बहाने वह कहती है कि हमारे समान दिव्य गेह कौन-कौन हैं? जहाँ गृहशिखरोंपर अवलम्बित नीले मेघ पीड़ित करों और आरक्त हस्ततलोंवाली प्रोषितपतिका स्त्रियोंके लिए सन्तापदायक हैं।

घत्ता—सन्ध्या समय, सोकर उठी हुई विरहिणीने शृंगारसे रहित अपने मुखकमलको मणिमय दीवालपर देखा और अपनेको निकृष्ट समझा ॥६॥

७

जहाँ वधुओंके पैरोंके आलक्त विलास, पद्मराग मणियोंकी प्रभाओंसे हटा दिये गये हैं। घर जबतक हरे और नीले मणियोंसे नीले हैं, तबतक नेत्र काजलकी शोभा धारण नहीं कर पाते, नम्रमुखी स्त्रियाँ इस कारण जहाँ दुखी होती हैं। जहाँ रंगावलीके प्रकारोंकी निन्दा करती

जहिं रिद्धि वि रेहइ पवर का वि जहिं पंगणि पंगणि तोयवावि ।
उग्गयकिंजक्करयंकयाइं जहिं वाविहि वाविहि पंकयाइं ।
जहिं पंकइ पंकइ हंसु थाइ जहिं हंसि हंसि कलरव विहाइ ।
जहिं कलरवि कलरवि हयणिमाण कामेण समप्पिय कामबाण ।
जहिं उववणाउ घरि सिरि चडंति पुणु विविह पक्खि उववणि पडंति ।
हयमुहफेणहिं कुंजरमएहिं तंबोलहिं माणवमुहचुएहिं ।
संजणियपंक जहिं रायमग्ग वच्चंतजाणजंपाणदुग्ग ।
चहिं णिच्चुच्छव मंगलपसत्थ असिमसिकिसिविज्जावज्जियत्थ ।
जिणधम्माणंदिय भुत्तभोय णिरुवद्दव जहिं णिवसंति लोय ।

घत्ता—अइबलु णामें तेत्थु पहु सो जइ वि हु ण होइ[6] दोसायरु ॥
तइ वि हु कुवलयतोसयरु सोम्मु वि चंडपयाव पहायरु ॥७॥

८

कुलणहससियारु वि णिवियारु सुहसीलु वि धरियधरित्तिभारु ।
इहलोयत्थु वि परलोयभत्तु गोवालु वि जाणियरायवित्तु ।
जयगहियगुणु वि अक्खयगुणोहु णिब्बाहु वि करिकरदीहबाहु ।
बलवंतु वि अबलासयहं गम्मु अविडप्पु वि लंघियसूरहम्मु ।
णीसु वि लक्खणलक्खियसरीरु ससहावें धीरु वि पावभीरु ।
दूरत्थु वि णियडत्थु वे हयारि रइवंतु वि परवहुबंभयारि ।
सुयभिण्णमणु वि दढचित्तवित्ति बहुपालिरो वि दिसवित्तकित्ति ।
अइसच्छु वि रहियसमंतचारु गुरुओ वि गुरुहुं लहु विणयसारु ।
संगरु वि जिणइ संगरि दुजेय लच्छीवासु वि खरदंड णेय ।
सुपसुत्तु वि चलणयणेहिं णियइ ठाणत्थु[10] वि [11]तवरणेहिं भमइ ।

घत्ता—जो महिमाहरु पुरिसहरि महिमावंतु भुवणि विक्खायउ ॥
जो अहिमाणवंतु सुयणु जो रिउमाणवंतु संजायउ ॥८॥

९

णं पेम्मसलिलकल्लोलमाल णं मयणहु केरी परमलील ।
णं चिंतामणि संदिण्णकाम णं तिजगतरुणिसोहग्गसीम ।
णं रूवरयणसंघायखाणि णं हिययहारि लायण्णजोणि ।

७. १. MBPK सोहइ । २. MBP कलरउ; K कलरव but corrects it to कलरवु । ३. MBP घरसिरि । ४. MP °मुहमुएहिं । ५. MB °वेज्जा° । ६. MB होय । ७. MBP सोमु । ८. MBP चंडपयाउ ।

८. १. MBPK जग° । २. P °गुणि । ३. K लक्खियलक्खणसरीरु । ४. P णिवडत्थु । ५. M वि । ६. P रइय° । ७. MB गरुवो; P गरुओ । ८. M खरदंदु; BP खरदंडु । ९. MBP चर°; T चल° । १०. M वाणत्थु; MP थाणत्थु । ११. MBP तच्चरणिहिं भमइ ।

९. १. MBP °खोणि ।

हुई कुल-वधू कण्ठमें हार बाँधती है। जहाँ प्रवर ऋद्धि शोभित होती है, जहाँ प्रत्येक आँगनमें बावड़ियाँ हैं, प्रत्येक बावड़ीमें निकलते हुए परागोंकी रजसे शोभित कमल हैं। जहाँ प्रत्येक कमलपर हंस स्थित है, और प्रत्येक हंसका जहाँ कलरव शोभित है, जहाँ प्रत्येक कलरवमें मनुष्यके मानको आहत करनेवाला कामबाण कामदेवने समर्पित कर दिया है। जहाँ उपवनसे आकर गृहोंके शिखरोंपर पक्षी बैठते हैं, और फिर वापस वनमें चले जाते हैं। जहाँ अश्व-मुखोंके फेनों, गजमदों, और मनुष्योंके मुखोंसे च्युत ताम्बूलोंसे राजमार्गमें कीचड़ उत्पन्न हो गयी है। जिसमें चलते हुए यान, जम्पान और दुर्ग हैं। जहाँ मंगलसे प्रशस्त नित्य उत्सव होते हैं, जहाँ असि, मषी, कृषि और विद्यासे अर्थ कमाया जाता है। जहाँ लोग जिनधर्मसे आनन्दित होकर भोग भोगते हुए बिना किसी उपद्रवके निवास करते हैं।

घत्ता—वहाँ अतिबल नामका प्रभु है, यद्यपि वह दोषाकर [चन्द्रमा / दोषोंका आकर] नहीं है, फिर भी वह कुवलय (पृथ्वीमण्डल) को सन्तोष देनेवाला है, सौम्य होकर भी सूर्यकी तरह प्रचण्ड है ॥७॥

८

जो कुलरूपी नभमें सवियार (सविकार और सविता, सूर्य) होकर भी निर्विकार था, शुभशील होकर भी धरतीके भारको धारण करनेवाला था। इस लोकमें रहते हुए भी परलोकका भक्त था, गोपाल होकर भी (गायों, धरतीका पालक) राज्यवृत्तिको जाननेवाला था। जगके द्वारा गृहीत-गुण होनेपर भी जो अक्षयगुणसमूहवाला था। जो निर्वाह (बिना बाँह, बिना बाधा) होकर भी गजकी सूँड़के समान बाहुवाला था। जो बलवान् होकर भी सैकड़ों अबलोंके द्वारा गम्य था। राहु न होते हुए भी (अविडप्प) जो सूर्यके तेजका उल्लंघन करता था, (फिर भी विटात्मा नहीं था), ईश नहीं होते हुए भी उसका शरीर लक्षणोंसे लक्षित था। अपने स्वभावसे धीर होते हुए भी वह पापोंसे भीरु था। दूर होकर भी वह निकट था। शत्रुका नाश करनेवाला और रतिवन्त होकर भी परवधुओंके लिए ब्रह्मचारी था, श्रुत (काम और शास्त्र) में पूर्णमन होते हुए भी जो दृढ़चित्तवृत्तिवाला था, जो बहुपालितो (वेश्याको ग्रहण करनेवाला होकर भी) दूसरे पक्षमें (वधूपालक होकर) दिशाओंमें कीर्ति फैलानेवाला था। स्वच्छ होकर भी वह स्वमन्त्राचारसे रक्षित था। गुरु (महान्) होकर भी गुरुओंके प्रति छोटा और विनयशील था। संग्राममें अजेय होते हुए भी वह संगर (रोग सहित) होकर भी युद्धमें जीतनेवाला था। लक्ष्मीका निवास होते हुए भी वह तीव्रदण्डको जानता था। सुसुप्त (अत्यन्त सोता हुआ, अत्यन्त नीतिवाला) होकर भी चरोंके नेत्रोंसे देखता था। एक स्थानपर स्थित होकर भी वह उनके नेत्रोंसे घूमता था।

घत्ता—जो पृथ्वीरूपी लक्ष्मीका वर, पुरुषश्रेष्ठ, महिमावान् और विश्वमें विख्यात था। जो अभिमानवाला, सुजन और शत्रुके लिए मानवाला था ॥८॥

९

उसकी मनोहरा नामकी कमलनयनी गृहकमलकी लक्ष्मी महादेवी थी, जो मानो प्रेमसलिलकी कल्लोलमाला, मानो कामदेवकी परमलीला, मानो कामनाएँ पूरी करनेवाली, चिन्तामणि, मानो तीनों लोकोंकी रमणियोंकी सौभाग्यसीमा, मानो रूप रत्नोंके समूहकी खान, मानो हृदयका

णं घरसरहंसिणि रइसुहेल्लि — णं घरमहिरुहमंडणियवेल्लि ।
णं घरवणदेवय दुरियसंति — णं घरछणससहरबिंबकंति ।
णं घरगिरिवासिणि-जक्खपत्ति — णं लोयवसंकरि मंतसत्ति ।
महएवि तासु घरकमललच्छि — णामेण मणोहरि[2] पंकयच्छि[3] ।
तहि जणिउ तणउ खयराहिवेण — अलयाउरिधरणाहेण[4] तेण ।

घत्ता—जाएं जेण थणंधएण दुज्जणवंदु सयलु संताविउ ॥
णलिणु व णवदिवसाहिवेण णिययगोत्तु हरिसें विहंसाविउ ॥९॥

१०

कुम्मुण्णयकमु — दुज्जयविक्कमु ।
केसरिकडयलु — वियडोरत्थलु ।
आयंबिरणहु — कणयसमप्पहु ।
णवजलहरझुणि — कुलचूडामणि ।
सुरकरिकरकरु — तरुणीमणहरु ।
विसवइकंधरु — रज्जधुरंधरु ।
गुणरंजियजणु — अहिणवजोव्वणु ।
उण्णयभालउ — पेच्छिवि बालउ ।
अलिणिहकोंतलु — चिंतइ अइबलु ।
मणुयकलेवरु — अट्ठियपंजरु ।
किमिकुलसंकुलु — रुहिरचिलिच्चिलु ।
लालाविट्टलु — अंतहं पोट्टलु ।
पिउवणभायणु — पक्खिहिं भोयणु ।
सोलहकंडरु — णवदारंतरु ।
कामें जिप्पइ — लोहें घिप्पइ ।
कोहें तप्पइ — छम्में लिप्पइ ।
कम्में वज्झइ — मोहें मुज्झइ ।
सत्थें भिज्जइ — रोएं झिज्जइ ।
जरइ कुहिज्जइ — कालें खिज्जइ[11] ।

घत्ता—भणिउ सणंदणु पत्थिवेण संति करेज्जसु णियसंताणहो ॥
तुहुं अणुहुंजहि रायसिरि मई पुणु जाएवउ णिव्वाणहो ॥१०॥

---

२ P मणोहरि । ३ MBP कुवलयच्छि । ४ MBP °वरणाहेण । ५. MBP दुज्जणवग्गु । ६. MBP वियसाविउ ।

१०. १. MBP °कडियलु; K कडयलु but corrects it to कडियलु । २. P रज्ज । ३. MBP °कुतलु । ४. K omits अट्ठियपंजरु । ५ M °भावणु । ६. B Reads this line as पिउवणभायणु, गुणगणमोयणु and adds further सोयक्कोयणु, पक्खिहिं भोयणु । ७. MB and after this: गुणगणमोयणु, सोयक्कोयणु । ८. MBPT °कडरु । ९. MBP छिप्पइ । १०. B कामें । ११. MBP खज्जइ ।

हरण करनेवाली लावण्य योनि, मानो घररूपी सरोवरको रतिसुख देनेवाली हंसिनी, मानो घररूपी वृक्षको अलकृत करनेकी लता, मानो पापोको शान्त करनेवाली घररूपी वनकी देवता, मानो घररूपी पूर्णचन्द्रकी पूर्ण बिम्बकान्ति, मानो घररूपी गिरिमे रहनेवाली यक्षपत्नी और मानो लोगोको वशमे करनेवाली मन्त्रशक्ति थी। अलकापुरीकी धरतीके स्वामी उस विद्याधरको एक पुत्र उत्पन्न हुआ।

घत्ता—उस पुत्रके उत्पन्न होनेसे समस्त दुर्जनसमूह पीडित हो उठा। लेकिन उसका अपना गोत्र हर्षसे उसी प्रकार विकसित हो गया जिस प्रकार नवदिवसके अधिपति सूर्यसे कमल विकसित हो जाता है ॥९॥

१०

कूर्मकी तरह उन्नत क्रम (चरण) अजेय पराक्रमी, सिंहके समान कटितलवाले, विकट उरस्थलवाले स्वर्णप्रभ—नवमेघकी ध्वनिवाले, कुलके चूडामणि, ऐरावतकी सूँडके समान हाथवाले, तरुणियोके लिए सुन्दर, वृषभराजके समान कन्धोवाले, राज्यमे धुरन्धर, गुणोसे जनोको रंजित करनेवाले, अभिनव यौवन और उन्नतभालवाले अपने पुत्रको देखकर, भ्रमरोके समान बालोवाले राजा अतिबलने विचार किया, "मनुष्यका शरीर हड्डियोका ढाँचा है, कृमिकुलसे व्याप्त, रुधिरसे बीभत्स, लारसे घिनौना, आँतोंकी पोटली और मरघटका पात्र, पक्षियोका भोजन, सोलह गुफाओ और नौ द्वारवाला है। यह कामसे जीत लिया जाता है, लोभोसे ग्रहण किया जाता है, क्रोधसे तपता है, क्षमासे ठण्डा होता है, कर्मसे बँधता है, मोहसे मूर्छित होता है, सत्यसे भिदता है, रोगसे क्षीण होता है, जरासे नष्ट होता है, काल खा जाता है।"

घत्ता—राजाने तब अपने पुत्रसे कहा—"अपनी परम्परामे तुम शान्ति स्थापित रखना। तुम राज्यश्रीका भोग करो, मै अब निर्वाणके लिए जाऊँगा।" ॥१०॥

११

चवलयर कुसासणवस चरंति महुं वाइ कुवाइहिं अणुहरंति ।
जरमरणहं किंकर किं करंति मायंग अंग किं मोक्खु देंति ।
णिम्मलमइ रायहु रह रहंति ए अवर वि जगि असुवह हवंति ।
अंतेउरु अंते चरु जि हणइ रोवइ वइवसहु ण रक्ख कुणइ ।
भवपासबंधु सुहिबंधुणियरु खणधंसि णयरु गंधव्वणयरु ।
धणु इंधणु लोहहुयासणासु घरु विग्घरु केवलदंसणासु ।
फणिभोउ व भोउ ण भुंजणिज्जु आकोसु वि कोसु वि वज्जणिज्जु ।
दुक्कियणिद्देसु व देसु भणमि खयरवइपहुत्तणु तणु व गणमि ।
सीहासणु हासणु मेल्लमाणु किं रक्खइ खइ गेच्छंतु प्राणु ।
किं छत्तहिं छत्तायारभूमि पाविज्जइ विज्जउ जहिं ण कामि ।
चामरु मरु देइ ण मरणहारि ण समंति केउ झसकेउधारि ।
पलियंकियसीसु ण सीसु होइ जो मुणिहिं मूढु सो कुगइ जाइ ।

घत्ता—एम पयंपिवि राणएण णं मेहहिं धाराजलवरिसहिं ।
बद्धउ पट्टु महाबलहो अहिसिंचिवि सिर्पेहिं सिरिकलसहिं ॥११॥

१२

जं जयजयसद्दे बद्ध पट्टु तं पुरु मेल्लिवि णरवइ पयट्टु ।
मणिभूसणु णिवसणु परिहरेवि थिउ णिज्जणि वणि जिणदिक्ख लेवि ।
जो छिंदइ सिंचइ चंदणेण विंधइ सरेण मण्णइ मणेण ।
जो थुणइ जो वि दुव्वयणु देइ दोहिं मि समाणु हुउ परमजोइ ।
सामंतमंतिभडसेवणिज्जु एत्तहि वि तासु सुउ करइ रज्जु ।
देवंगहिं विविहहिं परिहणेहिं आहरणें मणिकंचणघणेहिं ।
कामिणिथणसिहरालिंगणेहिं उज्जाणहिं जाणहिं वाहणेहिं ।
तंतीपुक्खरवज्जाइएहिं स रि ग म प ध णी सरगाइएहिं ।
उच्छलियपहयघडियारवालु भोयासत्तहु तहु जाइ कालु ।
पंढमिल्लु महामइ णिहयभंति बीयउ संभिण्णमउ त्ति मंति ।
तिज्जउ सयमइ बहुरिद्धिरिद्ध सइंबुद्ध चउत्थउ जगपसिद्धु ।

घत्ता—तेण णराहिवु विण्णविउ हुयवहु तरुतेणेहि किं धायउ ॥
सायरु बहुसरिवाणिएहिं विसयसुहेहिं मि जीउ वरायउ ॥१२॥

---

११. १. MBP वहंति । २. MB केवलु दंसणासु । ३. P खज्जंतु । ४. MBP पाणु । ५. MBP सीसे ।
१२. १. MBPK आहरणहिं । २. M पढमिल्ल । ३. MBP णराहिउ । ४. MBP किं तरुणेहिं । ५. P धाविउ । ६. M सायर । ७. MBP °वाणियहिं ।

११

चंचल लोग, कुसासणवश [कुशा / कोड़ेके शासनके वशीभूत] होते हैं, दूसरे पक्षमें चार्वाक आदि दर्शनोंके खोटे शासनमें चलनेवाले होते हैं] । मेरी वाणी कुवादियोंका हरण करनेवाली है । (दूसरे पक्षमें, मेरे वाजि कुवाजियोंका अनुसरण करते है) जरा और मरणके लिए अनुचर क्या करते हैं, हे पुत्र क्या हाथी मुझे मोक्ष देते हैं ? निर्मलमति राजाके रथ रह जाते हैं, परन्तु ये और दूसरे जगमें अशुभ होते हैं । अन्तःपुर अन्तःकरणमें आघात करता है । वह रोता है परन्तु यमसे रक्षा नहीं करता । संसाररूपी पाशका बन्धन सुधियोंका बन्धनसमूह गन्धर्वलोककी तरह एक क्षणमें ध्वस्त हो जाता है । नागके फनकी तरह भोग भी भोगने योग्य नहीं हैं । आक्रोश और कोश दोनों ही परित्याग करने योग्य हैं, देशको मैं दुष्कृतके उपदेशके समान मानता हूँ, और विद्याधरकी प्रभुता को तृणके तुल्य समझता हूँ । सिंहासनको मैं 'हा' इस स्वन (शब्द) को करता हुआ समझता हूँ क्या वह क्षयको प्राप्त हुए प्राणोंको बचा सकता है ? क्या छत्रोंसे मुक्तिरूपी शिला पायी जा सकती है कि जहाँपर विद्याकी कामना नहीं रहती । मरणधारीको चामर भी हवा नहीं देते और न केतु और कामदेव शमन करते हैं । बाल सफेद होनेपर शिष्य नहीं होता, जो मुनियोंके प्रति मूढ़ है, वह खोटी गतिमें जाता है ।"

घत्ता—राजा अतिबलने यह कहकर, धारावाहिक जलकी वर्षा करनेवाले श्वेत श्रीकलशों- से अभिषेक कर, महाबलको राजपट्ट बाँध दिया ॥११॥

१२

जब जय-जय शब्दके साथ पट्ट बाँध दिया गया, तो राजा नगरका परित्याग कर चला गया । मणिमय आभूषण और वस्त्र छोड़कर वह दीक्षा लेकर निर्जनवनमें स्थित हो गया । कोई उसे छेदे या चन्दनसे सींचे, सरसे बेधे या मनसे माने, कोई स्तुति करे या दुर्वचन कहे, वह परयोगी दोनोंमें समान रूपसे स्थित हो गया । यहाँपर सामन्त, मन्त्री और भटोंके द्वारा सेवनीय उसका पुत्र राज्य करता है, देवांग विविध वस्त्रों, मणि कांचनसे सघन अलंकारों, कामिनियोंके स्तन- शिखरोंके आलिंगनों, उद्यानों, यानों, वाहनों, वीणाओं और पुष्कर वाद्योंके द्वारा बजाये गये स रि ग म प ध नी स्वर गानों के द्वारा भोगासक्त उसका, उच्छलित और आहत घटिकारूपी आरोंका पालन करनेवाला काल बीतने लगा । उसका पहला मन्त्री भ्रान्तिको नष्ट करनेवाला महामति था, और दूसरा संभिन्नमति था । तीसरा स्वयंमति और चौथा विश्वप्रसिद्ध स्वयंबुद्ध ।

घत्ता—उसने राजासे कहा—"क्या तरुतृणोंसे आग, अनेक नदियोंके जलोंसे समुद्र तथा विषय सुखोंसे बेचारा जीव तृप्त होता है ?" ॥१२॥

१३

जिहँ पामा करयहफंसणेण संभासणपियमुहदंसणेण ।
तिह णिच्चुँ कामु सेविज्जमाणु वित्थरइ होइ अइअप्पमाणु ।
वड्ढइ लोहेण महंतु लोहु वड्ढइ हंकारें तिव्वु कोहु ।
वड्ढइ णयहीणु णिएवि माणु परवचणेणं मायाविहाणु ।
वड्ढइ रइ अणुबंधेण मोहु इय जीव करेप्पिणु धम्मदोहु ।
महिणाहु होवि पुणु होइ साणु संसारि कवणु रायाहिमाणु ।
उप्पज्जइ जा कंदप्पवाहि संकप्पें तप्पइ ताइ देहि ।
सा केण वि कत्थइ आणियाइ पसमिज्जइ जाइ सुमाणियाइ ।
सा णारि सहावदुगंध चडुल अण्णासत्ती धणगम्म कुडिल ।
घत्ता—मुक्ख सरीरि समुब्भवइ तं जि दहइ सा झत्ति पलित्ती ॥
अत्थि ण देहि गविट्ठ मई तहि उवसमविहि परवस उत्ती ॥१३॥

१४

फासरसवण्णगंध महि भमेवि ।
गायंति के वि णच्चंति के वि वायंति के वि वण्णंति के वि ।
सीवंति के वि तुण्णंति के वि धणकज्जि पढंति लिहंति के वि ।
करिसणु करंति पहरणु धरंति चउप्पयहिं परहियवउ हरंति ।
आवंतु विसिट्ठु ण संसहंति अम्हइं गुणवंता सइं कहंति ।
कम्मेहिं धणाइं समज्जिऊण आणेवि णिहेलणि पुजिऊण ।
दिवसावसाणि समसंत होंति णिव्वाइयमुह माणव सुयंति ।
अह उइढमग्ग वड्ढियणिणाय धावंति सइच्छइ बे वि पाय ।
णिद्दइ रीणत्तणु खयहु जाइ खलु छिण्णउ छिण्णउ रसु वि थाइ ।
आहारु भुत्तु परिणवइ अग्गि पज्जलइ पित्तु हयसेंभसंगि ।
उट्ठंति गोसि पुणु णीससंत कि रक्खहं धणु पणइणि भणंत ।
घत्ता—भयसण्णावस थरहरिय लेंति केर कामु वि बलवतहो ॥
जीहामेहुणरसरसिय जंति जीव णरयहु सुदुरतहो ॥१४॥

१५

धणणियरविहीणें किं कुलेण णियणाहविहीणें किं बलेण ।
वरसलिलविहीणें किं सरेण सुकलत्तविहीणें किं घरेण ।
सुवियड्ढविहीण किं पुरेण परवहुणहवणिएं किं उरेण ।
चारित्तविमुक्कें कि सुएण पिउपयपडिकूलें किं सुएण ।

१३ १ P जहिं । २ P णिच्चु । ३ MBP अणतु । ४ MBP तिव्वु । ५ MBPK णियहीणु । ६ MP °वचणेण मणि मायठाणु, B °वचणेण मणि माइ ठाणु । ७ MBP अणुबंधेण । ८. BP डहइ । ९. M गव्विट्ठु । १० MBP वुत्ती ।

१४ १ MB भमेमि । २ G पुज्जिऊण । ३ B पाय । ४. MBP समवइ । ५ MBP °सिंभ° ।

१३

जिस प्रकार अंगुलियोके खुजलानेसे खुजली बढती है, उसी प्रकार मुनिके सम्भाषण प्रिय-मुखदर्शनके द्वारा नित्यप्रति सेवित किया जानेवाला काम अत्यन्त प्रमाणहीन हो जाता है। लोभसे महान् लोभ बढ़ता है, अहंकारसे तीव्र क्रोध बढता है, नयहीन व्यक्तिको देखकर मान बढ़ता है, दूसरेसे प्रवचना करनेपर मायाविधान बढता है। अनुबन्धसे रति और मोह बढता है, इस प्रकार जीव धर्मद्रोह करके राजा बनता है और फिर कुत्ता बनता है। संसारमे किसका राज्याभिमान रहा। जो कामकी व्याधि उत्पन्न होती है उससे कम्पनके साथ शरीर सन्तप्त होता है। कहीसे भी लायी गयी सुमानिनी जायाके द्वारा वह काम-व्याधि शान्त की जाती है। वह नारी स्वभावसे दुर्गन्धित और चट्टुल होती है, अन्यमे आसक्त धनगम्य और कुटिल होती है।

घत्ता—भूख शरीरमे लगती है जो शीघ्र भडककर शरीरको जला देती है, मैंने यह अच्छी तरह देख लिया कि शान्त करनेकी विधि शरीरमे नही है, वह परवश है ॥१३॥

१४

स्पर्श इन्द्रियके रसके अधीन पृथ्वीमे घूमकर कुछ लोग गाते हैं, कुछ लोग नाचते है, कुछ बाँचते है, कुछ वर्णन करते हैं, कोई सीते हैं, कोई धुनते है, कोई धनके लिए पढते है और लिखते हैं। कोई खेती करते हैं, कोई अस्त्र धारण करते हैं और कोई चाटुकर्मसे दूसरे हृदयका अपहरण करते है। आते हुए विशिष्ट व्यक्तिको सहन नही करते, अपने आपको गुणवान् कहते है। नाना कर्मोसे धनको अर्जित कर, लाकर अपने घरमे इकट्ठा कर, दिनके अशमे श्रमसे थक जाते हैं, मुँह फाडकर आदमी सो जाते हैं। बढ रहा है घुरघुर शब्द जिनमे, ऐसी दोनो हवाएँ स्वेच्छासे नीचे और ऊपरके मार्गोसे जाती रहती हैं, नीदसे उनकी थकान दूर होती है, खल (खली) तो चर्वित होते-होते रस बन जाता है, लेकिन खाया हुआ आहार शरीरमे परिणत होता है और श्लेष्मके साथ पित्त बन जाता है। सवेरे उठकर पुन नि श्वास लेते है, और अपनी पत्नियोसे कहते है कि धनकी रक्षा किस प्रकार करें ?

घत्ता—डरके कारण किसी भी बलवान्की आज्ञा थर-थर काँपते हुए स्वीकार करते हैं। इस प्रकार जिह्वा और मैथुनके रसका आस्वाद लेनेवाले जीव पापपूर्ण नरकमे जाते है ॥१४॥

१५

धनरहित कुलसे क्या ? अपने स्वामीसे रहित सेनासे क्या ? श्रेष्ठ जलसे रहित सरोवरसे क्या ? सुकलत्रसे रहित घरसे क्या ? पण्डितसे विहीन नगरसे क्या, परस्त्रियोके नखोसे क्षत उर-

किं चाएं मणसंतो[1]विरेण किं माणें पियमुहदो[2]विरेण।
किं करिणा अवगणि[3]यंकुसेण किं हरिणा अवगणियंकुसेण।
किं पुरिसें पसरियदुज्जसेण किं णविएण विअलियरसेण।
किं मुणिणा पंचिंदियवसेण किं धुत्तें पेम्मपरव्वसेण।
किं भत्तें[4] कयबहुवइरएण किं परियणेण परवइरएण।
किं गुरुणा मोहंधा[6]रएण किं सीसें अविणयगारएण।
किं दुज्जणमहुराला[7]विएण किं धम्म[8]विहीणइं जीवि[9]एण।

घत्ता—पुणु[10] सइंबुद्ध पसण्णमइ खगवइ रायहु अग्गइ भासइ॥
धम्महु एत्तिउ सारु णिव जं परु अप्पसमाणउ दीसइ॥१५॥

१६

सच्चेण दयादाणेण धम्मु अलिएण जीवहिंसइ अहम्मु।
तेणेत्थ कुणर णारय तिरिक्ख कुच्छिय सुर होंति तिसल्लतिक्ख।
धम्मेण होंति कप्पामरिंद अरहंत[1] चक्कि चारण मुणिंद।
अहमिंद रुंदचंदाइजोण्ह धम्मेण होंति जगि राम कण्ह।
मणिमउडसिहरसोहिल्लसीस मंडलियमहामंडलवईस।
पडिवासुएव कुसुमसर रुद्द धम्मेण होंति णाणाणरिंद।
कइगमयवग्मिवाइत्तणाइं धम्मेण हवंति बुहत्तणाइं।
सोहग्ग[2] रूवु[3] कुलु सीलु कंति पोरिसें[4] जसु भुयबलु विमल खंति।
जं दीसइ चंगउ गुणविसेसु तं धम्महु केरउ फलु असेसु।

घत्ता—धवलीहूयउं सिरकमलु भोउ देव केत्तिउ भुंजिज्जइ॥
धम्मु जिणागमभासियउ मणवयकायतिसुद्धिइ किज्जइ॥१६॥

१७

पहु साहिज्जइ सग्गापवग्गु ता दिसइ महामइ तहु कुमग्गु।
अणिहणइं अणाइअहेउयाइं महिमारुयवेमाणरउयाइं।
भूयइं चयारि जहिं जहिं मिलंति तहिं तहिं चेयणचिंधइं चलंति।
गुलजलपिट्ठ[1]हिं मयसत्ति जेम भूएसु जीउ[2] संभवइ तेम।
ण सरीरिसरीरहुं भेउ अत्थि करु कण्णु[3] दंतु को कवणु हत्थि।
जम्माउ ण वच्चइउ अण्णु[4] जम्मु जणु जेण जियइ तं करइ कम्मु।
जो परहरु पुच्छिवि परहु पासि गच्छइ इंदियबुद्धीपयासि।

---

१५. १. MBP °संतावएण। २. MB °दाविएण। ३. B अविगणियं° ४. MP मंतें; B सत्तें। ५. P बहु-कयवइरएण। ६. MP मोहें धारएण। ७. MBP °लावएण। ८. MBP धम्मविरहिएं। ९. MP जीवएण। १० MBP परमहियत्तें मंतिवरु खयरवइ रायहु।

१६ १. K अरिहंत। २. P सोहग्गु सीलु कुलु रूउ। ३. MB रूउ। ४. MBPK पोरिसु जसु।

१७. १. MBP °जलघाईहिं। २. M जीव। ३. MBP कण्ण दंतु। ४. MB अण्णजम्मु।

स्थलसे क्या ? चारित्रसे रहित शास्त्रसे क्या ? पिताके चरणोंके प्रतिकूल पुत्रसे क्या ? मनको सन्ताप पहुँचानेवाले त्यागसे क्या ? प्रियको मुँह दिखानेवाले मानसे क्या ? अंकुशको नहीं माननेवाले गजसे क्या ? चाबुकको नहीं माननेवाले अश्वसे क्या ? जिसका अपयश फैल रहा है ऐसे मनुष्यसे क्या ? रससे विगलित नृत्यसे क्या ? पंचेन्द्रियोंके वशीभूत पुत्रसे क्या ? प्रेमके परवश होनेवाले धूर्तसे क्या ? परवधूका रमण करनेवाले व्यक्तिसे क्या ? दूसरेकी वधूसे रमण करनेवाले परिजनसे क्या ? मोहान्धकारवाले गुरुसे क्या ? अविनय करनेवाले शिष्यसे क्या ? मीठा आलाप करनेवाले दुर्जनसे क्या ? धर्मसे रहित जीवनसे क्या ?

घत्ता—प्रसन्नमति स्वयंबुद्धि विद्याधरराजसे आगे पुनः कहता है—"हे राजन्, धर्मका इतना सार है कि पर अपने समान दिखाई दे जाये ? ॥१५॥

१६

सत्य और दया दानसे धर्म है, झूठ जीव हिंसासे अधर्म है। उसीसे यहाँपर खोटे मनुष्य (अधार्मिक मनुष्य) नारकीय तिर्यंच और तीन शल्योंसे पीड़ित खोटे देव होते हैं। धर्मसे कल्पवासी देव होते हैं, अरहंत चक्रवर्ती चारण और मुनीन्द्र होते हैं। धर्मसे विश्वमें, विशाल चन्द्रमाके समान कान्तिवाले अहमिन्द्र और राम कृष्ण होते हैं जिनके सिरपर मणिमय मुकुट शोभित हैं ऐसे माण्डलीक और महामण्डल-पतियोंके स्वामी होते हैं। प्रतिवासुदेव, कामदेव, रुद्र और नाना प्रकारके राजा धर्मसे होते हैं। धर्मसे सिद्धान्तवेत्ता, वाग्मी और वादी पण्डित पैदा होते हैं। सौभाग्य, रूप, कुल, शील, कान्ति, पौरुष, यश, भुजबल, विमल शान्ति आदि जो-जो भला गुण विशेष दिखाई देता है, वह समस्त धर्मका अशेष फल है।

घत्ता—हे देव, सिररूपी कमल सफेद हो गया है, कितना भोग भोगा जायेगा ? मन, वचन और कायकी शुद्धिसे जिनशास्त्रोंमें भाषित धर्म किया जाये ॥१६॥

१७

हे स्वामी, स्वर्ग और अपवर्गको सिद्ध करना चाहिए। तब महामति मन्त्री कुमार्गकी शिक्षा देता है कि अनिधन-अनादि और अहेतुक पृथ्वी, पवन, अग्नि और जल ये चार महाभूत जहाँ-जहाँ मिलते हैं, वहाँ-वहाँ चेतनाके चिह्न प्रकट होते हैं। गुड़ और जलके पिण्डमें जिस प्रकार मदशक्ति उत्पन्न होती है उसी प्रकार इन भूतोंमें जीव उत्पन्न होते हैं। आत्मा और शरीरमें भेद नहीं है। बताओ सूँड़, कान या दाँतमें कौन हाथी है ? जीव एक जन्मसे दूसरेमें नहीं जाता। मनुष्य जिस कर्मसे जीवित रहता है, वही करता है। जो दूसरेसे पूछकर, अपनी इन्द्रियों और

विणु तेहिँ केम सो सग्गे[5] जाइ पुव्विज्जउ पत्थरु किं पुण्णभाइ ।
जासुवरि भुवेइ[6] मलु जीवलोउ परजम्मि तेण कहि कियउ पाउ ।
जलबुब्बुय जइ कम्मेण होंति तो जीव वि राय म करहि भंति ।
घत्ता—कहिँ फिर सुकियदुकियइं विणु भूयँएहिँ[7] जीउ कहिँ दिट्ठउ ॥
जो वाहिउ पासंडियहिँ सो हउं मण्णमि चोरेंहिँ[8] मुट्ठउ ॥१७॥

१८

तं णिसुणिवि चविउं चउत्थएण मंतिहि पहुपणवियमत्थएण ।
परिपालियसमहिंसावएण सुयवंतें परिणयसावएण ।
जणि मइरहि दीसइ दिण्णु[1] राउ चउदव्वपसूयहि एक्कु साउ ।
देहें भावेण वि भिण्णु[2] लोउ किह घडइ तुहारउ भूयजोउ ।
खरवडवारइरेंसि[3] वेसरासु संभेंवु[4] णिदिट्ठु कत्थइ णरासु ।
दव्वेहिँ तेहिँ तेहउ जि होइ वइचित्तु काइँ संजोयवाइ ।
सिहि उल्हाविज्जइ[5] पाणिएण पाणिउ सोसिज्जइ झत्ति तेण ।
चवलयरु पवणु थिर जड धरित्ति असरूवहं कहिँ मेलावजुत्ति ।
एमेयँ[6] करिवि अप्पणिय उत्ति किं जंपसि पउरंदरिय वित्ति ।
विणु जीवें कहिँ[7] भूयइं मिलंति कायाकारेण ण परिणवंति[8] ।
जइ परिणवंति[9] भासहि कुहेउ तो काढयपिढरि सरीरु होउ ।
घत्ता—पंचिंदियहिं विवज्जियउ मणविरहिउ चिम्मेत्तु[10] अयाणउ ॥
जीउ जाइ किह भणसि तुहुं सग्गि होइ किह सुरवरराणउ ॥१८॥

१९

दीसइ पयत्थु जगि सहुं गुणेण पाहाणेण वि णिच्चेयणेण ।
कड्ढिज्जइ आयसु कड्ढएण[1] जिह तिह सो कम्मणिबंधणेण ।
जंपिउ पइं बहुपुज्जाहरेण किं किउ सुकिउ[2] भवि पत्थरेण ।
णउ रूसइ सो कयणिग्गहेण णउ तूसइ भोयपरिग्गहेण ।
णिज्जीउ ण याणइ सोक्खु दुक्खु जहिं जीउ तहिं जि तुहुं ताइं पेक्खु ।
भो भूयवाइ भूएहिँ मुत्तु तुहुं[3] तुज्झ णत्थि जिणवयणमंतु ।
वइतंडिय पंडिय कव्वु कवहि अणिबद्धु असंद्धउं[4] काइं चवहि ।
तहिं अवसरि संभिण्णें पउत्तु उप्पज्जइ खणि खणभंगचित्तु[5] ।

५. MB सग्गु; P सग्गि; K सग्ग but corrects it to सग्गु । ६. K मुयइ । ७. MBP भूएहिं ।
८. MBP चोरें ।

१८. १. MB दिण्ण राउ । २. M विभिण्णलोउ; BP °विहिण्णलोउ । ३. MBP °रसु । ४. MBP उप्पत्ति करइ अण्णहु विणासु । ५. M उल्लाविज्जइ । ६. MB एमेवि; P एमेव । ७. MBP भूयइं कहिं । ८. MBP परिणमंति । ९. MBP परिणयंति । १०. M चिमित्तु; B चिम्मित्तु ।

१९. १. B कड्ढिएण; P कट्ठएण । २. MBP भवि सुकिउ । ३. MBP तह तुज्झु । ४. MBP असुद्धउं । ५. MBP खणि भंगचित्तु ।

बुद्धिके प्रकाशसे दूसरेके पास जाता है, बिना इनके (इन्द्रियों और बुद्धिके प्रकाशके बिना) स्वर्ग कैसे जाता है ? पुण्यभावसे पत्थरकी पूजा क्यों की जाती है। जिसके ऊपर (धरती या पत्थर) जीवलोक मलका त्याग करता है, दूसरे जन्ममें उसने क्या पाप किया ? जलके बुद्बुद यदि कर्मसे होते हैं, तो जीव भी कर्मसे होते हैं। हे राजन्, इसमें भ्रान्ति मत करो।

घत्ता—पुण्य-पाप किसके ? बिना भूतों (पृथ्वी-जलादि) के जीव कहाँ दिखाई दिया ? पाखण्डियोंके द्वारा जो बहकाया जाता है, मैं समझता हूँ वह चोरोंके द्वारा ठगा गया ? ॥१७॥

१८

यह सुनकर मन्त्रियोंमें चौथे स्वयंबुद्धिने जो क्षान्ति और अहिंसा धर्मका पालन करता है, शास्त्रज्ञ है और पक्का श्रावक है राजाको मस्तकसे प्रणाम करते हुए कहा, "चार द्रव्योंसे उत्पन्न मदिरासे लोगोंमें एक ही स्वाद और मद दिखाई देता है, लेकिन लोक, देह और भावसे भिन्न हैं (जबकि भूतचतुष्टयसे उत्पन्न होनेके कारण उसे एक होना चाहिए) तुम्हारा भूतयोग किस प्रकार निर्मित होता है ? उन द्रव्योंसे वह वैसा ही होगा। हे संयोगवादी, यह विचित्रता कैसी ? आग पानीसे शान्त होती है, और पानी शीघ्र उसके द्वारा (आग) सोख लिया जाता है। पवन चंचल है, धरती स्थिर और जड़ है, इस प्रकार एक दूसरेसे भिन्न स्वरूपवालोंकी मिलाप युक्ति कहाँ ? बिना जीव (चेतना) के जीव कहाँ मिलते हैं; वे शरीरके आकारके रूपमें परिणत नहीं हो सकते। यदि परिणत होते हैं, तो तुम कुकारण कहते हो, और तब काढ़ेके पिण्डमें शरीर उत्पन्न होना चाहिए।

घत्ता—पाँच इन्द्रियोंसे विवर्जित मनसे रहित, चैतन्यमात्र अज्ञानी जीव किस प्रकार उत्पन्न हो सकता है, और किस प्रकार स्वर्गमें सुरवरोंका इन्द्र होता है ? तुम्हीं बताओ ? ॥१८॥

१९

जगमें पदार्थ गुणके साथ दिखाई देता है, जिस प्रकार निश्चेतन चुम्बक पत्थरके घर्षणसे आग प्रकट होती है, उसी प्रकार कर्मोंके बन्धसे जीव पैदा होता है। तुमने जो कहा कि बहुपूजाको धारण करनेवाले पत्थरसे क्या दुनियामें पुण्य किया जाता है ? निग्रह करनेवालेसे वह क्रोध नहीं करता है, और न भोगोंका परिग्रह करनेवालेसे सन्तुष्ट होता है। निर्जीव वह न तो सुख जानता है और न दुःख। जहाँ जीव हैं, वहीं तूँ उनके द्वारा (सुख-दुःखके द्वारा) देखा जाता है। हे भूतवादी, तूँ भूतोंके द्वारा भुक्त है, तूँ जिनवरके वचनोंका रहस्य नहीं जानता। हे वितण्डावादी पण्डित, तुम काव्य क्यों करते हो, अनिबद्ध और असंगत कथन क्यों करते हो ?" उस अवसरपर सम्भिन्नमन्त्रीने कहा—"जीव जिस क्षणमें उत्पन्न होता है, वह क्षण विनश्वर है।

हसियच्छियरमियकयासणाइं परियाणइ सुइरु वि वासणाइं।
जो दीसइ सो खणवट्टि[6] खंधु णउ अप्पउ णउ णिव पासबंधु।
घत्ता—ता रिसिसमयहु भत्तएण उत्तरु विण्णु[7] तेण खणवाइहिं[8] ॥
वत्थु णिरण्णउ णत्थि[9] जगि तणजलरसु जि दुद्धु धुवुं[10] गाइहिं[11] ॥१९॥

२०

जं णत्थि बप्प तं कुम्मरोमु तं वंझडिंभु तं गयणपोमु।
तं ण हवइ भणु को खणु वि थाइ अत्थिल्लउ किं पुणु खयहु जाइ।
को जाणइ जिणवरु मुइवि सच्चु वज्जिवि अरूवि परिणामि तच्चु।
जइ छिण्णउं मणु मणभाउ चेइ तो अण्णें थवियउ अण्णु लेइ।
जइ दव्वइं तुह खणभंगुराइं तो खणधंसिणि वासण ण काइं।
किं सा खंधहं बाहिरिय दिट्ठ अणणुहवु खणिउं किं भणिउं[1] धिट्ठ।
ता सयमइ चवइ मईविसालु मायण्हिय[2] सिविणय इंदजालु।
जिह पयहु केरी सव्व माय दीसंतु वि तिह जगु णत्थि राय।
गुरु[3] सीसु धम्मु ववहारु एहु परमत्थें णउ परु णउ सदेहु।
घत्ता—जंबुउं[4] मासखंडु मुइवि धायउ सलिलॅ[5]गयपाढीणहो ॥
आमिसु गिद्धें णहि णियउ मीणु णिमज्जिवि गउ णियॅ[6]ठाणहो ॥२०॥

२१

जिह सोणरि तिह णरु उहॅय[1]भट्ठु परलोयहु लग्गिवि को ण णट्ठु।
अलियाइं जि णिसुणिवि मुयइ धीरें[2] णियतणु दंडइ किं णरयभीरु।
आयासु पडेसइ भणिवि तसइ टिट्टिहुं[3] उत्ताणियचरणु वसइ।
इसिपायपणामविणीयएण ता गुरुणा भणिउं तुरीयएण।
जइ णत्थि किं पि कारणु ण कज्जु तो किं बीहहि जइ पडइ वज्जु।
जइ होइ असंतउ अत्थकारि तो आणहि सिविणंतॅरि[4] मयारि।
णिण्णॉसहि[5] तेणाहियकरिंद किं चवहि असच्चउ विउसॅयंद[6]।
णउ सद्दु ण तुहुं णउ हउं ण वत्थु भणु होइ इट्ठपडिवत्ति केत्थु।
सुणि राय जिणागॅ[7]महासियाइं सुम्मंति ण जडयणभासियाइं।
घत्ता—आसि तुहारइ वंसि हुउ पहु अरॅ[8]विंदु णाम विक्खायउ ॥
पढमॅ[9]पुत्तु हरिचंदु तहो पुणु कुरुविंदु इंदुसमु[10] जायउ ॥२१॥

---

६. MB खणबद्धि; P खणि बद्धि। ७. MBP तेण दिण्णु। ८. MB खणवाइहो। ९. B अत्थि। १०. MBP धुउ। ११. MB गाइहो।

२०. १. MBP भणसि। २. MBP माइण्हिय। ३. P गुरुसीसधम्मु। ४. MBP जंबू। ५. MBP सलिलगयहु। ६. MB णियथाणहो।

२१. १. MBP उभय°। २. K धीरु but corrects it to चीरु and gloss वस्त्रं। ३. K टिट्टिहु। ४. MB सिविणंतर°। ५. MMB णिण्णासिय। ६. MBP विउसहंद। ७. MBPK °गमदूसियाइं। ८. K अरिविंदु। ९. MBP पढमु पुत्तु। १०. M इंदुसम; B इंदसमु।

हँसना, इच्छा करना, रमण करना, भोजन करना आदिको संस्कारसे बहुत समय तक जाना जाता है। जो दिखाई देता है वह क्षणवर्ती स्कन्ध है। हे राजन्, न तो आत्मा है और न पाशबन्ध कर्म है।"

घत्ता—तब मुनि सिद्धान्तके उस भक्तने क्षणवादियोंको उत्तर दिया। संसारमें बिना अन्वय (परम्परा) की कोई वस्तु नहीं है। गायोंके शरीरका जलरस ही दूध बनता है ॥१९॥

२०

यदि बेचारी वस्तु नहीं है, तो कछुएके रोम, वन्ध्याका पुत्र और वह आकाशकुसुम भी हो, यदि वे नहीं होते तो बताओ एक क्षणके लिए कौन स्थित होता है और जो अस्तित्वयुक्त है वह पुनः क्षयको प्राप्त क्यों होता है। जिनवरको छोड़ सत्यको कौन जानता है? जीवादिको छोड़कर तत्त्व परिणामी होता है। यदि कटा हुआ मन मनके भागको जान लेता है, तो अन्यके द्वारा स्थापित मनको अन्य ले लेगा। यदि तुम्हारे सब द्रव्य क्षणभंगुर हैं तो फिर वासना क्षणमें नाश होनेवाली क्यों नहीं है? क्या वह स्कन्धों (रूप विज्ञान वेदना संज्ञा और संस्कार) से वासना बाहर है? तो हे धूर्त! तुमने अननुभूतको क्षणिक क्यों कहा। तब विशाल बुद्धिवाला स्वयंमति कहता है—"मृगतृष्णा, स्वप्न और इन्द्रजाल जिस प्रकार होते हैं, उसी प्रकार यह सब इसकी माया है? अतः हे राजन्! दिखाई देता भी विश्व वास्तवमें नहीं है। गुरु-शिष्य और धर्म तथा यह व्यवहार वास्तवमें नहीं है और न स्वदेह है।

घत्ता—सियार मांसखण्ड छोड़कर जलमें उछलती हुई मछलीके ऊपर दौड़ा। मांसको गीध आकाशमें ले गया और मछली डूबकर अपने स्थानको चली गयी ॥२०॥

२१

जिस प्रकार सियार उसी प्रकार मनुष्य भी दो प्रकारसे भ्रष्ट होता है। परलोकके लिए लगकर कौन नष्ट नहीं होता। झूठी बातें सुनकर (मनुष्य) धैर्य छोड़ देता है और इस प्रकार नरक भीरु अपने शरीरको दण्डित करता है। आकाश गिर पड़ेगा, यह सोचकर त्रस्त होता है, 'टिट्टिभ अपने पैर ऊँचे करके रहता है।' तब मुनिके चरणोंमें प्रणामसे विनीत चौथे मन्त्रीने कहा, "यदि कोई कारण और कार्य नहीं हैं, तो जब वज्र गिरता है, तो डरते क्यों हो? यदि जो चीज नहीं है, वह अर्थकारी हो सकती है तो स्वप्नके भीतर सिंहको ले आओ? उससे अहितरूपी गजराजको नष्ट कर दो, हे विद्वानोंमें श्रेष्ठ, तुम असत्य क्यों कहते हो? न शब्द है, न तुम हो, न मैं हूँ और न वस्तु। तो बताओ इष्टप्रवृत्ति कैसे होती है। जिनागममें कही गयी बातोंको सुनो, जड़जनोंके द्वारा भाषित नहीं सुनना चाहिए।

घत्ता—तुम्हारे वंशमें अरविन्द नामका विख्यात राजा हुआ है। उसका पहला पुत्र हरिश्चन्द्र था, और दूसरा इन्द्रके समान कुरुविन्द हुआ ॥२१॥

२२

तहि णयरिहि सुहिकल्लाणकारि रिउघरिणिहारकरवलयहारि ।
गयगंधहत्थि भडकालदूय पडिकूलपिसुणसिरसूलभूय ।
ते तिण्णि वि सुहुं अच्छंति जाम लग्गउ डाहज्जरु पिउहि ताम ।
णिद्दहइ[1] हारु मलयरुहपंकु धगधगइ पलयसूरु व ससंकु ।
जलजलिउ[2] जालजलणु व जलइ आवइकालइ आवइ ण णिद्द ।
उवसमइ ण केम वि अंगडाहु थिउ कायरमुहुं वरखयरणाहु ।
तहिं अवसरि पंकयवत्त[3]णेत्तु पिउणा कोक्काविउ पढम[4]पुत्तु ।
सो भणिउ तेण हयरवियराइं जहिं घणइं वणइं वेल्लीहर[5]राइं ।
जहिं सुरहिउ कंपिउ देवदारु सीयलु संचारियं[6] हिमतुसारु ।
जहिं वाइ वाउ णीवइ सरीरु तं णेवावहि सीओयतीरु ।
आइसहि सविज्जादेवयाउ मइं णेंतु तुरिउ मारुयरयाउ ।
ता तेण भणिवि पेसणपसाउ आवाहिउ खगदेवीणिहाउ ।

घत्ता—सुएण सविज्जउ[7] पेसियउ ताउ तासु जोयंति ण संमुहुं ॥
मंतु देउ ओसहु सयणु पुण्णि परंमुहि होइ परंमुहुं ॥२२॥

२३

पाविट्ठहु कह व ण जाइ प्राणु[1] आढत्तउ तेण रउद्दु झाणु ।
लोएहिं भणिज्जइ देव जीय संपयसुहि सुहियहं सेवणीय ।
कंदइ करेहिं ताडंतु तोंडु[2] दुहिदेसएण[4] संणिहु णरिंदु ।
जुज्झंतहं[3] कप्पिउ कायदंडु पक्खीदेहंतहु रुहिरबिंदु ।
णिवडिउ[5] आसासिउ सो रविंदु सीयलु वणरुहलवु[6] णं छणिंदु ।
तं पेच्छिवि हरियंदाणुयासु आएसु दिण्णु ताएं सुयासु ।
जइ रत्तद्दहि[8] जलकील करमि तो पुत्त णिरुत्तउ णउ[9] मरमि ।
किंकरकरसिरघडयाणिएण ससमेसमहिसमृग[10]संसोणिएण ।
खणि खोल्ल खणेप्पिणु भरहि तेम सुविहाणइ हउं तहिं ण्हामि जेम ।

घत्ता—णिसुणिवि हिंसावयणविहि गउ कुरुविंदु पिउहि मउलिवि कर ॥
कारिमकीलालहु भरियें[11] विरइय वावि विहाणइ दुत्तर ॥२३॥

२४

तूसेप्पिणु तेत्थु पइट्ठु राउ ण्हंतेण तेण बुज्झियउ साउ ।
णउ लोहिउं लक्खारसु णिरुत्तु मायारउ णिहणमि एहु पुत्तु ।

---

२२. १. MBPK णिद्दुहइ । २. MBP जलजलइ जलिउ जलणु । ३. MB °पत्त° । ४. MBP पढमु पुत्तु । ५. P वल्लीहराइं । ६. MBP संचारिउ । ७. MBP सुविज्जउ ।

२३. १. MBP पाणु । २. MBP तुंडु; T तोंडु उदरम्; K तोंडु, but records तोंडु in second hand । ३. M reads this foot as 4 *a* । ४. P देसिएहिं । ५. M reads this foot as 3 *b* । ६. MBP हियपत्थिउ आसासिउ णरिंदु । ७. MBP °लउ । ८. MBP रत्तद्दहि । ९. MBP णेय । १०. MBP °मिग° । ११. GK भरिय वावि ।

२२

शत्रु-गृहिणियोंके हार और करवलयोंका अपहरण करनेवाली तथा शुभकल्याण करनेवाली गन्ध हाथियोंसे रहित उस नगरीमें, योद्धाओंके लिए कालदूत, प्रतिकूल शत्रुओंके सिरके लिए शूलके समान वे तीनों साथ रहते थे। इतनेमें पिताके लिए दाहज्वर उत्पन्न हो गया। हार और चन्दनका लेप उसे जलाता। चन्द्रमा उसे प्रलयसूर्यके समान धकधक करता है। गीला वस्त्र अग्निज्वालाकी तरह जलाता है। आपत्तिके समय नींद नहीं आती। उसका अंगदाह किसी भी प्रकार शान्त नहीं होता। वह श्रेष्ठ विद्याधर राजा अपना मुँह कायर करके रह गया। उस अवसरपर पिताने कमलके समान मुखनेत्रवाले अपने पहले पुत्रको बुलाया। उसने उससे कहा—"जहाँ सूर्यकी किरणोंको आहत करनेवाले सघन वन और लताघर हों, जहाँ सुगन्धित काँपता हुआ देवदारु हो, और जहाँ शीतल हिम तुषार चल रहा हो, और जहाँ हवा बहती हो और शरीरको शान्ति देती हो, ऐसे शीतल जलके तटपर मुझे ले चलो। पवनवेगवाली अपनी विद्याको आदेश दो कि वह मुझे तुरन्त ले जाये।" तब उसने 'जो आज्ञा' कहकर विद्याधर देवी-समूहको पुकारा।

घत्ता—पुत्रने अपनी विद्याएँ भेज दीं। लेकिन वे उसके सम्मुख नहीं देखतीं। मन्त्र, देव, औषध, स्वजन पुण्यके पराङ्मुख होनेपर पराङ्मुख हो जाते हैं ॥२२॥

२३

पापीके किसी प्रकार प्राण-भर नहीं जाते। उसने रौद्र ध्यान प्रारम्भ कर दिया कि सम्पत्ति सुखमें लोगोंके द्वारा कहा जाता है कि सुधीजनोंके द्वारा सेवनीय हे देव तुम जिओ। अपने हाथोंसे पेटको पीटता हुआ, दुःखकथनके साथ राजा चिल्लाता है। लड़ती हुई दोनों छिपकलियोंके शरीर कट गये, उनके शरीरके मध्यसे रक्तकी बूँद गिरी, उससे अरविन्द आश्वस्त हुआ। रक्त-कण ऐसा शीतल लगा जैसे पूर्णचन्द्र हो। यह देखकर, "उसने अपने पुत्र हरिश्चन्द्रको आदेश दिया कि "यदि मैं रक्त सरोवरमें जलक्रीड़ा करता हूँ तो हे पुत्र! मैं निश्चित रूपसे नहीं मारता हूँ। अनुचरोंके हाथों और सिररूपी घटकोंके द्वारा लाये गये खरगोश, मेंढ़ा, महिष और हरिणोंके खूनसे गड्ढा खोदकर इस प्रकार भर दो कि जिससे मैं कल उसमें स्नान कर सकूँ।"

घत्ता—हिंसा वचन और विधि सुनकर कुरुविन्द पिताको हाथ जोड़कर चला गया। सवेरे उसने बावड़ी बनवायी और कृत्रिम रक्तसे भर दी ॥२३॥

२४

सन्तुष्ट होकर राजा उसमें घुसा। स्नान करते हुए उसने स्वाद जान लिया कि यह रक्त नहीं निश्चित रूपसे लाक्षारस है। मायावी इस पुत्रको मैं मारता हूँ। उसके

मणि पसरिउ तहु दुक्कम्मरेणु आयड्ढिय भीसणु खग्गधेणु ।
अइबुद्धिवंतु परचित्तजाणु दिट्ठउ कुरुविंदु पलायमाणु ।
णं करिहि विरुद्धउ जरकरेणु णरवइ तहु पच्छइ धावमाणु ।
पक्खलिवि पडिउ गिरिरायतुंगु णियकरछुरियाणिव्वट्टियंगु ।
मुउ गउ णरयहु सुहिसोयभग्गि हाहारउ उट्ठिउ बंधुवग्गि ।
अवरु वि णिसुणहि तुह वंसकेउ रूवेण णाइं सइं मयरकेउ ।
चिरु होंतउ णरवइ दंडधारि दंडउ णामें दंडियणियारि ।
तहु तणउ तणउ वज्जियदुवालि मणिमालि सयलगयणंसुमालि ।
तो देव दीहकालेण एत्थु धणरासिहि उप्परि देंतु हत्थु ।

घत्ता—पुत्तु कलत्तु चित्ति धरिवि पुंजियविविहदव्वपब्भारइ ॥
अट्टज्झाणें पिउ मरिवि अजैयरु हुयउ णिययभंडारइ ॥२४॥

२५

माणुसु दाढहिं दंतहिं दलइ जं घरि पइसइ तं तं गिलइ ।
ससिमणिजलकयसिहरग्गणहवणि पुणु रयणमालि पइसंतु भवणि ।
संभरियपुव्वजम्मंतरेण ओलक्खिउ णियसिसु विसहरेण ।
मंभीसिउ भोयाहोयणेण ता चिंतिउ खगवइजायएण ।
महु एहु को वि चिरजम्मबंधु णं तो किं णउ भक्खइ मयंधु ।
पुणु गंपि तेण पुच्छिउ मुणिंदु भासियउ तेण दंडयणरिंदु ।
हूयउ असमाहिइ मरिवि सप्पु किं ण वियाणहि अप्पणउ बप्पु ।
तं सुणिवि तेण णिवणंदणेण पिउणेहकरुणकंपियमणेण ।
पडिआवेप्पिणु घरु खवियकम्मु जिणणाहहु केरउ कहिउ धम्मु ।
बुज्झिवि फणिणा संणासु कयउ मुउ जायउ सुरु उरयत्तु गयउ ।
देवेण तेण जाणियभवेण कय गुरुपुज्जा सुमहुच्छवेण ।
आविवि मणिमालिहि दिण्णु हारु जाणइ पुरु देसु कहावयारु ।
इहु अज्ज वि अच्छइ तुज्झ कंठि ताराणियरु व णं मेरुकंठि ।

घत्ता—तं णिसुणेवि महाबलेण भरहमोत्तियावलि जोएप्पिणु ॥
इयतमु पुप्फदंतसरिसु आलिंगियउ मंति विहसेप्पिणु ॥२५॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए महाभव्वभरहाणु-
मण्णिए महाकव्वे विसंडापंडियपंडाविहंडणं णाम वीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ २० ॥

संधि ॥ २० ॥

---

२४. १. MBP तुहुं णिसुणहि । २. P णामेण जि दंडियारि । ३. MBP °दुयालि । ४. MBP ता ।
५. MBP अजगरु ।

२५. १. MBP दलेइ । २. MBP गिलेइ । ३. MBP रयणिमालि । ४. MBP मं भीसिउ । ५. MB
भोयाभोयणेण, PT भोयाभोयएण । ६. B चिरधम्मबंधु । ७. MBP °करुण° । ८. M °कप्पिय° ।
९. T कयावयारु कृतावतारः । १०. MBP व मेरुवकंठि । ११. MBP पुप्फयंत° ।

मनमें पापकी धूल प्रवेश कर गयी। उसने अपनी भीषण छुरी निकाल ली, मानो गजके प्रति बूढ़ा गज विरुद्ध हो उठा हो। उसके पीछे दौड़ता हुआ, गिरिराजकी तरह ऊँचा वह राजा फिसल कर गिर पड़ा, और अपने ही हाथकी छुरीसे अंग कट जानेके कारण मरकर नरक गया। सुधोके शोकसे भग्न बन्धुवर्गमें हाहाकार मच गया। और भी तुम अपने वंशके चिह्नको सुनो। जो मानो रूपमें स्वयं कामदेव था, ऐसा बहुत पहले दण्डक नामका शत्रुओंको दण्डित करनेवाला, दण्ड धारण करनेवाला राजा था। उसका अन्यायसे रहित पुत्र मणिमाली अपने कुलरूपी आकाशका सूर्य था। हे देव, वह लम्बे समय तक धनराशिके ऊपर अपना हाथ फेरता हुआ—

घत्ता—पुत्र और स्त्रीको अपने मनमें धारण कर और आर्त ध्यानसे मरकर जिसमें विविध द्रव्य भार एकत्रित हैं ऐसे अपने भण्डारमें मरकर अजगर हुआ ॥२४॥

२५

वह अपनी दाढ़ों और दाँतोंसे दलन करता, जो घरमें प्रवेश करता उसे डँसता। जिसमें चन्द्रकान्तमणिके जलसे रचित शिखरोंके अग्रभागसे स्नान किया जाता है, ऐसे भवनमें प्रवेश करते हुए अपने पुत्र मणिमालिको, अपने पूर्वजन्मका स्मरण करनेवाले विषधरने देख लिया। उसने अपने फन गिराकर उसे अभयदान दिया। तब विद्याधर राजाके पुत्र मणिमालिने सोचा कि यह मेरा कोई 'पूर्वजन्मका सम्बन्धी है, नहीं तो मदान्ध यह मुझे क्यों नहीं काटता। फिर उसने जाकर मुनिसे पूछा। उन्होंने कहा, "राजा दण्डक असमाधिसे मरकर साँप हुआ है। क्या तुम अपने पिताको नहीं जानते?" यह सुन प्रियके स्नेह और करुणासे कम्पित मन राजपुत्रने अपने घर आकर, कर्मोंका नाश करनेवाला, जिननाथका धर्म उससे कहा। उसे समझकर साँपने संन्यास ले लिया। मरकर वह स्वर्ग गया, और उसका सर्पत्व चला गया। जिसने अपना पूर्वजन्म जान लिया है ऐसे उस देवने उत्सवके साथ गुरुपूजा की। आकर मणिमालाका हार दिया। नगर और देशने कथावतार जान लिया। वह हार आज भी तुम्हारे गलेमें है, मानो मेरुपर्वतके गलेमें तारा-समूह हो।

घत्ता—यह सुनकर महाबलने पुष्पदन्तके समान अन्धकारको दूर करनेवाले कान्तिमय हारको देखकर हँसते हुए मन्त्रीका आलिंगन कर लिया ॥२५॥

इस प्रकार त्रेसठ महापुरुषोंके गुणालंकारोंसे युक्त महापुराणमें महाकवि पुष्पदन्त द्वारा रचित एवं महाभव्य भरत द्वारा अनुमत महाकाव्यका विलण्डा पण्डित-बुद्धि विखण्डन नामका बीसवाँ परिच्छेद समाप्त हुआ।

संधि २१

बुझंतहु णरइ पडंतहो बहुमण्णियभवतरुहलहो ॥
सइंबुद्धें णाणविसुद्धें दिण्णउ हत्थु महाबलहो ॥ ध्रुवकं ॥

१

पुणु तेण पजंपिउं सुहमहुरु भवसयसंचियमलभारहरु ।
तुह तायपियामहु कुलधवलु णामेण पसिद्धउ सहसबलु ।
उप्पाइवि केवलु णाण गुणि गउ मोक्खणिवासहु परममुणि ।
तुह तायताउ सयबलु णिवरु परिपालिवि सावयवयपवरु ।
माहिंदसग्गि हूयउ अमरु सत्तंबुहिआउपमाणधरु ।
गउ मेरुहि तइया भावियउ तुहुं मइं सहुं तें बोल्लावियउ ।
अइबलु तुह पिउ मयवंतु वसि गउ वणवासहु होएवि रिसि ।
णयविणयालहं णवजोव्वणहं सिरि अप्पिवि णियणियणंदणहं ।
तुह एम पियामहपियपहुइ सुम्मंति देव साहियसुगइ ।
रुद्दट्टझाणआरूढदुइ संपत्ता णरयतिरिक्खगइ ।

घत्ता—हयकम्में जिणवरधम्में उवरि उवरि रंकु वि चडइ ॥
कयगावें पत्थिव पावें हेट्ठामुहुं राउ वि पडइ ॥१॥

२

तं सुणिवि पबुद्धउ भव्वयणु अइबलेंसुउ हुउ उवसंतमणु ।
संकाकंखाहिं विवज्जियउ गुरु तेण सुवण्णहिं पुज्जियउ ।
अण्णहिं दिणि उडुगणमेहलहो खलखलखलंतणिज्झरजलहो ।

MBP give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza :—

यस्य जनप्रसिद्धमत्सरभरमनवमपास्य चारुणि
प्रतिहतपक्षपातदानश्रीरुरसि सदा विराजते ।
वसति सरस्वती च सानन्दमनाविलवदनपङ्कजे
राजति जयतु जगति भरतेश्वरमयममलमङ्गलः ॥

MP read विराजयते for विराजते; °मलाणिल° for मनाविल°; स जयति जयतु for राजति जयतु; M reads °श्वरसुखममलमल°; P reads °श्वरजयमयममल° for °श्वरमयममल° । GK do not give it.

१. १. MBP पयंपिउ । २. MBP केवलणाणु गुणि । ३. MBP °पवरु । ४. P °जोव्वणाहं । ५. P °णंदणाहं । ६. MBP °पिउ° ।

२. १. MB णिसुणिवि । २. MB अइबलु सुउ ।

सन्धि २१

संसाररूपी वृक्षके फलको सब कुछ माननेवाले राजा अरविन्दके रक्तकुण्डमें डूबने और नरकमें जानेपर स्वयंबुद्धिने महाबलके लिए अपना सहारा दिया।

१

फिर उसने कानोंको मधुर लगनेवाली यह बात कही कि सैकड़ों जन्मोंके मलभारको दूर करनेवाले कुलश्रेष्ठ तुम्हारे पिताके पितामह सहस्रबल नामसे प्रसिद्ध थे। वह परम गुणी मुनि बनकर तथा केवलज्ञान प्राप्त कर मोक्षको प्राप्त हुए। तुम्हारे पिताके पिता नृपश्रेष्ठ शतबल श्रावकव्रत-समूह धारण कर माहेन्द्र स्वर्गमें देव हुए। उनकी आयु सात सागर प्रमाण है। उस समय हम लोग सुमेरु पर्वतपर गये। वहाँ उन्होंने मेरे साथ तुमसे कहा—भयभीत तुम्हारा जितेन्द्रिय पिता, मुनि होकर वनवासके लिए चला गया। हे देव, इस प्रकार न्याय और विनयके घर नवयौवनसे युक्त, अपने-अपने पुत्रोंको लक्ष्मी सौंपकर, तुम्हारे पितामह पिता प्रभृति लोग मोक्षको सिद्ध करनेवाले सुने जाते हैं। (लेकिन तुम्हारे पिता) रौद्र-आर्तध्यानसे आरूढ़ आभाके कारण नरक और तिर्यंचगतिको प्राप्त हुए।

घत्ता—कर्मोंको आहत करनेवाले जिनवरके धर्मसे रंक भी ऊपर-ऊपर जाता है। हे नृप, जब कि गर्व करनेवाले पापसे राजा नरकमें (अधोमुख) गिरता है ॥१॥

२

यह सुनकर वह भव्यजन प्रबुद्ध हो गया, अतिबलका पुत्र उपशान्त मन हो गया। तब शंकाओं और आकांक्षाओंसे रहित गुरुकी उसने अच्छे शब्दोंमें पूजा की। एक दूसरे दिन, वह नक्षत्र-गण जिसकी मेखला है, जिसमें खलखल करता हुआ निर्झरोंका जल बह रहा है, जो

कंचणधूलीरयपिंगलहो करिदंतविहिण्णसिलायलहो ।
मणियरकब्बुरियणहंतरहो सिहरुच्चाइयसयमहघरहो ।
आसीणसुरासुरसुंदरहो गउ वंदणहत्तिइ मंदरहो ।
सिरिभद्दसालसुणंदणइं सउमणससरसपंडुयवणइं ।
वज्जियफणिकामिणिणेउरइं चालियचंदुज्जलचामरइं ।
किंणरपारद्धथोत्तसयइं विद्धंसियमाणवभवभयइं ।
अकयाइं विलंबियतोरणइं पयेसिवि जिणबिंबणिहेलणइं ।
मंडिय सीहासणवेइयउ परियंचिवि अंचिवि चेइयउ ।

घत्ता—णरविहुणा खगवइगुरुणा करु णिउ सेसासयदलहो ॥
तं मणियहिं महुयरझुणियहिं भणइ व तर दुक्कियजलहो ॥२॥

३

ता तहिं ओलंबियभुयजुयलु संपत्तउ चारणमुणिजुयलु ।
मलु जासु सरीरि ण झाणि मलु णउ परतावणि बलु सुतवि बलु ।
जसु भमइ जासु णउ भमइ मणु णहु भज्जइ कहिं मि ण सीलगुणु ।
वंकत्तणु भउंहहं आयरिउ णउ जासु मइइ किं पि वि धरिउ ।
रसु परमागमि णउ कामरसु वसु जं ण समिच्छइ धम्मवसु ।
सिरि केसजडत्तणु जासु गय णउ सीस वियाणियसत्तणय ।
दुम्मह मय अट्ठ वि जासु मय कय पंचिंदियहुं ण जेण दय ।
तं रिसिजुयलुल्लउ वंदियउ सइंबुद्धें अप्पउ णिंदियउ ।
हउं अज्जि वि एम ण करमि तउ केत्तिउ किर पोसमि असुइवउ ।

घत्ता—सिरिगेहइ पुव्वविदेहइ देसु महाकच्छउ वसइ ॥
तंणयरहु सुरगिरिसिहरहु आयउ तं तहु दिहि दिसइ ॥३॥

४

तं अरुहजुयंधरतित्थसरे ण्हायउ ण वडइ संसारजरे ।
तहिं एक्कु साहु आइच्चगइ अण्णेक्कु अरिंजउ सुद्धमइ ।
ते पुच्छिय बुद्धें बे वि जेण तुम्हइं तिणाणपाणीयघणे ।
महु सामि महाबलु संभरह किं भव्वु अभव्वु व वज्जरह ।
जाणियतसथावरजीवगइ तं णिसुणिवि जंपइ जेट्ठु जइ ।
इह जंबुदीवि दाहिणभरहे अग्गइ जुयाइपारंभवहे ।

---

२. ३. BP वंदणभत्तिइ । ४. P °भद्द° । ५. MBP °भवसयइं । ६. MBP पइसिवि । ७. MBP सिहासण° । ८. MBPKT तरु ।

३. १. P मइं and gloss मत्तौ । २. MBP जो । ३. BP ण जो जीवदय । ४. MBP अज्ज ।

४. १. MBP °जुयंधरि । २. MBP संसारदरे । ३. MBP जणा । ४. MBP °घणा । ५. M जेट्ठु जइ ।

स्वर्णधूलि रससे पीला है, जिसकी चट्टानें गजदन्तोंसे विदीर्ण हैं, जिसका आकाश मणियोंकी किरणोंसे चितकबरा हो गया है, जिसके शिखरोंको इन्द्र-विमानोंने उठा रखा है, जो आसीन देवों और असुरोंसे सुन्दर है, ऐसे सुमेरु पर्वतकी वन्दना-भक्तिके लिए गया। जिनमें श्रीभद्रसाल नन्दनवन हैं तथा सौमनस सरस पाण्डुकवन हैं, जिनमें नागराजकी कामिनियोंके नूपुरोंका स्वर हो रहा है, जिनमें चन्द्रमाके समान उज्ज्वल चमर ढोरे जा रहे हैं, किन्नरोंके द्वारा सैकड़ों स्तोत्र प्रारम्भ किये जा रहे हैं, जो मनुष्योंके जन्म-जन्मान्तरोंको नष्ट करनेवाले हैं, जो अकृत्रिम हैं, जिनमें तोरण लटके हुए हैं, ऐसे जिनप्रतिमाओंके मन्दिरोंमें प्रवेश कर, उसने सिंहासनों और वेदियोंको अलंकृत किया तथा चैत्य (प्रतिमा) की परिक्रमा और पूजा की।

घत्ता—नरश्रेष्ठ, विद्याधर राजाओंके गुरुने निर्माल्यका कमल अपने हाथमें ले लिया, जो मानो सुन्दर मधुकरकी ध्वनियोंसे कह रहा था कि पापरूपी जलसे तर ॥२॥

३

उस अवसरपर अपने दोनों हाथ उठाये हुए चारणयुगल मुनि वहाँ आये। उनके शरीरपर मल था, परन्तु उनके ध्यानमें मल नहीं था। दूसरोंको सतानेके लिए उनके पास बल नहीं था, उनके सुतपमें बल था। जिनका यश भ्रमण करता था, जिनका मन भ्रमण नहीं करता था। आकाश भग्न होता था, उनका शीलगुण नष्ट नहीं होता था। उनकी भौंहोंमें टेढ़ापन दिखाई देता था, उनकी मतिमें कहीं भी वक्रता नहीं थी। उन्हें परमागममें रस आता था, उनमें कामरस नहीं था। वह धर्मके वशीभूत थे, वह धन नहीं चाहते थे। जिनके सिरमें बालोंकी जड़ता जा चुकी थी, परन्तु सात नयोंको जाननेवाला उनका मस्तिष्क जड़ताको प्राप्त नहीं हुआ था। जिनके आठों दुर्मद नष्ट हो चुके थे, परन्तु उन्होंने पाँच इन्द्रियोंपर कभी दया नहीं की। ऐसे उन दोनों चारण मुनियोंकी उसने वन्दना की। स्वयंबुद्धि अपनी निन्दा करने लगा—मैं आज भी इस प्रकार तप नहीं कर रहा हूँ। मैं अपवित्रताका कितना पोषण कर रहा हूँ।

घत्ता—लक्ष्मीके घर पूर्वविदेहमें महाकच्छप नामका देश है। सुमेरु पर्वतके समान शिखरवाले उस नगरसे आया हुआ वह चारणयुगल मुनि उसे समझाता है ॥३॥

४

जो युगन्धर अर्हन्तके तीर्थरूपी सरोवरमें स्नान कर लेता है, वह संसारकी ज्वालामें नहीं पड़ता। उस युगलमें एक मुनिका नाम आदित्यगति था और दूसरेका शुद्धमति अरिंजय। स्वयंबुद्धिने उन दोनोंसे पूछा कि आप लोग तीन ज्ञानरूपी जलोंके मेघ हैं, मेरे स्वामी महाबलके बारेमें बताइए कि वह भव्य है या अभव्य? यह सुनकर त्रस और स्थावर जीवोंकी गतिको जाननेवाले उनमें-से जेठे मुनि कहते हैं—"इस जम्बूद्वीपके दक्षिण भारतमें आगे प्रथम कर्मभूमिका प्रवेश

आसण्णभव्वु सो णिवखयरु दहमइ भवि होसइ तित्थयरु।
भोयासिउ जं तं णेंव रहमि दुम्भोयत्तणु तहु तुह कहमि।
पच्छिमविदेहि गंधिलविसए सीहउरि णरिंदु विमुक्कभए।
णामें सिरिसेणु सिरीणिलउ सुंदरिदेविहि दरिसियपुलउ।
तहु पढमु पुत्तु जयवम्मु हुउ बीयउ सिरिवम्मु णरेहिँ[10] थुउ।
सो रुच्चइ जणणिजणणमणहो सो भावइ सयलहु परियणहो।
घत्ता—सुहइत्तणु बुद्धिमहत्तणु घिवहिँ[11] असेसु वि जलहिजले ॥
किं गुणगणु मण्णइ सज्जणु वण्णेइ[12] पुण्णु जि भल्लउ भुवणयले ॥४॥

५

मेल्लंतें संतें रज्जरइ वउ लेंतें जंतें परमगइ।
णरणाहें[1] अइअजुत्तु कियउ लहुतणयहु रज्जु समप्पियउ।
जयवम्में[2] ता परिचिंतियउ को फेडइ दइवणियंतियउ।
णिद्दइवहु[3] सव्वु वि चप्फलउ णिद्दइवकज्जि जगु सीयलउ।
णिद्दइवु[4] णवंतु वि को गणइ णिद्दइवहु भासिउ को सुणइ।
णिद्दइवहु सुक्कइ[5] भरिउ सरु ण फलइ णिद्दइवें णिहिउ तरु।
णिद्दइवहु बंधु वि होइ परु णिद्दइवहु देव ण देंति वरु।
ण हणइ भेसहु वि रुयापसरु वियलइ सुवण्णु पत्तउ वि करु।
णिद्दइवहु विकडइ घरिणि घरु ण करइ सणेहु[6] मायापियरु।
उज्जमु[7] करेवि अप्पउ दमइ णिद्दइवहु किं सिरि संकमइ।
घत्ता—णहु लंघउ गिरि आसंघउ जं जि करइ तं णिप्फलउ ॥
हयकाएं किं ववसाएं सव्वहु दइवु जि अग्गलउ ॥५॥

६

इणं चिंतमाणो[1] अहं णिंदमाणो।
अरायं वहंतो अणंगं वहंतो।
पिउरस्सा[2]यहंतो रमासायहंतो।
रईसूहवेणं सयासूहवेणं।
जसेणं सियं जं[3] मुहेणं जियं[4] जं।
दयंगं समंतो समेणं समंतो।

६. MBP दसमइ। ७. B जंतउ णउ; P जं त ण उ। ८. MBP पढमु पुत्तु। ९. MBP अजवमु। १०. MBP णरिंदथुउ। ११. P घिवहुं। १२. M मण्णइ।

५. १. P णरणाहें अजुत्तु। २. MBP अजवम्में। ३. P णिदइयहु। ४. MBP णिद्दइउ। ५. MBP सुक्खइ। ६. BP सिणेहु। ७. MBP उज्जउ।

६. १. B णिद्दमाणो। २. B °स्सायहुंतो। ३. MBPT सियज्जं। ४. MBPT जियज्जं and gloss in T मुखेन कृत्वा जिताब्जं यशोयमम्।

होनेपर वह आसन्न भव्य विद्याधर राजा दसवें भवमें तीर्थंकर होगा। उसका जैसा भोगाशय है उसे छिपाऊँगा नहीं, उसका दुर्मोदपन तुम्हें बताऊँगा। पश्चिम विदेहके गन्धिल्ल देशमें भयसे रहित सिंहपुरमें श्रीका आश्रय श्रीषेण नामका राजा था जो अपनी पत्नी सुन्दरीदेवीको पुलक उत्पन्न करता था। उसका पहला पुत्र जयवर्मा हुआ और दूसरा श्रीवर्मा जो मनुष्योंके द्वारा संस्तुत था। वह अपने माता-पिताके मनको अच्छा लगता और समस्त परिजन उसे चाहते।

घत्ता—सुभटत्व और बुद्धिके अशेष बुधपनको समुद्रके पानीमें डाल दो। गुणगणको क्या माना जाता है, और सज्जनका वर्णन किया जाता है? संसारमें पुण्य ही भला होता है ॥४॥

५

राज्यमें रति छोड़ते हुए व्रत लेते और परमगति प्राप्त करते हुए राजाने एक बात बहुत बुरी की—अपने छोटे बेटेको राज्य दे दिया। तब जयवर्माने अपने मनमें विचार किया कि दैवके नियन्त्रणको कौन ठुकरा सकता है। दैवहीनका सब कुछ चंचल होता है। दैवहीनके कार्यमें सारा संसार ठंडा होता है, दैवहीनके प्रणाम करनेपर भी कौन गिनता है, निर्दैवका कहा हुआ कौन सुनता है, दैवहीनके लिए भरा हुआ सरोवर सूख जाता है। भाग्यहीनके लिए भाई भी शत्रु हो जाता है, दैवहीनके लिए देवता भी वर नहीं देते। उसके रोगके प्रसारको दवाई भी नहीं रोकती। हाथमें आया हुआ सोना भी गिर जाता है। दैवहीनके घर और गृहिणी दोनों नष्ट हो जाते हैं। माता-पिता भी स्नेह नहीं करते। उद्यम करनेके लिए वह अपना दमन करता है लेकिन क्या दैवहीन व्यक्तिके पास लक्ष्मी जाती है।

घत्ता—चाहे वह आकाश लाँघे चाहे पहाड़की शरण ले, वह जो जो करता है वह सब निष्फल जाता है। शरीरको नष्ट करनेवाले व्यवसायसे क्या? दैव ही सबसे बड़ा होता है? ॥५॥

६

यह सोचता हुआ अपनी निन्दा करता हुआ, वैराग्य धारण करता हुआ कामदेवको नष्ट करता हुआ, पितासे कहता हुआ लक्ष्मीके स्वादको नष्ट करता हुआ जो कामदेवसे उत्पन्न है, सदैव सबका अभिलषणीय है, जो यशसे निर्मल है, जो मुग्धाके द्वारा जीता गया है, दयालुओंको शान्त

णियं ओऽवणंतं गओ सो वणंतं ।
फिडीखद्धकंदं णयासीणकंदं ।
सरेणं सवंतं महावंसवंतं ।
सवेल्लीपियालं पुलिंदीपियालं ।
विणिग्गंकुरोहं विचित्तंकुरोहं ।
अलीपीयवासं फणिंदाहिवासं ।
महूहिं पलित्तं दवग्गीपलित्तं ।
पवड्ढंतपीलुं पगज्जंतपीलुं ।
हुयातावसीयं सया तावसीयं ।
पवित्तं पसण्णं हयाणेयसण्णं ।
विलुत्तं तयासं पफुल्लंतयासं ।
सुसंतावयासं णिहित्तावयासं ।

घत्ता—तहिं काणणि थियपंचाणणि दिट्ठु भडारउ दुरियमहु ॥
जयवम्में समियकुकम्में मोक्खहु केरउ णाइ पहु ॥६॥

७

जसु तित्थगमणु अहवावठाणु जसु धम्मसमणु अहवा सुमोणु ।
जसु इंदियरणु अह परमकरणु जसु अरुहचिंत अह सुयसरणु ।
जसु जोयणिद्द अह जागरणु जसु खलेकिउ दुहु अह तवचरणु ।
जसु सयणु धरणि अह कट्ठु तिणु जो तणुमलधरु मणमलेण विणु ।
उववासु जासु अह जिणकहिउ परपिंडु जेण सुद्धउ गहिउ ।
तहु दुम्महवम्महणिम्ममहो पणिवाउ करेवि सयंपहहो ।
सिरिसेणसुएण समिच्छियउ अणगारत्तणउं पडिच्छियउ ।
छुडु केसभारु आलुंचियउ छुडु करणवियारु वि खंचियउ ।
तामायउ पणवहुं परमजइ महिहरु णामें खयराहिवइ ।

घत्ता—जंपाणहिं विविहविमाणहिं णिहिलु णहंगणु छाइयउ ॥
वेंभइयं णवपावइयं मेहुं णिव्वायवि जोइयउ ॥७॥

८

वद्धउ णियाणु एरिसिय जहिं कुलि रिद्धि होउ महु जम्मु तहिं ।
जइ अत्थि किं पि रिसिधम्मफलु तो होउ रज्जु विहवियखलु ।
ता तक्खणि णिग्गउ गिरिविवरे कालउ विसहरु तहु लग्गु करे ।

५. MBP गिरीलग्गकंदं; T णयासीणकंदं गिरीलग्गमेघ । ६. M °वियालं । ७. T पहुल्लंतयासं । ८. MBP अजवम्में ।

७. १. MBPT अहवा सठाणु । २. P धम्मसवणु । ३. MBP समोणु । ४. MBT परमकरणु । ५. P खलिकिउ । ६. MB कट्ठुतिणु । ७. MBP मलहरु वि मलेण । ८. P °सेणु सुएण । ९. MBP तावायउ । १०. MP मुहु । ११. MBK णिव्वाहवि ।

करता हुआ, तथा शमभावसे अपने यौवनको शान्त करते हुए वह वनके लिए चला गया। उस वनमें जहाँ सुअरोंके द्वारा अंकुर खाये जा रहे हैं, मेघ शिखरोंसे लगे हैं, जो स्वरोंसे आवाज कर रहा है, जो बड़े-बड़े बाँसोंसे युक्त हैं, जो लताओं और प्रियाल लताओंसे सहित है, जो शबरियोंके लिए प्रिय है, जिसमें अंकुर निकल रहे हैं, जिसमें विचित्र अंकुरोंका समूह है, जिसमें भ्रमर गन्धका पान कर रहे हैं, जिसमें नागराजोंका अधिवास है, जो मधुसे आर्द्र है और दावानलसे प्रज्वलित है, जहाँ पीलू वृक्ष बढ़ रहे हैं। पीलु (गज) गर्जना कर रहे हैं, जहाँ शीत गर्मी होती है, जो तपस्वियोंके लिए हितकारी है, जो पवित्र और प्रसन्न है, जहाँ आहारादि अनेक संज्ञाएँ नष्ट कर दी गयी हैं, जिसमें मृत्युकी आशा समाप्त हो चुकी है, जिसमें दिशाएँ खिली हुई हैं, जिसमें अवकाश शान्त है, और जिसकी दिशाओंमें तपस्वी हैं।

घत्ता—सिंहोंसे अवस्थित उस काननमें कुकर्मको शान्त करनेवाले जयवर्माने पापोंको नष्ट करनेवाले आदरणीय भट्टारकको इस प्रकार देखा जैसे वह मोक्षके पथ हों ॥६॥

७

जिसका तीर्थगमन अथवा कायोत्सर्ग, जिसका धर्म कथन अथवा मौन। जिसका इन्द्रिय युद्ध अथवा परम करुणा, जिसकी अर्हत् चिन्ता अथवा शास्त्रशरण, जिसकी योगनिद्रा अथवा जागरण। जिसके लिए दुष्टके द्वारा किया गया दुःख अथवा तपश्चरण। जिसका धरती पर सोना, अथवा काठ या तृण पर। जो मनके मलके बिना शरीरका मल धारण करते हैं अथवा जिसका जिनेन्द्रके द्वारा कहा गया उपवास होता है, अथवा जिनके द्वारा शुद्ध आहार ग्रहण करते हैं ऐसे उन दुर्मद कामदेवका नाश करनेवाले स्वयंप्रभको प्रणाम कर श्रीषेणके पुत्रके द्वारा चाहा गया अनगार धर्म स्वीकार कर लिया गया। शीघ्र ही उसने केशलोंच कर लिया। शीघ्र ही उसने इन्द्रियोंके विकारोंको रोक लिया। तब इतनेमें महीधर नामका विद्याधर राजा परममुनिको प्रणाम करनेके लिए आया।

घत्ता—जंपानों और विविध विमानोंसे आकाशतल छा गया। नव प्रव्रजित (नया संन्यास लेनेवाले) ने विस्मित होकर उसे बार-बार देखा ॥७॥

८

उसने यह निदान बाँधा कि जिस कुलमें इस प्रकारकी ऋद्धि हो, वहाँ मेरा जन्म हो। यदि मेरा मुनिधर्मका कुछ भी फल है तो शत्रुओंका नाश करनेवाला मेरा राज्य हो। इतनेमें उसी क्षण एक काला साँप पहाड़के विवरमेंसे निकला और उसके हाथमें काट खाया।

रुहिरुल्लउ धारहिं परिगलिउ घरणियलि कलेवरु रुलुघुलिउ ।
गुरुणा भवपासणासकरइं कहियाइं पंचपरमक्खरइं ।
असुधासु विसेणें झडत्ति हउ गउ जीउँ ईसिउवसमियरउ ।
अलयाउरि रायहु तणइ घरे उप्पण्णु मणोहराहि उयरे ।
सो एहु महाबलु भोयरसु णउ मुयइ तेण सणियाणवसु ।
घत्ता—मिच्छत्तें मणकुडिलत्तें अवरु णियाणणिबंधणेण ॥
जगु ताविउ आवइ पाविउ णं वणगयउलु बंधणेण ॥८॥

९

णत्थित्तविवाइहिं दुम्मइहिं संभिण्णमहामइसयमइहिं ।
सुयदंडिहिं चप्पिवि पेल्लियउ अप्पाणउं कद्दमि घल्लियउ ।
पइं कड्ढिवि सुंचिवारिहिं ण्हविउ उच्चाइवि सीहासणि थविउ ।
णिसि सिविणेइ अज्जु णियच्छियउ तुह णाहें दुरिउ दुगुंछियउ ।
सुत्तुट्ठिउ काइं मि णउ चवइ अच्छइ चिंताऊरिउ णिवइ ।
दिट्ठउ णिमित्तु तं णउ कहइ आगमणु तुहारउ मणि महइ ।
अचिरेण जाहि पैहुमंदिरहो भमरु व भमंतु इंदीवरहो ।
जा ण कहइ सो पत्थिवु सुयणु ता पहिलउ सिविणउं तुहुं जि भणु ।
अण्णु वि लइ दुक्की खयेंणियइ एवहिं सो एक्कु मासु जियइ ।
पडिवज्जइ धम्मु म भंति करु दिवसहिं होसइ तेलोक्कगुरु ।
संबोहहि जाइवि तुरिउं तुहुं पावेसइ भव्वु अणंतु सुहुं ।
तं णिसुणिवि जइवरबोल्लियउ णियहियवउ दुक्खें सल्लियउ ।
साहारिवि सुमरिवि जिणवयणु आलोइवि गमेंणिच्छइ गयणु ।
घत्ता—रिसि संसिवि बे वि णमंसिवि लहु संचल्लिउ मंतिवरु ॥
पहु पविमलु गुरु दंसणजलु तण्हइ जोयइ वोमसरु ॥९॥

१०

तावेत्तहि णहयलि णिव्वडिउ खेयरु खगवइदिट्ठिहि चडिउ ।
चिंतइ सो बहुंविहु भिण्णमइ किं गिरिवरु णं णं खेयलगइ ।
किं घणु णं णं पडिखलियमरु किं पक्खि ण एहु पलंबकरु ।
इय जाम कैमेण विवेइयउ ता बुद्धु समीवु पराइयउ ।
उट्ठिवि आलिंगिउ णिववरेण तेण वि णिवु पणविउ णियसिरेण ।

८. १. MBP परियलिउं । २. P झडत्ति विसेण । ३. P जीविउ इसिउवसमियउ ।

९. १. MBP मिच्छत्तविवाइहि । २. MBP सुइवारिहिं । ३. P सिविणउ अज्ज । ४. MBP बुहमंदिरहु । ५. MB खयणिवइ । ६. MBP गयणिच्छइ गमणु ।

१०. १. MBP ता एत्तहि । २. MB बहुविह । ३. MB खयरगइ । ४. MBP णिवेण णिवेइयउ । ५. MBP समीउ । ६. MBP णिउ ।

धाराओंमें खून वह निकला, और उसका शरीर धरतीपर लोटपोट हो गया। गुरुने संसारके बन्धनको काट देनेवाले पाँच परम अक्षरोंवाला मन्त्र उसे सुनाया। विषने उसके प्राणोंकी शक्ति नष्ट कर दी। और उसका जीव कुछ उपशम भाव धारण करता हुआ चला गया। और अलकापुरमें राजाके घर रानी मनोहराके उदरसे उत्पन्न हुआ। वही यह महाबल है भोगरस-वाला। अपने निदानके अधीन होनेके कारण वह इसे नहीं छोड़ता।

घत्ता—मिथ्यात्व मनकी कुटिलता और निदानके निबन्धनसे यह विश्व सन्तप्त है और आपत्ति उठाता है वैसे ही जैसे बन्धनसे वनगज-कुल ॥८॥

९

नास्तिकतावादी दुर्मति सम्भिन्नमति महामति और स्वयंमति आदि मन्त्रियोंने भुजदण्डोंसे चाँपकर आत्माको कीचड़में डाल दिया था, आपने निकालकर पवित्र जलसे नहला दिया है और उठाकर सिंहासन पर स्थापित कर दिया है। आज रात तुम्हारे स्वामीने एक सपना देखा है, उसने पाप नष्ट कर दिया है। सोकर उठनेके बाद कुछ भी नहीं बोलता राजा चिन्तासे व्याकुल बैठा है। जो निमित्त देखा है वह किसीसे नहीं कहता। वह तुम्हारे आनेकी बाट देख रहा है। तुम शीघ्र ही राजाके घर जाओ, उसी प्रकार जिस प्रकार घूमता हुआ इन्दीवरके पास जाता है। यदि वह राजा स्वप्न नहीं कहता। तब पहला सपना तुम्हीं कह देना। और लो उसकी क्षय नियति आ पहुँची अब वह केवल एक माह जीवित रहेगा। तुम भ्रान्ति मत करो। वह धर्म स्वीकार कर लेगा। और कुछ ही दिनोंमें त्रिलोक-गुरु हो जायेगा। तुम शीघ्र जाकर उसे सम्बोधित करो। वह भव्य अनन्त सुख प्राप्त करेगा।" मुनिवरके इन बोलोंको सुनकर उसने दुःखसे पीड़ित अपने हृदयको ढाढस देकर और जिन-वचनकी यादकर जानेकी इच्छासे आकाशको देखकर।

घत्ता—दोनों मुनियोंकी प्रशंसा कर और नमस्कार कर मन्त्रीवर शीघ्र चला। प्रभु, पवित्र गुरु दर्शन-जलकी इच्छा करता है और आकाशरूपी सरोवर देखता है ॥९॥

१०

इतनेमें आकाशमें आता हुआ विद्याधर राजाकी दृष्टिमें आया। भिन्नमति वह तरह-तरहसे सोचता है ? कि क्या है गिरिवर है ? नहीं-नहीं यह आकाशतल गति है ? क्या घन है ? नहीं-नहीं प्रतिहतपवन है ? क्या पक्षी है ? नहीं नहीं ? यह लम्बे हाथोंवाला है। इस प्रकार जबतक वह क्रमसे जानता है तबतक पास आये हुए स्वयंबुद्धको उसने पहचान लिया। नृपवरने उठकर उसका आलिंगन किया, अपने सिरसे राजाने भी उसको प्रणाम किया और बोला, "आपने

पुणु भणिउं अचलु पसाउ किउ किंकरु हउं परँगुणगहहि णिउ।
ता भणइ राउ णिसि लक्खियउ पइं जीवियव्वु महु रक्खियउ।
मंतें पउत्तु भो णउ रहमि पइं दिट्ठउ दंसणु हउं कहमि।
चंप्पियउ जेहिं ते जड कुगुरु जो पंकु तं जि दुग्गइविहुरु।
जं जलु तं जिणवरिंदवयणु धोयउ मइं तुहुं सुविसुद्धतणु।
हरिवीढारोहणु सुगइसुहुं पुणु कहइ संतु वियसंतमुहुं।

घत्ता—मइं देसिउ चारणभासिउ देव कयाइ ण संचलइ॥
सहुं सासें एक्कें मासें आउ तुहारउ परिगॅलइ॥१०॥

११

ता भणइ महाबलु रयविरमु कल्लाणमित्तु बंधउ परमु।
तुहुं बप्प मज्झु दाहिणउ करु आलग्गणखंभु सुसंतियरु।
आसॅण्णमरणु किं तउ कॅरमि हउं एवहिं संणॉसिण मरमि।
इय जंपिवि मउलियकरयलहो पुरि अप्पिवि पुत्तहु अइबलहो।
परियणसयणाइं खमाइयइं मुँणिभावणसुत्तइं भावियइं।
तणुमणवयसिरइं वि मुंडियइं इंदियइं खगिंदें दंडियइं।
मलभरियइं चरियइं छंडियइं मायामिच्छत्तइं खंडियइं।
णीसेसैं परिग्गहु परिहरिवि अरहंतु भडारउ संभरिवि।
पच्छा घुलंतसाहारवणि थिउ सहससिहरि जिणवरभवणि।

घत्ता—अहिसित्तइं सुद्धंपवित्तइं जिणपडिबिंबइं पुज्जियइं॥
हयभमरहिं चालियचमरहिं खयरकुमारहिं विज्जियइं॥११॥

१२

कमकमलपडियभुवणत्तयहो उब्भासियसियछत्तत्तयहो।
तियसिंदविंदवंदियपयहो पारद्ध पुज्ज परमप्पयहो।
उक्खित्त चरुय पीणीयँ भूय माया इव उब्भाईय धूयँ।
हत्थिहडा इव घंटामुहल वरणरवइसेवा इव सहल।
जलणिहिवेला इव सरयणिय वेसा इव दरिसियदॅप्पणिय।
तरुराइ व विविहकुसुमथइय णहलच्छि व पउरकेउछइय।
घम्मॅा इव दित्तदीवसहिय सुरसिहरि व चंदणमहमहिय।
अट्ठाहइं महिवि जिणाहिवइ बावीस दिवस संणासगइ।
पाउग्गमरणविहि तेण कय सुहझाणारंभे प्राणॅ गय।

---

७ P परमुण्णइ णिहिउ। ८. B चंपियउ। ९. B परियलइ।

११. १. MBP आसण्णु मरणु। २. MBP चरमि। ३. MBP संणासणु करमि। ४. M णियभावण°। ५. MPP णीसेसु। ६. MBP पुण्णपवित्तइं।

१२. १. MBP पीणियभुयहो। २. MBP उच्चाइयधुयहो; T धूय पुत्री धूपश्च। ३. MB °दप्पणय। ४. K omits this line. ५. MBP पाण।

अपूर्व प्रसाद किया, मुझ दासको आप इतनी उन्नति पर ले गये। तब राजा रातमें देखा हुआ स्वप्न उसे बताता है कि तुम्हारे द्वारा मेरा जीवन बचाया गया है।" मन्त्री बोला—"मैं छिपाकर नहीं रखूँगा। तुमने जो स्वप्न देखा है उसे मैं कहता हूँ। जिन्होंने तुम्हें चाँपा है गुरु हैं। जो कीचड़ है, वही दुर्गतिका कष्ट है, जो जल है वह जिनवरका वचन है, सुविशुद्धतम तुम्हें मैंने धोया है और जो सिंहासन पर आरोहण है, वह सुगतिका सुख है। फिर वह, विकसित मुख उससे कहता है ?

घत्ता—मैं कहता हूँ कि चारणमुनि द्वारा कहा गया हे देव, कभी भी झूठ नहीं हो सकता। श्वासके साथ, एक मासमें तुम्हारी आयु परिसमाप्त हो जायेगी ॥१०॥

११

तब, पापसे शान्त महाबल कहता है—'तुम मेरे कल्याणमित्र और परम बन्धु हो। तुम मेरे पिता और दाएँ हाथ हो, शान्ति करनेवाले आधार स्तम्भ हो। मेरी मृत्यु निकट है अब तप क्या करूँगा ? मैं इस समय संन्याससे मरता हूँ। इस प्रकार कहकर हाथ जोड़े हुए अपने पुत्र अतिबलको राज्य देकर उसने परिजनोंसे क्षमा माँगी। मुनिभावनाके सूत्रोंकी भावना की। शरीर मन वय और सिरको भी मूँड़ लिया, विद्याधर राजाने इन्द्रियोंको भी दण्डित किया। पापसे भरे आचरण छोड़ दिये, मायामिथ्यात्वोंको खण्डित किया। समस्त परिग्रहका परिहार कर आदरणीय अरहन्तकी याद कर आन्दोलित सहकार वनमें सहस्रशिखर जिनमन्दिरमें जाकर स्थित हो गया।

घत्ता—शुद्ध पवित्र जिन प्रतिमाओंको कि जिनपर भ्रमरोंको उड़ाते हुए चमरोंसे विद्याधर कुमारियोंके द्वारा हवा की जा रही है। उसने अभिषेक और पूजा की ॥११॥

१२

जिनके चरण-कमलोंमें भुवनत्रय पड़ता है, जिनके ऊपर तीन छत्र स्थित हैं, जिनके चरण, देवेन्द्र समूह द्वारा वन्दित हैं, ऐसे परमपदमें स्थित जिनकी उसने पूजा प्रारम्भ की। उसने अपने स्थूल हाथोंमें नैवेद्य ले लिया, उसने माताके समान धूय (कन्या और धूप) ऊँची कर ली। जो पूजा, हस्तिघटाके समान घण्टाओंसे मुखरित थी, श्रेष्ठ राजाकी सेवाकी तरह सफल, समुद्रकी वेलाके समान स्वरयुक्त, वेश्याके समान दर्पण दिखानेवाली, वृक्षपंक्तिकी तरह विविध कुसुमों और फलोंसे स्थापित, आकाशकी लक्ष्मीके समान प्रचुर केतुओं (पताकाओं और ग्रहों) से आच्छादित है, जो प्रथम नरक भूमिकी तरह दीप्त दीवों (द्वीपों, दीपों) से सहित है। जो देव-पर्वतकी तरह चन्दनसे सुवासित है। आठ दिन तक जिनकी पूजा कर और बाईस दिन तक संन्यासगतिसे उसने संलेखना मरण विधि की और शुभध्यानका आरम्भ करनेपर उसके प्राण चले गये।

घत्ता—ईसाणइ सग्ग[6]विमाणइ सिरिपहि सिरिकमलिणिभमरु ॥
णिच्छम्में णिच्च णियधम्में खणमेत्तेण अजरु अमरु ॥१२॥

१३

मणिमइ सुमहंतधंतविलइ उववायसयणि[1] संपुडणिलइ ।
सो मरिवि महाबलु तियसकुले णं विज्जुपुंजु[2] जलहरपडले ।
हुउ देउ दिव्वु ललियंगधरु ललियंगु[3] णाम णं कुसुमसरु ।
वेउव्वियणयणसुहावणिय तवणीयतेय[4] ओहावणिय ।
विहिं घडियहिं रंजिय सुरवणिय जिह तणु तिह जोव्वण[5]सिरि जणिय ।
लइ पुण्णविसेसें सावंडिउ[6] पाएं सहुं णेउरु तहु घडिउ ।
हत्थें सहुं कंकणु मणिजडिउ सीसें सहुं मउडु वि पायडिउं[7] ।
मउडें सहुं कुसुममाल चडियं[8] कंठें[9] सहुं सियहारावलिय ।
वच्छें सहुं बंभसुत्तु विमलु सहुं कडियलेण कडिसुत्तु चलु ।
तहु जम्मविलासपयासणउं सहजायउ णिवसणभूसणउं ।
णयणहिं सहुं अणिमिस[10]पेच्छणउं लायण्णु भणमि किं तहु तणउं ।

घत्ता—णउ रोमइं अट्ठियचम्मइं ण छिरउ[11] णउ मुहि मीसियउ ॥
घणघडि[12]महि कंचणपडिमहि संणिहु देहु[13] पयासियउ ॥१३॥

१४

हुहु देउ णिसण्णउ गब्भहरे णियदिट्ठि देंतु णियबाहुसिरे ।
ता दुंदुहि वज्जिय गहिरसर धाइय जयजय पभणंत[1] सुर ।
वरिसिय कप्पयरु कुसुमवरिसु अमरंगणगणु णच्चिउ सरसु[2] ।
एए के को हउं कवणु घरु अवलोयइ णियउरु पाउ[3] करु ।
सुत्तुट्ठिउ जिह जा संभरइ तं[4] अवहि तासु मणि वित्थरइ ।
बुज्झिउ सइंबुद्धहु संचरिउ संणासु वि जं णरभवि चरिउ ।
उट्ठिउ सीहासणि[5] संणिहिउ देवहिं[6] अहिसेउ तासु विहिउ ।
जिणु कामकसायविवज्जियउ तेण वि परमेसरु पुज्जियउ ।
उरं[7]पेल्लियपीणपयोहरंहं[8] चालीससयइं पवरच्छरहं ।
णक्खत्तकंतिसंकासणहं महएविसयंपहकणयपहं ।

६. MBP सग्गि विमाणइ ।

१३. १. MBPK °सयण° । २. P विज्जपुंजु । ३. MBP ललियंगणामु । ४. MBP तवणीयकंति° । ५. P जोव्वणु । ६. M संपडउ; BP संगडिउ । ७. B पायपउ । ८. MBP add after this : कण्णें सहुं कुंडलु विप्फुरिउ । ९. MBP वलिय । १०. MBP अणिमिस° । ११. MBP सिरउ । १२. T घणणिविडं । १३. MB देउ ।

१४. १. P पभणंति । २. MP सरिसु । ३. MRP पाय । ४. MBP तो । ५. P सिंहासणि । ६. MB देविहिं । ७. M वरि; BP उरि । ८. P °हरिहं ।

घत्ता—इस प्रकार मायारहित स्वधर्मके द्वारा श्रीरूपी कमलिनीका भ्रमर वह राजा एक क्षणमें ईशान स्वर्गके श्रीप्रभ विमानमें युवा देव हो गया ॥१२॥

१३

वह महाबल मरकर अत्यन्त महान् और अन्धकारको नष्ट करनेवाले मणिमय संपुट निलयमें देवकुलमें उत्पन्न हुआ मानो मेघपटलमें विद्युत्समूह उत्पन्न हुआ हो। वह दिव्य ललितांग देव हुआ, ललित अंग धारण करनेवाला मानो कामदेव हो। वैक्रियक नेत्रोंसे सुहावना, स्वर्णकी दीप्तिका तिरस्कार करनेवाला। दो घड़ीमें ही उसने सुरवनिताओंको रंजित कर दिया, जैसा उसका शरीर था वैसी ही उसकी यौवनश्री उत्पन्न हुई थी। और पुण्यके कारण यह भी हुआ, पैरोंके साथ उसके नूपुर भी गढ़ दिये गये, हाथके साथ मणि विजडित कंगन और सिरके साथ मुकुट भी प्रगट हो गया। मुकुटके साथ कुसुममाला भी चढ़ गयी और कण्ठके साथ श्वेत हारावली। वक्षके साथ पवित्र ब्रह्मसूत्र। और कटितलके साथ चंचल कटिसूत्र। इस प्रकार उसके जन्मविलासको प्रकाशित करनेवाले वस्त्र और भूषण साथ-साथ उत्पन्न हुए। उसके नेत्रोंके साथ अपलक दर्शन था, मैं उसके लावण्यका क्या वर्णन करूँ ?

घत्ता—उसके न रोम थे न हड्डियाँ और चमड़ा, न तिल ? और न मुँहमें मूँछें। घनोंसे निर्मित कंचनप्रतिमाके समान उसकी देह प्रकाशित थी ॥१३॥

१४

शीघ्र ही वह देव, अपने बाहुओं और सिरपर दृष्टि डालता हुआ गर्भगृहमें बैठ गया। तब गम्भीर स्वरमें दुन्दुभि बज उठी। और देवता 'जय-जय' शब्दके साथ दौड़े। कल्पवृक्षोंने कुसुम-वृष्टि की, देवांगनासमूहने सरस नृत्य किया। ये कौन हैं, मैं कौन हूँ, यह कौन-सा घर है ? वह अपने पैर हाथ और उर देखता है ? सन्तुष्ट होकर वह जैसे ही याद करता है कि उसके मनमें अवधिज्ञान फैलने लगता है। उसने जान लिया कि उसने स्वयंबुद्धिके द्वारा प्रेरित संन्यास मनुष्य जन्ममें किया था। उसे उठाकर सिंहासनपर स्थापित कर दिया गया, और देवोंने उसका अभिषेक किया। उसने भी काम और कषायोंसे रहित परमेश्वर जिनकी पूजा की। उरसे अपने पीन स्तनों-को प्रेरित करनेवाली चालीस सौ अप्सराएँ उसके पास थीं। नक्षत्रोंकी कान्तिके समान नखोंवाली

चिरभवपरिपालियसुद्धवय कणयलय सुहासिणि विज्जुलय[9] ।
सो एयहिं सहुं [10]सुंहुं तहिं वसइ एक्कें पक्खेण समूससइ ।
घत्ता—सुहसाउ पउ[11] परमाउ जलहिमाणवित्थरिएण[12] ॥
सो जीवइ एक्कंसु[13] जेमइ वरिससहासें भरियएण ॥१४॥

१५

सो रयणिउ सत्त समुच्छियउ सुहकारि ण केण णियच्छियउ[1] ।
तहु पहुपुंहुत्ताउसि[2] वणिय मालूरपीणपीवरथणिय ।
कालेण चिरंतण अवहरिय अण्णेक्क सयंपह अवयरिय ।
तहिं अहम्मलइ कामेण रसु तहिं दिट्ठिसियत्तणि णिययजसु ।
तहिं णाहिदेसि गहिरत्तणउं तहिं भउंहाजुइ कुडिलत्तणउं ।
तहिं थणजुयलइ कढिणत्तणउं तेण जि संणिहियउं अप्पणउं ।
मंदरकंदरि कीलियखयरे कुंडलरुजगहिगुहाविवरे ।
तहिं तणुपवियारें गय दिवस तहु ललियंगहु रइरमणवस ।
घत्ता—भरहाहिव णिसुणि महाणिव रिसिहिं[3] पुराणहिं[4] वज्जरिए[5] ॥
गयकालइ अइअसरालइ पुप्फयंतगइसंभरिएं[6] ॥१५॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे महाबलसंणा[7]समरणं ललियंगुप्पत्ती णाम एक्कवीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥२१॥
संधि ॥२१॥

---

९. M विज्जुलिय । १०. MBP सहुं तहि । ११. MB पिउ; P पियउ । १२. MBP °वित्थरियएण ।
१३. M एक्कुसु ।
१५. १. B समिच्छियउ । २. MBP °पहुत्ताउस वणिय । ३. Tp रिसहु । ४. MB पुराणइं, P पुराणिहिं ।
५. MBP वज्जरिय; T वज्जरइ । ६. MBP °संभरिय; T संभरइ । ७. MBPK संणासणं ।

महादेवी स्वयंप्रभा और कनकप्रभा थीं। पूर्वभवमें शुद्धव्रतोंका पालन करनेवाली कनकलता, सुभाषिणी और विद्युल्लता। वह इनके साथ सुखसे वहाँ रहता है, और एक पक्षमें साँस लेता है।

घत्ता—शुभस्वादवाला श्रेष्ठ एक सागरकी श्रेष्ठ आयुवाला। एक हजार वर्ष बीतनेपर एक बार खाता है और जीवित रहता है ॥१४॥

१५

वह सात हाथ ऊँचा। शुभ करनेवाला वह किसके द्वारा नहीं चाहा गया? उसकी एक पल्य आयुवाली पत्नी है जो बेलके समान पीन स्तनोंवाली है, जो बहुत समयके बाद उसे मिली, एक और स्वयंप्रभा अवतरित हुई। कामदेवने उसके ओठोंमें रस, दृष्टिकी श्वेततामें अपना यश, उसके नाभिदेशमें अपनी गम्भीरता, उसकी दोनों भौंहोंमें कुटिलता, स्तनयुगलोंमें कठिनता, इस प्रकार अपनेको स्थापित कर लिया। जिसमें विद्याधर क्रीड़ा करते हैं, ऐसी मन्दिरकी गुफाओं, कुण्डलगिरिके विवरमें, उस ललितांग देवके रतिक्रीड़ा और शारीरिकभोगमें दिन बीत गये।

घत्ता—गौतम गणधर कहते हैं कि हे श्रेणिक महानृप, सुनो पुराने ऋषियों द्वारा कहे गये पुराणको बहुत समय बीत जाने पर, पुष्पदन्त तीर्थंकरकी गति याद आती है ॥१५॥

इस प्रकार त्रेसठ महापुरुषोंके गुण अलंकारोंसे युक्त महापुराणमें महाकवि पुष्पदन्त
द्वारा विरचित और महाभव्य भरत द्वारा अनुमत महाकाव्यका
महासंन्यास मरण और ललितांग-उत्पत्ति नामका
इक्कीसवाँ परिच्छेद समाप्त हुआ ॥२१॥

संधि २२

सज्जणमणसंताविरइं रइसुहवारणाइं दुप्पेच्छइं ॥
दिट्ठइं दुक्खियदुमहलइं ललियंगेण मरणणेवच्छइं ॥ ध्रुवकं ॥

१

दुद्धरखयकालें पडिपेल्लिउ दिट्ठउ कुसुमदामु ओहल्लिउ ।
मउ देवंगवत्थु दरमईलिउ दिट्ठउ अंगु किं पि मलकोलिउ ।
परिवड्ढिउ भोएसु विरायउ आहरणोहु दिट्ठु णित्तेयउ ।
परियणु सोयविरसु जंपंतउ दिट्ठउ सुरतरुवणु कंपंतउ ।
मोहियमणु माणिणिउ णिरिक्खइ जा सो माणसदुक्खें सुक्खइ ।
ता तियसगुरु को वि तहिं भासइ णियइणिओएं सक्कु वि णासइ ।
भो ललियंग पमेल्लहि भयजरु तिहुयणि णत्थि को वि अजरामरु ।
सुयरहि जं सइंबुद्धें सिट्ठउ जसु सेवाहलु एत्थु जि दिट्ठउ ।
तं जिणपायपोमु सब्भावें जेण विमुच्चहि भवकयपावें ।
दुल्लेसाइ णरत्तणहाणिहि मा पडिहीसि बप्प मिगजोणिहि ।
संसारंघिवमूलुम्मूलइं मा होहिंति दूरि वयसीलइं ।
घत्ता—जायइं पुणु वि पणट्ठाइं रंगणडा इव भावविचित्तइं ॥
मेल्लिवि सासयसिद्धिसिरि दुल्लहाइं णउ होंति सुरत्तइं ॥१॥

२

ता ललियंगें तं आयण्णिवि वारवार णियहियवइ मण्णिवि ।
तित्थइं जाइवि सुहतित्थंकरु चंपएहिं पयें परमसुहंकरु ।
कुवलएहिं कुवलयउद्धारणु कुंदहिं कुंददसणु सुहकारणु ।

MBP give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza:—

मदकरिदलितकुम्भमुक्ताफलकरभरभासुरानना
मृगपतिनादरेण यस्या धृतमनघमनर्घमासनम् ।
निर्मलतरपवित्रभूषणगणभूषितवपुरदारुणा
भारतमल्ल सास्तु देवो तव बहुविधमम्बिका मुदे ॥

GK do not give it.

१. १. MB °दाम । २. MB °वत्थ । ३. MBP दरमलियउ । ४. MBP °कलियउ । ५. M परियट्टिय; B परिवड्ढिय । ६. P दुक्खइ । ७. MBP को वि णत्थि । ८. M सुम्वरहि; BP सुमरहि । ९. MBP जेण जि मुच्चहि भवभयपावें । १०. MBPT मिग° । ११. MBP मा हो होंति । १२. MBP वयसीलइं; K व्रयसीलइं । १३. MB सासयरिद्धि ।

२. १. MBP °तित्थंकर । २. M परु; B पर । ३. BP °सुहंकर ।

सन्धि २२

सज्जनोके मनको सन्ताप देनेवाले रतिसुखका निवारण करनेवाले दुर्दर्शनीय, पापरूपी वृक्षके फलो, मरणरूपी चिह्नोको ललितागने देखे।

१

दुर्धर क्षयकालसे आहत, मुरझायी हुई माला उसने देखी। कोमल देवाग वस्त्र कुछ मैले हो गये, उसका शरीर मलसे काला हो गया। उसका भोगोमे वैराग्य बढ गया। आभरणोका समूह निस्तेज हो गया। शोकसे खिन्न रोता हुआ परिजन और कांपते हुए कल्पवृक्ष उसे दिखाई दिये। मोहित मन वह जैसे ही मानिनीको देखता है वह मानसिक दु खसे सूखने लगता है। उस अवसर-पर कोई देवगुरु उससे कहता है—"नियतिके वियोगसे इन्द्र भी नाशको प्राप्त होता है। हे ललिताग देव, भयज्वर छोड दो। त्रिभुवनमे अजर और अमर कोई नही है। जैसा कि स्वयबुद्धने कहा था, यहाँ भी जिसका सेवाफल दिखाई देता है, उन जिनचरणोकी सद्भावसे याद करो जिससे ससारमे किये गये पापसे मुक्त हो सको। हे सुभट, खोटी लेश्यासे मनुष्यत्वकी हानि करनेवाली पशुयोनिमें मन पडो। ससाररूपी वृक्षकी जडोको नष्ट करनेवाले व्रत और शील तुमसे दूर न हो।

घत्ता—भावकी विचित्रताएँ रंगनटकी तरह उत्पन्न होती हैं और फिर नष्ट हो जाती है, शाश्वत मोक्षलक्ष्मीको छोडकर सुरति चेतनाएँ (कुतिभावनाएँ) दुर्लभ नही होती (अर्थात् उन्हे पाना आसन है) ॥१॥

२

ललिताग उन शब्दोको सुनकर और बार-बार अपने मनमे मानकर तथा तीर्थोंमे जाकर शुभ तीर्थंकर और परमशुभ करनेवाले चरणोका चम्पकपुष्पोसे, कुवलय (पृथ्वीमण्डल) का

सेंदूरेंहिं दूरुज्झियवम्महु मंदारहिं दारासाणिम्महु ।
वासंतहिं वसिल्लु जियविग्गहु जूहियाहिं रिसिजूहपरिग्गहु ।
तिलयहिं तिजगतिलउ जो जाणिउ सुरहिं ण मेरुहु मेरुहु ण्हाणिउ ।
बंधूएहिं बंधविद्धंसणु बउलहिं अवउलकेवलदंसणु ।
घणसालेहिं सीलसुसलिलघणु चंदणेहिं पसमियणिबंदणु ।
धूवहडेहिं णिहीहडदावउ दीवएहिं तेल्लोक्कहु दीवउ ।
मालईहिं मालइयामहिरुहु जिणु पुज्जियउं तेण पूयारुहु ।
अच्चुयकप्पजिणालउ जाइवि चेईतरुतलि जइवइ झाइवि ।
जीविउ मुक्कउ खणि ललियंगें अंगु विलीणउं पुण्णविहंगें ।

घत्ता—जंबूदीवहु मंडणिय मणुयजणणि चिंतियसुहदाइणि ॥
मेरुहि पुव्वविदेहि थिय णाम पुक्खलावइ जणमेइणि ॥२॥

३

कूरारिंदविंददलवट्टणु उप्पलखेड णाम तहिं पट्टणु ।
साहुद्धरणु जेत्थु णंदणवणि णउ णंदंति कहिं मि दीसइ जणि ।
जेत्थु लोउ विणएणोणल्लउ उद्धाणणु एक्कु जि करहुल्लउ ।
करि कंकणु बंधणु पेइ णेउरु अण्णु ण जेत्थु अत्थि दुक्खाउरु ।
खलु तेल्लियहरि णिरु णिण्णेहउ अण्णु सव्वु जहिं सुयणु सणेहउ ।
वाहि लिहिय भित्तिहि चित्तयरें दीसइ तणुहि ण णरवइणियरें ।
सरसंधाणु जेत्थु वायरणइ णउ परयक्कभीमि रायरणइ ।
जहिं हयवरु हरि णउ णारीयणु वंसु जि छिद्दसहिउ णउ पुरयणु ।
कुणडि रसक्खउ णउ विवणीवहि असिहि अपेउ वारि णउ सरिदहि ।
अंजणु णयणि जेत्थु ण तवोहणि णायभंगु गारुडि ण धणज्जणि ।
संकरु पहु ण वण्णविहिसंकरु दोहउ गोवालु जि णउ किंकरु ।
जहिं कुंजरु भण्णइ मायंगउ णउ माणवु कइ वि मायंगउ ।

घत्ता—जणु कलहं सहुं सज्जणेण ण करइ को वि ण विप्पिउ भासइ ॥
जहिं कलहंसहं गइपसरु पंगणि पंगणि वाविहि दीसइ ॥३॥

---

४. MBP सिंदूरहिं । ५. P °णिम्मुहु । ६. PT वासंतिहि । ७. P मेरुहि मेरुहि । ८. MPK बंधणविद्धंसणु । ९. MB अवियल°; P अविउल°; T अवउल° । १०. P °सुललिय° । ११. धूवडहेहिं । १२. P पुज्जिउ । १३. MBP पुज्जारुहु । १४ MBPK °विहंगें; T °विहगे ।

३. १. M उप्पलु खेडु । २. MB णामें; णामु । ३. T साहुलाभओणल्लउ । ४. M पउ; B पए । ५. P अत्थि जेत्थु । ६. MBP तेल्लियगिहि । ७. B णरवइणियरें । ८. MB परचक्कभीमरायरणइ; P परयक्कें भीम° । ९. MB असि अप्पेउ । १०. MBP माणउ कया वि । ११. MBP मंदिरपंगणवाविहि ।

उद्धार करनेवालेकी कुवलय पुष्पोंसे, शुभके कारण और कुन्दके समान दाँतवालेकी कुन्दपुष्पोंसे, कामदेवसे दूर रहनेवाले की सिन्दूरसे, कलत्रकी आशाका नाश करनेवालेकी मन्दार पुष्पोंसे, स्वाधीन और शरीरको जीतनेवालेकी वासन्ती पुष्पों (अतिमुक्तक) से, मुनिसमूहका परिग्रह करनेवालेकी जुही पुष्पोंसे; जो तीनों लोकोंमें तिलक (श्रेष्ठ) समझे जाते हैं, और जिनका मेरुपर अभिषेक किया जाता है, उनका तिलक पुष्पोंसे, बन्धका नाश करनेवालेका बन्धूक पुष्पोंसे, अशरीरग्राही केवलज्ञानवालेका बकुल पुष्पोंसे, शीलरूपी सुसलिलवालेका कपूरोंसे, आक्रन्दनको शाश्वतरूपसे शान्त करनेवालेका चन्दनोंसे, निधिघटोंको दिखानेवालेका धूपघटोंसे, त्रैलोक्यदीपकका दीपकोंसे, लक्ष्मीरूपी लताके वृक्षका मालती पुष्पोंसे, उसने पवित्र अर्हंत जिनकी पूजा की। और अच्युत कल्प जिनालयमें जाकर चैत्यवृक्षके नीचे यतिवरका ध्यान कर, ललितांगने एक क्षणमें अपने प्राण छोड़ दिये। पुण्यके नष्ट होनेसे उसका शरीर विलीन हो गया।

घत्ता—जम्बूद्वीपका अलंकार मनुष्यकी जननी, चिन्तित शुभको प्रदान करनेवाली, जनभूमि पुष्कलावती नामकी नगरी सुमेरुपर्वतके पूर्व विदेहमें है ॥२॥

३

उसमें क्रूर शत्रुसमूहको नष्ट करनेवाला उत्पलखेट नामका नगर है। जहाँ शाखाओंका उद्धरण केवल नन्दनवनमें है, आनन्दसे रहनेवाले वहाँके लोगोंमें उद्धारकी आवश्यकता नहीं है। जहाँ लोग विनयसे नम्रमुख रहते हैं, वहाँ केवल ऊँट ही अपना मुख ऊँचा रखनेवाला है। जहाँ हाथमें कंगन और पैरोंमें नूपुर बाँधा जाता है, वहाँ और कोई दुःखसे व्याकुल नहीं है। जहाँ तेली-के घरमें बिना स्नेहके खल देखे जाते हैं, और सब लोग सुजन सस्नेह ही हैं। जहाँ व्याधि चित्रकारों द्वारा दीवालोंपर लिखी जाती है, नरसमूहके द्वारा शरीरमें कोई बीमारी नहीं देखी जाती। जहाँ व्याकरणमें ही सर सन्धान (स्वर सन्धि) देखा जाता है शत्रुके लिए भयंकर राजयुद्धमें सरसन्धान नहीं देखा जाता। जहाँ हरि (अश्व) हयवर है, वहाँ नारीगण हतवर नहीं हैं। जहाँ बाँस छिद्रसहित है, वहाँके लोग छिद्र सहित नहीं हैं। जहाँ कुनटमें रसका क्षय है, बाजारमार्गोंमें रस-क्षय नहीं है। जहाँ तलवारोंका ही पानी अपेय है, वहाँके सरोवरों और नदियोंका पानी अपेय नहीं है। जहाँ अंजन नेत्रोंमें है, वहाँके तपस्वियोंमें अंजन (पाप) नहीं है। जहाँ णायभंग (नागभंग—न्यायभंग) गारुड़ मन्त्रमें हैं, धनके उपार्जनमें जहाँ न्यायका भंग नहीं है। जहाँ संकर शिव है, वहाँ वर्णव्यवस्थामें संकर नहीं है। जहाँ ग्वाल दोहक (दूध दुहनेवाले) हैं, वहाँके अनुचर द्रोही नहीं हैं। जहाँ हाथीको ही मातंग कहा जाता है, वहाँ लोग मायाको प्राप्त नहीं होते।

घत्ता—लोग सज्जनके साथ कलह नहीं करते, कोई भी अप्रिय नहीं बोलता। जहाँ प्रांगण-प्रांगण और वापिकाओंमें कल-हंसोंकी गतिका प्रसार देखा जाता है ॥३॥

४

वज्जबाहु णामें तहिं णरवइ   रिद्धिइ जेण पेरिज्जिउ सुरवइ ।
जासु कित्ति गय दसहिं दियंतहिं   आरूढी वरदिक्करिदंतहिं ।
जासु खग्गु वेरंतु वियंभिउ   जासु रज्जु ण परेहिं णिसुंभिउ ।
जासु कोसु चाएण पैवित्तिउ   जेण तिजगु सुकुडुंबु वि चिंतिउ ।
जेण गोत्तु धम्मेणुज्जोइउ   जेण चित्तु जिणपयजुइ ढोइउ ।
पेम्मसासवासालवसुंधरि   तासु देवि णामेण वसुंधरि ।
सग्गाहु गब्भवासि अवयरियउ   णवमासहिं उयरहु णीसरियउ ।
ताहि तेण जणियउ ललियंगउ   णंदणु णं णरवेसु अणंगउ ।
कुडिलहिं केसहिं उँज्जुयगत्तउ   रहसहिं जंघहिं दीहरणेत्तउ ।
किसमज्झेण थोरभुयजुयलें   वियडें कडियलेण वच्छयलें ।
सेत्तें णाहि सरें गंभीरें   छज्जइ सीसें छत्तायारें ।
कोमलपयहिं अकोमलहत्थहिं   अवरेहिं मि [१०]लक्खणहिं पसत्थहिं ।

घत्ता—लक्खणपुंजु व पुंजियउ एक्कहि विहिणा अकयविहायउ ॥
वज्जंकियकरचरणयलु वज्जजंघु वज्जोवमकायउ ॥४॥

५

सो कुमारु तहिं वड्ढइ जइयहुं   णवरीसाणकप्पि ता तइयहुं ।
रुयइ सयंपह पियविरहालस   हा ण सुहासि मज्झु सर माणस ।
हा हे सग्गलोय विच्छायउ   विणु णाहेण णिरुव्वसु जायउ ।
हा कप्पद्दुम किं किर फुल्लहि   पइमरणे वि कट्ठ णो हुल्लहि ।
हा तुंबरु गाइयउं पहुच्चइ   रमणें विणु महु किं पि ण रुच्चइ ।
हा ललियंगदेवु कहिं पेच्छमि   हा हे सावि कॅव कहिं अच्छमि ।
को वारइ भवियव्वु हवंतउ   इह देवहु वि कम्मु बलवंतउ ।
एम्व चवंति विमुक्कुच्छाहिय   दढधम्में सुरेण संबोहिय ।
तावसघरिणि व मंदरवण्णी   मंदरसेलहु मंदरवण्णी ।
गय सउमणससुरासाजिणहरि   मुइय सरारिबिंबु धारिवि सिरि ।
पुव्वविदेहि तहिं जि सकमलंसर   णयरि पुंडरिंगिणि पंडुरघर ।
घत्ता—जहि घरसिहरि णडंतएण घरसिहरोवरि णियंडि विलंबिउ ॥
णयजलकणचक्खंतएण तूसिवि मेहु मऊरें चुंबिउ ॥५॥

४ १. MBP परज्जिउ । २. MBP दिसहि । ३. MB खग्गि धीरत्तु । ४. MB पवत्तिउ । ५. MBP सकुडुंबु व । ६. MBP तहु वल्लह महएवि वसुंधरि । ७. MB उज्जुयगत्तहिं; Pउज्जयगत्तहिं । ८. MBP दीहरणेत्तहिं; ९. MBP सुत्तें । १०. MBP लक्खणेहिं ।

५. १. P तुबरु । २. MBP ललियंगु देउ । ३. MBT मामि and gloss in T सखि । ४. MBP भवंतउ । ५. P उरि । ६. MB °सरि । ७. M णयर । ८. MB °घरि । ९. P णिवडि ।

४

उसमें वज्रबाहु नामका राजा है, जिसने वैभवमें इन्द्रको मात दे दी है। जिसकी कीर्ति दसों दिगन्तोंमें फैल गयी है और श्रेष्ठ दिग्गजोंपर आरूढ़ है, जिसकी तलवारसे शत्रुका अन्त हो चुका है, जिसका राज्य शत्रुके द्वारा नष्ट नहीं किया जा सकता, जिसका कोश त्यागसे पवित्र है। जिसने त्रिजगकी अपने कुटुम्बके समान चिन्ता की है, जिसने अपने कुलको धर्मसे उद्द्योतित किया है, जिसने अपना चित्त जिन-चरणयुगलमें लगाया है, जो उसकी वसुन्धरा नामकी देवी है, जो प्रेमरूपी धान्यके लिए वर्षायुक्त भूमि है। (वह ललितांग) स्वर्गसे उसके गर्भवासमें अवतरित हुआ और नौ माहमें उसके उदरसे बाहर आया। उससे वज्रजंघने ललितांगको पुत्ररूपमें जन्म दिया जो मानो मनुष्यरूपमें कामदेव था। घुँघराले बालोंसे ऋजुक (सीधा—सरल) शरीर था। वेगशील जाँघोंसे दीर्घ नेत्रवाला था। क्षीण मध्यभाग, स्थूल भुजयुगल, विशाल कटितल और वक्षःस्थलसे नाभि शोभित है। गम्भीर स्वर, छत्रके आधारस्वरूप शिर, कोमल चरणों और परुष हाथों तथा दूसरे-दूसरे प्रशस्त लक्षणोंसे जो—

घत्ता—लक्षणोंके समूहको बिना कोई विभाग किये विधाताने एक जगह पुंजीभूत कर दिया था। वज्रसे अंकित चरणकमलवाला वज्र समान शरीर वह वज्रजंघ था ॥४॥

५

जब वह कुमार वहाँ बढ़ने लगा, तभी उस केवल ईशान स्वर्गमें, प्रियके विरहसे पीड़ित स्वयंप्रभा विलाप करती है, मुझे मानसरोवर अच्छा नहीं लगता, हा ! हे ! स्वर्गलोक फीका पड़ गया है, स्वामीके बिना मैं परवश हो गयी हूँ। हा कल्पवृक्ष ! तुम क्यों फूलते हो, पतिके मरनेपर कष्ट मुझे छेदे डालता है। हा तुम्बरु ! तुम्हारा गायन पर्याप्त हो चुका है, प्रियके बिना मुझे कुछ भी अच्छा नहीं लगता है। ललितांगको मैं कहाँ देखूँ ? हा, हे स्वामी ! किस प्रकार कहाँ रहूँ। होनेवाली भवितव्यताको कौन टाल सकता है; यह कर्म देवसे भी बलवान् है। मेरुके समान वर्णवाली, तपस्विनी-गृहिणीके समान कुछ-कुछ सुन्दरी मन्दराचल गयी। सौमनस वनकी पूर्वदिशाके जिनमन्दिरमें जिनप्रतिमाको सिरपर धारण कर मर गयी। वहीं पूर्व-विदेहमें कमलों और सरोवरों से युक्त सफेद घरोंवाली पुण्डरीकिणी नगरी है।

घत्ता—जहाँ गृहशिखर पर नृत्य करते हुए तथा नवजलकणोंका आस्वाद करनेवाले मयूरने गृहशिखरोंके ऊपर लटकते हुए मेघोंको चूम लिया ॥५॥

६

णिवेसेण रम्मा णहालग्गहम्मा ।
मुणिदेहिं सोम्मा जिणु[1]द्दिट्ठधम्मा ।
धणेणं समिद्धा जसेणं पसिद्धा ।
सुएणं पबुद्धा वएणं[2] विसु[3]द्धा[4] ।
घणारामवंती विसाला वसंती[5] ।
सु[6]पायारदुग्गा कयाणेयमग्गा ।
अणेयाँ[7]दुवारा अणेयप्पयारा ।
जणेणं महत्था कएणं कयत्था ।
[8]भएणं विमुक्का सया जा णिरिक्का ।
इमीए पुरीए [9]अमेओ सिरीए ।
महेणं महंतो गुणी वज्जदंतो ।
पहू चक्कवट्टी सुमग्गाणुवट्टी ।
कयंतो व्व दंडी सई तस्स चंडी ।

घत्ता—लच्छि व सोहइ लच्छिमइ तासु विउलि वच्छयलि विलग्गी ॥
झत्ति झसंकें कुद्धएण मुक्की भल्लि व हियवइ लग्गी ॥६॥

७

अरिहरिणोहवियारण[1]वाहहु तहि सुंदरिहि तासु णरणाहहु ।
सिरि व सिरिप्पहसुरहरवासिणि च्चविवि सयंपहतियसविलासिणि ।
सिरिमइ णामें तणुरुह हूई णाइ कुमारहं कामविसूइ ।
पाय सकुंकुम किं तहि वण्णमि वम्महसुहावेसु व मण्णमि ।
तंबइं पोमरायरुइचोक्खइं रत्तउ किं रावंति ण णक्खइं ।
पेच्छिवि तरुणिजाणुसंधाणइं मुणि वि करंति मयणसंधाणइं ।
ऊरुवाहियालिअंतरि चुउ कासु ण चलइ वप्प मणझेंदुउ ।
कासु ण णिण्णासिउ कयं[2]कित्तणु सोणीग[3]रुयत्तणि ण गुरु[4]त्तणु ।
मयरद्धयहुयवहधूमावलि रोमावलि तरुणहं हिययावलि ।
णाहिकूउ रइवइरससासणु तिवलिभंगु वयभंगपयासणु ।
थणं[5]थड्ढत्तें विडथड्ढत्तणु अवसें णासइ विसेण विसत्तणु ।
वम्महभूमि जासु देही करु तासु जि कामकुंड थिउ[6] सुहयरु ।

घत्ता—पोप्फँ[7]लिकंठसमाणहो कंठहु को ण होइ उक्कंठिउ ॥
मुहरसु मुद्धहि सिद्धरसु सुहसुवण्णसिद्धियरु परिट्ठिउ ॥७॥

---

६. १. P जिणोदिट्ठ° । २. B omits this foot । ३. MP विबुद्धा । ४. MBP add after this : गुणाणं पवित्ती । ५. MBP add after this : महातेयवंती । ६. MBP सपायार° । ७. MBP अणेयद्दुवारा । ८. B रएणं । ९. P इमेया सिरीए ।

७. १. B °वावहु । २. MK कियकित्तणु । ३. MBPK सोणीगरुयत्ते ण । ४. MK गुरुयत्तणु । ५. M reads this line as : अवसें णासइ विसेण विसत्तणु, थणथड्ढत्तें वियड्ढत्तणु । ६. P पिउ । ७. MB कोकिलकंठ°; P कोकिलिकंठ° ।

६

जो रचनामें सुन्दर है, जिसके प्रासाद आकाशतलको छूते हैं, जो मुनीन्द्रोंके द्वारा सौम्य है, जिसमें जिनके द्वारा उपदेशित धर्म है, जो धनसे समृद्ध और यशसे प्रसिद्ध है, जो शास्त्रोंसे प्रबुद्ध और व्रतोंसे विशुद्ध है, जो सघन उद्यानोंसे युक्त है और विशाल बस्तीवाला है, जिसमें प्राकार (परकोटे) और दुर्ग हैं। जिसमें अनेक मार्ग हैं। जिसमें अनेक प्रकारके कई द्वार हैं। जो जनोंसे महार्थवती है और कृत्योंसे कृतार्थ है, जो भयसे विमुक्त और सदैव चोरोंसे रहित है उस नगरीमें लक्ष्मीसे अप्रमेय महान्से महान् गुणी वज्रदन्त नामका चक्रवर्ती राजा है जो सन्मार्गका अनुकरण करनेवाला है। कृतान्तके समान वह दण्ड धारण करता है और उसकी प्रिय पत्नी सती है।

घत्ता—लक्ष्मीवती वह लक्ष्मीके समान उसके विशाल वक्षस्थलपर लगी हुई शोभित है, मानो जैसे क्रुद्ध कामदेवके द्वारा मुक्त भल्लीके समान हृदयमें जा लगी हो ॥६॥

७

शत्रुरूपी हरिणसमूहको विदारणके लिए व्याधाके समान उस राजाका उस सुन्दरीसे श्रीके समान, श्रीप्रभ सुरविमानमें निवास करनेवाली स्वयंप्रभदेवसे विलास करनेवाली (स्वयंप्रभा) श्रीमती नामकी कन्या हुई, जो कुमारोंके लिए कामसूचीके समान थी। कुंकुम सहित उसके पैरों-का क्या वर्णन करूँ, मैं उसे कामदेवकी मुद्राका अवतार मानता हूँ। पद्मराग मणियोंकी कान्तिकी तरह चोखे और लाल उसके चरण क्या नक्षत्रोंकी तरह शोभित नहीं होते। उस तरुणीके घुटनों-के जोड़ोंको देखकर मुनि लोग भी कामदेवका सन्धान कर रहे हैं, उसके उररूपी अश्व क्रीड़ा-स्थलके भीतर गिरी हुई, किसकी बेचारी मनरूपी गेंद नहीं चलने लगती। उसकी करधनीकी गुरुताको देखकर किसका गुरुत्व और यश नष्ट नहीं हुआ। उसकी हृदयावली और रोमावली युवकोंके लिए कामदेवकी अग्निकी धूम्रावली थी। उसका नाभिरूपी कूप रतिरसका शासन था। और त्रिवलिभंग उसकी उम्रके भंगका प्रकाशन था। उसके स्तनोंकी सघनतासे विटोंकी सघनता (दुष्टता) अवश्य नष्ट होगी, विषसे विष अवश्य नष्ट होता है। जिसका शरीर कामदेवकी भूमि था, और उसका हाथ शुभ कामकुण्डके रूपमें स्थित था।

घत्ता—पूगफलके कण्ठके समान उसके कण्ठको देखकर कौन उत्कण्ठित नहीं हुआ। उस मुग्धाका मुखरस शुभ सुवर्णकी सिद्धि करनेवाला सिद्धरसके रूपमें प्रतिष्ठित था ॥७॥

८

बहुवण्णहिं[1] णयणहि कयरायउ रत्तउ एक्कवण्णु जगु जायउ।
कासु ण हित्तंउ[2] किर धुत्तत्तणु भउंहावंकत्तें वंकत्तणु।
अंगोवंगपएसघुलंतहं केसंपासु[3] पासु व परचित्तहं।
जाहि रूउ सुरंगुरु[4] ण वियक्कइ जा वण्णहुं फणिवइ वि ण सक्कइ।
सा जामच्छइ मउलियणेत्ती सिरिहरि सत्तमभूमिहि सुत्ती।
णिसि ससहरकरहिमलव लेंती सालसु अंगविलासु वहंती।
मणहरवणु जसहरु जिणु आयउ कहिं मि णं[5] मायउ देवणिकायउ।
वीणावंसमउंदणिणंइहिं[6] णाणाथोत्तवित्तंथुइसद्दहिं[7]।
ता उट्ठिउ कलयलु गरुआरउ वियलिउ कण्णहिं णिद्दाभारउ।

घत्ता—सुर जोयंतिहि ताहि तहिं जम्मावरणइं खणि ओसरियइं॥
सग्गंभवंतरु[8] संभरिवि थक्कइं मणि ललियंगहु चरियइं॥८॥

९

हा ललियंग देव पभणंती पेडिय[1] स महियलि तणु विहुणंती।
मुच्छिय सिंचिय सलिलणिवांएं[2] आसासिय चलचामरवाएं।
उंट्ठिय[3] णीससंति अइरीणी दइयविओगंवेयविहाणी[4]।
वम्महु अट्ठं[5] वि अंगइं तावइ चित्त जलइ जलइ जणियावइ।
मलयाणिलु पलयांणलु[6] भावइ भूसणु सणु करि बद्धउ णावइ।
जहिं संजायउ चित्तु जि सयदलु तहिं किं किज्जइ सीयलु सयदलु।
ण्हाणु सोयण्हाणु व णउ रुच्चइ वसणु वसणसंणिहु सा सुच्चइ।
असुहारु व आहारु ण गेण्हइ णंदणवणु पिउवणसमु मण्णइ।
फुल्लु णयणफुल्लु व असुहावउ तंबोलु वि बोलु व कयतावउ।
पुरु जमपुरु व घरु वि अरइयरउ पंरहुयलविउ[7] महुरु णं महुरउ।
गेयसरु वि णं रिउमुक्कउ सरु सवलहणउं सवलहणु व दिहिहरु।
चंदणु इंधणु विरहंहुयासहु[8] ता संहीहिं[9] विण्णविउ महीसहु।

घत्ता—आवेप्पिणु लच्छीमइइ सह सपियाइ पईहरबाहें॥
पियसुमरणदुहदुम्मणिय दुहिय णिहालिय णरवरणाहें॥९॥

---

८. १. MP विहुवण्णहिं रयणहिं; B विहुवण्णहिं रयणहि। २. M हित्तइं। ३. MBK केसपास। ४. MBP गुरुगुरु वि ण अक्खइ। ५ B समाइउ। ६. P °णिणायहि। ७. B °थुइभद्दहिं। ८. M पुव्वभवंतरु।

९. १. MBP पडिय महीयलि। २. MBP °णिहाएं। ३. MBP उट्ठी। ४. MBPK °विओय°। ५. MBP अट्ठइं अगइं। ६. BP पलयाणिलु। ७. MBP परहुय°। ८. MBP विरहु। ९. M सहीइ।

८

अनेक रंगोंवाले नेत्रोंसे राग करनेवाला अनुरक्त विश्व उस समय एकरंगका हो गया। भौंहोंकी वक्रतासे उसने किसकी धूर्तता और वक्रताका अपहरण नहीं किया। उसका केशपाश अंगोपांग-प्रदेशोंके निकट आते हुए दूसरोंके चित्तोंके लिए पाशके समान था। जिसके रूपका बृहस्पति भी वर्णन नहीं कर सकता। नागराज भी जिसका वर्णन नहीं कर सकता। वह जब आँखें बन्द किये हुए, श्रीगृहमें सातवीं भूमिपर, चन्द्रकिरणोंसे हिमकणोंको ग्रहण करती हुई अलसाये अंगविलासको धारण करती हुई रात्रिमें सोयी हुई थी कि मनहर उद्यानमें यशोधर नामक जिनवर आये। देवसमूह कहीं भी नहीं समा सका। वीणा-वंश और मृदंगोंके निनादों, नाना स्तोत्रवृत्तोंकी स्तुतिशब्दोंसे भारी कोलाहल उठा। उससे कन्याका निद्राभार खुल गया।

घत्ता—वहाँ देवोंको देखते हुए उसके जन्मावरण एक क्षणके लिए हट गये। स्वर्गके जन्मान्तरोंको याद कर उसके मनमें ललितांगकी लीलाएँ बैठ गयीं ॥८॥

९

हे ललितांग देव! यह कहती हुई, अपना सिर पीटती हुई धरतीपर गिर पड़ी। मूर्च्छित उसे पानीकी धारासे सींचा गया। चंचल चमरोंकी हवासे आश्वस्त हुई। अत्यन्त दुबली वह निश्वास लेती हुई उठी, प्रियके वियोगकी अनुभूतिसे खिन्न। कामदेव उसके आठों अंगोंको जलाता है। डाला हुआ कष्टकर गोला वस्त्र जलता है, मलयपवन प्रलयानल जान पड़ता है, भूषण हाथमें ऐसा लगता है जैसे सन बँधा हुआ हो। जहाँ चित्तके सौ टुकड़े हो गये हों वहाँ शीतल शतदलसे क्या किया जाये? स्नान शोकस्नानके समान उसे अच्छा नहीं लगता, वस्त्रको वह व्यसनके समान समझती है, प्राणोंके आहारकी तरह वह आहार ग्रहण नहीं करती। नन्दन-वनको वह प्रेतवन समझती है। फूल नेत्रकी फुलीके समान असुहावना लगता है, ताम्बूल भी बोलकी तरह सन्तापदायक है। पुर यमपुरके समान और घर भी अरतिकर है। कोकिलका मधुर आलाप मानो विष है। गीतका स्वर ऐसा लगता है जैसे शत्रुके द्वारा मुक्त तीर हो। चन्दनादिका लेप स्वबल-घातकके समान धैर्य हरण करनेवाला था। चन्दन विरहकी ज्वालाके लिए ईंधन था। सहेलियोंने जाकर राजासे निवेदन किया।

घत्ता—(अपनी पत्नी) लक्ष्मीवतीके साथ आकर लम्बी बाँहोंवाले नरवरनाथने प्रियस्मरणसे दुःखित मन कन्याको देखा ॥९॥

१०

सुयेरिउ मुद्धइ पुव्विल्लउ वरु | किं जाणहुं सुरु किंणरु किं णरु ।
इय परिणामपवित्ति वियप्पिवि | पंडियधाइहि पुत्ति समप्पिवि ।
गउ धरणीसु णिहेलेणु[2] जावहिं | पहरणउववणवालेय[3] तावहिं ।
आइय दोहिं मि कहिउ णवेप्पिणु | देव देव णिसुणहि मणु देप्पिणु ।
जसहरासु उप्पण्णउ केवलु | आउहसालहि चक्कु णिरग्गलु[5] ।
ता राएं सीहासणु मेल्लिवि | सिरमउडेण महीयलु पेल्लिवि ।
भणिउ जयहि अरहंतभडारा | जय संसारमहण्णवतारा ।
जयहि तिसल्लवेल्लिणिल्लूरण | सविणयसुयणमणोरहपूरण ।

घत्ता—तिमिरु हणंतु करंतु दिहि उवसमवंतहु वियलियगव्वहो ॥
तोवुग्गमियउ दिवसयरु णाणविसेसु व सोहइ भव्वहो ॥१०॥

११

दंतघायगिरिभित्तिवियारणि | कण्णतालअलिवारणि वारणि ।
कुलिसदसणु कयमणतमणिरसणु | आरुहेवि ससिसियसुइणिवसणु ।
समवसरणु गउ सेण्णें सहियउ | अण्णु वि जो एहउ सो सहियउ ।
दिट्ठु असोयहु मूलि असोयउ | कुसुमंचिउ हयकोसुमसायउ ।
दिव्ववाणि मुणि णिव्वाणेसरु | अमउ मयारिवोढि संठिउ परु ।
चलचामरु णिव्वामरसेविउ[1] | भामंडलरुइमंडलदीवउ ।
दुंदुहि[2]रउ दुहिरवें[3]णिव्वारणु | लोयसारु संसारुत्तारणु ।
छत्तसमासिउ छत्ततियालउ | अतियालउ संबुद्धतियालउ ।
कमलासणु केसउ जगि सो हरु | तित्थणाहु णामेण जसोहरु ।
देउ अणिंदिउ वंदिउ भावें | वड्ढंतेण विसुद्धें भावें ।
अवहिणाणु राएं उप्पाइउ[4] | रूवि दव्वु[5] णीसेसु वि वेइउ ।

घत्ता—विद्धउ कणयरसेण जिह लोहु वि हेमत्तणु पडिवज्जइ ॥
तिह जिणभावें भावियहो भवियहु णाणभाउ संपज्जइ ॥११॥

१२

पहु गुरु वंदिवि आयउ गेहहु | तित्ति ण पुण्णी पुत्ति सणेहहु ।
आलिंगिवि अंके वइसारिय | सा तप्पंति तेण विणिवारिय ।
चवइ णिवइ चिरु पइं जाणंतउ | अच्छइ सुरवरिंदु हउं होंतउ ।

---

१०. १. MBP सुमरिउ । २. MBP णिहेलणि । ३. MBP °वालहिं । ४. MBP आविवि । ५. MBP सुणिम्मलु । ६. MBP ता उग्गमियउ ।

११. १. P णिच्चामरु । २. P दुदहि° । ३. MBP दुहरव°; T दुहिरव° । ४. MBP उप्पायउ । ५. MB दिव्वु ।

१०

मुग्धा पूर्वजन्मके वरको याद करती है—क्या जानें कि वह सुर, नर या किन्नर है ? इस प्रकार परिणामोंकी प्रवृत्तिका विचार कर पण्डिता धायके लिए पुत्री समर्पित कर जब राजा अपने घर गया तो प्रहरण और उपवनके पालक वहाँ आये। दोनोंने प्रणाम कर राजासे निवेदन किया, "हे देव, ध्यान देकर सुनिए, यशोधरको केवलज्ञान उत्पन्न हुआ, और आयुधशालामें निर्बाध चक्ररत्नकी प्राप्ति हुई है।" तब राजा सिंहासन छोड़कर सिरमुकुटसे धरती छूकर बोला, "हे अरहन्त भट्टारक ! आपकी जय हो, संसार समुद्रसे पार लगानेवाले आपकी जय हो, त्रिशल्यों-की लताओंको नष्ट करनेवाले आपकी जय हो, विनीत और सुजनोंके मनोरथ पूरे करनेवाले।

घत्ता—तब इतनेमें अन्धकारका नाश करता हुआ, उपशान्त और गर्वको विगलित करने-वालोंके लिए भाग्यका विधान करता हुआ दिवसकर (सूर्य) उग आया जो भव्योंके लिए ज्ञान विशेषके समान शोभित है ॥१०॥

११

जिसने अपने दाँतोंके आघातसे गिरिभित्तियोंको विदारण कर दिया है, और जो कानोंके ताड़पत्रोंसे भ्रमरोंको उड़ा रहा है ऐसे हाथीपर बैठकर वज्रके समान दाँतवाला, अपने मनके अन्धकारका निवारण करनेवाला, चन्द्रमाके समान श्वेत और निर्मल वस्त्र पहने हुए वह सेनाके समवसरणके लिए गया। दूसरा भी यदि ऐसा है, तो वह आत्माका हित करनेवाला है। अशोक उनको उसने अशोकवृक्षके नीचे बैठे हुए देखा, कुसुमशायक (कामदेव) को नष्ट करनेवाले वह कुसुमोंसे अंचित, दिव्यवाणीवाले मुनि निर्वाणके ईश्वर विकाररहित सिंहासनपर आसीन श्रेष्ठ। चलचामरोंसे युक्त, नित्य देवोंसे सेवनीय, भामण्डलके दीप्तिमण्डलसे आलोकित, उनका दुन्दुभिका शब्द दुःखित शब्दका निवारण करनेवाला था। लोकमें श्रेष्ठ और संसारका उद्धार करनेवाले। क्षतोंको आश्रय देनेवाले तीन छत्रोंसे युक्त स्त्री रहित और त्रिकालको स्वयं जाननेवाले। विश्वमें वही ब्रह्मा-केशव और शिव है, जो नामसे तीर्थनाथ यशोधर है। उन अनिन्द्यदेवकी उसने भावसे वन्दना की। बढ़ते हुए विशुद्ध भावसे राजाको अवधिज्ञान उत्पन्न हो गया। उसको समस्त रूपी द्रव्योंका ज्ञान हो गया।

घत्ता—कनकरससे विद्ध होकर जिस प्रकार लोहा स्वर्णरूपमें बदल जाता है, उसी प्रकार जिनेन्द्रभावसे ध्यान करनेवाले भव्य जीवको ज्ञानभाव प्राप्त हो जाता है ॥११॥

१२

राजा, अपने प्रभुकी वन्दना कर घर आया और अपनी कन्याको गोदमें बैठाया। सन्तप्त हो रही उसे उसने मना किया कि हे पुत्री ! स्नेह करनेसे कभी तृप्ति नहीं होती। राजा कहता है, मैं तुम्हें बहुत समयसे जानता हूँ कि जब अच्युत स्वर्गमें मैं सुरवर था। तुम दूसरे स्वर्गके विमानमें

बीयइ कप्पि विमाणि णिवासिणि तुहुं ललियंगहु तणिय विलासिणि ।
महुरालाविणि पाणपियारी पवहिं हूई धूव महारी ।
मा झिज्जहि सो तुज्झु मिलेसइ हारु व उरुहहजुयलि घुलेसइ ।
बालहि मइ वीलइ पच्छाइय पुणु वि धाइ पहुणा संकेइय ।
दुत्थिउ जडयणु कूरसरावहु गोगाइहि खरु खरहु सरावहु ।
उल्हाविय विओयसंतावहु णवजोव्वणु जणु कामालावहु ।
विबुहहु बुहु गोवालु वि गोवहु महिलहि महिल जाइ सब्भावहु ।
णिवेण कहिवि दिट्ठंतकहाणउं एणु दिग्विजयहु दिण्णु पयाणउं ।

घत्ता—आउंचियतणु थरहरिउ फणिवइ भीयउ किं पि ण जंपइ ॥
हयगयरहणरपयदलिय जंतें राएं मेइणि कंपइ ॥१२॥

१३

तरलतमालतालतालीघणि गइ णरिंदि णवकंकेल्लीवणि ।
फलिहसिलायलम्मि आसीणी परभवपियसंभरणें झीणी ।
सुइरु महारुहाउ संचालिवि कोमलकरकमलें तणु ढालिवि ।
एक्कहिं दिणि करणिहियकवोली पंडुगंडविलुलियचिहुराली ।
णवकयलीकंदलसोमाली कंचुइइ आउच्छिय बाली ।
पुत्ति पुत्ति मोणव्वउ छंडहि पुत्ति पुत्ति तणु तणुलय मंडहि ।
पुत्ति पुत्ति किं अप्पउ दंडहि पण्णवीडि दंतग्गहिं खंडहि ।
मायहि गुज्झु काइं किर रक्खहि मज्झु वि किं णियमणु ण समक्खहि ।

घत्ता—तं आयण्णिवि रायसुय णीससंति णियजम्मु पयासइ ॥
धरणि व वेल्लिहि मज्झु तुहुं जणणि माइ तुह काइं ण सीसइ ॥१३॥

१४

धादइसंडि मेरुपुव्विल्लइ पुव्वविदेहि देसि गंधिल्लइ ।
भूयगाउं जिह लोयपसिद्धउ पाडलिगाउं अत्थि धणरिद्धउ ।
गोरसड्ढु जो ववसि वसिल्लु व करिसणजाणउ जो सुकरिल्लु व ।
पविउलखलु वि ण जो खलसंकुलु जो हलहरु वि सुवणि ण भणिउ बलु ।
जो करि व्व णरवइढोइयकरु बहुकंकणु णं वरकामिणिकरु ।
कच्छुज्जलु णं गिहिवयधारउ णियवइरक्खिउ णं सेवारउ ।
णागयत्तु णामें तहिं वणिवरु सुरइवहुल्लियाहि वल्लहु वरु ।

१२. १. MBP विलासिणि । २. MBP °लावणि । ३. MB बाल एम वीलइ । ४. MP जडयण । ५. B उण्हाविय° ।

१३. १. MP तहि कंकेल्लीवणि; B तहि किंकेल्लीवणि । २. MBP °कयलीसुकंद° । ३. MBP आउच्छी । ४. MBP छड्डहि ।

१४. १. MB धायइ°; P धाइय° । २. T भूयगामु । ३. MB सकरिल्लु ।

निवास करनेवाली थीं। तुम ललितांग देवकी स्त्री थीं। और इस समय तुम अत्यन्त मधुर बोलनेवाली और प्राणप्यारी हमारी कन्या हुई हो। तुम दुबली मत होओ, वह तुम्हें मिलेगा और हारकी तरह दोनों स्तनोंके बीच व्याप्त होगा। बालाकी बुद्धि लज्जासे आच्छादित हो गयी। फिर उसने (पिताने) धायको इशारा कर दिया। इस प्रकार दृष्टान्त और कहानियाँ कहकर उस राजाने दिग्विजयके लिए कूच किया।

घत्ता—नागराज अपना शरीर संकुचित कर थर्रा उठा, डरकर वह कुछ भी नहीं बोला। राजाके चलनेपर अश्व-गज-रथ और मनुष्योंके पैरोंसे पददलित होकर धरती काँप उठती है ॥१२॥

१३

राजाके चले जानेपर, चंचल तमाल ताल और ताली वृक्षोंसे सघन, नव अशोक वनमें, महावृक्षोंको बहुत समय तक संचालित कर और कोमल हाथरूपी कमलसे शरीरको सहलाकर वह स्फटिक शिलातल पर बैठी हुई थी। एक दिन, जिसने अपना हाथ गालोंपर रख छोड़ा है और जिसके सफेद गण्डतलपर बालोंकी लटें चंचल हैं, ऐसी नवकदलीके पिण्डके समान कोमल उस बालासे धायने पूछा, "हे पुत्री! हे पुत्री, तुम मौन छोड़ो। हे पुत्री, पुत्री! कृश शरीरलताको अलंकृत करो। हे पुत्री, पुत्री! अपनेको क्यों दण्डित करती हो। पानके बीड़ेको अपने दाँतोंके अग्रभागसे खण्डित करो। हे आदरणीये, तुम रहस्य छिपाकर क्यों रखती हो? क्या तुम अपना मर्म मुझसे भी नहीं कहतीं।

घत्ता—यह सुनकर राजपुत्री निःश्वास लेती हुई अपना जन्म प्रकाशित करती है, (और कहती है) लताके लिए धरतीके समान तू मेरे लिए जननी है। हे माँ, तुमसे क्या नहीं कहा जा सकता ॥१३॥

१४

मेरुके पूर्वमें धातकी खण्डमें पूर्व विदेहके गन्धिल्ल देशमें, भूतग्राम (शरीर) की तरह प्रसिद्ध धनसे समृद्ध पाटली गाँव है, जो वशी तपस्वीके समान गोरसाढ्य (गोरस और वाणीरससे युक्त) है, जो हस्तिपालकके समान, करिसन-जानउ (कर्षण और हाथीके शब्दके जानकर) हैं, विशाल खलियानोंसे भरपूर होते हुए भी खलजनोंसे दूर हैं, हलधर होते हुए भी जिसे बलराम नहीं कहा जाता, जो हाथीके समान राजाके लिए ढोइयकर (कर देनेवाला, सूँड़पर ढोनेवाला) है, जो मानो उत्तम कामिनीका हाथ था, वरकंकणु (बहुजल-धान्यसे युक्त और स्वर्णवलयसे युक्त) कच्छसे उज्ज्वल जो मानो गिरिपथकी धाराके समान था, जो सेवकमें रतके समान, निजवइ (अपने स्वामी, अपनी मेंढ़) की रक्षा करनेवाला था। उसमें नागदत्त नामका वणिक् था, जो

णंदु[4] णंदिमित्तु वि सुउ जायउ णंदिसेणु तहि गब्भि समायउ ।
पुणु मायइ मणमोहणु लद्धउ [5]धरसेणु विजयसेणु थणद्धउ ।
घत्ता—सिरिवइ सिरिहर वणितणय अवर वि हउं तिज्जी लहुयारी ॥
णामें णिण्णामिणि विसम दालिद्दिणि जण[6]विप्पियगारी ॥१४॥

१५

अम्हारउ घरु मोक्खु विसेसइ णिक्कलसउ णीरंजणु दीसइ ।
णिद्धणु णं घणणासि णहंगणु णिक्कणु तोलीरु[1] व सारियरणु ।
णीरसु कव्वु व कुकइहि केरउ [2]तं जिह तिह पुणु णिरलंकारउ ।
अट्ठभाउ हंडइं दो पियरइं कयखलचणयमुट्ठिआहारइं ।
कढियलवेढियवक्कलवासइं हडहडफुट्टफरुससिरकेसइं ।
अम्हइं दहजणाइं तहिं सयणइं कलहंतइं भासियदुव्वयणइं ।
पंडुरपविरलदीहरदंतइं जावच्छहुं परकम्मुं करंतइं ।
वारणचरियहु तरुसंछण्णहु तावेक्कहिं दिणि हउं गय[3] रण्णहु ।
[4]तहिं अंबरतिलयम्मि महीहरि विहरंतियइ गहीरदरीहरि ।
सरल[5]द्दरियपत्तहु तंबिरयहु मइं उच्चोलि भरिय[6] माहुरयहु ।
अण्णु वि दारुभारु गरुयारउ सीसि णिहिउ णं दु[7]क्खहं भारउ ।
घत्ता—जा पल्लट्टमि णियघरहो ताम लोउ मइं एंतु पलोइउ ॥
रयणालंकारहिं विप्फुरिउ[8] जिणु वंदहुं णं सुरयणु[9] आइउ ॥१५॥

१६

ता कट्ठभारु णं दुक्खभारु ।
महियलि धिवेवि णरु मइं णवेवि ।
पुंच्छियउ[1] हेउ कहिं चलिउ लोउ ।
ता तेण वुत्तु सुतिगुत्तिगुत्तु ।
सिद्धत्थकामु जो[2] जित्तकामु ।
जो मुक्कसत्थु [3]मणधरियसत्थु ।
जो बुहणिहाणु गुणमणि णिहाणु ।

४. M णंदि णंदिमित्तु वि सुउ आयउ; B णंदिमित्तु णंदि वि सुउ जायउ; P णंदि णंदिमित्तु वि संजायउ । ५. MBPK वरसेणु । ६. P जणविप्पिय° but adds °मण° in the margin between जण and विप्पिय ।

१५. १. MBPK तोणोरु । २. M जं जिह । ३. MK गउ । ४. MBP तहि पुणु अंबरतिलयमहीहरि । ५. MB सरलु । ६. M भरय । ७. MBPK दुक्किय° । ८. MBP फुरिउ । ९. M सुरयणु आइउ; P सुरयणु चल्लिउ ।

१६. १. P पुंछियउ । २. G omits this foot; K however adds the margin । ३. M मणि धरिय° ।

सुरतिके समान अपनी वधूका प्रियवर था। उसके नन्दी और नन्दीमित्र पुत्र हुए। नन्दीसेन भी उसके गर्भमें आया, फिर माताके मनमोहन, वरसेन (धर्मसेन) और विजयसेन पुत्र हुए।

घत्ता—और भी उसकी पत्नीसे श्रीप्रभा (श्रीकान्ता), श्रीधर (मदनकान्ता) पुत्रियाँ हुईं, तीसरी मैं सबसे छोटी नामसे निर्नामिका विषम दरिद्रा और लोगोंका बुरा करनेवाली ॥१४॥

१५

हमारा घर मोक्षसे विशेषता रखता था। वह निष्कलश (कालुष्य और कलशोंसे रहित), नीरंजन (शोभा और कलंकसे रहित) दिखाई देता है। मेघके नष्ट होनेपर, नभके आँगनके समान विद्धणु (धन और वनसे रहित) तूणीरके समान जो निष्कण (अन्नकण) सारियरणु (युद्धका निर्वाह करनेवाला, ऋणसे निर्वाह करनेवाला) था। जो कुकविके काव्यकी तरह नीरस था, और जिस प्रकार वह, उसी प्रकार यह भी अलंकारोंसे रहित था। आठ भाई-बहन। पीतलके दो हण्डे। खल और चनोंकी मुट्ठीका आहार करनेवाले। कमर तक वल्कलोंके वस्त्र पहने हुए, निकले हुए स्फुट होठ, सफेद केशराशि। उस घरमें हम दस लोग थे, आपसमें लड़ते हुए और कठोर शब्द करते हुए। सफेद बड़े विरल लम्बे दाँतोंवाले हम दूसरोंका काम करते हुए रह रहे थे। जिसमें हाथी विचरण करते हैं और जो पेड़ोंसे आच्छादित है, ऐसे उस जंगलमें एक दिन मैं गयी। वहाँ गम्भीर घाटियोंको धारण करनेवाले अम्बरतिलक महीधरमें घूमते हुए मैंने ताम्र और माहुरके हरे पत्तोंसे झोली भर ली। और भी भारी लकड़ियोंका भारी गट्ठा सिरपर रख लिया, मानो दुःखोंका भार हो।

घत्ता—जैसे ही मैं अपने घर लौटती हूँ तब मैं लोगोंको आते हुए देखती हूँ। रत्नों और अलंकारोंसे चमकते हुए सुरजन मानो जिनवरकी वन्दना करनेके लिए आये हों ॥१५॥

१६

उस लकड़ीके भारको, मानो दुःखोंके भारकी तरह धरतीपर रखकर, एक आदमीको नमस्कार कर कारण पूछा कि लोग कहाँ जा रहे हैं। तब उसने कहा—"जो तीन गुप्तियोंसे युक्त, सिद्धार्थकाम और जितकाम हैं, जो परिग्रहसे रहित, शास्त्रोंको मनमें धारण करते हैं, जो पण्डितोंके लिए कोष हैं, गुणरूपी मणियोंकी खदान हैं, जिन्होंने मोहपाश धो दिया है, जो तरुमूलमें

धुयमोहवासु तरुमूलवासु ।
जो पाउसेसु धम्माट्ठिसेसु ।
गयसरियालि जो सिसिरयालि ।
वहि सयणसाइं जो सुअवसाइं ।
तिव्वुण्हजेट्ठि वइसाहजेट्ठि ।
रवियर विसहइ जोएण सहइ ।
जो मुणिससंकु हयपरमसंकु ।
तहु गंपि वासु पिहियासवासु ।
पणवंति पाय पुच्छंति राय ।
परलोयमग्गु सग्गापवग्गु ।
चिरसंभवाइं जाणइ भवाइं ।
रिसि णाणधारि जिणधम्मधारि ।
इह गिरिवरम्मि सो कंदरम्मि ।
णिवसइ कुलीणि दोगच्चखीणि ।

घत्ता—ता मइं थोरथणत्थलिए दंडिखंडु पसरेप्पिणु थवियउ ॥
पइसिवि साहु महासहहि जइपयजुयलउ भत्तिइ णवियउ ॥१६॥

१७

तवपहावविंभावियवोसवु पुच्छिउ पुणु तेहिं सो पिहियासउ ।
कवणें दइवें हउं दालिद्दिणि हूई दोग्गयणोत्तणियंबिणि ।
कहहि देव तुहुं सव्वउ जाणहि दीण वि मइं पियवयणें पीणहि ।
ता पभणइ समणगणपहाणउ दोणु वि राउ वि मज्झु समाणउ ।
णिसुणि पुत्ति अक्खमि जम्मंतरु आसि कयउ जं पइं कम्मंतरु ।
गोमि पलासपुडिव तहिं गहवइ देविलु सुमइ तासु रंजियमइ ।
गेहिणि ताहि धूय तुहुं हूई हेलिय जुवाणहं णं रइदूई ।
वीयरायसिद्धंतु पढंतहु जीवाजीवभेय भावंतहु ।
एक्कहिं दिणि वणि खंतिसणाहहु इसिवि समाहिगुत्तमुणिणाहहु ।
अण्णाणइ पइं उप्परि घत्तिउ रिसिणा तणुभूसणु व विचिंतिउ ।
किमिकुलपूयरुहिरदुग्गंधउ पयडियदंतउ विहडियरंधउ ।
सुणहकलेवरु दियहि दुइज्जइ तेंवें जि पुणु वि पदिट्ठु तइज्जइ ।

घत्ता—णउ तूसहिं रूसंति ण वि सुइ कंदप्पदप्पखयगारा ॥
जो मंडइ जो खंडइ वि बिहिं मि समाणा समणभडारा ॥१७॥

---

४. B °मूलु । ५. P पावसेसु । ६. MB add after this: वरिसंति मेहि, दुहु सहिय देहि ।
७. M पणवंत । ८. MBP महासहहो ।

१७. १. MBP °वासउ । २. MBP पुच्छिउ तें पुणु सो । ३. MBP पभणइ मुणि समणपहाणउ । ४. MP पइं जं । ५. MBP गाम । ६. MB ललिय° । ७. MBP तेम जि पुणु पइं दिट्ठु । ८. MBP तूसंति ।

निवास करते हैं, जो पापसे रहित हैं, जिनकी चमड़ी और हड्डियाँ ही शेष बची हैं, जो नदियोंके वेगसे रहित शिशिरकालमें बाहर शयन-आसन करते हैं, जो षड् आवश्यक कार्य करते हैं, जो तीव्र उष्णतासे महान् वैशाख और जेठमें रविकिरणोंको सहन करते हैं, योगसे शोभित होते हैं, जो मुनि शशांक (मुनिचन्द्र) दूसरोंकी शंकाको दूर करते हैं। ऐसे पिहितास्रव मुनिके वासपर जाकर राजा पैर पड़ते हैं और परलोकका मार्ग तथा स्वर्ग अपवर्गके विषयमें पूछते हैं। वह पूर्वके जन्मोंको जानते हैं। ऋषि ज्ञानधारी हैं और जिनधर्मका आचरण करते हैं, वह इस गिरिवरकी धरतीमें लीन दुर्गतियोंके नष्ट करनेवाली कन्दरा (गुफा) में रहते हैं।"

घत्ता—तब स्थूल स्तनोंवाली मैंने अपना जीर्ण-शीर्ण वस्त्र फैलाकर स्थापित किया और महासभामें प्रवेश कर साधुके चरणकमलोंको भक्तिपूर्वक नमस्कार किया ॥१६॥

१७

अपने तपके प्रभावसे इन्द्रको प्रभावित करनेवाले पिहितास्रव मुनिसे उन लोगोंने पूछा, कि मैं किस दैवसे दरिद्र और नीचगोत्रकी स्त्री हुई। हे देव बताइए, आप सच जानते हैं, दीन भी मुझे प्रिय वचनसे प्रसन्न करिये।" तब श्रमणगणोंमें प्रमुख वह कहते हैं कि दीन और राजा, दोनों मुझे समान हैं। हे पुत्री! सुनो, मैं जन्मान्तर कहता हूँ। दूसरे जन्ममें तुमने जो कर्मान्तिक किया था। पलाश गाँवमें वहाँ एक गृहपति था देवल नामका। मति रंजित करनेवाली उसकी सुमति नामकी पत्नी थी। उसकी कन्या तू हुई। किसान-कन्या होते हुए भी तू युवकोंके लिए मानो रतिकी दूती थी। वीतराग सिद्धान्तको पढ़ते हुए, जीव और अजीवके भेदका विचार करते हुए, शान्तिसे युक्त समाधिगुप्त मुनिनाथको हँसी उड़ाते हुए एक दिन वनमें तूने कृमिकुल पीप-रुधिरसे दुर्गन्धित, निकले हुए दाँतोंवाला और खण्डित और छेदोंवाला कुत्ता उनपर फेंका। लेकिन मुनिने उसे शरीरका आभूषण समझा। दूसरे दिन भी और तीसरे दिन भी तूने कुत्तेके शरीरको उसी प्रकार देखा।

घत्ता—पवित्र तथा कामके दर्पको नष्ट करनेवाले मुनि न तो सन्तुष्ट होते हैं, और न प्रसन्न होते हैं, चाहे कोई अलंकृत करे और चाहे खण्डित करे दोनोंमें ही आदरणीय श्रमण समान रहते हैं ॥१७॥

१८

पेच्छिवि मुणि परिहरियसकायउ[1] तुह अणुकंपभाउ[2] संजायउ।
भसणसरीरु चित्तु अण्णेत्तहि पइं णयणेहिं ण दीसइ जेत्तहिं।
पणउ करेप्पिणु जोइ खमाविउ तेण जि खमभाउ जि संभाविउ।
ईसिं[3] समेण मरेवि असुंहाउलि[4] तुहुं हूईसि एत्थु दुग्गयकुलि[5]।
धम्में मुक्कहि दुक्कियदुक्खहु धम्मु णिसुणि सुइ कारणु सोक्खहु।
फणिवरणइं जगि को अहिणाणइ परमत्थेण धम्मु को जाणइ।
लोइयधम्मु होइ जलण्हाणें वीरपुरिसभंडणवक्खाणें।
धम्मु होइ पुणु पुंणु अच्चवणें[7] पाहाणुप्परि पत्थरठवणें।
धम्मु होइ घइ णियमुहदंसणि धम्मु होइ सुरहीतणुफंसणि[8]।
धम्मु होइ तिलपायसभोयणि धम्मु होउ[6] आसत्थालिंगणि।
धम्मु होइ गोमुत्तु पियंतहु[9] धम्मु होइ महु मज्जु रसंतहु।
धम्मु होइ पलवेढु करंतहु छेलउ कुक्कुडु किडि मारंतहु।
घत्ता—एहु कुलिंगु कुधम्मु सुए एण णवर दुग्गइ जाइज्जइ॥
जिणणाहेण पयासियउ धम्मु अहिंसालक्खणु किज्जइ॥१८॥

१९

मेहलकण्हाइणदब्भयणइं धरिवि काइं जणु मारइ हरिणइं।
किं लिंगेणं[1] लिंगिसंदोहहु जइ णउ मुच्चइ णिच्चु जि कोहहु।
अंतरंगु जसु सुद्धु ण दीसइ[2] कायकिलेसें तहु किं होसइ।
दंडउ अप्पउ मुणिविहियारउ[3] तासु तहिट्ठिउ[4] भवसंसारउ।
उवसमें[5] गुव्वाणुव्वयधारहिं अलिउ म जंपहि जीउं[6] म मारहि।
करपल्लउ परदविणि म ढोवहि परपुरिसु वि सराउ मा जोयहि।
मुयहि संगु बहुलोहुप्पायणु रयणीभोयणु दुक्खहं भायणु।
अवरु पव्वपोसहु परिपालहि जिणपडिबिंबइं णिच्चु णिहालहि।
अहिसिंचिवि अंचिवि णियसत्तिइ ताइं णवेज्जसु गरुयइ भत्तिइ।
तुसगासु वि उवसंतहु देज्जसु णियमएण णियमणु णियमेज्जसु।
घत्ता—पण्णासट्ठुत्तरु सउ वि सियपंचमिहिं बालि जइ उवसहि॥
सुयहरि मुणिवरि जं कियउ तो तुहुं[7] तं चिरदुरिउ पणासहि॥१९॥

---

१८. १. MP परिहरियकसायउ; B परिहरिसंकायउ। २. B °भाव। ३. MBP इसि उवसमें मरिवि। ४. M असुहाहलि। ५. MB दुग्गमें। ६. M होय। ७. MBP फुड अच्चमणें। ८. MBP तणु सुरही फंसणि। ९. P पियंतहं।

१९. १. B किं लिंगिण सलिंगिसंदोहहु। २. MBP सीसइ। ३. BPT मुणिवहियारउ। ४. P तहिट्ठिउ। ५. P उवसमु। ६. MBP जीव। ७. MBP तं तुहुं।

१८

मुनिको अपने शरीरके प्रति त्यागभाव देखकर तुम्हारे मनमें दयाभाव उत्पन्न हुआ। तुमने उस कुत्तेके शरीरको वहाँ फेंक दिया, जहाँ वह आँखोंसे दिखाई न दे। प्रणाम करके तुमने योगीसे क्षमा माँगी। उन्होंने भी क्षमाभाव दे दिया। इस प्रकार थोड़ेसे समताभावसे मरकर अशुभसे पूर्ण यहाँ इस नीच कुलमें उत्पन्न हुई। पापका दुःख धर्मसे ही जा सकता है, सुखके कारण पवित्र धर्मको सुनो। संसारमें साँपके पैरोंको कौन जानता है? परमार्थ रूपसे धर्मको कौन जानता है? लौकिक धर्म होता है जलमें स्नान करनेसे, वीर पुरुषोंके युद्धोंका वर्णन करनेसे, धर्म होता है बार-बार आचमन करनेसे, पहाड़के ऊपर पत्थरकी स्थापना करनेसे। धर्म होता है घीमें अपना मुँह देखनेसे। धर्म होता है गायका शरीर छूनेसे। धर्म होता है तिल और पायस भोजन करनेसे। धर्म होता है पीपलके वृक्षका आलिंगन करनेसे। धर्म होता है गोमूत्र पीनेसे। धर्म होता है मधु और मद्यके रसास्वादनसे। धर्म होता है मांसका वेधन करनेसे। धर्म होता है बकरा, मुर्गा और सुअरको मारनेसे।

घत्ता—हे पुत्री, यह कुलिंग और कुधर्म है, इससे केवल नरक गतिमें जाया जा सकता है, इसलिए जिननाथके द्वारा प्रकाशित अहिंसा लक्षण धर्मका आचरण करना चाहिए ॥१८॥

१९

मेखला कृष्णाइन (काले मृगका चमड़ा) और दर्भांकुर धारण करनेके लिए लोग मृगोंको क्यों मारते हैं? मुनियोंके समूहके चिह्नसे क्या, जबकि यदि वह नित्य ही क्रोधसे मुक्त नहीं होता। जिसका अन्तरंग शुद्ध दिखाई नहीं देता शरीरक्लेशसे उसका क्या होगा? मुनिकी विधि करनेवाला स्वयंको दण्डित करे उसका भवसंसार वहीं स्थित है? उपशमसे पूर्ण और अणुव्रतधारियोंसे झूठ मत बोलो, जीवको मत मारो, करपल्लवमें दूसरेके धनको मत ढोओ। परपुरुषको रागदृष्टिसे मत देख, बहुलोभको उत्पन्न करनेवाले संगको छोड़ दे, रात्रिभोजन दुःखका कारण है, और भी पर्वके उपवासका पालन करो, जिनप्रतिमाओंके प्रतिदिन दर्शन करो, अपनी शक्तिसे अभिषेक और पूजा कर उन्हें भारी भक्तिके साथ प्रणाम करो। उपशान्तको भी तुष ग्रास दो। नियमसे अपने मनका नियमन करो।

घत्ता—हे बाले, यदि तू शुक्ल पंचमियोंमें १९० उपवास करती है तो श्रुतधारी उन मुनिपर तूने जो किया है, वह तेरा चिरपाप नष्ट हो जाता है ॥१९॥

२०

मुणिहिं सरीरि परमु समु णिवसइ ते णिवंतहं दुम्मइ विलसइ ।
चूडामणि किं चरणि णिहिज्जइ वंदणिज्जु भणु किह णिंदिज्जइ ।
दुच्चितियउ दुबोल्लिउ दुक्किउ आसि जम्मि एवहिं करि सक्किउ ।
ता सा खविय तविय गयगावें अंतोअंतो पच्छुत्तावें ।
महु पावोहें कहिं पावणियत्तणु जाइ कयउ गुरुहुं मि पिसुणत्तणु ।
मायामोहु मुइवि मणु रोहिवि पमप्पाणउं णिंदिवि गरहिवि ।
गय रिसिवइ वंदिवि णियवासहु हउं लग्गी सहि सुयउववासहु ।
काइं वि दविणु ण विज्जइ जइयहुं मइं दालिद्दिणीइ तहिं तइयहुं ।
खलु वि सुपत्तहु अणुदिणु दिण्णउं छड्डिउ सव्वजीवपेसुण्णउं ।
पुज्जिउ जिणवरु दोणयहुल्लें बोहिउ दीवउ दुल्लहतेल्लें ।

घत्ता—पुज्जउ इंदु णराहिवइ अवरु वि णिद्धणु सिरिमइ भासइ ॥
एक्कु जि फलु मइं अक्खियउ जइ मणि णिम्मलभत्ति ण णासइ ॥२०॥

२१

एम तेत्थु हउं चिरु जीवेप्पिणु गुरुउववासलेसु पालेप्पिणु ।
पुणु आहारु सरीरु मुएप्पिणु परमक्खरइं पंच सुमरेप्पिणु ।
मुइय गंपि ईसाणविमाणइ सिरिपहणामि रमियगिव्वाणइ ।
ललियंगहु महएवि सयंपह हूई जुइणिज्जियचंदप्पह ।
मुइ पिययमि छम्मास जिएप्पिणु इह हूई सग्गाउ चएप्पिणु ।
पिउँ सुयरंतिहि चंदु वि तावइ चंदणु देहि ण लग्गउ भावइ ।
अट्ठ वि अंगइं हयइं अणंगें तुहुं किं ण मुणहि इंगियलिंगें ।
एम चवेप्पिणु पडु आणाविउ णाहु लिहेप्पिणु धाइहि दाविउ ।
णियचिररूउ तहिं जि आलिहियउ फुरइ व चेलंचलि संणिहियउ ।
अण्णण्णइं कीलासंताणइं लिहियइं सरिसरगिरिवरठाणइं ।
अण्णइं तहिं रईरहसंचरियइं धुत्तहं भइयइं गूढइं धरियइं ।
एत्थु वसंती एत्थु रमंती सो एहउ हउं एही होंती ।
एम भणेप्पिणु गुज्झु ण रक्खिउ सुंदरीइ णियहियवउ अक्खिउ ।

---

२०. १. MBP किह भणु । २. BP पच्छत्तावे । ३. BP पावहि । ४. MBPK मणु ण रहिवि । ५. MBP सणिवासहु । ६. P दालिद्दिणि एत्तहिं । ७. MBP भोयणु ।

२१. १ P °उवएसु । २. MB पावेप्पिणु । ३. B omits this foot. ४. MBP पिय सुभरंतिहि । ५. B इंदियलिंगें । ६. MB सरसरि° । ७. MBP °गहणइं । ८. MBP रइरससंचरियइं । ९. P भइए and gloss भयेन । १०. MBP कहेप्पिणु ।

२०

मुनियोंके शरीरमें परम सम निवास करता है, उनकी निन्दा करनेवालोंकी दुर्गति विलसित होती है। चूड़ामणिको क्या पैरोंमें रखना चाहिए। जो वन्दनीय हैं क्या उनकी निन्दा करनी चाहिए। जो तूने उस जन्ममें, दुश्चिन्तित दुर्बोल और पाप किया था, इस समय यदि तुम कर सकती हो तो, गतगर्व बार-बार पश्चात्तापसे तप कर उसे नष्ट कर दो। परन्तु मेरे पापसमूहमें पापका निवर्तन कैसा ? कि जिसने गुरुओंके साथ भी दुष्टता की। मायामोहको छोड़कर मनका शोध कर इस प्रकार अपनी निन्दा और गर्हा कर, ऋषिपतिको वन्दना कर अपने निवासपर गयी, और हे सखी, मैं उपवासमें लग गयी (श्रीमती धायसे कह रही है।) जब मेरे पास कुछ भी धन नहीं था, तब भी मुझ दरिद्राने उस समय सुपात्रोंको प्रतिदिन खल दानमें दिया और सर्वजीवोंके प्रति दुष्टताका भाव छोड़ दिया। मैंने दमनपुष्पसे जिनवरकी पूजा की और दुर्लभ (दूसरेसे याचित) तेलसे दीया जलाया।

घत्ता—चाहे इन्द्र पूजा करे, या चाहे राजा या निर्धन पूजा करे। श्रीमती कहती है, यदि मनमें निर्मल भक्ति है तो उसका एक ही फल है, ऐसा मैं कहती हूँ ॥२०॥

२१

इस प्रकार वहाँपर मैं बहुत समय तक जीकर गुरुके उपदेशका अंशमात्र पालकर फिर आहार और शरीर छोड़कर, पाँच परम अक्षरोंकी याद कर मैं मर गयी और जाकर, जिसमें देवता रमण करते हैं, ऐसे श्रीप्रभ नामके ईशान विमानमें ललितांग देवकी, अपनी द्युतिसे चन्द्रप्रभाको जीतनेवाली मैं स्वयंप्रभा नामकी महादेवी हुई। प्रियतमके मरनेपर छह माह जीवित रहकर और स्वर्गसे च्युत होकर इस समय यहाँ उत्पन्न हुई हूँ। प्रियको स्मरण करते हुए मुझे चन्द्रमा सन्तप्त करता है। देहमें लगा हुआ चन्दन अच्छा नहीं लगता। कामदेव आठों अंगोंको जलाता है, इन्द्रियके चिह्नसे क्या तुम नहीं जानती। यह कहकर उसने पट बुलवाया और स्वामीका चित्र बनाकर धायको बताया। वहींपर उसने अपना पुराना रूप चित्रित किया और चमकते हुए वस्त्रके भीतर रख दिया। दूसरी-दूसरी क्रोड़ा-परम्पराओं, नदी-सरोवर और गिरिवर स्थानोंको भी उसने लिखा। और भी उसने उसमें रतिकी रहस्य क्रोड़ाओं और धूर्तताके गूढ़ भयोंको अंकित कर दिया। यहाँ रहती हुई, यहाँ रमण करती हुई यह मैं हूँ और यह वह है। यह कहकर उसने कुछ भी गोपनीय नहीं रखा। सुन्दरीने अपना दिल बता दिया।

घत्ता—आणहि पंडिइ [11] पाणपूउ फेडहि वम्महवाहि महारी ॥
भरह [12] पुप्फदंतुज्जलिय अण्ण ण तियमइ [13] मइगलयारी ॥२१॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे णिण्णामियाधम्मलंभो णाम बावीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ २२ ॥

संधि ॥ २२ ॥

११. MBP पाणपिउ । १२. MBP फुप्फयंतु° । १३. MBP णियमइ ।

घत्ता—हे पण्डिते ! तुम मेरा प्राणप्रिय ला दो, मेरी कामकी व्याधि शान्त कर दो। नक्षत्रों-की तरह उज्ज्वल और कोई दूसरी स्त्री मेरे समान मतिमें भारी नहीं है, तुम याद करो ॥२१॥

इस प्रकार त्रेसठ महापुरुषोंके गुणालंकारोंवाले इस महापुराणमें महाकवि पुष्पदन्त द्वारा विरचित एवं महाभव्य भरत द्वारा अनुमत महाकाव्यमें निर्नामिकाधर्मलाभ नामका बाईसवाँ अध्याय समाप्त हुआ ॥ २२ ॥

संधि २३

तं णिसुणिवि पहु करयलि करिवि गय पंडिय जिणगेहहो ॥
अइकुडिल सु[1]तेय मणोहरिय चंदलेह णं मेहहो ॥ ध्रुवकं ॥

१

दुवई—एत्तहिं सा णरिंदसुय विसहइ पिययमविरहवेयणं ।
एत्तहिं पंडियाइ पविलोइउ परमप्पयणिहेलणं ॥१॥

[2]पवणुद्धुयधयमालाचवलं हिमकुंदसमाणसुहाधवलं ।
गाय[3]णंगणगाहयजिणधवलं सिद्धंतपढणकलयलमुहलं ।
गयणंगणलग्गमहासिहरं [4]ऑइरुंदचंदकररासिहरं ।
[5]जंक्खिजक्खपडिमाणिलयं विद्दुमतल[6]उंभयतलसिलयं ।
मरगयमयखं[7]भसमुद्धरियं [8]मणिमत्तवारणालंकरियं ।
आयासफलिहमयभित्त[9]यलं हरिणीलणिबद्धधरित्तियलं ।
उ[10]व्वाइयधूवंगारवरं गुमुगुमुगुमंतमत्तालिसरं ।
घल्लियपप्फुल्लियफुल्लचयं ओलंबियमोत्तियदामसयं ।
पइसेप्पिणु तं मुणिणाहघरं णविऊण जिणं जियजम्मजरं ।
पहु विउसिइ पसरिवि दाविय णायरणरेहिं परिभावियउ ।

घत्ता—इय दसदिसु वत्त समुच्छलिय जो पउवइयरु जाणइ ॥
धरणीसरत[11]णयहि सिरिमइहि सो [12]थणजुयलं माणइ ॥१॥

२

दुवई—विविहाह[1]रणकिरणविप्फरणोहामियफणिसुरेसरा ।
ता मायंगतुंगतु[2]रयासण चल्लिय णरवरेसरा ॥१॥

MBP give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza :—

अङ्गुलिदलकलापमसमद्युति नखनिकुरुम्बकर्णिकं
सुरपतिमुकुटकोटिमाणिक्यमधुव्रतचक्रचुम्बितम् ।
विलसदणुप्रतापनिर्मलजलजन्मविलासि कोमलं
घटयतु मङ्गलानि भरतेश्वर तव जिनपादपङ्कजम् ॥

GK do not give it.

१. १. P सतेय । २. MBPK पवणद्धुय° । ३. M गायणगह° । ४. M आरुंद° । ५. M जक्खिद-जक्ख° । ६. MBP तलउभय° । ७. M °खंभ° । ८. P मयमत्त । ९. MBP °भित्तियलं । १०. MBP उच्चाइयधूमंगार° । ११. P °तणयहु; K तणहे । १२. MBP जुयलउ ।

२. १. M °हरणकिरणविप्फुरणोहामिय°; B °हरणविप्फुरियणोहामिय°; P हरणकिरणविप्फुरिणोहामिय° । २. P तुरयासणा ।

सन्धि २३

यह सुनकर चित्रपटको हाथमें लेकर वह धाय जिनमन्दिरके लिए गयी। मानो अतिकुटिल, तेजवाली और सुन्दर चन्द्रलेखा मेघके लिए निकली हो।

१

यहाँ वह राजपुत्री प्रियतमकी विरहवेदना सहन करती है, और वहाँ पण्डिता धायने जिनमन्दिरके दर्शन किये। जो पवनसे उड़ती हुई ध्वजमालासे चपल तथा हिम और कुन्द पुष्पके समान सुधासे धवल था। जिसमें गायक-समूह द्वारा जिन भगवान्‌के धवलगीत गाये जा रहे हैं, जो सिद्धान्तोंके पठनके कलकल शब्दसे मुखर है, जिसके शिखर आकाश प्रांगणको छूते हैं, जो अत्यन्त विशाल चन्द्रमाकी किरणराशिको धारण करता है, जो यक्षों और यक्षिणियोंकी प्रतिमाओं-का घर है, जहाँ तलशिला विद्रुमोंसे रचित है। जो मरकतमणियोंके खम्भोंपर आधारित है, मणिमय मत्तराजोंसे अलंकृत है। जिसका भित्तितल आकाशके स्फटिक मणियोंसे निर्मित है और भूमितल हरे और नील मणियोंसे रचित है। जहाँ अंगारवरमें धूप खेई जा रही है, जिसमें गुनगुनाते हुए भ्रमरोंका स्वर हो रहा है, जहाँ चढ़ाये गये पुष्पित पुष्पोंका समूह है, जहाँ सैकड़ों मोतियोंकी मालाएँ लटक रही हैं, ऐसे मुनिनाथके उस घरमें प्रवेश कर जन्म-जराको जीतनेवाले जिनको नमस्कार कर, उस धायने चित्रपटको फैलाकर दिखाया। नागरनरोंको वह बहुत विचार किया।

घत्ता—इस प्रकार दसों दिशाओंमें यह बात फैल गयी। जो चित्रपटके वृत्तान्तको जानता है वह श्रीमतीके स्तनयुगलको मानेगा (आनन्द लेगा) ॥१॥

२

विविध आभरणोंकी किरणोंके विस्फुरणसे नागों और देवेन्द्रोंको तिरस्कृत करनेवाले नरवरेश्वर हाथियों और ऊँचे घोड़ोंपर बैठे हुए चले। जिसने श्वेततामें सफेद शरद्‌को पराजित

सेयत्तें णिज्जियसियसरयं णिवसियविरयं वारियणरयं।
पत्ता राया तं जिणहरयं दुक्कियहरयं सुभवियवरयं।
दिट्ठो लिहिओ[3] तेहिं पडो [4]झसइंधणडो मणि णीवियओ[5]।
तं पेच्छेवि[6] अहिलसियसिवो भणु को ण णिवो रोमंचियओ।
केण वि भणिया[7]—[8]पुत्तलिया लयं[9]कोमलिया वणुज्जलिया।
एसा बाला सामलिया णामें ललिया अलिकोंतलिया।
चिरभवि होंती मज्झ पिया पक्खसिया विहिकत्थणिया।
केण वि भणियं—[10]मई मुणिया सुरवरगणिया [11]मृगलोयणिया।
होंती कंते[12] महु तणिया णीलंजणिया पीणत्थणिया।
केण वि भणियं—दिण्णसिरि इंहुँ[13] मेरुगिरि इह सा तरुणि।
इह मई देवें होंतइण गायंतइण मोहिय हरिणि[14]।
कु वि भणइ—आसाइ विणु गुरु एक्कु खणु किह दिणु गंवमि।
कु वि[15] भणइ—हा किं करमि णिच्छउ मरमि जइ णउ रममि।
को वि [16]सदीहउ णीससइ तावें सुसइ उरयलु हणइ।
अप्पउ बल्लइ घरणियले आणेहि हले तं[17] मुहुं भणइ।
को वि मुच्छावसु णिवडियउ रइविणडियउ णिज्जीवे[18] थिउ।
उच्चाएप्पिणु परियणिण दूमियमणिण णियघरहु णिउ।
धाइ[19] जिणेप्पिणु [20]उत्तरहिं पच्चुत्तरहिं कु वि चवइ वरु।
हउं वरइत्तु[21] [22]भवंतरिउ इह अवयरिउ तहि [23]धरिवि करु।
घत्ता—विहसेवि पवोल्लिउ पंडियइ जो गुज्झइं महुं अक्खइ॥
सो [24]सुअवेल्लीरइसुहहलहो रसु परमत्थें चक्खइ॥२॥

३

दुवई—अह वररमणिरूवरंजियमणु जो णरु अलिउं[1] भासए।
सो सरसरविहिण्णु सा ण लहइ पइसइ णरयवासए॥१॥

ता[4]तेत्थंतरि विरहमहाभरि।
[5]कुमरिहि घणथणि जायइ जोव्वणि[6]।
छक्खंडावणि जिणिवि महाफणि।

३. B लिहिओ तहे तेहिं; P लिहिओ सो तेहिं। ४. MBP झसचिंध°। ५. MBP चित्तविओ। ६. P पेच्छेविणु। ७. MBP भणिय। ८. MBP पत्तलिया। ९. MPB लइ°। १०. M मइं मुणिमुणिया; P मणि मुणिया। ११. MBP मिय°। १२. MBP कंता। १३. MBP महुललियगिरि। १४. MBP add after this: मज्झु वि घरिणि। १५. MBP को वि एम्व भणइ। १६. MB सुदीहउ। १७. MBP तम्मुहुं। १८. MBP णिज्जीउ; १९. MBP धाइउ। २०. MBP वुत्तरहिं। २१. P वरयत्तु। २२. M भवंतरु। २३ MBP धरमि। २४. M सुह°।

३. १. P अलियउ भासइ। २. MBP णिवडइ। ३. P णरइ°। ४. MBP एत्थंतरि। ५. MBP read this line as: पसरियरायइ, कुवरिहि (P कुवरहि) जायइ। ६. MBP add after this: उत्तुंगत्थणि, घणि घणि जोव्वणि।

कर दिया है, जिसमें विरक्तोंका निवास है, जिसने नरकका निवारण किया है, जो पापोंका हरण करनेवाला है, और जो सुभव्योंके लिए वरदान देनेवाला है, ऐसे उस जिनमन्दिरमें राजा लोग पहुँचे। उन्होंने वह चित्रपट देखा। उनके मनमें कामदेवरूपी नट नाच उठा। उसे देखकर, अपना कल्याण चाहनेवाला बताओ, कौन-सा राजा वहाँ ऐसा था कि जो रोमांचित न हुआ हो। किसीने कहा—"यह कन्या रंगमें उजली और लताकी तरह कोमल है। सुन्दरी यह बाला, इसका नाम ललिता और भ्रमरके समान काले बालोंवाली। पूर्वभवमें यह मेरी प्रिया थी। यह साक्षात् लक्ष्मी, विधाता न जाने इसे कहाँ ले गया।" किसीने कहा—"मैंने जान लिया है कि देवेन्द्रोंके द्वारा मान्य यह मृगनयनी पीनस्तनोंवाली नीलांजना मेरी कान्ता थी।" किसीने कहा—"दिनकी शोभा, यह मेरुपर्वत, यह वह तरुणी। यहाँ मैंने देव होते हुए और गाते हुए इस हरिणीको मोहित कर लिया था।" कोई कहता है—"आशाके बिना एक क्षण भारी हो रहा है, दिन कैसे बिताऊँ।" कोई कहता है—"हा! क्या करूँ? निश्चय ही मरता हूँ यदि इससे रमण नहीं करता।" कोई लम्बी साँस लेता है, तापसे सूखता है और अपना उरतल पीटता है। अपनेको धरतीतलपर गिरा लेता है। हे सखी! उसे ले आओ, बार-बार कहता है। कोई मूर्च्छाके वश होकर गिर पड़ा, और रतिसे प्रवंचित होकर उसने प्राण छोड़ दिये। दुःखित मन परिजन उसे उठाकर अपने घर ले गये। उस धायको जीतनेके लिए उत्तरों और प्रत्युत्तरोंसे कोई वर कहता है कि "जन्मान्तरका वर मैं हूँ, उसका हाथ पकड़नेके लिए यहाँ अवतरित हुआ हूँ।"

घत्ता—तब उस पण्डिताने हँसकर कहा—जो मुझे गुह्य बातें बतायेगा, वह सुतारूपी लताके रतिरूपी फलका रस वास्तवमें चखेगा? ॥२॥

३

अथवा, श्रेष्ठ रमणीके रूपसे रंजितमन, जो मनुष्य झूठ बोलेगा, कामदेवके तीरोंसे भिन्न उसे वह स्वीकार नहीं करेगी और वह नरकवासमें प्रवेश करेगा। तब अत्यन्त विरहसे भरे हुए इस कालमें कुमारीका सघन स्तन यौवन आनेपर, छहखण्ड धरतीको जीतकर देवों, विद्याधरों और

देव वि खयर वि णित्तेयइ रवि ।
चोयँवि गयवइ आयउ महिवइ ।
पुरिहि पइट्ठउ सघरि णिविट्ठउ ।
महुरालावें सपणयभावें ।
सुय बोल्लाविय णिरु संताविय ।
पियपरिणामें णिद्दयकामें ।
पुत्ति म झिज्जहि लइ पडिवज्जहि ।
ण्हाणु विलेवणु कंकणु परिहणु ।
गुरुयणु रंजहि भोयणु भुंजहि ।
वज्जउ वायहि णच्चहि गायहि ।
अक्खरु भावहि पक्खि पढावहि ।
तुज्झु मुहुल्लउ तिहुयँणभल्लउ ।
हउं णालोयमि तो णउ जीवमि ।
तायहु जंपिउ तं मुद्धइ किउ ।
पुणु आवेप्पिणु पणउ करेप्पिणु ।
णियडि णिसण्णी विरहें विसण्णी ।
आलिंगेप्पिणु सिरि चुंबेप्पिणु ।
णयणाणंदें भणिय णरिंदें ।
चारु चिराणउं कहमि कहाणउं ।
मयरद्धयसिरि णिसुणि किसोयरि ।

घत्ता—चिरु एत्थु पुंडरिगिणिपुरिहि इमहु भवहु पंचमभवि ॥
हउं अद्धचक्कवट्टिहि तणउ होंतउ कुलि णिच्चुच्छवि ॥३॥

४

दुवई—णामें चंदकित्ति जयकित्ति सुमित्तवरेण भूसिओ ।
मुइ जणणे अहं पि लच्छीइ महीइ चिरं समासिओ ॥१॥

णिरुवमसुहसयहरिसियमणेहिं चिरु भुत्तु रज्जु दोहिं मि जणेहिं ।
अवसाणि बिहिं वि सिरि परिहरेवि पीईवद्धणि वणि पइसरेवि ।
पयसेवियचंदसेणगुरुहि किउ तवु णिज्जणि उग्गयकुरुहि ।
दोहिं वि विणिवारिय पावमइ सह चेय बिहिं वि कय कालगइ ।
बिण्णि वि जाया माहिंदसुर सत्तंबुहिआउपमाणधर ।
चिरु जीवेप्पिणु तहिं तियसथुय पुणक्खइ सुंदरि तहिं वि मुय ।

७. P चोइयगयवइ । ८. M कंकणु पहिरणु; B कंकणु परिहरणु, P कंचणु पहिरणु । ९. P अक्खर । १०. MBP जइ मोहुल्लउ । ११. MB हउं आलोयमि; P हउं अवलोयमि । १२. G omits विरह विसण्णी । १३. MB पंचमइ भवि ।

४. १. MBP जसकित्ति । २. M °वरेण । ३. MBP तउ । ४. MBK हियतियसणुय ।

सूर्यको निस्तेज करता हुआ अपने गजवरको प्रेरित कर राजा आ गया। उसने पुरमें प्रवेश किया और अपने घर आया। मधुर आलाप और प्रणयभावसे उसने चिरसन्तप्त अपनी कन्यासे कहा—"हे पुत्री! तुम शोक मत करो, लो स्वीकार करो, स्नान-विलेपन-कंगन और परिधान। गुरुजनोंको रंजित करो, भोजन करो, वाद्य बजाओ, नाचो-गाओ, अक्षर पढ़ो, पक्षियोंको पढ़ाओ, तुम्हारा मुख तीनों लोकोंमें भला है, यदि मैं उसे नहीं देखता तो मैं जीवित नहीं रहूँगा।" तब, पिताके कथन-को कुमारीने मान लिया। वह फिर आकर और प्रणाम कर बैठ गयी। विरहसे दुःखी पास बैठी हुई उसका आलिंगन कर और सिर चूमकर, नेत्रोंको आनन्द देनेवाले राजाने कहा—"मैं एक अत्यन्त पुराना सुन्दर कथानक कहता हूँ। हे कामदेवकी लक्ष्मी कृशोदरी, तुम सुनो।

घत्ता—पहले यहाँ पुण्डरीकिणी नगरमें, इस जन्मसे पूर्व पाँचवें जन्ममें, मैं नित्योत्सववाले कुलमें अर्धचक्रवर्तीका पुत्र हुआ था ॥३॥

४

चन्द्रकीर्ति नामसे, सुमित्रवर जयकीर्तिसे विभूषित। पिताकी मृत्यु होनेपर, मैं चिरकाल तक, भूमि और लक्ष्मीसे आलिंगित रहा। अनुपम शुभ रातोंसे हर्षित मनवाले हम दोनोंने बहुत समय तक राज्यका भोग किया। अन्त समय हम दोनों लक्ष्मीको छोड़कर प्रीतिवर्धन वनमें प्रवेश कर, जिसने चन्द्रसेन गुरुके चरणोंकी सेवा की है ऐसे उद्‌गतकुरुके निर्जन वनमें तप किया। दोनोंने पापबुद्धिका निवारण किया और शायद साथ ही समयकी गति पूरी की। दोनों ही माहेन्द्र स्वर्गमें देव हुए, सात सागर प्रमाण आयुवाले। देवोंके द्वारा स्तुत वहाँ बहुत समय तक

पुक्खरवरि पुव्वमेरुसिहरे तहु पुव्वविदेहि रसंतकरे ।
धणधण्णरिद्धि जायाइसउ णामेण मंगलावइ विसउ ।
जहिं दहिउ दुद्धु जलु जिह सुलहु जहिं णत्थि दोसु गुणगणु जि बहु ।
घत्ता—जहिं घणछेत्तावलिपालियहि सुउ हलिणिहि कह भासइ ॥
आरत्तचंचु चंचलमुहु जंपमाणु मणु तोसइ ॥४॥

५

दुवई—मत्तमहंतधवलगलगज्जियबहिरियविउलगोउले ।
विसरिसविसमभिडियधरसेरिहकयकाहलियकलयले ॥१॥
तहिं किडिदाढाहयथलकमले कमलदलच्छाइयविमलजले ।
जलजंतसित्तकेलीतरुणे तरुणतरुकुसुमरयछव्वरणे ।
छव्वरणालंकियदियपवरे दियपवरकलरवुद्दंतसरे ।
सरसीमारामपएससुहे सुहयरछुहपंडुरि रायगिहे ।
गिहसिहरालिंगियघणणियरे ।
णियरायणायणिव्विंतपए पयपाडियपरणरवीरसए ।
सयवत्तपसाहियजलपरिहे परिहरियपावि मंदिरि सिरिहे ।
सिरिहरु पुरि रयणसंचि णिवइ णिवइच्छियवित्ति सुधम्मरइ ।
रइ विव कामहु कंत सइ सइ णंदेविंदहु हंसगइ ।
घत्ता—सा णामें देवि मणोहरिय जिह तिह सव्वसउं ॥
अम्हइं विण्णि वि सग्गहु लहसिय हयखयकालदइव्वें ॥५॥

६

दुवई—जाया ताहं गब्भि हलहर हरि विण्णि वि सुकयकारिणो ।
चडिय जुवाणभावि सिरिवम्मविभीसणणामधारिणो ॥१॥
दोहिं मि भायहं जयलच्छिसहि अहिसिंचिवि अम्हहं देवि महि ।
गउ जणणु सुधम्मसूरिसरणु किउ घोरु वीरु जिणतवचरणु ।
छिण्णउं उप्पत्तिजरामरणु पत्तउ कवलु णिक्कलकरणु ।
छुडु परिभाविउ कंचणु वि तणु राएण विमुक्कहु घरु जि वणु ।
णिज्झाइयअज्झासाइयहो थंडिलु वि थणत्थलु राइयहो ।

---

५. P हालिणिहि । ६. M जणु ।

५. १. M °धवलगज्जियरवबहिरिय° । २. MB °तरुणी । ३. MB तरुणतर° । ४. MB छप्पवरणि । ५. MBP °पंडुर° । ६. B दियराय° । ७. MBP णिच्चंत° । ८. MBP पयासिय° । ९. P मंदरसिरिहे । १०. MBP कामहु तहु कंत । ११. MB सिरिमइ सव्वें । १२. P अण्ण वि सिरिमइ सग्गहु लहसिय अम्हइं हयणियमिव्वें ।

६. १. MBP °विहीसण° । २. MBP सुधम्मु । ३. MB पत्तउ णिक्कलु णिम्मलु करणु; P पत्तउ णिम्मलु णिक्कलकरणु; T णिक्कलु करणु । ४. M तिणु । ५. M घर ।

जीवित रहकर, पुण्यका क्षय होनेपर, हे सुन्दरी, वहाँ भी मृत्युको प्राप्त हुए। पुष्कराधं द्वीपमें पूर्वमेरुके शिखरके पूर्व विदेहमें कि जहाँ सब रसोंका अन्त है, धनधान्य और ऋद्धिसे अतिशय महान् मंगलावती देश है। जहाँ दही और दूध जलके समान सुलभ है; जहाँ बहुत-से गुण हैं, दोष एक भी नहीं है।

घत्ता—जहाँ तोता सघन खेतोंको रखानेवाली कृषक बालासे कथा कहता है। लाल-लाल चोंचवाला वक्रमुख कुछ कहता हुआ मनको सन्तोष देता है ॥४॥

५

जिसमें विशाल मतवाले बैलोंके गरजनेसे विपुल गोकुल बहरे हो गये हैं, और जहाँ असामान्य और विषम लड़ते हुए भैंसोंके कारण ग्वालों द्वारा कोलाहल किया जा रहा है, जहाँ सुअरोंकी दाढ़ोंसे स्थलकमल (गुलाब) आहत हैं, कमलोंके दलोंसे विमल जल आच्छादित हैं, जलयन्त्रोंसे कदलीके तरुण वृक्ष सींचे जाते हैं, जहाँपर तरुण तरुओंकी कुसुम-रेणुपर षट्चरण (भ्रमर) हैं, जहाँ द्विजप्रवर (ब्राह्मण और पक्षी) पठन-पाठनादि आचरणोंसे सहित हैं, जहाँ सरोवरमें द्विजप्रवरों (पक्षिश्रेष्ठ, ब्राह्मणश्रेष्ठ) का कलरव हो रहा है, जो सरोवरों, सीमाओं और उद्यानोंसे शुभ है और जो शुभतर चूनेसे सफेद हैं, जो गृहशिखरोंसे मेघसमूहका आलिंगन करता है, ऐसे उस राजगृहमें रत्नसंचयपुर नगर है, जिसमें राज्यन्यायसे प्रजा निश्चिन्त है, जिसमें सैकड़ों शत्रु राजाओंको चरणोंमें झुका लिया गया है, जिसकी जल-परिखाएँ कमलोंसे आच्छादित है, जो पापोंसे रहित और लक्ष्मीका घर है, ऐसे उस नगरका राजा श्रीधर था जो राजाकी वृत्तिकी इच्छा रखता था। सुधर्ममें रत, कामकी सती कान्ता रतिके समान, या मानो देवेन्द्रकी हंसगामिनी इन्द्राणी हो।

घत्ता—वह देवी नामसे जैसे मनोहरा थी, वैसे ही सत्य और पवित्रतामें भी मनोहर थी। हत क्षयकालरूपी दैत्यके कारण हम दोनों भी स्वर्गसे च्युत हुए ॥५॥

६

पुण्य करनेवाले हम दोनों उनके गर्भसे हलधर (बलभद्र) और हरि (वासुदेव) उत्पन्न हुए। श्रीवर्मा और विभीषण नामके हम दोनों यौवनको प्राप्त हुए। हम दोनों भाइयोंका अभिषेक कर एवं विजयलक्ष्मीकी सखी मही हमें देकर पिता सुधर्म मुनिकी शरणमें चले गये और उन्होंने घोर वीर तपश्चरण किया। उत्पत्ति जरा और मरणका उन्होंने नाश कर दिया, और सिद्धावस्थाको प्राप्त करानेवाला केवलज्ञान प्राप्त कर लिया। मेरी माता (मनोहरा) ने शीघ्र ही स्वर्णको तृणके समान समझ लिया। क्योंकि जो रागसे मुक्त है उसके लिए घर ही वन है। तथा नववधूके

गिरिकंदरमंदिर[6] किं करइ दुक्कियपरिणामु ण तं धरइ।
इय भणेंवि[7] मणोहर थिय भवणे जिणवरु झायंतिइ णियमणे।
चिण्णउं जणणिइ दुक्करु चरिउ पक्खालिउ जम्मंतरदुरिउ।
संणासणि झाइवि पंचगुरु सा हूई दिवि ललियंगसुरु।
घत्ता—सिरि भुंजिवि भोयतिसातिसिउ[8] मुयउ विहीसणराणउ[9] ॥
उप्पण्णउ णरयमहाविवरि कालें को ण विलीणउ ॥६॥

७

दुवई—लच्छिसरासईण सहवासु व विहिणा दलिवि घल्लिओ।
दुत्थियकप्परुक्खु व सुहाहिउ खयकरिदसणपेल्लिओ ॥१॥
संवु[1] पेच्छिवि हउं दुक्खाउलिउ सोयग्गि देहरुक्खु जलिउ।
हा चक्कपाणि हा पाणपिय हा बंधव किं अवहेरि किय।
सुसहोयर दामोयर चवहि हा एक्कवार[2] मइं संथवहि।
सुर णरवइ णिहिवइ पुहइवइ किं मरइ भडारउ चक्कवइ।
मइं मिच्छाभावें भावियउ मडउल्लउ खंधि चडावियउ।
तं पुसमि हसमि हउं तेण सहुं जंपवि[3] पच्चुत्तरु देहि महु।
मइंमूढु[4] ण काइं मि संभरमि पुरगामसीमरण्णहिं चरमि।
तहिं अवसरि आयउ जणणिचरु ललियंगु ललियभासिरु अमरु।
पहि थिउ चोयंतु[5] वसह सभय सो जंतें णिप्पीलइ सियय।
मइं भणिउं म णियबलु णिट्ठवहि किं पाणिइ लोणिउं[6] उट्ठवहि।
किं णेहु होइ दासीसुयहे किं तेल्लु विणिग्गइ वालुयहे।
तं णिसुणिवि देवें भाणियउ जइ एउं बप्प पइं जाणियउं।
घत्ता—तो एउं वियाणहि किं ण तुहुं कीस विसूरहि हलहर ॥
जे मुयँ ते पुणरवि दिट्ठ पइं कहिं जीवंता णरवर ॥७॥

८

दुवई—हाहाकारु पुत्त किं मेल्लहि[1] धीरिवि जाहि अप्पयं।
धीराधार वीरं[2] विउलं[3] भुयणं पि गणंति गोप्पयं ॥१॥
किं भायर[4] भायर पुक्करहि हउं माय तुहारी संभरहि।
तुह मंदिरि णिवसिवि कियउ[5] तउ संपत्ती तेण सुहासिभवु।
गउ एम भणिवि सुरु णियघरहो मइं मुहुं जोइउ[6] चक्केसरहो।
सच्चउ णिक्केयणु जाणियउं सलु रइउ[7] हुयासणु आणियउ।

६. P °कंदरु। ७. MB भरिवि; P भणिवि। ८. P °तिसातिसउ। ९. B विहीसणु।
७. १. MBT सउ। २. P एकवार। ३. MBP जंपमि। ४. मइमूढ। ५. P चोवंतु। ६. P लोणउं। ७. B मय।
८. १. MBP पुत्त मं मेल्लहि। २. MBP वीर। ३. P विउणं। ४. भायरु भायरु। ५. MK कयउ। ६. P जोयउ। ७. P सलु रयउ।

आलिंगनका स्वाद करनेवाले रागीके लिए थण्डिल (जन्तुरहित भूमि) भी स्तनस्थल हैं। गिरिकी गुफा या घर क्या करता है ? यदि वह पापपरिणाम नहीं करता। यह विचारकर मनोहरा जिनवरका ध्यान करती हुई अपने भवनमें रहने लगी। मानो उसने कठोर तप स्वीकार कर लिया और जन्मान्तरके पापोंको धो डाला। वह संन्यासिनी पंचगुरुका ध्यान कर स्वर्गमें ललितांग देव हुई।

घत्ता—लक्ष्मीका भोग करता हुआ और भोगकी तृष्णाकी व्याकुलतासे मरकर विभीषण राजा नरकके महाविलयमें उत्पन्न हुआ, समयके साथ किसका अन्त नहीं होता ॥६॥

७

लक्ष्मी और सरस्वतीके सहवासके समान विधाताने उसे चूर-चूर करके फेंक दिया। विनाशके हाथीके दाँतोंसे ठेला गया वह सुखाधिप उखड़े हुए कल्पवृक्षके समान था। उसके शवको देखकर मैं दुखसे व्याकुल हो गया। शोककी ज्वालासे देहरूपी वृक्ष जल गया। हे चक्रपाणि, हे प्राणप्रिय, हे भाई, तुमने अवहेलना क्यों की ? मेरे अच्छे भाई दामोदर बोलो, हा ! एक बार मुझे सान्त्वना दो, सुर-राजा-कुबेर-पृथ्वीपति और चक्रवर्ती क्या हे आदरणीय ! मरते हैं ? मैं मिथ्या-भावसे ग्रस्त था। मैंने शवको कन्धेपर रख लिया। मैं उसे छूता हूँ। उसके साथ हँसता हूँ। मैं कहता हूँ कि मुझे प्रत्युत्तर दो। मैं मतिमूढ़ कुछ भी याद नहीं कर पाता और नगर-ग्राम-सीमा और अरण्योंमें विचरण करता हूँ। उस अवसर पर माँका दूत, मधुर बोलनेवाला ललितांगदेव आया। वह भयपूर्वक बैलको प्रेरित करता हुआ रास्तेमें स्थित हो गया। वह यन्त्रसे रेतको पेरता है। मैंने उससे कहा—अपनी शक्ति नष्ट मत करो क्या पानीसे नवनीत (लोणी) निक-लता है ? क्या दासीपुत्रीमें प्रेम हो सकता है ? क्या बालूसे तेल निकल सकता है। यह सुनकर वह देव बोला—हे सुभट, यदि तुमने यह बात जान ली—

घत्ता—तो तुम यह बात क्यों नहीं जान पाते कि हे हलधर, तुम क्यों शोक मना रहे हो ? जो लोग मर चुके हैं, उन नरवरोंको क्या तुमने फिरसे जीवित होते हुए देखा है ? ॥७॥

८

हे पुत्र ! तुम हाहाकार क्यों कर रहे हो, अपनेको धीरज देकर चलो। धीरके आधारको लेकर चलनेवाले वीर विशाल विश्वको गोपदके समान समझते हैं। भाई-भाई, क्या पुकारते हो ? याद करो मैं तुम्हारी माँ हूँ। तुम्हारे घरमें रहकर तप किया, उसीसे देवभवमें जन्मी। यह कहकर वह देव अपने घर चला गया, मैंने चक्रवर्तीका मुख देखा। सचमुच मैंने उसे निश्चेतन

लहु वासुपुज्ज स[8]क्कारियउ तणुरुहु सरज्जि वइसारियउ ।
वयसंजमभारधुरंधरहो दिक्खंकिउ पासि जुयंधरहो ।
पंचिंदियगयउलु पीडियेउ[9] ते[10]उं कियउ सीहणिक्कीडियउ ।
[11]पुणु सव्वभद्द ववाइयउ [12]मिच्छत्तजडत्तु णिवाइयउ ।
[13]अणसणविहाणि जं साहियउ तं चउविहु मइं आराहियउ ।
हउं अरुहु भरेण मरेवि मुउ अच्चुइ आहंडलु णवर हुउ ।
घत्ता—ता रयणविमाणारोहियउ मइं अच्चुयक[14]प्पहो णियउ ॥
ललियंगदेउ सो णिययगुरु गरु[15]यइ भत्तिइ पुज्जियउ ॥८॥

९

दुवई—चुउ ल[1]लियंगदेउ जंबूतरुलं[2]छणि दीवि सुहवई ।
सुरगिरि सुरदिसाइ सु[3]विदेहइ जणमहि मंगलावई ॥१॥
खगसंसाहियविज्जावलिहे रुप्पयगिरिंदउत्त[4]रथलिहे ।
गंधव्वणयरि तहिं विमलजसु वासे[5]उ णामें वासवसरिसु ।
पायडपयाउ णरवइ वसइ जसु दिट्ठिहि कलिकयंतु तसइ ।
तहि देविहि उयरि पहावइहि उप्पण्णउ कलमरालगइहि ।
णामेण महीधरु धीर[6]झुणि ताएण अरिंजउ दिव्वमुणि ।
सुउ रज्जि थवेप्पिणु सेवियउ णिग्गंथभाउ संभावियउ ।
मुत्तावलितवतावें तविउ दढकम्मालाणु परिक्खविउ[7] ।
संतें दंतें रुद्धासवेण अप्पउ णिउ मोक्खहु वासवेण ।
णं ससिसिणिसाहि पहावइहि पणवंतिहिं ताहि पहावइहि ।
तउ दिण्णउं [8]कयजगसंतियइ सुद्धइ पोमावइकंतियइ ।
सीसिणियइ पुण्णु समज्जियउ सविसयकसायबलु णिज्जियउ ।
रयणावलि णामें जे[9]णियदिहि कयदेहसोसउववासविहि ।
घत्ता—स वि मय तहिं णिरु णिरसणु करिवि आउक्खइ किं जिज्जे[10]ई ॥
सोलहमइ सग्गि पडिंदु हुयें[11] भणु किह धम्मु ण किज्जइ ॥९॥

१०

दुवई—अह णलिणंकि दीवि पच्छि[1]मदिसमंदरपुव्वि रिद्धिया ।
पुव्वविदेहि छोणि वच्छावइ पुरि पहयरि पसिद्धिया ॥१॥

---

८. MBP संकारियउ । ९. P पीलियउ । १०. B omits this foot. ११. B omits this line.
१२. K मिच्छत्तु जडत्तु । १३. B omits this foot. १४. P °कप्पहि । १५. P गुरुयइ ।

९. १. MBP ललियंगु देउ । २. B °लंछणदीवि । ३. MBP सुविदेहइ । ४. MBP °पुव्वत्थलिहे ।
५. P वासव । ६. P दिव्वझुणि । ७. MBP परिक्खयउं । ८. MBP जगकयसंतियइ । ९. MBP
जायदिहि । १० MBP किज्जइ । ११. MBP हुउ ।

१०. १. MBP पच्छिमदिसि मंदरि पुव्व° ।

जाना। चिता बनाकर आग ले आया। शीघ्र ही वासुदेवका संस्कार किया और पुत्रको अपने राज्यमें स्थापित कर दिया। तथा व्रत और संयमका भार उठानेमें धुरन्धर युगन्धर मुनिके पास जाकर दीक्षा ले ली। पाँच इन्द्रियरूपी गजोंको पीड़ित किया और सिंहविक्रीडित तप किया। फिर सर्वतोभद्र तप किया और मिथ्यात्वकी जड़ता समाप्त कर दी। अनशनके विधानमें जो कुछ कहा गया है, चार प्रकारकी आराधनाको मैंने सम्पन्न किया। मैं अर्हत् को बार-बार याद कर मर गया और केवल अच्युत स्वर्गमें उत्पन्न हुआ।

घत्ता—तब रत्नविमानमें आरोहित (बैठाकर) मुझे अच्युत स्वर्गमें ले जाया गया। अपने उस गुरु ललितांग देवकी भारी भक्तिसे पूजा की ॥८॥

९

ललितांग देव च्युत हुआ। जम्बूद्वीपके मेरुपर्वतकी पूर्वदिशाके विदेह क्षेत्रमें सुखवती मनुष्य-भूमि मंगलावती है। उसके विजयार्ध पर्वतकी उत्तरश्रेणीमें, जहाँ विद्याधर विद्यावली सिद्ध करते हैं, गन्धर्व नगरी है। उसमें इन्द्रके समान विमल यशवाला वासव नामका राजा है। प्रकट प्रताप-वाला वहाँ निवास करता है जिसकी दृष्टिसे कलियम डरता है। उसकी कलहंसगामिनी प्रभावती नामकी देवीके उदरसे, ललितांग महीधर नामसे गम्भीरध्वनि पुत्र हुआ। पिताने पुत्रको राज्यमें स्थापित कर दिव्य मुनि अरिंजयकी सेवा की और दिगम्बरत्वकी दीक्षा ग्रहण कर ली। मुक्तावली नामक तपके तापसे उसने अपनेको तपाया और दृढ़ कर्ममलको नष्ट किया। शान्त दांत—आस्रवको रोकनेवाले वासव स्वयं मोक्ष चले गये। प्रकाशपूर्ण चन्द्रमासे युक्त रात्रिमें प्रणाम करती हुई उस रानी प्रभावतीके लिए विश्वमें शान्ति स्थापित करनेवाली आर्यिका पद्मावती कान्ताने तप प्रदान किया। शिष्याने पुण्यका समार्जन किया और अपनी विषयकषायकी शक्तिको जीत लिया। की गयी है देह शोषण की उपवास विधि जिसमें, ऐसे भाग्यजनक रत्नावली उपवास उसने किया।

घत्ता—वह भी वहाँ अनशन कर मृत्युको प्राप्त हुई, आयुका क्षय होनेपर क्या जीवित रहा जा सकता है? वह सोलहवें स्वर्गमें प्रतीन्द्र हुई। बताओ फिर धर्म क्यों नहीं किया जाता ॥९॥

१०

पुष्कर द्वीपकी पश्चिम दिशामें मन्दराचलके पूर्व, पूर्वविदेहकी भूमिपर वत्सकावती देश है।

तिजगवइधरियछत्तत्तयहो जइणिद्देसियरयणत्तयहो ।
परिगणियमुणियकालत्तयहो हयजाइजरामरणत्तयहो ।
थिरं[3]चरियथरियगुत्तित्तयहो सुंइसंबोहियभुवणत्तयहो ।
विद्धंसियएणियसल्लत्तयहो परियाणियजीवगइत्तयहो ।
वियलियरसाइगव्वत्तयहो गई[6]कम्माइयदेहत्तयहो ।
वज्जियहेट्ठिमझाणत्तयहो कयकिरियाछेयपयत्तयहो ।
केवलचेयणगुणइत्तयहो सीदीभूयहु ण णियत्तयहो ।
णिव्वाणपुज्जविणयंधरहो हउं करिवि कुहरकक्करवरहो ।
फणिमणिभाभासियअहिहरहो गउ पढमदीवसुरमहिहरहो ।
तहिं णंदणि सुपसिद्धम्मि वणे इंदासासंठियजिणभवणे ।
विज्जउ पुज्जंतउ दिट्ठु सइं महिहरु बोल्लाविउ मुद्धि मइं ।
घत्ता—किं ण मुणहि तुहुं खयराहिवइ हउं णंदणु तुह होंतउ ॥
सिरिवम्मु सीरिभायरमरणे जइयहु कलुणु रुयंतउ ॥१०॥

११

दुवई—तइयहुं तइं सुरेण संबोहिउ एवहिं किं ण याणसे ।
सिरिहररायघरिणिमणहरिभं[1]वु किं णं[2]उ सरसि माणसे ॥१॥
अज्ज वि किं भुंजेहि विसयविसु विसु मारइ मित्त एक्कु णिमिसु ।
भवि भवि संघारइ विसयविसु ता तेण जि लद्धउ तं जि मिसु ।
अहिणंदिवि सुरे[4]वरराउ खयरु संप्रो[5]इउ सहसा णियणयरु ।
भडभक्खिणि णावइ डाइणिय महिकंपहु पुत्तहु मेइणिय ।
ढोइवि णंदणु[6] मुणिगुरुविहिउ वं[7]यमग्गि उग्गि ववसिउ सहिउ ।
सहुं अइबहुयहिं विज्जाहरहिं त[8]रुकोडरगिरिवरंतरहिं ।
तवु[9] चिण्णु तेण कणयावलिय चिरसंचियदुरियावलि गलिय ।
कालेण [10]गलंतें महिहरहो पुणु अंतयालु [11]संपण्णु तहो ।
सो [12]प्राणिप्राणपरिरक्खयरु [13]प्राणइ जायउ तियसिंदवरु ।
घत्ता—जीवियउ वीससायरसमइ पुणु कालें [14]संचालिउ ॥
धादइसंडइ पुव्विल्लसुए जो सुरगिरितरुमालिउ[15] ॥११॥

२. MBP सयलत्तयहो । ३. MBP थियचरिय° । ४. B omits this foot. ५. B omits this line. ६. MBP गयकम्मा° ।

११. १. MBP °भउ । २. MBP ण सरीसि । ३. MBP भुंजसि । ४. MBPK सुरवइ गउ । ५. MBP संपाइउ । ६. MBP णंदण । ७. MP तवमग्गि उग्गि; B वयमग्गे ववसिउ समसहिउ । ८. MBP तरुकोट्टरि । ९. MBP तउ । १०. MBP वहंतें । ११. MBP संपुण्णु । १२. M पाणिपाणु; B पाणिपाण° । १३. MBP पाणइ । १४. MBP संचालियउ । १५. MBP °मालियउ ।

उसमें प्रभाकरी नामकी प्रसिद्ध नगरी है। जिन्होंने त्रिजगपतिके तीन छत्रोंको धारण किया है, जिन्होंने जगको तीन रत्नोंका उपदेश दिया है, जिन्होंने तीनों कालोंको परिगणित किया और समझा है, जिन्होंने जन्म-जरा और मृत्युका नाश किया है। जिन्होंने आगमसे तीनों भुवनोंको सम्बोधित किया है, स्थिर चर्यासे जिन्होंने तीन गुप्तियोंको धारण किया है, जिन्होंने जीवकी तीनों गतियोंको जान लिया है[1], जिन्होंने रसादिमें तीनों गर्वोंको नष्ट कर दिया है, जिनके तीनों शरीर (कार्मिक, औदारिक और तैजस) जा चुके हैं, जिसमें नीचेके तीनों ध्यान छोड़ दिये हैं, जिन्होंने क्रियाछेदोपस्थापनाका प्रयत्न किया है, जो केवलज्ञान गुणसे युक्त हैं, जो कभी शिथिल नहीं हुए, जो अपने यत्नमें लीन हैं, ऐसे विनयधर स्वामी और पर्वत शिखरकी पूजा कर, मैं जिसमें नागोंके फणमणियोंकी कान्तिसे प्राचीन देवघर आलोकित हैं, प्रथम द्वीपके ऐसे सुमेरु पर्वतपर गया था। वहाँ सुप्रसिद्ध नन्दनवनकी पूर्वदिशामें स्थित जिनभवनमें विद्याकी पूजा करते हुए मैंने स्वयं राजाको देखा और उससे कहा—

घत्ता—हे विद्याधर राजा, क्या तुम मुझे नहीं जानते कि मैं तुम्हारा पुत्र था श्रीवर्मा नामका। कि जब बलभद्र भाईके मरनेपर मैं रो रहा था ॥१०॥

११

तब तुम देवने मुझे सम्बोधित किया था। उस समय क्या तुम यह नहीं जानते। श्रीधर राजाकी गृहिणी मनोहराके जन्मको क्या तुम मनमें याद नहीं करते। आज भी विषयरूपी विषका भोग क्यों करते हो। हे मित्र, यह विष एक क्षणमें मार देगा। विषय-विष भव-भवमें संहार करता है। तब उसीने इस बातको ग्रहण कर लिया। सुरवरराजका अभिनन्दन कर विद्याधर सहसा अपने नगर आ गया। डाइनके समान योद्धाओंका भक्षण करनेवाली अपनी भूमि, अपने पुत्र महिपंकको देकर मुनिरूपी गुरुके द्वारा बताये गये उग्र व्रतमार्गमें अपने हितके लिए व्यवसाय करने लगा। तरु कोटर-गिरि-विवरोंमें रहनेवाली बहुत-सी विद्याधरियोंके साथ उसने कनकावली व्रत ग्रहण कर लिया। और उसकी चिरसंचित पापावलि गल गयी। समय बीतनेपर उस महीधरका अन्तकाल आ गया। प्राणियोंके प्राणोंकी रक्षा करनेवाला वह राजा प्राणत स्वर्गमें देवेन्द्र हुआ।

घत्ता—वह बीस सागर पर्यन्त वहाँ जीवित रहा और कालके साथ वह वहाँसे चला। धातकी खण्डमें तरुओंसे आच्छन्न जो पूर्व मेरु है—॥११॥

---

१. पाणिमुक्ता, लांगली और गोमूत्रिका।

१२

दुवई—तस्सावरविदेहि गंधिलविसयम्मि विमुक्कविप्पिया।
[1]उज्झाणयरि तीइ जयवम्मु णरेसरु सुप्पहा पिया ॥१॥

तहि चविवि पुरंदरु हुउ तणउ — अजियंजउ णामें लद्धजउ।
दिक्खहि कारणि ओलग्गियउ — जणणें अहिणंदणु मग्गियउ।
तें दिण्णइं पंच म[2]हव्वयइं — मुक्काइं तेण सत्त वि भयइं।
मयणिज्जियसीहें णाइं मया — इहपरलोयास वि खयहु गया।
आयंबिलु त[3]वु दुच्चरु चरिवि — कम[4]ट्ठयगंठिहि णीह[5]रिवि।
होऊण सिवो गउ सि[6]ववयहो — सिवु[7] सुहडु णामु णिरु णीरयहो।
सूलिहि णरसिरमालाधरहो — णउ अण्णहु तं कवालकरहो।
छुहकामकोहविद्धंसणहे — ग[8]णिणिहि पासम्मि सुदंसणहे।
जं वउ परिपालिउ सुप्पहइ — तं[9] किं वण्णिज्जइ कइकहइ।
सुइचक्खुसोक्खणिण्णासियइ — संरुद्धफासरसणासियइ।
[10]रंणावलिकयरण्णासियइ — पच्छाविरइयसंणासियइ।

घत्ता—मेल्लेप्पिणु माणवकुणिमतणु देवणिकायहुं वल्लहु ॥
अच्चुइ अणुदिसदेवत्तु खणे पत्तउ ताइ सुदुल्लहुं ॥१२॥

१३

दुवई—चो[1]द्दहरयणपहरणुत्तासियणासियरिउभडत्तणं।
कयमजियंजएण वरिसहरणयावहि महिपहुत्तणं ॥१॥

धम्म[2]घोसउड्डिंडिमपहयउ — एक्कहिं दिणि समवसरणु गयउ।
थिउ अग्गइ मउलियउहयकरु — वंदिउ अहिणंदणु तित्थयरु।
मेरु व सम[3]णु णिच्चलु थविउ — पंचासवदारणिरोहु किउ।
सुविसुद्धचित्तु रिसि विव गणिउ — पिहियासउ सो सुरेहिं भणिउ।
मायासुयवइयरु साहियउ — तहिं अवसरि मइं संबोहियउ।
मुणिधम्म[4]सवणसामियमइहिं — वीसहिं सहसहिं सहुं णरवइहिं।
गुरुमंदरथविरु समासियउ — हुउ जइवरु मोहु विणासियउ।
आलिंगिउ चारणरिद्धियए — सं[5]बोहिणाणसंसिद्धियए।
वणि पुत्तिइ पावयखामियए — होइवि णामें णिण्णामियए।
अहिहरिणभिल्लभिल्लोणिलए — दिट्ठउ गिरिवरि अंबरतिलए।
पइं तासु पासि सुउ धम्मु चिरु — किं बहुएं मज्झु वि सो जि गुरु।
दिवि जीविउ हउं माणियरमइं — दह दह जि दोण्णि सायरसमइं।

---

१२. १. B omits this line. २. MBP °महावयइं। ३. MBP तव दुच्चर चरिवि। ४. B कम्मट्ठहं। ५ MBP णीसरिवि। ६. MBP सिवहरहो। ७. MBP सिवसुहडु णाम। ८. MBP गणियहि। ९. MBP तं वण्णिज्जइ कह। १० MP रयणावलि°।

१३. १. P चउदह° २. MBP धम्मुग्घोसउ डिंडिमु हयउ। ३. MBP सममणु। ४. MBP °धम्मु समण°। ५. MBP संबोहियणाणसमिद्धियए।

१२

उसके पश्चिम विदेहके गन्धिल्ल देशमें, अप्रिय चीजोंसे मुक्त अयोध्या नगरी है। उसका राजा जयवर्मा है और उसकी प्रिया सुप्रभा है। वहाँसे आकर वह इन्द्र उन दोनोंका पुत्र हुआ, अजितंजय नामसे विजय प्राप्त करनेवाला। राजा दीक्षाके पीछे पड़ गया। पिताने (मुनि) अभिनन्दनसे याचना की। उन्होंने उसे पाँच महाव्रत दिये। उसने सातों भयोंको छोड़ दिया। मृगोंको विजित करनेवाले सिंहसे जैसे सिंह नष्ट हो जाते हैं, वैसे ही उसकी भी इहलोक और परलोककी आशाएँ नष्ट हो गयीं। कठोर आचाम्ल तपका आचरण कर कर्मकी आठों गाँठोंको नष्ट कर वह शिवी होकर, शिवपदके लिए चला गया। निरामय सुखका नाम ही शिव है। किसी दूसरे त्रिशूली नरमुण्डोंकी माला धारण करनेवाले हाथमें कपाल लेनेवालेका नाम शिव नहीं है। क्षुधा, काम और क्रोधका नाश करनेवाली सुदर्शनाके पास सुप्रभाने व्रतका पालन किया, उसका वर्णन कविकथाके द्वारा कैसे किया जा सकता है ? कानों और आँखोंके सुखोंका नाश करनेवाले स्पर्श और रसना इन्द्रियोंके स्वादपर अंकुश लगानेवाले रत्नावली व्रत और रत्नत्रयसे युक्त और बादमें संन्यास धारण करनेवाली—

घत्ता—उसने मनुष्यके कुनिमित्तोंको छोड़ते हुए सुदुर्लभ देवनिकायके अच्युत स्वर्गमें अनुदिश विमानमें देवत्व प्राप्त कर लिया ॥१२॥

१३

चौदह रत्नों और प्रहरणोंसे शत्रुओंके सुभटत्वको त्रस्त और ध्वस्त करनेवाली धरतीकी प्रभुता अजितंजयने क्षेत्र विभाग और पर्वतादिकी अवधि बनाकर की। धर्मकी घोषणा करनेवाली डुगडुगी पिटवाकर वह एक दिन समवसरणमें गया। अपने दोनों हाथ जोड़कर उसने तीर्थंकर अभिनन्दनकी वन्दना की और उनके आगे बैठ गया। वह मेरुके समान निश्चल मन स्थित था। उसने पाँचों आस्रवोंके द्वारोंको रोक लिया। विशुद्ध चित्त वह मुनिके समान समझा गया। वह देवोंके द्वारा पिहितास्रव कहा गया। मैंने उस अवसरपर माता और पुत्रका वृत्तान्त कहा और उसे सम्बोधित किया। मुनिधर्मको सुननेके कारण शान्त मतिवाले बीस हजार राजाओंके साथ, वह गुरुमन्दर मुनिकी शरणमें गया और मुनि होकर उसने मोहका नाश कर दिया। चारण ऋद्धियों और सर्वावधिज्ञानकी संसिद्धिसे आलिंगित हुआ। क्षमाको प्राप्त करनेवाली वणिक् पुत्री तूने निर्नामिका नामसे होकर साँप, हरिण, भील और भीलनियोंके घरस्वरूप अम्बरतिलक पर्वतमें उन्हें देखा। उनके पास बहुत समय तक धर्म सुना। बहुत कहनेसे क्या, वही मेरे भी गुरु हैं। स्वर्गमें हम दोनों रमणको मानते हुए, दस-दस सागर (बीस सागर) जिये।

घत्ता—जणणी ललियंगु आइ करिवि सुंदरि कलिमलवज्जिय ॥
वावीस देव ललियंग मइं गुरु मण्णेप्पिणु पुज्जिय ॥१३॥

१४

दुवई—चंचलतरुणहरिणलोयणजुइ छणससिबिंबजंपणे ।
अवरु वि कह वि तुज्झु पिय विरहमहाणलसुसियचंदणे ॥१॥
जम्मंतरि वित्तउं संभरमि अहिणाणु णिसुणि तुह वज्जरमि ।
हउं पुंच्छिउ वियलियदुम्मइणा बंभेंदें लंतवसुरवइणा ।
लीलाउद्धरियवसुंधरहो मइं अक्खिउं चरिउं जुयंधरहो ।
दीवम्मि जंबुरुक्खंकियए मेरुहि विदेहि पुव्वासियए ।
सीयासरिदक्खिणयलि पवरु वच्छावइदेसु वच्छपउरु ।
णामेण सुसीमा वर णयरि तहिं पहु अजियंजउ पुरिसहरि ।
अमयमइ मंति सइरत्तमण तहु सच्चहाम णामेण धण ।
तहि सुउ पहसिउ पहसियवयणु तहु सहयरु वियसिउ सियणयणु ।
सह ते बिण्णि वि कव्वडेण विणु णिसुणंति पढंति गमंति दिणु ।
ते बे वि विउस विच्छिण्णमय छलजाइहेउकुविवायरय ।
एक्कहिं दिणि राएं सहुं सुहय मइसायररिसिसामीवु गय ।
सो पहुणा पुंच्छिउ जीवगइ आहासइ सच्चउ तासु जइ ।
संतेण जेण जगु परिणमइ तं कारणु कालु महाणिवइ ।
घत्ता—जहिं अच्छइ तं धुवुं गयणयलु गइहि धम्मु सहकारिउ ॥
फुडु होइ अहम्मु थिरत्तणहो परमेसहिं उववईरिउ ॥१४॥

१५

दुवई—पोग्गलदव्वु होइ णिच्चेयणु जं जं णिव सुचेयणं ।
तहिं तहिं कहमि तुज्झु परमत्थें जीउ जि णाणकारणं ॥१॥
विणु जीवें पोग्गलु किं तसइ विणु जीवें पोग्गलु किं हसइ ।
विणु जीवें पोग्गलु किं रमइ विणु जीवें पोग्गलु किं भमइ ।
विणु जीवें पोग्गलु किं जियइ विणु जीवें पोग्गलु किं णियइ ।
विणु जीवें किं पोग्गलु सुणइ किं विद्धउ वेयणाइ कणइ ।
ता वुत्तउ पहसियवियसियहिं अणुहुत्तपुहइपत्थिवसियहिं ।
जइ जीउ जि पेच्छइ कहहि कह तो विणु णयणहिं ण णियइ कह ।

६. MP कलमल° ।

१४. १. BP विरहाणल° । २. MBP चिण्णउं । ३. P पछिउ । ४. MP पच्छपवरु; B मुवच्छपवरु । ५. MBP °सामीउ । ६. P पुंछिउ । ७. MBPK सच्चउ । ८. MBP परिणवइ । ९. MBP धुउ । १०. MB एउ ईरिउ; P इउ ईरियउ ।

१५. १. MBP सचेयणं । २. MBP किह । ३ B किम । ४. P किह । ५ MBP पोग्गलु । ६. MB वद्धउ । ७. B °पत्थिवसयहिं ।

घत्ता—हे सुन्दरी जननी, (पहला ललितांग देव) कलिमलसे रहित करनेके लिए आयी और बाईसवें देव ललितांगको मैंने गुरु मानकर पूजा है ॥१३॥

१४

चंचल और तरुण हरिणके नेत्रोंके समान द्युतिवाली, चन्द्रमाके बिम्बके समान कही जानेवाली और विरहकी महाग्निसे चन्दनको सुखा देनेवाली हे प्रिये, तेरी और भी कहानी है। मुझे जन्मान्तरका वृत्तान्त याद आ रहा है, उसका अभिज्ञान सुनो, मैं तुम्हें बताता हूँ। विगलित है दुर्मति जिसकी, ऐसे ब्रह्मेन्द्र, लान्तव, सुरपतिके द्वारा पूछे जानेपर मैंने लीलासे वसुन्धराका उद्धार करनेवाले युगन्धरका चरित कहा। जम्बूद्वीपके सुमेरुपर्वतके पूर्व विदेहमें सीता नदीके दक्षिण तटपर वत्सकावती देश है, जो वृक्षोंसे प्रचुर है। उसमें सुसीमा नामकी श्रेष्ठ नगरी है। उसका राजा पुरुष श्रेष्ठ अजितंजय था। उसका मन्त्री अमृतमति स्वच्छन्द मनवाला था। उसकी सत्यभामा नामकी पत्नी थी। उसका पुत्र प्रहसित, प्रहसित मुखवाला था। उसका मित्र विकसित था, जिसकी आँखें श्वेत थीं। वे दोनों बिना किसी कपटके साथ-साथ सुनते-पढ़ते हुए दिन बिता रहे थे। वे दोनों ही विद्वान् थे और घमण्डसे दूर थे। छल जाति हेतु और कुविवादमें प्रवीण थे। एक दिन दोनों मित्र राजाके साथ मतिसागर ऋषिके पास गये। राजाने उनसे जीवगति पूछी। मुनि उसे सब कुछ बताते हैं। जिसके रहनेसे जग परिणमन करता है, हे महानृपति, उसका कारण काल है।

घत्ता—जहाँ वह काल विद्यमान है वह निश्चयसे आकाशतल है। गतिका सहकारी धर्मद्रव्य है और स्थिरताका स्पष्ट कारण अधर्मद्रव्य है। ऐसा परमेश्वरने कहा है ॥१४॥

१५

पुद्गल द्रव्य अचेतन होता है, हे नृप ! जो-जो सचेतन है, मैं तुमसे कहता हूँ कि वहाँ-वहाँ वास्तवमें जीव ही ज्ञानका कारण है। बिना जीवके क्या पुद्गल त्रस्त होता है ? बिना जीवके क्या पुद्गल हँसता है ? बिना जीवके क्या पुद्गल रमण करता है ? बिना जीवके क्या पुद्गल भ्रमण करता है ? बिना जीवके क्या पुद्गल जीवित रहता है ? बिना जीवके क्या पुद्गल देख सकता है ? बिना जीवके क्या पुद्गल सुनता है ? क्या वेदनासे विद्ध होकर चिल्लाता है ? इसपर पृथ्वी और राजाकी श्रीका अनुभव करनेवाले प्रहसित और विकसितने कहा—यदि जीव हो

जो एंतु ण दीसइ जंतु ण वि तहु कँवणु भाउ किर कवण छवि ।
जइ चिंतियमेत्तें तहु कुगइ तो चिंतइ पूरइ किं ण रइ ।
दालिद्दिउ भुक्खइ किं मरइ भोयणु चिंतविउ किं ण करइ ।
को जाणइ भासिउ केण किह आगमु णवकंबलु पुरिसु जिह ।
सिद्धंतेंहुं किं जणु गुरु णवइ तवतावें किं अप्पउ खवइ ।
किं बीहिउ वट्टा णउ हवेइ तं णिसुणिवि मुणिवरिंदु चवइ ।

घत्ता—चित्तयरहु लेहणिवज्जियहो [12]चित्तालिहणु ण संतउ ॥
इह दव्विंदियभाविंदियहं जाणइ जीव णिरुत्तउ ॥१४॥

१६

दुवई—जो जो पेच्छसे ण णेत्तेहिं ण सो सो जइ पयट्टओ ।
ता सपियामहस्स सपियामहु पुत्तेंय पइं ण दिट्ठओ ॥१॥

जइ सो ज्जि णत्थि तो तुहुं ण पुणु चिम्मेत्तहु कहिं वण्णाइगुणु ।
ससहाउ भाउ परिभाउ ण वि जं णहु तं णहु जि ण चंदु रवि ।
जइ चित्तें वित्तिउ णउ हवइ ता झाइय देवय किह चवइ ।
पविरइयसुहासुहरयदलइं जइ जीउ ण गेण्हइ पोग्गलइं ।
तो कंचुयसुत्तजालु तियहिं किह तुट्टइ पिउ पेच्छंतियहिं ।
जइ सद्दु जि ण घडइ पइं भणिउ तो गहणु केण जाणिउं गणिउं ।
घडघोसु ण वसहि बुद्धि जणइ इय बालु वि गोवालु वि मुणइ ।
धम्मु जि कयमोक्खउ गयसरहो पंडिउ पुणु लावइ गयसरहो ।
कइभावु कव्वु किह पर[10] घडइ जिह रुक्खहु उप्परि सिह[11] चडइ ।

घत्ता—जइ जं जेहउ तं तेहउ जि एहउं पइं [12]संभावियउ ॥
तो किरियाजोएं किह जणेण लोहिं सुवण्णउं[13] दावियउ ॥१६॥

१७

दुवई—हो हो जाइहेउछलवयणविरयणु मुएवि चप्फलं ।
कुरु कुरु परमधम्मु जिणभासिउ लहसि समिच्छियं फलं ॥१॥

तं णिसुणवि हूई सम्मइय वाईसर णिव्वेएं लइय ।

---

८. MBPK णयणेण । ९. B चिंतिए । १०. MBT सिद्धत्थहु, and gloss in T सिद्धत्वस्वरूप-प्राप्त्यर्थम् ; P सिद्धंतउ and gloss आगमनिमित्तम् । ११. MBP वहइ । १२. M चित्तलिहणु ।

१६. १. M पयत्थओ; P पइत्थओ । २. M पुत्त । ३. BPT परिभावि । ४. MBP चिंतिउ । ५. MBP किं । ६. P °रइदलइं । ७. MBP किं । ८. MBP पिउ । ९. MBPT जं पंडिउ पलवइ गयसयहो । १०. MB किं पर; P किं पडु । ११. MBPKT सिहि; T सिहि मयूरः कवेरभिप्रायः, अन्यस्य पुनरग्निरिति । १२. M पइं संभासियउ; B पइं जइ भावियउ । १३. M सुवण्णउं दाविउ; B सुवण्ण दावियउ ।

१७. १. MB समीहियं; P समाहियं । २. MBP णिसुणिवि ।

देखता है और कथा कहता है, तो बिना आँखोंके वह क्यों नहीं देखता? जो न आते हुए दिखाई देता है और न जाते हुए? उसका कैसा भाव और कैसी छवि? यदि चिन्तामात्रसे उसे कुगति होती है, तो वह चिन्ता क्यों करता है, अपनी कामना पूरी क्यों नहीं करता। 'दरिद्र' भूखसे क्यों मरता है, वह चिन्तित किया गया भोजन क्यों नही करता? कौन जानता है किसने क्या कहा है? आगम नव कम्बल पुरुष (नया कम्बल या नौ कम्बल) के समान है। सिद्धान्तके लिए लोग गुरुको प्रणाम क्यों करते हैं? तपके तापमें स्वयंको क्यों नष्ट करते हैं? क्या दूसरा मार्ग नही है? यह सुनकर, मुनिवर कहते हैं—

घत्ता—जिस प्रकार लेखनीसे रहित चित्रकारका चित्र लेखन नहीं है, उसी प्रकार जीव द्रव्येन्द्रियों और भावेन्द्रियोंको निश्चित रूपसे जानता है? ॥१५॥

१६

नेत्रोंके द्वारा जो-जो नही देखते, यदि वह-वह पदार्थ नही है, तो हे पुत्र! अपने पितामहके पितामहको तुमने नहीं देखा। यदि वह भी नहीं है, तो फिर तुम भी नहीं हो, चिन्मात्रमें वर्णादि गुण कैसे हो सकते हैं, उसमें स्वभाव, परभाव और भाव भी नहीं है, जो नभ है, वह नभ ही है, चन्द्रमा रवि नही है, यदि चित्तके द्वारा वृत्ति उत्पन्न नही होती तब ध्यान किया गया देवता क्या कहता है? यदि शुभ-अशुभ कर्मदलकी रचना करनेवाले पुद्गलोंको जीव ग्रहण नहीं करता, तो प्रियको देखती हुई स्त्रियोंका कंचुकीका सूत्रजाल क्यों टूट जाता है? जो तुमने यह कहा कि आगम ही घटित नही होता, तो ग्रहणको किसने जाना और गिना? घट शब्द बैलमें बुद्धि पैदा नहीं करता (अर्थात् घट शब्दसे बैलका अर्थ ग्रहण नहीं होता) यह बात तो बाल-गोपाल भी जानता है। गत सर (कामदेवसे रहित) का धर्म ही चारित्र है, जो मोक्ष करता है। लेकिन पण्डित अर्थात् वितण्डावादी, गतसर (गत बाण) में धनुषको योजना करता है, कविभाव काव्य की रचना किस प्रकार करता है, जिस प्रकार पेड़के ऊपर मयूर चढ़ जाता है।

घत्ता—और जो तुम लोगोने यह सम्भावना की है कि जो जैसा है, वह वैसा ही होता? तो फिर लोगोंके द्वारा क्रिया योगके द्वारा लोहेसे सोना कैसे बना दिया जाता है? ॥१६॥

१७

हो-हो, जाति हेतु छलपूर्ण वचनकी चपल रचना छोड़कर, जिनके द्वारा कथित धर्मका आचरण करो मनचाहा फल प्राप्त करोगे। यह सुनकर उन्हें सम्मति हुई। दोनों वादीश्वर

गुरुभत्ति करिवि पणविय गुरुहे रविउयइ जडत्तणु अंबुरुहे ।
जिह णउ थक्कइ तिह भव्वयणे आयण्णियमण्णियमुणिवयणे ।
कल्लाणमित्त ते बे वि जण संसारवियारविरत्तमण ।
तासु जि तेलोक्कदिवायरहो पावइय पासि मइसायरहो ।
आयंबिलु वड्ढमाणु कियउ तउ भीमु सुदंसणसंणियउ ।
दोहिं मि दुक्कम्मु णिरोहियउ खय बेण्णि वि णियमवि णियहियउ ।
सिट्ठुत्तमट्ठदिट्ठीइ मुय सुक्कामर इंद पडिंद हुय ।
ओसारियकायकंतिसिहइं णिवसिवि सोलहजलणिहिणिहइं ।
धादइसंडइ थिय सिसुससिहि पच्छिममंदरपच्छिमदिसिहि ।
पच्छिमविदेहि णरदिण्णसुह णामेण पुक्खलावइ वसुह ।
घत्ता—तहिं अत्थि पुंडरिंकिणि णयरि राउ धणंजउ णिवसइ ॥
जयसेण सेण णं वम्महहो अवर वि भज्ज जसँस्सइ ॥१७॥

१८

दुवई—ससिसिय भमरणील णं्ठपाउसणासपवेसकुसवहा ।
इंद पडिंद बे वि आवेप्पिणु जाया ताहं तणुरुहा ॥१॥
जयसेणहि णंदणु सीरधरु पहसियउ इंदु दणुयारिवरु ।
वियसिउ पडिंदु सणियाणवसु तवरयणें किणियणिकामतुसु ।
णारायणु जायउ जसँसइहि भूहरवियारि वेउ व णइहि ।
णामेण महाबलअइबलहं तहि ताहं जगत्तयमंगलहं ।
सिरि मुंजंतहुं गउ मरिवि हरि अइबलु वि ण खयकालहु उवरि ।
अवलोयवि णियबंधवपलउ मणु मुक्कु ण वीरें मोक्कलउ ।
वणु पइसिवि सरु णिसुणिवि मयहं पणवेवि समाहिगुत्तपयहं ।
तउ लेवि महाबलु तहिं मरिवि प्राणयतियसेसरत्तु करिवि ।
वीसद्धिसमाणहिं पुणु पडिउ अंतयराएण ण को णडिउ ।
पुव्वुत्तदीवभायंतरए पुव्वुत्तसुरहिदियंतरए ।
पुव्वुत्तविदेहि तवियतरणि णामेण वच्छयावइ धरणि ।
पुरि तम्मि पहायरि जणभरिय मइँसेणहु देवि वसुंधरिय ।
घत्ता—तहि देविहि मयणेँभयालसहि गब्भवासु सेवेप्पिणु ॥
चउदहमयंकप्पसुराहिवइ थिउ माणुसु होएप्पिणु ॥१८॥

३. BP सुदंसणु संणियउ । ४. MBP णियमिवि । ५. MBP पुडरिंगिणि । ६. MBP धणज्जउ ।
७. Mp जसंमइ ।

१८. १. MBP णं पाउसणासपवेसि । २. MBP जसमइहि । ३. MBP पाणइ । ४. P मरुसेणहु ।
५. MBP °महालसिहि । ६. P चउदहमइ ।

वैराग्यको प्राप्त हुए। भारी भक्ति कर गुरुके लिए प्रणाम किया। जिस प्रकार सूर्योदय होनेपर कमलोंकी जड़ता चली जाती है, उसी प्रकार मुनिवचनोंको सुनने और माननेवालोंमें जड़ताका भाव नहीं रहता। वे दोनों ही कल्याणमित्र संसारका विचार करते हुए विरक्त हो गये। तथा उन्हीं त्रिलोक दिवाकर मतिसागर मुनिसे दीक्षा ग्रहण कर ली। उन्होंने आचाम्ल, वर्धमान और सुदर्शन नामके भीषण तप किये। दोनोंने दुष्कर्मका विरोध किया और अपने हितका नियमन कर दोनोंने उसे नष्ट कर दिया। आगमोंमें प्रतिपादित चार प्रकारके आहारोंके त्याग और उत्तम दृष्टिसे वे मृत्युको प्राप्त कर शुक्र स्वर्गमें इन्द्र तथा प्रतीन्द्र हुए। अन्तिम समय अपनी शिखा-ज्योति नष्ट करनेवाले वे दोनों सोलह सागर पर्यन्त वहाँ निवास कर, धातकी खण्ड द्वीपमें शिशु-चन्द्रमाके समान शुभ्र पश्चिम सुमेरुकी पश्चिम दिशामें पश्चिम विदेहमें जनोंको सुख देनेवाली पुष्कलावती नामकी वसुधा है।

घत्ता—उसमें पुण्डरीकिणी नामकी नगरी है। उसमें धनंजय नामका राजा रहता था। उसकी पत्नी जयसेना थी, जो मानो कामदेवकी सेना थी, और दूसरी पत्नी यशस्वती थी ॥१७॥

१८

वे दोनों इन्द्र और प्रतीन्द्र, जो मानो चन्द्रमाके समान शुभ्र तथा भ्रमण करनेवाले, पावसके विनाशके समय प्रवेश करते हुए मेघ हों, आकर उनके पुत्र हुए। राक्षसोंका श्रेष्ठ शत्रु प्रहसित इन्द्र जयसेनाका पुत्र बलभद्र हुआ और प्रतीन्द्र विकसित अपने निदानके कारण तपश्चरण-से तुच्छ भोगोंको नष्ट करनेवाला यशस्वतीका पुत्र नारायण हुआ। वैसे ही जैसे पहाड़को चीरता हुआ नदीका वेग। महाबल और अतिबल नामवाले तीनों लोकोंके मंगल स्वरूप लक्ष्मी-का भोग करते हुए उनमें-से नारायण मर गया। अतिबल होते हुए भी वह कालके ऊपर नहीं था। अपने भाईका अन्त देखकर महाबल बलभद्रने अपने मनको मुक्त नहीं छोड़ा। वनमें प्रवेश कर कामदेवके शब्द सुनकर समाधिगुप्त मुनिके पैरोंमें प्रणाम कर, तप लेकर और मरकर प्राणत स्वर्गमें देवेश्वरत्व कर बीस सागर आयुके बाद पुनः वहाँसे च्युत हुआ अन्तरायके द्वारा कौन नहीं प्रवंचित किया जाता ? पूर्वोक्त द्वीपके भागान्तरमें ही (अर्थात् धातकी खण्डके पूर्वविदेहमें) जिसमें सूर्य तपता है, ऐसी वत्सकावती नामकी भूमि है। उसमें प्रभाकरी नगरी है। जनोंसे संकुल, उसमें महासेन राजाकी देवी वसुन्धरा है।

घत्ता—कामदेवसे मदालस उस देवीके गर्भवासका सेवन कर चौदहवें स्वर्गका कल्पवासी इन्द्र मनुष्य रूपमें उत्पन्न हुआ ॥१८॥

१९

दुवई—हुवे[1] जयसेणचक्कि को वारइ होंती पुण्णसत्तिया ।
तेत्थु वि तेण भीमकरवालें महि छक्खंड भुत्तिया ॥१॥

पुणु केवलणाणसिरीहरहो पायंतियम्मि सीमंधरहो ।
चोद्दह[2]रयणइं णिहि परिहरेवि दुद्धरु चारित्तभारु धरेवि ।
घणपावकोव विद्दावणउ भावेप्पिणु सोलह भावणउ ।
फणिणरसुरवइकयकित्तणउं अज्जेप्पिणु तित्थयरत्तणउं ।
गउ प्राण[3] विसं[4]ज्जिवि घुलियधए उवरिमगेवज्जहि मज्झे[5]मए ।
तीसंबुहिसंणिहाइं जिइवि अहमिंदु देउ तेत्थहु च॰वि ।
पुक्खर[6]दीवहु पुव्विल्लु गिरि णामेण मेरु[7]मरि वूढसिरि ।
तहि पुव्वविदेहइ दिण्णसुह णरजोणि मंगलावइ वसुह ।
तहिं रयणसंचि अजियंजयहो रायहु पालियसावयवयहो ।
जोइयसुहसिविणयसंतइहे हुउ सुउ देविहि तसु वसुमइहे ।

घत्ता—सो देउ जुयंधरु परमजिणु वम्महवम्मवियारउ ॥
उप्पण्णु जि सयलहिं सुरवरहिं मेरुहि ण्हविउ भडारउ ॥१९॥

२०

दुवई—पुणु णरखयररायरायत्तणु मेल्लिवि गउ वणंतरं ।
रुंभिवि अंतरंगु पविलंबियकरु थिउ सो णिरंतरं ॥१॥

भयवंतहु विहुणंतहु दुरिउ पालंतहु सुत्तउत्तु चरिउ ।
उप्पण्णउं जगसंखोहणउं केवलु किउ तच्चणिरूवणउं ।
ओ[1]इल्लउ तित्थु पवत्तियउ तिहुवणु कुवहाउ णियत्तियउ ।
गउ मोक्खहु अक्ख[2]रु अक्खरहो तणु सक्कारिउ परमेसरहो ।
अग्गिदहिं णियमउडाणलिण भणु[3] किं ण होइ सुकियफलिण ।
इय कहपवंचि मइं[4] संकहिए सम्मत्तु लइउ देवहिं सहिए ।
हे हे मह कुलकमलेक्कसिए ललियंगहु तुह ल॰यंगपिए ।
हियइल्लउ णिदियइंदियउ तइयहुं जिणधम्माणंदियउ ।
संभरसु पुत्ति रमियामरहो अंजणणामयहु धराधरहो ।
अम्हइं तुम्हइं मि महासरहो दीवहु गयाइं णंदीसरहो ।
संभरसु पुत्ति पवियलकमले कीलियइं सं[5]डंभूरमणजले ।
किय जाणेप्पिणु रुद्धासवहो णिव्वाणपुज्ज पिहियासवहो ।

१९. १ P हुव जयसेण । २ P चउदह° । ३. MBP पाण । ४. P विवज्जिवि । ५. MB मज्झवए; P मज्झिमए । ६. MBP पुक्खरवरदीवइ पुव्वगिरि । ७. MBP मेरुदरि ।

२० १. MBP read this line as : तिहुवणु कुवहाउ णियत्तियउ, आइल्लउ तित्थु पवत्तियउ । २. B अक्खर अक्खरहो । ३. MBP भणु होइ किं ण । ४. M मइं सइं कहिए; B सइं मइं कहिए । ५. P सयंभू° ।

१९

वह जयसेन चक्रवर्ती हुआ। होती हुई पुण्यशक्तिका निवारण कौन कर सकता है? वहाँ भी उसने अपनी भयंकर तलवारसे छह खण्ड धरतीका उपभोग किया। फिर केवलज्ञानरूपी श्रीको धारण करनेवाले सीमन्धर स्वामीके चरणोंके मूलमें चौदह रत्नों और निधियोंको छोड़-कर दुर्धर चरित्रभार उठाकर, विद्युत्‌की तरह विद्रवित होकर, सोलह भावनाओंका ध्यान कर, नाग-नर और देवेन्द्र जिसका कीर्तन करते हैं, ऐसे तीर्थंकरत्वका अर्जन कर, प्राणोंका विसर्जन करते हुए, उड़ती हुई पताकाओंसे युक्त मध्यम ग्रैवेयक विमानमें अहमेन्द्र हुआ। वहाँपर तीस सागर प्रमाण आयु जीकर, वह अहमेन्द्र च्युत होकर पुष्कर द्वीपके पूर्व विदेहमें मेरुसिरि और व्यूढसिरि नामका गिरि है, उसके पूर्व विदेहमें सुख देनेवाली मनुष्यभूमि मंगलावती नामकी वसुधा है। वहाँ रत्नसंचय नामके नगरमें श्रावक व्रतोंका पालन करनेवाले राजा अजितंजयका, सुन्दर स्वप्नावलीको देखनेवाली वसुमती देवीका वह पुत्र हुआ।

घत्ता—वह देव कामदेवके मर्मका निवारण करनेवाला युगन्धर परम जिन उत्पन्न हुआ। समस्त सुरवरोंने मेरुपर्वतपर आदरणीय उनका अभिषेक किया ॥१९॥

२०

वे फिर नर और विद्याधरराजका राजपाट छोड़कर वनके लिए चले गये। अपने मनको रोककर हाथ लम्बे किये हुए वह लगातार स्थित रहे। ज्ञानवान् पापको नष्ट करते हुए, आगमोक्त चरित्रका पालन करते हुए उन्हें संसारमें क्षोभ उत्पन्न करनेवाला और तत्त्वोंका निरूपण करनेवाला केवलज्ञान उत्पन्न हुआ। उन्होंने मुख्य तीर्थका प्रवर्तन किया, और त्रिभुवनको कुपथपर जानेसे रोका। अविनश्वर वह अक्षय मोक्षके लिए गये। परमेश्वरके शरीरका संस्कार, अग्नीन्द्रके द्वारा अपने मुकुटकी आगसे किया गया। बताओ पुण्यके फलसे क्या नहीं होता? इस प्रकार मेरे कथा-प्रपंच करनेपर देवोंने अपने हितमें सम्यक्त्व ग्रहण कर लिया। हे-हे मेरे कुल-कमलकी एकमात्र श्री ललितांग प्रिये, तुम्हारे ललितांगका इन्द्रियोंकी निन्दा करनेवाला हृदय उस समय जिनधर्मसे आनन्दित हो गया। हे पुत्री, तुम, जिसमें देव रमण करते हैं, ऐसे अंजना नामके पर्वतको याद करती हो। हम और तुम, महासरोवरवाले नन्दीश्वर द्वीप गये थे। पुत्री तुम याद करती हो, प्रचुर कमलोंवाले स्वयम्भूरमण समुद्रके जलमें हमने क्रीड़ा की थी। और फिर जाकर, आस्रवको रोक देनेवाले पिहितास्रवकी निर्वाण पूजा की थी।

घत्ता—संभरसि पुत्ति मइं भासियइं एयइं बहुअहिणाणइं ॥
तुम्हइं दंप[6]इहिं रईयरइं सुरवरकीलाठाणइं ॥२०॥

२१

दुवई—तहिं णिउत्तद्धमाणु पुव्वाउसु अच्छइ बिहि वि जइयहुं ।
हुउं कालेण कह व णिल्लोट्टिउ इंदवयाउ तइयहुं ॥१॥

इमच्चुया चुओ सु[1]ए कुले सुरिंदसंथुए ।
वसुंधरावहूयरे महंतपुण्णगोयरे ।
णिबद्धपेम्मराइणा जसोहरेण राइणा ।
सुओ हुओ हियंतओ इहेव वज्जदंतओ ।
कुवाइएहिं मोहिओ सुमंतिणा पबोहिओ ।
कयंगयारिण्हाणओ मरेवि दिण्णदाणओ ।
सुधम्मभावणामलो खगाहिवो महाबलो ।
दुइज्जसग्गठाणए सिरिप्पहे विमाणए ।
लयारपुव्वणामओ सरूवजित्तकामओ ।
हुओ सुरो दुवीसमो महं गुरू स पच्छिमा ।
पियव्वया अणामिया गयाउणा ख[2]यं णिया ।
तु[3]मं पि तप्पिइल्लिया पई[4]य अंतिमिल्लिया ।
दिवायरस्स णं पहा सल[5]क्खणा सयंपहा ।
क[6]यंतचंडिमाहओ तुहं पिओ तहिं मओ ।
वरुप्पलाइ खेडए पुरे विचित्तणीडए ।
पलंबथोरबाहुणो णिवस्स वज्जबाहुओ ।
सुवण्णवण्णकायओ कुलंगणाइ जायओ ।
रवि व्व सो दुलंघओ मयच्छि वज्जजंघओ ।
पिओसुया सुहंकरा महं सुहीण ते परा ।
स[7]मीवु भूमिमंडले वसेति ते सु[8]कोतले ।
सुरालयाउ आइया रमावईइ जाइया ।
तुमं सया[9] पहायरी महं सुया किसोयरी ।
वरं वरं विहाविही वियक्खणा [10]विहाविही ।
पियागमं पयासिही दिणेहिं तीहिं भासिही ।
सिरीमईइ भासियं तए महं पयासियं ।
[11]भरामि हं [12]परं भवं चिरं पि ताय णं णवं ।

६. B दंपइरईयरइं ।

२१. १. MP सए । २. MBK खयाणिया । ३. BP तुमं ति । ४. MBP पहू अयं ति मिल्लिया । ५. MBP सुलक्खणा । ६. MP कयंति । ७. MBP समीवं । ८. MBP सुकोमले । ९. BP सयंपहायरी । १०. M इहाविही । ११. MBP सरामि । १२. P गयं ।

घत्ता—हे पुत्री, मेरे द्वारा कहे गये इन बहुत-से अभिज्ञानोंको तुम याद कर रही हो ? तुम दम्पतिने जिन रतिगृह और सुरवरके क्रीड़ा-स्थानोंको भोगा था ॥२०॥

२१

वहाँ जब तुम्हारे पूर्व आयुके नियुतका आधा, अर्थात् पचास हजार वर्ष आयु शेष बचा, और जब दोनों वहाँ थे, तब कालने किसी प्रकार मुझे हटा दिया। हे पुत्री, स्वर्गसे च्युत होकर मैं सुरेन्द्र संस्तुत कुलमें पुण्योंसे प्रत्यक्ष रानी वसुन्धराके उदरसे रानीसे बद्धप्रेम राजा यशोधरका सुन्दर पुत्र हुआ यहीं वज्रदन्त नामका। जो कुवादियोंके द्वारा गुम कर दिया गया था परन्तु सुमन्त्रीने उसे प्रबोधित कर लिया था। जिनेन्द्रका अभिषेक करनेवाला, दान देनेवाला सुधर्मकी भावनासे विद्याधर राजा महाबल मरकर दूसरे स्वर्गके श्रीप्रभ विमानमें अपने स्वरूपसे कामको जीतनेवाला बाईसवाँ ललितांग देव हुआ। वही अन्तिम देव मेरा गुरु है। और जो प्रियव्रता अनामिका थी वह आयु बीतनेपर क्षयको प्राप्त हुई। वही तुम उस ललितांग देवकी अन्तिम प्रियतमा हुई। लक्षणवती सुप्रभा नामकी, मानो सूर्यकी प्रभा ही हो। परन्तु कृतान्तके प्रतापसे आहत होकर तुम्हारा प्रिय वहाँ भी मृत्युको प्राप्त हुआ। और वह विचित्र घरोंवाले श्रेष्ठ उत्पलखेड नगरमें लम्बे और स्थूल बाहुओंवाले वज्रबाहु राजाकी कुलांगनासे हे मृगाक्षिणी, स्वर्णवर्ण शरीरवाला पुत्र हुआ है वज्रजंघ नामका, जो सूर्यके समान दुर्लंघ्य है। वे सुधी मेरे पूर्व जन्मके शुभंकर पिता पुत्र हैं। हे सुकुन्तले, वे समीप ही भूमिमण्डलमें रहते हैं। और देवालयसे आयी हुई, तथा लक्ष्मीवतीसे उत्पन्न सदा प्रभाकरी तुम मेरी कृशोदरी कन्या हो। अच्छा तू अपना वर देखेगी, धाय आयेगी। प्रियके आगमनको बतायेगी। तीन दिनमें प्रिय प्रकट होगा। तब श्रीमती बोली, 'तुमने मुझे (सब कुछ) बता दिया। मैं परभवकी याद करती हूँ, वह पुराना भी, हे तात नया-नया लगता है।'

घत्ता—सुणि सेणिय आसि समासियउ भरहहु रिसहजिणिंदें ॥
णवकुंदपुप्फदंतहिं[13] हसिवि पुणु सुय भणिय णरिंदें ॥२१॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे सिरिमइभवसंभरणं णाम तेवीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥२३॥
संधि ॥२३॥

१३. MBP °फुप्फयंतहिं ।

घत्ता—हे श्रेणिक, जो ऋषभ जिनेन्द्रके द्वारा भरतके लिए कहा गया था, अपने नवकुन्दके समान दाँतोंसे हँसते हुए राजाने पुत्री श्रीमतीसे कहा ॥२१॥

इस प्रकार त्रेसठ महापुरुषोंके गुणों और अलंकारोंसे युक्त इस महापुराणमें महाकवि पुष्पदन्त द्वारा विरचित और महाभव्य भरत द्वारा अनुमत महाकाव्यका श्रीमतीभवस्मरण नामका तेईसवाँ परिच्छेद समाप्त हुआ ॥२३॥

संधि २४

सहुं णंदणेण णियपरियणेण महु लोयणसुहु देसइ ॥
सुणि राउलउ तुह माउलउ अज्जु पुत्ति आवेसइ ॥ ध्रुवकं ॥

१

म करहि वयणकमलु तुहुं दीणउं   अज्ज पुत्ति जायउ सुविहाणउं ।
आयहु वज्जबाहुपाहुणयहु   अज्ज करमि करणिज्जु सविणयहु ।
सोयकिलेसपंकु पक्खालहि   अज्ज पुत्ति तुहुं णाहु णिहालहि ।
आया माणणिज्ज ते माणमि   लहु अद्धवहि गंपि घरु आणमि ।
जाम भणिवि गउ णरवइ जावँहिं   पंडिय भवणु पराइय तावँहिं ।
मुणिहि वि मयणुक्कोवजणेरी   दिट्ठी सुय णरणाहहु केरी ।
णं गंगाणईहि जउंणाणइ   णं कइमइहि मिलिय सुयसंतइ ।
णियडि णिसण्णी सा तरलच्छिहि   पुरिसुज्जमलीला इव लच्छिहि ।
करिणिइ करणि जेम करु मग्गिय   वेल्लिइ णववेल्लि व आलिंगिय ।
मत्थइ चुंबिवि पुरउ णिवेसिय   हंसिइ कलहंसि व संभासिय ।
मुहराएण जि सिट्ठुं णियच्छिउ   कज्जु तो वि णिवकण्णइ पुच्छिउं ।

घत्ता—विउसिइ कहिउ ढंकिवि लिहिउ पइं जं तहिं मइं ढोइय ॥
णरवइ दमिय ओसरिवि थिय वासवदुहंताइय ॥१॥

२

पच्छइ सयलहं आयउ जो वरु   सो णं सोहग्गहु केरउ घरु ।
सो णं वम्महेण पेसिउ सरु   सो णं जुवइयणहं जीवियहरु ।
सो णं रइरसंसलिलहु सायरु   सो णं तुह मुहकमलदिवायरु ।

MBP give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza:—

हिमगिरिशिखरनिकरपरिपाण्डुरधवलितगगनमण्डलं
पुलकमिवातनोति केतकतरुवरतरुकुसुमसंकरे ।
विकसितफणिफणासु सुरसरितो मणिरुचिगतमधः क्षिते-
रिदमतिचित्रकारि भरतेश्वर जगतस्तावकं यशः ॥

GK do not give it.

१. १ B लोयणु सुहु । २. P रावलउ । ३. MBP अज्जु—and throughout, this Kadavaka. ४. P सुविणयहु । ५. B अद्धवहु । ६. M एम । ७. MB जावेहिं; P जाविहिं । ८. MB तावेहिं; P ताविहिं । ९. MBP मयणुक्कोय° । १०. MB सुट्ठु; P सिद्धु । ११. P पुंछिउ ।

२. १. MBP °णिलयहु ।

सन्धि २४

पुत्र और परिजनोंके साथ वह मुझे लोचन मुख देगा। हे पुत्री ! सुनो, तुम्हारा राजा ? ससुर आज आयेगा।

१

तुम अपना मुखकमल मलिन मत करो। हे पुत्री, आज सुन्दर सवेरा हुआ है। आज मैं आये हुए विनयशील अतिथि वज्रबाहुके लिए करणीय करूँगा। तुम शोकके क्लेशरूपी पन्थको धो डालो। हे पुत्री, तुम आज अपने पतिको देखो। वे माननीय आये हैं, मैं उन्हें मानता हूँ और शीघ्र आधे मार्ग तक जाकर उन्हें घर लाता हूँ। मैं जाता हूँ, यह कहकर जैसे ही राजा गया है, वैसे ही पण्डिता भवनपर पहुँची। उसने मुनियोंको भी कामकी उत्कण्ठा उत्पन्न करनेवाली राजाकी कन्याको देखा। (वह उससे इस प्रकार मिली) जैसे यमुना नदी गंगा नदीसे या श्रुत परम्परा कविकी मतिसे मिली हो। चंचल आँखोंवाली उसके पास वह इस प्रकार बैठी जैसे लक्ष्मीके पास पुरुषकी उद्यम लीला हो। हथिनीके द्वारा हथिनीसे जिस प्रकार कर (सूँड़) माँगी जाती है, उसने हाथ माँगा, जैसे एक लता दूसरी लताका आलिंगन करती है, उसी प्रकार एकने दूसरीका आलिंगन किया। मस्तकमें चूमकर सामने बैठाया। जैसे कलहंसी कलहंसीसे बात करती है उस प्रकार उसने सम्भाषण किया। मुँहके रागसे कहा गया उसने सब देख लिया, फिर भी राजकन्याने कार्यके बारेमें पूछा।

घत्ता—उस पण्डिताने कहा कि तुमने जो चित्रपट चुपचाप लिखकर दिया था मैं उसे वहाँ ले गयी कि जहाँ दमित वासव दुर्दान्त आदि हटकर रह गये ॥१॥

२

जो दर सबसे बादमें आया वह मानो सौभाग्यका घर था। वह मानो कामदेवके द्वारा प्रेषित तीर है, वह मानो प्रेमरसके जलका समुद्र है। युवतीजनोंके प्राणोंका अपहरण करनेवाला

सो णं रूवविलासु पसारिउ सो णं कंतिकोसु वइारिउ ।
सो णं विण्णाणविहि वित्थारिउ सो णं पुण्णपुंजु अवयारिउ ।
सो णं सूहउ महु मणि भावइ जो तुह अट्ठ वि अंगइं तावइ ।
पुत्ति महासिहरहु दुहणासहु देवि पयाहिण जिणवरवासहु ।
फेणहिमट्टहास[2]संकासहु णाइं पुरंदरेण केलासहु[3] ।
हियवउ रइ[4]वियसिउं मउलेप्पिणु[5] तेण बे वि णियकर मउलेप्पिणु ।
वंदिउ जिणु सुहवं[6]जियवज्जिउ वंदिउ जिणु सुरपुज्जियपुज्जिउ ।
वंदिउ जिणु जगवं[7]दियवंदिउ वंदिउ जिणु बुहणिंदियणिंदिउ ।
जम्मवासु देवहु णउ जुज्जइ विणु सयलेण सत्थु किह णज्जइ ।
अकिरिउ णिक्कलु गयणसरिच्छउ जंपउ जडयणु बुद्धिइ तुच्छउ ।
घत्ता—गरुयउ णहहो सीयलु हिमहो जिण तुह पर[8] गुरु केहउ ॥
वलइयमुयहो वंझासुयहो खकुसुमसेहरु जेहउ ॥२॥

३

जिणु वंदेप्पिणु वंदिय मुणिवर मुणिवर ते सुयहर णं गणहर ।
अंगणहरकइरंजियदसदिस दसदिसिवहपसरियणिम्मलजस ।
जसु ण कलंकु गोत्ति णउ हियवइ वयवालिणि[3] मइ जसु थिय जिणणइ ।
णयसिरहे पट्टसाल स पइट्ठउ सपइट्ठउ मइं संमुहुं दिट्ठउ ।
दिट्ठउ पडु सहुं सुलिहियचित्तें चित्तें चिंतिउ तेण समंतें ।
संतें इट्ठविओयकंतें कं तें धुणियउं भवसंकंतें ।
कंतें[5] जयलच्छिहि विक्कंतें [6]कंतें सुभरियपेम्मुक्कंतें ।
कंतें चंदेण व संपुण्णें पुण्णें पियसंजोउ ण रुण्णें ।
रुण्णें पर सरीरु णिव्वट्टइ णिव्वट्टिउ देउ वि ण पवट्टउइ ।
वट्टइ जाणिउं कहिं दीसइ सा सा मणणलिणोयरवासिणि जा ।
जा सा सा भणंतु सो मुच्छिउ सोमुच्छिउ चंदु व्व णियच्छिउ ।
अच्छिउ विमणु पपुच्छिउ धाइइ धाइइ परियणि कहिं मि ण माइइ ।
माइइ भणइ रमणु तुह अक्खमि अक्खमियं जं तं किह रक्खमि ।
घत्ता—भवे[10]संचरिउ पडिउद्धरिउ बहुपयारु परंढंकिउ[11] ॥
णरवइरुयइ सुललियभुयइ कीस सहियवउ बंकिउ[12] ॥३॥

२. MP °हिमहि° । ३. P कइलासहु । ४. MBP रइ° । ५ MP मेल्लेप्पिणु । ६. BPT सुहवज्जिण°। ७. M जयवंदियवंदिउ; BP भयवज्जियवंदिउ । ८. MBP परगुरु ।

३. १. MBP °दसदिसु । २. MBP °जमु । ३. MP वयपालिणि । ४. B °सिरपट्ट° । ५. M omits this foot. ६. BPK पेम्मक्कंतें सुयरियकंतें । ७. MBPT णीवट्टइ । ८. MBP णीवट्टिउ देहु । ९. B अक्खमियउं । १० MBP भवि । ११. MBP °ढंकियउ । १२. MBP बंकियउ ।

तीर है। वह मानो तुम्हारे मुखरूपी कमलके लिए दिनकर है। वह मानो प्रसारित रूपविलास है। वह मानो बहुत बड़ा कान्तिकोष है, वह मानो विस्तारित विद्यानिधि है, वह मानो अवतरित पुण्य समूह है। वह सुभग मेरे मनको भाता है और जो तुम्हारे आठों अंगोंको जलाता है। जिसके बड़े शिखर हैं और जो दुःखनाशक है ऐसे जिन मन्दिरकी उसी प्रकार प्रदक्षिणा देकर कि जिस प्रकार फेन हिम और अट्टहासके समान कैलास पर्वतकी इन्द्र देता है, रतिसे विकसित अपने मनको मुकुलित (बन्द) कर तथा अपने दोनों हाथ जोड़कर पुण्यहीनोंसे दुर्लभ देवोंके पूजितोंके द्वारा पूज्यकी वन्दना की, विश्ववन्दितोंके द्वारा वन्दनीयकी वन्दना की। पण्डितोंके द्वारा निन्दितोंके द्वारा निन्दित जिनवरकी वन्दना की। देवका गर्भवास नहीं होता परन्तु शरीरके बिना (शिवका) शास्त्र कैसे युक्तियुक्त है। जो जड़जन बुद्धिसे तुच्छ हैं, वे कहते हैं कि वह (शिव) निष्क्रिय निष्कल आकाशकी तरह निराकार शून्य है।

घत्ता—हे जिन, आकाशसे अधिक भारी, हिमसे अधिक ठण्डा और तुमसे महान् गुरु कौन है? वह वैसा ही है, जैसे मुड़ी हुई भुजावाले वन्ध्यापुत्रके ऊपर आकाशकुसुमोंका शेखर ॥२॥

३

जिनकी वन्दना कर, उसने मुनिवरोंकी वन्दना की। शुभ करनेवाले वे मुनि मानो गणधर हों। अपने अंगों और नखोंकी कान्तिसे दसों दिशाओंको रंजित करता हुआ दसों दिशाओंमें अपना यश फैलाता हुआ, जिसके कुल और हृदयमें कलंक नहीं है। व्रतोंका पालन करनेवाली जिसकी मति जिननयमें स्थित है, ऐसा नतशिर वह पट्टशालामें प्रविष्ट हुआ। प्रवेश करते हुए मैंने उसे सामने देखा। अपने मुलिखित चित्तसे उसने पट्ट देखा और श्वास लेते हुए उसने सोचा। इष्टके वियोगसे पीड़ित उस उत्तम पुरुषने जीवनकी आशंका करते हुए अपना सिर हिलाया। विजय-लक्ष्मीके लिए विक्रान्त सुन्दर, स्मृत प्रेमसे उत्कण्ठित, सम्पूर्ण चन्द्रमाके समान सुन्दर (उसने सोचा) कि प्रियसंयोग पुण्यसे होता है, रोनेसे नहीं। रोनेसे शरीर नष्ट होता है, शरीर नष्ट होने-पर देव भी प्रवृत्त नहीं होता (काम नहीं करता) (पता नहीं) वह कहाँ है, कहाँ दिखाई देगी, जो मेरे मनरूपी कमलके भीतर निवास करनेवाली है। "जो वह, वह जो" यह कहता हुआ वह मूर्छित हो गया। वह सौम्य चन्द्रमाके समान दिखाई दिया, धायके द्वारा पूछा गया वह विमन बठ गया। परिजनके दौड़ने (द्रवित) होनेपर मन कहीं भी नहीं समाता। वह कहती है—हे पुत्री! तुम्हारा प्रिय बताती हूँ, जो कुछ उसने कहा है वह तुमसे कैसे छिपा सकती हूँ।

घत्ता—अच्छी तरहसे आच्छादित, बहुत प्रकारसे प्रतिलिखित यह पूर्वभवचरित राजपुत्रीने अपने सुन्दर हाथसे अपने हृदयके साथ कैसे अंकित कर दिया ॥३॥

४

एहु ईसाणकप्पु विविहामरु लिहियउ एहु सिरिमहु सुरहरु।
एहु दिव्वतरुवरु णंदणवणु पलवमाणु चलकलकोइलगणु।
एहु ललियंगु देउ हउं होंतउ एत्थु वसंतउ एत्थु रमंतउ।
थणयलघुलियहारमणहारी एह सयंपह देवि महारी।
अच्चुयणाहु एहु तियसेसरु कुलिसपाणि लिहियउ परमेसरु।
कहइ जुयंधरदेवकहाणउं लंतवबंभेसर मई लीणउं।
पयइं अम्हइं बे वि बइट्ठइं कह णिसुणिवि णियमणि संतुट्ठइं।
इय मेरुहि गयाइं जगखंभहु इह लग्गइं जिणण्हाणारंभहु।
एहु अंजणमहिहरु महु रुच्चइ एहु दीउ णंदीसरु वुच्चइ।
इह सहुं सुरणाहें मुहललियइं वंदणहत्तिइ बिण्णि वि चलियइं।
अंबरतिलउ एहु गिरिसारउ इहु पिहियासउ लिहिउ भडारउ।
एत्थु तासु कमकमलु णमंतइं थियइं बे वि जिणधम्मु सुणंतइं।

घत्ता—एहु मलरहिउ हउं पाडहिउ एह सयंपह णच्चइ॥
तियसिद्धिवणे जिणवरभवणे महि पयपोमहिं अंचइ॥४॥

५

अण्णेत्तहि वि एत्थु णो लिहियउ जो मई कीलारंभु पविहियउ।
रइणेउरसद्दें रोमंचिउ एत्थु ण लिहियउ मोरु पणच्चिउ।
अम्हहं तणुपरिमलपरिभमियउं एत्थु ण लिहियउं अलिगुमुगुमियउं।
एत्थु ण लिहियउ लज्जादेसिरु सुय गुरुयणआगमणुब्भासिरु।
सवणभरणु इह णलिणु ण लिहियउ जं बहुणयणहं सोहइ महियउ।
एत्थु ण लिहियउ पडिवहुविलसिउ एत्थु ण लिहियउ पणयारोसिउ।
इह कवोलपत्तावलिमोडणु एत्थु ण लिहियउ किसलयताडणु।
एत्थु ण लिहियउ विरहाउरु मुहुं एत्थु ण लिहियउ प्रिउ विवरंमुहु।
एत्थु ण लिहियउ भूसणु पेसिउ एत्थु ण लिहियउ दूययभासिउ।
एक्कु जि लिहियउ अणुणयगारउ इहु महु दिण्णउ पायपहारउ।
पयवडिए सारंभु मुयाविउ एत्थु ताइ हउं आसि खमाविउ।
अण्णहि णेहो रूवविहूई देवि सयंपह माणवि हूई।
अण्णहि पसइणिहाणइं णेत्तइं अण्णु लिहइ किं महु चारित्तइं।

४. १. P इहु and throughout this Kadavaka. २. MB सुप्पहसंपयसुर°। ३. MB कहि। ४. MB णियमण°। ५. MB सरंतइं।

५. १. MBP णालिहियउ। २. B मेरु। ३. MBP सुउ। ४. MB गुरुयणु। ५. MBP read this line as : एत्थु ण लिहियउ पणयारोसिउ, एत्थु ण लिहियउ पडिवहुविलसिउ। ६. MBP विरहाउर। ७. MBP पिउ। ८. MB भूसण। ९. M एत्थु ण; B एउ महु। १०. MBP °णिहाइं ण। ११. MB अण्ण।

४

"यह विविध देवोंवाला ईशान स्वर्ग है। यह श्रीमह विमान चित्रित है। यह दिव्य वृक्षोंवाला नन्दनवन है। यह बोलता हुआ सुन्दर कोकिलगण है। यह मैं ललितांग देव रहा। यहाँ बसता हुआ, यहाँ रमण करता हुआ। स्तनतलोंपर आन्दोलित हारसे सुन्दर यह हमारी प्यारी स्वयंप्रभा देवी है। देवोंके इन्द्र यह अच्युतनाथ हैं। यह परमेश्वर इन्द्र चित्रित हैं। यह मुझमें लीन लान्तव ब्रह्मेश्वर युगन्धर देवका कथानक कह रहा है। ये हम दोनों बेठे हुए हैं। कथा सुनकर अपने मनमें सन्तुष्ट हैं। ये हम विश्वके स्तम्भ सुमेरु पर्वतपर गये हुए हैं, ये हम जिनेन्द्रके अभिषेकमें लगे हुए हैं। यह अंजन महीधर मुझे बहुत अच्छा लग रहा है, इसे नन्दीश्वर द्वीप कहा जाता है। यहाँ हम दोनों सुन्दर मुखवाले इन्द्रके साथ वन्दना भक्तिके लिए गये थे। यह पर्वतश्रेष्ठ अम्बरतिलक है। यह आदरणीय पिहिताश्रव चित्रित हैं। यहाँ उनके चरणकमलोंको प्रणाम करते हुए और जिनधर्मको सुनते हुए हम दोनों बेठे हुए हैं।

घत्ता—यह मैं निर्दोष नाट्याचार्य हूँ, और यह स्वयंप्रभा नृत्य कर रही है। त्रिसिद्धवनके जिनवरभवनमें धरती चरणकमलोंसे शोभित है ॥४॥

५

दूसरी जगह जो क्रीड़ा मैंने आरम्भ की थी वह यहाँ नहीं लिखी गयी। रतिके नूपुरके शब्दसे रोमांचित मयूर जो यहाँ नाचा था, वह यहाँ नहीं लिखा गया। हम लोगोंके शरीरके परिमलसे परिभ्रमित भ्रमरका गुंजन यहाँ नही लिखा गया। गुरुजनोंके आगमकी सूचना, और लज्जाका उपदेश देनेवाला शुक यहाँ चित्रित नहीं किया गया। यहाँ कानोंका आभूषण यह कमल नहीं लिखा गया, जो वधुओंके नेत्रोंसे भी अधिक महनीय शोभित है। यहाँ प्रतिवधूकी चेष्टा चित्रित नहीं है, यहाँपर प्रणयकोप चित्रित नहीं है यहाँपर गालोंकी पत्ररचनाका मण्डन और किसलयताड़न लिखित नहीं है। यहाँपर विरहातुर मुँह लिखित नहीं है, यहाँ काँपता हुआ प्रिय मुँह नहीं चित्रित किया गया, यहाँ भेजा गया आभूषण नहीं चित्रित किया गया, यहाँपर विरहसे आतुर मुँह नहीं लिखा गया, यहाँपर दूतीका सम्भाषण नहीं लिखा गया। यहाँ एक ही चीज लिखी गयी है और वह मुझपर कृपा करनेवाला मुझपर किया गया पादप्रहार। मैंने पैरोंपर पड़कर उसका क्रोध दूर किया था और यहाँ पर मैं उसके द्वारा क्षमा किया था। रूपकी विभूति स्वयंप्रभा देवी अन्यत्र मानवी हुई है। माप (सौन्दर्यके) के निधान नेत्र क्या दूसरेके हैं। दूसरा कौन मेरा चरित्र लिख सकता है ?

घत्ता—भणु किं कहमि ण विरहु सहमि दूइइ पिय महु आणहि ॥
सा तेत्थु[12] पुरे थिय जम्मि[13] थेरे तहिं जायवि संमाणहि ॥५॥

६

सा दूईइ वत्तु[1] अम्हारी णयरि पुंडरिंकिणि पुरिसारी ।
वज्जदंतु पहु तहु सुहगारी लच्छीमइ महएवि भडारी ।
धीय ताहि सिरिमइ उप्पण्णी पिउ सुमरिवि जीवियणिव्विण्णी ।
पहु ताइ[2] लिहियउ कइवइयरु पइं जाणियउं णिरुत्तउ तुहुं वरु ।
एम भणेप्पिणु हउं पत्थाइय पडसंबंधिणि वत्त णिवेइय ।
तावेत्तहि कुमारु गउ तेत्तहि उप्पलखेडउ पुरवरु जेत्तहि ।
पियविओयसिहिजालालित्तउ घरि तलिमयलइ देहु णिहित्तउ ।
तरुणीवग्गु[3]रवडिउ पलोइउ णं वणवाहें मिगु[4] संभाविउ ।
घत्ता—रइहरिद्धएण[5] मयरद्धएण विद्धउ पंचहिं बाणहिं ॥
विवरीउ हुउ सो रायसुउ कह व ण मुक्कउ प्राणहिं[6] ॥६॥

७

दुप्परिणामें कामें तप्पइ सीयलमलयजपंकें लिप्पइ ।
रसइ हसइ णीससइ विरुज्झइ उट्ठउ बइसइ मोहें मुज्झइ ।
कर मोडइ धम्मेल्लय मेल्लइ अहरु डसइ अणिबद्धु पयोल्लइ ।
वेवइ वलइ विलासहिं गच्छइ परु पच्छेण्णु पउत्तिहिं पुच्छइ ।
एक्कहिं णिलइ ण णिविसु वि अच्छइ दिसि लिहियं पिव पियमुहुं पेच्छइ ।
ण्हाइ ण धुवइ ण जिणवरु पुज्जइ भूसणु लेइ ण भोयणु भुंजइ ।
रमइ ण कंदुउ तुरउ ण वाहइ करि वि रहु वि णयणेहिं ण चाहइ ।
गेउ ण सुणइ ण वज्जउ वायइ परं णिम्मीलियच्छु पुंय झायइ ।
एक्कु वि रायविणोउ ण माणउ कामगहिल्लउ किं पि ण याणइ ।
मंतिहिं वज्जबाहु विण्णवियउ तणउ देव मयणें परिहविियउ ।
घत्ता—हूई सइहि लच्छीमइहि जा सिरिमइ तहि रत्तउ ॥
दुक्खी णियइ दुक्करु जियइ कामाणलसंतत्तउ ॥७॥

---

१२. MBP जेत्थ । १३. MBP हरे ।

६. १. MBP वुत्तु । २. MBP ताहि । ३. M °वग्गुरु पडिउ विलोइउ; P वग्गुरु वडिउ विलोइउ । ४. MBP मिगु । ५. M रइविद्धएण; P रइरिद्धिएण । ६. MBP पाणहिं ।

७. १. MBP अणिबद्धउ बोल्लइ । २. MB पच्छण्णं । ३. P णिमिसु । ४. M तुरिउ । ५. MBP णयणहिं वि ण । ६. P परि । ७. MBP पिय । ८. P परिहाविउ ।

घत्ता—बताओ मैं क्या करूँ, मैं विरह सहन नहीं कर सकता। हे दूती, प्रियाको मेरे पास ला दो। वह जिस नगरमें और घरमें स्थित है वहाँ जाकर मेरी कुशलवार्तासे उसे सन्तुष्ट करो" ॥५॥

६

तब दूती बोली—"हमारी नगरी पुण्डरीकिणी सब नगरियोंमे श्रेष्ठ है। उसका कल्याण करनेवाला राजा वज्रदन्त है, उसकी आदरणीय महादेवी लक्ष्मीमती है। उसकी कन्या श्रीमती उत्पन्न हुई है, जो प्रियकी याद कर जीवनसे विरक्त हो चुकी है। यह कथावृत्तान्त उसने लिखा है। तुमने इसे (वृत्तान्तको) जान लिया है, तुम निश्चित रूपसे इसके वर हो। यह सोचकर मैं यहाँ आयी हूँ। पटचित्र सम्बन्धी वार्ता निवेदित की।" इस बीच कुमार वहाँ गया कि जो उत्पलखेड नामका नगर था। प्रियके वियोगकी ज्वालासे जलती हुई देहको घरके भूमितलमें डाल दिया। युवतीके जालमें पड़ा हुआ वह ऐसा दिखाई दिया, मानो वनव्याधाने मृगको आहत किया हो।

घत्ता—रतिसे समृद्ध कामदेवके द्वारा, पाँच बाणोंसे विद्ध वह राजकुमार एकदम छटपटाने लगा। किसी प्रकार उसने अपने प्राण-भर नहीं छोड़े ॥६॥

७

दुष्परिणामवाले कामसे वह सन्तप्त है, शीतल चन्दन लेपसे उसका लेप किया जाता है। वह बोलता है, हँसता है, निःश्वास लेता है, विरुद्ध होता है, उठा हुआ बैठ जाता है, मोहसे मुग्ध हो जाता है। हाथ मोड़ता है, बाल बिखराता है। ओठ काटता है, अण्टसण्ट बोलता है। काँपता है, मुड़ता है, विलासोंके साथ जाता है। दूसरेसे प्रच्छन्न उक्तियोंसे पूछता है। एक घरमें वह पलमात्र भी नहीं ठहरता, न नहाता है, न धोता है, और न जिनवरकी पूजा करता है। न आभूषण पहनता है और न भोजन ग्रहण करता है, न गेंद खेलता है। न घोड़ेपर चढ़ता है। हाथी और रथको तो वह आँखोंसे भी नहीं देखता। न गीत सुनता है और न वाद्य बजाता है। केवल आँखें बन्द कर अपनी प्रियाका ध्यान करता है। एक भी राजविनोद वह पसन्द नहीं करता। कामसे अभिभूत वह कुछ भी नहीं चाहता। तब मन्त्रियोंने राजासे निवेदन किया, "हे देव, पुत्र कामदेवसे पराभूत है।

घत्ता—हे देव! सती लक्ष्मीमतीकी जो श्रीमती कन्या है, वह उसमें अनुरक्त है, उसकी नियति आ पहुँची है, कामाग्निसे सन्तप्त उसका इस समय जीना कठिन है" ॥७॥

८

तं णिसुणिवि णहछोडउ देप्पिणु वद्धिउ णरवइ दर विहसेप्पिणु ।
गउ तहिं जहिं अच्छइ सो बालउ पभणइ पहु सुय थिउ किं कालउ ।
आवहि जाम ण होइ बियालउ अज्जु जि किज्जइ तुह पूयमेलउ ।
सुणह महारी पइं कहिं दिट्ठी अवरें वत्त णरिंदहु सिट्ठी ।
गउ कुमारु परिभमहुं सलीलइ दिट्ठउ पडु आलिहिउ जिणालइ ।
पुव्वजम्मु तहिं एण णियच्छिउ चिरकंतावयारु परिहच्छिउ ।
कामु वि कामरूवि जं पाडइ ताहि रूउ कं कं ण भमाडइ ।
पट्टइ लिहियउ हियवइ लिहियउ को तं पुसइ णिडालइ लिहियउ ।
अवसें होसइ णिव विहिविहियउ एम जाम मइबंधें कहियउ ।
ता सहुं पुत्तें समउ कलत्तें सहुं सेण्णेण धवलधयछत्तें ।
वज्जबाहु सहस त्ति पधाइउ णयरि पुंडरिंकिणि संप्राइउ ।
रक्खसोह पुरि कारावेप्पिणु लीलइ मत्तकरिंदि चडेप्पिणु ।
घत्ता—आवंतु पहे पहु अद्धवहे पविमुएण जयकारिउ ॥
सो तेण जिह देवीइ तिह तिह सुएण णेवयारिउ ॥८॥

९

सालउ सस बिण्णि वि जोएप्पिणु णयणहुं केरउ फलु पावेप्पिणु ।
राएं अवलोइयउ ससीयउ अच्छिउडेहिं रूवरसु पीयउ ।
पुरेणारीयणु कहिं मि ण माइउ अवरुप्परु चूरंतु पधाइउ ।
णिवइहि केरउ सहि धरणीवइ वज्जबाहु पहु सो बहिणीवइ ।
जसहरणामहु धीय जिणिंदहु एह वसुंधरि बहिणि णरिंदहु ।
एयहु उप्पलखेडणरेसहु दिण्णी सुंदरि णिरुवमवेसहु ।
जो सग्गाउ देउ अवयरियउ जो सिरिमइवरु जम्मंतरियउ ।
इहु सो वज्जजंघु हलि णरवरु एयहु संमुहुं मइं पसरिय करु ।
सो वि ण पावइ चित्तु जि पावइ तं पावंतु वि तणु संतावइ ।
पुरिसु होइ जइ एहउ वम्महु णं णं सो अणंगु मुणिमणमहु ।
का वि भणइ उच्चायहि मइं पिय लंघवि कोटटु पलोयमि वरसुय ।
ताइ णियंतिय रूवु कुमारहु पेम्मजलोल्लिय तणु भत्तारहु ।
घत्ता—रइपेल्लियउं उव्वेल्लियउं णिच्छुट्टंतु णिरुंभइ ॥
कविणिम्मलए चुयें मेहलए दढु परिहणुं णिव्वंधइ ॥९॥

---

८. १. MB सो अच्छइ । २. MBP कि थिउ । ३. MBP पियमेलउ । ४. MBP चिरु कंता° । ५. MBP पट्टालिहियउ । ६. B omits this line. ७. MBP णिलाडइ । ८. B °वहियउ । ९. MBP मइवंतें । १०. BP धवलछत्तत्तें । ११ MBP संपाइउ । १२. M णवियारिउ ।

९. १. MBPT ससीयउ । २. MBP पुरि । ३. K पराइउ । ४. MBP एहु; K एहु but corrects it to पहु । ५. MBPK बहिण । ६. MBP पसरिउ । ७. MBP पावंतु जि । ८. MBP वरसिय । ९. MP धुउ मेहलए दढ°; B चुए मेहलए दढ° । १०. MBP परिहाणु णिबंधइ ।

८

यह सुनकर अपना नाखून तोड़ता हुआ राजा कुछ मुसकाता हुआ उठा। वह वहाँ गया जहाँ वह बालक था। वह बोला—"तुम काले क्यों हो गये हो। आओ, जबतक शाम नहीं होती, तबतक आज ही तुम्हारा प्रियमिलाप करा दिया जायेगा। मेरी बहूको तुमने कहाँ देखा।" तब किसी एकने कहा—"कुमार लीलापूर्वक कहीं घूमनेके लिए गया हुआ था। उसने जिनालयमें एक चित्रपट लिखा हुआ देखा। उसमें इसने अपना पूर्वजन्म देख लिया और अपनी पूर्वजन्मकी कान्ताको जान लिया। जो कामको कामावस्थामें डाल देती है, ऐसी उसके रूपसे कौन-कौन नहीं नचाया जाता। जो पटमें लिखा है, हृदयमें लिखा है और जो भाग्यमें लिखा है, उसे कौन मिटा सकता है। भाग्यका लिखा हुआ हे राजन्, अवश्य होगा। इस प्रकार जब मतिबन्ध मन्त्रीने कहा तो राजा पुत्र और पत्नीके साथ सेना और धवल छत्रोंके साथ चला। वज्रबाहु एकदम दौड़ा और पुण्डरीकिणी नगरी आया। नगरमें मार्ग शोभा करवाकर और लीलापूर्वक मत्तगज पर चढ़कर—

घत्ता—पथपर आते हुए प्रभुका आधे पथपर वज्रबाहुने जयकार किया। जिस प्रकार उसने, उसी प्रकार उसकी देवी और पुत्रने भी नमस्कार किया ॥८॥

९

साले और बहन दोनोंको देखकर, अपने नेत्रोंका फल पाकर राजाने अपने भानजेको देखा और आँखोंके पुटसे उसका रूपरस पिया। पुर नारीजन कहीं भी नहीं समा सके। वे एक दूसरेको चूर-चूर करती (धकापेल करती हुई) दौड़ीं। "हे सखी, यह जो राजा वज्रबाहु है वह राजाका बहनोई है। यह यशोधर नामके जिनेन्द्रकी कन्या, यह वसुन्धरा राजाकी बहन है। अनुपम रूपवाले उत्पलखेडके राजाको यह दी गयी है। जो स्वर्गलोकसे अवतरित हुआ है वह श्रीमतीका जन्मान्तरका वर है। यह वह नरश्रेष्ठ वज्रजंघ है। हे सखी! इसके सम्मुख मैंने यह अपना हाथ फैलाया, लेकिन वह भी नहीं पा सकता, चित्र ही पा सकता है। उसे पाते हुए भी शरीर सन्तप्त हो उठता है। शायद यह कामदेवका पुरुष हो, नहीं-नहीं, यह तो मुनियोंके मनका मथन करनेवाला कामदेव है।" कोई एक कहती है—"हे प्रिय! मुझे ऊपर उठाओ, परकोटा लाँघकर मैं वरकी श्री देख लूँ।" प्रिय कुमारका रूप देखती हुई उसका शरीर प्रेमजलसे आर्द्र हो गया।

घत्ता—रतिसे प्रेरित, उद्वेलित और स्खलित होती हुई रुक जाती है। कोई अपनी निर्मल करधनीमें धोतीको कसकर बाँधती है ॥९॥

१०

का वि भणइ णगयग्गदुवारें अंतरियउ सूहउ पायारें ।
उब्भिउ करु करयलइ ण णयणइं किह पेच्छमि अंगाइं समयणइं ।
का वि भणइ भासिय दुव्वयणइं अज्ज परइ मेल्लेमि[1] पेइसयणइं[2] ।
एयहु घरि दासित्तु ममिच्छमि जीवमि छुडुं[3] मुहकमलु णियच्छमि ।
का वि भणइ णिवसुय सकॅयत्थी[4] ण वियाणहुं चिरु[5] काइं वउत्थी ।
एहउ जाहिं रमणु संपण्णउं मं छुडु को वि महातउ चिण्णउं ।
तहिं अवसरि पहुभवणि पइट्ठइं पाहुणाइं पीढेसु णिविट्ठइं ।
उवणिउ ण्हाणु विलेयणु णिवसणु ताहं सुकुसुमदामु मणिभूसणु ।

घत्ता—पुणु विविहु रसु सुरहिउ सुवंसु[6] पंचिंदियहुं पियारउ ॥
जेवणुं[7] जिमिउं णावइ रमिउं रइसुहुं धुत्तिहि केरउ ॥१०॥

११

भणइ णरिंदु ण किं पि वियप्पमि[1] धणु जं मग्गहि तं जि समप्पमि ।
तुहुं घरु आयउ तुह किं किज्जउ भणु भणु वज्जबाहु किं दिज्जउ ।
चवइ कुलिसंयरु[2] धणुकयसंकउ धणु गुणेण सहुं णिच्चु जि वंकउ ।
धणु मज्जु व मज्जावइ माणुसु धणु मारणउं बंधुढोइयविसु ।
धणुं[3] णयणइं जाणमि मइमइलइं तेण जि धणि इट्ठु[4] वि ण णिहालइ ।
धणु किं संणिवाउ जरु होसइ तेण जि धणि अणिबंधउं[5] भासइ ।
धणु काणीणहु दीणहुं दुल्लहु उत्तिमपुरिसहुं मोणु[6] सुदुल्लहु ।
सयलु अत्थि[7] महु तुज्झ पसाएं एक्कु[9] जि मग्गमि सुहिअणुराएं ।
सकुलायउ सोहइउं दावहि सिरिमइ वज्जजंघकरि लावहि[8] ।
तं णरणाहें वयणु समत्थिउ खिवहु उप्परि घिउ ओमत्थिउ ।
परभवाउ सुरमिहुणु जि आयउ महु तुह मंदिरि माणुसु जायउ ।
अच्छइ विरहाणलसंतत्तउ संजोइज्जइ दइवविहित्तउं[10] ।

घत्ता—चक्केसरहो तहु पवियरहो कण्णइ[11] लिहियउ आणिउ ॥
गुणभूसियए ता विउसियए पडपवंचु वक्खाणिउ ॥११॥

---

१०. १. B मेल्लिवि । २. MBP पिउसयणइं । ३. MBP फुडु । ४. P सकियत्थी । ५. B चिर । ६. MB सवसु । ७. MBP जेमणु ।

११. १. B वियप्पिमि । २. MBP कुलिसकरु । ३. MBP धणु णरणयणइं आणमि मइलइं । ४. MBP धणु इट्ठइं ण । ५. MBP अणिबद्धउं । ६. MBP माणु सुवल्लहु । ७ M मत्थि । ८. MBP लायहि । ९. MBP एउ जि । १०. MBP °विहत्तउ । ११. MBP बालइ लिहिउं वियाणिउं ।

१०

कोई कहती है कि "आँगनके पेड़, प्रतोली (नगरका अग्रद्वार) और परकोटेने प्रियको छिपा दिया है।" उसने हाथ उठाया। न तो हाथसे और न नेत्रोंसे, (कुछ दिखाई देता है), मैं कामदेवके समान अंगोंको किस प्रकार देखूँ ? दुर्वचनोंसे प्रताड़ित कोई कहती है—"मैं आज या कलमें पति और स्वजनोंको छोड़ देती हूँ और इसके घरमें दासी होना चाहती हूँ। मैं उसका मुँह देखकर जीवित रहूँगी।" कोई कहती है कि यह राजकन्या कृतार्थ हुई, न जाने पहले इसने कौन-सा व्रत किया था जिससे यह वर इसका हो गया ? जरूर इसने कोई महातप किया। उस अवसरपर राजाके भवनमें उन्होंने प्रवेश किया और अतिथि पीठोंपर बैठ गये। जहाँ उन्हें स्नान-विलेपन-वस्त्र-पुष्पदाम और मणिभूषण दिये गये।

घत्ता—फिर विविध रस सुरभित जीरक, पाँचों इन्द्रियोंको प्रिय लगनेवाला भोजन उन्होंने किया, मानो किसी धूर्तके रतिसुखका रमण किया हो ॥१०॥

११

राजा कहता है—"मैं कुछ भी नहीं सोच पा रहा हूँ, जो धन माँगो मैं देता हूँ। तुम घर आये तुम्हारे लिए क्या करूँ, तुम जो धन माँगते हो वह मैं दूँगा। हे वज्रबाहु, कहो कहो, क्या दिया जाये।" तब धनुषसे शंका करनेवाला वज्रबाहु कहता है—"धनुष गुणके साथ नित्य ही वक्र रहता है। धन मद्यकी तरह मनुष्यको मतवाला कर देता है; धन मारक होता है और भाइयोंमें विष संचार करता है। धनको मैं नेत्रों और बुद्धिको मैला बनानेवाला मानता हूँ। यही कारण है कि मैं धनमें कुछ भी भलाई नहीं देखता। धनसे क्या ? वह सन्निपात ज्वरके समान है; इसीलिए धनमें अनिबद्धता (अलगाव) कही जाती है। धन कानीनों (कन्यापुत्रों) और दीनोंके लिए दुर्लभ होती है, उत्तम पुरुषोंके लिए मान अत्यन्त दुर्लभ होता है, आपके प्रसादसे मेरे पास सब कुछ है, सुधिके अनुरागसे केवल एक चीज माँगता हूँ, अपने कुलका सौहार्द दिखायें और श्रीमती वज्रजंघके हाथमें दे दें।" राजा वज्रदन्तने इसका समर्थन किया, जैसे खिचड़ीके ऊपर घी डाल दिया गया हो, दूसरे जन्मसे यह देवयुगल आया है और इसने हमारे-तुम्हारे घरमें जन्म लिया है, वह जो विरहकी ज्वालासे सन्तप्त है, दैवसे वियुक्त इसका संयोग करा देना चाहिए।

घत्ता—चक्रवर्ती वज्रबाहुकी कन्याके द्वारा लिखित चित्रपट गुणभूषित विदुषी धाय लायी और उसकी व्याख्या की ॥११॥

१२

पियराहिरामाइ संपुण्णकामाइ ।
मुक्काइ मायाइ तुट्ठाइ मायाइ ।
परिखवियकम्माइ कइयाइ रम्माइ ।
जिणणाहपूयाइ दि[1]ण्णाइ धूवाइ ।
मुइसायकुंभेहिं [2]घेणघडियखंभेहिं ।
[3]रुप्पभंयकुड्डेहि आलिहियभद्देहिं[4] ।
विप्फुरियरयणेहिं वरहीरगहणेहिं ।
आसणविराइयहिं माणिक्कवेइयहिं ।
पडिणेत्तपच्छइउ कंतीइ [5]चेंचेइउ ।
[6]रुंझंतमोत्तियहिं णं दंतपंतियहिं ।
विहसंतु पडिहाइ दिट्ठीसुहं देइ ।
णाणापयारेहिं णाणादुवारेहिं ।
कउ मंडओ ताम संमाइ जणु जाम ।
मिलिएहिं सुहि[7]यणहिं भरिएहिं तोरणहिं ।
धणरवगहीरेहिं पहएहिं तूरेहिं ।
णच्चंततरुणीहिं मंडलियघ[8]रणीहिं ।
खयरीहिं जक्खिणिहिं णायरणियंबिणिहिं ।
हिमहारसं[9]रिसेहिं सजलेहिं कलसेहिं ।
पइपुत्तवंतीहिं महिणाहपत्तीहिं ।
सोहग्गसुंदरइं ण्हवियाइं वहुवरइं ।
पुणु पुणु पसाहियइं णवरइरसाहियइं ।
थुइवयणकलयलहिं धवलेहिं मंगलहिं ।
पुणु पुणु जि गाइयइं आसण्णढोइयइं ।

घत्ता—पसरियकरहे मयणिब्भरहे मणु मयणें [10]सुवियारिउ ॥
मुहवड्डु पियहे णं गयघडहे वरसुहडें ओसारिउ ॥१२॥

१३

सोहणे वासरे चारुलग्गुग्गमे उग्गदोहग्गदुक्खावलीणिग्गमे ।
पाणिणा पाणि तीए तिणा धारिओ अंगडाहो परं दूसहो हारिओ ।
रायराएण भिं[1]गारएणाणियं भा[2]यणेयस्स घित्तं करे पाणियं ।
अण्णजम्मागया तुज्झ सीमंतिणी तुज्झु मे दिण्णिया पेसलालाविणी ।
वाइणो वाउवेया पमत्ता गया पंचवण्णा पवित्ता विचित्ता धया ।

१२. १. P संदिण्णधूवाइ । २. MBP घड घडिउ खंभेहि । ३. MBP °कुंडेहि । ४. MB °भंडेहिं । ५. MBP चिंचइउ । ६. MBP झुल्लंत° । ७. P सुहयणहिं । ८. BP घरिणीहिं । ९. M °सरसेहिं । १०. MB सवियारिउ ।

१३. १. P भंगार° । २. MBP माइणेयस्य ।

१२

अपने प्रियके लिए सुन्दर, सम्पूर्ण काम, मुक्त और सतुष्ट माताने कर्मोंका क्षय करनेवाले जिननाथकी पूजा की और धूप दी। पवित्र स्वर्ण घटों, सघन निर्मित खम्भों, रजतनिर्मित दीवालों, अलिखित भांडों, चमकते हुए रत्नों तथा श्रेष्ठ हीरोंसे सघन आसनसे शोभित वेदियों और कान्ति-से अलंकृत शत्रुओंकी आँखोंको आच्छादित करनेवाला, चमकते हुए मोतियोंके समान अपने दाँतों-की पंक्तिसे जो हँसता हुआ जान पड़ता है और दृष्टिसुख देता है। नाना परकोटों, नाना द्वारोंसे युक्त इतना बड़ा मण्डप बनाया गया कि वहाँ तक सम्भव है उसमें जनसमूह समा सके। एकत्रित सुधीजनों, निबद्ध तोरणों, मेघध्वनिके समान गम्भीर बजते हुए तूर्यों, नृत्य करती हुई तरुणियों, मण्डलाकार गृहिणियों, विद्याधरियों, यक्षिणियों, नागरवनिताओं, हिमहारके समान जलमय कलशों और पतिपुत्रोंवाली राजमहिषियोंके द्वारा, सौभाग्यसे सुन्दर वधूवरको स्नान करवाया गया। उनका नवरति रससे अत्यन्त परिपूर्ण प्रसाधन किया गया। पास-पास बैठे हुए उनके स्तुति शब्दोंकी कलकल ध्वनिसे पूर्ण धवल मंगल गीतोंके साथ बार-बार गीत गाये गये।

घत्ता—जो मदसे परिपूर्ण है, तथा जिसके हाथ फैले हुए हैं ऐसी प्रियाका कामसे विदारित मन उसने मुखपटको हटा दिया मानो वरसुभटने गजघटाका मुखपट हटा दिया हो ॥१२॥

१३

जिसमें उग्र दुर्भाग्य और दुःखावलीका अन्त हो गया है ऐसी शुभ लग्नवाले सुन्दर दिन, उसने उस स्त्रीके हाथको अपने हाथमें ले लिया। और उसकी असह्य कामपीड़ाको शान्त कर दिया। राजराजेश्वरने भिंगारसे लाये गये पानीको भानजेके हाथपर डाल दिया (और कहा), दूसरे जन्मकी तुम्हारी कोमल आलाप करनेवाली पत्नी मैंने तुम्हें प्रदान कर दी। राजाने वायुके

जाण जंपाण छत्तं सियं चामरं देस गामं पुरं सत्तभूमं घरं ।
उज्जलं हंसतू[3]लक्कसेज्जायलं दीवओ मंचओ दासदासीउलं ।
[4]हारिवीरोहुओ इच्छियं मंडलं कंचिदामं वरं कंकणं कुंडलं ।
राइणा पुत्तिसंतोसउप्पायणं वत्थुसारं अणेयं पि[5] दिण्णं घणं ।
राय[6]पुत्तिं क[7]रेणुं व लीलागओ तं करे गेण्हिऊणं वरो णिग्गओ ।
मंडवे वेइयापट्टि आसीणओ वज्जबाहू समाणंदिओ राणओ ।
अक्खया पूयदू[8]वंकुरुम्मीसिया बंधुलोएण घित्ता सिरे सेसिया ।
जाव गंगाणई जाव मेरू गिरी ताम्व भुंजेह[9] तुम्हे वि णिच्चं सिरी ।
होंतु पुत्ता महंता पहाभासुरा[10] जंतु अच्छिण्णणेहेण वो वासरा[11] ।
अच्छमाणाइ लच्छीविसाला जहिं सो वरो सा वहू दो वि ताइं तहिं ।
घत्ता—लग्गिवि वरहो तहु वासरहो [12]परिवाडिइ सुहवासहिं ॥
अहिंसिचियइं पुणु अंचियइं णिवहिं दुतीससहासहिं ॥१३॥

१४

बा[1]लमुणालसरलकोमलयरु दियहहिं जंतहिं कीलइ वहुवरु ।
वरु सकामु काइं वि जंपावइ वहु लज्जंति तं जि संभावइ ।
वरु तणुपय[2]इजोग्गु आलिंगइ वहु मुक्की तं पुणु मणि मग्गइ ।
वरु केस[3]ग्गहेण ओणामइ वहु हेट्ठामुहुं मुहुं [4]णिक्कावइ ।
वरु म[5]उअउ जि करइ अहरग्गहु हुं हुं[6] मेल्लि दर भासइ णववहु ।
वरु थणसिहरइं छिवइ सहत्थें वहु णीलावस ढंकइ वत्थें ।
चीरु पसारिउ सणियउं पुंजइ वरु क[7]रें ऊरुजु[8]यलि णिउंजइ ।
वरु फेडवि घल्लइ पल्लंकइ पाणि देइ व[9]हु वयणससंकइ ।
वरु सोणीय[10]लहुत्तउ जोयइ वहु तहु दिट्ठिं[11] करहिं पच्छायइ ।
अलियणहेहिं णाहु संघट्टइ वहु उग्गयपुलएण विसट्टइ ।
चवइ रमणु रइहरि सिज्जंतइं आसि वे वि भणु किं लज्जंतइं ।
घत्ता—कीलिवि पवरे हिमगिरिसिहरे चलियइं उज्झायासहो ॥
तुह सिरिहरहो भरहेसरहो पुप्फयंतकइ[12]वासहो ॥१४॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे वज्जजंघसिरिमइसमागमो णाम चउवीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ २४ ॥

संधि ॥ २४ ॥

---

३. MBP °तूलंक°; K °तूलंक but corrects it to °तूलक्क° and gloss अर्कपिचुः अर्कतूलः । ४. M हार° । ५. MB पदिण्णं । ६. MBP रायपुत्तें । ७. P करेणु व्व । ८. MBP दूवंकुरामीसिया । ९. M भुंजेवि । १०. MBP भासुरं । ११. MBP वासरं । १२. MP पडिवाडिइ ।

१४. १. P बालु । २. MBP °पइयजोगु । ३. P केसगाहेण । ४. BP णिक्कावइ । ५. P मउ जि । ६. M महु मेल्लहि दर; BP लहु मेल्लहि दर । ७. B कर । ८. P °जुयलु । ९. MBP णियवयण° । १०. M सोणीयलु हुत्तउ; P सोणीयलहुत्तइ । ११. MBP करहिं दिट्ठि । १२. MP °कयवासहो; T records a *p* पुप्फयंतसइवासओहो इति पाठे चन्द्रादित्यदीप्तिस्थानकात् ।

समान वेगवाले प्रमत्त गज, पंचरंगी पवित्र ध्वज, यान, जम्पान, श्वेत छत्र, चमर, देश, ग्राम, पुर, सात भूमियोंवाले घर, हंस, रुई और सूर्यके समान उज्ज्वल शय्यातल, दीपक, मंच, दास-दासीका समूह, सुन्दर वीर समूह, इच्छित मण्डल, कांचीदाम, वर कंकण और कुण्डल आदि अनेक श्रेष्ठ, वस्तुएँ तथा पुत्रीको सन्तोष उत्पन्न करनेवाला प्रचुर धन दिया। जिस प्रकार लीलागज हथिनीको ले जाता है उसी प्रकार वह उस राजपुत्रीको हाथमें लेकर चला गया। मण्डपमें वेदिकापट्टी पर बैठे हुए राजा वज्रबाहुका अभिनन्दन किया गया। पवित्र दूर्वांकुरोंसे मिले हुए अक्षत और सरसों, बन्धुलोक ने उसके सिरपर फेंके और कहा कि जबतक गंगा नदी है, जबतक सुमेरु पर्वत है, तबतक तुम लोग भी सम्पत्ति का उपभोग करो। तुम्हारे प्रभासे भास्वर महान् पुत्र हों और तुम्हारे दिन अच्छिन्न स्नेहके साथ बीतें। लक्ष्मीसे विशाल वह वर और वह वधू जहाँ विद्यमान थे वहाँ—

घत्ता—उस दिनसे लेकर परम्पराके अनुसार, सुखसे निवास करनेवाले बत्तीस हजार राजाओंने उनका पूजन और अभिषेक किया ॥१३॥

१४

दिन बीतते रहे, और बालमृणालके समान सरल तथा कोमल करवाले वधूवर क्रीड़ा करते रहे। सकाम वर वधूसे कुछ भी मनवाता है, लजाती हुई वधू उसीको मान लेती है। वर अपने शरीरके अनुरूप उसका आलिंगन करता है। आलिंगनसे मुक्त होनेपर वधू फिर उसीको अपने मनमें चाहती है। वर बाल पकड़कर वधूको झुकाता है, वधू अपना मुँह नीचा करके मुँहको छिपाती है। वर अधरोंके अग्रभागमें मृदु-मृदु कुछ करता है, नववधू हुँ-हुँ कहकर कुछ बोलती है। वर अपने हाथसे स्तनशिखरोंको छूता है, वधू लज्जाके कारण उन्हें अपने वस्त्रसे ढक लेती है। फैले हुए वस्त्र (साड़ी) को प्रिय धीरे-धीरे इकट्ठा करता है, और अपना हाथ दोनों जाँघोंमें डालता है। वर उस (वस्त्र) को निकालकर पलंगपर डाल देता है, वधू मुखपर शंकासे अपना हाथ रख लेती है। वर कटितलमें उस (कि गुह्यांग) को देखता है, वधू हाथोंसे उसकी दृष्टि ढक लेती है। समर्थप्रेमसे प्रिय भिड़ जाता है, वधू रोमांचसे विशिष्ट हो जाती है। रतिगृहमें प्रिय कहता है कि यहाँ हम दोनों हैं, बताओ...और लज्जा करनेसे क्या।

घत्ता—विशाल हिमगिरिके शिखरपर क्रीड़ा कर, वे दोनों तुम्हारे श्रीगृह भरतेश्वर और सूर्यचन्द्रके निवास ऊर्ध्व आकाशकी ओर चले ॥१४॥

त्रेसठ महापुरुषोंके गुण और अलंकारोंवाले इस महापुराणमें महाकवि पुष्पदन्त द्वारा विरचित और महाभव्य भरत द्वारा अनुमत महाकाव्यका वज्रजंघ श्रीमती समागम नामका चौबीसवाँ परिच्छेद समाप्त हुआ ॥२४॥

संधि २५

अणुदिणु दंसणेण संभासणेण दाणसंगवीसासें[1] ॥
[2]पिंडभाउग्गमणे रमणीरमणे रमइ विसेसविलासें[3] ॥ ध्रुवकं ॥

१

पप्फुल्लपोमपहसियमुहाहं कल्लाणण्हाणपुज्जारुहाहं ।
मउमणियमम्मणुल्लाविराहं [4]उरुउरुहजुयलालियकराहं ।
अवरुंडणपसरियमु[5]यवलाहं मुहकंठमूलि[6] चुंबणरयाहं[7] ।
रइजलरेल्लियसयणोयराहं धियकेसहं महुपीयाहराहं ।
कयपणयको[8]वसंभाविराहं लीलाकडक्खविक्खेविराहं ।
पविजंघसिरीमइवहुवराहं कीलंतहं गयबहुवासराहं ।
रूवें सोहग्गें अद्[9]दुईय हिमकिरणकंति [10]°कुलिसयरधीय ।
सिरिमइव[11]इ[12]रेल्लहुईसस मयच्छि णं वि[13]कमलकर सयमेव लच्छि ।
णामेणाणुंधरि सोक्खहेउ णियणंदणु णं सो कामएउ ।
[14]लच्छीमइदेवीगब्भजाउ परिणा[15]मिउ राएं अमियतेउ ।

घत्ता—तणय वसुंधरहि वरभरधरहि छज्जइ तहु करि लग्गी ॥
कुलउत्तहु हिरि व कण्हहु सिरि व दिहि व रिसिहि आवग्गी ॥१॥

२

अण्णहिं दिणि दिण्ण पयाणभेरि दससु वि दिसासु थरहरिय वेरि ।
णरणाहें करिकरदीहबाहु णियणयरहु पेसिउ वज्जबाहु ।
सहुं सुणहइ सहुं णियतणुरुहेण सहुं सकलत्तें ससहरमुहेण ।
आउच्छिवि इट्ठ विसिट्ठ बंधु संचलिउ सुयणु चंदक्कचिंधु ।
उप्पलखेडाहिउ चमुसमेउ अम्मणु अंचहुं णीसरिउ राउ ।

MBP give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza:—

उन्नतातिमनुमात्रपात्रता भाति भत्र भरतस्य भूतले ।
काव्यकीर्तिघण्टारवो गृहे यस्य पुष्पदन्तो दिशागजः ॥

GK do not give it.

१. १. MBP °वीसासहिं । २. MBP पिय° । ३. MBP °विलासहिं । ४. MBP उरि उरुह°; K उरउरुह° । ५. MBP भुयलयाहं । ६. MB मूलु । ७. B °रहाहं । ८. MBP °कोवसंभाविराहं । ९. MBPT अद्दुतीय । १०. B कुलिसेयवीय । ११. MBPK °वइ° । १२. MB सियच्छि । १३. MP विगयकमल; B विकमलकल । १४. MBP लच्छीमइदेविहि गब्भि जाउ । १५. MBP परिणाविउ ।

सन्धि २५

प्रतिदिन वह प्रियभावको उत्पन्न करनेवाले रमणी रमणमें दर्शन, सम्भाषण, दान संग और विश्वास तथा विशेष विलासके साथ क्रीड़ा करता है।

१

खिले हुए कमलोंके समान अपने मुखोंसे हँसते हुए, अरहन्त भगवान्‌का कल्याणस्नान और पूजा करते हुए, मृदु सुन्दर और मार्मिक बोलते हुए, विशाल उरोजोंको अपने हाथोंसे सहलाते हुए, आलिंगनके लिए हाथ फैलाते हुए, मुख और कण्ठोंके मूल भागमें चुम्बन करते हुए, रतिजलसे स्वजन समूहको हटाते हुए, केश पकड़ते हुए, अधरोंका मधुरासव पीते हुए, कृत्रिम क्रोधकी सम्भावना करते हुए, लीला-कटाक्ष चलाते हुए, इस प्रकार वज्रजंघ और श्रीमती वर-वधूको बहुतसे दिन क्रीड़ा करते हुए बीत गये। वह श्रीमती रूप और सौभाग्यमें अद्वितीय थी। चन्द्रमाकी कान्तिके समान, वज्रबाहुकी कन्या। श्रीमतीके वर वज्रजंघकी छोटी बहन मृगाक्षिणी, मानो खिले हुए कमलोंके समान हाथवाली स्वयं लक्ष्मी हो। अनुन्धरा नामकी सुखकी कारण। उसका (वज्रदन्तका) अपना पुत्र था जो मानो कामदेव था, लक्ष्मीमती देवीके गर्भसे पैदा हुआ। राजाने अमिततेजका उससे विवाह कर दिया।

घत्ता—गृहभारको धारण करनेवाली वसुन्धरा (वज्रजंघकी माँ) की कन्या अनुन्धरा उसके हाथ लगी हुई ऐसी मालूम देती है मानो कुलपुत्रके साथ लज्जा (हृ) कृष्णके साथ श्री और ऋषिके साथ धृति लगी हुई हो ॥१॥

२

दूसरे दिन उसने प्रस्थानका नगाड़ा बजवाया। शुक्र दसों दिशाओंमें काँप उठे। राजाने हाथीके समान दीर्घ बाहुवाले वज्रबाहुको अपने नगरके लिए भेज दिया। अपनी बहू, पुत्र एवं चन्द्रमुखी अपनी पत्नीके साथ, इष्ट और विशिष्ट बन्धुओंसे पूछकर चन्द्रार्क चिह्नवाला वह सुजन चला। उत्पलखेड़का वह राजा, अपनी सेनाके साथ कितना मार्ग चलनेके लिए बाहर

हरिखुरधूलीधूसरिउ सग्गु छत्तहिं छाइउ दिसविदिसमग्गु ।
पहरणविप्फुरणहिं जिगिजिगंतु चउपासहिं दीसइ महिदियंतु ।
गयमयजलधारहिं[3] भरइ तल्लु हयलालइ हुउ चिक्खुल्लु खोल्लु ।
गुरुयणविओयतावें चुयाइं पुत्तियहिं पुंसेप्पिणु अंसुयाइं ।
सहुं कामिणीहिं पंकयमुहीइ पंडिय संपेसिवि समउ तीइ ।
आसण्णपंथि सुंदरपएसि सरसीमारामसिरीणिवेसि ।
पेच्छिवि परिपुच्छिवि सयणविंदु णियभवणहु पल्लट्टउ णरिंदु ।

घत्ता—इयरु वि जंतु पहे भज्जइ दियहे उप्पलखेडु पइट्ठउ ॥
पुरयणपरियणहिं कयतोरणहिं मंगलसेसहिं दिट्ठउ ॥२॥

३

पिउघरि णं रइरंजियउ मारु सहुं वहुयइ सुहुं अच्छइ कुमारु ।
लक्खणवंजणहिं पसाहियाइं जमलइं पण्णासेक्काहियाइं ।
वरतणयहिं जणियइं सिरिमईइ सुललियकव्वाइं व कइमईइ ।
एक्कहिं दिणि राणउ वज्जबाहु जावच्छइ सुहसीलंबुवाहु ।
सउहइ सेहीरासणणिसण्णु तां कालीयरवरकिरणवण्णु ।
णहयलि अवलोइउ सरयमेहु णं विहिणा णिम्मिउं दिव्वु गेहु ।
उत्तुंगसिहरसुरहरसमाणु पुणरवि सो दिट्ठु विलीयमाणु ।
चिंतइ पहु गउ वारिहरु जेम आएसमि पलयहु हउं मि तेम ।
जीविउ धणु पुत्तु कलत्तु वासु होसइ थिरु घणसंकासु कासु ।
इय भणिवि तेण परणरदुलंघु कुलसिरिहि समप्पिउ वज्जजंघु ।
सहु सुयसुएहिं सुयबहुसुएहिं अवरेहिं मि रायहिं थिरसुएहिं ।
जिणदिक्ख लेवि कउ कम्ममोक्खु तेणासाइउ तं परमसोक्खु ।
रुक्काहिंडियसुरसुंदरीहि एत्तहि वि[11] पुंडरीकिणिपुरीहि ।

घत्ता—जा[12] सो चक्कवइ सुहवद्धरइ अच्छइ महुलिहमाणिउ ॥
ता णिसि मिलियदलु सुरहिउं कमलु उववणवालें आणिउं ॥३॥

४

जोइउ णरणाहें लेवि णलिणु को फिर ण णियइ गोमिणिहि भवणु ।
उग्घाडइ तं सो रमणराइ लच्छीमुहदंसणि कामु णाइं ।
तं वारवार चप्पिवि करेण विहडियउ कमलु सूरेण तेण ।

२. १. MBPK °धूलिइ धूसरिउ । २. MBP दिसिविदिसि° । ३. M °धारहिं । ४. MBP चिक्खिल्लु । ५. K °णिवेसि । ६. MBP पल्लट्टिउ । ७. MBP उप्पलखेडि ।

३. १. MB °रंजियकुमारु । २. MBP °वंजणहिं । ३. K सुहसीलंबु° ४. MBP सउहयलइ । ५. MBT सीहासण°; P सीहासणि । ६. MBP ता तें कालीयरकिरण° । ७. MBP दिव्वगेहु । ८. MBP °सिहरु । ९. MBP सो पुणरवि । १०. MBP होहइ । ११. MBP पुंडरिकिणि° । १२. MP जो ।

४. १. M णडिणु । २. MBP °दंसणकामु ।

निकला ? घोड़ोंकी धूलसे स्वर्ग धूसरित हो गया। दिशाओं और विदिशाओंके मार्ग छत्रोंसे आच्छादित हो गये। अस्त्रोंके विस्फुरणोंसे चमकते हुए मही दिशान्त चारों ओर दिखाई देने लगे। हाथियोंके मदजलधाराओंसे ताल भर गये। घोड़ोंकी लारसे गम्भीर कीचड़ हो गयी। गुरुजनोंके वियोग-सन्तापके कारण गिरते हुए पुत्रीके आँसुओंको पोंछनेके लिए दूसरी कामिनियों सहित कमलमुखी उसके साथ एक पण्डिता भेजी। जिसमें पास-पास मार्ग हैं, सरोवर सीमोद्यान और श्रीका निवास है ऐसे सुन्दर प्रदेशको देखते हुए अपने स्वजन समूहको पूछते हुए राजा अपने भवनकी ओर लौटा।

घत्ता—सुन्दर पथपर जाता हुआ दूसरा भी दिन उत्पलखेड़में प्रविष्ट हुआ। पुरजनों और परिजनोंने तोरण बाँधकर मंगलों और तिलोंके दर्शन किये ॥२॥

३

अपने पिताके घरमें वधूके साथ कुमार सुखसे रहने लगा, मानो रतिसे रंजित कामदेव हो। लक्षणों और सूक्ष्म चिह्नोंसे प्रसाधित इक्यावन पुत्र-युगल (एक अधिक पचास) श्रेष्ठपुत्र श्रीमतीसे पैदा हुए, उसी प्रकार जिस प्रकार कवि-प्रतिभा सुन्दर काव्योंको जन्म देती है। एक दिन राजा वज्रबाहु, जो सुन्दर क्रीड़ाओंके लिए मेघके समान था, सौधतलमें सिंहासनपर बैठा हुआ था, तब उसने आकाशतलमें चन्द्रमाकी श्रेष्ठकिरणके रंगका शरद्मेघ देखा, मानो जैसे विधाताने दिव्य घर बना दिया हो। ऊँचे शिखरवाले देवविमानके समान वह भी फिर विलीन होते हुए दिखाई दिया। राजा विचार करता है जिस प्रकार यह मेघ चला गया, उसी प्रकार मैं भी नाशको प्राप्त होऊँगा। जीवन-धन-पुत्र-कलत्र और घर मेघके समान किसके पास स्थिर रहते हैं ? यह सोचकर उसने शत्रुनरके लिए अलंघ्य वज्रजंघके लिए कुलश्री सौंप दी। और अपने बहुत-से बहुश्रुत पुत्र-पुत्रों और दूसरे भी स्थिर भुजावाले राजाओंके साथ उसने जिनदीक्षा ले ली। उसने कर्मोंसे मोक्ष पाकर परम सुख प्राप्त कर लिया। यहाँ भी जिसकी गलियोंमें सुर-सुन्दरियाँ भ्रमण करती हैं ऐसी पुण्डरीकिणी नगरीमें—

घत्ता—शुभमें प्रेमको निबद्ध करनेवाला वह राजा चक्रवर्ती रह रहा था, तब रात्रिके समय एक मुकुलित दलवाला सुरभित कमल उद्यानपालने लाकर दिया ॥३॥

४

उस कमलको लेकर राजाने देखा, लक्ष्मी (शोभा) के घरको कौन नहीं देखता ? क्रीड़ानुरागी वह राजा उस फूलको खोलता है, जैसे काम लक्ष्मीका मुँह देखनेके लिए (उत्सुक हो);

पुणु पुणु लीलइ कीलंतएण एक्केकु पत्तु अवणंतएण ।
इच्छिउ राएं खरदंडणासु खरदंडणासु तहु गुणविसेसु ।
ववगयमलदलवलयंतरालि अवलोइउ अलि केसररयालि ।
सररुहकरंडि णिम्मुक्कजीउ णं इंदणीलमणि णियवि राउ ।
भासइ हे मामि सिलीमुहेण करिकण्णझडप्पणु सहिउ एण ।
दाणुल्लि कवोलि घुंणंतएण संपत्तउ दुक्खु रडंतएण ।
घत्ता—दिसहिं समुल्ललइ लोलइ वलइ रुद्धउ कहिं पसरइ करु ।
णिसि तमपिहियमुहे एत्थंबुरुहे गंधलोलु मुउ महुयरु ॥४॥

५

आरोहणबंधणताडणाइं अंकुसखयाइं कइवेयणाइं ।
गणियारिफासवसमागएण भणु किं ण विहुरु विसहिउं गएण ।
रसलालसु मासकणावलुद्धु परिधावमाणु संमुहउं मुद्धु ।
सरिविउलविमलजलि कीलमाणु धीवरगलेण गलि भिण्णु मीणु ।
संगीयगोरिगयचित्तसोत्तु णउ पेक्खइ संमुहुं सरु सरंतु ।
णउ पेक्खइ विसयासाइ दमिउं चउदिसेहिं वि वग्गुरवेढु भमिउं ।
घोएं संपाविउ प्राणणिहणु वणि वाहें विद्धउं हरिणमिहुणु ।
पवसियमहिलंसुयहंतसिहेण तिडितिडियतिडिक्कारवणिहेण ।
वेच्छिल्लकुसुमसमवण्णएण दीवुच्छवि देहलिदिण्णएण ।
रूवरयपयंगहं कयखएण णं भासिउ भावइ दीवएण ।
एमेव कयंताणणि पडंति मोहंध सयल सहि खयहु जंति ।
एक्केक्किंदियवसमुवगयाहं एवड्डु दुक्खु तेहिं जंतुयाहं ।
असरिसपंचक्खरसामिसाहं चक्खियपंचक्खरसामिसाहं ।
कंपावियदसदिसिवहरसाहं अक्खवि तं किं अम्हारिसाहं ।
घत्ता—इय संभरिवि मणे आहूउ खणे अमियतेउ णूवसंसिउ ॥
तेण समायएण जुवरायएण जणणु सिरेण णमंसिउ ॥५॥

---

३. MBP णिम्मुक्कु जीउ । ४. MBP इंदणीलु मणि । ५. MBPK घुलंतएण । ६. M संपत्तु दुक्खु करदंडएण; MP संपत्तु दुक्खु करडंतएण । ७. BP समुल्लसइ । ८. MBP मुउ ।

५. १. MBP °ताडणबंधणाइं । २. MBP कय° । ३. B सुद्धु । ४. MBP °दिसहिं वग्गुरावेढु । ५. MBP पावें संपाइउ पाण° । ६. MBPK हय° । ७. MBP कंकेल्लिकुसुम°; T विच्छिल्ल कोरण्टकः । ८. M रूवयरपयरंगहं; BP रूययरपयंगहं । ९. MBP जहिं । १०. M असरिसपंच°; T असरिय° । ११. MBK दसदिस°; T दसदिसि° । १२. MBP अक्खमि । १३. MBP णिव° ।

बार-बार अपने हाथसे चाँपकर उस वीरने उस कमलको मसल दिया। फिर बार-बार क्रीड़ाके साथ उससे खेलते हुए, उसका एक-एक पत्ता तोड़ते हुए राजाने उस कमलको चाहा। खरको दण्डसे नाश करना उसका (राजाका) गुण-विशेष था। मैले पत्तोंका समूह जिसके अन्तरालसे हट गया है, ऐसी कमलरूपी मंजूषामें परागरजमें लीन एक निर्जीव भ्रमर उसने देखा, जैसे इन्द्रनील मणि हो। उसे देखकर राजा कहता है—हे सखी, देखो इस भ्रमरने हाथियोंके कानोंके आघातोंको सहा है, मदजलसे गीले कपोलोंपर घूमते हुए और गुनगुनाते हुए, यह दुःखको प्राप्त हुआ है।

घत्ता—यह दिशाओंमें उल्लसित होकर चलता है, मुड़ता है, रुद्ध होनेपर अपने कर कहाँ फैला पाता है? लेकिन रात्रिमें अन्धकारसे ढँके हुए इस कमलमें गन्धलोलुप यह भ्रमर मर गया ॥४॥

५

'आरोहण बन्धन ताड़न' और वेदना उत्पन्न करनेवाले अंकुशोंके आघात, और हथिनीके स्पर्शके वशीभूत होकर आता हुआ हाथी, बताओ कौन-सा दुःख सहन नहीं करता। रसका लोभी मांसकणोंका लोलुप सामने दौड़ता हुआ मूर्ख मीन, नदीके विपुल जलमें क्रीड़ा करता हुआ धीवरके काँटेसे गलेमें फँसा लिया जाता है, गाती हुई गोरी अपना चित्त और कान लगाये हुए हरिण नहीं देखता, सामने आता हुआ तीर, विषयोंकी आशासे दमित हरिणका जोड़ा खेतके चारों ओर घिरे हुए बागरको नहीं देखता, और प्रायः वनमें व्याधके द्वारा विद्ध होकर निधनको प्राप्त करता है, जिसकी शिखा प्रोषित-पतिकाओंके आँसुओंसे आहत है, जो तिड़-तिड़-तिड़की ध्वनिसे मुक्त है, जो कोरण्टक पुष्पके समान पीले रंगवाला है, देहलीपर रखे हुए, तथा रूपमे लीन शलभोंका क्षय करनेवाले दीपकके द्वारा कहा गया उसे अच्छा नहीं लगता, इस प्रकार सभी यमके मुँहमें पड़ते हैं। हे सखी, सभी मोहान्ध क्षयको प्राप्त होते हैं। एक-एक इन्द्रियोंके वशमें होनेवाले जीवोंको जब इतना बड़ा दुःख है, तब पाँच अक्षरोंके स्वामी (अरहन्तादि) का स्मरण नहीं करनेवाले, तथा पाँच इन्द्रियोंका स्वाद चखनेवाले तथा दसों दिशाओंके पथों और धरतीको कँपानेवाले हम लोगोंके दुःखोंको कहनेसे क्या?

घत्ता—अपने मनमें इस प्रकार विचार कर उसने एक पलमें राजाओंसे प्रशंसनीय अमिततेजको बुलाया। आये हुए उस युवराजने अपने पिताको सिरसे नमस्कार किया ॥५॥

६

राएण भणिउं भो भो कुमार धरि धरणिभारु धंउरेयधीर ।
कलिकलुसपंकु तवहुयवहेण हउं सोसेमि कंपियसयमहेण ।
तुहुं देहि कुलक्कमभरहु खंधु ता चवइ तणउ सो मयरचिंधु ।
मइं पहणेवउ परमायरेण तमणियरु व बालदिवायरेण ।
कामिणि मेइणि वि जगेक्कराय पइं मुत्ती भुंजमि केम ताय ।
तुह पयपंकयरयचंचरीउ कूरारिलुलाययपुंडरीउ ।
जिह लच्छीहरु तिह पुंडरीउ आसणु अल्लिवहि सपुंडरीउ ।
महु तणउ तणउ सो पुंडरीउ इह करउ रज्जु नृवपुंडरीउ ।
हउं तुहुं मि बे वि साहहुं परत्तु तं णिसुणिवि राएं तं जि वृत्तु ।
घत्ता—तो सिसु ससिसरिसु जयकयहरिसु महिणाहें सोमालउ ॥
रज्जि परिट्ठविउ णरवरणविउ पुत्तु पुत्तु पय पालउ ॥६॥

७

परिसेसियमत्तमहागएण परिसेसियचलहिंसियहएण ।
परिसेसियकंचणसंदणेण परिसेसियभडवरणंदणेण ।
परिसेसियबहुवेसंतरेण परिसेसियपउरंतेउरेण ।
परिसेसियसयलवसुंधरेण जायवि देवें चक्केसरेण ।
जसहरसीसहु गणहरहु पासि पव्वज्ज लइय गिरिकुहरवासि ।
दिज्जंति ण इक्छिय पुहइ जेण सह अमियतेयणामेण तेण ।
उच्चारियजिणवरथुइसुहाहं सहसु जि बयमासिउ तणुरुहाहं ।
पव्वइया मुणिमयजाणियाहं सह सट्ठिसहस रायाणियाहं ।
दिक्खंकियाइं लुंचेवि केस णाणाणिवाहं सहसाइं वीस ।
इय राएं किउ णिक्खवणु जाम संपत्त विलासिणि तहिं जि ताम ।
घत्ता—पंडिय तवचरणु दुक्कियहरणु लेवि थक्क णियजोग्गउ ॥
किउ मणु अप्पवसु कंदप्पवसु होंतउ खंतिइ भग्गउ ॥७॥

८

णिरुद्धयं णिराइणा समाणसं विराइणा ।
विमुक्कओ सवासओ सभूसणो सवासओ ।
समासिओ तवासओ लुओ कयंतवासओ ।

---

६. १. MBPK धोरेय° । २. K सोसवि । ३. M मेइणि जगि एक्क°; BP मेइणि व जगेक्क । ४. MBPT अल्लवहि । ५. MBP णिव° । ६. MBP तो ।

७. १. K adds this foot in the margin. २. K omits this foot. ३. M णंदरेण; P °दंसणेण, but records a *p* °णंदणेण । ४. M लेण । ५. MBP पव्वइयइं । ६. P कंदप्पु वसु ।

८. १. T विमुक्कणग्गवासओ and adds : सवासउ इति पाठे निजगृहमित्यर्थः । २. MBP समाहिओ ।

६

राजा बोला—"हे कुमार, धुरी उठानेमें धीर तुम धरतीका भार उठाओ। मैं सैकड़ों पापोंको कँपानेवाली तपकी आगसे कलियुगके पापके कलंकको शोषित करता हूँ। तुम कुल-परम्पराके भार-को अपना कन्धा दो।" तब वह कामध्वजी पुत्र उत्तर देता है, "मैं भी परमादरके साथ इसको नष्ट करता हूँ उसी प्रकार, जिस प्रकार बालसूर्यके द्वारा अन्धकारसमूह नष्ट कर दिया जाता है। हे विश्वके एकमात्र सम्राट्, आपके द्वारा भोगी गयी भूमि और धरतीका उपभोग मैं कैसे करूँगा। आपके चरणकमलकी धूलका भ्रमर, क्रूर शत्रुरूपी लक्ष्मीके लिए व्याघ्र, मैं। जिस प्रकार लक्ष्मीधर है उसी प्रकार पुण्डरीक है। इसलिए अपने पुण्डरीकको आसन दे दीजिए। वह पुण्डरीक मेरा पुत्र है। हम-तुम दोनों ही साधुत्वको प्राप्त हों।" यह सुनकर राजाने भी अपनी स्वीकृति दे दी।

घत्ता—तब चन्द्रमाके समान कोमल, जयमें हर्ष मनानेवाले बालकको राजाने राज्यमें प्रतिष्ठित कर दिया (और कहा) कि नरश्रेष्ठोंके द्वारा प्रणम्य हे राजन्, पुत्र-पुत्र ! तुम प्रजाका पालन करना ॥६॥

७

मत्त महागजोंको छोड़ देनेवाले, चंचल हिनहिनाते घोड़ोंको छोड़ देनेवाले, स्वर्णरथोंको छोड़ देनेवाले, श्रेष्ठ योद्धाओं और पुत्रोंको छोड़ देनेवाले, बहुत-से देशान्तर छोड़ देनेवाले, विशाल अन्तःपुर छोड़ देनेवाले, समस्त धरतीको छोड़ देनेवाले, चक्रवर्ती देव वज्रदन्तने यशोधरके शिष्य गणधरके पास गिरिकुहरके घर जाकर दीक्षा ले ली, उस अमिततेजके साथ कि जिसने दी जाती हुई पृथ्वीको भी नहीं चाहा। अपने मुखोंसे जिनवरकी स्तुतियोंका उच्चारण करनेवाले एक हजार पुत्रोंने व्रत लिये और मुनिमार्गको जाननेवाले साठ हजार राजा भी प्रव्रजित हुए। और भी दूसरे-दूसरे बीस हजार राजाओंने केशलोंच कर दीक्षा ग्रहण कर ली। इस प्रकार जैसे ही राजाने संन्यास लिया कि वह विलासिनी (अनुन्धरा) वहाँ पहुँची।

घत्ता—वह पण्डित पापोंका हरण करनेवाला अपने योग्य तपश्चरण लेकर स्थित है। शान्तिसे भग्न और कामवश होते हुए उसने अपना मन वशमें कर लिया ॥७॥

८

विरागी राजाने अपना मानस रोक लिया। अपना वास, अपने आभूषण और अपने वस्त्र

णिवारिओ कसायओ समीहिओ कसाँयओ।
मईहरो पिसायओ जिओ पैहुल्लसायओ।
चलेहिं जा ण साहिया थिरेहिं जाण साहिया।
दढं दिही[5] हणंति सा परज्जिया छुहा तिसा।
सरंतु सो वसी अयं सहेइ माहसीययं।
विइण्णवाणरोडरं भरंतरुक्खकोडरं।
णियाहिदेहकंचुयं घणागमे वि कं चुयं।
महीहरे भयालए हुयम्मि गिण्हँयालए।
रविस्स संमुहो ठिंओ तवेइ मोक्खपंथिओ।
[10]अँहिण्णभूतणग्गयं सबाहिरंतणग्गयं।
महाखले वि सामिणं णमंसिऊण सामिणं।
तओ असुंधरीसुया अणुंधरी ससासुया[11]।
धरेवि पुंडरीययं सिरि[12] व्व पुंडरीययं।
पईविओयकालिया अचंदिम व्व कालिया।
समंदिरं समाइया अमेयतेयमाइया।

घत्ता—सुयरिवि[13] णिययवइ सा हंसगइ घिवइ सरीरु महित्थले[14] ॥
णयणंजणमइलु कुंकुमकविलु अंसुपवाहु थणत्थले ॥८॥

९

पुणु सोउ मुएप्पिणु हसियचंदु जोइउ णत्तियवयणारविंदु।
वरमंतिमंतणिम्मलमईइ संचितिउ मणि लच्छीमईइ।
णिज्जइ दवग्गि वणि मारुएण णिज्जीव णाव वंणि तारुएण।
असहायहु कासु वि णत्थि सिद्धि चिंतेवी पढम सहायरिद्धि।
जो धरिउ भारु णाहें विसालु तं वहइ केम अँव्वत्तु बालु।
जं धवलु धुरंधरु धारु धरइ तहि भरिण व वच्छु ण पउ वि सरइ।
गंधव्वणयँररायहु सुवाय मंदरमालिहि सुंदरिहि जाय।
चिंतागइ मणगइ खयरराय देवीइ भणिय ते बे वि भाय।
इहु लिहिउं लेहु मइं कउं मणम्मि सामुग्गइ णिहिउँ सलंछणम्मि।
जाइवि वररमणीदुल्लहासु णिक्खिवँहु सिरीमइवल्लहासु।
णिसुंणिवि अम्महि कम णवेवि पाहुडु लेविउं[10] आहरणु लेवि।
गय ते णहेण कंटइयदेह पयजुयणेहीराउणियमेह।

३. P कसाईओ। ४. MT पिहुल्ल°। ५. MB दिहिं; P दिहं। ६. GK ययं but gloss अजम्। ७. MBPK गिभयालए। ८. M संमुहे। ९. MBP थिओ। १०. MBP अभिण्ण°। ११. K ससासुया but corrects it to मुसासुया। १२. P सरि व्व। १३. MBP सुमरिवि; K सुयरिवि। १४. MP महीयले; B महयले।

९. १. MBP °मंतिमंत°; K °मंते मंत°। २. K जलि। ३. MBPT अबुहत्तु। ४. B °णयरे रायहु। ५. MBP लेहु लिहिउ। ६. M कय। ७. BP लिहिउ। ८. MBP णिक्खेवहु सिरिमइ°। ९. MBP तं णिसुणिवि अवहियवयणु बे वि। १०. MBP चेलिउ।

छोड़ दिये। तपका आश्रय ले लिया। यमके पाशको काट दिया। कषायोंका निवारण कर दिया। परमात्माके स्वादकी इच्छा की। बुद्धिका अपहरण करनेवाले पिशाच कामदेवको जीत लिया। जो चंचल चित्तवालोंके द्वारा सिद्ध नहीं होती स्थिर चित्तवालोंसे सिद्ध हो जाती है, ऐसा जानो। जो दृढ़ धैर्यको भी नष्ट कर देती है ऐसी उस क्षुधाको जीत लिया। वह वणीजिन चलते हुए माघ माहकी ठण्ड सहन करते हैं। वर्षाकालमें भी जो वानरियोंको भय प्रदान करता है। वृक्षोंके कोटरोंको भर देता है, साँपोंके केंचुलोंको प्रवाहित कर देता है, गिरते हुए जलको सहन करते हैं, ग्रीष्मकालमें भयसे परिपूर्ण भयंकर पहाड़पर धरतीपर स्थित होकर मोक्षपन्थी जो सूर्यके सम्मुख तप करते हैं। जिन्होंने भूमिके तिनकेके अग्रभागको नष्ट नहीं किया, और जो सत्य और अन्तरंगसे मुक्त हैं, तथा बड़े-बड़े दुष्टोंको शान्त करनेवाले हैं, ऐसे स्वामीको नमस्कार कर, उस समय वसुन्धराकी पुत्री अनुन्धरा अपनी सासके साथ (लक्ष्मीवतीके साथ), छत्रकी शोभाकी तरह, पुण्डरीक बालकको लेकर, पतिके वियोगसे चन्द्ररहित रात्रिके समान काली, अमिततेजकी माँ (लक्ष्मीमती) अपने भवनमें आ गयी।

घत्ता—फिर अपने पतिकी याद कर वह हंसगामिनी अपने शरीरको महीस्थलपर और नेत्रोंके अंजनसे मैले केशरसे लाल आँसुओंके प्रवाहको स्तनतलपर गिरा देती है—॥८॥

९

फिर शोक छोड़ते हुए उसने चन्द्रमाका उपहास करनेवाले अपने पोतेके मुखकमलको देखा। गृहमन्त्रीकी मन्त्रणासे निर्मलमति लक्ष्मीमतीने अपने मनमें सोचा—"हवाके द्वारा वनमें दावानल ले जाया जाता है और पानीमें निर्जीव नाव केवटके द्वारा ले जायी जाती है। असहाय व्यक्तिके लिए कोई भी सिद्धि प्राप्त नहीं होती। इसलिए पहले सहायतारूपी ऋद्धिकी चिन्ता करनी चाहिए, जिस विशालभारको स्वामीने उठाया, उसे यह अप्रगल्भ बालक किस प्रकार उठा सकता है? जिस भारको धीर और धुरन्धर धवल उठाता है, उस भारसे तो बछड़ा एक पैर भी नहीं चल सकता।" गन्धर्व नगरके राजाकी मन्दरमाला सुन्दरी देवीसे उत्पन्न चिन्तागति और मनोगति विद्याधर थे। देवीने उन दोनों भाइयोंसे कहा—"मेरे द्वारा किया गया, यह लिखित लेख मुद्रायुक्त सुन्दर मंजूषामें रखा है। तुम जाकर श्रेष्ठ रमणियोंके लिए भी दुर्लभ श्रीमतीके पति (वज्रजंघ) को यह लेख दो।" यह सुनकर, माताके पैर पड़कर, उपहार और आभूषण लेकर, रोमांचित शरीर वे दोनों अपने पैरोंकी केशरसे मेघोंको लाल-लाल करते हुए चल दिये।

घत्ता—खणि मणपवणगइ खयराहिवइ [11]उप्पलखेडु पराइय ॥
वज्जजंघणिवेण इच्छियसिवेण ते पणवंत पलोइय ॥९॥

१०

तहु तेहिं समप्पिउ मणिकरंडु   उग्घाडिउ तेणु[1]वरिल्लखंडु ।
उं[2]व्वेढिवि वाइउ झत्ति [3]लेहु   जिह जाउं[4] ओइ महिणाहणाहु ।
जिह दिज्जंतें[5] वि परिहरिवि भूमि   हुउ अमियतेउ[6] तस्साणुगामि ।
जिह पुंडरीयसिरि बद्धु[7] पट्टु   मेल्लेप्पिणु[8] णियजोव्वणमरट्टु ।
जिह लइय दिक्ख णवकामिणीहिं[9]   जिह मंडलियहिं मुक्कावणीहिं ।
जिह तणुरुहेहिं जिह पंडियाइ   हयकामकोहविच्छड्डियाइ ।
गउ पहु जिह अवरु वि अमियतेउ   तुहुं पालहि तेरउ भाइणेउ ।
जं जिह तं तिह लेहेण कहिउ   ता सुहिणा सुहिहि चरित्तु महिउ ।
चंगउ किउ देवें मयणजूरु   जं लइयउ तवु[10] भवतिमिरसूरु ।
चंगउ किउ तासु तणुब्भवेण   जं भ्रंडें[11] संगहियउ णववएण ।
घत्ता—धण्णउ सो णिवइ परिहरिवि रइ अरिहु जेण मणि भाविउ ॥
णिहिवडदरिसियइ घडदासियइ[12] महियइ को ण विहाविउ ॥१०॥

११

इय भणिवि तुरिउ संचलिउ राउ   दिसिगयजत्ताभेरीणिणाउ ।
सव्वत्थ रहेहिं ण जाहुं जाइ   जंपाणु खलइ मायंगु थाइ ।
संचारु ण लब्भइ हयवरेहिं   जलु थलु संदाणिउं किंकरेहिं ।
छत्तइं णं कुसुमइं[1] वियसियाइं   सिरिमइमुहससहरपहसियाइं ।
चमरइं चलंति कामिणिकरेसु   णं हंसइं रत्तिदीवरेसु ।
दीसंति सुवंसारूढकेउ   णावइ सुपुत्तकुलकित्तिहेउ ।
लीलाइ मिलिय मंडलिय जंति   मइवरु सुरगुरुसारिच्छु मंति ।
आणंदु पुरोहिउ दिव्वदिट्ठि   धणवइसमाणु धण[2]मित्तु सेट्ठि ।
बलवइ वि अकंपणु कंपियारि   संचलियउ[3] चलकरवालधारि ।
णिवसंतगामपुरपट्टणेहिं   वणु संप्राइय[4] कइवयदिणेहिं ।
घत्ता—चवलरहं[5]ल्लिचलु फुल्लियकमलु तहि सरवरु अवलोइउ ॥
णं रायहु महिए आयहु सहिए अग्घवत्तु उच्चाइउ ॥११॥

---

११. MBP उप्पलु लेहु ।

१०. १. MBP °णुवरिल्लु । २. MBPT उव्वेल्लिवि; K उव्वेढवि । ३. K तेण लेहु । ४. MBP जोइ जाउ । ५. MBP दिज्जंतो । ६. M मियउ तेउ । ७. B बद्ध पट्टु । ८ MBP आमेल्लेप्पिणु जोव्वणु मरट्टु । ९. MBP णवकामिणीहिं । १०. MP तउ; B तव । ११. MBP वउ; K वउ but corrects it to व्रउ । १२. MBP घरदासियइ महिए ।

११. १. MBP कुमुयइं । २. MB धणयत्तु । ३. K संचल्लिउ । ४. MBP संपाइउ । ५. M रहिल्लु चलु; B° रहिल्लिचलु; P रहिल्लचलु ।

घत्ता—विद्याधर राजा मनोगति और पवनगति एक क्षणमें उत्पलखेड नगर पहुँच गये। कल्याण चाहनेवाले वज्रजंघ राजाने प्रणाम करते हुए उन्हें देखा ॥९॥

१०

उन्होंने उसके लिए मणिमंजूषा दी। उसने उसका ऊपरी खण्ड खोला। फैलाकर उसने शीघ्र पत्र पढ़ा कि किस प्रकार राजाओंका राजा योगी बन गया है और किस प्रकार दी जाती हुई भूमि छोड़कर अमिततेज भी उसका अनुगामी हो गया है ? और किस प्रकार पुण्डरीकके सिरपर पट्ट बाँध दिया गया है। किस प्रकार अपने यौवनके अहंकारको छोड़ते हुए, राजस्त्रियों तथा धरती छोड़ते हुए माण्डलीक राजाओंने दीक्षा ग्रहण कर ली। किस प्रकार पुत्रोंने तथा काम-क्रोधके समूहको नष्ट करनेवाली पण्डिताने दीक्षा ले ली। किस प्रकार राजा अमिततेज भी चला गया। इसलिए तुम अब अपने भानजेका पालन करो। जो जैसा था, वैसा लेखने कह दिया। तब उस सुधीने सुधीके चरित्रकी सराहना की कि देवने यह अच्छा किया जो कामको पीड़ित करनेवाला और संसाररूपी अन्धकारके लिए सूर्यके समान तप ग्रहण कर लिया। उसके पुत्रने भी अच्छा किया जो उसने नववयमें व्रत संग्रहीत कर लिया।

घत्ता—वह राजा धन्य है जिसने कामको छोड़कर अपने मनमें अरहन्तका ध्यान किया। निधिका घड़ा दिखानेवाली गृहदासी पृथ्वीके द्वारा कौन खण्डित नहीं किया गया ? ॥१०॥

११

यह विचारकर राजा वज्रजंघ तुरन्त चला। उसकी यात्राके नगाड़ोंकी आवाज़ दिशाओंमें फैल गयी। सर्वत्र रथोंसे नहीं जाया जाता। अश्पान स्खलित होता है, मातंग ठहर जाता है। अश्ववरोंको संचार नहीं मिल पाता। छत्र ऐसे मालूम होते हैं मानो श्रीमतीके मुखरूपी चन्द्रमा-का उपहास करनेवाले खिले हुए कुसुम हों, कामिनियोंके हाथोंमें चमर चल रहे हैं मानो लाल कमलोंपर हंस हों। अच्छे बांसपर लगा हुआ ध्वज हो, जैसे वह सुपुत्र कुल और कीर्तिका कारण हो। लीलापूर्वक माण्डलीक राजा भी मिलकर जाते हैं और मतिमें श्रेष्ठ बृहस्पतिके समान मन्त्री भी। दिव्यदृष्टि आनन्द नामका पुरोहित, कुबेरके समान सेठ धनमित्र। शत्रुको कँपानेवाला अकंपन सेनापति भी हाथमें तलवार लेकर चल पड़ा। इस प्रकार ग्राम-पुर और नगरोंमें रहते हुए वे लोग कई दिनोंमें उस वनमें पहुँचे।

घत्ता—वहाँ उन्होंने चंचल लहरोंसे चपल और खिले हुए कमलोंवाले सरोवरको इस प्रकार देखा, जैसे आये हुए राजाके लिए धरतीरूपी सखीने अर्घपात्र ऊँचा कर लिया हो ॥११॥

१२

करिकरखगलियमयबिंदुमलिणु मयमिहुणणिसेवियविउलपुलिणु ।
मयलंछणयरकरदलियणलिणु मयमत्तभमरगइरइयखलिणु ।
मयगयदलवट्टियसिरिणिकेउ मयवइमुहजीहाविलिहियाउ ।
तहु तीरि विमुक्कउ सिमिरु जाम सहुं सायरसेणें सूरि ताम ।
चिंतंतु भोज्जभायणपरिक्ख रिसि परिभमंतु कंतारभिक्ख ।
दमवरु णामें पुहईसरासु संपत्तउ दूसावासु तासु ।
आवंत णियेवि मउलियकरेण सिरिमइपविजंघवहूवरेण ।
ठाभणिय बे वि उवसमवसेण थिव चारणमुणि विणयंकुसेण ।

घत्ता—सुरसिरकुसुमरयरयमुक्करयमहुयरपंतिहिं कालिउं ॥
चंदयरुजलेण पासुयजलेण पयजुयलउं पक्खालिउं ॥१२॥

१३

वंदेप्पिणु भावें चरणकमलु उच्चासणि णिहियउ साहुजमलु ।
तं दीसइ भोयणु भुंजमाणु सुरसेसु वि णिरसेसु वि समाणु ।
हत्थु वि चडुंतु ण होइ दीणु लेंतु वि पाणइं ण वि धम्महीणु ।
णिक्कूरु वि कूरहु दिट्ठि देइ णिण्णेहु वि दिण्णु सणेहु लेइ ।
तिम्मणु गेण्हंतु वि बंभयारि रसु जाणंतउ रसणिव्वियारि ।
णित्थद्धें लइयउ थद्धु दहिउ जगमहियं पीयउ सीउ महिउ ।
मणसच्छहु ढोइउ सच्छ वारि इय भुत्तु भोज्जु बहुदोसहारि ।
उच्चाइयथिरदीहरभुएण आसीस दिण्ण तहु मुणिजुएण ।
उववि‌ट्ठ णिहित्तइं आसणाइं विहियइं पयपणमणपेसणाइं ।
पुणु दीहु वेलु जिणधम्मु सुणिवि जंपिउ णिवेण णियसीसु धुणिवि ।

घत्ता—रूवइं मुणिवरहं संजमधरहं आसि कहिं मि मइं दिट्ठइं ॥
णवर ण संभरमि हा किं करमि विहिं लोयणहं सुइट्ठइं ॥१३॥

१४

तो भासिउं विहसिवि मइवरेण तुह तणुरुह दमवर जलहिसेण ।
जमलहं पण्णासहं पच्छिमिल्लु सुयजुयलु ण याणहि किं गहिल्लु ।

१२. १. MBP °लंछणकर° । २. MBP मयरत्त° । ३. K मयगल° । ४. MBP सिविरु । ५. MBP भोयमायण° । ६. BP परिभवंतु । ७. B दमवर । ८. BP आवंतु । ९. MBP णिएवि । १०. MP चारणगय ।

१३. १. MBP सरसेसु णीरसेसु वि । २. P उडुंतु । ३. P णउ । ४. M दिण्ण । ५. K सिणेहु । ६. MBP णिरु णिव्वियारि । ७. MBP णित्थद्धें । ८. MBP थद्धु । ९. MBP जगि महिएं । १०. MBP सीय । ११. MBP सच्छु । १२. MBP भुत्तभोज्जु । १३. MBP विहिलोयणहं ।

१४. १. MBP तो ।

१२

जो हाथियोंके सूँड़ोंसे झरते हुए मदजल बिन्दुओंसे मलिन हैं, जिसके विशाल किनारों-पर मृगयुगल ठहरा दिये गये हैं, जिसके कमल सूर्यकी किरणोंसे खिलते हैं, जहाँ मतवाले भ्रमरोंकी गतिका स्खलन हो रहा है, जहाँ मदवाले गजोंके द्वारा कमलोंको नष्ट कर दिया जाता है, जो सिंहोंकी जिह्वावलियोंसे अलिखित है उसके तटपर जैसे ही शिविर ठहरता है, वैसे ही सागरसेनके साथ एक मुनि भोजनके पात्रकी परीक्षाकी चिन्ता करते हुए तथा वनभिक्षाके लिए परिभ्रमण करते हुए दमवर नामक महामुनि उस राजाके तम्बुओंके निवासपर पहुँचे। उन्हें आते हुए देखकर श्रीमती और वज्रजंघ वधूवरने दोनों हाथ जोड़कर दोनोंके लिए 'ठहरिए' कहा। उपशम और विनयके अंकुशके कारण वे दोनों चारण मुनि ठहर गये।

घत्ता—देवोंके सिरोंकी कुसुमरजमें रत मुक्त मधुकर-पंक्तियोंसे काले उनके चरणयुगलों-को चन्द्रमाके समान उज्ज्वल प्राशुक जलसे प्रक्षालित किया ॥१२॥

१३

भावपूर्वक चरणयुगलोंकी वन्दना कर दोनों साधुओंको ऊँचे आसनपर बैठाया। वे भोजन करते हुए ऐसे दिखाई देते हैं—सुरस और नीरसमें समान दिखाई देते हैं, हाथ उठाते हुए भी वे दीन नहीं होते, हाथसे ग्रहण करते हुए भी धर्महीन नहीं हैं, अक्रूर होते हुए भी कूर (क्रूर =दुष्ट, भात) पर दृष्टि देते हैं, स्नेहहीन होते हुए भी दिये गये स्नेह (तेल) को लेते हैं, ब्रह्मचारी होते हुए भी तिम्मण (कढ़ी, स्त्री) लेते हैं, रससे निवृत्त होते हुए भी रसको जानते हैं, स्वयं तरल होते हुए जमा हुआ दही ले लिया, जो विश्वमें महान् हैं, उन्होंने शीतल मही पी लिया। मनसे स्वच्छ उनके लिए स्वच्छ जल दिया गया। इस प्रकार उन्होंने सब प्रकारके दोषोंसे रहित भोजन किया। तब दोनों मुनियोंने अपने स्थिर लम्बे हाथ उठाकर उन्हें आशीर्वाद दिया। वे दिये गये आसनोंपर बैठ गये। उन्होंने पैरोंमें प्रणाम, उन्हें दबाना आदि क्रियाएँ कीं। फिर लम्बे समय तक जिनधर्म सुनकर, अपना सिर हिलाते हुए राजाने कहा—

घत्ता—"संयम धारण करनेवाले मुनिवरोंका रूप कहीं मेरे द्वारा देखा हुआ है। नेत्रोंके लिए दोनों इष्ट हैं, केवल मुझे याद नहीं आ रहा है, हा! मैं क्या करूँ?" ॥१३॥

१४

तब हँसते हुए मतिवर बोले—"हम तुम्हारे मित्र दमवर और जलधिसेन हैं—पचास

पत्थिव जइवर आणंति सव्वु ता चवइ णिवइ परिगलियगव्वु ।
गुणकारणु किं थेरत्तु होइ जरेणिवु ण महुरत्तणहु जाइ ।
महु महुरउ जि दीसइ सयलु कालु सवु तणुरुहेहिं मइं मोहजालु ।
आयरियउ किं परिणयवएण कम्मु जि बलवंतउ किं वएण ।
महु दमवर दमियाणंगलील गयभवइं समासहि सामिसाल ।
अण्णु वि एयहिं तुह माउयाहिं जइपुंगव चक्काहिवसुयाहि ।
आणंदपुरोहियमइवराहं धणमित्ताकंपणकिंकराहं ।
चिरजम्मु कहसु महुं गरुउ णेहु किं कारणु ता वज्जरइ साहु ।
रिसिणा पउत्तु परिचत्तणाणु जयवंम्मु णाम बंधिवि णियाणु ।
जाओ सि बप्प तुहुं खयरणाहु णामेण महाबलु बलसणाहु ।
घत्ता—चिरु रुप्पयगिरिहि अलयाउरिहि सइंबुद्धें संबोहिउ ॥
मुउ खयराहिवइ सुविसुद्धमइ सीलगेणेहिं पसाहिउ ॥१४॥

१५

जाओ सि देवु अहिलेसिउ कोउं ईसाणकप्पि ललियंगु णोउं ।
तहिं मरिवि भवंतरि एत्थु आउ तुहुं वज्जजंघु महं तणउ ताउ ।
पुणु कहइ साहु भवभावमुक्कु मुणि सिरिमइजम्मंतरचउक्कु ।
गइवइसुय धणसिरि सुयहरासु उवसग्गु करेप्पिणु मुणिवरासु ।
हूई दालिद्दिणि वणियधीय पिहियासवेण उवसमहु णीय ।
सा मयं सावयवउं किं पि लेवि हूई देवत्तणि तुज्झु देवि ।
णामेण सयंपह चविवि तेत्थु हूई णरणाहहु धूय एत्थु ।
सिरिमइ सइ सुंदरि मज्झु माय आयण्णहि भिक्खपवंचु ताय ।
जंबूदीवामरगिरिविदेहि पुरिमिल्लिइ गयणविलंबिमेहि ।
वच्छावइदेसि रसा समिद्ध होंतउ णरवइ णामेण गिद्ध ।
गउ णरयहु दससायरसमाउ अणुहुंजिवि पंकप्पहि वराउ ।
णियणयरणियडि णियवसुणिवासि हुउ वग्घु दिसागयकुसुमवासि ।
घत्ता—ता तहिं महिहरए लवलीहरए पीईवद्धणु भासिउ ॥
उप्परि भायरहो समरायरहो जंतु राउ आवासिउ ॥१५॥

२. B जइ णिवु; P जरु णिवु । ३. P महुर । ४. M सयल । ५. MBP तउ । ६. MBP महु । ७. MBP किह परिणयवसेण; T परिणतवयसा । ८. MP °भवहिं । ९. M परचित्तणाणु । १०. MBP अजवम्मु; K अजवम्मु but gloss जयवर्मा त्वं । ११. K बंधवि ।

१५. १. MBPK अहिलसिय । २. P कामु । ३. P णामु । ४. MBP एत्थ जाउ । ५. MBP महु । ६. MBP °मुक्क । ७. MBP °चउक्क । ८. MB सुहयरासु । ९. MB करेविणु । १०. P दालिद्दिय । ११. P मुय । १२. BP रसासमिद्धु; GK note this as *p* in the margin : रसासमिद्धु इति पाठे पृथ्वीपरिपूर्णः; T रसासमिद्धु अतिकोपी रसासमृद्धो वा पृथ्वीपरिपूर्णः । १३. M पीईपट्टणु; BP पीईवद्धणु ।

युगलोंमें-से अन्तिम। क्या पागल हो, अपने दोनों पुत्रोंको नहीं जानते। हे राजन्! यतिवर सब जानते हैं।" इसपर परिगलित गर्व राजा कहता है—"गुणका कारण बुढ़ापा नहीं होता, जीर्ण नीबू मीठा नहीं हो जाता। लेकिन मधु हर क्षण मधुर दिखाई देता है। पुत्रोंने तप और परिणत-वय मैंने मोहजालका आचरण क्यों किया? क्या आयुसे कर्म ही बलवान् होता है? कामदेवकी लीलाओंका अन्त करनेवाले हे दमवर स्वामिश्रेष्ठ, मेरे गत जन्म थोड़ेमें बताइए? और भी हे यतिश्रेष्ठ, इस चक्रवर्तीकी पुत्री तुम्हारी माँके आनन्द पुरोहित मतिवर धनमित्र और अकम्पन अनुचरोंका चिरजन्म बताइए और मेरे भारी स्नेहका क्या कारण है?" इसपर मुनि कहते हैं कि ऋषिके द्वारा कहे जानेपर भी ज्ञानसे रहित जयवर्मा नामके हे सुभट! तुम निदान बाँधकर विद्याधर राजा हुए, सेनासे सहित महाबल नामके।

घत्ता—प्राचीन समयमें विजयार्ध पर्वतपर अलका नगरीमें स्वयंबुद्धके द्वारा सम्बोधित विशुद्ध मतिवाला और शीलगुणोंसे प्रसाधित वह विद्याधर राजा मर गया ॥१४॥

१५

तुम ललितांग नामसे ईशान स्वर्गमें देव हुए, कामकी अभिलाषा करनेवाले। वहाँसे मरकर तुम यहाँ आये, तुम वज्रजंघ मेरे पिता। भवनभावसे रहित वह मुनि फिर कहते हैं—तुम श्रीमती-का जन्मान्तर (चार पूर्वजन्म) सुनो। गृहपतिकी पुत्री धनश्री श्रुतधारी मुनिवरको उपसर्ग कर बनियाकी दरिद्र कन्या हुई। मुनि पिहिताश्रवने उसे उपशान्त किया। वह कुछ श्रावक व्रत ग्रहण कर स्वर्गमें तुम्हारी देवी हुई स्वयंप्रभा नामकी। वहाँसे आकर यहाँ राजाकी कन्या हुई श्रीमती सती सुन्दरी मेरी माँ। हे तात! अब भृत्योंके पूर्वजन्मोंको सुनिए। जम्बूद्वीपके सुमेर पर्वतके पूर्वविदेहमें वत्सावती देश है, जिसपर सदैव बादल छाये रहते हैं, उसमें क्रोधसे प्रज्वलित गृद्ध नामका राजा था। वह बेचारा नरक गया और पंकप्रभा भूमिमें दस सागर पर्यन्त दुःख भोग-कर जहाँ धनका निवास है, ऐसे अपने नगरके निकट, दिग्गजरूपी कुसुमोंको गन्ध लेनेवाला बाघ हुआ।

घत्ता—वहाँ लवलोलताओंके घर उस पर्वतपर प्रीतिवर्धन नामका राजा, युद्धका आदर करनेवाले अपने भाईपर आक्रमण करनेके लिए जाता हुआ, ठहर गया ॥१५॥

१६

[1]तहिं णिवसइ पहयरिणयरिणाहु जा [2]तांबोलंबियलंबबाहु ।
चारणमुणि णहयलि ओयरंतु वणि चरियामग्गें पइसरंतु ।
गिरिवरविवरंतरसंठिएण मयमासाहारुक्कंठिएण ।
दिट्ठउ पुल्लि पिहियासवक्खु परमेसरु [3]णिम्मलणाणचक्खु ।
[4]संभरियजम्मु हुउं मंदभाउ एत्थु जि चिरु होंतउ पुहइराउ ।
गउ [5]सब्भहु पुणु अलियलिल जाउ पसुमासें पोसमि काइं काउ ।
मणु आणिवि मुणि वि समीउ आउ संबोहिउ साहिउ धम्मणाउ ।
थिउ संणासणि [6]मृगु णिक्कसाउ गउ भिक्खहि भिक्खु महाणुभाउ ।
[7]तो थाहि भणिवि महुरें सरेण पडिगाहिउ झसि [8]चक्केसरेण ।
पक्खालिउ जंमिकमजुगु जलेण अंचिउ पोमेण सकेसरेण ।
गुणवंतहु संतहु कयउ माणु तें तहु दिण्णउं आहारदाणु ।
तं पुच्छिउ [9]इंच्छिउ णियहिएहिं सेणावइमंतिपुरोहिएहिं ।
सो ताइं तेण दरिसियउ [10]पुल्लि जइणा पत्तउ [11]सुरवइंसुहिल्लि ।
ईसाणि दिवायरु णाम तियसु अण्णु वि सुहुं पावइ किं ण सवसु ।
गउ महिवइ मोक्खहु खविवि कम्मु तिहिं [12]तिण्णि समीहिवि दाणधम्मु ।

घत्ता—मुणिपयपोमरय कालेण मय चमुवइ मंति पुरोहिय ॥
कुरुभूमिहि मणुय हुय पीणभुय णाणाहरणहिं सोहिय ॥१६॥

१७

[1]मउ मंति कुरुहि गइ आउमाणि कणयाहु णाम कंचणविमाणि ।
उप्पण्णउ सुरु ईसाणसग्गि विप्फुरियविविहमाणिक्कमग्गि ।
[2]रुसियइ वरभवणि पहंजणंकु जायउ पुरोहचरु गलियसंकु ।
सेणाणि पहायरु पहयरंति हुउ दिव्वदित्ति दीवियदियंति ।
[3]चत्तारि वि णिच्चु जि विहियसेव [4]देवंत्ति तुज्झु परिवारदेव ।
पइं चुइ पुणु हूया जेत्थु जेम आहासमि णिसुणहि तेत्थु तेम ।
सद्दूलदेउ सिरिमइहि उयरि [5]सायरसेणो हुउ पुण्णपवरि ।
मइवरु मइवरु तुह मंति राय को पावइ एयहु तणिय छाय ।
हे ताय पहायरु मरिवि देउ अज्जवहि अकंपणु पुत्तु जाउ ।
सेणावइ तेरउ तिव्वतेउ परबलहु समुग्गउ धूमकेउ ।

---

१६. १. K तिहिं । २. G तारोलंबियॱ । ३. P णिम्मलु । ४. MBP संभरिउ जम्मु । ५. MBP सुब्भहु; T सब्भहु नरके । ६. MBP मिगु । ७. M तो ठाहु भणिवि; BP तो थाह भणेवि; K भो थाहि भणिवि । ८. M पुणु कमजुउ जलेण; BP कमजुयलु णरेसरेण; T कमजुगु सरेण । ९. MBP इच्छिय । १०. MBPT इल्लि । ११. BPK सुरवरॱ । १२. BP तहिं ।

१७. १. MBP मुउ । २. MBP रूसियवरॱ । ३. P चत्तारि जि णिच्चु वि । ४. B देवत्तु । ५. MB सायरसेणु व हुउ; P सायरसेणहो हुउ; K सायरसेणें हुउ ।

१६

प्रभंकरी (रानी) का स्वामी प्रीतिवर्धन राजा जब वहाँ रह रहा था, तब अपने लम्बे हाथ उठाये हुए, आकाशसे उतरते हुए, वनमें चर्यामार्गके लिए प्रवेश करते हुए चारण मुनि आये। गिरिवरके विवरके भीतर स्थित और पशुओंके मांसका आहार करनेके लिए उत्सुक व्याघ्रने पिहिताश्रव नामक निर्मलज्ञानकी आँखवाले परमेश्वरको देखा। अपने पूर्वजन्मकी याद कर (वह कहता है) मैं मन्दभाग्य पहले यहींका राजा था। मैं नरक गया। फिर व्याघ्र बना। मैं पशुमांससे अपने शरीरका पोषण क्यों करता हूँ। उसका मन जानकर मुनि भी उसके पास आये और उससे धर्मका नाम कहा। वह व्याघ्र कषायभावसे मुक्त होकर संन्यासमें स्थित हो गया। महानुभाव भिक्षु भिक्षाके लिए चले गये। तब, 'ठहरिए' मधुर स्वरमें कहते हुए, चक्रवर्ती राजाने उन्हें शीघ्र पड़गाहा। उसने जलसे उनके दोनों पैरोंका प्रक्षालन किया और केशर सहित कमलसे उसकी पूजा की। गुणवान् सन्तका मान किया, तथा उसने उनके लिए आहारदान दिया। अपना कल्याण चाहनेवाले सेनापति, मन्त्री और पुरोहितोंने अपनी इच्छित बात पूछी। उन्होंने उनके लिए वह व्याघ्र बताया। यतिके कारण वह बाघ इन्द्रको सुख परम्परावाले ईशान स्वर्गमें दिवाकर नामका देव हुआ। स्ववश होकर दूसरा कौन नहीं सुख पा सकता? राजा कर्म नष्ट करके मोक्ष चला गया। वे तीनों (सेनापति आदि) दानधर्मकी इच्छा रखते हुए—

घत्ता—तथा मुनिके चरणकमलोंमें लीन होकर समयके साथ मृत्युको प्राप्त हुए और कुरुभूमिमें स्थूलबाहुवाले और नाना अलंकारोंसे शोभित मनुष्य हुए ॥१६॥

१७

कुरुक्षेत्रमें आयुका मान समाप्त होनेपर मन्त्री मर गया। विविध माणिक्योंसे चमकते मार्गोंवाले ईशान स्वर्ग-स्वर्णके विमानमें कनकाभ नामका देव हुआ। शंकाहीन पुरोहितका जीव प्रभंजन नामसे रुचित नामक उत्तम विमानमें देव हुआ। सेनापति प्रभाकर नामसे दीप्तदीप्तिवाला दिशाओंको आलोकित करनेवाले प्रभा विमानमें उत्पन्न हुआ। हे देव, वे चारों ही तुम्हारी सेवा करनेवाले स्वर्गमें तुम्हारे पारिवारिक देव थे। वहाँसे च्युत होनेपर तुम जहाँ जिस प्रकार उत्पन्न हुए, उसी प्रकार ये भी उत्पन्न हुए। हे देव! सुनिए; शार्दूलदेव श्रीमतीके पुण्यप्रवर उदरसे सागरसेन नामका पुत्र हुआ। मतिवर, तुम्हारा श्रेष्ठ मतिवाला मन्त्री हुआ। हे राजन्! इसकी छाया कौन पा सकता है। हे तात! प्रभाकर देव मरकर आर्जवा रानीसे अकम्पन नामका पुत्र हुआ। सेनापति, तुम्हारा दिव्य तेज सेनापति हुआ जो मानो शत्रुसेनाके लिए धूमकेतुके रूपमें

कणयाहु तियसु चुउ कईहिं भणिउ सुयकिंकिअणंतमईहिं जणिउ ।
जो एहु बप्प सो दिण्णसुद्धि आणंदु पुरोहिउ विमलबुद्धि ।
घत्ता—अमरु पहंजणउ रंजियजणउ ललियविमाणहु आयउ ॥
दत्तयवणिवइणा चिरइयरइणा वणयत्तहि सुउ जायउ ॥१७॥

१८

धणमित्तु सेट्ठिकुलणलिणमित्तु किंकरु अहवा तुह परममित्तु ।
एयइं छह बद्धसिणेहयाइं तुम्हइं सग्गाउ समागयाइं ।
णरवइ चउ किंकर समरभीम सिरिमइ राणी सोहग्गसीम ।
णिसुणेवि भवावलि विम्हियाइं छ वि जिणरविगुण चिंतिवि थियाइं ।
पुणु भणइ राउ भयवंत विमल सद्दूल कोल गोपुंच्छ णउल ।
चत्तारि वि णरहं ण ओसरंति अच्छंति णिसण्ण ण वणि चरंति ।
णउ भक्खु लेंति णउ जलु पियंति णवियाणण तुह भासिउं सुणंति ।
किं कारणु कहहि मुणिंदचंद ता भणइ सूरि सुणि भो णरिंद ।
इह देसि हत्थिणायउरि रम्मि वणि सायरदत्तु विचित्तहम्मि ।
तहु घण धणवइ सुउ उग्गसेणु सो कामुउ कामिणिणायरेणु ।
पहु कोट्ठागारि अइक्कमेवि भत्तइं भरणइं बलि मड्ड लेवि ।
उवणंतु पणयसीमंतिणीहिं बंधाविउ राएं णिययणीहिं ।
मुउ कोहें जायउ एत्थु वग्घु ओहच्छइ मइं मण्णिवि सलग्घु ।
घत्ता—होंतउ सूयरउ चिरु माणरउ विजयणयरि बुद्धिए किसु ॥
महणंदें जणिउ जणवइमुणिउ णिव वसंतसेणाहि सिसु ॥१८॥

१९

हरिवाहणु णामें वूढमाणु दप्पंधु समंदिरि कीलमाणु ।
णरणाहें णंदणु भणिउ एंव माणेण परंमुहुं होंति देव ।
तं णिसुणिवि धाइउ चवलु डिंभु सिरि लग्गु सिलामउ भवणखंभु ।
मुउ एत्थु एहु हूयउ वराहु पुणु कहइ साहु अवंतसाहु ।
उद्धुयधयमालापंचवण्णि कइ आसि जम्मि णयरम्मि धण्णि ।
वणिवरिण कुबेरें जणिउ पुत्तु पणइणिहि सुदत्तहि णागदत्तु ।
बहिणिहि विवाहु किज्जइ धणेण भासिउ मायइ ता सा अणेण ।

६. MBP कहहिं ।

१८. १. MBP विंभियाइं । २. MBP जिणवर° । ३. PT गोपुंछ । ४. MBP भो सुणि । ५. MBP हत्थिणाउरि पुरम्मि । ६. BP वत्थाभरणइं । ७. MBP बलिमंड । ८. MBP उवयंतु; T उवणेंतु । ९. MB तुह अच्छइ; P हुउ अच्छइ । १०. MBP बुद्धीइ । ११. MBP सह णंदें । १२. MBP जणवय° ।

१९. १. MBP धाविउ चवल । २. B अवइत्तसाहु ।

उत्पन्न हुआ है। कवियोंके द्वारा कहा गया है कि कनकाभ नामका देव च्युत होकर श्रुतिकीर्ति और अनन्तमतिसे उत्पन्न होकर यह सुभट शुद्धि प्रदान करनेवाला विमलबुद्धि, आनन्द नामका पुरोहित है।

घत्ता—जनोंका रंजन करनेवाला प्रभंजन नामका अमर रुचित विमानसे आकर रतिमें आसक्त दत्तक सेठकी पत्नी धनदत्ताका पुत्र हुआ ॥१७॥

१८

श्रेष्ठीकुलरूपी कमलोंके लिए सूर्य, धनमित्र तुम्हारा अनुचर अथवा परममित्र हुआ। स्नेहसे बँधे हुए ये छहों तुम लोग स्वर्गसे आये हुए हो। इस प्रकार राजा, युद्धमें भयंकर चारों अनुचर और सौभाग्यकी चरम सीमा रानी श्रीमती अपनी भवावली सुनकर विस्मयमें पड़ गये। छहों जिनरूपी सूर्यके गुणोंको सुनकर स्थित हो गये। राजा फिरसे कहता है—ये भयभीत तथा विमल सिंह-कोल-बन्दर और नकुल ये चारों मनुष्योंसे नहीं हटते, यहाँ बैठे हुए हैं, वनमें विचरण नहीं करते, न कुछ भोजन करते हैं, और न पानी पीते हैं, अपना मुँह नीचे किये हुए तुम्हारा भाषण सुनते हैं। हे मुनिश्रेष्ठ, इसका क्या कारण है? तब मुनिवर कहते हैं—'हे राजन्! सुनो, यहाँ सुन्दर हस्तिनापुर नगरमें सागरदत्त वणिक् अपने विचित्र महलमें निवास करता था। उसकी स्त्री धनवती और पुत्र उग्रसेन था। स्त्रियोंके चरणोंकी धूल वह अत्यन्त कामी था। राजाके कोष्ठागारका अतिक्रमण कर चावल आदि वस्तुएँ बलपूर्वक हरण कर, अपनी प्रेयसी स्त्रीके पास ले जाते हुए राजाने उसे रस्सियोंसे बँधवा दिया। वह मरकर क्रोधके कारण यहाँ बाघ हुआ। मुझे श्लाघनीय मानकर अब यह ऊपर स्थित है।

घत्ता—वह सुअर पूर्वजन्ममें विजयनगरमें महानन्द राजासे उत्पन्न वसन्तसेनाका पुत्र था। अत्यन्त मानरत और बुद्धिसे कृश। लेकिन जनपदमें मान्य ॥१८॥

१९

हरिवाहनके नामसे वह बड़ा हुआ। दर्पसे अन्धे और अपने घरमें खेलते हुए उससे राजाने कहा कि मान करनेसे देवता विमुख हो जाते हैं। यह सुनकर वह चंचल बालक दौड़ा और उसका सिर शिलामय भवनके खम्भेसे जा लगा। मरकर वह बेचारा यहाँ सुअर हुआ है। अत्यन्त साधु वह साधु पुनः कथन करते हैं कि उड़ती हुई पचरंगी ध्वजमालाओंवाले धान्यपुर नगरमें यह बन्दर, पूर्वजन्ममें, वणिग्वर कुबेरसे उत्पन्न प्रणयिनी सुदत्ताका नागदत्त नामका पुत्र था।

कंचिवि चामीयरु णियउ सव्वु । ता तहिं वि ताइ तहुं[3] गहिउ दव्वु ।
मुउ[4] मायारउ हुउ चत्थु पहु । वणि मंकडु[5] माणुसमेत्तदेहु ।
णायारि णिसुणि णिव पुव्वयालि । सुपइट्ठियपट्टणि तोरणालि ।
होंतउ कंदुवि लोलुयउ[6] णाम । दियहेहिं णवर रामाहिराम ।
पारंभिउ जिणहरु पत्थिवेण । कारवहुं एण कारावएण ।

घत्ता—जुण्णउं रायहरु तम्हाँउ[7] तरु लेवि वहइ पुरु परियणु ॥
इट्ट विसट्ट[8] जहिं सहस त्ति तहिं कंदुइ[9] पेच्छइ कंचणु ॥१९॥

२०

तोलेप्पिणु चलकरयलतुलाइ । परियाणेप्पिणु वणिवरकलाइ ।
इट्टउ चामीयरपूरियाउ । बेहिं मिप्पिंडेहिं[1] समारियाउ ।
कइवयउ ण केण वि भावियाउ । लहुं णियभवणहु णेवावियाउ ।
कम्मयरहु[2] दिण्णउं सरसु भोज्जु । लुद्ध वि दाणेण[3] करेइ कज्जु ।
इय गेहहिं कम्मु करेवि गूढु । अण्णहिं दिणि मोहवसेण मूढु ।
घरि तणउ थवेप्पिणु वियसियासु । गउ गामंतरु तणुरुहहि पासु ।
एत्तहि पुत्तें पियराण भिण्ण । सोवण्ण इट्ट दारियहि[4] दिण्ण ।
तं[5] खंडइ जाम सुवण्णयारु । ता[6] पेच्छइ पहुपिहणाम सारु ।
तें[7] गंपि पकंपियजीयएण । जाणाविउ रायहु भीयएण ।
भासिउ वेसइ विरत्तु सव्वु । तं जायउ रायहु तणउं दव्वु ।
धरणीसरकुलचिंधेण जडिय । लोलुयगेहे[8] णिवमुद्द पडिय ।
परिरक्खियमाहिवमाणवेहिं[9] । परभीयरेहिं णं दाणवेहिं ।
सुउ बंधिवि कारागारि घित्तु । तहिं अवसरि कंदुइ तहिं जि पत्तु ।

घत्ता—णंदणु तेण हउ कह वि हु ण मउ दंडपहारहिं ताडिउ ॥
परधणलोलुयउ सो लोलुयउ राउलेण विब्भाडिउ ॥२०॥

२१

पुणु बहुदविणासाऊरिएण । कहिं गय[1] भणेवि उल्लूरिएण[2] ।
तुम्हइं बिण्णि वि महुं सत्तु जाय । पाहाणें चूरिवि णियये पाय ।
मुउ लोहकसायमलेण मइलु । इह हूयउ पेक्खु णरिंद णउलु ।

---

३. MBP तं गहिउ । ४. MBPK मुउ । ५. MBP मक्कडु माणुसु । ६. MBP लोलूउ ।
७. M तुम्हाउ भरु । ८. B विसिट्ट । ९. MB कंदुउ; P कंदुव ।

२०. १. MP बहि मिउपिंडेहिं; B बाहिमिपिंडेहि । २. M कम्मरयहं । ३. MBP दाणेण जि करइ ।
४. MBP गहिरउ । ५. MBP ता । ६. MBP तो । ७. MBP तं । ८. MBP लोलुयहि गेहि ।
९. T माहिय मा लक्ष्मीर्हृता; माहिव माहिवा इति पाठे ।

२१. १. MBP गउ । २. MBP कुल्लूरिएण ।

माताने कहा कि बहनका विवाह धनसे किया जाता है परन्तु इसने समस्त सोना ठगकर ले लिया, तब उसने (माँने) भी इससे सब धन छीन लिया। वह मायावी पुत्र यहाँ इस वनमें मनुष्यमात्रके समान देहवाला वानर हुआ है। हे राजन् ! सुनो, यह नेवला पूर्वकालमें तोरणोंसे युक्त सुप्रतिष्ठितनगरमें लोलुप नामका हलवाई था। कुछ दिनोंमें हे वज्रजंघ, राजाने एक जिनमन्दिर कारीगरसे बनवाना प्रारम्भ किया।

घत्ता—वहाँ पुराना राजघर था; वहाँसे लकड़ी लेकर पुरजन नगर ले जाते। जहाँपर एक ईंट फूटी थी, वहाँ हलवाई अचानक सोना देखता है ॥१९॥

२०

जिसमें करतल और तराजू चंचल है ऐसी वणिक्वरकी कलासे, जानबूझकर स्वर्णसे पूरित ईंटें तोलकर बाहर मिट्टीके पिण्डोंसे उन्हें ढक दिया। किसीने भी किसी प्रकार इसे नहीं जाना। वह शीघ्र उन्हें अपने घर ले आया। काम करनेवालेको उसने सरस भोजन दिया। लोभी व्यक्ति भी दानसे काम कर लेता है। यह गूढ़ और निन्दनीय काम कर, दूसरे दिन वह मूर्ख मोहके वशसे, प्रसन्नमुख अपने पुत्रको घरमें रखकर दूसरे गाँव पुत्रीके पास गया। यहाँपर पुत्रने पिताकी आज्ञासे खण्डित, सोनेकी ईंटें वेश्याको दे दीं। जैसे ही सुनार उसे तोड़ता है वह उसमें राजाके पिताका नामश्रेष्ठ देखता है। डरकर और काँपते हुए प्राणोंसे उसने यह बात राजाको बतायी। वेश्याने सारा हाल बता दिया। वह सारा धन राजाका हो गया। राजाके कुलचिह्नसे जड़ी हुई नृपमुद्राएँ लोलुप रसोइएके घर जा पड़ीं। दूसरोंको डरानेवाले मानो दानवोंके समान राजाके रक्षापुरुषोंने पुत्रको बाँधकर कारागारमें डाल दिया। उस अवसरपर हलवाई वहाँ पहुँच गया।

घत्ता—उसने डण्डोंके प्रहारोंसे लड़केको इतना मारा कि वह किसी प्रकार मरा-भर नहीं। दूसरेके धनके लोभी उस हलवाईको भी राजकुलने नष्ट कर दिया ॥२०॥

२१

फिर अत्यधिक धनकी आशासे भरे हुए हलवाईने 'तुम कहाँ गये थे, तुम दोनों मेरे शत्रु हुए' यह कहकर अपने दोनों पैर कुचल कर, लोभ कषायसे मैला वह मर गया और हे राजन्,

णिसुणेप्पिणु महुमहुरक्खराइं सुमरेप्पिणु गय जम्मंतराइं ।
उवसंत वहंति ण भउ ण रोसु सुहझाणें अज्ज खवंति दोसु ।
पइं दिण्णु दाणु भणिउं इमेहिं कइकंठवग्घविसहरदमेहिं ।
बहुभोयभावसुहदाइणीहिं परमाउ बद्धु कुरुमेइणीहिं ।
अट्ठमइ जम्मि तुहुं जिणवरिंदु होसहि पयजुयणामियसुरिंदु ।
सिरिमइ होसइ सेयंसराउ पहिलउ जि दाणतित्थयरदेउ ।
सुरणरसुहाइं संपाविहिंति ए तुह सुहि होइवि सिज्झिहिंति ।
संसारविहुरणिव्वेइएण जिणणाहधम्मअणुराइएण ।
कमकमलजमलवलइयसिरेण तं णिसुणिवि पणविय बहुवरेण ।
वंदिय मंतिहिं सावयगणेण गय रिसि णहयर णहयंगणेण ।
संपत्ता दुरियं वणयरत्तु संभासिवि चत्तारि वि णिरुत्तु ।
घत्ता—मृगेहत्थें पुसिवि तहिं णिसि वसेवि सूरुग्गमि पहु णिग्गउ ॥
करिघंटासरहिं पसरियकरहिं भयभेसावियदिग्गउ ॥२१॥

२२

छणयंदु व तणुकंतिइ पसण्णु दियहेहिं पुंडरिंकिणि पवण्णु ।
साणुंधरि पइवयणिलयकुहिणि ओलोइय तेण णवंति बहिणि ।
पणमिय सासुय जामाउएण अविरयसणेहपसरियभुएण ।
आलिंगिउ राएं भायणिज्जु अविउलु बालु पहसियमुहज्जु ।
मिलियउ लच्छीमइसिरिमईउ णं गंगाणइजउणाणईउ ।
णियबंधुहि संचिंतियसिवेण तहिं तेण वज्जजंघें णिवेण ।
सामित्तणगुणि संणिहिउ सामि मंति वि किउ विउहणयाणुगामि ।
णिरुवद्दउ णिवसावियउ देसु सुहि संमाणिय संचियउ कोसु ।
वित्तोइ बलाइं णियंतियाइं जोग्गाइं दुग्गाइं परिंभितियाइं ।
पडिवक्खु असेसु वि खयहु णीउ थिरु रज्जि थवेप्पिणु पुंडरीउ ।
अप्पेणु पुणु घरवत्ताइ लइउ सहुं कंतइ उप्पलखेडु अइउ ।
सेहुं भिच्चचक्कें ससिमुहेण थिउ रज्जु करंतु सुहीं सुहेण ।
को एम ससयणहं देइ रिद्धि एवड्ड कासु सामत्थसिद्धि ।

३. MBP °झाणेण जि जं खवहि । ४. B कइकट्ठवग्घ°; P कइकोलवग्घ° । ५. M बहुभेय° । ६. MBP °दावणीहिं । ७. MBP °णावियणरिंदु । ८. M दाणु तित्थु° । ९. PK करकमल° । १०. M सगहत्थें फंसिवि तहि णिसि णिवसेवि; B सगहत्थें फंसिवि तहिं वणि णिवसेवि; P सगहत्थें फंसिवि तहिं णिव संसिवि ।

२२. १. M णवकंतिइ । २. MBP अवलोइय । ३. MBP पणविय । ४. MBP जामाइएण । ५. MBP °सिणेह° । ६. MBP भाइणेज्जु । ७. MBP अविउलु वि; T अविलु इति पाठेऽप्ययमेवार्थः । ८. MBP ता णियबंधुहि चिंतिय° । ९. MB विवुह°; P विवुह । १०. MP यंतियाइं । ११. MBP समप्पिवि । १२. BP अप्पुणु । १३. MBP उप्पलु खेडु । १४. B omits this foot. १५. MBP महासुहेण ।

देखो, यह यहाँ नकुल हुआ। मधुके समान मीठे अक्षरोंको सुनकर और गत जन्मान्तरोंकी याद कर ये उपशम भाव धारण करते हैं। न इन्हें डर है और न क्रोध। शुभध्यानके द्वारा आज भी ये अपने दोष नष्ट कर रहे हैं। तुम्हारे द्वारा दिये गये दानको इन वानर, सुअर, बाघ और विषधर-दम अर्थात् नकुलने माना है। बहु-भोगभाव और पवित्रता प्रदान करनेवाली कुरुभूमिकी आयु इन्होंने बाँध ली है। आठवें जन्ममें तुम (वज्रजंघ) अपने चरणयुगलमें देवेन्द्रोंको नमन करानेवाले जिनवरेन्द्र होगे। श्रीमती राजा श्रेयांस होगी पहला दान तीर्थंकर देव। ये देव और मनुष्योंके सुखको प्राप्त करेंगे और तुम्हारे ये सुधीजन सिद्धिको प्राप्त होंगे। संसारके कष्टोंसे विरक्त होकर, जिनधर्मके अनुरागी तथा दोनों चरणकमलोंमें अपने सिरको झुकानेवाले वधूवरने उन्हें प्रणाम किया। मन्त्रियों और श्रावकगणने उनकी वन्दना की, आकाशगामी ऋषिवर नभके प्रांगणसे चल दिये। बातचीत करके चारोंने निश्चित कर लिया कि वे पापसे ही पशुयोनिको प्राप्त हुए।

घत्ता—मृगहस्त नक्षत्र बीतनेपर और रात्रिमें वहाँ रहकर सूर्योदय होनेपर राजा वहाँसे निकला, हाथियोंके घण्टास्वरों और फैली हुई सूँड़ोंसे दिग्गजोंको भयसे कँपाता हुआ ॥२१॥

२२

अपनी शरीरकान्तिसे पूर्णचन्द्रके समान प्रसन्न वह कुछ ही दिनोंमें पुण्डरीकिणी पहुँच गया। अनुन्धरा सहित तथा पतिव्रताके घरकी पगडण्डीकी तरह उसने अपनी बहनको प्रणाम करते हुए देखा। अविरत स्नेहसे अपने बाहु फैलाये हुए जामाताने सासको प्रणाम किया। राजाने भानजेका आलिंगन किया। अविकल और हँसते हुए मुखकमलवाला बालक लक्ष्मीमती और श्रीमतीसे मिला, मानो गंगानदी और यमुना नदियोंसे मिला हो, अपने भाईका कल्याण सोचनेवाले उस वज्रजंघ राजाने वहाँ स्वामित्वके गुणमें स्वामीको रखा, विद्वानोंका अनुगमन करनेवालेको मन्त्री बनाया। राजाके द्वारा शासित समूचा देश उपद्रव रहित हो गया। सुधियोंको सम्मानित किया गया और कोष संचित किया गया। वृत्तियोंसे सेनाओंको नियन्त्रित किया गया। योग्य दुर्गोंकी चिन्ता की गयी। अशेष प्रतिपक्षको नष्ट कर दिया गया। उसने पुण्डरीकको स्थिर राज्यमें स्थापित कर दिया। स्वयं घरका वृत्तान्त पाकर अपनी पत्नीके साथ उत्पलखेड नगर गया। चन्द्रमुख चारों अनुचरोंके साथ वह सुधी सुखसे राज्य करता हुआ रहने लगा। इस प्रकार कौन अपने लोगोंको ऋद्धि देता है ? इतनी बड़ी सामर्थ्य और सिद्धि किसके पास है ?

घत्ता—थिर परकज्जरय णियवंसधय सुपुरिस को णासंघइ ॥
घणतमभरहरणे दित्तीय[16] रणे पुप्फदंत को लंघइ ॥२२॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे वज्जबाहुवज्जदंतवयचरणकरणं णाम पंचवीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥२५॥

संधि ॥२५॥

---

१६. P दित्तीहरणें ।

घत्ता—स्थिर, परकार्यमें रत, अपने वंशका ध्वजस्वरूप सज्जन पुरुषकी शरणमें कौन नहीं जाता? सघन अन्धकारके भारका हरण करनेवाले युद्धमें दीप्तिको कौन लाँघ सकता है ॥२२॥

इस प्रकार त्रेसठ महापुरुषोंके गुण अलंकारोंसे युक्त महापुराणमें महाकवि पुष्पदन्त द्वारा विरचित और महाभव्य भरत द्वारा अनुमत महाकाव्यका वज्रबाहु वज्रदन्त तपश्चरण नामका पचीसवाँ परिच्छेद समाप्त हुआ ॥२५॥

संधि २६

कामभोयसुहरसवसहो वहु वसुमइहि काइं वण्णिज्जइ ॥
जं जं चिंतइ किं पि मणे तं तं सयलु वि खणि संपज्जइ ॥ध्रुवकं॥

१

जक्खपंको दढं वल्लहालिंगणं मालईमालिया कुंकुमालेवणं ।
उंचंओ मंचओ चारुसेज्जोयलं आवरोहारि सोमैहं थणाणं थलं ।
उण्हयं भोयणं तुप्पधाराहरं रत्तओ कंबलो छण्णरंधं घरं ।
पुव्वपुण्णेण सव्वं पि संजुत्तयं सीययालम्मि तेणेरिसं भुत्तयं ।
चंदणं चंदपाया पिया णेहली मल्लियादामयं तारहारावली ।
दाहिणो मंथरो मार्ईओ सीयलो रुक्खकीलाणिओ पल्लवो कोमलो ।
वल्लरीमंडवो पोमैजुत्तो सरो वीयणंदोलणालीणओ सीयरो ।
थद्दूथद्दं दहिं सीयँयं पाणियं उण्हयालम्मि तेणेरिसं माणियं ।
फुल्लियासाकयंबोहधूलीरओ मत्तमाऊरवंदस्स केयारओ ।
णीरधारामुयंतंबुवाहज्झुणी संगया सूहवा पासि सीमंतिणी ।
णिग्गलं मंदिरं णिक्कियं भूयलं धावमाणं रयालं पणालीजलं ।
इट्ठगोट्ठीविसिट्ठेहिं विण्णाययं दिव्वगंधव्वयं कव्वयं पाययं ।
विज्जुमालाफुरंतं णहं दिप्पहं तस्स मेहागमे तं पि सोक्खावहं ।
दीहरो कालओ जाव वोच्छिण्णंओ गेहए धूवओ ताम से दिण्णओ ।
सोत्तसंचारि धूमेण ताणं हओ दंपईणं [10]खणेणेव जीओ गओ ।
कारणं मणुणो किं जणो कंखए होइ [11]सत्थं सिरीसं पि आउक्खए ।

घत्ता—जंबूदीवसुरालयहो उत्तरकुरुहि रमणमणो[12]हारिहे ॥
मरिवि वहूवरु अवयरिउ उयरि अणिंदहु अज्जवण[13]ारिहे ॥१॥

MBP give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza :—

घनधवलताश्रयाणामचलस्थितिकारिणा मुहुभ्रं मताम् ।
गणनैव नास्ति लोके भरतगुणानामरीणां च ॥१॥

GK do not give it.

१. १. MBP उच्चओ । २. M °सेज्जावलं; P सेज्जालयं । ३. MBP सोण्हं । ४. GK मारओ but gloss वायुः । ५. MBP पोमपुण्णो । ६. MB थद्धथड्ढं; P बद्धथड्ढं । ७. MBP सीयलं । ८. M रयाणं । ९. MBP वोलीणओ; T वोच्छिण्णओ । १०. MBP खणेणेय । ११. B सत्थं पियाओखए; P सत्थं सिरीसं पयाओ खए । १२. MBP °हारहो । १३. MBP °णारिहो ।

सन्धि २६

कामभोग और सुखरससे वशीभूत उस श्रीमतीका क्या वर्णन किया जाये। मनमें वह जो-जो सोचती है, वह सब एक क्षणमें उसे प्राप्त हो जाता है।

१

यक्ष कर्दम, प्रियका दृढ़ आलिंगन, मालतीमाला, केशरका लेप, ऊँचा मंच, सुन्दर शय्यातल, स्थूल उन्नत ऊष्मा सहित स्तनोंका भाग, उष्ण भोजन चौकी धारासे सराबोर, लाल कम्बल, और रन्ध्रोंसे आच्छादित घर—पूर्व पुण्यके संयोगसे उसे सब कुछका संयोग प्राप्त हो गया। शीतकालमें उसने इस प्रकार भोग किया। चन्दन, चन्द्रकिरणें, स्नेहमयी प्रिया, जुहीकी माला, स्वच्छ हारावली, दक्षिण मन्द शीतल पवन। वृक्षकी क्रीड़ासे आन्दोलित कोमल पल्लव। लतामण्डप, कमलयुक्त सरोवर, पंखोंके आन्दोलनसे व्याप्त जलकण। खूब जमा हुआ दही। ठण्डा जल। उष्णकालको उसने इस प्रकार बिताया। खिले हुए दिशाकदम्ब समूहकी धूलसे रत, मस्त मयूरवृन्दका केका शब्द, जलधाराको विसर्जित करनेवाले मेघोंकी ध्वनि, संगत सुभग, पासमें बैठी हुई स्त्री। णिग्गल मन्दिर, और पवित्र भूमिभाग, दौड़ता हुआ वेगशील प्रवाली जल। इष्ट गोष्ठियों और विशिष्टोंके द्वारा विज्ञापित दिव्य गन्धर्वगान और प्राकृतकाव्य। बिजलियोंसे स्फुरित आकाश और दिशापथ, ये भी मेघोंके आगमनपर उसे (श्रीमतीके लिए) अच्छे लगे। जब उसका बहुत समय बीत गया तो एक दिन, उसने घरमें धूप दी। उसके धुएँने उन्हें कानोंके छेदमें आहत कर दिया। उस दम्पतिका एक क्षणमें जीव चला गया। क्या मनुष्य मृत्युका कारण चाहता है? शिरीष पुष्प भी आयुका क्षय होनेपर शस्त्रका काम करता है?

घत्ता—वधूवर दोनों मरकर जम्बूद्वीपके महा सुमेरुकी उत्तरदिशामें रमणके लिए सुन्दर उत्तर कुरुभूमिमें अनिन्द्य आर्जवनारीके उदरमें, अवतरित हुए ॥१॥

२

णवमासहिं गब्भहु णीसरियहं ताइं बिहिं वि संचियसुहचरियहं ।
हत्ताणियमुहाइं णिवसंतइं करकमलंगुलियाउ पियंतइं ।
सत्त सत्त दिण गय रंगंतइं पुणु वि पुणु वि णट्टंतपडंतइं ।
सत्त खलिय पयवयणइं देंतइं अवरोप्परु दरकेलि जरंतइं ।
पुणु सत्तहिं थिराइं संजायइं गयकुसलाइं परिप्फुडवायइं ।
अवरहिं सत्तहिं अलिणिहचिहुरइं णिहिलकलाकलावणिवणयरइं ।
अण्णहिं सत्तहिं दियहहिं पोढइं णवजोव्वणसिंगारारूढइं ।
ताइं तिगाउयतुंगसरीरइं वरबदरीहलमेत्ताहारइं ।
सो वि गासु गेण्हंति तिदिवसहिं इय भासिउं रिसीहिं हयहरिसहिं ।
घत्ता—जहिं चामीयरधरणियलु पाणिउं मिट्ठउं णाइं रसायणु ॥
मणिमयकप्पमहीरुहहिं चिउं रवि सत्तावीसं जोयणु ॥२॥

३

जहिं जणियसोक्ख दहभेय रुक्ख ।
जणमणु हरंति चिंतियउ देंति ।
महसहिउं पेज्जु मज्जंगु मज्जु ।
तुरंगतूरु भूयंगु हारु ।
केऊरु दोरु वंच्छंगु चीरु ।
गेहंगु गेहु णं सरयमेहु ।
ढोयंति तुंग तरुभायणंग ।
भायणविहित्ति दित्तंगदित्ति ।
जे भोयणक्ख ते विविहभक्ख ।
भोयणसयाइं रससंगयाइं ।
चवणेंति ताइं जणु महइ जाइं ।
पुण्णाय णाय वर पारियाय ।
णवमालियाउ अलियालियाउ ।
मालंगरुक्ख ढोयंति णिरुह ।
हयतिमिरभावु दीवंगु दीवु ।
घत्ता—णिच्चु जि उच्छवु णिरु दिहि णिच्चु जि तणुतारुण्णु णवल्लउ ॥
भोयभूमिरुहमाणुसहं जं जं दीसइ तं तं भल्लउ ॥३॥

२. १. B संचियसुहसुहचरियहं । २. MBP पिय; T पय पदानि । ३. MBP गइ° । ४. MBP वर-बदरीहल°; T कुवली बदरी । ५. B सुदिवसहिं । ६. MBP भासियउं रिसिहिं । ७. MP थिउ; B विउ; T चिउ प्रच्छादितम् ।

३. १. MBPKT मयसहिउ । २. MBP भूसंगु । ३. MBP केऊर° । ४. M वच्छंग । ५. MBP गेहंग । ६. MBP °विहित्ति । ७. MP भोयणक्ख । ८. P णिरुह । ९. MBP °भाउ । १०. MBP दीवंगदीउ । ११. MBP उच्छउ । १२. MBP णिच्चु ।

२

नौ माहमें गर्भसे निकलनेपर, शुभ चरितका संचय करनेवाले, उन दोनोंके ऊँचा मुँह कर रहते हुए और हाथकी अंगुलियोंको पीते हुए सात दिन बीत गये। सात दिन घुटनोंके बल चलते हुए, फिर-फिर उठते-पड़ते हुए, सात दिन कुछ पद वचन बोलते हुए और एक दूसरेके साथ कुछ क्रीड़ा करते हुए बीत गये। फिर सात दिनमें स्थिर, गतिमें कुशल और स्फुट वाणीवाले हो गये। और भी सात दिनमें भ्रमरके काले बालवाले और समस्त कलाकलापमें निपुणतर हो गये। दूसरे सात दिनमें प्रौढ़ तथा नवयौवन एवं शृंगारमें रूढ़ हो गये। उनका तीन कोस (गव्यूति) ऊँचा शरीर था। बेरके समान उनका श्रेष्ठ आहार था। वह भी तीन दिनमें वे एक कौर ग्रहण करते थे। ऐसा हर्षसे रहित ऋषियोंने कहा है।

घत्ता—जहाँ सोनेकी जमीन है, पानी ऐसा मीठा कि जैसे रसायन हो। जहाँ सूर्य कल्पवृक्षोंके द्वारा सत्ताईस योजन तक आच्छादित है ॥२॥

३

जहाँ सुख उत्पन्न करनेवाले दस वृक्ष हैं, जो जनमनका हरण करते हैं और चिन्तित फल देते हैं। मद्यांग वृक्ष, हर्षयुक्त पेय और मद्य, वादित्रांग, तुरंग और तूर्य, भूषणांग हार, केयूर और डोर, वस्त्रांग वस्त्र, गृहांग घर, जो मानो शरद् मेघ हों। भाजनांग वृक्ष, अंगोंको दीप्ति देनेवाले तरह-तरहके बर्तन देते हैं और जो भोजनांग वृक्ष हैं, वे विविध भोज्य पदार्थ तथा रसयुक्त सैकड़ों प्रकारके भोजन देते हैं। माल्यांग नामके वृक्ष देते हैं उन पुष्पोंको जिनसे मनुष्यका सम्मान बढ़ता है, पुन्नाग नाग श्रेष्ठ पारिजात, भ्रमरोंसे सहित नवमालाएँ, निर्दोष दीपांग वृक्ष तिमिरभावको नष्ट करनेवाले दीप देते हैं।

घत्ता—नित्य ही उत्सव, नित्य ही नया भाग्य और नित्य ही शरीरका तारुण्य। भोगभूमिके मनुष्योंको जो-जो चीज दिखाई देती है, वह सुन्दर है ॥३॥

४

ण दु[1]ज्जणु दूसियसज्जणवासु ण खासु ण[2] सोसु ण रोसु ण दोसु ।
ण छिंक ण जिंभणु णाल[3]सु दिट्ठु ण णिद्द ण णे[4]त्तणिमीलणु सुदट्ठु ।
ण रत्ति ण वासरु घं[5]तु ण घम्मु ण इट्ठविओउ ण कुच्छिय कम्मु ।
अयालि ण मे[6]च्चु ण चिंत ण दीणु कयाइ कहिं पि सरीरु ण खीणु ।
पु[7]रीसविसग्गु ण मुत्तपवाहु ण लाल ण से[8]मु ण पि[9]त्तु वि डाहु ।
ण रोउ ण[10] सोउ ण सेउ विसाउ किलेसु ण दासु ण को वि[11] वि राउ[12] ।
[13]सुरूव सलक्खण माणव दिव्व अगव्व सुभव्व समाण जि सव्व ।
मुहाउ विणीसिउ सासु सुयंधु कलेवरि वज्जसमट्ठियबंधु ।
तिपल्लपमाणु थिराउणिबंधु करीसरें[14] केसरि ते वि हु बंधु ।
ण चोरु ण मारि ण घोरुवसग्गु अहो कुरुभूमि विसेसइ सग्गु ।

घत्ता—बिहिं मि ताहं तहिं संठियहं एक्कमेक्करइरमणालुद्धहं ॥
[15]भुंजंतहं णाणासुहइं जाइ कालु दि[16]ढणेहणिबंधहं ॥४॥

५

तहिं जि पईहरथोरकर सद्दू[1]लाइय जाय णर ।
पत्तभोयभूमीभवेण वज्जजंघरायज्जवेण ।
समहिलेण अच्छंतएण सुरत[2]रुसिरि पेच्छंतएण ।
कासु वि भासियसम्मयहो कज्जेणे[3]यं समागयहो ।
दे[4]वहु दीवियदिप्पहहो णिएवि विमाणु रविप्पहहो ।
पुव्वभवंतरु संभरिउ तं ललियंगदे[5]वें चरिउ ।
थिउ णियमणि जा विंभइउ भवणिव्वेयभावलइउ ।
ता णहाउ चारणजुयलु ओयरिउ णहणिहु विमलु ।
एंतु तेण हक्कारियउ रुइरासणि बइसारियउ ।
सीसें सीसेण जि णैविउ सविणयवायइ विण्णविउ ।
के तुम्हइं किं आगमणु कि[6]उ किं तुम्हहं उवरि मणु ।
महु वट्टइ णेहुल्लियउ ता गुरुमुणिणा बोल्लियउ ।

घत्ता—जइयहुं तुहुं अलयाउरिहि होंतउ आसि महाबलु राणउ ॥
तइयहुं हउं सइंबुद्धु तुह मंति मंतसब्भावबियाणउ ॥५॥

---

४. १. MB दुज्जण । २. MBP ण रोसु ण सोसु । ३. MBP णालस । ४. M णित्त° । ५. MBP वण्णु; T वण्णु । ६. MB मिच्चु । ७. MBP पुरोमुवसग्गु । ८. MBP सिंभ । ९. MBP पित्त ण डाहु । १०. MBP ण सेउ ण सोउ । ११. MBP कोइ । १२. MBP add after this : मुहज्जि (B महुज्जि; P मुहंजे) ण मीसिय मासिय (B कम्मु ण) रोम, सुरेसहु बुंधि विसेसियकाम (B °कम्म). १३. MBP सरूव । १४. M करीसरि । १५. MBPK भुजंतहं । १६. MB दढणेहणिबद्धहं ।

५. १. MBP सद्दूलाइ वि. २. MBP सुरहरसिरि । ३. MBP कज्जें केण । ४. P °देउ । ५. P वि । ६. MBP कि अम्हहं तुम्हहं ।

४

वहाँ सज्जनके निवासको दूषित करनेवाला दुर्जन नहीं है। जहाँ न खाँस है, न शोष है, न क्रोध है और न दोष। न छींक, न जँभाई और न आलस्य देखा जाता है। न नींद और न सुष्ठु नेत्र निमीलन। न रात न दिन। न ध्वान्त (अन्धकार), न घाम। न इष्ट वियोग और न कुत्सित कर्म। न अकाल मृत्यु, न चिन्ता, न दीनता, कभी भी कहीं शरीर दुबला नहीं। न पुरीषका विसर्जन और न मूत्रका प्रवाह। न क्षार, न कफ, न पित्त और न जलन, न रोग, न शोक, न स्वेद और न विषाद, न क्लेश, न दास और न कोई भी राजा। सभी मनुष्य सुरूप, सुलक्षण और दिव्य, निरभिमानी, सुभव्य और सभी समान। उनके मुखसे सुगन्धित श्वास निकलता है, शरीरमें वज्रवृषभ नाराच संहनन है, तीन पल्य प्रमाण स्थिर आयुका बन्ध है। जहाँ गजेश्वर और सिंह दोनों भाई हैं। जहाँ न चोर है, न मारी है न घोर उपसर्ग। आश्चर्य है कि कुरुभूमि स्वर्गसे भी अधिक विशेषता रखती है।

घत्ता—एक दूसरेके साथ रतिक्रीड़ामें लुब्ध, दृढ़ स्नेहमें बँधे हुए, वहाँ रहते हुए उन दोनोंका नाना प्रकारके सुख भोगते हुए समय बीतने लगा ॥४॥

५

शार्दूलादि भी (सिंह, वानर, सुअर और नकुल) वहींपर स्थूल और दीर्घ बाहुवाले मनुष्य हुए। भोगभूमिमें जन्म पानेवाले वज्रजंघ राजाके जीवको, अपनी महिला (श्रीमती) के साथ रहते हुए, कल्पवृक्षोंकी लक्ष्मीका निरीक्षण करते हुए, किसी कार्यसे आये हुए, सम्यक्दर्शन-का भाषण करनेवाले, किसी सूर्यप्रभ देवके दिशापथोंको आलोकित करनेवाले विमानको देखकर अपना पूर्वभवका ललितांग चरित याद आ गया। जब वह अपने मनमें विस्मित था, और उसे संसारसे निर्वेदभाव हो रहा था, तभी आकाशसे एक चारणयुगल मुनि उतरे। आते हुए उन्हें उसने पुकारा और एक ऊँचे आसनपर बैठाया। शिष्यने सिरसे नमस्कार किया और अपनी विनय-पूर्ण वाणीसे निवेदन किया—"आप कौन हैं, किस लिए यह आगमन किया, हमारा स्नेहसे भरा हुआ मन आपके ऊपर क्यों है?" इसपर गुरु बोले—

घत्ता—जब तुम अलकापुरीमें राजा थे महाबल नामसे, तब मैं मन्त्र और सद्भावको जाननेवाला तुम्हारा स्वयंबुद्ध मन्त्री था ॥५॥

६

णिद्दाइ मुत्तो सि विवे[1]रंतचित्तो सि ।
जइया कुवाईहिं सिविणंतरे तीहिं ।
हो[2] बप्प दुग्गेज्झ तइया मए तुज्झ ।
संसारहाराइं जिणवयणसाराइं ।
सिद्धा रिसी जेहिं दिण्णाइं तं तेहिं ।
होऊण ललियंगु मोत्तूण दिव्वंगु ।
भीमारिणिण्णासि भूमीसु हूओ सि ।
मुणिदाणबुद्धीइ बहुपुण्णसिद्धीइ ।
तुहुं एत्थु जाओ सि णाणेण णाओ सि[3] ।
संबंधिओ होसि किं णेय जाणासि ।
खगवइविओएण मइं मुक्कभोएण ।
किउ घोरु तवयरणु इंदियछिं[4]हाहरणु ।
सोहम्मि सोहालु हुउ देउ मणिचूलु ।
सइंपहविमाणम्मि दुक्खावसाणम्मि ।
इह जंबुदीवम्मि पुव्वे विदेहम्मि ।
पुक्खलहि मेइणिहि पुरिपुंडरिंकिणिहि ।
पियसेणरायस्स पसरंतरायस्स ।
कयणाहणेहम्मि सुंदरिहि देहम्मि ।
जाओ मि हं भइ आलो[5]विणीसइ ।
पीइंकरो णाम सुणि रा[7]मिणीकाम ।
अलिवलयणिहकेस पीई[6]सरो ए[8]स ।
मज्झाणुओ होइ दिव्वो महाजोइ ।

घत्ता—मिश्वं चिय णेहाउलहो णिग्गय बिण्णि वि णियघरवासहो ॥
जाया सीस सयंपहहो अरहंतहो संतारिविणासहो ॥६॥

७

अवहिणाणि चारण संजाया बिण्णि वि पइं संबोहहुं आया ।
लइ सम्मत्तु अलो[1]हि पलावें भावहि जिणदंसणु सब्भावें ।
अत्थि णत्थि किं संक ण किज्जइ इहपरलोयकंख वज्जिज्जइ ।
गुणवंतहु दोसु[2] वि ढंकिज्जइ मग्गभट्ठु पुणु मग्गि ठविज्जइ ।
असु[3]इकलेवरु जणु ण वियप्पइ साहुहुं देहे[4]दुगुंछ ण घिप्पइ ।

६. १. MBP विवरंति । २. MBP हा बप्प । ३. MP add after this : णयणेहिं दिट्ठो सि, णेहं गओ तो सि । ४. B °छुहा°; T °छिहा° । ५. MBP आलावणी° । ६. MBP पीईकरो । ७. MBP कामिणी°; T रामिणी° । ८. P ईस ।

७. १. M अलंहि । २. MBP वि दोसु । ३. P असुह° । ४. M देहु दुगुंछण; P देहु दुगुंछु ण ।

६

जब तुम निद्रामें थे और जब कुवादियों द्वारा गर्तमें फेंक दिये गये थे, तब स्वप्नान्तरमें भी दुर्ग्राह्य हे सुभट, मैंने तुम्हें संसारका हरण करनेवाले जिनवरके उन वचनोंका सार तुम्हें दिया था कि जिससे बड़े-बड़े ऋषिमुनि सिद्ध हुए हैं। फिर तुम ललितांग देव होकर, दिव्य शरीर छोड़कर, भयंकर शत्रुओंका नाश करनेवाली भूमिमें उत्पन्न हुए। लेकिन मुनिको दानकी बुद्धि और अनेक पुण्योंकी सिद्धिसे तुम यहाँ उत्पन्न हुए हो, ज्ञानके द्वारा तुम मेरे द्वारा जान लिये गये हो ? सम्बन्धित हो, क्या तुम नहीं जानते ? विद्याधर राजाके वियोगके कारण भोगोंको छोड़कर मैंने इन्द्रियोंकी भूखको नष्ट करनेवाला भयंकर तप किया और सौधर्म स्वर्गमें सौभाग्यशाली मणिचूल देव उत्पन्न हुआ, दुःखको नाश करनेवाले स्वयंप्रभ विमानमें। इस जम्बूद्वीपके पूर्व विदेहकी पुष्कलावती भूमिमें पुण्डरीकिणी नगरी है। उसमें अपने राज्यको प्रसारित करनेवाले राजा प्रियसेनकी सुन्दरी पत्नी है। अपने पतिसे स्नेह करनेवाली उससे, वीणाके समान शब्दवाला मैं प्रीतिंकर नामसे उत्पन्न हुआ। स्त्रियोंके द्वारा इच्छित, हे भद्र, तुम सुनो, भ्रमर समूहके समान केशराशिवाला, प्रेमका सरोवर, दिव्य महाज्योति यह मेरा छोटा भाई है।

घत्ता—स्नेहसे नित्य भरपूर अपने गृहवाससे हम दोनों निकल पड़े तथा विद्यमान शत्रुओंका नाश करनेवाले स्वयंप्रभ अरहन्तके शिष्य हो गये ॥६॥

७

हम लोग अवधिज्ञानी चारण हो गये हैं और तुम्हें सम्बोधित करने आये हैं। तुम सम्यक्त्व ग्रहण करो, व्यर्थ बकवाद मत करो, सद्भावसे जिनदर्शनका विचार करो। 'है' या नहीं है, इसकी बिलकुल शंका नहीं करनी चाहिए, इहलोक और परलोककी भी आकांक्षा छोड़ देनी चाहिए। गुणवान् व्यक्तिके दोषोंको ढकना चाहिए, जो मार्गभ्रष्ट हैं, उन्हें मार्गमें स्थापित करना चाहिए।

वेज्जावच्चु समउ वच्छल्लें किज्जइ हियएं संघेहियल्लें ।
मिच्छु तुच्छु जो बंधु कहिज्जइ अण्णदिट्ठिवहु सो ण थुणिज्जइ ।
वड्ढइ वड्ढियदुक्कियलेवइ मलु कुदेवकुच्छियगुरुसेवइ ।
समयवेयलोइयमूढत्तणु अवसें करइ अणत्थपवत्तणु ।
अच्छइ वुहयणगंथणिवद्धउ वित्त णाणम्मि धाउ सुपसिद्धउ ।

घत्ता—वेएं किज्जइ जीवदय अप्पउ परु सयलु वि जाणिज्जइ ॥
हम्मइ जेण जियंतु पसु तं करवालु ण वेउ भणिज्जइ ॥७॥

८

सया णारिरत्तो सया भज्जमत्तो ।
सया वित्तलुद्धो सया सत्तुकुद्धो ।
समोहो समाओ सदोसो सराओ ।
ण सो होइ देवो णं खं सुण्णभावो ।
पलं जस्स खज्जं महुं जस्स पेज्जं ।
वहू जस्स गेहे रई जेस्स देहे ।
गुरू सो वि हा हे जगे मंदमेहे ।
सपावं सपावा णवंता विगावा ।
ण गच्छंति सग्गं ण वा तेऽपवग्गं ।
पउत्ता महंता ण कायस्स चिंता ।
विसेस्सावि हारे खमा होइ भारे ।
पमोत्तूण वेयं खगं वइणतेयं ।
जिणिंदं अणिंदं सुरिंदोहवंदं ।
विहुं वीयरोसं अहिंसाणिघोसं ।
विहाऊण एक्कं णयाणीयसक्कं ।
परो को हयारी जगे मोहहारी ।
तिणा जो पउत्तो असक्खेण चत्तो ।
अहिंसापयासो वियाणागमो सो ।

घत्ता—पँत्तीय धम्मु दयापरसु रिसि गुरु देउ जिणिंदु भडारउ ॥
लइ लइ तुहुं सम्मत्तगुणु मइं अक्खिउं संसारहु सारउ ॥८॥

---

५. B संहहियल्लें । ६. MBPT °पहु । ७. MP मुणिज्जइ । ८. MBP °गंथहिं बद्धउ; T गंथणिबद्धउ । ९. MBP जीवदया ।

८. १. P मज्जि मत्तो । २. P सत्तकुद्धो । ३. MBP सयं सुण्ण°; T खं ण न गगनं देवः । ४. MBP तस्स । ५. MBK विसस्सावहारे; P विसस्साहवारे । ६. MBP मोहयारी; T मोहयारी मोहदारकः । ७. MB एत्तीय; P पत्तिय and gloss प्रतीत्या । ८. MB °पवरु; P °परु ।

यह विचार नहीं करना चाहिए कि मनुष्य अपवित्र शरीर है। साधुओंकी देहसे घृणा नहीं करनी चाहिए। संघके हितसे भरे हृदयसे और वात्सल्यके साथ उनकी वैयावृत्य करनी चाहिए। अन्यका दृष्टिपथ जो मिथ्या तुच्छ और वन्ध्य कहा जाता है, उसको प्रशंसा नहीं करनी चाहिए। बढ़ता है पापका लेश जिसमें ऐसी कुगुरु और कुदेवकी सेवासे मल (पाप) बढ़ता है। शास्त्र-ज्ञान और लोकको मूढ़ता अवश्य ही अनर्थका प्रवर्तन करती है। बुधजनके ग्रन्थोंमें निबद्ध सुप्रसिद्ध विद् धातु ज्ञानके अर्थमें है।

घत्ता—ज्ञान (वेद) के द्वारा जीवदया करनी चाहिए, स्व और पर सबको जानना चाहिए, जिसके द्वारा जीवित पशु मारा जाता है उस करवाल (तलवार) को वेद नहीं कहा जाता ॥७॥

८

जो सदेव नारीमें रक्त है, सदा मदिरामें मत्त है, सदेव धनलुब्ध है, सदा शत्रुपर क्रुद्ध होता है, मोह सहित, माया सहित तथा दोष और रागसे सहित है, वह देव नहीं हो सकता। और देव शून्यभाव हो सकता है, जिसके घरमें वधू है, जिसके शरीरमें रति है, अरे खेदकी बात है कि मन्दबुद्धिवाले जगमें वह भी गुरु है। पाप सहित लोग पाप सहितको, विगतगर्व नमस्कार करते हैं। ऐसे लोग स्वर्ग नहीं जाते और न ही अपवर्ग (मोक्ष) जाते हैं। महान् वे कहे जाते हैं जिन्हें शरीरकी चिन्ता नहीं होती, हारमें या भारमें, जिनकी विश्वके प्रति क्षमा होती है। इसलिए वेदको और वैनतेय (गरुड़) को छोड़कर अनिन्द्य देव समूह द्वारा वन्दनीय, वीतक्रोध अहिंसाका निर्घोष करनेवाले इन्द्रके द्वारा प्रणम्य एकमात्र अनिन्द्य जिनेन्द्रको छोड़कर जगमें दूसरा कौन शत्रुओंका नाश करनेवाला है, और मोहका अपहरण करनेवाला है। उन्होंने जो कुछ कहा है, वह असत्यसे व्यक्त है, वह अहिंसाका प्रकाशन करनेवाला और विज्ञानका आगम है।

घत्ता—दयासे श्रेष्ठ धर्म और ऋषि-गुरु-देव-आदरणीय-जिनका विश्वास करो, तुम सम्यक्त्व गुणको स्वीकार करो; मैंने संसारका सार तुमसे कह दिया ॥८॥

९

मो ललियगत्त मो धवलणेत्त ।
सेंहहसु मित्त तच्चाइं सत्त ।
छद्दव्वभेय छज्जीवकाय ।
पंचत्थिकाय चउं सुरणिकाय ।
णाणाइं पंच गैइभेय पंच ।
रिसिवयइं पंच गिहिवयइं पंच ।
छल्लेसभाव मुणि तिण्णि गाव ।
तेरह चरित्त गुत्ति वि तिहुत्त ।
णवविह पयत्थ दह धम्मपंथ ।
सत्त भय सिट्ठ मय अट्ठ दुट्ठ ।
अप्पाणुवाउ कम्माणुवाउ ।
चरणाणिओउ करणाणिओउ ।
जं कहिउ तेण मुणिपुंगवेणं ।
णिसुणिवि कमेण तं गहिउँ तेण ।
अज्जेण जेम अज्जाइ तेम ।

घत्ता—जिह सद्दूलज्जवणरेण कोलणरेण वि तिह पडिवण्णउं ॥
वाणरचरफणिरिउचरेहं सम्मइंसणु मुणिणा दिण्णउं ॥९॥

१०

भत्तिए णविय भवियणरवग्गें गय रिसि उल्ललेवि णहमग्गें ।
कुलिसबाहुतणयहु ते किंकर मइवराइ चत्तारि सुहंकर ।
तउ करेवि जाया णिरवज्जहि अहविमाणि हेट्ठिमगेवज्जहि ।
लोयसारु अहमिंदसुरत्तणु पत्ता पुण्णपहावपहुत्तणु ।
वज्जजंघु सइ सिरिमइ अज्जइ बे वि मैयाइं समंचियपुज्जइं ।
हुउ ईसाणकप्पि वरु सुरवरु सिरिपहमंदिरि णामें सिरिहरु ।
तहिं जि कप्पि कुंदेंदुसमप्पहि सीमंतिणि सुरगेहि सयंपहि ।
जिणचरणारविंदरयचित्तें णारिलिंगु छिंदेवि संमत्तें ।
हूई अमरु सयंपहु णामें सो रूवेण ण णिज्जिउ कामें ।
वग्घँचरु वि णरु मुउ ललियंगउ णिलइ मणोहरि हुउ चित्तंगउ ।

---

९. १. K adds this line in the margin but scores it out. २. MBP सुरचउणिकाय । ३. M गयभेय । ४. MP रयणइं तिहुत्त । ५. K °पुंगमेण । ६. B सिसुणवि; P णिसुणवि । ७. MBP महिउ । ८. MP सद्दूल वज्जणरेण; B सद्दूलवज्जणरेण । ९. MP °रिउचरहं ।

१०. १. P उल्लुलेवि । २. MBP अहमिंदु । ३. MBP वज्जजंघु सिरिमइ तह अज्जइ । ४. P मुयाइं । ५. P हुव । ६. MBPK सम्मत्तें । ७. K विग्घचरु ।

९

हे सुन्दर शरीर, धवल नेत्र मित्र! तुम श्रद्धान करो कि तत्त्व सात हैं। द्रव्यके छह भेद हैं, जीवकायके छह भेद हैं, अस्तिकाय पाँच हैं और देवनिकाय चार हैं। ज्ञान पाँच हैं, गतिभेद पाँच हैं, मुनिव्रत पाँच हैं, गृहस्थोंके भी पाँच व्रत हैं। लेश्याभाव छह हैं, गर्व तीन प्रकारके जानो, चारित्र्य तेरह प्रकारका है, और गुप्तियाँ तीन प्रकारकी। पदार्थ नौ प्रकारके हैं, धर्मके मार्ग दस प्रकारके हैं, सात प्रकारके भय कहे गये हैं, दुष्ट मद आठ प्रकारके हैं, आत्मानुवाद (जीवानुवाद) कर्मानुवाद, चरण नियोग और करणनियोगका उन मुनिने जो वर्णन किया, उसे क्रमसे सुनकर उसने ग्रहण कर लिया, आर्यने जिस प्रकार, आर्याने भी उसी प्रकार।

घत्ता—जिस प्रकार शार्दूलके जीव मनुष्यने सम्यक्दर्शन स्वीकार किया, उसी प्रकार सुअरके जीवने सम्यग्दर्शन स्वीकार किया। वानर और नकुलके जीव मनुष्योंको भी मुनिने सम्यग्दर्शन प्रदान किया ॥९॥

१०

भव्य नरसमूहके द्वारा भक्तिसे प्रणमित ऋषि आकाशमार्गसे उड़कर चले गये। वज्रबाहुके वे चारों मतिवर आदि शुभंकर अनुचर तपकर निरवद्य अधःग्रैवेयक स्वर्गके अहमेन्द्र विमानमें उत्पन्न हुए। उन्होंने लोकश्रेष्ठ अहमेन्द्रसुरत्व और पुण्यके प्रभावकी प्रभुताको प्राप्त किया। वज्रजंघ और आर्यिका श्रीमती, दोनों समतासे अंचित और पूजित होकर मर गये। वज्रजंघ ईशान स्वर्गके श्रीप्रभ विमानमें श्रीधर नामका श्रेष्ठ सुर हुआ और उसी स्वर्गमें कुन्द और चन्द्रमाके समान आभावाले स्वयंप्रभ विमानमें वह स्त्री (श्रीमती) जिनके चरणकमलोंमें भक्ति रखनेके कारण सम्यक्त्वसे स्त्रीलिंगका उच्छेद कर स्वयंप्रभ नामका देव हुई, जिसे रूपमें कामदेव भी नहीं जीत सका। व्याघ्रका भी जीव मनुष्य मरकर सुन्दर विमानमें सुन्दर अंगोंवाला सुन्दर

देउ वराहयरु वि संजायउ णामें [8]कुंडलिल्लु सुच्छायउ ।
णंदविमाणि सरयकंदाहइ खणि सोदामणिपुंजु व मेहइ ।

घत्ता—कुरुभूमिहि [9]माणंवु मरिवि कंतिइ णाइं मियंकु दुइज्जउ ॥
णियसुहकम्में पेरियउ पइयरि [10]मणंरहु हुउ णउलज्जउ ॥१०॥

११

होंतउ आसि जम्मि [1]जो वाणरु सुहुं भुंजेप्पिणु कुरुधरणीणरु ।
णंदावत्तवि[2]माणइ हूयउ णाम मणो[3]हरु देउ [4]सरूयउ ।
जो सइंबुद्धु बुहोहें भाविउ जेण महाबलु धम्महु लाविउ ।
[5]पीयंकरु तिलोयपीईकरु सो संजायउ केवलिजिणवरु ।
णाणें परियाणिवि सुरसहयरु गउ वंदणहत्तिइ तहु सिरिहरु ।
अमरसहंतरालि पइसेप्पिणु थुउ णियगुरु गुरुभत्ति [8]करेप्पिणु ।
णिवडंतहु भवविवरि मुणीसर पइं महु दिण्णु हत्थु परमेसर ।
पइं सइंबुद्ध बुद्ध[9] जगु बुद्धउ पइं हियवउ कयउ विसुद्धउ ।
पइं जोइयउं तच्चु णीसेसु वि तुहुं समु सहणेसु वि णीसेसु वि ।
तुहुं महु मग्गणखंभु [11]अभंगउ हउं तुह चरणजुयलु सरणं गउ ।

घत्ता—मिच्छादिट्ठि [12]सुदुट्ठमण पावयम्म णिद्धम्म वराया ॥
कहहि मयणमयणिम्महण कहिं ते मंति महारा जाया ॥११॥

१२

कहइ भडारउ विण्णि कुधामहु गय संभिण्णसहसमइ भीमहु ।
असहविहुर संतइ [1]संजोयहु णिच्चतमंधहु णिच्चणिगोयहु ।
सुण्णवायविवरणदूसियमइ णिवडिउ णरइ दुइज्जइ सयमइ ।
तं णिसुणिवि सिरिहरु गउ तेत्तहि णारउ णरइ णिसण्णउ जेत्तहि ।
पइसेप्पिणु तं सतिमिरु कुविवरु भणइ विमाणारूढउ सुरवरु ।
अहो अहो सयमइ [2]सुणेहि महाबलु हउं सो खयरराउ जसणिम्मलु ।
भुत्ती [3]सुइरु जेण अलयाउरि सामिसालु तुहुं रिउकरिकेसरि ।
सुरदुंदुहिगंभीरणिणाएं तुम्हइं तिण्णि वि जिणिवि विवाएं ।
गुरुणा जिणवयणम्मि णिउत्तउ सोक्खपरं[4]पराउ हउं पत्तउ ।

---

८. MP कुंडिलिल्लु । ९. MBP माणउ । १०. MBP मणहरु; K मणहर but corrects it to मणरहु ।

११. १. K सो । २. MBP °विमाणे पहूयउ । ३. M मणोहर । ४. MBP सुरूयउ । ५. M पीइंकरु; P पीईकरु । ६. MP पीइंकरु; B पीयंकरु । ७. MB °भत्तिहिं; P °भत्तिइ । ८. B करेविणु । ९. MP सुदधु । १०. MBP जाणियउं । ११. MBP अभग्गउं । १२. MB सुदिट्ठिमण; P सुदुट्ठमण ।

१२. १. P सो जोयहु । २. MBP मुणहि । ३. P सुयरु । ४. MBP °परंपराइ ।

चित्रांग देव हुआ। वराहका जीव भी देव हुआ कुण्डलिल्ल नामका सुन्दर कान्तिवाला। शरद् मेघोंके समान नन्दविमानमें वह ऐसा लगता, जैसे एक क्षणके लिए मेघमें विद्युत् समूह शोभा देता है।

घत्ता—नकुलका जीव, मनुष्य मरकर कुरुभूमिमें मनुष्य हुआ जो कान्तिमें मानो दूजका चाँद था। इस प्रकार अपने शुभकर्मसे प्रेरित होकर मनरथवाला ॥१०॥

११

जो पूर्वजन्ममें वानर था, वह कुरुभूमिके मनुष्यके रूपमें सुख भोगकर नन्दावर्त विमानमें उत्पन्न हुआ, सुन्दर मनोहर नामके देवके रूपमें। पण्डितसमूहको अच्छा लगनेवाला जो स्वयंबुद्ध था और जिसने महाबलको धर्ममें प्रतिष्ठित किया था त्रिलोकको प्रिय लगनेवाला वह प्रीतंकर नामका जिनवर केवली हुआ। देवसहचर श्रीधर ज्ञानसे यह जानकर उसकी वन्दनाभक्ति करनेके लिए गया। देवसभाके भीतर प्रवेश करके और गुरुभक्ति कर अपने गुरुकी खूब स्तुति की—'हे परमेश्वर! भवविवरमें गिरते हुए तुमने मुझे हाथका सहारा दिया, तुम स्वयंबुद्ध बुद्ध हो, दुनियामें बुद्ध माने जाते हैं? आपने हृदय विशुद्ध कर दिया है। आपने अशेष तत्त्वका साक्षात्कार कर लिया है, आप धनी और निर्धनमें समान हैं। आप मेरे लिए आधारभूत अभग्न स्तम्भ हैं, मैं तुम्हारे चरणयुगलकी शरण गया था।

घत्ता—मिथ्यादृष्टि अत्यन्त दुष्टमन पापकर्मा धर्महीन और बेचारे वे हमारे मन्त्री कहाँ उत्पन्न हुए, हे कामदेवके मदका नाश करनेवाले कृपया बताइए?" ॥११॥

१२

आदरणीय वह बताते हैं—"वे दोनों सम्भिन्नमति और महामति खोटे स्थानवाले भयंकर, असह्य कष्टोंकी परम्परासे युक्त नित्य अन्धकारवाले नित्य-निगोदमें गये हैं। शून्यवादके विवरणसे दूषितमति शतमति दूसरे नरकमें गया।" यह सुनकर, श्रीधर वहाँ गया, जहाँ नरकमें वह था। अन्धकारमय उस कुविवरमें प्रवेश कर अपने विमानमें बैठे हुए श्रीधरदेवने कहा, "हे महाबल स्वयंमति सुनो, मैं वही यशसे पवित्र विद्याधर राजा हूँ जिसने बहुत समय तक अलकापुरीका भोग किया। तुम्हारा स्वामीश्रेष्ठ और शत्रुरूपी हाथीके लिए सिंह। सुरदुन्दुभिका गम्भीर निनाद जिसमें है, ऐसे विवादके द्वारा तुम तीनोंको जीतकर, गुरुके द्वारा जिन-वचनोंमें नियुक्त मैं सुखको

जीवदयोदमेण परिचत्तउ तुहुं पुणु पावें एत्थु णिहित्तउ ।
दुण्णयएहिं मा विणडहि अप्पउ वीयराउ जिणु भणु परमप्पउ ।
घत्ता—धम्मु अहिंसउ सद्दहहि मोक्खमग्गु णिग्गंथु वियाणहि ॥
जीहोवत्थछिहाररहिउ मुणि णिमुक्कमोहु संमाणहि ॥१२॥

१३

पहाजित्ततरणी विहंगेण करणी ।
पहु तेण मुणिओ जैयाणिंद भणिओ ।
दढं झत्ति गहिओ सया दोसरहिओ ।
जिणिंदस्स समओ अमोहेण वि मओ ।
तैमुब्भूयदुरियं महादुक्खभरियं ।
पैमोत्तूण महुरं गओ सग्गसिहरं ।
सुरो सोम्मवंयणो सियायंबणयणो ।
तओ विहुरदलिओ सकालेण चलिओ ।
रिऊ विहियसमरा महाणँरयविवरा ।
मणीणलिणणिलए वरे दीववलए ।
सिरारूढहरिणो महामेरुगिरिणो ।
सुरासाइ सहले विदेहम्मि विउले ।
जलाऊँरिया णई मही मंगलावई ।
घत्ता—पट्टणु रयणसंचु सधणु तेत्थुं जि णरिंदु मैंहीधर णामें ॥
सुइवंसुब्भवुं गुणसहिउ चावदंडु णं दाविउ कामें ॥१३॥

१४

तहु गेहिणिं सोहग्गें सुंदरि किं वण्णिज्जइ णामें सुंदरि ।
पाउ असेसु वि अणुहुंजेप्पिणु जिणमयंसद्दहाणु पावेप्पिणु ।
सयमइ सुहहलेण तहि तणुरुहु हुउ छणयंदबिंबसंणिहमुहु ।
सो जयसेणु भाणुसंणिहयरु जाम विवाहि धरइ कण्णाकरु ।
ता सिरिहरसुरु तहिं जि पढुक्कउ वाउ धूलिउवलोहु वि मुक्कउ ।
तेण विग्घु भीसणु पारद्धउ उच्छवि केण वि सोक्खु ण लद्धउ ।

---

५. MBP °दयादाणें । ६. MBP भणु जिणु । ७. MB णिम्मुक्कमोहु; P णिमुक्ककोहु ।

१३. १. B करणी । २. MBP जिणिदेण भणिओ । ३. MBP भत्तिँ । ४. M समुब्भूय° । ५. MBP पमोत्तूण । ६. MBP सोम° । ७. MB °णयर° । ८. MBP °ऊरिय; K °ऊरिय but corrects it to °ऊरिया in second hand. ९. MBPK तेत्थु णरिंदु । १०. MBP महीधरु । ११. MBP °वंसुब्भव ।

१४. १. P गेहणि । २. MBP जिणमइ° । ३. K पालेप्पिणु । ४. MBP °संणिय° । ५. MBP सिरिहरु ।

परम्पराको प्राप्त हुआ हूँ। जीवदया और संयमसे रहित तुम लोग पापके कारण यहाँ उत्पन्न हुए हो। दुर्नयोंसे अपनेको मत भटकाओ, वीतराग जिन परमात्माका नाम लो।

घत्ता—अहिंसाधर्मकी श्रद्धा करो। निर्ग्रन्थ मोक्षमार्गको जानो तथा जिह्वोपस्थ भूखसे रहित और मोहसे मुक्त मुनिका सम्मान करो" ॥१२॥

१३

उसने प्रभासे सूर्यको और गतिभंगिमासे हथिनीको जीतनेवाले स्वामीको माना और कहा, हे अनिन्द्य, तुम्हारी जय हो। शीघ्र ही उसने हमेशा दोषसे रहित जिनेन्द्रके सिद्धान्तको दृढ़ताके साथ स्वीकार कर लिया। अमोहके साथ वह मृत्युको प्राप्त हुआ। महान् दुःखोंसे भरे हुए तमसे उत्पन्न दुःखोंवाले उस नरकको छोड़कर श्रीधर अपने मधुर स्वर्ग-विमानमें चला गया। उस समय पापोंको नष्ट करनेवाला शतमति अपने समयसे आपसमें लड़ते हुए महानरक विवरोंको छोड़कर चला। मणिमय कमलोंके स्थान श्रेष्ठ पुष्करार्ध द्वीपमें, जिसके अग्रभागमें हरिण स्थित हैं, ऐसा सुमेरु पर्वत है। उसकी पूर्वदिशामें सफल विदेहक्षेत्रमें जलसे भरी हुई नदियोंवाला मंगलावती देश है।

घत्ता—उसमें धन-सम्पन्न रत्नसंचय नगर है। उसमें महीधर नामका राजा है जो ऐसा जान पड़ता है मानो कामदेवने पवित्र बाँससे उत्पन्न प्रत्यंचा सहित धनुष ही प्रदर्शित किया हो ॥१३॥

१४

सौभाग्यमें सुन्दर और नामसे सुन्दर उसकी गृहिणीका क्या वर्णन किया जाये? अपने अशेष पापोंको भोगकर तथा जिनमतमें श्रद्धानको पाकर शतमति पुण्यके फलसे उसका पूर्णचन्द्रके समान मुखवाला पुत्र उत्पन्न हुआ। वह जयसेन सूर्यकी किरणोंके समान प्रतापवाला था। जब वह विवाहके लिए कन्याका हाथ पकड़ता है, तभी श्रीधरदेव भी वहाँ आ पहुँचा। उसने धूलसे भरी हुई हवा छोड़ी। उसने भीषण विघ्न शुरू किया। विवाहमें किसीको भी आनन्द

तं पेच्छिवि वरइत्तें भाविउ पइँ थिरु मइं कँह व णिसेविउ ।
एम कहिँ मि पाहाणिहिँ ताडिउ एम्व कहिँ वि खरपवणें मोडिउ ।
एम कहिँ मि रयपुंजें झंपिउ एम्व कहिँ मि हउं दुक्खें कंपिउ ।
एम सरिवि सुमरिउ णारयभउ जमहररिसिहि पासि लइयउ[10] वउं ।
तउ करेवि बंभिंदु पहूयउ धम्मु जि जीवहु[11] अग्गइ.हूयउ ।

घत्ता—अइगरुआ वि णवंति गुरु चंदसूरवंदारयवंदें ॥
सामण्णु वि सुरु धम्मगुरु सिरिहरु पुज्जिउ बंभसुरिंदें ॥१४॥

१५

चुउ मुइवि णियकाउ सिरिहरु वि सग्गाउ ।
ससिसूरदीवम्मि इह जंबुदीवम्मि ।
हरिणियगिरीसस्स मंदरगिरीसस्स ।
उत्तुंगदेहम्मि सुरदिसिविदेहम्मि ।
वित्थिण्णसीमाहि णयरिहि सुसीमाहि ।
सुहदिट्ठि णरणाहु रणि जस्स ण रणाहु ।
जो रोसु संवरइ जो सिरिवहुं धरइ ।
जो कामु परिहरइ परणारिरइ हरइ ।
जो माणु णिग्गहइ मउयत्तु संगहइ ।
जें उणिउ जेंणि हरिसु जें णँ किउ अइहरिसु ।
जें लोहु णिम्महिउ पुरिसत्थु जें महिउ ।
मउ जेण णिट्ठविउ मणु जेण थिरु ठविउ ।

घत्ता—रूवें सोहग्गें गुणेण णावइ उव्वसि णं इंदाणी ॥
किं थुव्वइ अम्हारिसिहिं सुंदँरि णंद णाम तहु राणी ॥१५॥

१६

सुरवरु सग्गु मुएप्पिणु आयउ ताहि गब्भि सो णंदणु जायउ ।
तेण सुविहिणामेण जुवाणें णं पच्चक्खें वम्महबाणें ।
मुणिहिं वि मयणुम्मायजणेरी अभयघोसचक्कवइहि केरी ।
सुय लीलाणिज्जियतंबेरम परिणिय पणइणि णाम मणोरम ।
जो सिरिमइहि जीउ स सयंपहु सुरमंदिरचुउ बहुपुण्णावहु ।
पुत्तु मणोरमाइ संजणियउ केसउ णामें जणवइ भणियउ ।

---

६. K omits this foot. ७. MB कहिं मि । ८. BK पाहाणाहिं । ९. MBP णायर° । १०. MBP तउ; K वउ । ११. MBP सग्गहु; K सग्गहु, but corrects it to अग्गइ ।

१५.१. M हरिणिव° । २. M उत्तुंगगेहम्मि । ३. MBP सिरिवहु वरइ । ४. MBP जणहरिसु । ५. P जि ण कउ । ६. MBP इंदाइणि । ७. K सुंदर । ८. B राइणि ।

१६. १. MBP सिरिहरु । २. MB °पुण्णाउहु ।

नहीं आया। यह देखकर वर अपने मनमें विचार करता है कि इसको तो मैंने कहीं भोगा है। इसी प्रकार कहीं पत्थरोंसे प्रताड़ित किया गया हूँ। इसी प्रकार कहीं खरपवनसे मोड़ा गया हूँ। इसी प्रकार कहीं धूलसमूहसे ढका गया हूँ, इसी प्रकार कहीं मैं दुःखसे काँपा हूँ। इस प्रकार विचारकर उसे नरककी याद आ गयी और उसने यमधरश्रीके पास जाकर व्रत ग्रहण कर लिया। तप करके वह ब्रह्मेन्द्र हुआ। जीवके धर्म ही सबसे आगे रहता है।

घत्ता—बड़े-बड़े लोग भी गुरुको नमस्कार करते हैं। चन्द्र-सूर्य और देवोंके द्वारा वन्दनीय ब्रह्मसुरेन्द्रने भी देव श्रीधरकी धर्मगुरुके रूपमें पूजा की ॥१४॥

१५

श्रीधर भी स्वर्गसे अपना शरीर छोड़कर चन्द्रमा और सूर्योंके द्वीप इस जम्बूद्वीपमें, जहाँ इन्द्र जिन तीर्थंकरको ले गया है, ऐसे सुमेरु पर्वतकी पूर्व दिशामें विशाल आकारवाले विदेह क्षेत्रकी विस्तीर्ण सीमाओंवाली सुसीमा नगरीमें शुभदृष्टि नामका राजा है, जिसके युद्धमें संग्रामदोष नहीं है, जो क्रोधका संवरण करता है, लक्ष्मीरूपी वधूको धारण करता है, जो कामका परिहार करता है, परस्त्रियोंमें रतिसे दूर रहता है। जो मानका निग्रह करता है, मृदुताको धारण करता है, जिसने लोगोंमें हर्ष पैदा किया है, परन्तु जो स्वयं अधिक हर्ष नहीं करता, जिसने लोभको नष्ट किया है, जिसने पुरुषार्थका आदर किया है, जिसने अहंकारको नष्ट कर दिया है; जिसने अपने मनको स्थिर बना लिया है,

घत्ता—जो रूप, सौभाग्य और गुणमें जैसे उर्वशी या इन्द्राणी थी ऐसी उसकी नन्दा नामकी सुन्दर रानीका वर्णन हम-जैसे लोगोंके द्वारा कैसे किया जा सकता है? ॥१५॥

१६

वह देव (ब्रह्मेन्द्र) स्वर्ग छोड़कर, उसके गर्भसे पुत्र पैदा हुआ। सुविधि नामके उस युवकसे, जो मानो साक्षात् कामदेव था, मुनियोंके भी मनमें उन्माद उत्पन्न करनेवाली अभयघोष चक्रवर्तीकी अपनी गतिसे हाथीको जीतनेवाली मनोरमा नामकी प्रणयिनी पुत्रीसे विवाह कर लिया। जो स्वयंप्रभ नामका देव श्रीमतीका जीव था, अनेक पुण्योंका धारण करनेवाला वह

जो सद्दूलजीउ चित्तंगउ सग्गहु णिवडिउ कालवसं गउ।
सो वि विहीसणेण सियणेत्तहि हुउ सुउ वरयत्तउ[3] पूर्यदत्तहि[4]।
जो चिरु कोलजीउ कुंडलसुरु[5] सो संप्राइउ[6] पुणु जम्मंतरु।
णंदिसेणराएं अणुरूवउ तणउ अणंतमईहि पहूयउ।
सयणहिं वरसेणु जि जणि कोक्किउ जो वाणरहं जीउ मइं तक्किउ।
सो जि मणोहरु माणव सुगइहि रइसेणें हूयउ चंदमइहि।

घत्ता—तहु चित्तंगउ णाउं किउ णउलुँ[7] मणोहरु सुरु सग्गायउ॥
जो सो णिविण पहंजणेण पुत्तु चित्तमालिणियहि जायउ ॥१६॥

१७

संतमयणु जाणिज्जइ णामें ए णरवइसुय सुहपरिणामें।
कय रिसि सुविहिहि सुविहिहि सहयर अभयघोसराएं सहुं किंकर।
विमलवाह जिणवंदणहत्तिइ[1] गय विविहवणवण्णविहत्तिइ।
अभयघोसु जिणघोसु सुणेप्पिणु चक्कु[2] णिहाणइं वसुह मुएप्पिणु।
कामकसायविसायविहंजणु हुउ मुणिवरु णिग्गंथु णिरंजणु।
पंचसयाइं सुयाहं अणिंदहं अट्ठारहसहसाइं णरिंदहं।
तेण समउ दिक्खिय हयराया वरदत्ताइ वि तहिं रिसि जाया।
सुविहिणिहालियकेसवदेहें घरवइ संठिउ णंदणणेहें[3]।
पंचाणुव्वय तिण्णि गुणव्वय चउ सिक्खावय कय वज्जिय मय।

घत्ता—जेण सचित्तु णिरोहियउ इंदियेँ[4] विसयरसेसु ण थक्कइ॥
तहु माणवियहु घरि जि तउ जो अप्पाणउं दंडेहुं[5] सक्कइ ॥१७॥

१८

दंसण[1] वउ सामाइउ[2] पोसहु सच्चित्तयविरमणु जणदूसहु[3]।
वासरि णारिसंगपरिवज्जणु बंभचेरु आरंभसमुज्झणु।
दुविहु वि संगभारु अवगण्णिउ पाउँ[4] ण काइं वि मणि अणुमण्णिउं।
णिदिट्ठउ ण तेण पडिवण्णउं मुत्तउ परकिउ केण वि दिण्णउं।
अंतइ संथारयसवणत्तणु[5] करिवि पत्तु अच्चुइ[6] इंदत्तणु।
तायविओएं मेइणि मेल्लिवि सीलायारभारु उच्चल्लिवि।
जिणतउ तिव्वु चरेप्पिणु[7] केसउ तहिं जि तासु जायउ[8] पडिवासउ।
दो वि दुवीसंबुहिसरिसाउस इंदाउहघर[9] णं णवपाउस।

---

३. MBP वरदत्तउ। ४. MBP पियदत्तहि। ५. MBP कुंडलिसुरु। ६. MBP संपाइउ। ७. MBP णउल।

१७. १. MBP °वंदणभत्तिइ। २. MB चक्क। ३. MBP णियसुवणेहें। ४. P इंदिउ। ५. MBP दंडिवि।

१८. १. MBP दंसणु। २. P सामायहु। ३. M जिण°। ४. P पाउ वि काइं ण। ५. MBP °सरणत्तणु। ६. MBP अच्चुयइंद°। ७. P करेप्पिणु। ८. MB पडिआयउ; P पडिभायउ। ९. MBP °उहघरणें णं (P णउ) पाउस।

स्वर्गसे च्युत होकर मनोरमाका पुत्र हुआ। जनपदमें उसका नाम 'केशव' रखा गया। जो सिंहका जीव चित्रांग था, वह भी समयके वशीभूत होकर, स्वर्गसे च्युत होकर, विभीषणका श्वेत नेत्रों-वाली प्रियदत्तासे वरदत्त नामका पुत्र हुआ। जो सुअरका जीव कुण्डलदेव था, वह भी फिर जन्मान्तरको प्राप्त हुआ। नन्दीसेन राजाका अनन्तमतीसे उत्पन्न उसीके अनुरूप पुत्र उत्पन्न हुआ। स्वजनोंमें उसे वरसेन नामसे पुकारा गया और वानरके जीवकी मैंने जो कल्पना की थी वह भी रतिसेनका सुगतिवाली चन्द्रमतीसे सुन्दर मनोहर नामका मनुष्य हुआ।

घत्ता—उसका चित्रांग नाम रखा गया। नकुलको मनोहर नामका देव स्वर्गसे आकर, प्रभंजन नामके राजाका रानी चित्रमालिनीसे पुत्र उत्पन्न हुआ ॥१६॥

१७

जो नामसे प्रशान्तवदनके रूपमें जाना गया। जिसने मुनियोंकी सेवा की है ऐसे सुविधिके सहचर मित्र और अनुचर ये राजपुत्र शुभ परिणामके कारण अभयघोष राजाके साथ विमल-वाहन तीर्थंकरकी विविध पूजाओं और विविध शब्दोंसे विमल वन्दना भक्तिके लिए गये। वहाँ राजा अभयघोष जिनघोष सुनकर चक्र, खजाना और धरती छोड़कर तथा कामकषायका विभंजन करनेवाला निर्ग्रन्थ निरंजन मुनि हो गया। उसके साथ अनिंद्य राजाओंके रागको नष्ट करनेवाले अठारह हजार पांच सौ राजपुत्र तथा वरदत्तादि जन मुनि हो गये। अपने पुत्र केशवके शरीरकी देखभाल करनेवाले पुत्रस्नेहके कारण सुविधि गृहस्थ ही बना रहा। उसने पाँच अणुव्रत, तीन गुणव्रत और चार शिक्षाव्रत ग्रहण किये और मदोंको छोड़ दिया।

घत्ता—जो अपने चित्तका निरोध कर लेता है, उसकी इन्द्रियाँ विषयरसमें नहीं लगतीं। तप तो उस मनुष्यके घरमें ही है कि जो अपनेको दण्डित कर सकता है ॥१७॥

१८

दर्शन-व्रत-सामायिक-प्रोषधोपवास, लोगोंके दोषोंसे अपने चित्तका विरमण। दिनमें स्त्रीके साथ सहवासका त्याग, ब्रह्मचर्य और आरम्भका परित्याग। दो प्रकारके परिग्रह भारकी उसने उपेक्षा की। और अपने मनमें उसने किसी भी प्रकारके पापका अनुमोदन नहीं किया। निर्दिष्ट (सोद्देश्य) आहारको उसने ग्रहण नहीं किया। दूसरेके लिए बनाया गया और किसी द्वारा दिया गया भोजन स्वीकार किया। अन्तमें संन्यासपूर्वक मृत्यु प्राप्त कर अच्युत स्वर्गमें इन्द्रत्वको उसने स्वीकार कर लिया। अपने पिताके वियोगमें धरती छोड़कर शीलाचारके भारको उठाकर जिनवरका तीव्रतम तप तपकर, केशव उसी स्वर्गमें जन्म लेकर प्रतीन्द्रपदको प्राप्त हुआ। दोनों ही

वरदत्तय वरसेण जियंगय संतमयण मुणिवर चित्तंगय ।
ए चत्तारि वि चारुविमाणहं तेत्थु जि जाया मज्झि समाणहं ।

घत्ता—किं ससि भरहुज्जोययरु णं[10] णहकडितित्ति णिहित्तिय[11] कागणि ॥
अच्चुयवइ गुणगणु गुणइ पुप्फयंतु सुरगुरु बुहे[12]सिरमणि ॥१८॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे भोयभूमीसिरिहरसयंपह[13]सुविहकेसवइंदपडिंदमवावण्णणं णाम छब्बीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ २६ ॥

॥ संधि ॥ २६ ॥

१०. M णहकडितित्ति णं । ११. MBP चित्तय । १२. MB बुहसिरिमणि । १३. MBP °सुविहि° ।

बाईस हजार वर्ष आयुवाले ऐसे थे मानो इन्द्रायुध करनेवाले नवपावस हों। वरदत्त, वरसेन, चित्रांगद और कामविजेता प्रशान्तवदन ये चारों ही मुनिवर समान चार विमानोंके भीतर उत्पन्न हुए।

घत्ता—क्या भारतको आलोकित करनेवाला चन्द्रमा है? नहीं, आकाश-कटितलपर कागणी मणि रख दिया गया है। देवोंका गुरु, बुधोंमें शिरोमणि अच्युतेन्द्रके गुणसमूह गिनता है ॥१८॥

इस प्रकार त्रेसठ महापुरुषोंके गुणालंकारोंवाले इस महापुराणमें महाकवि पुष्पदन्त द्वारा विरचित एवं महाभव्य भरत द्वारा अनुमत इस काव्यका भोगभूमि श्रीधर-स्वयंप्रभा-सुविध-केशव-इन्द्र-प्रतीन्द्र जन्म वर्णन नामका छब्बीसवाँ अध्याय समाप्त हुआ ॥२६॥

संधि २७

संजायइं विच्छायइं तेओहामियचंदहो ॥
णियअंगइं खयलिंगइं अच्चुयकप्पपुरिंदहो ॥ध्रुवकं॥

•

१

अइसोमसहाव महारउद्द संचल्लिय चल ससिरवि बलद्द ।
किंह वंचवि कालरहट्टचारु घडिमालइ लंघिउं[2] आउणीरु ।
अप्पउ जाणेप्पिणु वियलियाउ छम्मास समच्चिवि वीयराउ ।
सिरिणिहिउं[3] णिरहु तहु चरणजमलु भवियहु भवणासे वि चित्तु विमलु ।
चुउ कालें अच्चुयसग्गणाहु कहु कालें किर कवलिउ ण देहु ।
इह जंबुदीवि सुरगिरिहि पुव्वु किं भणमि विदेहु विलासदिव्वु ।
रमणीयउववणावलिणिवेसु तहिं वर पुक्खलवइ णाम देसु ।
बहुवण्णमणिसिलाबद्धभूमि पुरु पुंडरिंकिणी तेत्थु सामि ।
हरिमउडपडिच्छियपायरेणु णरणाहु जिणेसरु वज्जसेणु ।
मुहससिजोण्हाधवलियदियंत सिरिकंता णामें तासु कंत ।
सो तियसराउ हयदुरियवाहि तहि हुउ णामें वज्जणाहि ।

घत्ता—सग्गायउ संभूयउ वरयत्तु वि तहि बालउ ॥
विजयंकउ हरिणंकउ णं उग्गमिउ सुहालउ ॥१॥

२

वरसेणु वि हूयउ वइजयंतु चित्तंगउ णामें पुणु जयंतु ।
सुरलोयहु चलिवि[1] पसंतमयणु अवराइउ हूउ पहुल्लवयणु ।
ए सद्दूलाइय[2] चउ सहाय जाया जुवरायहु इट्ठ भाय ।
हेट्ठिमगेवज्जविमाणवासु मेल्लेप्पिणु जम्महु[3] माणवासु ।
आयउ महवरु जायउ सुबाहु आणंदु वि णाम महंतबाहु ।

MBP give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza :—

गुरुधर्मोद्भवपावनमभिनन्दितकृष्णार्जुनगुणोपेतम् ।
भीमपराक्रमसारं भारतमिव भरत तव चरितम् ॥१॥

GK do not give it.

१. १. MBP किं वण्णमि । २. MBP घित्तउं । ३. M रिसि° । ४. MBP चलणजुयलु । ५. MBP भवणास विचित्तु विमलु । ६. P जंबुदीउ । ७. MBP °उववणावणि° । ८. MBP तहिं पुक्खलवइ णामेण देसु । ९. MBP पुरि ।

२. १. MBP चविवि । २. MBP सद्दूलाइ वि । ३. G वम्महु ।

सन्धि २७

अपने तेजसे चन्द्रमाको पराजित करनेवाले अच्युतेन्द्रके क्षयसे आलिंगित अंग एकदम कान्तिहीन हो उठे।

१

अत्यन्त सौम्य स्वभाववाले और महाभयंकर चन्द्रमा और सूर्यरूपी चंचल बैल चल रहे हैं, घटीमाला (घटिका और समय) से आयुरूपी नीर कम हो रहा है, मैं कालरूपी रहटके आचरणसे कैसे बच सकता हूँ। अपनी आयुको विगलित मानकर छह माह तक वीतराग भगवान्‌की समर्चा कर, श्रीसे युक्त और पापसे रहित उनके चरणकमल, जो भव्यके लिए भवका नाश होनेपर वित्त (धन)के समान है। समय आनेपर अच्युत स्वर्गसे वह च्युत हुआ। कालके द्वारा किसकी देह कवलित नहीं होती। इस जम्बूद्वीपमें सुमेरुपर्वतकी पूर्वदिशामें विलाससे दिव्य विदेहका क्या वर्णन करूँ? उसमें सुन्दर उपवनोंकी कतारों और घरोंसे युक्त पुष्कलावती नामका देश है। अनेक रंगोंकी मणिशिलाओंसे विजड़ित भूमिवाली पुण्डरिकिणी नामकी नगरी है। उसका स्वामी इन्द्रमुकुटोंसे चाही गयी चरणधूलिवाला वज्रसेन नामका सूर्यको जीतनेवाला राजा है। अपनी मुखचन्द्रकी ज्योत्स्नासे दिगन्तको सफेद बना देनेवाली श्रीकान्ता नामकी उसकी पत्नी है। पापकी व्याधिको नष्ट करनेवाला वह अच्युतेन्द्र उसका वज्रनाभि नामका पुत्र हुआ।

घत्ता—स्वर्गसे आया वरदत्त भी उसका बालक हुआ विजय नामका, मानो जैसे सुधाका आलय चन्द्रमा ही उदित हुआ हो ॥१॥

२

वरसेन भी वैजयन्तमें हुआ, और चित्रांगद जयन्त नामसे उत्पन्न हुआ। प्रशान्तवदन भी देवलोकसे चयकर प्रफुल्लमुख अपराजित हुआ। [1]ये शार्दूलादि (सिंहादि) चारों सहायक भी युवराज वज्रनाभिके इष्ट भाई हुए। अधोग्रैवेयक विमानके वासको छोड़कर, मानव जन्ममें आकर

---

१. सिंह = विजय, सुअर = वैजयन्त, नकुल = जयन्त, वानर = अपराजित, मतिवर मन्त्री = सुबाहु, आनन्द पुरोहित = महाबाहु, अकम्पन सेनापति = पीठ, धनमित्र सेठ = महापीठ, श्रीमतीका जीव = धनदेव।

अहमिंदु अकंपणु हुयउ पीढु । धणमित्तु वि तेत्थु जि गलयपीढु ।
जे वज्जजंघभवि मित्त तासु । रायहु उप्पलखेडाहिवासु ।
होंता चिर एवहिं विहिवसेण । हूया चत्तारि वि सहुं जसेण ।
ते देविहि गब्भि महासईहि । ताहि जि सुरसिंधुरवइगईहि ।
सुसणेहा जेट्ठसहोयरासु । को होइ वेसु णियभायरासु ।
पालेप्पिणु भवकयकम्मछंदु । तेत्थु जि पुरि केसवु सो पडिंदु ।
वणिउत्तें सुरयासत्तमइहि । सिसु जणिउ कुबेरें णंतमइहिं ।

घत्ता—हयतूरहिं गंभीरहिं बंधुवग्गु आणंदिउ ॥
संमाणें धणदाणें धणदेउ जि सो सहिउ ॥२॥

३

एक्कहिं दिणि झत्ति समागएहिं । भासिउ किं तुहुं मोहिउ गएहिं ।
किं हित्तबुद्धि तुह हिय इएहिं । जेहिं रंजिओ सि णारीरएहिं ।
तुहुं देवदेउ तेलोक्कणाहु । तहिं अण्णहि [3] को किर बोहिलाहु ।
इय संबोहिउ लोयंतिएहिं । सो वज्जसेणु कयसंतिएहिं ।
सिंगारभारवेहवमरट्टु । पविणाहिहि बंधिवि रायपट्टु ।
अंबयवणि खणि णिक्खवणु कियउ । तित्थंकरेण णियहियउ जियउ ।
उप्पण्णउं तायहु धम्मचक्कु । पुत्तहु असिसालइ रयणचक्कु ।
ताएण परज्जिउ मोहचक्कु । पुत्तेण वि णिज्जिउ वइरिचक्कु ।
तायहु संठियं णिहि समवसरणि । पुत्तहु वि णव वि संभूय सरणि ।
तायहु इंदा वि करंति सेव । पुत्तहु वि भिच्च गणबद्ध देव ।
हुउ ताउ धम्मवरचक्कवट्टि । सुउ छक्खंडावणिचक्कवट्टि ।

घत्ता—सिरि मेइणि सुहदाइणि जुण्णउं तणु व वियप्पिवि ॥
पविदंतहो णियपुत्तहो पच्छइ रज्जु समप्पिवि ॥३॥

४

अंगुलिदलु णहपहकेसरालु । सुरवरहंसावलिरवमालु ।
मुणिभमरपीयमयरंदबिंदु । आसंघिउ पिउचरणारविंदु ।
पव्वज्ज लइय धरणीसरेण । विजएण वइजयंतेण तेण ।
संवेउ विवेउ पराइएहिं । धीरेहिं अयंतवराइएहिं ।
तउ लइउ सुबाहुं पत्थिवेण । संतेण महाबाहुं णिवेण ।

४. MBP अहमिंद । ५. M वणुमेत्तु;BP वणमेत्तु । ६. MBP ससणेहा । ७. G सुहोयरासु ।
८. M तवकय°; BP भवु कयकम्मछंदु° । ९. MBP केसउ ।

३. १. M सोहिउ । २. M जिह । ३. K कहि किर । ४. MBP णिहि संठिय । ५. B सिरिमेइणिहि सुहदाइणिहि । ६. M रज्ज ।

४. १. MBP °दल । २. P सुबाहुहु ।

मतिवर सुबाहु हुआ। आनन्द भी महन्तबाहुके नामसे उत्पन्न हुआ। अकम्पन अहमेन्द्र पीठ हुआ। और धनमित्र भी वहीं पर महापीठ हुआ। वज्रजंघके जन्ममें, जबकि वह उत्पलखेड नगरका अधिवासी राजा था, उस समय उसके जो भृत्य थे वे भी (पूर्वोक्त) विधिके वशसे, यशके साथ चारों ही उत्पन्न हुए। वे देवेन्द्रगजपतिके समान गतिवाली उसी महासती देवीके गर्भसे जन्मे। स्नेहसे पूर्ण जेठे सगे और अपने भाइयोंके लिए द्वेष्य कौन होता है ? पूर्व जन्ममें किये गये कर्म छन्दका पालन करनेवाला वह प्रतीन्द्र केशव भी वणिक्पुत्र कुबेरका सुरतिमें अपनी मति आसक्त रखनेवाली अनन्तमतीसे पुत्र उत्पन्न हुआ।

घत्ता—गम्भीर नगाड़ोंके बजनेपर बन्धुवर्ग अत्यन्त आनन्दित हुआ। सम्मान और धनदानके साथ उसका नाम धनदेव रखा गया ॥२॥

३

एक दिन शीघ्र आये हुए लौकान्तिक देवोंने उस (वज्रसेन)से कहा कि तुम मोहित क्यों हो ? क्या तुम्हारी हितबुद्धि चली गयी, जो तुम नारीमें रत रहनेवाले, इन्द्रियरूपी अश्वोंके द्वारा यहाँ अनुरक्त हो। हे देवदेव, जहाँ तुम त्रिलोकनाथ हो वहाँ किसी दूसरेके लिए बोधिलाभ क्या होगा ? शान्ति करनेवाले लौकान्तिक देवोंने इस प्रकार उस वज्रसेनको सम्बोधित किया। तब वज्रनाभिके लिए शृंगारभार वैभवके अहंकारका प्रतीक राजपट्ट बाँधकर उसने आम्रवनमें एक क्षणमें संन्यास ले लिया। तीर्थंकरने अपने हितपर विजय प्राप्त कर ली। पिताको धर्मचक्र उत्पन्न हुआ और पुत्रको शस्त्रशालामें चक्ररत्न। पिताने मोहचक्रको जीता, पुत्रने भी शत्रुचक्रको जीत लिया। पिताकी निधि समवसरणमें स्थित थी, पुत्रके भी नव-नव निधियाँ शरणमें आयीं। पिताकी इन्द्र सेवा करते हैं, पुत्रके भी गणबद्ध देव अनुचर हैं। पिता धर्मश्रेष्ठके चक्रवर्ती हुए, पुत्र छह खण्ड धरतीका चक्रवर्ती राजा हुआ।

घत्ता—फिर शुभदात्री श्री और धरतीको पुराने तिनकेके समान समझकर, अपने पुत्र वज्रदन्तको बादमें राज्य सौंपकर ॥३॥

४

जिसकी अंगुलियाँ ही दल हैं, नखोंकी प्रभा केशर है, जो सुरवररूपी हंसावलीके शब्दसे शब्दायमान है। मुनीन्द्ररूपी भ्रमरोंसे जिसका मकरन्द पिया जा रहा है, ऐसे पिताके चरणरूपी कमलकी सेवामें आ पहुँचा। धरणीश्वर विजय और वैजयन्तने भी प्रव्रज्या ले ली। संवेग और विवेकको प्राप्त धीर जयन्त वरादिने भी तप ग्रहण कर लिया। राजा होते हुए बाहु-महाबाहुने,

णीसेसजीवविरइयकिवेण पीढेण महापीढाहिवेण ।
धणदेवें णिवइघराहिवेणं[3] ।
सज्जीवें पहुरयणुल्लएण णिम्मुक्कविविहरयणुल्लएण ।
दस रायहं सुयहं वि दससयाइं जइभावहु तेण समउ गयाइं ।
एक्कु जि विहरइ रिसि वज्जणाहि परिगणइ सदेहि घुलंत णाहि ।

घत्ता—महि हिंडइ तणु दंडइ णिवसइ कहिं मि णिरासइ ॥
भीसावणि[4] ठिउ पिउवणि सुण्णावासपएसइ ॥४॥

५

दंसणविसुद्धि गुरुविणयसारु सीलव्वएसु अइ[1]अणइयारु ।
णेरंतरु थिरु णाणोववाउ[2] सत्तिइ तउ णिरु संवेयभाउ[3] ।
किउ बज्झब्भंतरगंथचाउ मुणिसंघहु वेज्जावच्च[4]जोउ ।
जिणभत्तिपउरसुयसाहुभत्ति तें विरइयपवयणि परमभत्ति ।
छावासएसु[5] णायरइ हाणि अरहंतमग्गु पायडइ णाणि ।
भव्वेसु करइ कलिमलिणसमणु वच्छल्लु पबोहणु धम्मठवणु ।
णीराएं सहुं रयहारणाइं अरुहंतहु[6] सोलहकारणाइं ।
पयइं अपवग्गा[7]रोहणाइं तेलोक्क[8]चक्कसंखोहणाइं ।
भावेण तेण संभावियाइं घोरइं दुरियइं उड्डावियाइं ।

घत्ता—संपुण्णउं वउं चिण्णउं कालकमेण जि लद्धउं ॥
जगपियरहो तित्थयरहो णाउं गोत्तु तें बद्धउं ॥५॥

६

को एम देउ दइवेण पुण्णु को संचइ किर एवड्डु पुण्णु ।
उग्गतउ तत्तु घोरतउ तत्तु दित्ततउ तत्तु संखीणगत्तु ।
आमोसहीहिं[1] खेलोसहीहिं जल्लोसहीहिं विप्पोसहीहिं ।
सव्वोसहीहिं णावइ सहीहिं सो सहइ साहु रंजियमहीहिं ।
तहु कोट्ठबुद्धि वरवीयबुद्धि संभिण्णसोत्त णामेण बुद्धि ।
पायाणुसारिणी अवर बुद्धि उप्पण्णी तणुविक्किरियरिद्धि ।
अणिमामहिमालहिमाइ सिद्धि सुरसद्धि[2] अहीणमहाण[3]सद्धि ।
सो सुहुम[4]संपरायत्तकरणु चडियउ गुणठाणु[5] अउव्वकरणु ।

---

३. MB add after this line : घणय व्व विविहदव्वाहिवेण । ४. M भीसावणि पिउउववणि; BP भीसावणि वणि पिउवणि ।

५. १. P अइसणइयारु । २. MBP णाणोवओउ । ३. MBP संवेयचाउ । ४. MB वेज्जावज्ज°; P विज्जावज्ज° । ५. P छावस्सएसु । ६. MBP आराहिवि सोलह । ७. G अपवग्गइं रोह° । ८. MBP तेलोय° ।

६. १. MBP आमोसहीहिं जल्लोसहीहिं खेल्लोसहीहिं विट्ठोसहीहिं (P विप्पोसहीहि) । २. MBP सुरसिद्धि; T सुरसद्धि । ३. MBP °महाणसिद्धि । ४. MBP सुहुमु । ५. MBP गुणठाणु ।

समस्त जीवोंके साथ कृपा करनेवाले पीठ-महापीठ राजाओंने, राजघरके अधिपति धनदेवने भी जो सत्तजीव, प्रभुकी रजमें नत, और विविध रत्नसमूहको त्यागनेवाला था। (इस प्रकार) दसों राजाओं और एक हजार (दस सौ) पुत्रोंने उनके साथ मुनिपद ग्रहण कर लिया। लेकिन मुनि वज्रनाभि अकेले ही भ्रमण करते थे वह अपने शरीरपर चलते हुए सर्पोंको नहीं गिनते।

घत्ता—धरतीपर घूमते हैं, शरीरको दण्डित करते हैं, और कहीं भी आश्रयहीन प्रदेशमें रहते हैं। आश्रय प्रदेशोंसे शून्य एक भयानक मरघटमें वह स्थित हो गये ॥४॥

५

(१) दर्शन विशुद्धि, (२) गुरुओंकी विनयसे श्रेष्ठ (विनय सम्पन्नता), (३) शीलव्रतोंमें अनतिचार (शीलव्रत), (४) निरन्तर स्थिर ज्ञानका उपयोग करते रहना (अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोग); (५) अपनी शक्तिके अनुसार तप (शक्तितः तप), (६) और संवेगभाव (जिनधर्मसे अनुराग)। उन्होंने बाह्य और आभ्यन्तर परिग्रहका त्याग कर दिया और मुनिसंघका वैयावृत्य योग किया। जिनभक्ति, प्रचुर श्रुत और साधुभक्ति, तथा प्रव्रजित लोगोंमें उन्होंने परमभक्ति की। छह प्रकारके कायोत्सर्गमें वह कर्मोका आचरण नहीं करता, अपने ज्ञानसे अर्हत् मार्गका प्रकाशन करता है। वह भव्योंके पापमलका शमन करता है। वात्सल्य प्रबोधन और धर्मकी स्थापना। इस प्रकार वीतराग भावसे पापका हरण करनेवाली अर्हन्तको ये सोलह कारण भावनाएँ मोक्षका आरोहण करानेवाली और त्रिलोकचक्रको क्षुब्ध करनेवाली हैं। उन्होंने उस भावसे इनकी भावना की कि जिससे घोर पाप नष्ट हो गये।

घत्ता—काल क्रमसे उन्होंने सम्पूर्ण व्रतको ग्रहण कर लिया और पा लिया। जगत्पिता तीर्थंकर नामगोत्रका उन्होंने बन्ध कर लिया ॥५॥

६

कौन देव, इस प्रकार देवसे परिपूर्ण है ? इतना बड़ा पुण्य कौन संचित कर सकता है ? उसने उग्र तप तपा, (और उग्र तप ऋद्धिका धारक बना) घोर तप किया। उसने दीप्ति तप, ऋद्धि तप किया, संक्षीणगात्र तप किया, अमृत-औषधियों, क्ष्वेल-औषधियों, विप्र-औषधियों, सर्व-औषधियों, पृथ्वीको रंजित करनेवाली औषधियोंसे वह मुनि शोभित हैं। उन्हें श्रेष्ठ बुद्धि-ऋद्धि (कोठारीकी तरह जिन सिद्धान्तोंका रहस्य बतानेवाली) वर बीज बुद्धि-ऋद्धि (बीजाक्षर ज्ञानसे सिद्धान्तोंका निरूपण करनेवाली), सम्भिन्न श्रोत्र-बुद्धि-ऋद्धि (भिन्न शास्त्रोंका रहस्य जाननेवाली); पादानुसारिणी बुद्धि-ऋद्धि, (पदके अनुसार अर्थ जाननेवाली), तनुविक्रिया-ऋद्धि, अणिमा-महिमा-लघिमादि सिद्धि, सुरसिद्धि और महान् महानस सिद्धियाँ उत्पन्न हुईं। वह आठवें

णीसेसमोहसंदोहसमणु सिरि[6]पहमहिहरमेहलहि समणु ।
आहारसरीरहं चाउ करिवि [7]पाँउवगमणमरणेण मरिवि ।
सव्वत्थसिद्धि सुर[8]हरि सुराहु अहमिंदु हुयउ रिसि वज्जणाहु ।
घत्ता—[9]पडिवडियहिँ विहियवडियहिँ दिव्वु सरीरु लएप्पिणु ॥
सुकयंगउ अइचंगउ अप्पाणउ जोएप्पिणु ॥६॥

७

अवहीइ तेण जाणियउं जम्मु पणविउ जिणु जिणवर[1]कहिउ धम्मु ।
घणमणिमऊहपिंजरियमग्गि तेसट्ठिपडलसिर[2]चूलयग्गि ।
सिवपयणिवासु सिरिसोहमाणि बारहजोयणहिँ आपा[3]वमाणि ।
पिहुजंबूदीवपरिप्पमाणि हिमसंखससिप्पहि तहिँ विमाणि ।
पविणा[4]हभाउ कयधम्मसेव अट्ठ वि जाया अहमिंददेव ।[5]
णव ते परमेसर सुकयपुण्ण सुविसुद्धफलिहमाणिक्कवण्ण[6] ।
तणुमाणें जाणिय रयणिमेत्त अहिणवसयदलदलसरलणेत्त ।
ते सुक्कलेस मज्झत्थभाव अपिसुणसहाव [7]परिहरियगाव ।
मउडग्गघुलियमंदारदाम [8]परियाररहिय सं[9]पुण्णकाम ।
खेत्ताउ ण खेत्तंतरहु जंति उत्तरवेउव्विय तणु ण लेंति ।
वरिसहं ति[10]तीससहसहिँ असंति ते[11]त्तियहिँ जि पक्खहिँ णीससंति ।
तेत्तीससमुद्दोवमु जियंति जगणाडि असेस वि ते णियंति ।
घत्ता—णाइंदहो खयरिंदहो तं [12]णउ झसधयमंदहो ॥
[13]पुहईसहो ण सुरेसहो जं सुहुं जगि अहमिंदहो ॥७॥

८

गयगव्व भव्वत्तणारूढ धरणीस पुणु भणइ रिसहेसरो णिसुणि भरहेस ।
जय[1]वम्मु होऊण स[2]णियाणदोसेण [3]जाओ मि खयरिंदु कयधम्मलेसेण ।
होउं महाबलिण संणासु मइं कियउ सइबुद्ध[4]बुद्धीइ बहुपुण्णु संचियउ ।
तहिं मरिवि ईसाणि ललियंगु सुरु जाउ तेत्थाउ अवयरिवि पविजंघु हुउ राउ ।

---

६. M सिरिपहमहिहरमेहलिहि; B सिरिपहमहिहलिहे; P सिरिपहमहिहरमेहलिय । ७. MBP पाउग्गमरणमरणेण । ८. M सुरहरे सराहे; BP सुरहरि सरेहु; K सुरहरि सराहु; T सराहु । ९. BP परिवडियहि ।

७. १. MBP °कहिय । २. MBP °सिरिचूलिय° । ३. MP अपावमाणि; B आयावमाणु । ४. K पवि-णाहि । ५. MBP add after this; दहमउ वणदेउ उप्पण्णु तेत्थु, अहिलच्छि णिरंतरु सोक्खु जेत्थु । ६. MBP °सरिसणेत्त । ७. MBP परिगलिय° । ८. MBP पवियार° । ९. MBP संपुण्ण° । १०. BP तेतीस° । ११. P तेत्तियहहिं पक्खहिं । १२. MB तण्णज्झसद्धयचिंधहो; P तं णउ सुहु झयमद्दहो; T झसद्धयमंद । १३. MBP पुहईसरहो ण सुरेसरहो ।

८. १. MBP अजवम्मु । २. MBP सुणियाण° । ३. MP जाओ सि । ४. P सइबुद्धु ।

अपूर्वकरण गुणस्थानसे नौवें अनिवृत्तिकरण गुणस्थानमें चढ़कर दसवें सूक्ष्मसाम्पराय गुणस्थानमें चढ़ गये। समस्त मोह समूहोंका नाश करनेवाले, श्रीप्रभ राजाकी धरतीके रसिक, आहार शरीर-का त्यागकर, प्रायोपगमन मरणके द्वारा, सर्वार्थसिद्धिके शोभित देवविमानमें ऋषि वज्रनाभि अहमेन्द्र हुए।

घत्ता—विधिसे घटित परिपाटियोंसे दिव्य शरीर धारण कर और स्वयंको पुण्य शरीर और अत्यन्त सुन्दर (अच्छा) देखकर ॥६॥

७

उसने अवधिज्ञानसे अपना जन्म जान लिया। जिन और जिनवरके द्वारा कहे गये धर्मको उसने प्रणाम किया। जिसमें सघन मणिकिरणोंसे मार्ग पीला है, ऐसे त्रेसठ पटलवाले स्वर्गका अन्तिम पटल शिखामणिके समान है। उससे बारह योजन दूर श्रीसे शोभित सिद्धक्षेत्रमें शिवपदका निवास है। वहाँ जम्बूद्वीपके समान एक लाख योजन प्रमाणवाले हिम शंख और चन्द्रमाके समान विमानमें वहाँ धर्मकी सेवा करनेवाले वज्रनाभिके आठों ही भाई अहमेन्द्र हुए। वे नौ ही पुण्य सम्पादित करनेवाले देव थे, जो विशुद्ध स्फटिक मणिके समान आभावाले थे। शरीरके मानमें उन्हें एक हाथ बराबर ऊँचा समझिए। अभिनव कमलके पत्तोंके समान उनके सरल नेत्र थे। शुक्ल लेश्यावाले वे मध्यस्थभाव धारण करते थे। अदुष्ट स्वभाववाले और गर्वसे दूर थे। उनके मुकुटोंके अग्रभागपर मन्दारमाला पड़ी हुई थी। कामसे रहित सम्पूर्णकाम थे। वे एक क्षेत्रसे दूसरे क्षेत्र नहीं जाते। वे उत्तर वैक्रियिक शरीर ग्रहण नहीं करते। तैंतीस हजार वर्षोंमें वे भोजन ग्रहण करते हैं और इतने ही पक्षोंमें साँस लेते हैं। तैंतीस समुद्र पर्यन्त जीवित रहते हैं। वे विश्वरूपी नाड़ीको देखते हैं।

घत्ता—जगमें जो सुख अहमेन्द्रको है, वह कामसे मन्द नागेन्द्र, खगेन्द्र, पृथ्वीश्वर और देवेन्द्रको प्राप्त नहीं है ॥७॥

८

ऋषभेश्वर कहते हैं—"हे गर्वरहित, भव्यत्वमें आरूढ़, धरणीश भरत सुनो—जयवर्मा होकर, अपने निदानके दोषसे थोड़ा-सा धर्म करनेसे विद्याधरेन्द्र हुआ। फिर महाबल होकर मैंने संन्यास किया। और स्वयंबुद्धिसे बहुत-से पुण्य संचित किया। वहाँ मरकर मैं ईशान स्वर्गमें

कुरुधरणिणरु पुणु वि बीयम्मि कप्पम्मि सिरिहरु सुहासीय हंकयवियप्पम्मि ।
पुणु सुविहिविहिविहियजिणसासणाणंदु असु सुइवि हउं हुउ सोलहमसग्गिंदु ।
पुणु वज्जणाहेण होऊण मे चिण्णु पडिखलियजमकरणु तवचरणु संपेण्णु ।
सव्वत्थि अहमिंदु होउं अहत्तिहरु पुणु भइ हूओ अहं एत्थ तित्थयरु ।
गहवइसुया धणसिरी णिहयणयजुत्ति णामेण णिण्णामिणी विहण वणिउत्ति ।
जाया पुणो सूहवा बद्धणेहस्स सिरिसरिस सीमंतिणी ललियदेवस्स ।
सिरिमइमहीसस्स मय पुणु वि कुरुणारि पुणु रवि सयंपहु पुंणरवि दणुयारि ।
केसवु पुणो मरिवि संभूउ पडिसक्कु संसारि संसरइ जगि जीउ इह एक्कु ।
धणदेउ वउ धरिवि पुणु हुयउ अहमिंदु सयलत्थि सरयब्भि संकमिउ णं चंदु ।
तम्हा समोयरिवि कुरुवंससरहंसु इहु एत्थु उप्पण्णु णरणाहु सेयंसु ।
घत्ता—मलु छिंदह जिणु वंदह तिरयणाइं मणि भावह ॥
अमरत्तणु सुणरत्तणु गहणु ण मोक्खु वि पावह ॥८॥

९

जो णरवइ णामें आसि गिद्धु आहारणारिरससायगिद्धु ।
णरयम्मि चउत्थइ सहिवि विहुरु पुणु हुयउ पुञ्जि चलकुंडलिणहरु ।
पुणु देउ दिवायरु मइवरक्खु णरु गेवेज्जामरु सो दिव्वचक्खु ।
पुणु रवि सुबाहु चिरजम्मभाउ णिहिलत्थदेउ अहमिंदु जाउ ।
अणुहुंजिवि जायउ एत्थु भरहु महु सुउ लइ होसहि तुहुं वि णिरहु ।
पीईवद्धण चमुवइ सुगण्णु कुरुमणुयपहायरु सुरु पसण्णु ।
हयपंकु अकंपणु रिद्धिपोढु गइवेयदेउ पुणु हुयउ पीढु ।
सव्वत्थइंदु मेहु सुउ अरेणु पुणु एहु पहूयउ वसहसेणु ।
जो होंतउ सुहरु महीसमंति कुरुकुवलयमाणउ अमियकंति ।
जो पुणु जायउ कणयाहु तियसु आणंदु णाम होएवि सवसु ।
हुउ पढमहिं पहुं चविवि साहु पुणु से महाबाहु धरित्तिणाहु ।
घत्ता—गउ इट्टहो सव्वट्ठहो णट्ठहमिंदसरीरउ ॥
हुउ मुयबलि पसमियकलि केवलि भाइ तुहारउ ॥९॥

---

५. MB सुहासियउ हं कय° P सुहासीय हुउ बीय° । ६. MBK संपुण्णु । ७. MBPT अहलच्छि । ८. MB °देहस्स । ९. MB सुय; P मुय and gloss मृता । १०. MBP पहावंतु दंडारि । ११ MBP संकमिय ।

९. १. MBP गेज्जामरु । २. MBP °भाइ । ३. MBP जाइ । ४. M जि । ५. MBP सुगत्तु । ६. M °अपायरु । ७ MBP पमुत्तु । ८. P गइवेइ° । ९. MBP राउ । १०. MBP महु तणउ सूणु; T अरणु ज्ञानावरणादिरजोरहितः । ११. B सो हुंतु । १२. M एहु चएवि; B एहु तं चएवि; P पहु चएवि; T पहु अहमिन्द्रः. १३. MBP दुमहा° । १४. P धरित्ति° ।

ललितांग देव हुआ। वहाँसे अवतरित होकर मैं वज्रजंघ राजा हुआ। फिर कुरुभूमिका मनुष्य हुआ, फिर मैं कृतविकल्प दूसरे स्वर्गमें सुभाषी श्रीधर देव हुआ, फिर विधिपूर्वक जिनशासनका आनन्द करनेवाला सुविधि, फिर प्राणोंका त्याग कर मैं सोलहवें स्वर्गमें अहमेन्द्र हुआ। फिर मैंने वज्रनाभि होकर, यमकरणको नष्ट करनेवाला सम्पूर्ण तपश्चरण स्वीकार किया। फिर सर्वार्थ-सिद्धिमें पापोंकी वेदनाका हरण करनेवाला अहमेन्द्र हुआ। हे भद्र, फिर मैं यहाँ तीर्थंकर हुआ। वणिक् कन्या धनश्री, जो नयकी युक्तिको समाप्त करनेवाली थी, निर्नामिका नामकी अत्यन्त गरीब लड़की हुई। फिर वह सुभग बद्धस्नेह ललितांग देवकी लक्ष्मीके समान पत्नी हुई। फिर मरकर कुरुभूमिमें श्रीमती नामसे राजाकी रानी हुई। फिर स्वयंप्रभ देव, फिर राक्षसोंका शत्रु केशव, फिर मरकर प्रतीन्द्र हुआ। इस प्रकार जीव अकेला संसारमें परिभ्रमण करता रहता है। धनदेव भी व्रत धारण कर, सर्वार्थसिद्धिमें अहमेन्द्र हुआ, मानो शरद्‌मेघोंमें चन्द्रमा उगा हो। वहाँसे अवतरित होकर, वह कुरुवंश रूपी सरोवरका हंस यह राजा श्रेयान्स उत्पन्न हुआ।

घत्ता—इसलिए तुम मल नष्ट करो, जिनकी वन्दना करो, तीन रत्नोंको मनमें ध्यान करो। अमरत्व और सुनरत्वको तो ग्रहण ही नहीं करना, मोक्ष भी प्राप्त करो ॥८॥

९

जो गिद्ध नामका आहार और नारीके रसके स्वादका लालची राजा था, वह चौथे नरकमें कष्ट सहकर चंचल और कुटिल नखोंवाला व्याघ्र हुआ। फिर देव और मतिवर नामका तेजस्वी मनुष्य, फिर दिव्य दृष्टि, ग्रैवेयकका देव। फिर पुराने जन्मका भाई सुबाहु, फिर निखिल अर्थोंका देवता अहमेन्द्र हुआ, जो वहाँ सुख भोगकर यहाँ मेरा पुत्र भरत हुआ है। लो तुम भी शीघ्र ही पाप रहित होगे। जो प्रीतिवर्धन नामका सुगुण सेनापति था, कुरुभूमिका मनुष्य प्रभाकर नामका प्रसन्न देव, फिर हतपाप और ऋद्धियोंसे प्रौढ़, अकम्पन, फिर ग्रैवेयक देव, फिर पीठ, फिर सर्वार्थसिद्धिका इन्द्र, फिर यह पापरहित मेरा पुत्र वृषभसेन हुआ। जो पहले राजाका मन्त्री था, कुरुभूमिका मनुष्य नामसे अमितकान्ति। जो फिर कनकाभ नामका देव हुआ, आनन्द नामसे अपने अधीन था। वहाँसे च्युत होकर पहले वह राजा महाबाहु धरतीका स्वामी हुआ।

घत्ता—फिर वह इष्ट सर्वार्थसिद्धि गया। फिर अहमेन्द्र शरीर नष्ट होनेपर, कलहको शान्त करनेवाला यह बाहुबलि तुम्हारा भाई केवलज्ञानी हुआ ॥९॥

१०

जो रायपुरोहिउ समियडमरु कुरुमणुयपहंजणु पवरु अमरु ।
धणमित्तु पुणु वि हुंउ[1] सुहपहाणि ओइह्णु[2] अहंविहु परैमठाणि[3] ।
पुणु हविवि महापीढु वि सैंभेउ[4] सव्वत्थसिद्धि संभूउ देउ ।
सो मरिवि महारउ णंतविजउ उप्पण्णु पुत्तु जीवेसु सदउ ।
जो आसि मरेप्पिणु उग्गसेणु होएवि वग्घु मुणिचलणलीणु ।
कुरुमाणुसु सो [5]चित्तंगयक्खु वरदत्तु णराहिउ कमलचक्खु ।
अच्चुइ समसुरु हुउ विजयराउ तवचेरणें[6] खीणु करेवि काउ ।
सव्वट्ठइंदु ववगयसरीरु जसवइसुउ एंहु[7] सोणंतवीरु ।
पहिलारउ हरिवाहणकुमारु पुणु सूयरु पुणु कुरु अज्जसारु ।
सुरुँ[8] कुंडलिल्लु वरसेणु संतु समविबुहु पुणु वि जो वइजयंतु ।
अहअमरणाहु संजणियविणउ तहिं चुउ अच्चुउ हुउ मज्झु तणउ ।
वणि णागदत्तु वाणरु पैलासि[9] अज्जउ हूयउ कुरुभूमिवासि ।
घत्ता—सुमैंणोरहु[10] सुरु हयदुइ पुणु चित्तंगउ पत्थिवु[11] ॥
संचियसमु सुरवइसमु पुणु जयंतु णामें णिवु[12] ॥१०॥

११

पुणरवि अहमीसरु मोक्खंणियडि[1] हूयउ विमाणि माणिक्कपयडि ।
जो सो दुहंसणदुरियभीरु[2] इहु अम्हारउ सुउ णाम वीरु ।
लोलुउ कंदुंइ[3] लोहेण मुयउ जो चिरु गिरिकाणणि णउलु हुयउ ।
पुणु अज्ज मणोहरु अमयभोइ पुणु संतमयणु णरणाहु[4] जोइ ।
पुणु हरिसमाणु गिव्वाणुं[5] चारु अपरज्जिउ णामें णिवकुमारु ।
पुणु अंतिमिल्लु सुरवासवासु सुपसिद्धु अहंवइ तिमिरणासु ।
आवेप्पिणु हुउ तुह माउदेहि सो एहु वीरु महु तणइ गेहि ।
जा वज्जजंघभवि मज्झु बहिणि साणुंधरि णं परलोयकुहिणि ।
हूई णंदहि णं धम्मलील बाहुबलिहि लहुई सस सुसील ।
जा सिरिमंइभवि[6] पंडीय धाय सा भमिवि एत्थु रमणीय जाय ।
बंभी वि तुज्झ जाणहि महीस जणु मोहें तम्मइ एहु कीस ।
परिभमियसयलभुवणत्थलीउ केत्तिउ किर कहमि भवावलीउ ।
रंगं गँउ[7] णडु बहुरूवधारि अणवरयदुविहकम्माणुयारि ।
सा णत्थि थत्ति जहिं[8] जिउ ण जाउ पुणु पुंच्छिउ[9] भरहें वीयराउ ।

१०. १. MBP हुउ । २. MBP ओविल्लु । ३. MBP पउम° । ४. KP सहेउ । ५. K सुव चित्त'° । ६. P तवयरणें । ७ P एहु अणंतवीरु । ८. MBP सुर । ९. P फलासि । १०. MBP समणोरहु । ११. MBP पत्थिउ । १२. MBP णिउ ।

११. १. MBP सोक्ख° । २. MBP दुहंसणु । ३. MBP कंदउ । ४. MBP णरणाह । ५. MP गिव्वाण । ६. MBP सिरिमइ चिरु । ७. MBP रंगगउ णडु व बहु° । ८. K जिउ जहिं । ९. P पुंछिउ ।

१०

आडम्बरको शान्त करनेवाला जो राजपुरोहित था वह कुरु मनुष्य प्रभंजन प्रवरदेव, फिर धनमित्र, फिर सुखप्रधान परमस्थानमें अहमेन्द्र हुआ। फिर महापीठ होकर भी, सर्वार्थसिद्धिमें देव उत्पन्न हुआ। वह मरकर मेरा अनन्तविजय नामका पुत्र हुआ जो जीवोंमें सदय है। और जो उग्रसेन था, वह मरकर और बाघ होकर मुनिके चरणोंमें लीन होकर वह कुरुभूमिमें चित्रांगद मनुष्य हुआ फिर कमलनयन राजा वरदत्त हुआ। फिर अच्युत स्वर्गमें विजयराज सामानिक देव हुआ। तपश्चरणसे अपने शरीरको क्षीण कर सर्वार्थसिद्धिका देव हुआ। फिर शरीर छोड़कर वह यशोवतीका पुत्र यह अनन्तवीर्य है। पहला जो हरिवाहन कुमार था, वह सुअर फिर कुरुभूमिमें आर्यश्रेष्ठ, फिर मणिकुण्डलदेव और वरसेन, फिर सामानिक देव फिर वैजयन्त, फिर विनयसे सम्पन्न अहमेन्द्र और फिर वह अच्युत देव च्युत होकर मेरा पुत्र हुआ। जो नागदत्त पलाश ग्रामका वणिक् था वह कुरुभूमिका निवासी आर्य हुआ।

घत्ता—फिर सुमनोरथ देव हुआ, फिर दुःखका नाश करनेवाला चित्रांगद राजा हुआ। फिर समताका संचय करनेवाला सामानिक देव, फिर जयन्त नामका राजा ॥१०॥

११

फिर भी वह, जो माणिक्योंसे रचित है और मोक्षके निकट है (अर्थात् जहाँ सिद्ध-शिला कुछ ही योजन दूर है) ऐसे विमानमें अहमेन्द्र हुआ। दुर्दर्शनीय पापोंसे डरनेवाला था, वह यहाँ हमारा वीर नामका पुत्र हुआ। और जो लोलुप कन्दुक लोभसे मरकर पहले गिरिकाननमें नकुल हुआ था, फिर अमृतभोगी आर्य मनोहर, फिर प्रशान्तमदन राजा योगी, फिर सुन्दर सामानिक देव। फिर अपराजित नामका नृपकुमार। फिर अन्तिम प्रसिद्ध अहमेन्द्र देव अन्धकार-का नाश करनेवाला। वह वीर आकर तुम्हारी माताकी देहसे मेरे घरमें उत्पन्न हुआ। जो वज्रजंघ जन्ममें मेरी बहन थी, वह अनुन्धरा जो मानो परलोकके जानेके लिए पगडण्डी थी, वह सुनन्दाकी धर्मका आचरण करनेवाली सुशील कन्या और बाहुबलिकी छोटी बहन हुई। और जो श्रीमतीके जन्ममें पण्डिता धाय थी, वह परिभ्रमण कर यहीं स्त्री हुई है। हे महीश ! तुम उसे ब्राह्मी जानते हो, आज भी जन मोहसे किस प्रकार खेदको प्राप्त होते हैं ? यह समस्त भुवनस्थली घूम रही है, मैं कितनी भवावलियोंको बताऊँ ? रंगमंचपर गया हुआ बहुरूप धारण करनेवाला नट अनवरत दो प्रकारके कर्मोंका अनुकरण (अभिनय) करता रहता है। ऐसा एक भी स्थान नहीं है जहाँ यह जीव पैदा नहीं हुआ।" तब भरतने पुनः वीतराग ऋषभजिनसे पूछा।

घत्ता—कइ हलहर कइ सिरिहर कइ पडिसत्तु णरेसर ॥
मइं जेहा पइं तेहा[10] कइ होहिंति जिणेसर ॥११॥

१२

तं णिसुणिवि देवें वुत्तु एम्व   मइं जेहा जिणवर गयविलेव ।
होहिंति भुवणि तेवीस एत्थु   करिहिंति पयडु सिरिधम्मतित्थु ।
आगामियाइं जेहा इमाहं   बावीसहं तइं तेहाइं ताहं ।
कहियाइं जिणहं जम्मंतराइं   संगहियविमुक्ककलेवराइं ।
मुहयंदोहामियससिमरीइ   महु णत्तिउ तुह तणुरुहु मरीइ ।
होसइ चउवीसमु तिजगणाहु   सिरिवड्ढमाणु णामेण एहु ।
दियकविलसीस गुरुभरहतणुउ   तं णिसुणिवि णच्चिउ मुइयमणउ ।
जाही मिच्छत्तहु मूढु होवि   मरिही महु केरउ मउ मुएवि ।
घत्ता—होही सुरु कविलहु गुरु संखसुत्तपवियारउ ॥
णियतणयहु कयविणयहु पुणु पुणु कहइ भडारउ ॥१२॥

१३

सिरिबाला कीलाविउलसेल   बलवंतसधरधरधरणलील ।
पइं जेहा णिव णायाणुवट्टि   एयारह महियलि चक्कवट्टि ।
णव बल णारायण णव भणंति   पडिसत्तु णव जि महिं भुंजिहिंति ।
अवर वि तेवीस जि कामदेव   एयारह रुद्द रउद्दभाव ।
मंडलिय मउडबद्ध वि अणेय   होहिंति बहुत्त वि णामधेय ।
तुह खत्तधम्मु महु परमधम्मु   अवरु वि जं किं पि विसिट्ठकम्मु ।
सव्वहिं जुयंति दिणि णासिहिंति   सिहिमय विसमय घण वरिसिहिंति ।
उम्मूलियतिट्ठाकयलिकंदु   ता णरणाहें संथुउ जिणिंदु ।
घत्ता—जिणसंतइ भयवंतइ पइं दिट्ठइ मलु खिज्जइ ॥
सयलामलु तं केवलु णाणु णरहु उप्पज्जइ ॥१३॥

---

१०. MBPK जेहा ।

१२. १. P विगयलेव । २. M करहिंति । ३. MBP जेहाइं जाहं । ४. G जम्मंतराइं । ५. MBP संगहिवि । ६. MBP रिसिवड्ढमाणु । ७. P कविलकेर । ८. P तणउ । ९. G मइउ मणुउ but gloss हृष्टचित्तः ।

१३. १. P भणंति । २. MBP कामएव । ३. MBP add after this: होसहिं णारय णव कलहसील, वयबंभचेरदढधरणसील (P धरणलील) । ४. MBP पुत्त बहुणाम° । ५. P सव्वइं । ६. P केलिकंदु ।

घत्ता—कितने बलभद्र, कितने नारायण, कितने प्रतिनारायण, मुझ-जैसे कितने चक्रवर्ती राजा और आप जैसे कितने तीर्थंकर उत्पन्न होंगे ॥११॥

१२

यह सुनकर देवने इस प्रकार कहा—मुझ जैसे रागद्वेषसे रहित तेईस जिनवर इस भुवन-में होंगे जो श्रीधर्मतीर्थको प्रकट करेंगे। जिस प्रकार इनके, उसी प्रकार उन बाईस तीर्थंकरोंके आगामी शरीर ग्रहण करने और छोड़नेवाले जन्मान्तरोंका कथन उन्होंने किया और कहा—जिसने अपने मुखचन्द्रसे चन्द्रकिरणोंको पराजित कर दिया है, ऐसा तुम्हारा पुत्र और मेरा नाती यह मरीचि श्री वर्धमानके नामसे चौबीसवाँ त्रिजगनाथ और तीर्थंकर होगा। तब जिसका द्विज कपिल शिष्य है ऐसा महान् भरतका पुत्र यह सुनकर प्रसन्नचित्त होकर खूब नाचा। यह मूर्ख होकर मिथ्यात्वको प्राप्त होगा। मेरा अहंकार छोड़कर मरेगा।

घत्ता—कपिलका गुरु तथा सांख्यसूत्रोंमें निपुण देव होगा। विनय करनेवाले अपने पुत्रसे आदरणीय ऋषभजिन बार-बार कहते हैं ॥१२॥

१३

श्रीका पालन करनेवाले क्रीड़ाके विपुल शैलके समान बलवान् पहाड़ों सहित धरतीको धारण करनेकी लीलावाले तुम्हारे-जैसे न्यायानुगामी ग्यारह चक्रवर्ती भूमितलपर होंगे। नव बलभद्र, नव नारायण भी होंगे, इसमें भ्रान्ति नहीं है। और नौ ही प्रतिनारायण भी धरतीका भोग करेंगे। और भी तेईस कामदेव, रौद्रभाववाले ग्यारह रुद्र, तथा मुकुटबद्ध बहुत-से नामवाले माण्डलीक राजा उत्पन्न होंगे। तुम्हारा क्षात्रधर्म और मेरा परमधर्म और भी जो विशिष्ट कर्म हैं, वे सब युगान्तके दिनोंमें नष्ट हो जायेंगे। अग्निमय और विषमय मेघोंकी वर्षा होगी। तब जिन्होंने तृष्णारूपी कदलीकन्दका नाश कर दिया है ऐसे जिनेन्द्रकी राजाने स्तुति की—

घत्ता—हे जिनसंत भगवन्त, आपके दिखनेपर पाप नष्ट हो जाता है। और मनुष्यको सम्पूर्ण पवित्र केवलज्ञान उत्पन्न हो जाता है ॥१३॥

१४

णमो वीयराया महादेवदेवा कयाणेयणिव्वाणणिव्वोणसेवा।
सरीरे ण भूसा समीवे ण णारी तुमं देव सव्वं अणंगावहारी।
ण चावं ण चक्कं ण खग्गं ण सूलं ण दंडो ण हत्थे किवाणं करालं।
तुमं देव णूणं रिऊणं णं गम्मो अहिंसाणिवासो सहावेण सोम्मो।
ण डिंभं ण डंभो ण इ चित्तलोहो ण मित्तो ण सत्तू ण कामो ण कोहो।
ण माया ण चित्ते पहुत्ताहिमाणं समं पेच्छसे रायरायं पि दीणं।
णं छत्तेण णो किं पि सीहासणेणं ण गव्वोमराहीससंपेसणेणं।
उयासीणभावं सकम्मक्खएणं तुमं जे ण वंदंति णाहं णिरेणं।
णरा ते धुवं लोहयारस्स भत्था ससंता वसंती हहा किं णिरत्था।
जई सो णिरासो तुमं छिण्णपासो तुमं लोयबंधू पहू दिव्वभासो।
तुमं जम्मकंतारडाहे किसाणुं तुमं भूयभावंधयारम्मि भाणुं।
जडा किं णिमज्जंति मिच्छत्ततोए तुमाहिं परो को गुरो जीवलोए।
णमंसेवि देवं गओ भूमिणाहो अउज्झाउरिं भूरिसेणासणाहो।
पइट्ठो णियं मंदिरं बंदिरोलं महातूरघोसं महामंगलालं।

घत्ता—धरणीसरु भरहेसरु पुरतरुणिहिं विहसंतिहिं ॥
अवलोइउ पोमाइउ पुप्फदंत वरिसंतिहिं ॥१४॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए महाभव्वभरहाणुमण्णिए
महाकव्वे वज्जणाहितिहुवणसंखोहणं जिणपुण्णावज्जणं णाम सत्तावीसमो
परिच्छेओ समत्तो ॥२७॥

संधि ॥२७॥

---

१४. १. P° णिव्वाण। २. K करालं कवालं। ३. MB अगम्मो। ४. M पहू णाहिमाणं; BP वहू णाहिमाणं। ५. MBP सछत्तेण। ६. M सिंहासणेण। ७. P उदासीण°। ८. MBP किसाणू। ९. MBP भाणू। १०. B ण मज्जंति। ११. MBP मिच्छत्तराए। १२. MBP गुरू। १३. MB सूरसेणा°। १४. MBP पज्जणाह°। १५. MBP पुज्जावज्जणं।

१४

हे वीतराग महान् देवदेव, आपकी जय हो। आपकी अनेक देव निर्वाण सेवा करते हैं। आपके शरीर पर वस्त्र नहीं हैं, पासमें नारी नहीं है। हे देव, आप सचमुच कामका नाश करनेवाले हो। आपके पास न चाप है, न चक्र है, न खड्ग है, न शूल है, न दण्ड है और न कराल-कृपाण है। हे देव, आप निश्चयसे शत्रुओंके लिए गम्य नहीं हैं। अहिंसाके निवास आप स्वभावसे सौम्य हैं, न बालक हैं, न दम्भ है, और न ही वित्तका लोभ है, न मित्र, न शत्रु, न काम और न क्रोध। चित्तमें न माया है और न प्रभुताका अभिमान। आप राजराजा और दीनको समान भावसे देखते हैं। न छत्रसे और न सिंहासनसे और न गर्वसे भरे इन्द्रके आदेशोंसे आपको कुछ लेना-देना। उदासीन-भाववाले, अपने कर्मोंका नाश करनेवाले निष्पाप आपकी जो लोग वन्दना नहीं करते, वे लोग निश्चित रूपसे लोभाचारके भृत्य हैं, और श्वास लेते हुए हा-हा, व्यर्थ क्यों संसारमें रहते हैं। यति वही है, जो आशाओंसे रहित हो, आपने बन्धन काट दिये हैं, आप लोकबन्धु और दिव्यभाषी हैं। आप संसाररूपी कान्तार जलानेके लिए अग्नि हैं, आप प्राणियोंके भावान्धकारके लिए सूर्य हैं। मूर्ख लोग मिथ्यात्वके जलमें क्यों निमग्न होते हैं। तुमसे महान् गुरु जीवलोकमें दूसरा कौन है। इस प्रकार देवको नमस्कार कर, भूमिनाथ भरत अपनी प्रचुर सेनाके साथ अयोध्याके लिए चल दिया। बन्दीजनोंसे मुखर, महातूर्योंसे निनादित तथा महामंगलोंसे युक्त अपने भवनमें उसने प्रवेश किया।

घत्ता—हँसती हुई पुष्पोंकी तरह दाँत दिखाती हुई नगर-तरुणियोंके द्वारा भूमीश्वर भरतेश्वर देखा गया और प्रशंसित हुआ ॥१४॥

इस प्रकार त्रेसठ महापुरुषोंके गुणों और अलंकारोंसे युक्त इस महापुराणमें महाकवि
पुष्पदन्त द्वारा विरचित और महाभव्य भरत द्वारा अनुमत इस महाकाव्यमें
वज्रनाभिका त्रिभुवन संक्षोभन और जिनपूजा वर्णन नामका
सत्ताईसवाँ परिच्छेद समाप्त हुआ ॥२७॥

संधि २८

पुरु पइसिवि तेण णराहिवेण बहुदाणेहिं सं[1]मिद्धउं ॥
दुस्सिविणयदंसणहलहरणु संतिकम्मु पारद्धउं ॥ ध्रुवकं ॥

१

जाउडजडिलरसेणायंबइं अहिसित्ताइं जिणेसरबिंबइं ।
हिमकण्ण[2]कणयकणो[3]लिवियारहिं घडपल्हत्थियपय[4]घयधारहिं ।
मुणि अणिट्ठदुट्ठासयहा[5]रिहिं चंदणतोंतडिल्लव[6]रवा[7]रिहिं ।
पुज्जियाइं छप्पयचलधामहिं कुवलयबउलमहुप्पलदामहिं ।
संथुयाइं बहुथोत्तालाविहिं भावियाइं सुविसुद्धहिं भा[8]वहिं ।
कंचणणिम्मियमु[9]णिपडिमालउ णाणामणिमऊहणियरा[10]लउ ।
दसदिसि गयटंकारविसट्टउ लंबियाउ चउवीस जि घंटउ ।
पहि पहि रइयउ तोरणमालउ एंतजंतणिवणयणसुहालउ ।
दिण्णइं दिण्णसोक्खसंताणइं अभयाहारोसहसुयदाणइं ।
भूमिदोहकयगोदुहसत्थहिं अंचिउ घरि घरि अरुहु घरत्थहिं ।
दिण्णइं कारुण्णेण वि अण्णइं दीणाणाहहं चीरहिरण्णइं ।
पोसहु सीलु दाणु देवच्चणु रा[11]एं संचोइउ पालइ जणु ।
घत्ता—धम्मट्ठि राए धम्मिट्ठ ध्रुउ दुक्कियरइ दुक्कियरउ ॥
रायाणुवट्टि जगि संचरइ जिह णरवइ तिह जणवउ ॥१॥

२

सीहु व सावयाहं अग्गेसरु जिणवरधम्मु[1] करइ भरहेसरु ।
भावलिंगि[2] होएवि णरेसरु चिंतइ चत्तदेहु[3] लंबियकरु ।
गोसयाहं गोदुद्धु जि पिज्जइ णारीसहसहं एक्क रमिज्जइ ।
खारीसयभत्तहं पसउल्लउ रहलक्खहं महु एक्कु रहुल्लउ ।

MBP give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza :–

मुखनलिनोदरसद्मनि गुणहृतहृदया सदैव यद्वसति ।
चोज्जमिदमत्र भरते शुक्लापि सरस्वती रक्ता ॥१॥

M reads गुणधृत° for गुणहृत° । GK do not give it.

१. १. MBPT सुणिबद्धउं । २. MBP हिमकणु कणय° । ३. BP °कणालि° । ४. P °घयपय° । ५. MB °हारहिं; P °दारहिं । ६. M चंदणतोयतडिल्ल° । ७. MBP °वरधारहिं । ८. MB भाविहिं । ९. M °मणि° । १०. MB °णियरालिउ । ११. MB राइं ।

२. १. M जिणवरु धम्मु । २. M भावलिंग होएव । ३. MBP चत्तदेहु ।

सन्धि २८

अपने नगरमें प्रवेश कर उस राजा भरतने खोटे स्वप्नोंके फलको दूर करनेके लिए नाना प्रकारके दानोंसे समृद्ध शान्तिकर्म प्रारम्भ किया।

१

हिमकण और कनक कणोंकी पंक्तियोंके समान परिणामवाली घड़ोंसे गिरती हुई दूध और घीकी धाराओं, मुनियोंके अनिष्ट और दुष्ट आशयोंका नाश करनेवाली चन्दनसे मिश्रित उत्तम जलोंसे, जाउड देशमें उत्पन्न केशरसे लाल जिनेश्वर प्रतिमाओंका अभिषेक किया। भ्रमरकुलकी घरस्वरूप कुवलय-बकुल-मधु और कमलोंकी मालाओंसे पूजा की। बहुत-सी स्तोत्रावलियोंसे संस्तुति की, विशुद्ध भावोंसे भावना की। स्वर्णनिर्मित मुनि-प्रतिमाओंसे युक्त, नाना मणिकिरणोंके समूहवाले, दसों दिशाओंमें जानेवाली टंकार ध्वनिसे रचित चौबीस घण्टे लटकवा दिये गये। पथ-पथमें बन्दनवार सजाये गये, जो आते-जाते हुए राजाओंके नेत्रोंको सुहावने लगते थे। जिन्होंने सुखपरम्परा दी है, ऐसे अभय आहार, औषधि और शास्त्रोंके दान दिये गये। भूमि-दोहन और गायोंका दोहन करनेवाले गृहस्थोंने घर-घरमें अर्हन्तकी पूजा की। करुणाभावसे दूसरे दीन-अनाथोंके लिए वस्त्र और सोना दिया गया। राजाके द्वारा प्रेरित प्रोषधोपवास शीलदान और देवार्चनका लोग पालन करते हैं।

घत्ता—राजाके धर्मनिष्ठ होनेपर जनपद धर्मनिष्ठ होता है, राजाके पापी होनेपर जनपद पापी होता है, विश्वमें जनपद राज्यका अनुगामी होता है, राजा जैसा चलता है, जनपद भी वैसा ही चलता है ॥१॥

२

सावयों (श्वापदों और श्रावकों) में सिंहके समान अग्रसर होकर भरतेश्वर जिनवर धर्मका आचरण करता है। वह भावलिंगी होकर, शरीरकी चिन्ता छोड़कर हाथ लम्बे कर (कायोत्सर्ग कर) विचार करता है—"सैकड़ों गायोंमें एक गायका ही दूध पिया जाता है, हजारों स्त्रियोंमें-से एक ही स्त्रीसे रमण किया जाता है, सैकड़ों खारी (मापविशेष) भर

णरु णराहं पडिवद्धु महल्लहं हरि हरिवाहहं करि वि करिल्लहं ।
पासायहु वि मज्झि सयणीयलु लइ परभुंजणिज्जु धरणीयलु ।
जइ वि एम जाणइ संगायउ चिंतिज्जंतउ सयलु परायउ ।
तो वि जीउ खज्जइ रायत्तें खणविणासि संतावि पहुत्तें ।
चक्कु कालचक्कहु किं रक्खइ छत्तें छण्णउ जीउ ण पेक्खइ ।
दंडु कुगइदंडणु दरिसावइ मणि सोदामणि णहचुउ णावइ ।
असि असिउब्भडलेसहि कारणु चम्मु कयंतपडहरवधारणु ।
कागणि खणि सोहइ दुहलीहहं अम्हारिसहं धरित्तिसमीहहं ।
होउ होउ रायत्तें हो गंथें हउ मुणिवरु परिवेढिउ वत्थें ।
अणुदिणु इय झायंतहु [१०]कयंरु व छड्डिवि जंति[११] रायपरमाणुय ।
घत्ता—सिढिलाइं होंति [१२]राएसरहो णिग्गो[१३]यमणमलपूरइं ॥
णिवडंति झत्ति खोणीयलइं करकंकणकेऊरइं ॥२॥

३

रायणाणु किं तासु कहिज्जइ जासु मंतु अरिणरहिं ण भिज्जइ ।
जासु खग्गु रणि को वि ण कड्डइ जासु पयाउ दिसंति पवड्डइ ।
जो पहाइ परमप्पउ पुज्जिवि मंगलणेवत्थइं पडिवज्जिवि ।
णयसाझणि हियउल्लउं घत्तइ सयलउ पयवित्तिउ संचिंतइ ।
अहियारिय णिउएसु णिउंजइ णिव संभासणदाणहिं रंजइ ।
के वि सणेहालोयणहसियहिं संमाणिहिं लोयअहिलसियहिं ।
दविणोवाइ पुरिसें संभावइ चर परमंडलंतु पट्ठावइ ।
सयलकलाकुसल वि संमाणइ पवरपसंडीपिंडहिं पीणइ ।
पुणु अत्थाणविसग्गु समिच्छइ घरि सच्छंदविहारें अच्छइ ।
मज्झण्णइ मज्जणउं पईसिवि णियसरीरु भूसणहिं विहूसिवि ।
बालाचालियचामरमालइ अच्छइ काइं वि पत्थिवलीलइ ।
पुणु मुत्तुत्तरि पहुं णिवगोट्ठिइ गमइ कालु गरुयइ संतुट्ठिइ ।
घत्ता— संपण्णइ खणि तिज्जइ पहरे जाणिय घडियाघाएं ॥
पहु अच्छइ वारविलासिणिहिं सह कीलाइ विणोएं ॥३॥

---

४. MBP णरवराहं । ५. G पडिवद्धगहल्लहं । ६. MBP राइत्तें । ७. MB कागणि खणेण होइ दुहलोहहं; P कागणि खणि होसइ दुहलीलइ; T खाणि आकरः । ८. MBP रायत्तहु गंथें । ९. MBP वर वेढिउ । १०. MB कयरुय and gloss रोग; T कयंरु व धूलिरिव । ११. G जंतु; K जंतु° but corrects to जंति and gloss गच्छन्ति । १२. MBP रज्जेसरहो । १३. G णिग्गमण°; K णिग्गमल°, but carreots it to णिग्गयमण° ।

३. १. M म कट्टइ । २. MBP पयाउ । ३. G पवट्टइ । ४. MBP हियउल्लउं । ५. M पयविसउ । ६. P °सहियहिं । ७. MBP पुरिसु । ८. Our manuscript P ends with चामर° । ९. MB काइं व । १०. MB बुहणिवगोट्ठिहि ।

भातमें-से अंजुली-भर चावल खाया जाता है। लाखों रथोंमें मेरा एक रथ है। मनुष्य बड़े मनुष्योंका प्रतिबद्ध (दास) है, अश्व अश्ववाहोंका, और हाथी हाथियोंका। प्रासादोंके भीतर भी शयनतल होता है। लो, इस प्रकार धरिणीतलका भोग किया जाता है। तब भी जीव राज्यत्वसे क्षयको प्राप्त होता है; वह क्षणभंगुर और बहुत सन्तापकारी है। चक्र क्या कालचक्रसे बचा सकता है, क्या वह छत्रसे ढके हुए जीवको नहीं देखता। दण्ड कुगतिके दण्डको दरसाता है, मणि आकाशसे च्युत बिजलीकी तरह है। असि (तलवार) कृष्ण उद्भट लेश्याका कारण है, सेना यमके नगाड़ोंके शब्दको धारण करनेवाली है। दुःखोंसे आलिंगित धरतीकी इच्छा करनेवाले हम-जैसे लोगोंके पास काकणी मणि क्षण-भरके लिए शोभित होता है। राज्यत्व और परिग्रह रहे। मैं मुनि हूँ, केवल वस्त्रोंसे घिरा हुआ हूँ। प्रतिदिन इस प्रकार ध्यान करते हुए उसके (भरतके) रागपरमाणु धूलिके समान उड़कर जाने लगते हैं।

घत्ता—इस प्रकार राजेश्वरके निकलते हुए मनोमलसे पूरित करकंगन और केयूर आभूषण शीघ्र ही धरतीपर गिरने लगते हैं ॥२॥

३

राजनीति विज्ञान उसीका कहा जा सकता है, जिसके मन्त्रका भेदन शत्रुमनुष्योंके द्वारा न किया जा सके। जिसकी तलवारसे युद्धमें कोई नहीं बचता, जिसका प्रताप दिशाओंमें फैलता है, जो सवेरे परमात्माकी पूजा कर, मंगलवस्त्र पहनकर न्यायशासनमें अपना मन लगाता है, समस्त प्रजा-वृत्तियोंकी चिन्ता करता है, अधिकारियोंको अपने नियोगमें लगाता है, राजा सम्भाषण और दानसे रंजित करता है। वह स्नेहपूर्ण अवलोकन हँसीसे, सम्मानित लोक अभिलाषाओं और धनके उपायसे कितने लोगोंका आदर करता है, शत्रुमण्डलमें चरोंको भेजता है, प्रवर स्वर्णपिण्डोंसे प्रसन्न करता है, फिर दरबारको विसर्जित करनेकी इच्छा करता है, और घरमें स्वच्छन्द विहारसे रहता है। मध्याह्नमें स्नानके लिए प्रवेशकर अपने शरीरको भूषणोंसे सजाकर, जिसमें बालाओंके द्वारा संचालित है चमर ऐसी किसी राजलीलासे रहता है। भोजन करनेके उपरान्त राजा नृपगोष्ठीमें अत्यन्त सन्तुष्टिके साथ अपना समय बिताता है।

घत्ता—घण्टीके आघातसे जाने गये तीसरे प्रहरका एक क्षण बीतनेपर राजा वेश्याओंके साथ क्रीड़ा विनोद करता हुआ रहता है ॥३॥

४

महिवइ गयलीलइ पयं ढोयेइ पुणु अंतेउरु भमिवि पलोयइ ।
खणि ससहायें मंतु पमंतइ वज्झु णत्थि किं छग्गुण चिंतइ ।
आणइ अप्पउ वण्णपवित्ति वि वत्तायरणु णयाणयजुत्ति वि ।
पुणु अवलोयइ विविहपयारइं पहरणभवणइं भंडागारइं ।
पुणु गुरुयणसहमंडवि पइसइ धम्मसत्थसंदेहु वि णासइ ।
कामसत्थु अवलोयइ जावहिं कामु वि तहु आसंकइ तावहिं ।
हत्थिसत्थि हरिसत्थि ण मुंचइ आउवेउ धणुवेउ वियाणइ ।
जोइससउणसमूहणिमित्तइं णरणारीलक्खणइं विचित्तइं ।
तंतु मंतु तेण जि संजोइउ भरहें सइं जि भरहु उप्पाइउ ।
घत्ता—जसु जासु दियंतहिं परिभमइ ससिकरणियरउ पोसइ ॥
तहु भरहहु सरिसु महाणिवइ जगि णउ हुयउ ण होसइ ॥४॥

५

सो रायाहिराउ सामंतहं मंडलियहं महिमाइ महंतहं ।
एक्कहिं दिणि धीरहं णिरवायहं अक्खइ खत्तवित्तु बहुरायहं ।
कुलमइअप्पयपयपरिपालणु अवरु समंजसत्तु मलखालणु ।
णिसुणह भुयबलतुलियकरिंदहं पंचभेउ चारित्तं णरिंदहं ।
जेण चरिवि तउ गिरिवरकंदरि अज्जिउ तित्थयरत्तु भवंतरि ।
एहु लोउ जें धम्मि पवत्तिउ परिताइउ खयाउ सो खत्तिउ ।
कुलु णरणाहहं एत्थु विसेसें कुलु लक्खिज्जइ बुहसहवासें ।
दंसणणाणचरित्तब्भासें कुलु रक्खिज्जइ दुण्णयणासें ।
कुलु लक्खिज्जइ सुद्धायारें दढउढेण अणुव्वयभारें ।
साइ अणाइ वि दीसइ जायउ बीयंकुरकमेण कुलु आयउ ।
भरहेरावएहिं कुलु खिज्जइ कालि कालि जिणणाहहिं किज्जइ ।
घत्ता—पणवियसिरु मउलियकरकमलु जाहं करइ हरि कित्तणु ॥
ते पत्थिव कुलसंताणयर ताहं महादेवत्तणु ॥५॥

४. १. MB पउ । २. B ढोइउ । ३. B पलोइउ । ४. B वत्तारयणु । ५. MB ण याणइ जुत्ति वि । ६. MB °सत्थु संदेहु । ७. MB तहि । ८. B मुणइ । ९. M दियत्तहिं । १०. MB भरि भमइ ।
५. १. B णिवायहं; T णिरवायहं । २. MB खत्तवित्ति । ३. B °तुरिय° । ४. MBK चारित्तु । ५. M परताइउ; T परिताइउ । ६. MB कुल भर° । ७. MB °चरित्ताभासें ८. M दढउढ्ढेण; T दढऊढेण । ९. M बीयंकुरु ।

४

राजा गजलीलासे अपने पैर रखता है, और फिर घूमकर अन्तःपुर देखता है। एक क्षणमें अपने स्वभावसे मन्त्रका विचार करता है। यह वस्तु छह गुणवाली है या नहीं, यह विचार करता है। वह अपनेको और वर्णोंकी प्रवृत्तियोंको जानता है; वह कृष्यादि वार्ताओंके आचरण और न्याय तथा अन्यायकी उक्तिको जानता है। फिर वह विविध प्रकारके आयुधभवन और भांडागारोंका अवलोकन करता है। फिर वह गुरुजनोंके सभामण्डपमें प्रवेश करता है, तथा धर्म और शास्त्रके सन्देहको दूर करता है। जिस समय वह कामशास्त्रका अवलोकन करता है, उस समय काम भी उससे आशंका करने लगता है। वह हस्तिशास्त्र और अश्वशास्त्रको नहीं छोड़ता, आयुर्वेद और धनुर्वेदको भी समझता है। ज्योतिष, शकुन समूह और निमित्त शास्त्रको भी जानता है। नर-नारियोंके विविध लक्षणोंको समझता है। तन्त्र और मन्त्रका संयोग तो उसीने किया। भरतने स्वयं भरतसंगीतको उत्पन्न किया।

घत्ता—जिसका यश दिशाओंमें घूमता है, और चन्द्रमाके किरणसमूहका पोषण करता है। उस राजा भरतके समान महान् राजा जगमें न तो हुआ है और न होगा ॥४॥

५

एक दिन राजाधिराज वह, महिमादिसे महान् सामन्तों, माण्डलीक राजाओं, धीर और अपायरहित बहुत-से राजाओंसे क्षात्रधर्मका कथन करता है—कुलमति अपना और प्रजाका परिपालन भी मलको दूर करनेवाला सामंजस्य (करना चाहिए) सुनिए, अपने बाहुबलसे गजराजोंको तोलनेवाले राजाओंके चारित्र्यके पांच भेद है। जिससे गिरिगुफामें तपका आचरण कर, जिनने पूर्वभवमें तीर्थंकर प्रकृतिका अर्जन किया। जिससे यह लोक धर्ममें प्रवर्तित किया और उस क्षत्रियत्वको क्षय होनेसे बचाया गया। नरनाथको अपने कुलकी रक्षा विशेष रूपसे करनी चाहिए। पण्डितोंके सहवाससे कुलको लक्षित करना चाहिए। दर्शन-ज्ञान और चारित्रके अभ्यास-से और दुर्नयोंके विनाशसे कुलकी रक्षा करनी चाहिए। शुद्ध आचार और दृढ़तापूर्वक धारण किये गये अणुव्रत भारसे कुलकी रक्षा करनी चाहिए। यह कुल सादि अनादि और उत्पन्न हुआ दिखाई देता है, बीजांकुर न्यायसे कुल आया है। भरत ऐरावत आदिके द्वारा कुल नाशको प्राप्त होता है, फिर समय-समयपर जिननाथके द्वारा वह किया जाता है।

घत्ता—सिर झुकाकर और करकमल जोड़कर इन्द्र जिनका कीर्तन करता है, वे राजकुल-परम्पराके विधाता हैं और उनका ही महादेवत्व है ॥५॥

६

अवरु वि मइ राएं रक्खेवी अरहंतहु जि सिक्ख सिक्खेवी।
णासइ णिवमइ मिच्छारंगें कुगुरुकुदेव[1]कुलिंगिपसंगें।
णासइ मइ चामीयरलोहें णासइ मइ णिरु कामें कोहें।
णासइ मइ हरिसें चवलत्तें[2] णासइ मइ जिणपडिकूलत्तें।
णासइ मइ मएण माणेण वि णासइ मइ महरापाणेण वि।
णासइ मइ वेसायणगमणें णासइ मइ कुरंगवहरमणें।
णासइ[3] मइ जूयम्मि णिउत्ती णासइ मइ पररमणिहि रत्ती।
मइ ण जासु कलिकलुसें छित्ती जिणवरचरणंभोरुहभित्ती।
णिवविज्जारिसिविज्जागामिणि तहु होसइ इहपरभवि गोमिणि।
घत्ता—मइसुद्धिइ[4] वड्ढइ धम्मु[5]मइ धम्मु वि मइं[6] सो घोसिउ॥
जो खीणकसायहिं केवलिहिं जीवलोइ उवएसिउ॥६॥

७

धम्मु खमाइ होइ गेरुयारउ[1] धम्महु मद्दवगुणु[2] पहिलारउ।
अज्जउ धम्मु पावुं[3] मायारउ धम्मु सच्चवयणोहु[4] वियारउ।
धम्मु सउच्च[5] धम्मु तवतप्पणु धम्मु असेसवत्थुपवियप्पणु।
धम्मु[6] बंभचेरें परियाएं जेण ण कियउ वियाणवि राएं।
पुण्णाउसु सो णिद्धाडेवउ रज्जें पुणु वि णरइ पाडेवउ।
इय मइसुद्धि कहिय पउ रक्खमि तणुपरिरक्ख णरिंदहु अक्खमि।
हुयवहपविसणु[7] हुयललियंगउ विसकणकवलणु मरणु ण चंगउ।
सत्थग्गहणु महाजलबोलणु गिरिणिवडणु अंतावलिघोलणु।
एयइं कुच्छियमरणइं दुद्दमि णरु भामेवि थिवंति भवकद्दमि।
घत्ता—मुणिचरण[8]कमलि उवसमु करिवि जो ण मुयउ संणासें॥
चउरासीलक्खजोणिमुहहिं सो परिभमइ किलेसें॥७॥

८

अवरु वि राणउ करउ णिरिक्खणु पयंहि[1] धम्मणाएं परिरक्खणु।
दुम्मइ हुई जाणिवि धाडइ तिव्वें दंडें गाइ ण ताडइ।
जिह गोवउ पालइ[2] गोमंडलु तिह पालउ गोवइ गोमंडलु।

६. १. MB °कुवेउ° । २. M चवलित्तें । ३. MB read this line and the following as: णासइ मइ जूयम्मि णिउत्ती, जिणवरचरणंभोरुहभित्ती; मइ ण जासु कलिकलुसें छित्ती, णासइ मइ पररमणिहि रत्ती । ४. G मइवुद्धिइ । ५. MB धम्मु सइं । ६. MB सो मइं ।

७. १. B गुरुआरउ । २. MB मद्दउ गुणु । ३. MB पाउ । ४. MB °वयणोह । ५. MBK सउच्चु । ६. MB धम्मु जि बंभचेरपरियाएं । ७. MB हुयवहु पविसणु हुउ ललियंगउ । ८. MB °चरणमूलि ।

८. १. G पहुहिं । २. M पावइ ।

६

और भी राजाके द्वारा बुद्धिकी रक्षा की जाये और अरहन्तकी ही सीख सीखी जाये। मिथ्यात्वके रंग कुगुरु, कुदेव और कुमुनिके सम्पर्कसे राजाकी मति नष्ट हो जाती है। स्वर्णके लोभसे मति नष्ट हो जाती है। अत्यन्त काम और क्रोधसे मति नष्ट हो जाती है। हर्ष और चपलतासे मति नष्ट हो जाती है, जिनके प्रतिकूल होनेपर बुद्धि नष्ट हो जाती है, मद और मानसे बुद्धि नष्ट होती है। मदिरापानसे बुद्धि नष्ट होती है, वेश्याजन-गमन करनेसे बुद्धि नष्ट हो जाती है। हरिणवधमें रमण करनेसे बुद्धि नष्ट होती है। जुएमें नियुक्त होनेसे बुद्धि नष्ट हो जाती है। परस्त्रीमें रमण करनेसे बुद्धि नष्ट होती है, जिनके चरण कमलोंमें पड़ी हुई जिसकी बुद्धि कलिके पापको स्पर्श नहीं करती उसकी बुद्धि नृपविद्या और ऋषिविद्यामें गमन करनेवाली होती है और इहलोक तथा परलोकमें धरती (या लक्ष्मी) उसकी होती है।

घत्ता—मति शुद्ध होनेसे धर्ममति बढ़ती है, और धर्म भी मैं उसे कहता हूँ कि जिसका उपदेश क्षीणकषायवाले केवलज्ञानियोंने विश्वमें किया है ॥६॥

७

धर्म क्षमासे गौरवशाली होता है। धर्मका पहला गुण मार्दव है। आर्जव धर्म और माया-रत होना पाप है। विचार करनेवाला सत्य वचनोंका समूह धर्म है। शौच्य धर्म है, तप तपना धर्म है, समस्त वस्तुओंका परित्याग करना धर्म है, ब्रह्मचर्य और त्यागसे धर्म है। जिस राजाने जानते हुए भी धर्म नहीं किया, पूर्णायु होनेपर वह नष्ट हो जायेगा और राज्य उसे फिर नरकमें गिरा देगा। इस प्रकार मैंने मतिशुद्धि कही, मैं कुछ भी छिपाकर नहीं रखूँगा, राजाओंको अब शरीरकी रक्षा बताता हूँ। आगमें प्रवेश करना, सुन्दर शरीरको जला लेना, विषकणोंको खा लेना, ऐसा मरण अच्छा नहीं। आत्मघात, महाजलमें अतिक्रमण करना, पहाड़से गिरना, अपनी आँतोंको घोल देना (संघर्षण) ये खोटे मरण हैं जो मनुष्यको घुमाकर दुर्दम भवपंकमें गिरा देते हैं।

घत्ता—मुनिवरके चरणकमलोंमें उपशम धारण कर जो संन्याससे नहीं मरता, वह चौरासी लाख योनियोंके मुखोंमें कष्टपूर्वक परिभ्रमण करता रहता है ॥७॥

८

और भी राजाको निरीक्षण करना चाहिए। प्रजाका धर्म और न्यायसे परिरक्षण करना चाहिए। दुर्मति होकर गाय चिल्लाती है, वह जानकर उसे तीव्र दण्डसे ताड़न नहीं करना

णिक्कारणमारणु जो राणउ सो रक्खसु जमदूयसमाणउ।
मिसु मंडिवि हलहरसंघायहं णिद्दोसहं विय वणिहिं वरायहं।
वुड्ढणारिडिंभयसंतावणु जो धणहरणु करइ भीसावणु।
जणणीसौसससिहिहिं सो डज्झइ अण्णु वि दुक्कियकम्में बज्झइ।
लग्गइ ण जियइ दुक्खेंहुयासइ ण वसइ देसु विसइ परदेसइ।
पहु अणुरत्तपयइं जो तासइ कइहिं वि दियहहिं सो सइं णासइ।
रत्तउ सत्तउ भिच्चु भरिज्जइ तव्विवरीयउ अवहेरिज्जइ।
वुज्झियकज्जावायउवायं णरणाहेण णिहालियणायं।
गुरुचरणारविंद सेवेवउ अवरु समंजसत्तु भावेवउ।
रोसें णउ विसिट्ठु पहरेवउ दुट्ठपक्खु ण कयावि धरेवउ।

घत्ता—इय पंचपयारपयासियउ णियचरित्तु जो पालइ॥
कमलासण कमला कमलमुहि तहु मुहकमलु णिहालइ॥८॥

९

तहिं अच्छइ भरहेसरु जइयहं गणि पभणइ सुणि सेणिय तइयहं।
कुरुजंगलजणवयगयउरवइ जिणकमकमलजुयलसेवारइ।
सोमप्पहमहिणाहहु णंदणु लच्छीवइमायहि तोसियमणु।
सुंदरु चोद्दहभाइहिं जेट्ठउ जउ णामें अत्थाणि पइट्ठउ।
कुरुवंसाहिवेण पणवेप्पिणु पभणिउ तेण राउ विहसेप्पिणु।
ताएं रायपट्टि महु बद्धउ विसिरयणत्तउ सइं उवलद्धउ।
तम्मि हुयइ णिक्कलि कलुसच्चुइ दाणपवत्तणि सुरवरसंथुइ।
जाणियएयाणेयवियप्पइ रिसहसामिपयपंकयछप्पइ।
घोरवीरतवचरणवम्मुइ पिहिइ सेयंसाहिवि णिव्वुइ।
ससहोयरु दिम्मुहइ णियंतउ हउं णियपुरवरंति विहरंतउ।
मारुयचालियचलसाहावणु एक्कहिं वासरि गउ णंदणवणु।
धम्माणंदें मणु आणंदिउ दिट्ठउ सीलगुत्तु मुणि वंदिउ।
दिट्ठउ फणिवरु समउ भुयंगिइ धम्मु सुणंतु सरलललियंगिए।
गयसंवच्छरि पुणरवि आएं सा दिट्ठी मुक्किय णिययणाएं।

घत्ता—दीवंडु काओयरु णाइणि वि बिण्णि वि धम्मु सुणंतइं॥
मइं लीलाकमलें ताडियइं तेंहिं हि जाइरइरत्तइं॥९॥

---

३. MB °णीसाससयहं। ४. MB दुक्खु हुया°। ५. M अणुरत्तु पयइं। ६. MB °रविंदु। ७. B भावंतउ। ८. G णियचरित्तु।

९. १. MB °जंगलु। २. MB चउदह°। ३. M °भायहिं। ४. B बइट्ठउ। ५. MB °चलियचवलसाहा°। ७. MB फणिवइ। ८. M सरलललियंगइ; B सरललियंगिइ। ९. MB मुक्की णियणाएं। १०. G °णियणायएं। ११. MB काओयरु विसहरु णाइणि वि। १२. M तहिं जाइपयरइरत्तइं।

चाहिए। जैसे ग्वाला गोमण्डलका पालन करता है उसी प्रकार राजाको पृथ्वीमण्डलका पालन करना चाहिए। जो राजा अकारण प्रजाको मारनेवाला होता है, वह राक्षस और यमदूतके समान है। दोष लगाकर कृषक समूहो, निर्दोष ब्राह्मणो और बेचारे वणिकोका भीषण धनापहरण करता है, बूढ़ो, स्त्रियो और बच्चोको सतानेवाला है, वह लोगोकी श्वासज्वालाओमे जल जाता है और पापकर्मसे बँध जाता है। दुःखकी ज्वाला लगनेपर वह जीवित नही रहता, वह देशमे नही रह सकता, परदेशमे उसे प्रवेश करना पडता है। जो राजा अनुरक्त प्रजाको सताता है, वह कुछ ही दिनोमे स्वयं नष्ट हो जाता है। उसे सच्चे और अनुरक्त भृत्यका भरण करना चाहिए, जो विपरीत है उसकी उपेक्षा करनी चाहिए। कार्यके उपाय और अपायको जानते हुए, न्यायकी देखभाल करते हुए राजाको गुरुके चरणकमलोकी सेवा करनी चाहिए और उसे सामजस्यका विचार करना चाहिए। क्रोधमे आकर विशिष्टका परिहार नही करना चाहिए, और दुष्टका पक्ष कभी भी ग्रहण नही करना चाहिए।

घत्ता—इस प्रकारसे प्रकाशित नृपचरितका जो राजा पालन करता है कमलासन कमलमुखी कमला (लक्ष्मी) उसके मुखकमलको देखती है ॥८॥

९

गौतम गणधर कहते हैं—"हे श्रेणिक! सुन, जब वहाँ भरत था, तभी जिनभगवान्‌के चरणकमलोमे रत रहनेवाला कुरुजागल जनपदके गजपुरका राजा सोमप्रभ था। अपनी माँ लक्ष्मीवतीके मनको सन्तुष्ट करनेवाला सोमप्रभ राजाका चौदह भाइयोमे सबसे बडा जय नामका सुन्दर पुत्र गद्दीपर बैठा। कुरुवशके उस राजाने प्रणाम कर और हँसते हुए राजासे कहा कि पिताके मुझे राजपट्ट बाँध देने और स्वयं ऋषियोके रत्नत्रय प्राप्त कर लेनेपर, और उसमे भी निष्पाप और कालुष्यसे च्युत हो जानेपर तथा सुरवरोके द्वारा सस्तुत दानका प्रवर्तन होनेपर, एकानेक विकल्पोको जाननेवाले ऋषभस्वामीके चरणकमलोके भ्रमर, घोर वीर तपश्चरणसे अद्भुत चाचा श्रेयास राजाके विरक्त हो जानेपर मैं दिशामुखोको देखता हुआ अपने भाईके साथ पुरवरके भीतर घूमता हुआ एक दिन नन्दन वनके लिए गया जो हवासे हिलती हुई चचल शाखाओसे सघन था। वहाँ मैने शीलगुप्त मुनिको देखा, उनकी वन्दना की और धर्मानन्दसे मेरा मन नाच उठा। मैने सरलसुन्दर अंगोवाली नागिनके साथ एक नागको धर्म सुनते हुए देखा। एक साल बीत जानेपर मैंने उस नागिनको फिर देखा परन्तु अपने नाग द्वारा छोडी हुई।

घत्ता—दीवड जातिका काकोदर (नाग) और नागिन दोनोको धर्म सुनते हुए। वहाँपर भी जातीतर (जातिसे भिन्न) स्नेहमे अनुरक्त होनेवाले उनको अपने लीलाकमलसे प्रताडित किया॥९॥

१०

कसणारुणविंदुयतणुराइहि[1] कहिं णाइणि कहिं लग्गवि जाइहि ।
इय गरहिवि परियारेणाहय सहुं जारेण तेण सा णिग्गय ।
कास[2]पुप्फकंतिसंकासउ हुउं पडिआगउ णियआवासउ ।
णिसि णियकंतहि मइं आहासिउ सयणालइ तं णाइणिविलसिउ ।
कुमहिलखलचरियाइं पयासमि जाम किं पि किर पिय संभासमि ।
विविहाहरणकिरणरंजियघरु ताव तहिं जि अवयरिउ वरामरु ।
पुच्छिउ सो मइं किं अवलोयहि दिट्ठि वियारभरिय किं ढोयहि ।
तेण पउत्तउं किं ण वियाणहि लोयहं तुहुं वि धम्मु वक्खाणहि ।
दोसग्गहणु ण कासु वि किज्जइ पंगुलु पंगुलु केम भणिज्जइ ।
पइं वि जा[3]इरइ मह कुलवत्ती पाणिपोमें[4]पोमें जं छित्ती ।

घत्ता—तं [5]पीडिय सयलें परियणेण चवलहिं दंडसहासें ॥
कंपंतदेह जारेण सहुं सा मुक्की णीसासें ॥१०॥

११

पुव्वमेव मुउ फणि वयधारउ हुउं हुउ भावणु णायकुमारउ ।
सप्पिणि हूई समपरिणामें सुरसरि देवय काली णामें ।
बिण्णि वि मिलियइं हियवइ धरियउं तं तुह दुव्वं[1]वसिउ संभरियउं ।
आयउ एत्थ जाम किर मारमि आरूसिवि वच्छयलु वियारमि ।
ता मइं जाणिउं तुहुं पुण्णाहिउ च[2]रमदेह सीलेण पसाहिउ ।
एम भणेप्पिणु तेण फणीसें सम[3]जलसिंचियरोसहुयासें ।
दिण्णइं मह्रु दिव्वइं परिहाणइं दिण्णइं [4]भूसणाइं असमाणइं ।
अवसरि सरसु भणिवि गउ तेत्तहि अहिवइविवरि णिहेलणु जेत्तहि ।
णिसुणि देव सासयसंपयकरु जगि जीवहु धम्मु जि लग्गणतरु ।

घत्ता—विहसिवि कुरुणाहें बोल्लियउ भरहपसाहियमें[5]हियल ॥
देव वि तहु पायहिं पडहिं फुडु जासु धम्ममइ णिच्चल ॥११॥

१२

इय जं[1]प कहइ साहिय जावहिं अवरु वि मंति पराइउ तावहिं ।
गीवं[2]लंबियमोत्तियहारें सो दा[3]विउ रायहु पडिहारें ।
तेण पउत्तु णिसुणि णिववें[4]ररिसि कासीविसइ णयरि वाणारसि ।

---

१०. १. MB °तणुरायहि । २. MBK काससंककंति° । ३. MB जाइरय । ४. MB °पोमपंकइ । ५. MBK ताडिय ।

११. १. M पुव्ववसिउ । २. MB चरमवेहु । ३. MB समजलु सिंचिय° । ४. M मूदाणइं । ५. MB °महियल ।

१२. १. B जइण । २. K गीवोलंबिय° । ३. MB रायहु दाविउ । ४. MB °वरसति ।

१०

(यह सोचकर कि) काले और लाल धब्बोंवाले शरीरसे शोभित विजातिसे नागिन कहाँ लग गयी। इस प्रकार परिवारसे आहत होकर वह अपने यारके साथ चली गयी। मैं कास पुष्पकी कान्तिके समान अपने घर वापस आ गया। रात्रिमें शयनकक्षमें नागिनका वह विलास अपनी पत्नीको बताया। मैं जबतक खोटी महिलाओंके चरितको बताऊँ और प्रिय सम्भाषण करूँ कि इतनेमें विविध आभरणोंसे घरको रंजित करनेवाला एक सुरवर अवतरित हुआ। मैंने उससे पूछा, 'मुझे क्यों देखते हो, मुझपर विकार-भरी दृष्टि क्यों करते हो'। उसने कहा—'क्या नहीं जानते, लोगोंको तुम्हीं धर्मका व्याख्यान करते हो, किसीका भी दोष ग्रहण नहीं करना चाहिए। तुम्हें पंगुल-पंगुल (पुंश्चली-पुंश्चली) क्यों कहना चाहिए था। तुमने जन्मसे अनुरक्त मेरी कुल-पुत्रीको करकमलके कमलके द्वारा जो ताडित किया था।

घत्ता—उसे समस्त परिजनोंने पत्थरों और हजारों दण्डोंसे गिरा दिया। काँपती हुई देहवाली वह, अपने यारके साथ साँससे मुक्त हो गयी ॥१०॥

११

व्रत धारण करनेवाला नाग पहले ही मर गया और मैं भवनवासी नागकुमार हुआ और वह नागिन समपरिणामसे गंगामें काली नामकी देवता हुई है। हम दोनों भी मिल गये और तुम्हारी उस कुचेष्टाको याद कर उसे मनमें धारण कर लिया। मैं यहाँ आया और जबतक मैं तुम्हें मारूँ और क्रुद्ध होकर तुम्हारे वक्षस्थलको फाड़ दूँ, कि इतनेमें मैंने जान लिया कि तुम पुण्यशाली हो, चरमशरीरी और शीलसे प्रसाधित हो। यह कहकर समताके जलसे अपनी क्रोधाग्नि शान्त करते हुए उस नागेशने मुझे दिव्य परिधान दिये, और असामान्य आभूषण दिये। उस अवसरपर अत्यन्त सरस बोलकर वह वहाँ गया जहाँ नागराज बिलमें उसका भवन था। हे देव सुनिए, जीवका संसारमें धर्म ही शाश्वत सम्पत्ति करनेवाला आधारभूत वृक्ष है।

घत्ता—कुरुनाथने हँसकर कहा कि जिसकी धर्ममें निश्चल मति (या निश्चल धर्ममति) होती है—हे देव, भरतके समान धरतीको सिद्ध करनेवाले भी उसके चरणोंमें पड़ते हैं ॥११॥

१२

इस प्रकार जैसे ही जयकुमारने कहानी कही कि वैसे ही दूसरा मन्त्री वहाँ आ पहुँचा। जिसकी गर्दनमें मोतीका हार लटक रहा है ऐसे प्रतिहारने राजासे उसकी भेंट करायी। उसने

राउ अकंपणु राणी सुप्पह सालंकारी णं वरकइकह ।
फुल्लकुसेसयसंणिहसुमुहहं[5] सहसु सुयहं हेमंगयपमुहहं ।
सस मृगलोयण[6] ताहं सुलोयण लहुई लच्छीवइ सुहभायण ।
जेट्ठहि रूउ काइं किर सीसइ उवमाणु जि जहिं किं पि ण दीसइ ।
पायहुं काइं कमलु समु भणियउं तं खणभंगुरु[7] कइहिं ण मुणियउं ।
रिक्खइं वासरि कहिं मि ण दिट्ठइं कण्णाणहपहाहि णं णट्ठइं ।

घत्ता—कुरुविंदु[8] तणु वि जंघाजुयहो[9] णासवंतु करु दंतिहि ॥
ऊरुजुयलहि जो समु°[10] भणइ सो सइ पडियउ भंतिहि ॥१२॥

१३

वण्णमि काइं णियंबगुरुत्तणु जहिं पत्तउ तिहुयणु जि[1] लहुत्तणु ।
भमउ भमउ सो भूएं मुत्तउ णाहिहि सरिसु ण सलिलावत्तउ ।
कहिं थणजुयलु चित्तगइरुंभणु भासइ कणयकलस कहिं कइयणु ।
दड्ढा ताहं दासिसिरमंडणु चंगउ ससहरु समलु सखंडणु ।
किं तरुणीवयणहु उवमिज्जइ तासु सरिच्छउ तं जि भणिज्जइ ।
जेंवै[2] कुमरिहियवउं संदाणइ मृगु[3] ण तें अवलोयहु जाणइ ।
किं सारंगणयणि[4] सा वत्ती केत्तिउ किज्जइ उत्तपउत्ती[5] ।
णक्खहं लग्गिवि जा केसग्गइं ताम ताहि णिरुवमइं वरंगइं ।
लीलंदोलणकीलाजुत्तइं[6] छुडु जि वसंतमासि संपत्तइं ।

घत्ता—अंकुरियउ कुसुमिउ पल्लविउ महुसमयागमु विलसइ ॥
वियसंति अचेयण तरु वि जहिं तहिं णरु किं णउ वियसइ ॥१३॥

१४

छुडु मायंदरुक्खु[1] कंटइयउ महुलच्छिइ आलिंगिवि लइयउ ।
छुडु चंपयतरु अंकूरंचिउ णं कामुउ हरिसें रोमंचिउ ।
छुडु कंकेल्लि किं पि कोरइयउ णं वम्महचित्तारें रइयउ[2] ।
छुडु मंदारसाहि पल्लवियउ चलदलु णं महुणा णच्चवियउ ।
छुडु जायउ णमेरु[3] कलियालउ मत्तचओरकीरराबालउ ।
छुडु काणणि पप्फुल्लु[4] पलासउ पहियहुं लग्गउ विरहहुयासउ ।
छुडु फुल्लिउ मल्लियफुल्लोहउ रमणीयणि पसरिउ रइलोहउ ।

---

५. B° समुहहं । ६. मिगलोयण । ७. MB तक्खणि भंगरु । ८. B कुरुविंदत्तणु । ९. MB जंघाजुयलहो । १०. K सम ।

१३. १, MB वि । २. जिम कुमरिहि हियवउ । ३. MB मिगु ण तेम । ४. MB °णयण । ५. MB उत्तपउत्ती । ६. MB °कीलणजुत्तइं ।

१४. १. MB मायंदु रुक्खु । २. B राइयउ; K रयउ । ३. M णं मेरु; B णामरु । ४. MBK पप्फुल्ल ।

कहा—हे नृपवर ऋषि सुनिए, काशी देशमें वाराणसी नगरी है। उसमें राजा अकम्पन, रानी सुप्रभा है। अलंकरोंसे युक्त वह ऐसी लगती है मानो वरकविकी कथा हो। खिले हुए कमलोंके समान मुखवाले हेमांगद प्रमुख उसके एक हजार पुत्र हैं। उनकी बहन मृगनयनी सुलोचना है। और छोटी सुखभाजन लक्ष्मीवती। उनमें-से बड़ीके रूपका क्या वर्णन किया जाये कि जिसके लिए कोई उपमान ही नहीं दिखाई देता। पैरोंको कमलके समान क्यों कहा गया? वह क्षण-भंगुर होता है, कविने इसका विचार ही नहीं किया। नक्षत्र दिनमें कहीं भी दिखाई नहीं देते, मानो जैसे वे उस कन्याके नखोंकी प्रभासे नष्ट हो गये।

घत्ता—जो कवि छोटेसे शंखको जंघायुगलके, तथा हाथीकी क्षणभंगुर सूँड़को ऊरुयुगलके समान बताता है, वह भ्रान्तिमें पड़ा हुआ है ॥१२॥

१३

उसके उन नितम्बोंके भारीपनका क्या वर्णन करूँ कि जहाँ त्रिभुवन छोटा पड़ जाता है। जलावर्त (भँवर) उसकी नाभिके समान नहीं है, लोगोंके द्वारा उसका घूम-घूमकर भोग किया जाता है। चित्तकी गतिको रोकनेवाला स्तनयुगल कहाँ? और कहाँ कविगण उसे स्वर्णकलश बताता है? एक तो वे (स्वर्णकलश) आगमें तपाये जाते हैं, और दूसरे उनसे दासीके शिरका मण्डन किया जाता है। खण्ड और कलंक सहित चन्द्रमा अच्छा, परन्तु उससे युवतीके मुखकी उपमा क्यों की जाती है? उसके समान तो उसीको कहा जाना चाहिए। जिस प्रकार कुमारीका हृदय प्रकट होता है, वैसा अवलोकन मृग नहीं जानता। फिर उसे मृगनयनी क्यों कहा गया? कितनी उक्ति-प्रतिउक्ति दी जाये। नखसे लेकर केशोंके अग्रभाग तक उसके जितने उत्तम अंग हैं वे निरुपम हैं। इतनेमें शीघ्र वसन्त मासमें लीलादोलन और क्रीड़ाकी युक्तियाँ आ गयीं।

घत्ता—अंकुरित, कुसुमित और पल्लवित वसंत समयका आगमन शोभित है। जिस वसन्तमें अचेतन तरु भी विकासको प्राप्त होते हैं उसमें क्या मनुष्य विकसित नहीं होता? ॥१३॥

१४

शीघ्र ही आम्रवृक्ष कण्टकित हो गया, मधुलक्ष्मीने आलिंगन करके उसे ग्रहण कर लिया। शीघ्र चम्पक वृक्ष अंकुरोंसे अंचित हो गया, मानो कामुक हर्षसे रोमांचित हो गया। शीघ्र अशोक वृक्ष कुछ-कुछ पल्लवित हो उठा, मानो ब्रह्मारूपी चित्रकारने उसकी रचना की हो; शीघ्र ही मन्दारकी शाखा पल्लवित हो गयी मानो चलदल (पीपल) को मधुने नचा दिया हो। शीघ्र नमेरु (पुन्नाग वृक्ष) कलियोंसे लद गया, और मतवाले चकोर और कीरोंकी ध्वनियोंसे गूँज उठा। शीघ्र ही काननमें टेसू वृक्ष खिल गया, और पथिकोंके लिए विरहाग्नि लगने लगी। शीघ्र

छुडु छइयेणविडवलि मउ वड्ढिउ वेल्लिकुसुमरसु चुंबिवि कड्ढिउ ।
कुंदु कुसुमदंतहिं णं हसियउ कोइलु कामपडहु णं रसियउ ।
दवणयकयंकुडुयलपवत्तइं चंदणकद्दमपिंडविलित्तइं ।

घत्ता—छुडु केलीहरइं विणिम्मियइं [10]पुप्फच्छुरणइं चित्तइं ॥
छुडु लग्गइं मिहुणइं सरहसइं अवरोप्परु रयरत्तइं ॥१४॥

१५

थिप्पिरमहुछडयहिं महिधुलियइं सुमणसुरहिरयरंगावलियहिं ।
णवरत्तुप्पलकलियादीवहिं चंदकवयणडणवणभावहिं ।
धवलकुसुमंजरिधयमालहिं गुमुगुमंतमहुलियगेयालहिं ।
रायहंसकामिणिकयरमणहिं थिउ वसंतपहु उववणभवणहिं ।
कुररकीरकारंजणिणायहिं वणिमंतु व थोत्तणिहाणहिं ।
सियजलकणतंदुलसोहालहिं भिसिणिपत्तवरमरगयथालहिं ।
अणलससयदलदलसरलच्छिइ चित्त सेस णं तहु वणलच्छिइ ।
फग्गुणपइसारइ णंदीसरि छुडु सुरणविइ दीवि णंदीसरि ।
पोसहपरिसमखामसरीरइ थणजुयलंतविलंबियहारइ ।
पुत्तिइ पहसंतें मुहकमलें पहु दिट्ठउ जिणसेसाकमलें ।

घत्ता—तेलोक्कपियामहु णवेवि जिणु णवमयरंदकरंबिउ ॥
तं णलिणु णरिंदें णिहिउ सिरे महुयरउलमुहचुंबिउ ॥१५॥

१६

तेण धूय पियवयणहिं पुज्जिय करि पारणउं भणेवि विसज्जिय ।
गय सुंदरि णियगेहु पराइय तायहु चित्ते चिंत संभूइय ।
मउयणु सव्वु दूरि ओसारिउ रायएं मंतिहि मंतु समीरिउ ।
तणयहि नडुदिणि गलियइं रत्तइं महुं डुहंति भो अट्ठ वि गत्तइं ।
णं दुपुत्तरइयइं दुचरित्तइं अवलोयहु लहु णववरइत्तइं ।
घरि कुमारि केत्तिउ रक्खिज्जइ कासु वि कुलगुणवंतहु दिज्जइ ।
सायरमंति चवइ सररुहमुहु अक्ककित्ति चक्कवइहि तणुरुहु ।
ढोयहि तासु कण्ण किं अण्णें सामंतेण लोयसामण्णें ।

---

५. B विडयणविउलि । ६. MB कुंद । ७. MB कोइल । ८. MB °कयकंदुयणपउत्तइं । ९. MBK °पिंगविलित्तइं । १०. MB पुप्फत्थरणइं । ११. MB रइरत्तइं ।

१५. १. MB °रमणिहिं । २. MB बहुवणभवणिहिं । ३. MB °कारंड° । ४. M °णिकायहिं; B °णिणायहिं; K °णिहायहिं; ५. MB °जुयलंति विलं° । ६. MBK णविवि ।

१६. १. MB राएं मंतिहु । २. MB उडुदिण° । ३. MB डहंति । ४. MB अंगइं । ५. M णं दुपुत्तु रइयइं; B णं पुत्तरइयइं । ६. MB किं मंतेण ।

ही जुहीका पुष्प समूह खिल उठा और रमणीजनोंमें रतिलोभ बढ़ने लगा। शीघ्र ही भ्रमररूपी विटजनोंमें मद बढ़ गया और उन्होंने लताओंके कुसुमरसको चूमकर खींच लिया। कुन्दवृक्ष अपने पुष्परूपी दाँतोंसे हँसने लगा और कोयलने मानो कामका नगाड़ा बजाना शुरू कर दिया। दमनक लताके कुड्मलोंसे रचित और चन्दनकी कीचड़से लिप्त—

घत्ता—शीघ्र ही केलिगृह बना दिये गये और उनमें पुष्पोंके बिछौने डाल दिये गये। शीघ्र ही वेगयुक्त मिथुन रतिमें रत हो गये ॥१४॥

१५

सघन मधुके छिड़कावों और फूलोंकी सुरभि रजकी रंगोलीसे धरती रँग उठी। वसन्तरूपी प्रभु, नव रक्तकमलोंके कलिकारूपी दीपों, मयूररूपी नटके नृत्यभावों, धवल कुसुम मंजरियोंकी पुष्पमालाओंके गुनगुनाते हुए भ्रमरोंकी गीतावलियों, राजहंसकी कामिनियों द्वारा किये गये रमणोंके साथ उपवन भवनोंमें स्थित हो गया। कुरर, कीर और कारंज पक्षियोंके निनादोंके द्वारा जो मानो स्तोत्रसमूहके द्वारा वर्णित किया जा रहा हो। श्वेत जलकणोंसे चावलकी शोभा धारण करनेवाले, कमलिनीके पत्तोंकी पंक्तियोंकी थालियोंके द्वारा, खिले हुए कमलोंके समान आँखोंवाली वनलक्ष्मीने मानो उसे शेषाक्षत समर्पित किया हो। नन्दीश्वर द्वीपमें फागुनके आने-पर, शीघ्र देवेन्द्र द्वारा नमित नन्दीश्वर द्वीपमें, जिसका शरीर उपवासके श्रमसे क्षीण हो गया है, स्तनयुगलके अन्तमें हार लटका हुआ है, ऐसी पुत्रीने हँसते हुए मुखकमलसे जिनपूजाके कमलके साथ राजाको देखा।

घत्ता—त्रैलोक्य पितामह जिनको प्रणाम कर, नवपरागसे अंचित और मधुकरकुलके मुखसे चुम्बित उस कमलको राजाने अपने सिरपर धारण कर लिया ॥१५॥

१६

पिताने प्रिय वचनोंसे पुत्रीका सत्कार किया और भोजन (पारणा) करो यह कह-कर उसे विसर्जित कर दिया। सुन्दरी गयी और अपने घर पहुँची। पिताके मनमें चिन्ता उत्पन्न हुई। उसने सब भटजनोंको दूर हटा दिया। राजाने मन्त्रीसे विचार प्रारम्भ किया, "ऋतुदिनमें (मासिक धर्मके दिनोंमें) कन्याके गलित और लाल आठों अंग मुझे इस प्रकार कष्ट देते हैं, मानो कुपुत्रके द्वारा किये गये दुश्चरित हों। इसलिए शीघ्र नये वरको खोजो। कुमारी कन्याको घरमें कितना रखा जाये, किसी कुलीन और गुणवान् व्यक्तिको दी जाये।" सागर मन्त्री

सिद्धत्थेण भणिउं मणरंजणु अच्छइ राणउ णामु पहुंजणु।
णं पच्चक्खीहूयउ सइं सरु रहवरु बलि वज्जाउहु घणसरु।
सव्वत्थेण लविउ सुइ महिहर[10] तुह पुत्तिहि वरु जइ विज्जाहर[11]।
होंति[12] ण अण्णहु तं लायण्णउं सुमइ कहइ मइं पहु पडिवण्णउं।
अविरोहणउं सयंवरमंडणु होउ ण कासु वि णेहहु खंडणु।

घत्ता—जं बहुसुएण परिणयमइण सुमइबुहेणब्भत्थिउ ॥
परियाणिवि होंती कज्जगइ तं सयलहिं मि समत्थिउ ॥१६॥

१७

विमाणगोमिणीधवो कुमारिपुव्वबंधवो।
सुरो विचित्तअंगओ तओ तहिं समागओ।
तिणा सुमंडवो कओ[1] विचित्तमित्तिसोहिओ[3]।
ललंततोरणालओ घुलंतपुप्फमालओ।
समंतभंतभिंगओ णहग्गलग्गसिंगओ।
सुणीलबद्धभूयलो तमेण णाइ सामलो।
कहिं पि हेमपिंजरो सरो व्व कंजकेसरो।
कहिं पि रुप्पयामलो विलित्तचंदमंडलो।
कहिं पि वत्थुछण्णओ सुएंसपिंछवण्णओ।
णवंतणत्थलीसमो महंतपुण्णसंगमो।
मणीहिं रायराइओ रईइ णाइ छाइओ।
कहिं पि देसि[9] रत्तओ वहूइ णाइ रत्तओ।
थिओ णवो व्व मित्तओ सिरीविलासदित्तओ।
णिहित्तमोत्तियण्णो ससंखकुंभदप्पणो।
असेसमंगलासओ [12]पगीयगेयघोसओ।
विसालमत्तवारणो दिवायरंसुवारणो।

घत्ता—मंडवु किं वण्णमि देव हउं बहुमाणिक्कहिं जडियउ।
जहिं दीसइ तहिं जि सुहावणउ सग्गं[13] महिहि णं पडियउ ॥१७॥

---

७. MB पहुंजणु। ८. MB सुरु। ९. K वज्जाउहु; T घणसरु मेघेश्वरः। १०. MB महियरु; T महिहरु राजानः। ११. MB विज्जाहरु। १२. MB होइ ण।

१७. १. MB add after this : समुच्चमंचसंगओ (B °संचसंगओ)। २. MB °सोहिओ। ३. MB add after this: : वरंगणाहिरोहिओ। ४. B भमंतमत्त°। ५. MB विचित्तवण्णमंडलो; K विजित्तचंद°। ६. MB वत्थछण्णओ and gloss वस्त्रेणावच्छन्नः। ७. GK सुएसुपिछवण्णओ but gloss शुकेशपिच्छवर्णः; T सुएस शुकप्रधानः। ८. M णवव्वणत्थली°; B णवत्तणत्थली। ९. MB देस°। १०. G दिसी° but corrected to सिरी° in the margin। ११. MB °कुंद°। १२. MB °गीय°। १३. MBK सग्गु।

कहता है—"चक्रवर्तीका पुत्र, कमलके समान मुखवाला अर्ककीर्ति है, कन्या उसको दीजिए, किसी दूसरे लोक सामान्य सामन्तसे क्या ?" सिद्धार्थ (मन्त्री) कहता है कि प्रभंजन नामका सुन्दर राजा है, जो मानो साक्षात् स्वयं कामदेव हो। रथवर बली वज्रायुध और मेघेश्वर भी हैं। तब सर्वार्थ मन्त्री बोला—"यदि मनुष्यको छोड़कर, तुम्हारी पुत्रीका वर विद्याधर हैं, तो किसी अन्यमें वह लावण्य नहीं है।" सुमतिने कहा—"हे प्रभु, मैंने स्वीकार किया। सबसे अविरोधी बात यह है कि स्वयंवर किया जाये, जिससे किसीके भी स्नेहका खण्डन न हो।"

घत्ता—इस प्रकार बहुशास्त्रज्ञ परिणत बुद्धि सुमति मन्त्रीने जो प्रार्थना की उससे कार्यकी गति होगी, यह जानकर सबने उसका समर्थन किया ॥१६॥

१७

उस अवसरपर विमानरूपी लक्ष्मीका स्वामी और कुमारीका पूर्वजन्मका भाई चित्रांगद देव वहाँ आया। उसने सुन्दर मण्डपकी रचना की, जो विचित्र भित्तियोंसे शोभित, झूलते हुए तोरणमालाओं, हिलती हुई पुष्पमालाओंसे युक्त, मतवाले भ्रान्त भ्रमरोंवाला और अपने शिखरोंसे आकाशके अग्रभागको छूता हुआ। नीलमणियोंसे निबद्ध भूमितल ऐसा लगता है जैसे अन्धकारसे काला हो गया हो, कहींपर स्वर्णसे पीला कमलपरागसे युक्त सरोवर हो, कहीं चाँदी-से स्वच्छ ऐसा लगता है मानो प्रदीप्त चन्द्रमण्डल हो, कहीं वस्त्रोंसे आच्छादित ऐसा लगता है, मानो शुकों-की पूँछोंके रंगका हो। नवतृणस्थलीके समान और महान् पुण्योंका संगम, मणियोंकी शोभासे शोभित और कान्तिसे आच्छादित, कहीं रक्त दिखाई देता है जैसे वधूके द्वारा अनुरक्त हो। श्रीके विलाससे दीप्त जो नवसूर्यके समान स्थित है, मोतियोंके अर्चनसे निहित, शंख-मंगल-कलश और दर्पणसे सहित, अशेष मंगलोंका आश्रय, प्रगीत गीतघोषोंवाला, विशाल मत्त गजोंवाला और सूर्यकी किरणोंको आच्छादित करनेवाला।

घत्ता—हे देव, मैं मण्डपका क्या वर्णन करूँ। अनेक माणिक्योंसे जड़ा हुआ वह जहाँ दिखाई देता है, वहीं सुहावना लगता है मानो स्वर्ग ही धरतीपर आ पड़ा हो ॥१७॥

१८

अहिं कुमारि अहिलसइ संइं वरु सो पारद्धउ णाहसयंवरु।
पइं विणु तेण वि काइं णवल्लें लहु चल्लहि किंकरवच्छल्लें।
अविणउ एत्थु म होउ मलासिउ हउं हक्कारउ तुंह संपेसिउ।
तं णिसुणिवि हूयउ कोऊहलु दिण्ण भेरि गुरुरव मिलियउ बलु।
मेरुधीरु जगणलिणदिणेसरु तं णिसुणिवि चल्लिउ भरहेसरु।
चल्लिउ पडिभडगयघडमद्दणु अक्ककित्ति णामें तहु णंदणु।
चल्लिउ बलि रहंवरु वज्जाउहु चल्लिउ घणरउ णं कुसुमाउहु।
भूगोयरविज्जाहरराणा गंपि सयंवरघरि आसीणा।
पहुहु अकंपणु पणविउ जावहिं संदणि तरुणि चडाविय तावहिं।
सहुं धाइइ भूसणहिं सहंती भायसहासें रक्खिज्जंती।
चोइय हय महिंदरहिएं तहिं रायकुमार परिट्ठिय ते जेहिं।
जोयइ सुंदरि कंचुइ दावइ एक्कु वि णरवइ मणहु ण भावइ।
घत्ता—तहि अक्ककित्ति पलयक्कणिहु बलि भूयबलि वि समाणउ ॥
वज्जाउहु वज्जु व आवडिउ रुच्चइ को वि ण राणउ ॥१८॥

१९

जिह जिह सुंदरि अप्पउ दावइ तिह तिह णिवतणयहुं तणु तावइ।
को णीससइ ससेइ दिहि छंडेइ अप्पेउ पुण वि पुणु वि कु वि मंडइ।
कंठाहरणु को वि संजोयइ अप्पउ दप्पणि को वि पलोयइ।
को वि णियइ णियणहइं अभंगाइं एयइं पयहि थणहि ण लग्गइ।
चिरभवि मइं ण कियउ मणणिग्गहु किह विरयमि एयहि कंठग्गहु।
को वि समिच्छइ तहि अहरग्गहु कासु वि लग्गउ काममहग्गहु।
कासु वि आयउ विरहमहाजरु कासु वि उरि खुत्तउ वम्महसरु।
मुच्छिउ पडिउ को वि विहलंघलु केण वि णियलज्जहि दिण्णउ जलु।
घत्ता—कर मोडइ छोडइ सिरचिहुर उग्गमंतसिंगारहिं ॥
अहिलसइ हसइ भासइ महुरु भज्जइ कामवियारहिं ॥१९॥

२०

तरुणिवयणु जोयवि जोत्तारें मणु परियाणिवि सुरगिरिधीरें।
पुणु रहवरु संचोइउ तेत्तहि आसीणउ जउ णरवइ जेत्तहि।

---

१८ १ MB सयवरु। २ M ण होइ। ३ MB तुम्हह पेसिउ। ४. MB रहवर। ५ MB भाइं। ६ MB जेत्तहिं।

१९ १ MB सुसइ। २ MB छड्डइ। ३ MB अगउ को वि पुणु वि पुणु मडइ। ४ MB महगइ। ५ MB महागह। ६ B सिरि चिहुर।

२० १ MB सजोइउ। २ B जयणरवइ।

१८

जिसमें कुमारी स्वयं अपने वरकी इच्छा करती है ऐसे पतिका स्वयंवर प्रारम्भ किया गया है। तुम्हारे बिना किंकर वत्सल उस नवीनसे क्या ? आप शीघ्र चलें, किसी दोषके कारण यहाँ अविनय न हो, मैं तुम्हें बुलानेके लिए भेजा गया हूँ। यह सुनकर कुतूहल हुआ। भेरी बजा दी गयी। और भारी बलके साथ सेना इकट्ठी हुई। मेरुके समान धीर एवं विश्वरूपी कमलके लिए सूर्यके समान भरतेश्वर यह सुनकर चल पड़ा। तब शत्रुकी गजघटाका मर्दन करनेवाला अर्ककीर्ति नामका उसका पुत्र भी चल पड़ा। बली रथवर वज्रायुध भी चल पड़ा। धनरव भी चला मानो कामदेव हो। इस प्रकार मनुष्य और विद्याधर राजा आकर उस मण्डपमें आसीन हो गये। जबतक राजाओं द्वारा अकम्पनको प्रणाम किया गया, तबतक तरुणी (सुलोचना) को रथपर चढ़ा दिया गया। धायके साथ आभूषणोंसे शोभित होती हुई वह अपने हजारों भाइयोंसे रक्षित थी। महेन्द्र सारथिने वहाँकी ओर अपने घोड़े चलाये जहाँ राजकुमार बैठे हुए थे। कंचुकी बताता है और कुमारी देखती जाती है। एक भी राजा उसके मनको अच्छा नहीं लगता।

घत्ता—वहाँ अर्ककीर्ति प्रलयके सूर्य समान और बलि भुजबलिके समान था। वज्रायुध वज्रके समान दिखाई दिया। परन्तु उसे कोई भी राणा अच्छा नहीं लगता ॥१८॥

१९

जहाँ-जहाँ वह सुन्दरी अपनेको दिखाती, वहाँ-वहाँ राजपुत्रोंके शरीरोंको सन्तप्त कर देती। कोई निश्वास लेता, कोई लम्बी सांस छोड़ता, कोई अपने आपको बार-बार अलंकृत करता, कोई कंठाभरणको ठीक करता। कोई स्वयंको दर्पणमें देखता। कोई अपने अभग्न नखोंको देखता कि जो अभी इसके स्तनोंको नहीं लगे हैं, पूर्वभवमें मैंने अपने मनका निग्रह नहीं किया, मैं इसके कण्ठग्रहको किस प्रकार पा सकता हूँ। कोई उसके अधरोंके अग्रभागकी इच्छा करता है और किसीके लिए कामरूपी महाग्रह लग जाता है। किसीके लिए विरह महाज्वर आ गया। किसीके हृदयमें कामदेवका तीर चुभ गया। कोई विह्वलांग होकर मूर्च्छित हो गया और किसीने अपनी लज्जाके लिए पानी दे दिया।

घत्ता—हाथ मोड़ता है, सिरके बाल खोलता है। उमड़ रहा है शृंगार जिनमें, ऐसे काम-विकारोंसे वह इच्छा करता है, हँसता है, मधुर बोलता है और भग्न होता है ॥१९॥

२०

सुमेरु पर्वतकी तरह गम्भीर सारथिने युवतीका मुख देखकर और मन जानकर फिरसे रथ उस ओर चलाया जहाँ राजा जयकुमार बैठा हुआ था। वह गजगामिनी उसे देखती हुई पूछती

पुच्छइ पेच्छंती गयवरगइ[3] पभणइ कंचुइ णिसुणि महासइ।
एहु[4] केरलवइ एहु सिंघलवइ एहु मालवइ एहु कोंकणवइ।
एहु बब्बरवइ एहु गुज्जरवइ एहु जालंधरिसु एहु वज्जरवइ।
एहु कंभोयकोंगगंगाहुं राउ एहु सव्वहुं मि कलिंगाहुं।
एहु कस्सीरणाहु टंकेसरु[5] एहु अवरु अवलोयहि तुहुं वरु।
सोमप्पहसुउ एहु[6] सेणावइ कुरुकुलणहि उग्गउ ससि णावइ।
रुद्धणहंतरधरवित्थारहिं विसहरवरिसमाणजलवारहिं[7]।
णिव दिव्विजइ अणेयं[8] परज्जिय मेच्छ अतुच्छवंस रणि णिज्जिय।
गज्जिउ णवघणघोसणिणाएं मेहेसरु जिं[9] हक्कारिउ राएं।
इय आयण्णिवि पियसहिवयणइं मुद्धइ पेसियाइं णियणयणइं।

घत्ता—तिह जोइउ ताइ सुलोयणए जउ णियवइ जयगारउ ॥
जिह रोमि रोमि तहि विप्फुरिउ वम्महु वम्मवियारउ ॥२०॥

२१

जिह जिह कण्णइ पइ आलोइउ तिह तिह रहियं[1] संदणु ढोइउ।
णरवरिंद णीसेस पमाइवि भवसिणेहसंबंधें[2] जाइवि।
सज्झसकंपावियगइगत्तइ वीलावसपरिमउलियणेत्तहि[3]।
जयहु लच्छिकीलाभूमित्थलि घित्त सयंवरमाल उरत्थलि।
[4]कुसुमसरेण णं कुसुमसरावलि गहिय कुमारि तेण कयपंजलि[5]।
गउ लहु सरहु भरहु साकेयहु दुम्मइ परिवड्ढिय जुयरायहु।
ता दुद्दंसणु दुद्धरु दुज्जणु दुट्ठु दुरासउ दूसियसज्जणु।
रविकित्तिहि सुहिवंदाकरिसणु अत्थि मंति णामें दुम्मरिसणु।
मच्छरवंतें तेण पउत्तउं जहिं अहिंस तहिं धम्मु णिरुत्तउ।
जहिं अरहंतदेउ[6] तहिं सयमहु। जहिं मुणिवरु तहिं इंदियणिग्गहु।
जहिं महिवइ तहिं रयणहं संगहु[7]।
ण करहेण खरेण वा णरवंदहु घंटालंबणु सहइ करिंदहु।
हरिकरिथीआइयइं[8] णियंदहु सयलइं रयणइं होंति णरिंदहु।

घत्ता—संकेइय पुत्ति अकंपणेण एहु णिहालिउ बालए ॥
अवमाणिवि तुम्हइं पिउतणय[9] घणरवु पुज्जिउ मालए ॥२१॥

---

३. GK गइवर° but gloss गजवरगतिः; K corrects गइ° to गय°। ४. MB read lines 4, 5 and 6 as: एहु केरलवइ एहु कोसलवइ, एहु सिंघलवइ एहु मालवपइ; एहु कुंकणबब्बरगुज्जरवइ, एहु जालंधरेसु वज्जरवइ; एहु कंमोयकोंगगंगंगहं, राउ एहु सव्वहं मि कलिंगहं। ५. MB ढक्केसरु। ६. MB पहु। ७. MB °जलधारहिं। ८. MB अणेण। ९. MB जिह कारिउ।

२१. १. MB रहियं। २. MB भवसणेह°। ३. MB °मउणिय°। ४. MB सकुसुम णं कुसुमसरसरावलि। ५. MB किय°। ६. MB अरहंतु देउ। ७. MB add after this: जहिं सुवण्णु तहिं विसयपरिग्गहु। ८. M °थीअइआइं णियंदहु; B °थीआइअइ णिअंदहु। ९. MB पहुतणय।

है। कंचुकी कहती है—"हे महासती सुनिए, यह केरलपति है, यह सिंहलपति है, यह मालवपति है, यह कोंकणपति है, यह बर्बरपति है। यह गुर्जरपति है, यह जालन्धरका ईश है, यह वज्जरपति है, ये कम्भोज-कोंग और गंगाके राजा हैं, सबमें यह, कलिंगका राजा है। यह कश्मीरका राजा है, यह टक्केश्वर है, यह दूसरा तुम्हारा वर है, इसे देखो, सोमप्रभका पुत्र यह सेनापति है जो कुरुकुलके आकाशमें चन्द्रमाकी तरह उदित हुआ है। अवरुद्ध कर लिया है धरती और आकाशके अन्तरोंको जिन्होंने ऐसे विषधरोंके समान बरसती हुई धाराओंके द्वारा इसने दिग्विजयमें अनेक राजाओंको जीता है। युद्धमें म्लेच्छ और अतुच्छ वंशके राजाओंको पराजित किया है। जब वह नवघनके घोषके समान गरजा तो राजा (सोमप्रभ) ने उसका नाम मेघेश्वर रख दिया।" इस प्रकार प्रिय सखीके इन वचनोंको सुनकर उस मुग्धाने अपने नेत्र प्रेषित किये।

घत्ता—उस सुलोचनाने जय करनेवाले अपने पतिको इस रूपमें देखा कि उसके रोम-रोममें मर्मको छेदनेवाला कामविकार हो गया ॥२०॥

२१

जैसे-जैसे कन्याने पतिको देखा वैसे-वैसे सारथिने रथ आगे बढ़ाया। अशेष राजाओंको छोड़कर, तथा पूर्वजन्मके स्नेह-सम्बन्धसे जाकर, सत्कामसे प्रकम्पित है गति और गात्र जिसका, तथा लज्जासे जिसके नेत्र मुकुलित हो गये हैं, ऐसी उसने जयकुमारके लक्ष्मीकी क्रीड़ाके भूमि-स्थल उरस्थलमें माला डाल दी। उसने अंजली जोड़े हुए कुमारीको ऐसे ग्रहण कर लिया मानो कामदेवने कुसुमोंकी माला स्वीकार कर ली हो। भरत शीघ्र ही अपने रथके साथ साकेत चला गया। यहाँ युवराजोंमें दुर्बुद्धि बढ़ने लगी। युवराज अर्ककीतिका दुर्मर्षण नामका मन्त्री था जो दुर्धर, दुर्जन, दुष्ट, दुराशय, सज्जनोंको दोष लगानेवाला और मित्रसमूहको सेकड़ों भागोंमें विभा-जित करनेवाला था। मत्सरसे भरकर उसने कहा—"जहाँ अहिंसा होती है वह निश्चयसे धर्म है। जहाँ अरहन्त देव हैं वहाँ इन्द्र है, जहाँ मुनिवर हैं वह इन्द्रिय निग्रह है। जहाँ राजा है वहाँ रत्नोंका संग्रह है। ऊँट या गधेके द्वारा नर-समूहका अवलम्बन नहीं होता। घण्टावलम्बन गजराजके शोभित होता है। घोड़ा, हाथी और स्त्री आदि समस्त रत्न नरश्रेष्ठ राजाके होते हैं।

घत्ता—राजा अकम्पन पुत्रीकी ओर इशारा किया। इसलिए बालाने इसकी ओर देखा। तुम्हारा अपमान कर चाचाके पुत्र मेघेश्वर (जयकुमार) का इसने सम्मान किया ॥२१॥

२२

रोसविमीसहं जयकासीसहं ।
इच्छियवसणहं दोहं मि पिसुणहं ।
समरि भिडेप्पिणु सिरइं खुडेप्पिणु ।
घिप्पइ सुंदरि णं वम्महपुरि ।
विउसदुगुंछिउ पहुणा इच्छिउ ।
कलहुद्देसिउ तं वहु भासिउ ।
तं णिसुणेप्पिणु[2] णिवहु णवेप्पिणु ।
दरविहसेप्पिणु[3] कज्जु मुएप्पिणु ।
णिद्दुक्कियमइ चवइ महामइ ।
मुक्खइ झोणी कोवविलीणी ।
माणुत्ताणी भयविद्दाणी ।
जायवें चित्ती दुक्खें तत्ती ।
णिहइ[5] मुत्ती गमणासत्ती ।
सइं जि विरत्ती अण्णंहि रत्ती ।
पयडीवेस वि जगपंकयरवि ।
सा करिकरभुय भरहेसर सुय ।
णालिंगिज्जइ णेय रमिज्जइ ।
एह पउत्ती परकुलउत्ती ।
वहालंतहं जसु मइलंतहं ।
णाउ मुयंतहं अप्पहि जंतहं ।
भो जुवणिवबइ इहपरभवगइ ।
अवसें णासइ तुह किं सीसइ ।

घत्ता—ससि दिणयरु जलहरु जलणु जलु गयणु महीयलु वाउ वि ॥
जणंजीवियकारेणु धुवु मुणहि सुंदर तुहुं तुह ताउ वि ॥२२॥

२३

धणवंतेण अहव दीणेण वि अंकुलीणेण वि सकुलीणेण वि ।
लइय सयंवरि कुवरि ण हिप्पइ हियवउ गरुएं पावें लिप्पइ ।
एहु पियामहेण तुह ताएं मग्गु पयासिउ मणुसंघाएं ।
इहु लंघिवि जो भूयइं तावइ सो णरु दुज्जसु दुग्गइ पावइ ।
एम कहंतहं णउ पडिबुद्धउ णं घएण सित्तउ धूमद्धउ ।

---

२२. १. MB कलहुद्देसउ । २. MB add after this : कर मउलेप्पिणु । ३. MB add after this : बहु संसेप्पिणु । ४. MB जा अवचिती । ५. MB read this line as : गमणासत्ती, णिंदइ (B णंदइ) भुत्ती । ६. MB अण्णहु । ७. G omits this line । ८. B जणु । ९. MB कारण धुउ ।

२३. १ MB सुकुलेणे वि अकुलीणेण वि ।

२२

इसलिए क्रोधसे भरे हुए दुःखकी इच्छा रखनेवाले दोनों ही दुष्टोंसे—जयकुमार और काशी-राज अकम्पनसे युद्धमें भिड़कर, सिर काटकर सुन्दरीको इस प्रकार ले लिया जाये, जैसे कामपुरी हो। विद्वानोंके द्वारा निन्दनीय, उसके द्वारा कहे गये कलहके उद्देश्यकी राजाने भी इच्छा की। यह सुनकर, राजाको प्रणाम कर, थोड़ा हँसकर, कार्य छोड़कर, अपायबुद्धि महामति मन्त्री कहता है—"भूखसे क्षीण, कोपसे विलुप्त, मानमें ऊँची, भयसे खिन्न, उन्मत्त दुःखसे सतायी हुई, निद्रामें लीन, गमनमें आसक्त, स्वयं हीसे विरक्त, दूसरेमें अनुरक्त है। हे विश्व कमलके रवि, भरतेश्वर-पुत्र, प्रकट वेश्याके समान, सूँड़के समान हाथोंवाली, उसका आलिंगन नहीं करना चाहिए; उसके साथ रमण नहीं करना चाहिए। यह परकुलपुत्री कही जाती है। इसे उड़ाते हुए, यशको मैला करते हुए, न्यायको छोड़ते हुए, कुमार्गमें जाते हुए, हे युवराज! तुम्हारी इहलोक और परलोककी गति अवश्य नष्ट होगी। तुम्हारे द्वारा क्या कहा जा रहा है।

घत्ता—शशि-दिनकर-जलधर-अग्नि-जल-गगन-धरती और पवन, तुम और तुम्हारे पिता, हे सुन्दर! जनजीवनके कारण हैं, इसे तुम निश्चित रूपसे जानो ॥२२॥

२३

धनवान्‌के द्वारा अथवा दीनके द्वारा, अकुलीनके द्वारा अथवा कुलीनके द्वारा स्वयंवरमें ली गयी कन्याका अपहरण नहीं किया जाता। इससे हृदय भारी पापसे लिप्त होता है। यह मार्ग तुम्हारे पितामह (ऋषभ), तुम्हारे पिता (भरत) और मनुसमूहने प्रकाशित किया है। इसका उल्लंघन कर जो प्राणियोंको सताता है, वह मनुष्य अपयश और दुर्गतिको प्राप्त करता है।" लेकिन यह सब कहनेपर भी युवराज अर्ककीर्ति प्रतिबुद्ध नहीं हुआ, उलटे जैसे आगमें घी

अक्ककित्ति पडिलवइ विरुद्धउ जइयहुं वीरवट्टु तहु बद्धउ ।
जइयहुं फणिवइ भग्गण चवक्किउ जणणें जलहरसरु जउ कोक्किउ ।
तइयहुं महुं रोसाणलु हूयउ णियमिउ एंतु खलहं जमदूयउ ।
वारिउ छण्णपवत्तिहिं बप्पें अज्जु सयंवरमालातुप्पें ।
सो दूसहु पज्जलियउ वट्टइ रिउलोहियसित्तउ ओहट्टइ ।

घत्ता—भो ओसरु कण्णइ काइं महु हउं किं मग्गु ण बुज्झवि ॥
जउ अप्पु वि भडलीहहिं गणइ तेण समउ रणि जुज्झवि ॥२३॥

२४

ताडिय समरभेरि कउं कलयलु खणि उद्धाइउ चउरंगु वि बलु ।
रक्खिय सिक्खिय वइरिवियारण सूरारूढ सूर वरवारण ।
मेट्ठपयंगुट्ठहिं संचोइय गज्जमाण मेहा इव धाइय ।
हरिखरखुरखयखोणीमंडल वाहिय वरकामिणीमणचंचल ।
रहरंखोलमाणधयडंबर दित्तविचित्तछत्तछण्णंबर ।
चक्कचारचूरियविसहरसिर असिझसमुसललउडिलंगलकर ।
सुणमि सुविणमि महापहु णहयर अंट्ठ चंद णामें विज्जाहर ।
जुवराएण रणंगणि मुक्का गरुडवूहु णाहि विरइवि थक्का ।
विजयघोसि करिवरि आरूढउ बालु महाहवसयणिग्घुट्ठउ ।
चक्कवूहमज्झत्थु विहावइ रवि परिवेसें वेढिउ णावइ ।
एत्तहि कण्ण पइट्ठ जिणालउ णिच्चमणोहरु णाम विसालउ ।
रक्खिउजंती किंकरवग्गें थिअ णिच्चलमण काओसग्गें ।
झाइय हो विवाहवित्थारें णाणाजीवरासिसंघारें ।
एत्तहि दूएं कज्जु समीरिउ तं चक्कवइसुएणवहेरिउ ।

घत्ता—एत्तहि जामाएं पुलइएण भणिउ अकंपणु धणुहु धरि ॥
रिउ जिणिवि जाम पडिवलमि हउं ता तरुणिहि रक्खणु करि ॥२४॥

२५

तेण समउ वरवीरु रणुब्भडु चलिउ सुकेउ सूरमित्तु वि भडु ।
खग्गपाणि भीसणु परसिरिहरु देवकित्ति जयवम्मु ससिरिहरु ।
पंच वि ससिरविणायकुलुब्भव पंच वि कयसंगाममहुच्छव ।
पंच वि णं आसीविसविसहर पंच वि मउडबद्ध रणसहचर ।

---

२. MBK वीरपट्टु । ३. M वद्दुउ । ४. MBK बुज्झमि । ५. MBK भडलीलहि । ६. MBK जुज्झमि ।

२४. १. MB किउ । २. K मेंठ° । ३. MB हयखुरेहि खय । ४. MB चक्कचार° । ५. MB अट्ठचंद । ६. MB °सयणिव्वूढउ । ७. MB थिय तायाणइ काओसग्गें । ८. MB झाइय ।

२५. १. MB वरवीरु । २. MB मित्तसूरु । ३. B जयधम्मु । ४. MB रणसयकर; K रणसहयर ।

डाल दिया गया हो। वह विरुद्ध होकर कहता है कि "जब उसे वीरपट्ट बाँधा गया, और जब नाग-राज भयसे चौंक गया था, और पिताने मेघस्वरको 'जय' कहकर पुकारा था, तभी मेरी क्रोधाग्नि भड़क उठी थी और दुष्टोंके लिए यमदूतकी तरह मैंने नियन्त्रित कर लिया था। पिताने अपनी प्रच्छन्न उक्तियोंसे मुझे मना कर दिया था। लेकिन आज स्वयंवरमालाके घीसे वह (क्रोधाग्नि) असह्य रूपसे प्रज्वलित हो रही है, वह शत्रुके रक्तसे सिंचित होकर ही कम होगी।

घत्ता—अरे यह अवसर है, कन्यासे मुझे क्या ? क्या मैं मार्ग नहीं समझता हूँ। जय अपने-को योद्धाओंकी पंक्तिमें गिनता है मैं उसके साथ युद्धमें लड़ूँगा" ॥२३॥

२४

युद्धके नगाड़े बज उठे। कलकल होने लगा। एक पलमें चतुरंग सेना उठ खड़ी हुई, रक्षित और शिक्षित तथा शत्रुओंका विदारण करनेवाले शूरोंसे आरूढ़ बहादुर हाथी, महावतोंके पैरोंके अंगूठोंसे प्रेरित कर दिये गये। वे गरजते हुए मेघोंकी तरह दौड़े। अपने तीव्र खुरोंसे धरतीमण्डलको खोदनेवाले और उत्तम कामिनियोंके समान चंचल मनवाले अश्व हाँक दिये गये। रथोंपर उड़ते हुए ध्वजोंका आडम्बर (फैलाव) था, चमकते हुए विचित्र छत्रोंसे आकाश ढक गया। चक्रोंके चलनेसे विषधरोंके सिर चूर-चूर हो गये। सैनिक हाथमें तलवार, झस, मूसल, लकुटि और हल लिये हुए थे। सुनमि और विनमि नामके जो आकाशगामी महाप्रभु थे और आठ चन्द्र नामके जो विद्याधर थे युवराजने उन्हें युद्धके मैदानमें उतार दिया। वे गरुड़व्यूहकी रचना कर आकाशमें स्थित हो गये। अपने विजयघोष नामक महागजपर आरूढ़ होकर, बालक होकर भी सैकड़ों महायुद्धोंका विजेता वह व्यूहके मध्यमें स्थित होकर ऐसा शोभित होता है, मानो सूर्य अपने परिवेशसे घिरा हुआ हो। यहाँ कन्याने जिनालयमें प्रवेश किया, नित्यमनोहर नामका जो अत्यन्त विशाल था। अनुचर-समूहके द्वारा रक्षा की जाती हुई वह कायोत्सर्गसे निश्चल मन होकर स्थित हो गयी। वह ध्यान करती है कि नाना जीवराशिका संहार करनेवाले विवाह विस्तारसे क्या ? यहाँ इतने थोड़ेमें चक्रवर्तीके पुत्र द्वारा अवधारित काम बता दिया।

घत्ता—यहाँ दामादने पुलकित होकर कहा, "अकम्पन ! तुम धनुष धारण करो, शत्रुको जीतकर जबतक मैं वापस आता हूँ, तबतक तुम तरुणीकी रक्षा करो" ॥२४॥

२५

उसके साथ श्रेष्ठ वीर युद्धमें उद्भट सुकेतु और सूरमित्र योद्धा भी चले। हाथमें तलवार लिये हुए, शत्रुश्रीका अपहरण करनेवाला देवकीर्ति, और श्रीधरके साथ जयवर्मा, ये पाँचों ही चन्द्र-सूर्य और नागकुल से उत्पन्न थे। पाँचों ही संग्राम का उत्सव करनेवाले थे। पाँचों ही दाढ़ों

पंच वि लोयवाल णं दारुण पंच वि पंच णाइं पंचाणण।
[5]अरितरुमयकंतारविणासण पंच वि [6]णं सइं पंच हुयासण।
मेहप्पहु खगवइ तहिं छट्ठउ करणहउयरि णाइं मणु दिट्ठउ।
जउ जि जीउ जहिं ववसिउ जायउ तहिं ण धरइ रिउ कम्मणिहायउ।
विरइयमयरवूहअब्भंतरि थिउ वेयड्ढमहाकरिकंधरि।
दीसइ सोमप्पहसुउ केहउ वणगिरिमत्थइ केसरि जेहउ।
चोद्दहभायरेहिं परियरियउ रवि व सकिरणकलावहिं फुरियउ।

घत्ता—उक्खयकरवालभयंकरइं आहवि को[7]वाँवण्णइं॥
आलग्गइं कण्णाकारणिण अक्ककित्तिजयसे[8]ण्णइं॥२५॥

२६

[1]परिहियकंचणकं[2]चुइकवयइं सामरिसइं संवरियावयवइं।
भडमुहमुक्कहक्कलक्कइं भामियचक्कइं भेसियसक्कइं।
[3]झसकोंतासणिघोरायारइं [4]झेणझणंतधणुगुणटंकारइं।
मुक्कपिसक्कच्छइयगयणयलइं रुहिरवारिरेल्लियधरणियलइं।
अंकुसवसविसंतमायंगइं संदणसंकडपडियतुरंगइं।
असिणिहसणसिहिसिहपिंगलियइं लुयकरसिरउराइं महिघुलियइं।
मिलियकरालकालवेयालइं [5]हणहणरावसमुग्गयरोलइं।
रुंडखंडभावियभेरुंडइं खंडियधवलछत्तधयदंडइं।

घत्ता—जुज्झंतइं दिट्ठइं विसरिसइं पयलियवणरुहिरुल्लइं॥
बेण्णि वि सेण्णइं णं [6]रणसिरिए बद्धइं केसुअफुल्लइं॥२६॥

२७

रत्तमत्तरयणियरवि[1]भले धारणीयलुल्लियंतचोंभले।
पहयहत्थिमत्थिक्कपंकए र[2]सवसाणईजणियसंकए।
उद्धबद्धचिंधोहलूरणे तियससुंदरीतोसपूरणे।
उयरऊरुउरयलवियारणे वइरिघरिणिमणिहारहारणे।
भीरुवयणणीसरियहारणे मरणदारुणे तहिं महारणे।
ता जएण संपेसिया सरा पुंखलग्गहुंकारखरसरा।
आहया हया विद्धया धया णिग्गया गया णिम्मया मया।
ते ण किंकरा जे ण मारिया ते ण राइणो जे ण दारिया।

५. M अहतरु° but gloss अरिः। ६. MB णावइ। ७. MB कोवाउण्णइं। ८. MB °सेणइं।
२६. १. MB पहरिय°। २. MB °कंचुय°। ३. MB झसकुंतायणि°। ४. MB रुणुरुणंत°। ५. MB हणहणकार°। ६. M वणसिरिए; B जवसिरिए।
२७. १. MB °विभले। २. MB रसवसं णइं।

विषधारण करनेवाले विषधर थे, पाँचों ही मुकुटबद्ध युद्धसाथी थे। पाँचों ही मानो भयंकर लोकपाल थे। पाँचों ही मानो पाँच सिंह थे। शत्रुरूपी तरुओं और मृगोंके कान्तारका विनाश करनेवाले थे, पाँचों ही स्वयं पाँच अग्नियाँ थे। वहाँ छठा था मेघप्रभ विद्याधर राजा, जैसे इन्द्रियों-के बीचमें मन देखा जाता है, वैसा। जहाँ जय ही जीवरूपमें व्यवसायमें लगा हुआ है, वहाँ शत्रु अपना कर्म संघात (सुलोचनाका अपहरणादि कर्म) धारण नहीं कर सकता। जिसके भीतर मकरव्यूह रच लिया गया है, ऐसे विजयार्ध महागजके कन्धेपर स्थित सोमप्रभका पुत्र (जय-कुमार) ऐसा दिखाई देता है मानो वनगिरिके मस्तकपर सिंह बैठा हो। अपने चौदह भाइयोंसे घिरा हुआ वह ऐसा मालूम होता है, जैसे सूर्य अपने किरणकलापसे विस्फुरित हो।

घत्ता—उठी हुई तलवारोंसे भयंकर, क्रोधसे लाल अर्ककीर्ति और जयकुमारकी सेनाएँ कन्याके कारण युद्धमें आ भिड़ीं ॥२५॥

२६

स्वर्णके कंचुक और कवच पहने हुए, अमर्षसे भरी हुई, अपने अंगोंको ढके हुए, अपने मुखोंसे हुंकारनेकी ललकार छोड़ते हुए, चक्र घुमाते हुए, इन्द्रको डराते हुए, झस-कोंत और वज्र-से भयंकर आकारवाले, झनझनाते धनुषोंकी डोरीकी टंकारोंवाले, मुक्त तीरोंसे आकाशको आच्छादित करनेवाले, रक्तकी धारासे धरतीपर रेलपेल मचा देनेवाले, अंकुशोंके वश शान्त महागजोंवाले, रथोंके समूहमें धराशायी अश्वोंवाले, तलवारोंके संघर्षणसे उत्पन्न अग्निकी ज्वालाओंसे जो पीले हैं; जहाँ कटे हुए सिर, उर और कर भूमितलपर व्याप्त हैं, भयंकर काल वैताल मिल रहे हैं, मारो-मारो का भयंकर कोलाहल हो रहा है, भेरुण्ड पक्षियोंके झुण्डोंके खण्ड अच्छे लग रहे हैं, धवल छत्र और ध्वजदण्ड खण्डित हैं, ऐसे दोनों सैन्य—

घत्ता—प्रगलित व्रणोंके रुधिरसे लाल और असामान्य युद्ध करते हुए देखे गये। दोनों ही सैन्य ऐसे लगते थे मानो युद्धलक्ष्मीने दोनोंको टेसूके फूल बाँध दिये हों ॥२६॥

२७

उस महायुद्धमें, कि जो रक्तसे मत्त निशाचरोंसे विह्वल, धारणीयोंके द्वारा खण्डित आँतों-से बीभत्स, आहत गजोंके मस्तकोंके रक्तसे कीचड़मय, रस और चर्बीसे नदीकी शंका उत्पन्न करनेवाला, ऊँचे बँधी हुई पताकाओंके समूहको उखाड़नेवाला, देव-सुन्दरियोंके सन्तोषकी पूर्ति करनेवाला, उदर-ऊरु और उरतलको विदीर्ण करनेवाला, शत्रुओंकी स्त्रियोंके मणिहारोंका अपहरण करनेवाला, डरपोक मुखोंसे निकलते हुए हा-हा शब्दको धारण करनेवाला और मृत्युसे भयंकर था, जयकुमारने अपने पुंख लगे हुए और हुंकारकी तरह तीखे तीर प्रेषित किये। उनसे घोड़े घायल हो गये, ध्वज छिन्न-भिन्न हो गये, गज भाग गये और निर्मद होकर मर गये।

तं ण छत्तयं[3] जं ण छिण्णयं तं ण वाहणं जं ण भिण्णयं ।
सो ण रहवरो जो ण भग्गओ सो ण खेयरो जो ण खं गओ ।
ताम पक्खिपक्खेहिं विज्जियं[4] मग्गणेहिं किवणं[5] व तज्जियं ।
फुट्टकंचुयं[6] फुट्टमंडलं तुट्टपक्खरं मुक्ककुंतलं ।
घायघुम्मिरं वत्तगोंदलं[7] चक्किसूणुणो णिग्गयं बलं ।
समरकोच्छरो हसियअच्छरो[8] बंधुपरिहवे बद्धमच्छरो ।
झत्ति बाहुबलिदेवतणुरुहो सोमवंससतिलयस्स संमुहो ।
भुयबलीविलग्गो महाभुवो पहु अणंतसेणो वि साणुओ ।
दिव्वलक्खणंकियसरीरहं सयइं पंच भिडियइं कुमारहं ।

घत्ता—पुरुदेवतणयतणयहिं[9] मिलिवि जउ आढत्तउ जावहिं ॥
हेमंगउ भायरदहसयहिं सह अंतरि थिउ तावहिं ॥२७॥

२८

णउ तासिज्जइ छिज्जइ भिज्जइ एक्कें एक्कु ण[1] तहिं मारिज्जइ ।
जुद्धभवणि णं विहलियसत्थइं सत्थइं आविवि जंति णिरत्थइं ।
चरमदेह[2] ण मरंति महाहवि किर[3] आहिंति महामुणि वाहवि ।
मेहेसरसरजालु जलंतउ कुमरहु[4] उप्परि सिहि व पडंतउ ।
वसुसमससिविज्जहिं पडिखलियउ सहलु सपुंखउ पिट्टु व दलियउ ।
एत्थंतरि असहायसहायहु मुहुं अवलोइवि खेयररायहु ।
भणइ[5] कुमारु धवलु तुहुं ण कसरु वट्टइ माम तुहारउ अवसरु ।
सुणमि णिवायहि जउ महु वेरिउ ता तेण वि रिउ रणि पचारिउ ।
कंतामोहमहण्णवछूढउ[6] रे जीमूयणाय तुहुं मूढउ ।
किं कड्ढिउ असिवरु पहुतणयहु दोहय णिवडिओ सि गुरुविणयहु ।
संमुहुं थाहि थाहि मा णासहि पेक्खहुं तिक्ख सिलीमुह पेसहि ।
ता सो जयणरणाहें हसियउ इय चवंत किं णहहु ण ल्हसियउ ।

घत्ता—तुहुं कायरु[7] परयारहु पमुहु अक्ककित्ति सइं कत्तउ ॥
हउं णायणिउंजउ धरणियले णियपहुपायहं भत्तउ ॥२८॥

२९

एम चवेवि चाउ अप्फालिउ णं काणणि हरिणा ओरालिउ ।
णाइं कयंतहु पडहें रसियउं जगु गिलेवि णं कालें हसियउं ।
भेसियसुरणरफणिसंघायउ जीयारउ रउद्दु संजायउ ।

३. G छित्तयं; K छत्तयं, corrects it to छित्तयं but scores out the correction and restores it to छत्तयं । ४. MB विंजियं । ५. MBK किविणं । ६. MB फट्ट° । ७. M चित्त-गोंदलं । ८. MBK हरिसियच्छरो । ९. G पुरुदेवतणयहिं ।

२८. १. MB तहि ण । २. M चरमदेहे । ३. B किर । ४. MB कुम्मरहु । ५. M भाइ । ६. MB °महण्णवे छूढउ । ७. M कायउ ।

ऐसे अनुचर नहीं थे जो मारे न गये हों, ऐसे राजा नहीं थे जो विदीर्ण न हुए हों, ऐसा छत्र नहीं था जो छिन्न-भिन्न न हुआ हो, ऐसा वाहन न था जो क्षत न हुआ हो, ऐसा रथवर नहीं था जो भग्न न हुआ हो, ऐसा विद्याधर नहीं था जो आकाशमें न गया हो। जब पक्षियोंके पंखोंसे उड़ाया गया, मग्गणों (माँगनेवाले याचक और तीरों) के द्वारा कृपण की तरह तजित, फूटी हुई कंचुकी और फूटे हुए मर्दल (मृदंग), टूटे हुए कवच और खुले हुए बालोंवाला आघातोंसे घूमता हुआ, समूह छोड़ता हुआ, चक्रवर्ती पुत्रका सैन्य भाग खड़ा हुआ तब समरके लिए उत्सुक, अप्सराओंको हँसानेवाला, अपने भाईकी हारपर ईर्ष्या धारण करता हुआ बाहुबलिदेवका पुत्र शीघ्र ही सोमवंशके तिलक (जयकुमार) के सम्मुख आया। भुजबलिसे लगा हुआ, महाभुज राजा अनन्तसेन भी अपने अनुजके साथ आया दिव्य सैकड़ों लक्षणोंसे अंकित शरीरवाले पाँच सौ कुमारोंके साथ।

घत्ता—पुरुदेवके पुत्रके पुत्रोंने जब कुमार जयको सब तरफसे घेर लिया, तब अपने एक हजार भाइयोंके साथ हेमांगद आकर बीचमें स्थित हो गया ॥२७॥

२८

वहाँ एकके द्वारा एक न त्रस्त किया जाता, न काटा जाता, और न भेदन किया जाता, न एक दूसरेको मारा जाता, मानो जैसे लोभीके भवनमें विह्वल समूह हो। वहाँ शस्त्र आते परन्तु निरर्थक चले जाते। जो चरम शरीरी होते हैं, वे युद्धमें नहीं मरते। मानो महामुनि ही युद्धमें स्थित हों। मेघस्वरका जलता हुआ सरजाल कुमार अर्ककीर्तिके ऊपर आगकी तरह पड़ता है। आठ चन्द्रकुमारोंकी विद्याओंसे प्रतिस्खलित होकर, इस तीर समूहको फल और पुंखके साथ पीठ तक नष्ट हो गयी। इस बीचमें असहायोंके सहायक विद्याधर राजाका मुख देखकर कुमार कहता है—"तुम धवल बैल हो, गरियाल बैल नहीं, हे मामा, अब तुम्हारा अवसर है। सुनमि, तुम मेरे वैरी जयको नष्ट कर दो।" तब उसने भी युद्धमें दुश्मनको ललकारा, "हे कान्ताके मोह समुद्रमें डूबे हुए, हे मेघेश्वर! तू मूर्ख है। तूने राजाके पुत्रके विरुद्ध तलवार क्यों खींची? हे द्रोही, तू गुरुओंकी विनयसे पतित हो गया। भाग मत, मेरे सामने आ। देखूँ, अपने तीखे तीर प्रेषित कर।" इसपर राजा जयकुमार हँसा कि ऐसा कहते हुए तुम आकाशसे क्यों नहीं गिर पड़े?

घत्ता—परस्त्रीके प्रमुख कारक (करानेवाले) तुम हो, अर्ककीर्ति स्वयं कर्ता है। मैं न्यायमें नियुक्त हूँ और इस धरतीतलपर अपने स्वामीके चरणोंका भक्त हूँ ॥२८॥

२९

इस प्रकार कहकर उसने धनुषका आस्फालन किया। जैसे काननमें सिंह गरजा हो। मानो यमका नगाड़ा बजा हो। मानो विश्वको निगलनेके लिए काल हँसा हो। सुर-नर और

णिद्धणविहुरविण्णासममत्थें   धणु कड्ढियउ तेण सइं हत्थें ।
लोहवंत किर के णउ मग्गण   धम्मुज्झिय किर के णउ भीसण ।
गुणवज्जिय किर के णउ णिट्ठुर   णिच्छंचिय किर के णउ णहयर ।
चित्तविचित्त के ण किर चलयर   धम्मण्णेसिय के णउ तावेिर ।
सुद्धिवंत णियदिक्खिइ दित्ता   उज्जुय के ण मोक्खु संपत्ता ।
वइरिहि देहावयवि पइट्ठा   एक्क ण अवसर अण्ण वि दिट्ठा ।
कोडीसरु जि जाहं पवरासणु   ताहं ण दुग्गमु लक्खु विणासणु ।

घत्ता—अइदीहहिं विसविसमाणणहिं णिहिलु णहंगणु रुद्धउ ॥
णारायहिं णायहिं णं मिलिवि सुणमिहि बलु खणि खद्धउ ॥२९॥

३०

कुंजर जरभावेण व भग्गा   तुरय तुरंततयपहि लग्गा ।
संदण संदाणिय वावल्लहिं   भणु कहिं किर णिज्जंति रहिल्लहिं ।
तिक्खखुरुप्पहिं छिण्णइं छत्तइं   चिंधइं चामराइं वाइत्तइं ।
चउदिसु पच्छाइयसरजालें   विज्जाहर हरेवि णियकालें ।
एम दिसावलि संदिज्जंतउ   पेच्छिवि णिययसेण्णु भज्जंतउ ।
सुणमि मुक्कु बाणु संधारउ   ढंकिउ तेण वइरिपरिवारउ ।
कोइ ण काइं वि तेत्थु णिहालइ   वाहणु पहरणु को वि ण चालइ ।
एत्थु तेत्थु मग्गियअवठंभणु   सालसणयणु पमेल्लियजिंभणु ।
बलु णीलीरसि बोलिउ णावइ   जाम अहहु णिद संप्रावइ ।
दिणयरसरदीवियदहदिप्पहु   तावंतरि संठिउ मेहप्पहु ।

घत्ता—तं धंतु महंतु विणासियउ उज्जोइउं णियसुहिमुहुं ॥
जगि सज्जणसंगें जायएण कासु ण संपण्णउं सुहुं ॥३०॥

३१

णं जलहरु जलहरु गइ दूसिवि   धाइउ तासु सुणमि आरूसिवि ।
सुणमिं मुक्कु भीमु पंचाणणु   मेहप्पहेण सरहु फुरियाणणु ।
सुणमिं मुक्कु जलंतु हुयासणु   मेहप्पहेण मेहु जलवरिसणु ।
सुणमिं मुक्कु सकंदरु मंदरु   मेहप्पहेण सकुलिसु पुरंदरु ।
सुणमिं मुक्कु विसंकु महाफणि   मेहप्पहेण गरुडु खगसिरमणि ।
सुणमिं मुक्कु महंतु मेहीरुहु   मेहप्पहेण तणूणवु दूसहु ।

२९. १. M मम्मे णिसिय; B धम्मे णिसिय । २. MB ण संताविर ।
३०. १. MB जरतावेण जि भग्गा । २. MB तुरंत तहे पहि । ३. MB किर कहिं । ४. MB छिण्णहिं । ५. MBK अंधारउ । ६. M परहणु । ७. MB जेंभणु । ८. MB संपावइ । ९. B णियसहिमुहुं ।
३१. १. MB जलहर° । २. MB भूसिवि; ३. K सुणमि तासु । ४. MBK मेहु । ५. M सुकंदरु । ६. MB महातरु । ७. M तणूयउ; B तणूणउ ।

नाग-समूहको डरानेवाला प्रत्यंचाका अत्यन्त भयंकर शब्द हुआ। निर्धन और विधुरोंके विनाशमें समर्थ उसने स्वयं अपने हाथसे धनुष चढ़ाया। कौन-से मग्गण (माँगनेवाले, और मार्गण = तीर) लोहवन्त (लोभसे युक्त, लोहेसे सहित) नहीं होते, धम्मुज्झिय (कोटीसे रहित और धर्मसे रहित) कौन नहीं भीषण होते ? गुण (डोरी और दयादि गुण) से वर्जित कौन नहीं निष्ठुर होते ? पिच्छांचित (पंख और पुंखसे सहित) कौन नहीं नभचर होते ? चित्तविचित्त (चित्तसे विचित्त और चित्र-विचित्र) कौन नहीं चंचलतर होते ? मर्मका अन्वेषण करनेवाले (वम्मण्णेसिय) कौन सन्तापदायक नहीं होते ? बुद्धिसे युक्त अपने दीप्तिसे भास्वर और सीधे कौन (तीर और मुनि) नहीं मोक्षको प्राप्त होते ? शत्रुकी देहके अंगोंमें प्रविष्ट हुए एक जयके ही तीर नहीं थे बल्कि दूसरे भी कामको जीतनेवाले थे। कोटीश्वर (धनुष और काम) ही जिनका प्रवर आसन है उनके लिए अपना लक्ष्य और विनाश दुर्गम नहीं है।

घत्ता—अत्यन्त लम्बे और विषसे विषम मुखवाले तीरोंने समस्त आकाशको अवरुद्ध कर लिया, मानो जैसे नागोंने मिलकर एक क्षणमें सुनमिके बलको खा लिया हो ॥२९॥

३०

कुंजर ज्वरके भावसे भाग खड़े हुए, तुरग (घोड़े) तुरन्त यमके मार्गसे जा लगे। स्यन्दन बरछियोंसे क्षत-विक्षत हो गये, बताओ सारथियोंके द्वारा वे कहाँ ले जाये जायें। तीखे खुरपोंसे छत्र छिन्नभिन्न हो गये। चिह्न चामर और वादित्रोंने भी सरजालसे चारों दिशाओंको आच्छादित कर दिया और अपने समयसे विद्याधरोंका अपहरण कर लिया। इस प्रकार दिशाबलि दी जाती हुई और नष्ट होती हुई अपनी सेनाको देखकर सुनमिने अन्धकारका बाण छोड़ा, उसने शत्रु परिवारको ढक लिया। वहाँ कोई भी कुछ नहीं देखता, कोई भी वाहन और हथियारोंको नहीं चलाता। यहाँ-वहाँ लोग सहारा माँगने लगे। नेत्र अलसाने लगे, जम्हाइयाँ छोड़ने लगे। जैसे सैन्य नीले रंगमें डुबा दी गयी हो। जबतक लोग अभद्र नींदको प्राप्त होते, तबतक इस बीचमें दिनकर तीरसे दसों दिशाओंके पथोंको आलोकित करता हुआ मेघप्रभ विद्याधर स्थित हो गया।

घत्ता—वह सारा अन्धकार नष्ट हो गया, अपने सुधियोंके मुख आलोकित हो उठे। विश्वमें सज्जनका संग मिलनेपर किसे सुख नहीं होता ॥३०॥

३१

मानो जलधर जलधरकी गति दूषित कर चला गया। इससे सुनमि क्रोधसे भरकर दौड़ा। सुनमिने भयानक सिंह तीर छोड़ा, मेघप्रभने स्फुरितानन श्वापद तीर छोड़ा, सुनमिने जलता हुआ अग्नि तीर छोड़ा, मेघप्रभने जल बरसानेवाला मेघ तीर छोड़ा। सुनमिने गुफा सहित पर्वत तीर छोड़ा, मेघप्रभने वज्रसहित इन्द्र तीर छोड़ा, सुनमिने विषांकित महासर्प तीर छोड़ा, मेघप्रभने खगशिरोमणि गरुड़ तीर छोड़ा, सुनमिने महान् महीधर तीर छोड़ा, मेघप्रभने दुःसह

सुणमि मुक्कु मत्तसोंडालउ मेहप्पहेण सीहु दाढालउ ।
जं जं सुणमि महावहु पेसइ[8] तं तं मेहप्पहु विद्धंसइ ।
घत्ता—णउ सक्किउ विसहहुं रिउहि सर कसरु व मुहुं वंकेप्पिणु[9] ॥
ओसरिउ सुणमि खयराहिवइ संगरभारु मुएप्पिणु ॥३१॥

३२

भग्गइ सुणमीसरि[1] सोंडीरहिं अद्धचंदविज्जाहरवीरहिं[2] ।
मेहप्पहु पहरेहिं परज्जिउ सो णासंतु णं[3] सुरहं वि लज्जिउ ।
दाणवारिपीणियमहुयरउलु णहयललग्गतुंगकुंभत्थलु ।
कणिरकणयकिंकिणिकोलाहलु करसिक्कारसित्त[4][5]धरणीयलु ।
आयसवलयबद्धदंतुज्जलु ता जएण संचोइवि मयगलु ।
पभणिउ अक्ककित्ति लहु आवहि अज्ज वि सुंदर काइं चिरावहि[6] ।
चंगउ कियउ रायपुत्तत्तणु णिहियउ तिहुयणि दुज्जसकित्तणु ।
परणरणारिहि भडयणमारिहि रत्तओ सि जं देवकुमारिहि ।
तं पइं णरवइआण णिसुंभिय णिहय जारवित्ति पारंभिय ।
तं णिसुणेप्पिणु उत्तरु[7] धुत्तें पडिजंपिउ भरहाहिवपुत्तें ।
घत्ता—महु संणिहि आउ सुलोयणए अत्थि भवणि घडदासिउ ॥
हउं लग्गउं तुह भुयबलमयहो पुव्वमेव ओसासिउ[8] ॥३२॥

३३

जेण बलेण जित्तु घणमंडलु तोसिउ ससुरु सग्गि आहंडलु ।
तं बलु पेक्खह दावहि अम्हहं अज्जु परिक्ख करेवी तुम्हहं ।
वेहाविउ आवत्तचिलायहिं तुहुं वि बप्प जुज्झहि सहुं रायहिं ।
तहिं अवसरि सेंदूर[1]कणारुण जयवारणहु विलग्गा वारण ।
अट्ठ अट्ठचंदेहिं[2] आवाहिय कक्खरिक्खगेज्जावलिसोहिय ।
एक्कु दंति जुवराएं ढोइउ णं इंदें अइरावउ[3] चोइउ ।
हयअरिकरिवरेण ते दंतहिं णिवडियणवविललंतहिं अंतहिं ।
सरससमुच्छलंतपलखंडहिं दोखंडीहवंतदढसोंडहिं ।
घत्ता—गय पाडिय सूडिय णं सिहरि धरणिवीढु आकंपिउ ॥
देवासुरहिं[4] णहि संठियहिं जय जय जयणिव जंपिउ ॥३३॥

---

८. MB महत्यु संपेसइ । ९. MB वंकेविणु ।
३२. १. MB सुणमि समरि । २. MB अद्धचंद° ३. M वि । ४. G करि° । ५. MB सित्तु । ६. MB थिरावहि । ७. MB उत्तर । ८. MBK आरोसिउ ।
३३. १. MB सिंदूर° । २. MB अद्धचंदेहि । ३. MB अवराइउ । ४. MB देवासुर ।

अग्नि तीर छोड़ा, सुनमिने मतवाला महागज तीर छोड़ा, मेघप्रभने दंष्ट्राओंवाला सिंह तीर छोड़ा। इस प्रकार, सुनमि जो-जो तीर छोड़ता है, उस-उस तीरको मेघप्रभ ध्वस्त कर देता है।

घत्ता—विद्याधर राजा सुनमि शत्रुके तीरोंको सह नहीं सका, और मरियाल बैलकी तरह अपना मुँह टेढ़ा करके संग्रामभारको छोड़कर हट गया ॥३१॥

३२

गजों और आठों चन्द्रकुमार विद्याधरोंके होते हुए भी सुनमीश्वरके भग्न होनेपर, मेघप्रभके अस्त्रोंसे पराजित और भागता हुआ वह, देवोंसे भी लज्जित नहीं हुआ। जिसने मदरूपी जलसे मधुकरकुलको सन्तुष्ट किया है, जिसका ऊँचा कुम्भस्थल आकाशको छूता है, जिसमें ध्वनि करते हुए स्वर्ण घण्टियोंका कोलाहल हो रहा है, जो सूँड़के सीत्कारोंसे धरणीतलको सींच रहा है, जिसके दोनों उज्ज्वल दाँत लौह शृंखलाओंसे बँधे हुए हैं, ऐसे मदगल महागजको प्रेरित करते हुए जयकुमारने कहा—"हे अर्ककीर्ति, तुम शीघ्र आओ। हे सुन्दर, तुम आज भी देर क्यों करते हो? तुमने राजपुत्रत्व खूब अच्छी तरह निभाया, त्रिभुवनमें अपयशका कीर्तन स्थापित कर दिया है कि जो तुम परस्त्री योद्धासमूहको मारनेवाली देवकुमारीमें अनुरक्त हो? इससे तुमने राजाकी आज्ञाको नष्ट कर दिया है। हे निर्दय, तुमने चार वृत्ति प्रारम्भ की है।" यह सुनकर भरत राजाके धूर्त पुत्र अर्ककीर्तिने उत्तर दिया—

घत्ता—"तुम मेरे समीप आओ। सुलोचना-जैसी मेरे घरमें घटदासी हैं। पूर्वसे ही आश्वस्त मैं तो तुम्हारे बाहुबलके मदके पीछे लगा हुआ हूँ ॥३२॥

३३

जिस बलसे तुमने मेघमण्डल जीता है और देवों सहित स्वर्गमें इन्द्रको सन्तुष्ट किया है वह बल तुम हमें बताओ हम देखेंगे। आज तुम्हारी परीक्षा करेंगे। अभी तुम आवर्त और किरातोंके साथ लड़े हो, तुम बेचारे राजाओंके साथ भी युद्ध करते हो।" ठीक इस अवसरपर सिन्दूरकणोंसे अरुण उसके गज जयकुमारके गजसे आकर भिड़ गये। वे आठोंके आठ चन्द्र विद्याधर कुमारोंसे प्रेरित थे और कक्षरिक्ख (करधनी) और वस्त्रोंसे शोभित थे। युवराज जयकुमारने भी एक हाथी आगे बढ़ाया, मानो इन्द्रने ऐरावत चलाया हो। शत्रुके श्रेष्ठ गजसे आहत वे गज दाँतों, गिरती हुई नयी झूलती आँतों, सरस उछलते हुए मांसखण्डों, दो टुकड़े होती हुई दृढ़ सूँड़ों—

घत्ता—के साथ गिर पड़े और नष्ट हो गये। मानो पहाड़ ही धरतीपर आ पड़ा हो। आकाशमें स्थित देवोंने 'हे नृप, जय-जय-जय' कहा ॥३३॥

३४

एत्तहि रणु कयसूरत्थवणउं एत्तहि जायउं सूरत्थवणउं।
एत्तहि वीरहं वियलिउ लोहिउ एत्तहि जगु संझा[1]रुइसोहिउ।
एत्तहि कालउ गयमयविब्भमु एत्तहि पसरइ मंदु तमीतमु।
एत्तहि करिमोत्तियइं विहत्तइं एत्तहि उग्गमियइं णक्खत्तइं।
एत्तहि जयणरवइजसु धवलउ एत्तहि धावइ ससियरमेलउ।
एत्तहि जोहविमुक्कइं चक्कइं एत्तहि विरहें रडियइं चक्कइं।
कवणु णिसागमु किं किर तहिं रणु एउ ण बुज्झइ जुज्झइ भडयणु।
ता चप्पिवि मंतिहिं ओसारिउ रयणिहि जुज्झमाणु विणिवारिउ।
तुमुलरंगें णिरु रोसा[2]उण्णइं तेत्थु जि वसियइं बेण्णि वि सेण्णइं।

घत्ता—रत्तिहिं रणरंगि भवंतियए णरवइकज्जि समत्तउ ॥
घरिणिइ पिउ सहियहिं दावियउ सरसयणयलि पसुत्तउ ॥३४॥

३५

का वि भणइ ईसावसरुट्ठी खग्गधार पियहियइ पइट्ठी।
तक्खयरत्तहु हउं किह[1] रुसमि हयविहि प्राणहिं[2] काइं ण मुसमि।
का वि भणइ जं मइं[3] पडिवण्णउं पिय तं हियउ सिवहि किं दिण्णउं।
जं मइं चिरु दंतग्गहिं खंडिउँ[4] अहरबिंबु[5] तं पक्खिणिखंडिउ।
का वि भणइ पिय करु मा ढोयहि[6] ओसरु कावालिय किं जायेहि।
पट्टालंकियसीसहु लक्खणु मं छुडु तुहुं णिग्घिण[7] दुवियक्खणु।
जो मइं चप्पिउ आसि थणंतहिं सो रुद्धउ[8] उरु करिवरदंतहिं।
पणयसणिद्धइं[9] पणइणिज्झाणइं[10] का वि सणाहहु खंडइ वीणइं।
का वि भणइ जाणवि तणुथाणुहि आणिय पासि परेहिं णिहाणुहि[11]।
णाहें[12] अंतणिबंधणु दिण्णउं असिघेणुयइ सासु[13] लइ चिण्णउं।
को वि दुवासखुत्तरिउ थक्कउ उप्परि रहहु महारहु थक्कउ।
केण वि संचिय णिवरिणहारी रयणकोडि मायंगहु केरी।
लइय भिडेप्पिणु दोहिं वि हत्थहिं मणु किं ण कियउ एत्थु समत्थहिं।

घत्ता—रिउ मारिवि पच्छइ उवसमिवि मेल्लिवि ससरु सरासणु ॥
गयवरसंथारइ को वि मुउ करिवि वीरें[14] संणासणु ॥३५॥

---

३४. १. MB संझारुणु सोहिउ। २. MB रोसाइण्णइं।

३५. १. MB किं रुच्चमि। २. MB पाणहिं। ३. M मुहु; B महु। ४. K चट्टिउं। ५. MB अहरबिंबु पक्खिणिहिं विहंडिउ। ६. MBK जोयहि। ७ K णिरिघ। ८. MB रुद्धउ अरिवरकरिदंतहिं। ९. MB °समिद्धइं। १०. MB °ठाणइं। ११. T णिभाणुहे। १२. MB अज्ज णिबंधणु। १३. MB सीसु लइ छिण्णउं। १४. MB धीरसंणासणु।

३४

यहाँ रण शूरोंको अस्त कर रहा था और यहाँ सूर्यास्त हो गया। यहाँ वीरोंका खून बह गया और यहाँ विश्व सन्ध्याकी लालिमासे शोभित था। यहाँ काल मद और विभ्रमसे रहित हो गया था और यहाँ धीरे-धीरे रात्रिका अन्धकार फैल रहा था। यहाँ गजमोती बिखरे हुए पड़े थे और यहाँ नक्षत्र उदित हो रहे थे, यहाँ जय राजाका यश धवल हो रहा था और यहाँ चन्द्रमाका किरणसमूह दौड़ रहा था। यहाँ योद्धाओंके द्वारा चक्र छोड़े जा रहे थे और यहाँ विरहमें चक्रवाक पक्षी विलाप कर रहे थे, इनमें कौन निशागम है और कौन सैनिकोंका युद्ध है? भटजन यह नहीं समझते और आपसमें युद्ध करते हैं। तब उन्हें काँपते हुए मन्त्रियोंने हटाया और रात्रिमें युद्ध करते हुए उन्हें मना किया। युद्धके रंगमें रोषसे भरे हुए दोनों सैन्य वहीं ठहर गये।

घत्ता—युद्धके मैदानमें राजाके काममें मृत्युको प्राप्त हुए, तथा तीरोंके शयनतलपर सोते हुए प्रियको, रात्रिमें सहेलियोंने भावी पत्नीको दिखाया ॥३४॥

३५

ईर्ष्याके कारण रूठी हुई कोई बोली—"तलवारकी धार प्रियके हृदयमें प्रवेश कर गयी, जो उसमें अनुरक्त है, उसे मैं कैसे अच्छी लग सकती हूँ? हतभाग्य मैं प्राणोंसे मुक्त क्यों नहीं होती?" कोई कहती है—"हे प्रिय, जो मैंने स्वीकार किया था वह हृदय तुमने सियारिनको क्यों दे दिया? जिसे मैंने पहले अपने दाँतोंके अग्रभागसे काटा था वह (अब) पक्षिणीसे खण्डित है।" कोई कहती है—'हे प्रिय, हाथ मत बढ़ाओ। हे कापालिक, पट्टसे अलंकृत सिरके लक्षण क्या देखते हो, तुम मेरे लिए निर्दय और दुर्विदग्ध हो। जिसे मैंने स्तनोंसे चाँपा था वह उर गजवरोंके दाँतों द्वारा अवरुद्ध है।'' कोई प्रणयसे स्निग्ध प्रणयिनीके लिए यान स्वरूप? अपने प्रियको वीणाओंको खण्डित कर देती है। कोई कहती है कि शरीररूपी स्तम्भ समझकर, वह शत्रुओंके द्वारा नृप-श्रेष्ठके पास ले जाया गया। स्वामीने उसे आँतोंसे बाँध दिया और कटारीसे सिर काट लिया। जिसने अपने कठिन पाशसे शत्रुचक्रको निमग्न कर लिया है ऐसा कोई मेरे रथके ऊपर स्थित है। किसीने राजाके ऋणको दूर करनेवाली हाथीकी रत्नावली अपने दोनों हाथोंसे ले ली, बताओ समर्थोंके द्वारा यहाँ क्या नहीं किया जाता?

घत्ता—शत्रुको मारकर, फिर बादमें शान्त होकर और सर (तीर) सहित धनुष (शरासन) छोड़कर कोई गजवरकी तृणशय्यापर मरकर संन्यास ग्रहण कर लेता है ॥३५॥

३६

पुणु जामिणीगमणि दिणमणिसमुग्गमणि ।
भेरीणिणद्दाइं कयजयविमद्दाइं ।
जमसुहरउद्दाइं [1]हरियंदणद्दाइं ।
गज्जियमे[2]घंगाइं हिंसियतुरंगाइं ।
वाहियरहोहाइं संणद्धजोहाइं ।
चलवलियचिंधाइं धूलीरयंधाइं ।
[3]किलिगिलियणिसियरइं जिगिजिगियअसिवरइं ।
कंपियध[4]यरग्गाइं सेण्णाइं लग्गाइं ।
ता संदणत्थस्स आहवसमत्थस्स ।
णरसिर लुणंतस्स करि हरि हणंतस्स ।
विद्दवियदणुयस्स लच्छिमइतणुयस्स ।
[5]परिचत्तसंकेहिं वसुंसमससंकेहिं ।
उब्भूयगावेण विज्जापहावेण ।
परपाणपहरणइं छिण्णाइं पहरणइं
कोंताइं कं[7]पणइं मुसलाइं घणघणइं ।
चावाइं चक्काइं चूरेवि मुक्काइं ।
ता गलियसत्थेण चित्ते[8] महत्थेण ।
जयणामराएण इच्छियसहाएण ।
जियसरयमेहम्मि जो आसि गेहम्मि ।
सिद्धो सउण्णेण धे[9]ण्णेण वीरेण ।
अहिराउ संभरिउ सो झत्ति अवयरिउ ।
फणिवासु रणि तिव्वु अद्धेंदुसरु दिव्वु ।
ढोएवि खणि तासु गउ णाइणीवासु ।
ता विजयवंतेण ससिभासपुत्तेण ।
जाला मुयंतेण आलियदियंतेण ।
हुयवहसमाणेण [10]अहिदिण्णबाणेण ।
कूबरधुरासहिअ णिहहिवि [11]रेणि रहिय ।
दरमलियध[12]यसंडि णच्चवियरिउ[13]रुंडि ।
परिभमियगिद्धउलि पइसरिवि भडतुमुलि ।
अट्ठ वि विद्दू तेण बद्धा तुरंतेण ।
कूरारितासेण [14]दढणायपासेण ।
धरिओ रुसारुणउ चक्कवइपिउ[15] तणउ ।

---

३६. १. M हरियंब° । २. MB °महंगाइं । ३. MB किलिकिलिय° । ४. MB °धयग्गाइं । ५. MBK परियत्त° । ६. B omits this foot. ७. MB कप्पणइं । ८. MB चिंतियमहत्थेण । ९. MB धीरेण धण्णेण; G धम्मेण वीरेण । १०. B अहदिण्ण° । ११. MB रहरहिय । १२. धरंसडि । १३. M रिउलंडि । १४. MB °णायपासेण । १५. MB °पिय ।

३६

फिर रात्रिके जाने और सूर्योदय होनेपर जयके लिए संघर्ष करनेवाले नगाड़ोंके शब्द होने लगे। यममुखकी तरह रौद्र, हरिचन्दनसे आर्द्र गरजते हुए हाथी, हिनहिनाते हुए अश्व, हाँके जाते हुए रथ-समूह, सन्नद्ध योद्धा, हिलती हुई पताकाएँ, चमकती हुईं तलवारें। धरतीके अग्रभाग-को कँपाती हुई सेनाएँ भिड़ गयीं। तब युद्धमें समर्थ एक ओर रथपर बैठे हुए, मनुष्योंके सिर काटते हुए, हाथी-घोड़ोंको मारते हुए, दानवोंको ध्वस्त करते हुए लक्ष्मीवतीके पुत्र जयकुमारके दूसरोंके प्राणोंका अपहरण करनेवाले, प्रहरणोंकी, शंकासे रहित आठ चन्द्र विद्याधरोंने, उत्पन्न है गर्व जिसे, ऐसी विद्याके प्रभावसे छिन्न-भिन्न कर दिया। कोंत-कम्पण-घनघन-मूसल-चाप और चक्रोंको चूर-चूर करके छोड़ दिया। शस्त्रोंके नष्ट हो जानेपर चित्तमें समर्थ, सहायताकी इच्छा रखनेवाले पुण्यवान्, धन्य और वीर जयकुमार राजाने शरद्मेघोंको जीतनेवाले घरमें जिसे सिद्ध किया था, उस नागराजका स्मरण किया। वह शीघ्र अवतरित हुआ। वह नागपाश और युद्धमें तीव्र दिव्य अर्धेन्दु उसे देकर एक क्षणमें नागिनीलोक चला गया। तब विजयशील सोमप्रभके पुत्रने ज्वालाएँ छोड़ते हुए दिशाओंको जलानेवाले अग्निके समान, नागके द्वारा दिये गये बाणसे रथके मुखभाग और धुरा सहित सारथियोंको जलाकर, जिसमें ध्वजसमूह ध्वस्त है, शत्रुओंके धड़ नाच रहे हैं, गृद्धकुल परिभ्रमण कर रहा है, ऐसे भटयुद्धमें प्रवेश कर उसने आठों ही चन्द्रमाओंको तुरन्त बाँध लिया, क्रूर शत्रुओंको सन्त्रस्त करनेवाले नागपाशसे। क्रोधसे लाल चक्रवर्तीके प्रिय पुत्रको पकड़ लिया।

घत्ता—जिणु तायताउ पिउ रायवेइ तो वि णिबंधणु पत्तउ ॥
एंहँ माइ कुमारें[18] णराहिवेण दुक्कियफलु किह भुत्तउ ॥३६॥

३७

एम्व चवंतिहिं सुरवरगणियहिं वण्णिउं जयसाहसु घणथणियहिं ।
घल्लिउ कुसुमपयरु सुरणियरें गाइउं णं रुणुरुणिएं भमरें ।
जयविलासु जयरायहु केरउ दइवहु तणउं चारु विवरेरउ ।
रइणिहियउ कुमारु विच्छायउ करकलियंकुसचोइयणायउ ।
जलहरसरु पइट्ठु ससुरयघरि विजयाणंदु पवड्ढिउ पुरवरि ।
तक्खणि सयल वि परभवतत्तिइ गय जिणभवणहु परमइ भत्तिइ ।
जम्मावासपासविवरंमुहु वंदिउ अरुहु तिजगपुज्जारुहु ।
मिलियणरिंदहिं मउलियपाणिहिं मुहकुहरुग्गयसुललियवाणिहिं ।
बहुमिच्छत्तबीयउप्पण्णउ मोहविसालमूलु वित्थिण्णउ ।
चउगइखंधु सुहासासाहउ पुत्तकलत्तलुलियपारोहउ ।
गहियमुक्कबहुविहतणुपत्तउ पुण्णपावकुसुमेहिं णिउत्तउ ।
सोक्खदुक्खफलसिरिसंपण्णउ इंदियपक्खिउलहिं पडिवण्णउ ।

घत्ता—इय भवतरु झाणहुयासणेण पइं दड्ढउ परमेसर ॥
जिण जम्मि जम्मि महुं तुहुं सरणु जेंय जय जियवम्मीसर ॥३७॥

३८

अक्ककित्तिदुज्जयजयरायहं महु कारणि उब्भाइयघायहं ।
एयहुं मरइ मज्झि जइ एक्कु वि पच्छइ इच्छेइ जइ मइं सक्कु वि ।
तो वि णिवित्ति मज्झु आहारहु लच्छिहि कुच्छियकुणिमसरीरहु ।
इय चिंतंति पुत्ति संभाविय लंबियकर ताएं बोल्लाविय ।
तुह सइ सामत्थें असमंजस रणि उव्वरिय महीस महाजस ।
हूई[2] संति होउ किं झायहि सुंदरि करपल्लव उच्चायहि ।
जणणवयणु णिसुणेवि कुमारिइ णियमु विसज्जिउ कामकिसोरिइ ।
सिरिणाहहु सिरि व्व आवग्गी जयरायहु करपंकइ लग्गी ।
जाइवि पासि कुमारहु णेहें महिणिहित्तदंडासणदेहें ।
जउ [3]साकं पुणु पायहिं पडियउ भासेंइ सामिभत्तिभरणमियउ ।
अम्हइं णर तुहुं णरपरमेसरु अम्हइं पक्खि देव तुहुं सुरतरु ।
अम्हइं णलिणायर तुहुं दिणयरु अम्हइं कुवलयसर तुहुं ससहरु ।
अणुपालियहं काइं रूसिज्जइ अभयपदाणु सभिच्चहं दिज्जइ ।

---

१६. M चक्कवइ । १७. B एवमाइ । १८. K कुमार ।

३७. १. MB °णाइउ । २. MB पवट्टिउ । ३. K° मूल । ४. MB जय णिज्जियवम्मेसर ।

३८. १. MB जइ मइं इच्छइ । २. MB संधि । ३. MB साकंपणु; K सांकंपणु ? । ४. MB भावइ ।
५. M भत्तिभरणडियउ; B °त्तत्तिभरणडियउ ।

घत्ता—जिसके पितामह जिन थे, और पिता राजाओंका स्वामी, तो भी वह बन्धनको प्राप्त हुआ। हे माँ! देखो, कुमार राजाने अपने दुष्कृतका फल किस प्रकार भोगा? ॥३६॥

३७

इस प्रकार कहते हुए घनस्तनोंवाली सुरवनिताओंने जयकुमारके साहसकी प्रशंसा की। देवसमूहने पुष्पोंकी वर्षा की। रुनरुन करते हुए भ्रमरोंने गान किया। जयकुमारका विलास और दैवकी चेष्टा विपरीत होती है। रथमें बैठकर कान्तिवान्, हाथकी अँगुलियोंके अंकुशसे गजको प्रेरित करता हुआ मेघस्वर (जयकुमार) अपने ससुरके घरमें प्रविष्ट हुआ। पुरवरमें विजयका आनन्द बढ़ गया। सभी लोग उसी समय परभवकी तृप्तिसे युक्त परमभक्तिसे जिनभवन गये। जन्म और आवासके बन्धनोंसे मुक्त, त्रिलोककी पूजाके योग्य अर्हन्तकी सभी राजाओंने मिलकर अपने हाथ जोड़कर मुखरूपी कुहरसे निकलती हुई सुन्दर वाणीसे वन्दना की—"बहुमिथ्यात्वके बीजसे उत्पन्न यह विशाल मोहरूपी जड़वाला, (संसाररूपी वृक्ष) विस्तीर्ण, चार गतियोंके स्कन्धोंवाला, सुखकी आशाओंकी शाखाओंवाला, पुत्र-कलत्रोंके सुन्दर प्रारोहोंसे सहित, बहुत प्रकारके शरीररूपी पत्तोंको छोड़ने और ग्रहण करनेवाला, पुण्य-पापरूपी कुसुमोंसे नियोजित, सुख-दुःखरूपी फलोंकी श्रीसे सम्पूर्ण, इन्द्रियरूपी पक्षिकुलोंके द्वारा आश्रित।

घत्ता—इस प्रकारके संसाररूपी वृक्षको आपने ध्यानरूपी अग्निके द्वारा भस्म कर दिया है ऐसे हे जिन, जन्म-जन्ममें तुम मेरी शरण हो, कामदेवको जीतनेवाले आपकी जय हो" ॥३७॥

३८

'मेरे कारण आघात करनेवाले अर्ककीर्ति और दुर्जेय जयकुमार इन दोनोंमें-से यदि एक भी मरता है, और उसके बाद यदि इन्द्र भी मुझे चाहता है तो भी मेरी आहार, लक्ष्मी और कुत्सित कुणिम शरीरसे निवृत्ति।' इस प्रकार सोचती हुई, कायोत्सर्गमें स्थित पुत्रीको पिताने पुकारा, "हे सती, तुम्हारी सामर्थ्यसे क्रोधसे भरे हुए दोनों महायशस्वी राजा युद्धसे बच गये। शान्ति हो गयी। अब तुम क्या ध्यान करती हो, हे सुन्दरी! करपल्लव ऊँचा करो।" अपने पिताके वचन सुनकर कुमारी कामकिशोरीने अपना विनय समाप्त कर दिया। वह जयकुमारके हाथसे उसी प्रकार जा लगी, जिस प्रकार विष्णुसे श्री जा लगती है। कुमारके पास स्नेहसे आकर और धरतीपर दण्डासनसे देहको धारण करते हुए, पैरोंपर पड़ते हुए स्वामीकी भक्तिसे भरकर अकम्पन कहता है, "हम लोग मनुष्य हैं, आप परमेश्वर हैं। हम लोग पक्षी हैं, आप कल्पवृक्ष हैं। हम लोग कमलोंके आकर हैं, आप दिवाकर हैं। हम कुमुदोंके सरोवर हैं, आप चन्द्रमा हैं। अपने अनुपालितोंसे क्या रूठना, अपने भृत्योंको अभयदान दीजिए।"

घत्ता—इय वयणहिं सो भरहंगरुहु मच्छरु माणु मुआविउ ॥
लच्छीमइयहिणिसुलोयणहे पुप्फयंतु परिणाविउ ॥३६॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए महाभव्वभरहाणुमण्णिए
महाकव्वे सुलोयणासयंवरविवाहो णाम अट्ठावीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ २८ ॥

संधि ॥ २८ ॥

---

६. MB वयणे ।

घत्ता—इन शब्दोंके द्वारा उसने भरतके पुत्र अर्ककीर्तिका मत्सर और मान दूर कर दिया तथा सुलोचनाकी बहन लक्ष्मीवतीसे उसका विवाह कर दिया।

इस प्रकार त्रेसठ महापुरुषोंके गुणालंकारोंसे युक्त इस महापुराणमें महाकवि पुष्पदन्त द्वारा
विरचित एवं महाभव्य भरत द्वारा अनुमत इस काव्यका सुलोचना स्वयंवर
वर्णन नामका अट्ठाईसवाँ अध्याय समाप्त हुआ ॥२८॥

संधि २९

जे रुद्धा संगरि [1]बद्धा ते णिव मेल्लिवि पुज्जिय ॥
पियवयणहिं वत्थाहरणहिं णियणियपु[2]रहं विसज्जिय ॥ ध्रुवकं ॥

१

किह हउं संपत्तउ बंधणारु जा सोयइ अप्पउ णिवकुमारु ।
ता पभणिउं तेणाकंपणेण जिणचरणलीणणिच्चलमणेण ।
तुहुं बद्धउ णं णिववंसि चिंधु तुहुं बद्धउ णं [3]सुयणोहबंधु ।
तुहुं बद्धउ णं मायंगदंतु तुहुं बद्धउ णं स[4]रहलु महंतु ।
तुहुं बद्धउ णं सासेण बीउ तुहुं बद्धउ णं पुण्णेण जीउ ।
तुहुं बद्धउ णं सिरिमणिविलासु तुहुं बद्धउ णं सुकहाविसेसु ।
हेलइ जएण जयराइएण तुहुं बद्धउ णं रस[5]वाइएण ।
इयरहं कि अम्हहं सहलु होसि अण्णाएं दू[6]सिउ खयहु जासि ।
इय भणिवि तेण कयदेहदित्ति णियपुरहु विसं[7]ज्जिउ अक्ककित्ति ।
घत्ता—घरु जाइवि लज्ज पमाइवि सिरु पयजुयलइ ढोइउं[8] ॥
तें भरहहु अरिहरिसरहहु कह व कह व मुहुं जोइउं[9] ॥१॥

२

लज्जंतु वि ताएं सो पउत्तु व[1]रं गलउ गब्भु मा होउ पुत्तु ।
वसणेसु रमइ खलवय[2]णु सुणइ अविवेयभाउ सयणाइं हणइ ।
जो एहउ सो व[3]रं कहिं वि जाउ मा करउ पयहिं परिय[4]णहु ताउ ।

MB give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza :—

णाहन्दसुरिन्दणरिन्दवन्दिया जणियजणमणाणन्दा ।
सिरिकुसुमदसणकइमुहणिवासिणी जयइ वाईसी ॥१॥
तन्त्रीवाद्यैरनिन्द्यैर्वरकविरचितैर्गद्यपद्यैरनेकैः
कान्तं कुन्दावदातं दिशि दिशि च यशो यस्य गीतं सुरौघैः ।
काले तृष्णाकराले कलिमलमलितेऽप्यहो विद्याप्रियो यः
सोऽयं संसारसारः प्रियसखि भरतो भाति भूमण्डलेऽस्मिन् ॥२॥

GK do not give the stanzas here but at the commencement of Samdhi XXX. See note on Samdhi XXX.

१. १. B बुद्दा । २. MB पुरहु । ३. MB सुहिणेहबंधु । ४. M सरयण्णु; BT सरयलु । ५. MBK रसु वाइएण । ६. MB बद्धउ । ७. M विसज्जिय । ८. MB ढोइयउ । ९. MB जोइयउ ।

२. १. MB वरु । २. MB °वयण । ३. M किर । ४. G परिणयहु ।

सन्धि २९

जो युद्धमें अवरुद्ध थे और बाँध लिये गये थे उन राजाओंको मुक्त कर उनका प्रिय वचनों और वस्त्राभरणोंसे सम्मान किया गया और उन्हें अपने-अपने घरके लिए विसर्जित किया गया।

१

जब कुमार अर्ककीर्ति यह सोचता है कि मैं बन्धनको प्राप्त क्यों हुआ? तब जिन-चरणमें लीन और निश्चल मनवाला राजा अकम्पन कहता है—"तुम बाँधे गये मानो राजवंशमें पताका बँध गयी, तुम बाँधे गये मानो स्वजन समूह बँध गया, तुम बाँधे गये मानो गजदन्त बाँध दिया गया, तुम बाँधे गये मानो तीरका महान् फलक बाँध दिया गया, तुम बाँधे गये मानो धान्यसे बीज बँध गया, तुम बाँधे गये मानो पुण्यसे जीव बँध गया, तुम बाँधे गये मानो सिरपर मणि-विलास बाँध दिया गया, तुम बाँध दिये गये मानो सुकथा विशेष निबद्ध कर दी गयी। खेल-खेलमें जय और जयराजाने तुम्हें बाँध लिया मानो रसवदीने (धातुवादीने) रसको बाँध लिया हो। दूसरोंकी बात छोड़िए, हम लोगोंके लिए तुम सफल होगे। अन्यायसे दूषित व्यक्ति क्षयको प्राप्त होता है।" इस प्रकार कहकर उसके शरीरकी दीप्ति बढ़ाकर अर्ककीर्तिको अपने घरके लिए विसर्जित किया।

घत्ता—घर जाकर लज्जा छोड़कर उसने अपना सिर (पिताके) चरणयुगलपर रख दिया तथा शत्रुरूपी सिंहके लिए श्वापदके समान भरतका मुख किसी प्रकार बड़ी कठिनाईसे देखा ॥१॥

२

लज्जित होते हुए भी पिताने उससे कहा कि "गर्भ गिर जाना अच्छा परन्तु ऐसा पुत्र न हो कि जो व्यसनोंमें रमता है, दुष्टोंके वचन सुनता है, अविवेकशील होता है और स्वजनोंको

महु चरपुरिसहिं दुइंतदुरिउ एयहु केरउ वज्जरिउं चरिउं ।
होएँण सुंदुण्णयगारएण ता चिंतिउ तेण कुमारएण ।
गुरुकोवें सिसु जाणंति मग्गु गुरुकोवें जँगि सिज्झइ तिवग्गु ।
गुरुकोवें को वि ण खयहु जाइ गुरुकोवें संपय घरहु एइ ।
गुरुवयणइं कडुयइं जाइं जाइं परिणामि सुपत्थइं ताइं ताइं ।
लग्गाइं ण सुइसुसिरंति जाहं जिम परिहउ तिम धुउ मरणु ताहं ।
लइ दिज्जमि हउं दिट्ठंतु एत्थु लंघियउ जेण गुरुसुयपयत्थु ।

घत्ता—जयवंतें सुप्पहकंतें तो पेसिउ गुणवंतउ ॥
आवेप्पिणु पहु पणवेप्पिणु पभणइ सुमइमहंतउ ॥२॥

३

भो देव कसणसियतंबिराइं लइ रयणइं लइ पवरंबराइं ।
किं तुह णवणिहिवइ पाहुडेण किं किर जलहिहि पाणियघडेण ।
लइ भत्तितो वि णियकिंकराहं तुह पायपोमलालियसिराहं ।
जयविजयाकंपणपत्थिवाहं विण्णविउ णिसुणि णिव अवणिवाहं
पहिलउ जि दोसु दीहरसुयासु जं दिण्णी सुय णउ तुह सुयासु ।
बीयउ जं कोकिउ वरणिहाउ दावियउ सयंवरविहिणिओउ ।
तइयउ जं जइ णिक्खित्त माल रइलालस लग्गी तासु बाल ।
परघरिणि हरंतहु रोसणडिय चोत्थउ तुह तणयहु समरि भिडिय ।
पंचमउ दोसु बद्धउ कुमारु णिउ णियणयरहु रणरंगवीरु ।
इय दोहा दोसपरंपराइं जं ण वि मुवहुं अज्ज वि घराइं ।
तं देव पइट्ठा तुज्झु सरणु किं दंडु एत्थु सव्वस्सहरणु ।
किं मारणु किं भणु किं[3] किलेसु तं णिसुणिवि जंपइ मेहणीसु ।
हो हउं पडिवज्जमि कासिराउ पवसियइ ताइ महु सो जि ताउ ।
जउँ पुणुँ महु दाहिणु बाहुदंडु जं सो तं चक्कु ण वज्जु[6] दंडु ।
उँवयरइ बप्प संगामकालि उल्ललियगिद्धखद्धंतमालि ।

घत्ता—बलगव्वें रोसें तिव्वें जो जणवउ संघट्टइ ॥
सुउ दंडवि सो सइं खंडवि जो उप्पहिण पयट्टइ ॥३॥

४

इय कहिवि तेण पट्ठविउ मंति गउ सो घोसइ णियपहुहि संति ।
णरवइ मण्णइ पइं पिउसमाणु जय विजय बे वि रिउतिमिरभाणु ।
महु अवर बिण्णि भुयदंड भणइ तुम्हारउ माणुसु सुट्ठु गणइ ।

५. B जाएण । ६. K सदुण्णय° । ७. मुवु सिज्झइ ।
३. १. MB °णिहाउ । २. K रणरंगधीरु । ३. MB तणुकिलेसु । ४. B जमु । ५. MB महु पुणु ।
६. MBK वज्जदंडु । ७. M उवरइ ।
४. १. G माणु सुट्ठु ।

मारता है जो ऐसा है वह कहीं भी चला जाये। यह अच्छा है, वह प्रजा और परिजनोंको ताप न दे, मेरे चरपुरुषोंने इसका दुर्दान्त पापमय चरित मुझसे कहा है।" अत्यन्त दुर्नयकारक होते हुए उस कुमारने अपने मनमें विचार किया कि पिताके कोपसे बच्चे मार्ग जानते हैं, पिताके कोपसे विश्वमें त्रिवर्ग सिद्ध होता है। पिताके कोपसे कोई भी क्षयको प्राप्त नहीं होता। पिताके कोपसे सम्पत्ति घर आती है। पिताके वचन जितने-जितने कड़ुए होते हैं वे परिणाममें उतने ही उतने प्रशस्त होते हैं। ये वचन जिसके कर्णकुहरोंमें नहीं जाते उनका जैसा पराभव होता है वैसा ही निश्चयसे मरण होता है। लो, मैं स्वयं दृष्टान्त रूपमें उपस्थित हूँ कि जिसने पितासे सुने पदार्थका उल्लंघन किया।

घत्ता—जयशील सुप्रभाके पति काशीराज अकम्पनके द्वारा प्रेषित गुणवान् मन्त्री सुमति आकर और प्रणाम कर राजासे कहता है ॥२॥

३

"हे देव, कृष्ण-धवल और लाल रत्न तथा प्रवर वस्त्र ग्रहण करें। हे नवनिधियोंके स्वामी तुम्हें उपहारोंसे क्या? जलके घड़ोंसे समुद्रको क्या करना? तो भी भक्तिसे तुम्हारे चरणकमलोंमें अपना सिर रखनेवाले, अपने ही अनुचर जय-विजय और अकम्पनादि राजाओंने जो निवेदन किया है, उसे हे देव, सुनिए। उनका पहला दोष तो यह है कि दीर्घबाहुवाले तुम्हारे पुत्रको अपनी कन्या नहीं दी, दूसरा दोष यह है कि वरसमूहको आमन्त्रित किया और स्वयंवर विधि नियोगका प्रदर्शन किया, तीसरा दोष है कि प्रेमकी इच्छा रखनेवाली बाला उससे (जयकुमारसे) लग गयी और उसके गलेमें माला डाल दी। चौथा दोष यह है कि परस्त्रीका अपहरण करते हुए तुम्हारे पुत्रसे युद्धमें लड़ा। पाँचवाँ दोष यह है कि कुमारको बाँध लिया और युद्ध रंगमंचके उस वीरको अपने नगर ले आया। यह मुझ द्रोहीकी दोष-परम्परा है कि जिससे मैं आज भी घर नहीं छोड़ता। हे देव, अब मैं तुम्हारी शरणमें आया हूँ, क्या इसका दण्ड सर्वस्व अपहरण है? क्या मृत्यु, बताइए क्या दण्ड है?" यह सुनकर राजा भरत उत्तर देता है—"हे काशीराज, मैं कहता हूँ कि पिताके—ऋषभनाथके संन्यास ले लेनेपर वही मेरे पिता हैं। जयकुमार मेरा दायाँ बाहुदण्ड है और जय-कुमार बायाँ बाहुदण्ड है। वह जो है वह न चक्र है और न वज्रदण्ड है। जिसमें झपटते हुए गीधों-के द्वारा आँतोंकी माला खायी जा रही है ऐसे युद्धके समय जो उपकार करता है।

घत्ता—जो बल घमण्ड और तीव्र क्रोधसे जनपदको पीड़ित करता है और जो खोटे मार्गसे जाता है ऐसे पुत्रको मैं खण्डित और दण्डित करता हूँ" ॥३॥

४

यह कहकर भरतने मन्त्रीको भेज दिया। वह गया। वह अपने स्वामीसे शान्ति घोषित करता है कि राजा तुम्हें पिताके समान मानता है और जो जय-विजय दोनों शत्रुरूपी अन्धकार-

रूसइ सदोसि गुणवंति मइँइ   को भरहहु केरी लील वहँइ ।
चंगउ किउँ पुत्तहु दप्पसाडु   जं कण्ण देवि विरइयउ चाडु ।
तं मज्झु णिरारिउ डहइ अंगु   णउ किज्जइ खलि संमाणसंगु ।
ता जयकंपण हरिसियसुधाम   कुरुवंसणाह वंसाहिराम ।
धरणिहियमंतिअप्पाहिएण   दुज्जयचिलायसप्पाहिएण ।
अणवरयणवियजिणवरपएण   अणुहुंजियणरवइसंपएण ।
अण्णहिं दिणि आणंदियजएण   आउच्छिउ णियससुरउ जएण ।

घत्ता—तुह गोट्ठिहि जिणवरदिट्ठिहि माम विरइ किं किज्जइ ॥
अविणम्में तो वि सकम्में जीउ णियइ्ढिवि णिज्जइ ॥४॥

५

को विसहइ सुहिविच्छोयताउ   परियाणवि कज्जविय़प्पभाउ ।
उन्मुक्कु सुयावरु ससुरएण   तें जंतें हरिखुरखयरएण ।
णहु पिहिउ गिल्ल महि करिमएण   चलवलिउ खलिउ धयवडु धएण ।
कय जलहिवलय चलवलियणीर   थिए विसहर भरभयदलिय धीरें ।
उट्ठिय गहीर भेरीणिणाय   आकंपिय कुकुहणिवास णाय ।
गच्छंतु संतु सो समियसत्तु   दियहहिं गंगाणइतीरें पत्तु ।
णियणियदूसावासहिं सउण्ण   हेमंगयाइ सयल वि णिसण्ण ।
पडकुडिहि महामहु सुरसमाणु   थिउ राणउ गंग पलोयमाणु ।

घत्ता—सविहंगहि दिट्ठइं गंगहि छणससिरविपडिबिंबइं ॥
णं वेल्लिहि अमरसुहेल्लिहि कुसुमइं पंडुरतंबइं ॥५॥

६

आमेल्लिवि खंधावारु तेत्थु   कइवयभडेहिं सह महिमहत्थु ।
साकेयहु जाइवि भुवणसारि   थिउ पंजलियरु णरवइदुवारि ।
पडिहारें पइसारिउ दवट्टि   विण्णविउ णवेप्पिणु चक्कवट्टि ।
विसहरणरखेयरविहियसेव   जउ पणवइ पत्तहि पेक्खु देव ।
ता दिण्ण दिट्ठि णाहें विसाल   ससिवियसिय णं कंदोट्टमाल ।
पसरंतपणयरससायरेण   मुहुं जोइवि सइं परमेसरेण ।
णं कलियइ णेहमहीरुहासु   अंगुलियइ दाविउ पीढु तासु ।
उवविट्ठु तुट्ठु संमाणु कियउ   पोरिसु परमुण्णइं सेहहि णियउ ।
णउ जलणहु पासिउ अवरु उण्हु   परमाणुयाउ णउ अवरु सण्हु ।

२. MB रमइ । ३. MB गमइ । ४. MB पुत्तहु किउ । ५. M °वरदिट्ठहे ।

५. १. B कज्जु । २. MB add after this : पडिबोहिउ गुहमण्णें वरेण । ३. MB add after this: पडिपेल्लिउ संदणु संदणेण । ४. M भयभर°; B पयभर° । ५. MB धीर । ६. MBK कुकुहणिवासि । ७. MB °तीरु ।

६. १. MB सुदट्ठु । २. MB सयहि ।

के लिए सूर्यके समान हैं, वे मेरे दूसरे भुजदण्ड हैं, वह (भरत) यह कहता है। तुम्हारे व्यक्तित्व-को बहुत सम्मान देता है। दोषीपर क्रुद्ध होता है, गुणीका आदर करता है। भरतकी लीलाको कौन धारण कर सकता है। तुमने पुत्रका अच्छा दर्पनाश किया? लेकिन जो कन्या (अक्षयमाला) देकर उससे प्रेम जताया है वह मेरे शरीरको अत्यन्त जला रहा है। दुष्टके साथ सम्मान और संग नहीं करना चाहिए। इसपर कुरुवंश और नाथवंशके सुन्दर सुधाम जय और अकम्पन प्रसन्न हो गये। तब गृहिणी मन्त्री और अपना हित करनेवाले दुर्जेय चिलात और सर्पका अहित करनेवाले, जिनवरके चरणोंमें अनवरत प्रणाम करनेवाले, राजाकी सम्पतिका भोग करनेवाले एवं जयसे आनन्दित जयकुमारने एक दूसरे दिन अपने ससुरसे पूछा :

घत्ता—हे ससुर, तुम्हारी गोष्ठी और जिनवरकी दृष्टिसे विरति कैसे की जा सकती है? तो भी अविनीत स्वकर्मके द्वारा जीव बलपूर्वक खींचकर ले जाया जाता है ॥४॥

५

सुधीजनके वियोग सन्तापको कौन सहन करता है? फिर भी कार्यके विकल्प भावको जानकर ससुरने पुत्री और वरको विदा कर दिया। उनके जाते हुए घोड़ोंके खुरोंसे आहत धूलने आकाश ढक दिया। गजोंके मदजलसे धरती गीली हो गयी। वेगसे ध्वजपट चंचल स्खलित हो गये। समुद्रमण्डलका जल चंचल हो उठा। धीर विषधर भारके भयसे दलित हो गये। नगाड़ोंका गम्भीर शब्द हो उठा। दिशाओंमें निवास करनेवाले गज काँप उठे। शत्रुओंको शान्त करनेवाला वह जाते-जाते कुछ ही दिनोंमें गंगानदीके किनारे पहुँचा। अपने-अपने तम्बुओंके आवासोंसे सम्पूर्ण हेमांगदादि राजा सभी ठहर गये। वस्त्रके तम्बूकी कुटीमें महावरणीय, देवके समान वह राना गंगाको देखता हुआ स्थित हो गया।

घत्ता—लहरोंसे युक्त गंगामें पूर्णचन्द्र और सूर्यके प्रतिबिम्ब ऐसे दिखाई दिये, मानो भ्रमरोंको सुख देनेवाली लताके सफेद और लाल फूल हों।

६

अपनी छावनीको वहीं छोड़कर, भूमिमें महान् वह अपने कुछ सुभटोंके साथ साकेत जाकर, भुवनमें श्रेष्ठ राजा (भरत) के द्वारपर हाथ जोड़कर स्थित हो गया। प्रतिहारने उसे शीघ्र प्रवेश दिया और चक्रवर्तीको प्रणाम कर उसने निवेदन किया, "विषधर नर और विद्याधरों-से सेवित हे देव, देखिए यहाँ जय प्रणाम करता है।" तब उसने अपनी विशाल दृष्टि उसपर डाली मानो चन्द्रमाके विकसित नीलकमलकी माला हो। प्रसरित हो रहा है प्रणय रसका सागर जिसमें ऐसे राजाने स्वयं मुख देखकर, मानो स्नेह महावृक्षकी कलीके समान अपनी अंगुलीसे उसे पीठा-सन बताया। तुष्ट होकर वह बैठ गया। राजाने उसका सम्मान किया। सभामें उसका पौरुष

गयणंगणाउ णउ अवरु गरुउ कामाउराउ णउ अवरु सरुउ ।
जिणु मेल्लिवि को तेलोक्कसामि पइं मेल्लिवि को सुहडग्गगामि ।
घत्ता—जो दुक्खिउ सो परिरक्खिउ जं दुल्लहु तं लद्धउं ॥
पइं होंतें रणि पहरंतें जय महुं काई ण सिद्धउं ॥६॥

७

इय भणिवि विसज्जिउ जउ महंतु राएं गउ णियसिमिरहु तुरंतु ।
चडियउ वेयड्ढमहाकरिंदि णं दिणयरु उययमहीहरिंदि ।
चमु चोलिय पुणु दिण्णउ पयाणु पत्तउ सुरसरिजलमज्झठाणु ।
जोयवि गंगहि सारसहं जुयलु जोयइ कंतहि थणकलसजुयलु ।
जोयवि गंगहि सुललियतरंग जोयइ कंतहि तिवलीतरंग ।
जोइवि गंगहि आवत्तभवणु जोयइ कंतहि वरणाहिरमणु ।
जोयवि गंगहि पप्फुल्लकमलु जोयइ कंतहि पिउ वयणकमलु ।
जोइवि गंगहि वियरंत मच्छ जोयइ कंतहि चलदीहरच्छ ।
जोइवि गंगहि मोत्तियहु पंति जोयइ कंतहि सियदसणपंति ।
जोइवि गंगहि मत्तालिमाल जोयइ कंतहि धम्मेल्ल णील ।
घत्ता—णियगेहिणि वम्महवाहिणि देवि सुलोयण जेही ॥
मंदाइणि जणसुहदाइणि दीसइ राएं तेही ॥७॥

८

आहंडलमयगलसरिसलीलु तहि अवसरि मेयहें धरिउ पीलु ।
सहुं बहुचरेण पयलंतदाणु बहुजलविलंति वोलिज्जमाणु ।
देहि पियदुहकयअवलोयणाइ अप्पाणउं घित्तु सुलोयणाइ ।
आलग्गपुच्छकच्छंतरालि हाहारववड्ढियगरुयरोलि ।
अवलोइवि रइओहामियक्क हेमंगयपमुह कुमार ढुक्क ।
एत्थंतरि थरहरियासणाइ देवंगवत्थसुहणिवसणाइ ।
वणदेविइ वारियवइरिणीइ करि कड्ढिउ सुरसरितीरिणीइ ।
णं धणसंपत्तिइ कामभोउ उद्धरिउ अहिंसइ णं तिलोउ ।
णिविसद्धें णिउ सुरसरिहि तूहु हरिसें णच्चिउ किंकरसमूहु ।
रणि वणि जलि जलणि समाइएण रक्खिज्जइ पुरिसु पुराइएण ।

३. M दुत्थियउ । ४. MB पडिरक्खिउ । ५. M दुलहउ; B दुलद्धु ।
७. १. MB °सिविरहु । २. MB चलिय पुणु वि दिण्णउं । ३. MB जोइउ । ४. MB जोइवि । ५. MB आवत्तु भवणु । ६. B णं सुहदाइणि ।
८. १. MB हारें । २. M पलयंत° । ३. MB read this line as 5. ४. MB read this line as 3. ५. MB °णियसणाइ । ६. MB तीरिणोइ । ७. GK णिवसद्धें but gloss निमेषार्धं: ।

परम उन्नतिको प्राप्त हुआ। आगकी तुलनामें कोई दूसरा उष्ण नहीं है। परमाणुसे अधिक दूसरा सूक्ष्म नहीं है। आकाशके आँगनसे अधिक महान् दूसरा नहीं है। कामातुरके समान दूसरा कोई संगी नहीं है। जिनको छोड़कर कौन त्रिलोकस्वामी हो सकता है? तुम्हें छोड़कर सुभटोंमें अग्रगामी कौन है?

घत्ता—जो दुःखित था उसकी परिरक्षा कर दी गयी। जो दुर्लभ था उसे पा लिया। तुम्हारे रहते ओर युद्धमें प्रहार करते हुए हे जय! मुझे क्या सिद्ध नहीं हुआ? ॥६॥

७

यह कहकर राजाने महान् जयकुमारको विसर्जित कर दिया। वह तुरन्त अपने शिविरमें गया। वह विजयार्ध महागजेन्द्रपर आरूढ़ हुआ मानो दिनकर उदयाचलपर आरूढ़ हुआ हो। सेना चल पड़ी। उसने प्रस्थान किया। वह गंगाके जलके मध्यभागमें पहुँचा। वह गंगाकी सारस जोड़ीको देखकर, कान्ताके स्तनरूपी कलशयुगलको देखता है। गंगाकी सुन्दर तरंगको देखकर, अपनी कान्ताकी त्रिबलि तरंगको देखता है। गंगाके आवर्त भँवरको देखकर, कान्ताकी श्रेष्ठ नाभिरमणको देखता है। गंगाका खिला हुआ कमल देखकर, प्रिय कान्ताका मुखकमल देखता है। गंगाके विचरते हुए मत्स्य देखकर, कान्ताकी चंचल लम्बी आँखोंको देखता है। गंगाकी मोतियोंकी पंक्ति देखकर, वह कान्ताकी श्वेत दशनपंक्ति देखता है। गंगाकी मत्त अलिमाला देखकर, कान्ताकी नीली चोटी देखता है।

घत्ता—जब सुख देनेवाली मन्दाकिनी (गंगा) राजाको वैसे ही दिखाई दी जैसी अपनी गृहिणी कामकी नदी सुलोचना ॥७॥

८

उस अवसरपर इन्द्रके ऐरावतके समान लीलावाले उसके हाथीको मगरने पकड़ लिया। प्रगलित है मदजल जिससे ऐसा वह गज वधूवरके साथ, अत्यधिक जलके आवर्तवाले ह्रदमें जाने लगा। प्रियके दुःखको देखनेवाली सुलोचना जोरसे 'हा' की आवाज की। उसकी (गजकी) पूँछ कक्षाके मध्य लगनेपर, तथा हा-हा शब्दका कोलाहल बढ़नेपर, अपनी कान्तिसे सूर्यको परास्त करनेवाले हेमांगद प्रमुख कुमार यह देखकर वहाँ पहुँचे। इसी बीच, जिसका आसन काँप गया है, तथा जो देवांग वस्त्रोंसे पवित्र निवासमें रहनेवाली है, ऐसी शत्रुका विनाश करनेवाली वनदेवीने गजको गंगाके किनारेपर ऐसे खींचा, मानो धनसम्पत्तिने कामदेवको खींचा हो, मानो अहिंसाने त्रिलोकका उद्धार किया हो। आधे पलमें वह सुरसरिके तटपर ले जाया गया। किंकर समूह आनन्दसे नाच उठा। रण-वन-जल और आगमें पड़नेपर पुरुषको पूर्वार्जित कर्म ही बचाता है।

घत्ता—वेढविउ घरु मणिणिम्मिउ चारुतीरि सुयसेविए ॥
हरिऊढइ थविवि सुपीढइ ण्हविय सुलोयण देविए ॥८॥

९

दिण्णइं सुरजोग्गइं णिवसणाइं दिण्णइं अण्णेण्णइं[1] भूसणाइं ।
दिण्णी वियसिय मंदारमाल सइ[2] णरवरेण विंभइय बाल ।
पभणइ का तुहुं करि केण धरिउ किं तारिय[3] सरि सो कवणु तरिउ ।
भणु भणु सुरसुंदरि सुयणवंदि ता भणइ सा वि हिंडियपुलिंदि ।
विंझउरिकडइ विंझइरि अत्थि पइ विंझकेउ बलकलियहत्थि ।
महएवि पियंगुसिरी सुरूय हउं विंझसिरी णामेण धूय ।
परियाणवि ताएं तुह पहाउ सिक्खहुं णीसेसु कलाकलाउ ।
हउं तुज्झु समप्पिय हे वयंसि संभरसि ण कीलहुं जं गयासि ।
णंदणवणि विउलि वसंततिलइ हउं दट्ठी सप्पें वेल्लिणिलइ ।
असिआउसाइं वंजणविसिट्ठ पइं परम मंत महु पंच सिट्ठ ।
घत्ता—ते णिसुणिवि दुक्किउ णिहुणिवि एही लद्ध विहूई ॥
सुरणीडइ गंगाकूडइ गंगादेवय हूई ॥९॥

१०

कीलंती कुच्छियविसहरेण सह सरसें णाहें णिब्भरेण ।
जा पहय सरलदलकोमलेण तुह कंतें कररत्तुप्पलेण ।
जा णासंती अवरहिं णरेहिं मुसुमूरिय दंडहिं पत्थरेहिं ।
सा हूई णिसुणहि हलि पियालि जलदेवय णामें एत्थु कालि ।
ओलक्खिवि जउ वइराणिबंधु पवणंदोलणघोलंतचिंधु ।
मयरीइ हवेप्पिणु कूरिमाइ कुंजरु कड्ढिउ कुद्धाइ ताइ ।
मइं जाणिउं आसणकंपणेण जा जणिय मयच्छि अकंपणेण ।
सा किं हम्मइ खलकालियाइ मुणिमइ किं छिप्पइ कालियाइ ।
इय चिंतिवि हउं अवयरिय जाम वइरिणि गय णासिवि कहिं वि ताम ।
मइं उत्तारिउ सिंधुरु बलेण तुह हूयउ सुहु सुकियफलेण ।
घत्ता—भलु तुट्टइ बुद्धि पयट्टइ दिस वसुधारहिं दुब्भइ ॥
रिउ णासइ णिहि घरि णइसइ धम्में काइं ण लब्भइ ॥१०॥

---

८. MB सुयसेविए ।
९. १. B अण्णइं । २. MB सइं । ३. MB तारिउ । ४. MB विंझइरि° । ५. MB संभरिसि ।
१०. १. MB णिसुणहि हूई । २. MB कोमेण ।

घत्ता—श्रीसे सेवित सुन्दर तीरपर मणिनिर्मित घर बनाया गया। देवीने सिंहासनपर स्थापित कर सुलोचनाको स्नान कराया ॥८॥

९

देवताओंके योग्य उसे वस्त्र दिये गये। और भी दूसरे-दूसरे आभूषण दिये गये। खिली हुई मन्दारमाला दी। अपने नरवर (जय) के साथ वह बाला विस्मयमें पड़ गयी। वह बोली—"तुम कौन हो ? और गजको किसने पकड़ा था ? नदी कैसे पार हुई ? तारनेवाला कौन था ? सज्जनोंसे वन्दनीय हे सुरसुन्दरी, तुम बताओ बताओ ?" तब वह भी बताने लगती है—"जिसमें शबर घूमते हैं, ऐसे विन्ध्याचलके निकट विन्ध्यपुरी नगरी है उसका राजा विन्ध्यकेतु था, जो अपनी शक्तिसे हाथीको वशमें करनेवाला था। उसकी सुन्दर महादेवी प्रियंगुश्री थी। मैं उसकी विन्ध्यश्री नामकी पुत्री थी। पिताने तुम्हारा प्रभाव जानकर और समस्त कला-कलाप सीखनेके लिए हे सखी, मुझे तुम्हें सौंप दिया। क्या तुम याद नहीं कर रही हो कि जब हम क्रीड़ा करनेके लिए गये हुए थे, विशाल वसन्ततिलक नन्दनवनके एक लताघरमें मैं साँपके द्वारा डँस ली गयी थी। तब तुमने 'अ सि आ उ सा' आदि व्यंजनोंसे विशिष्ट पंच परमेष्ठीका पंचणमोकार मन्त्र मुझसे कहा था।

घत्ता—उन अक्षरोंको सुनकर और पापको नष्ट कर मैंने यह विभूति प्राप्त की। देवताओंके घर गंगाकूटमें गंगादेवी हुई ॥९॥

१०

पूर्व अपने सरस, कुत्सित विषधररूपी पतिके साथ क्रीड़ा करती हुई जिस नागिनको, तुम्हारे पतिने सरलपत्तोंसे कोमल, हाथके लीलारक्त कमलसे आहत किया था, और जो दूसरे मनुष्योंके द्वारा दण्डों और पत्थरोंसे कुचली जाकर मृत्युको प्राप्त हुई थी, हे प्रिय सखी सुनो, वह कालीके नामसे यहाँ जलदेवता हुई। पवनके आन्दोलनसे हिल रहे हैं चिह्न जिसके ऐसे तथा बैरका अनुबन्ध करनेवाले जयकुमारको देखकर, क्रूर मगरी बनकर, क्रुद्ध उसने गजको खींचा। आसन काँपनेसे मैंने जान लिया कि जो मृगनयनी अकम्पन राजासे उत्पन्न हुई है वह दुष्टा काली-के द्वारा क्यों मारी जाये ? पापवृत्तिके द्वारा मुनिमतिका स्पर्श क्यों किया जाये ? यह विचार कर जब मैं यहाँ अवतरित हुई तबतक वह दुश्मन भागकर कहीं भी चली गयी। मैंने शक्तिसे गजका उद्धार किया, और तुम्हें अपने पुण्यके फलसे यह सुख प्राप्त हुआ।

घत्ता—मल (पाप) दूर होता है, बुद्धि प्रवर्तित होती है, धन-धाराओंसे दिशा बुही जाती है, शत्रु नाशको प्राप्त होता है, निधि घरमें प्रवेश करती है। धर्मसे क्या नहीं प्राप्त किया जा सकता ? ॥१०॥

११

इय थुणिवि सुलोयण चंदहासु   गय गंगादेवय णियणिवासु।
पुणु चोइवि वारणु णं गिरिंदु   गउ गयउरु पत्तउ जयणरिंदु।
बहुकालपरिट्ठिय सुहिण जाव   सत्तंगु रज्जु पालंतु ताव।
बहुपेम्मसोक्खसंजोयणाइ   एक्कहिं दिणि समउ सुलोयणाइ।
अच्छइ अत्थाणि णिसण्णु जाम   णहि खयरमिहुणु तें दिट्ठु ताम।
हा देवि पहावइ कहिं भणंतु   मुच्छिउ पहु जम्मंतर[2] सरंतु।
हा णाह णाह विलवंतियाहिं   कुलवत्तिय[3]पणियाइयतियाहिं।
सिंचिउ चंदणमीसियजलेण   आसासिउ चलचमराणिलेण।
पारावयमिहुणालोयणेण   मुंच्छिय[4] पिय पणयासायणेण।
हा रइवर हा रइवर रसंति   उट्ठिय पुणरवि सा णीससंति।
पारावइ हउं रइविसेण[5] आसि   चिरभवकुलवत्ती तुज्झु दासि।
तुहुं रइवरु पारावउ ण भंति   लग्गी पियगीयहि[6] इय भणंति।
घत्ता—कहिं णिवघरु कहिं सो रइवरु कवडें वल्लहु किज्जइ॥
जयपत्तिहि भणिउं सवत्तिहि कइयवेण जणु खज्जइ॥११॥

१२

सोमप्पहपुत्तें णायरेण[1]   जणमणसंसयहरणायरेण।
जाणंतेण वि सुहभोयणेण   पुच्छिय पिय अवहिविलोयणेण।
पुच्छंतहु कंतहु सुहरु चित्तु   वज्जरइ सुलोयण णियचरित्तु।
इह जंबुदीवि सुरदिसिविदेहि   पुक्खलवइविसइ विलासगेहि[2]।
वेयड्ढमहीहरणियडदेसि   तहिं धण्णयमालवणंतवासि।
सोहापुरवरि वयँपालु[3] राउ   देवसिरिदेविसंजणियराउ।
तहु वंदियपयपंकरुहरेणु   सामंतु पसिद्धउ सत्तिसेणु।
अँडइसिरि[4]घरिणिआलिंगियंगु   रेहइ णं रइभूसिउ अणंगु।
हिंडंतु कहिं मि लक्खणपसत्थु   णवरेक्कु बालु संपत्तु तेत्थु।
सामंतें पुच्छिउ भणु कुमार   तुहुं कासु पुत्तु सुसरीरमार।
किं किर चियरहि महि सेसवेण   तं वयणु सुणेप्पिणु भणिउं तेण।
घत्ता—उप्पेक्खिउ भवणु ण रक्खिउ गउ हउं सिसु हक्कारिउ॥
पर मायए णिट्ठुरवायए मंदिराउ णीसारिउ॥१२॥

११. १. MB omit this line। २. MBK जम्मंतर। ३. MT पणियंगण°; B पणयंगण°। ४. B मुच्छाविय पणया°। ५. MB रइसेण। ६. MB पियगीवहि।

१२. १. MK °भायरेण। २. MB विसालगेहि। ३. MB णयपालु। ४. MB अडयसिरि।

११

चन्द्रमाके हास्यके समान सुलोचनाकी इस प्रकार स्तुति कर गंगादेवी अपने निवास स्थान-के लिए चल दी। तब गिरीन्द्रकी भाँति उस गजेन्द्रको प्रेरित कर राजा जय गया और हस्तिनापुर पहुँच गया। सुखपूर्वक सप्तांग राज्यका परिपालन करते हुए जब बहुत समय बीत गया, जब प्रचुर प्रेम और सुखका संयोजन करनेवाली सुलोचना देवीके साथ एक दिन वह दरबारमें बैठा हुआ था तब आकाशमें उसने विद्याधर की जोड़ी देखी। 'हे प्रभावती देवी तुम कहाँ' यह कहता हुआ और जन्मान्तरकी याद करता हुआ राजा मूर्छित हो गया। तब हे स्वामी, हे स्वामी, इस प्रकार विलाप करती हुई कुलपुत्रियों और पण्य-स्त्रियोंके द्वारा चन्दन मिश्रित जलसे सींचा गया, चंचल चमरोंकी हवासे वह आश्वस्त हुआ। कबूतरके जोड़ेको देखनेसे स्नेहका अनुभव होनेके कारण प्रिया सुलोचना भी मूर्छित हो गयी। हा रतिवर, हा रतिवर—यह कहती हुई, वह निःश्वास लेती हुई फिरसे उठी। "मैं रविसेना कबूतरी थी, पूर्वजन्मकी कुलपुत्री तुम्हारी दासी, और तुम रतिवर कबूतर थे, इसमें जरा भी भ्रान्ति नहीं।" यह कहती हुई वह प्रियके गलेसे लग गयी।

घत्ता—कहाँ वह राजा, कहाँ वह रतिवर कपटसे ही प्रिय बनाया जाता है? जयकी पत्नीकी सौतने कहा कि कैतव (छलकपट) से लोग नाशको प्राप्त होते हैं ॥११॥

१२

जनमनके सन्देहके निवारणमें आदर रखनेवाले नागर अवधिज्ञानके नेत्रवाले सोमप्रभके पुत्रने जानते हुए शुभभावनासे प्रियासे पूछा। पुराना वृत्तान्त पूछते हुए पतिसे सुलोचना अपना चरित कहती है—"इस जम्बूद्वीपके पूर्व विदेहमें विशाल घरोंवाला पुष्कलावती देश है। उसमें विजयार्ध पर्वतमें स्थित धान्यकमाल वनके निकट बसा हुआ शोभापुर नामका नगर था। उसका राजा प्रजापाल था। वह अपनी देवश्री देवीका अत्यन्त अनुरागी था। जिसने चरणकमलोंके परागकी वन्दना की है, ऐसा उसका प्रसिद्ध शक्तिषेण नामका सामन्त था। अटवीश्री गृहिणीके द्वारा आलिंगित शरीर वह ऐसा लगता था मानो रतिसे विभूषित कामदेव हो। कहीं घूमते हुए लक्षणोंसे प्रशस्त केवल एक बालक उसे प्राप्त हुआ। सामन्तने उससे पूछा—हे कामदेवके समान शरीरवाले, तुम किसके पुत्र हो? बचपनसे ही तुम धरतीपर क्यों घूम रहे हो? यह वचन सुनकर बालकने कहा—

घत्ता—मैंने घरकी उपेक्षा की, उसकी रक्षा नहीं की। मैं बच्चा था, बुलानेपर चला गया था। परन्तु कठोरवाणी कहनेवाली माँने घरसे निकाल दिया ॥१२॥

१३

महु बप्प सिसुत्तणि मुइय माय बिणु मायइ डिंभहु कवण छाय।
भूयत्थें तायण वि ण दिट्ठु हउं तुम्हारउ पुरवइ पइट्ठु।
ता तेण सत्तिसेणें अगाउ पडिवण्णु पुत्तु सो सब्बदेउ।
पंचहिं वि कहिउ णिद्दलियकम्मु अमियमइअणंतमईहि धम्मु।
राएं वज्जिउ महु मज्जु मंसु राणियइ तेम तं किउ ससंसु।
सामंतें पुणु अणगारवेल पालिय जिणरायहु तणिय वेल।
वणसिरियइ किउ दुक्कियविरामु तवु अणुपवड्ढकल्लाणणामु।
सा सिसु मयच्छि गुरुहार जाय संचलिय तेत्थु जहिं वसइ माय।
परिमुक्कु सिबिरु सरविउलकूलि सहु पइणा वसइ वणंतरालि।
जा तावेत्तहि सुहिसोक्खसयरि अणणहरि मुणालवइ त्ति णयरि।
कणयसिरि वणिंदु सुकेउ कंतु भवदेउ पुत्तु णं कलिकयंतु।
छट्टंटउ दुम्मुहु सो ज्जि भणिउ पुरबिरु अण्णेक्कु वि तहिं जि वणिउ।
घत्ता—सिरियत्तउ पिउपयभत्तउ विमलसिरी तहु गेहिणि॥
सुहकारिणि सुय मणहारिणि रइवेया रइवाहिणि॥१३॥

१४

विमलसिरिभाउ वणि विहयसोउ[1] अण्णेक्कु वि अत्थि असोयदेउ।
जिणयत्त घरिणि णंदणु सुकंतु सुहउ स[2] सोमु सोमु व सुकंतु।
ता ससुरणिवासु दुवारु धरिवि बारहवरिसइं मज्जाय करिवि।
जइ हउं णावेसमि तावरासु[3] ता तेरी[4] तणुरुह देज्जसु वरासु[5]।
णिहविणु ण गिण्हमि अज्जु मामु गउ वाणिज्जहि[6] सो जाम ताम।
चक्कवइसंख वच्छर पउण्ण कण्णहिं थणयल समएण पुण्ण।
पच्चारिय सक्खि[7] णिबंधु मुक्कु सुय दिण्ण सुकंतहु वइरि ढुक्कु।
णिसिंसु तिक्खणिसियवंतु मरु दारवि[8] मारवि वरु भणंति।
मंडेवि[9] णिरुद्धु थेरीथडेण वहुवरु वि पणट्ठु परोहडेण[10]।
गलगज्जिवि तज्जिवि कंचुईउ अवलोयवि दंपइ पयंपईउ[11]।
घत्ता—कुढि लग्गउ पिसुणु अभग्गउ ईसावसु हेवाइउ॥
सहुं घरिणिइ हरिणु व हरिणिइ वणु वरइत्तु पराइउ॥१४॥

१३. १. MB सरविमलकूलि। २. M छड्डंटउ।

१४. १. MB विहियसेउ। २. MB सुसोम्मु। ३. M तायरासु। ४. M णियतणुरुह। ५. MB परासु। ६. MB वाणिज्जें। ७. B सक्खिणिबंधमुक्कु। ८. MB मारवि दारवि। ९. MB मंडव। १०. MB परोवडेण। ११. MBK पयपईउ।

१३

हे सुभट, बचपनमें मेरी माँकी मृत्यु हो गयी। बिना माँके बच्चेके लिए किसकी छाया ? भूयस्थ (धनसे सम्पन्न) पिताने भी नहीं देखा और मैं तुम्हारे पुरवरमें आ गया। तब उस शक्तिषेणने निष्पाप उस बालकको सत्यदेवके रूपमें स्वीकार कर लिया। आर्यिका अमितमती और अनन्तमतीके द्वारा कहा गया कर्मोंका नाश करनेवाला धर्म पाँचोंने स्वीकार कर लिया। राजाने मद्य, मधु और मांस छोड़ दिया। रानीने भी प्रशंसापूर्वक वही सब किया। सामन्त शक्तिषेणने अनागार वेलाका व्रत लिया, और वह जिनराज (मुनि) की पारणाकी बेला (समय) का पालन करने लगा। (अर्थात् वह मुनियोंके आहार ग्रहण करनेके समयके बाद ही भोजन करता)। उसकी पत्नी अटवीश्रीने पापका अन्त करनेवाला अनुप्रवृद्धकल्याणका तप किया। वह बालक और गुरुभारवाली मृगनयनी पत्नी वहाँ (मृणालवती नगरीमें) गयी जहाँ उसकी माँ रहती थी। शिविर छोड़कर वनके भीतर वह सर्पसरोवरके तटपर अपने पतिके साथ जब रह रही थी, तभी सुधियोंके लिए सैकड़ों सुख देनेवाली, पिताकी मृणालवती नगरीमें कनकश्री पत्नी और उसका पति सेठ सुकेतु था। उसका भवदेव पुत्र मानो कलिकृतान्त था। वह अत्यन्त उन्मत्त और दुर्मुख कहा जाता था। उसी नगरीमें एक और बनिया था।

घत्ता—अपने पिताके चरणोंका भक्त श्रीदत्त, उसकी गृहिणी विमलश्री थी। रतिकी नदी सुन्दर शुभ करनेवाली रतिवेगा नामकी उसकी कन्या थी ॥१३॥

१४

विमलश्रीका भाई शोकसे रहित एक और सेठ था अशोकदत्त। उसकी गृहिणी जिनदत्ता थी। उसका पुत्र सुकान्त था। सुन्दर और सौम्य वह सोमकी तरह सुकान्त था। तब ससुरके निवास और द्वारपर धरना देकर और बारह वर्षकी यह मर्यादा कर कि यदि मैं (इस बीच) नहीं आता हूँ तो तुम अपनी कन्या अन्य वरको दे देना। मैं निर्धन हूँ, हे ससुर, अभी कन्या ग्रहण नहीं करता। और जब वह वाणिज्यके लिए चला गया, तबतक बारह वर्ष पूरे हो गये और समयके साथ कन्याके स्तन भर गये। साक्ष्य और निबन्धसे मुक्त होकर उसने कन्याको पुकारा और सुकान्तके लिए दे दी। (इतनेमें) दुश्मन आ पहुँचा, निर्दय और तीखी तलवार लिये हुए। वह कहता है कि मैं वरको विदीर्ण करूँगा—मारूँगा। वृद्धसमूहने उसे बलपूर्वक रोका। वधूवर भी घरके पीछे दरवाजेसे भाग गये। तब गरजकर और कंचुकियोंको डाँटकर तथा दम्पतिकी चरण-परम्पराको देखकर—

घत्ता—अभग्न दुष्ट ईर्ष्यालु वह क्रुद्ध होकर पीछे लग गया। अपनी गृहिणीके साथ वह वनमें पहुँचा, जैसे हरिणीके साथ हरिण हो ॥१४॥

१५

दोहं वि पयरत्तइं पयलियाइं दोहं वि मुहकमलइं मउलियाइं ।
तं रिउणा कह व ण मारियाइं अंगइं तरुकंटयसीरियाइं ।
खिम्मक्किवि रयणिहि रीणयाइं दुमलग्गफट्टपरिहाणयाइं ।
पासेयधोयतणुमंडणाइं अवलोइयमयउलभंडणाइं ।
सूरग्गमि पत्तइं बे वि तेत्थु आवासिउ वणसिरिणाहु जेत्थु ।
दुज्जणु अणुलग्गु जि ढुक्कु केम चलपावइयहं कुसुमसरु जेम ।
दिट्ठेउ दोहि वि तहिं सचिसेणु आसंघिउ कलभहिं णं करेणु ।
कहिं णासहं आयउ अज्जु मरणु लइ तुज्झु पइट्ठइं बे वि सरणु ।
णिसुणिवि वइयरु करमंडलग्गु दक्खालिउ तेण किराडु भग्गु ।
गउ णासिवि सहसा मलियमाणु किं करइ तिमिरु जहिं फुरइ भाणु ।

घत्ता—णं उवेक्खिउ बहुवरु रक्खिउ किउ पडिवक्खहु दूसणु ॥
धणवरिसहुं जगि सप्पुरिसहुं दीणुद्धरणु जि भूसणु ॥१५॥

१६

विसकरिखरकरहतुरंगवाहु धरधीरु धणेसरु सत्थवाहु ।
धारिणिकंतामुहरायरत्तु ता तहिं जि समागउ मेरुदत्तु ।
संठिउ समीवि विरएवि ठाणु करिहरिरवबहिरियसिहरिसाणु ।
कंतारमग्गि चारण पइट्ठ सरणागय पविपंजरेण दिट्ठ ।
वेण्णि वि ठाभणिय महाजसेण रिसिगयवर थिय विणयंकुसेण ।
मुणिवसहहं णवविहु लेवि पुण्णु जोग्गउ भोयणु भावेण दिण्णु ।
णहयलि तूरइं तियसहिं हयाइं अच्छरियइं पंच समुण्णयाइं ।

घत्ता—मणि ढोयहुं पुण्णु पलोयहुं पसरियमुहससिरायउ ॥
तहु केरउ पणयजणेरउ मेरुदत्तु घरु आयउ ॥१६॥

१७

तहिं तेण तासु जोएवि दाणु धारिणियइ सहुं बद्धउ णियाणु ।
आगामि जम्मि महु होउ पुत्तु एहउ दुत्थियकल्लाणमित्तु ।
महि रंगमाणु णं णिसि णिरिक्कु ता तहिं पत्तउ पंगुलउ एक्कु ।
पुच्छिउ वणिणा णियमंतिवग्गु भणु एयहु किं गइपसरु भग्गु ।

---

१५. १. MB दो वि । २. B omits this line. । ३. B omits this foot. । ४. MB कलहहिं । ५. MB पइट्ठा बे वि । ६. MB णिसुणेवि वइरु । ७. MB मज्जिवि । ८. MB णउ पेक्खिउ ।

१६. १. MB वरवीरु । २. MB add after this: रयणहिं सह फुल्लइं घल्लियाइं, वयणाइं मणोज्जइं बोल्लियाइं । ३. MB पसरियमुहुं ।

१७. १. MB आगम्मि । २. B णिरक्कु ।

१५

दोनोंके पैरोंकी लालिमा प्रगलित हो गयी, दोनोंके मुखकमल मुकुलित हो गये। उस शत्रुके द्वारा वे किसी प्रकार मारे भर नहीं गये थे। उनके शरीर वृक्षोंके कांटोंसे विदीर्ण हो चुके थे। पसीनेसे शरीरका सब मण्डन घुल चुका था। दोनों पशुकुलकी भिड़न्त देख रहे थे। सूर्योदय होनेपर वे दोनों वहाँ पहुँचे जहाँ कि अटवीश्रीका स्वामी ठहरा हुआ था। पीछे लगा हुआ ही वह वहाँ इस प्रकार पहुँच गया जैसे कि चंचल पापियोंके पीछे कामदेव पहुँच जाता है। वहाँ उन दोनोंने शक्तिषेणकी शरण ली, मानो शिशुगजोंने महागजकी शरण ली हो। कहाँ हैं वे, भागनेवालोंके लिए मैं मरण आया हूँ; लो, वे दोनों तुम्हारी शरणमें चले गये। दुश्मनको सुनकर उस शक्तिषेणने अपनी तलवार दिखायी उससे किरात भग्न हो गया। और मलिनमान वह शीघ्र वहाँसे भाग गया। वहाँ अन्धकार क्या कर सकता है, जहाँ सूर्य चमक रहा है।

घत्ता—उसने उपेक्षा नहीं की, वरन् वरवधूकी रक्षा की और शत्रुपक्षको दोषी ठहराया। जगमें धनसे श्रेष्ठ (धनवरिसहुँ) सत्पुरुषोंका भूषण दोनोंका उद्धार करना ही है ॥१५॥

१६

इतनेमें वृषभ, गज, खच्चर, ऊँट और घोड़ोंके वाहनोंवाला, पर्वतकी तरह धीर धनेश्वर, अपनी पत्नी धारणीके मुखमें अनुरक्त सार्थवाह मेरुदत्त वहाँ आया। हाथियों और घोड़ोंके शब्दोंसे पर्वतशिखरको बहरा करता हुआ वह पास ही अपना डेरा डालकर ठहर गया। इतनेमें वनमार्गसे दो चारण मुनि वहाँ प्रविष्ट हुए। शरणमें आये हुए उन दोनोंको शक्तिषेणने देखा। उस महायशवालेने 'ठहरिए' कहा। विनयरूपी अंकुशसे वे दोनों महामुनिवर ठहर गये। पुण्य लेनेके लिए उसने मुनिश्रेष्ठोंके लिए योग्य नानाविध आहार भावपूर्वक दिया। देवोंने आकाशतलमें नगाड़े बजाये तथा पाँच आश्चर्य प्रकट किये।

घत्ता—मणियोंको लो, पुण्यको देखो, जिसका मुखरूपी पूर्णचन्द्र खिला हुआ है और जो तुम्हारे लिए प्रणय उत्पन्न करनेवाला है ऐसा मेरुदत्त घर आ गया है ॥१६॥

१७

वहाँ उस मेरुदत्तने उसका दान देखकर धारणीके साथ यह निदान बाँधा कि अगले जन्ममें दुःस्थित लोगोंका कल्याणमित्र यह मेरा पुत्र हो। तब वहाँ रात्रिमें चोरकी तरह धरतीपर चलता हुआ एक लँगड़ा आया। वणिक्‌ने अपने मन्त्रीवर्गसे पूछा—"बताओ कि इसका गतिप्रसार

सउँणिं जंपिउ अर्वेसउण जाय पयहु भवि तेण पणट्ठ पाय।
भेसइणा भासिउ सुहमहेहिं उहिहु एहु कूरग्गहेहिं।
धण्णंतरि जंपइ पयइदोसु सेंभें जडत्तु पित्तेण सोसु।
पवणें भज्जइ माणवहु गत्तु भूयत्थें मंतिं पुणु पुत्तु।
घत्ता—सउणत्तइं गहणक्खत्तइं सहुं पयईहिं पवत्तइं॥
चिब्भावहं सयलहं जीवहं होंति सकम्मायत्तइं॥१७॥

१८

इय सेणिउं सणिउं पभणेवि तेहिं पुणु पुच्छिउ गुरु मउलियकरेहिं।
किं सउणु किं व दुग्गहवियारु किं पयइदोसु किं कम्मचारु।
किं कारणु पंगुत्तहु मुणिंद ता भणइ सूरि मुणि भो वणिंद।
बहिरंध कुट्ठि वाहिल्ल भिल्ल दालिद्दिय दूहव मूय लल्ल।
अवसिट्ठ दुट्ठ दुप्पिट्ठ कट्ठ दुट्ठोट्ठ रुट्ठ दुहघट्ट बंठे।
छिण्णोट्ठ कण्णणासाविहीण दुग्गंधदेह काणीण दीण।
णिल्लज्ज खुज्ज वामण कुसील पलखंड सोंड चंडाल कील।
जरचीवरधर फरुसुद्धकेस लोहाणलहय कंकालवेस।
जूयार णिसेवियणयरटिंट पावेण होंति णर कुंट मंट।
पंगुल परघरपिंडावलुद्ध विवरीय होंति धम्में विसुद्ध।
णउ देव देंति णउ ते हरंति देविंद वि पुण्णक्खइ मरंति।
घत्ता—रिसिपिसुणिउं भवियहिं णिसुणिउं णियमें चित्तु णियत्तिउं॥
परदविणइ परवहुरमणइ लोयणजुयलु ण घेत्तिउं॥१८॥

१९

ता तहिं ओलक्खिउ तरणितेउ भूयत्थें कोक्किउ सत्तदेउ।
ए एहि पुत्त दे देहि खेउं किं वीसरियउं महु तणउ णाउं।
सुय तुह सुहयंगइं कोमलाइं लग्गांतइं धूलीधूसराइं।
होंताइं आसि महु सुहयराइं णिल्लोट्टियपियकताकराइं।
सुय तुह मुहलालाबिंदुयाइं हउं सुयरवि णियउरयलि चुयाइं।
सिक्खाविओ सि सिसुगइवयाइं सिद्धंणमाइं अक्खरवयाइं।
वीसरियउ सुयं तुहुं किं सताउ किं बहुएं महु घरु जाहुं आउ।
इय पत्थिओ वि सो मंदणेहु पडियागउ णउ णियजणणगेहु।
पिउणा तिमुंडपविराइएण तवचरणु लइउ णिव्वेइएण।

---

३. MB सउणें। ४. M अवसवण। ५. MB सिभें। ६. MB मंतें।

१८. १. M सणउं सणउं। २. MB भो सुणि। ३. M दुप्पिट्ठ। ४. M दुट्ठोट्ठ। ५. B वट्ठ। ६. MB °णयरटेंट। ७. MB परहर°। ८. M चित्तउं; B चित्तिउं।

१९. १. MB सुयरमि। २. MB सिद्धंतमाइं। ३. MB किं तुह सुय।

नष्ट क्यों हुआ ?" शकुनिने कहा—"इसे अपशकुन हुआ था इसलिए इस जन्ममें इसका पैर टूट गया।" बृहस्पतिने कहा—सुखका नाश करनेवाले क्रूरग्रहोंने इसे लँगड़ा किया है। धन्वतरि कहता है कि यह प्रकृति दोष है। कफसे जड़त्व होता और पित्तसे शुष्कता आती है, तथा वातसे शरीर नष्ट हो जाता है। तब भूतार्थ मन्त्रीने पुनः कहा—

घत्ता—प्रकृतियों (वात-कफ और पित्त) के साथ कहे गये शकुन तथा ग्रह-नक्षत्र आदि मनुष्यका चैतन्यस्वरूप समस्त जीवोंके अपने कर्मके अधीन होते हैं ॥१७॥

१८

इस प्रकार धीरे-धीरे बात कर, अपने हाथ जोड़ते हुए उन्होंने गुरुजीसे पूछा, "हे मुनीन्द्र, लँगड़ेपनका कारण क्या है, क्या शकुन कारण है ? या खोटे ग्रहोंका प्रभाव है, क्या प्रकृति-दोष है, या कर्मोंका आचरण है ?" तब मुनीन्द्र कहते हैं—"हे सेठ सुनो ! बहिरा, अन्धा, कोढ़ी, व्याधा, भील, दरिद्री, दुर्भग, गूँगा, अस्पष्ट आवाजवाला, अविशिष्ट, दुष्ट, दर्पिष्ट, कठोर, दुष्ट ओठोंवाला, क्रोधी, दुःखोंसे घृष्ट, बंठ, छिन्न ओठोंवाला, कान और नाकसे रहित, दुर्गन्धित शरीरवाला कन्या-पुत्र, दीन, निर्लज्ज, कुबड़ा, वामन, कुशील, मांसभक्षी, दारु विक्रेता, चाण्डाल, कोल, जीर्णवस्त्र धारण करनेवाला, कठोर और खड़े बालोंवाला, क्रोधकी आगसे आहत कंकाल रूपवाला, जुआड़ी, नगरकी वेश्याका सेवन करनेवाला, वामन और लुच्चा आदमी पापके कारण होते हैं। लँगड़े और दूसरेके घरके आहारके लालची और विपरीत होते हैं, धर्मसे पवित्र होते हैं। न तो देवता लोग कुछ देते हैं, और न वे अपहरण करते हैं, देवेन्द्र भी पुण्यका क्षय होनेपर मरते हैं।"

घत्ता—महामुनिके द्वारा प्रतिपादित बात भव्यजनोंने सुनी, उन्होंने अपना चित्त नियममें लगाया। दूसरेके धन और दूसरेकी स्त्रीपर उन्होंने अपनी आँख तक नहीं डाली ॥१८॥

१९

वहाँ सूर्यके समान तेजस्वी सत्यदेव दिखाई दिया, भूतार्थने उसे बुलाया और कहा—"हे पुत्र ! आओ, और मुझे आलिंगन दो। क्या तुम मेरा नाम भूल गये ? हे पुत्र, तुम्हारे कोमल सुभग पुत्र धूल-धूसरित होते हुए भी छूनेपर सुखद मालूम होते थे। हे पुत्र, प्रिय कान्ताके द्वारा पोंछी गयी तथा ऊपर वक्षपर गिरी हुई तुम्हारे मुखकी लारकी बूँदोंको अपने वक्षःस्थल पर गिरे हुए अनुभव कर रहा हूँ। हे वत्स, तुम्हें शिशुगति और वचन सिखाये गये थे। सिद्धोंको नमस्कार हो, ये वचन सिखाये गये थे। हे पुत्र, क्या तुम अपने पिताको भूल गये, बहुत कहनेसे क्या आओ अपने घर चलें।" मन्द स्नेह वह इस प्रकार प्रार्थना करनेपर भी अपने पिताके घर वापस नहीं आया। प्रशस्त मन-वचन और कायके व्यापारसे शोभित पिताने विरक्त होकर तपश्चरण ले लिया। उन्हीं आकाशचारी गुरुके पास दृढ़तर मोहपाशको काटकर, जिस प्रकार बृहस्पतिने ऋषित्व ग्रहण किया, उसी प्रकार शकुनी और धन्वन्तरिने भी।

छिंदेप्पिणु दढयरु मोहपासु गहु गुरुहि पासु णहचारणासु ।
सुरगुरुणा गहिउ रिसित्तु जेम्व सउणी धण्णंतरिणा वि तेम्व ।
घत्ता—तं वहुवरु णवपंकयकरु सेट्ठिहि तेण समप्पिउ ॥
महु सामिहि गयवरगामिहि गेहि थवेज्जसु जंपिउ ॥१९॥

२०

गउ वणिवइ सोहाउरु तुरंतु पणवेप्पिणु पहुहि सकंतु कंतु ।
सो तेण णिरोविउ तासु जाम एत्तहि वि सत्तिसेणक्खु ताम ।
माउहरि थवेप्पिणु णिययघरिणि णं विंझलयाहरि पवरकरिणि ।
वंदिवि मुणालवइ जिणहराइं अवलोयवि ससुरय सिरिहराइं ।
गुरुहार णारि पैसढलसरीर सासुरयहु णउ सक्कइ सहार ।
सासुरयहु णिग्गउ भडवरिट्ठु आवेप्पिणु सोहंपुरि पइट्ठु ।
घरि दिट्ठु राउ इच्छियसिवेण वहुवरु मग्गिउ पसरियकिवेण ।
णिउ णिययणिवासहु दिण्णु धामु गोउलु माहिसु फलछेत्तु गामु ।
आसणु भूसणु णिवसणु समग्गु तवु करिवि मंति गय कं पि सग्गु ।
मंत मेरुयत्तु पायडियसिरिहि तहिं देसि पुंडरिंकिणिपुरिहि ।
पयपालणरिंदणिहित्तचित्तु वणि हूयउ णाम कुबेरमित्तु ।
घत्ता—तुहु धारिणि मरिवि सुकारिणि जइ वि ण सम्माइट्ठिणि ॥
व्रते पालिवि दुक्किउ खालिवि हुइ धणवइसेट्ठिणि ॥२०॥

२१

पुत्तत्थिणि भवभावियणियाण सा एक्कतीसघरिणिहिं पहाण ।
गब्भेसरि सयलकलापवीण धयरट्ठगमण सद्देण वीण ।
भवदेवें पावें पसुवहेण तं वहुवरु दड्ढउ हुयवहेण ।
घरि अट्टझाणें मरिवि तेत्थु जोयउ पुरंसेट्ठिणिवासि एत्थु ।
पारावयजुयलु मणोहिरामु गुंजारुणच्छु वण्णेण सामु ।
तं वेप्पइ खुज्जयवावणेहिं तं संभासिज्जइ परियणेहिं ।
णच्चइ हक्कारिउ सद्दु देइ पट्ठवियउ पुणु रंगंतु जाइ ।
पुच्छिउ पहुणा कहिं पाव जंति धम्मेण जीव किर कहिं वसंति ।
तं दावइ चंचुइ णरयमग्गु उद्धाइ ताइ सग्गापवग्गु ।
तहिं पक्खिणि हुउं रइसेण णाम तुहुं रइवरु पक्खि सणेहकाम ।
अच्छहुं कीलंतइं बे वि जाम सो सत्तिसेणु तहिं मरिवि ताम ।

४. MB सहिउ । ५. MB सउणें ।

२०. १. MB वणिवइ । २. MB णिरूविउ । ३. MB °पसढिल° । ४. M सोहाउरि; B साहाउरि ।
५. MB दिण्णु धारु । ६. MB गाउ । ७. MB मुउ । ८. MB पयडिय° । ९. MB वउ ।

२१. १. MB पुत्तत्थि वि । २. MB पुरि सेट्ठि° । ३. MB संभासिज्जइ परियणजणेहिं । ४. MB सिणेह° ।
५. MB कीलंत बे वि ।

घत्ता—उस शक्तिषेणने नवकमलके समान हाथोंवाला वह वधूवर सेठके लिए समर्पित कर दिया और कहा, गजवरगामी मेरे स्वामीके घरमें रख देना ॥१९॥

२०

सेठ तुरन्त शोभापुर गया और जबतक वह प्रभुको प्रणाम कर कान्ता सहित कान्तको सौंपे, तबतक यहाँ शक्तिषेण नामका सामन्त अपनी पत्नीको उसकी माताके घरमें रखनेके लिए, मानो विन्ध्यके लतागृहमें हथिनीको रखनेके लिए, मृणालवती नगरीके जिनमन्दिर देखने और ससुरालके श्रीघरको देखनेके लिए गया। परन्तु गुरुभार और शिथिल शरीरवाली पत्नी अटवी-श्रीको ससुराल भी सहारा नहीं दे सका। वह श्रेष्ठ योद्धा ससुरालसे भी चला आया। आकर शोभापुरमें प्रविष्ट हुआ। कल्याण चाहनेवाले तथा बढ़ रही है दया जिसमें ऐसे उसने राजासे भेंट की और वधूवरको माँगा। वह उन्हें अपने घर ले गया और अपना घर, गोकुल, भैंस, फल-क्षेत्र, ग्राम, आसन, भूषण और वस्त्र सब कुछ दे दिया। मन्त्री भी तप करके कहीं स्वर्ग चले गये। मेरुदत्त भी मर गया। तथा प्रकट है वैभव जिसका ऐसी उसी देशकी पुण्डरीकिणी नगरीमें कुबेर-मित्र नामका वणिक् हुआ, जिसका चित्त राजा-प्रजापालमें लगा रहता था।

घत्ता—फिर धारणी भी यद्यपि वह सम्यक्त्व धारण करनेवाली नहीं थी, पुण्यकारणसे व्रतोंका पालन कर, पापको नष्ट कर धनपतिकी सेठानी हुई ॥२०॥

२१

दूसरे जन्ममें निदान बाँधनेवाली तथा पुत्रकी इच्छा रखनेवाली वह इकतीस स्त्रियोंमें प्रधान थी। गर्वेश्वरी वह समस्त कलाओंमें निपुण, हंसकी तरह चलनेवाली, स्वरमें वीणाके समान थी। पशुवध करनेवाले उस दुष्ट नवदेवने उस वधूवरको आगमें जला दिया। घरमें आर्तध्यान कर वहीं मरकर वे इसी नगरके सेठके घरमें सुन्दर कबूतरके जोड़ेके रूपमें उत्पन्न हुए हैं, गुंजाके समान अरुण आँखोंवाले रंगसे श्याम। कुबड़े और बौनों द्वारा वह कबूतर-कबूतरी-का जोड़ा ग्रहण किया जाता और परिजनोंके द्वारा उससे सम्भाषण किया जाता। पुकारनेपर नाचता और शब्द करता। भेजा गया क्रीड़ापूर्वक जाता। राजा पूछता है—'पापी कहाँ जाते हैं और धर्मसे जीव कहाँ निवास करते हैं?' वह कबूतरका जोड़ा उसे चोंचसे नरक बताता है और उठी हुई उसी चोंचसे स्वर्ग-अपवर्ग बताता है। वहाँ मैं पक्षिणी रतिसेना नामकी थी और तुम स्नेहकी कामना रखनेवाले रतिवेग थे। जब हम लोग क्रीड़ा करते हुए रह रहे थे तभी वह शक्तिषेण (सामन्त) मरकर—

घत्ता—तें धणिणा वणिसिरिमणिणा धणवइयहि सुउ आयउ ॥
सोहग्गें जणमणलग्गें रूवें णं सुरराय‍उ ॥२१॥

२२

णं णियकुलहरकमलसिरिकंतु णामें सो भणिउ कुबेरकंतु ।
सुमरेप्पिणु धम्माणंदजोउ ते मंतिदेव तहु देंति भोउ ।
वत्थंगु तियसतरु भूसणंगु मइरंगु तुरिय उवभोयणंगु ।
पवहइ पुंडुच्छुरसप्पवाहु मज्जणइं पवरिसइ वारिवाहु ।
णिच्चं चिय पिक्कइ सालिछेत्तु अवरु वि सुइसुसिर सुहेल्लिमेत्तु ।
सयमेव रणइ वीणा सवेणु घरि चिंतिउ दुब्भइ कामधेणु ।
इय दिव्वभोयभुंजणखणालु णवजोव्वणु पिउणा दिट्ठु बालु ।
पियसेणु तेण सहयरु पउत्तु किं बहुएं किं एक्कु जि कलत्तु ।
इच्छइ मणु तेरउ परममित्तु आहासइ सो णवणलिणणेत्तु ।
एक्कहिं दिणि गय उज्जाणमज्झि दिट्ठउ मुणि दोहिं वि लवलिगुज्झि ।
पुच्छिउ लइयउ णामें एक्कपत्ति को पावइ तुह सुय सीलसत्ति ।

घत्ता—तेत्थु जि पुरि छुहपंकियघरि वणि वइसमणसमाणउ ॥
धणवइयहि बंधवु एयहि सायरदत्तु कुलीणउ ॥२२॥

२३

तहु केरी णं अमिएण सित्त गेहिणि णामेण कुबेरमित्त ।
तहि परजम्मंतरि बद्धपणय हूई वणलच्छि मरिवि तणय ।
णं सुरयसोक्खमाणिक्कखाणि कलहंसगमण कलयंठिवाणि ।
णीलालिवलयसंकासकेस णं कामभल्लि पच्छण्णवेस ।
णामें पियदत्त पसण्णदिट्ठि गुणणय णं वम्महचावलट्ठि ।
अण्णहिं दिणि कित्तिमकुसुममाल कय ताइ णाइं मयणसत्थसाल ।
गय लेप्पिणु ससुरयघरु वयंसि पियकारिणि गइजियरायहंसि ।
तं पेच्छिवि विंभिउ उब्भतणउ एउं विण्णाणु ण मुणइ मणुउ ।
तं वयणु सुणिवि सच्छइ सईइ णियसुण्ह पसंसिय धणवईइ ।

घत्ता—पियवत्तइ सुइसुहमेत्तइ मयणजलणु संधुक्किउ ॥
मणु लेंतें तेणं जलंतें झत्ति कुमारु झलुंकिउ ॥२३॥

---

६. M तं । ७. MB °सिरिमणिणा ।

२२. १. MB देंतु । २. MB तुरीयउ भोयणंगु । ३. MB दोहिं वि मुणि । ४. MB वउ । ५. MBK वइसवण° ।

२३. १. MB जम्मंतरबद्ध° । २. MB कलहंसियमण । ३. MB गुणणयणइं । ४. MB मयणत्थमाल; K मयणयत्थसाल and gloss अस्त्र; G in gloss मदनशस्त्रशाला । ५. MB °तणुउ । ६. MB एयहुं । ७. MB पियदत्तइ । ८. MB संधुक्कियउ । ९. MB जेण । १०. MBT झलुक्कियउ ।

घत्ता—वणिक् श्रीके मान्य उस वणिक्‌से धनवतीका पुत्र हुआ। जो सौभाग्य और जनमनको अच्छे लगनेवाले रूपसे मानो सुरराज था ॥२१॥

२२

मानो वह अपनी कुलगृहरूपी कमलश्रीका प्रिय था। नामसे उसे कुबेरकान्त कहा गया। धर्मानन्द योगकी याद कर वे मन्त्रीरूपी देव उसको भोग प्रदान करते हैं। वस्त्रांग, भूषणांग, मद्दरांग, चौथा भोजनांग (कल्पवृक्षोंके द्वारा) पुण्ड्र और इक्षुरसका प्रवाह वहाँ नित्य प्रवाहित होता है, स्नानके लिए वारिका प्रवाह बरसता है। नित्य ही उत्तम धान्यके खेत पकते रहते हैं। नित्य ही सुखद लगनेवाली बाँसुरी सहित वीणा स्वयं बजती रहती है। घरमें चिन्ता करते ही कामधेनु दुह ली जाती है। इस प्रकार दिव्यभोगोंके भोगनेमें क्षण बितानेवाले अपने पुत्रको पिताने नवयौवनमें देखा। उसने उसके प्रिय सहचर प्रियसेनसे पूछा, 'क्या बहुत-सी वधुएँ चाहिए, या एक ही कलत्र चाहता है, तुम्हारा परममित्र बताओ।' नवनलिन नेत्रवाला वह कहता है कि एक दिन हम लोग उद्यानमें गये हुए थे और वहाँपर, दोनोंने चन्दनलता कुंजमें एक मुनिको देखा। वहाँ उसने एकपत्नी नामका व्रत लिया है। तुम्हारे पुत्रकी शीलवृत्तिको कौन पा सकता है।

घत्ता—चूनेसे पुते घरोंवाली उसी नगरीमें कुबेरके समान इसी धनपतिका बन्धु सागरदत्त नामक कुलीन सेठ था ॥२२॥

२३

उसकी अमृतसे सींची गयी कुबेरमित्रा नामकी गृहिणी थी। दूसरे जन्ममें प्रणय बाँधनेवाली अटवीश्री मरकर उसकी पुत्री हुई। मानो वह सुरति सुखरूपी मणियोंकी खदान हो, मानो कलहंसके समान गतिवाली और कलकंठ (कोयल) के समान स्वरवाली हो। नीली भ्रमरपंक्तिके समान केशवाली वह मानो प्रच्छन्न रूपमें कामभल्ली हो। प्रियदत्ता नामकी प्रसन्नदृष्टि और गुणोंसे नत वह ऐसी लगती है, मानो कामदेवकी धनुषयष्टि हो। दूसरे दिन उसने एक कृत्रिम कुसुममाला बनायी जो मानो कामदेवकी शस्त्रशाला थी। अपनी गतिसे राजहंसको जीतनेवाली प्रियकारिणी सखी उसे लेकर ससुरके घर गयी। उसे देखकर वणिक् पुत्र विस्मयमें पड़ गया कि मनुष्य इस विज्ञानको नहीं जान सकता। यह सुनकर स्वच्छ सती धनवतीके द्वारा अपनी बहूकी प्रशंसा की गयी।

घत्ता—कानोंको सुख देनेवाली प्रियवार्तासे कामकी आग धधक उठी। उसका मन लेते हुए, जलती हुई आगने कुमारको सन्तप्त कर दिया ॥२३॥

२४

आणिवि तणयहु कण्णाहिलासु वणिणा पारद्धु विवाहु तासु ।
णंदणवणि पट्टण जणमणोज्ज णिव्वत्तिवि णियकुलजक्खपुज्ज ।
भायणइं दुतीस समीरियाइं णिरु चोक्खभक्खपडिऊरियाइं ।
तहिं एक्कु पंचमाणिक्कवंतु जा गेण्हइ तहि सो होइ कंतु ।
वणिउत्तियाउ संप्राइयाउ वत्तीस जि पियदत्ताइयाउ ।
सव्वहं वणिणाहें भूसणाइं दिण्णाइं विलेवणणिवसणाइं ।
गेण्हह पभणिवि परिभावियाइं चरुभरियइं थालइं दावियाइं ।
ता कणयवत्त बहुभोज्जु थइउ एक्केक्कंइ एक्केक्कउ जि लइउ ।
सरयणु पूयँदत्तहि करि विलग्गु को लंघइ किर भवियव्वमग्गु ।
पयपालसुयाहिं सुहालियाहिं गुणवइजसवइणामालियाहिं ।
आलद्धउ णउ तहिं चरुयवत्तु हियवउ संसारहु खणि विरत्तु ।
घत्ता—मूंगरोलइ गिरिकुहरालइ वेरें पइसिवि तवु किज्जइ ॥
णउ दाणहु सुहिसंमाणहु कारणि इलि कलहिज्जइ ॥२४॥

२५

रोयहरणियडि जिणवरणिवासि अमियमइअणंतमईहिं पासि ।
तवु लइयउ ताहिं सीमंतिणीहिं एत्तहि वि पडहमंगलझुणीहिं ।
वणितणयहु सुयणुच्छाहराहु भियदत्तइ सहुं विरइउ विवाहु ।
वयबालु मरेप्पिणु लोयवालु पयपालहु सुउ हूयउ गुणालु ।
देवसिरिदेवि मल्हणगईहिं वसुमइ सुय हूई धणवईहिं ।
गयजम्मघरिणि सा दिण्ण तासु पुणु लग्गउ दोहि मि पेम्मपासु ।
संताणि थवेप्पिणु सो जि पुत्तु णरणाहें लइयउ मुणिचरित्तु ।
देवीउ कणयमालाइयाउ पव्वज्ज लएप्पिणु संठियाउ ।
जे परियण ते पव्वइय सव्व कोमलमइ थिय घरि घरि सगव्व ।
एक्कु जि वुड्ढउ स कुबेरमित्तु सो भावइ तरुणहं णाइं सत्तु ।
घत्ता—चवलमइं भासिउ कुमइं हसहुं ण खेलहुं लब्भइ ॥
अपसत्थउ [10]भेलावत्थउ माणुसु एम जि खुब्भइ ॥२५॥

२४. १. B समारियाइं । २. MB परिपूरियाइं । ३. MB संपाइयाउ । ४. B गेहं पभणिवि । ५. K पभाविवियाइं । ६. MB एक्केक्कउ एक्केक्कहिं । ७. MB पियदत्तहि । ८. MB भवियव्वु मग्गु । ९. MB ण वि । १०. MB मिग° । ११. MB वणि । १२. MB तउ ।

२५. १. MB रायहरे णियड° । २. MB तउ लइउ तेहिं । ३. MB पियदत्तइ । ४. MB णयवालु । ५. MB सिसु । ६. MB णियघरि । ७. MB चवलमईहिं । ८. MB कुमईहिं । ९. MB खेल्लहुं । १०. MBT हेलावत्थउ ।

२४

पुत्रकी कन्यामें अभिलाषा जानकर वणिक्‌ने उसका विवाह प्रारम्भ किया। नन्दनवनमें जनसुन्दर नगर और अपने कुलयक्षकी पूजा कर, उसने सुन्दर खाद्योंसे भरे हुए बत्तीस पात्र फैला दिये। उनमें एकमें पाँच माणिक्य रखे हुए थे, जो उसे ले ले वह उसका पति होगा। प्रियदत्ता आदि बत्तीस ही पुत्रियाँ वहाँ आयीं। सेठने सभीके लिए आभूषण, विलेपन और वस्त्रादि दिये और यह कहकर कि अपनी पसन्दके घड़े ले लो, उसने भक्ष्य पदार्थोंसे भरे घड़े बता दिये। तब बहुभोज्यसे भरा एक-एक स्वर्ण पात्र एक-एकने ले लिया। रत्नोंसे भरा घड़ा प्रियदत्ताके हाथ लगा, भवितव्यका मार्ग कौन लाँघ सकता है ? गुणवती, यशोवती, नामावली, शुभसखी प्रजापालकी पुत्रियोंने वह भक्ष्यपदार्थोंसे भरा स्वर्णपात्र नहीं लिया। एक क्षणमें उनका मन संसारसे विरक्त हो गया।

घत्ता—(वे कहने लगी) अच्छा है पशुओंसे मुखर पर्वतरूपी घरमें प्रवेश कर तप किया जाये। सुधिसम्मान और दानके लिए, हे सखी कलह नहीं करनी चाहिए ॥२४॥

२५

राजभवनके निकट स्थित जिनमन्दिरमें अमृतवती और अनन्तमती आर्यिकाओंके पास उन कन्याओंने नगाड़ोंकी मंगल-ध्वनियोंके साथ तप ग्रहण कर लिया। सुधीजनोंका उत्साह बढ़ानेवाले उस वणिक्‌पुत्रका प्रियदत्ताके साथ विवाह कर दिया गया। व्रतोंका पालन करनेवाला लोकपाल मरकर प्रजापालका गुणवान् पुत्र हुआ। देवश्री देवी मदमाती चालसे चलनेवाली धनवतीकी वसुमती नामकी पुत्री हुई। पिछले जन्मकी पत्नी वह (वसुमती) उसको (प्रजापालके पुत्रको) दे दी गयी। फिर दोनों प्रेमपाशमें बँध गये। पुत्रको अपनी कुल-परम्परामें स्थापित कर राजाने (प्रजापालने) भी मुनिव्रत ले लिये। कनकमाला आदि देवियाँ भी संन्यास लेकर स्थित हो गयीं। और भी जो परिजन थे वे भी प्रव्रजित हो गये। जो कोमलमतिके लोग थे वे सब सगर्व घरमें रह गये। कुबेरमित्र नामका एक बूढ़ा मन्त्री हो ऐसा था, जो तरुणोंके लिए शत्रुके समान था।

घत्ता—कुमति चपलमति (तरुण) कहता है कि न हम हँस पाते हैं और न खेल पाते हैं। वृद्धावस्थाको प्राप्त यह अप्रशस्त मनुष्य क्षुब्ध होता है ॥२५॥

२६

ओ णिव सुह तायं णिहिय मंति । तहु दंसणेण अम्हहं ण संति ।
किं विहडियकरण णियंति कज्जु । हो थेरहं कम्मु ण किं पि दिज्जु ।
मावउ अम्हहं भिउडंतु दिट्ठि । अच्छउ णियमंदिरि ताम सेट्ठि ।
राउ वि कुमारु मंति वि कुमार । दीणे वि होंति जोव्वणि वियार ।
सुहिदिट्ठपरंपरु बहु सुयड्ढु । वारिउ पहुणा घरु एंतु वुड्ढु ।
अविपिक्कबुद्धि कीलणसहाउ । सिसुमंतिहिं सहुं रायाहिराउ ।
अण्णहिं दिणि णंदणवणि पइट्ठु । अरुणच्छवि वाविजलोहु दिट्ठु ।
पुच्छिउ विहसिवि चवलमइ तेण । इह लोहिउ जलु किह कारणेण ।
बुहसिट्ठविसिट्ठगईचुएण । पडिजंपिउं विउलमईसुएण ।
वावीयलि अच्छइ मणि णिहित्तु । तहु छायइ दीसइ सलिलु रत्तु ।
ता तेहिं मिलिवि अंसंसएहिं । पाणिउं वहि घल्लिउं घडसएहिं ।
चिक्खल्लतल्लोलणविलोल । थिय सयल णाइं कयकील कोल ।
माणिक्कु ण दिट्ठउ तेहिं केम । बहुमोहंधहिं जिणवयणु जेम ।
अण्णाणकिलेसें णत्थि सिद्धि । गय घरहु परिक्खिय मंतिबुद्धि ।

घत्ता—गरुंगावइ सपणयकोवइ पयहिं पडंतु वि कयरइ ॥
वसुमइयइ रयणिहि दइयइ चरणें सिरि हउ णरवइ ॥२६॥

२७

मंडलियमउडरुइरइयराइ । अत्थाणि णिसण्णें सुप्पहाइ ।
जो मह सिरु पहणइ णियपएण । तहु किं वुत्तउं णरवइणएण ।
ते तरुणमंति पुच्छिय णिवेण । तेहिं वि पउत्तु सफरुसरवेण ।
तुह जेणं दिण्णु सिरि चरणघाउ । खंडिज्जइ णिव तहु तणउ पाउ ।
तं वयणु सुणेप्पिणु विमलवंसु । संठिउ हेट्ठामुहु रायहंसु ।
महु सिरचूडामणि मयणसरणु । खंडिज्जइ किह सुंदरिहि चरणु ।
अविवेउ महंतउ जासु गेहि । दुक्करु सिरि णिवसइ तासु देहि ।
संसिद्धसमग्गतिवग्गलिंगु । भल्लारउ मुवणि वियड्ढसंगु ।
इय चिंतिवि णियकुलकमलमित्तु । कोक्काविउ तेण कुबेरमित्तु ।
आउच्छिउ तं णीरारुणत्तु । अवरु वि जं सीसि पयग्गु घित्तु ।
तं णिसुणिवि मामें वुत्तु एम । पाणियरत्तत्तणु णिसुणि देव ।

घत्ता—रसगिद्धें घेत्तिउ गिद्धें तीररुक्खि मणि अच्छइ ॥
तहु छायइ पसरियरायइ जणु वणु लोहिउ पेच्छइ ॥२७॥

---

२६. १. MB दंसणि अम्हइं णाहि संति । २. MB भिउडंत । ३. MBK दीणहु । ४. MB कि । ५. MB वावीजलि । ६. B असेसएहिं । ७. MB चिक्खिल्ल° । ८. MB कयलील । ९. MB गुरु° ।

२७. १. MB omits this line । २. MB फरुसें मणेण । ३. MB दिण्णु जेण । ४. B गेहि । ५. MB अवरु वि सीसें पयलग्गु घित्तु । ६. MB घित्तउ ।

२६

हे राजन् (लोकपाल), तुम्हारे पिताने जो मन्त्री रखा है, उसको देखनेसे हमें शान्ति नहीं मिलती। विगलित इन्द्रियोंवाला वह क्या काम देखेगा ? अरे, वृद्धोंको कुछ भी काम नहीं देना चाहिए। वह हम लोगोंकी भृकुटियोंके बीच दृष्टिपथमें न आये। वह सेठ तबतक अपने घरमें रहे। राजा भी कुमार था और मन्त्री भी कुमार था। दीन भी व्यक्ति यौवनमें विकारशील होता है। तब राजाने पण्डितोंकी परम्पराको देखनेवाले वृद्ध मन्त्रीको घर आनेसे मना कर दिया। अपरिपक्व बुद्धि और क्रीड़ा करनेके स्वभाववाला वह राजाधिराज शिशुमन्त्रियोंके साथ दूसरे दिन नन्दनवनमें प्रविष्ट हुआ। वहाँ उसने लाल कान्तिवाला बावड़ी-जल देखा। राजाने हँसकर चपलमतिसे पूछा कि यह पानी किस कारणसे लाल है ? पण्डितोंके द्वारा कही गयी विशिष्ट बुद्धिसे रहित विपुलमतिके पुत्र चपलमतिने प्रत्युत्तर दिया कि बावड़ीके तलमें मणि रखा हुआ है, उसकी कान्तिसे जल लाल दिखाई देता है। तब संशय रहित उन लोगोंने सेकड़ों घड़ोंसे बावड़ीका जल बाहर फेंक दिया। समूची बावड़ी ऐसी दिखाई देने लगी मानो कीचड़के तलभागमें लोटनेसे चंचल, क्रीड़ा करता हुआ सुअर स्थित हो। परन्तु उन्हें माणिक्य उसी प्रकार दिखाई नहीं दिया, जिस प्रकार अत्यधिक मोहसे अन्धे लोगोंको जिनवरके वचन दिखाई नहीं देते। अज्ञान पूर्वक क्लेशसे सिद्धि नहीं होती। वे घर गये। वहाँ मन्त्रीकी बुद्धिकी फिर परीक्षा की।

घत्ता—अत्यन्त गर्वीली प्रणयपूर्वक कोपवाली पत्नी वसुमतिने रात्रिमें पैरोंपर पड़ते हुए प्रेम करनेवाले राजाको सिरमें पैरसे आहत कर दिया ॥२६॥

२७

मण्डलित मुकुटोंकी कान्तिके समान शोभित, प्रभातमें आसन पर बैठे हुए, राजासे उन तरुण मन्त्रियोंने भी कठोर शब्दोंमें कहा कि जिसने तुम्हारे सिरपर लातसे प्रहार किया है, हे राजन्, उसके पैरको काट दिया जाये। यह वचन सुनकर विमलवंशका वह राजहंस अपना मुँह नीचा करके रह गया कि मेरे सिरकी चूड़ामणि, कामदेवकी शरण सुन्दरीका चरण कैसे खण्डित किया जाये ? जिसके घरमें महान् अविवेक रहता है, उसके घरमें लक्ष्मी बड़ी कठिनाईसे निवास करती है। अतः जिसे समग्र त्रिवर्गकी पहचान सिद्ध है, ऐसा वृद्ध संग ही जगमें अच्छा है। यह विचारकर, अपने कुलरूपी कमलके लिए सूर्यके समान कुबेरमित्रको उसने बुलवाया और पूछा, पानीका वह लाल होना और जो सिरमें पादाग्रसे आहत किया गया था। यह सुनकर आदरणीय कुबेरमित्रने कहा—हे देव, पानीका लाल होना सुनिए—

घत्ता—रसके लालची गृद्धके द्वारा छोड़ा गया मणि तटके वृक्षपर स्थित है। उसकी कान्ति फैलनेपर लोग जलको लाल देखते हैं ॥२७॥

२८

गुरुणारीडिंभयघरणु पइहिं सिरिलग्गइ अण्ण ण सउलविहुहिं ।
तुह पुणु जाणवि रोसंकियाइ सिरि चडिउ होही पउ पियाइ ।
तं पुच्छिज्जइ[1] वरणेसरेण ता संथुउ सेट्ठि महीसरेण ।
धणवइइ पइहिं कुरुलोलिणीलि दिट्ठउ पलियंकुरु कण्णमूलि ।
साहंतु व जिणधम्मोवएसु जरदासिइ दूसिउ दइयकेसु ।
तं पेच्छिवि भव्वु कुबेरमित्तु अवरु वि पव्वइउ समुद्दत्तु ।
सुरमहिहरु गंपि सुधम्मजइहिं हूया सुसीसँ[2] सुविसुद्धमइहिं ।
जाया मरेवि मेहारहासि[3] लोयंतियँ[4] सुर बंभंतवासि ।
विउलमइ[5] णाम चारणमुणिंदु पियदत्तइ भुंजाविउ अणिंदु ।
सिसु चिंतिवि पुच्छिउ तवु[6] दुगेज्झु कइयहुं होसइ मुणिणाह मज्झु ।
दाहिणपंचंगुलियउ करग्गि वामइ कणिट्ठु दाविवि णहग्गि ।
गउ मुणिवरु कालें पंच पुत्त लहुएं कुबेरदइएण जुत्त ।
जो सव्वदेउ मुउ[7] सो जि एउ संभूउ पुणु वि पिउ बद्धणेहु ।

घत्ता—कइ णिरहहु तोसियभरहहु जयहु सुलोयण भासइ ॥
सोहंती पहई[8] फुरंती कुंदपुप्फदंती सइ ॥२८॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे जयमहारायसुलोयणाभवसंभरणं णाम एकूणतीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥२९॥

संधि ॥२९॥

२८. १. B पुज्जज्जइ । २. MB सुसीसु विसुद्ध° । ३. MB हिमहारहासि । ४. MB लोयंतिय ते ।
५. MB विमलमइ । ६ MB तउ । ७. MB सुउ । ८. MB पहय ।

२८

अपने कुलके चन्द्र राजाके सिरपर गुरु, बालक और स्त्रीका पैर लगता है अन्यका नहीं। और तुम यह जानकर कि क्रोधसे भरी हुई प्रियाके द्वारा तुम्हारे सिरपर लात मारा गया होगा, उसे तुम्हें श्रेष्ठ नूपुरसे पूजना चाहिए। यह सुनकर राजाने सेठकी प्रशंसा की। धनवतीने केश-राशिसे नीले कर्णमूलमें सफेद बाल देखा, मानो जिनधर्मका उपदेश कहते हुएके समान वृद्धारूपी दासीने पतिके बालको दूषित कर दिया था। यह देखकर भव्य कुबेरमित्र और दूसरा समुद्रदत्त भी प्रव्रजित हो गया और सुमेरुपर्वत पर सुविशुद्ध मतिवाले सुधर्म मुनिके पास जाकर उनके अच्छे शिष्य बन गये। मरकर वे ब्रह्म स्वर्गमें बुद्धिसे महान् लौकान्तिक देव हुए। प्रियदत्ताने विपुलमति नामक अन्तिम चारण मुनीन्द्रको आहार कराया और बच्चेका विचारकर उसने पूछा—हे मुनि-नाथ, मुझे दुर्ग्राह्य तप कब प्राप्त होगा? तब हाथके अग्रभागकी पाँच दायीं अँगुलियाँ और बायें हाथकी कनिष्ठा बताकर वह आकाशमार्गसे चल दिये। तब सबसे छोटे कुबेर दयित सहित उसे समयके साथ पाँच पुत्र हुए। वह सत्यदेव भी मरकर वही यह हुआ है, बद्धनेह और प्रिय।

घत्ता—निष्पाप भरतको सन्तुष्ट करनेवाले जयसे सुलोचना कथा कहती है। प्रभासे विस्फुरित वह कुन्दपुष्पोंके समान दाँतोंवाली वह शोभित है ॥२८॥

इस प्रकार त्रेसठ महापुरुषोंके गुण-अलंकारोंसे युक्त महापुराणमें महाकवि पुष्पदन्त द्वारा विरचित और महाभव्य भरत द्वारा अनुमत महाकाव्यका जय महाराज सुलोचना-भव-स्मरण नामका उनतीसवाँ परिच्छेद समाप्त हुआ ॥२९॥

संधि ३०

अमियमइअणंतमईसईहिं सीलगुणेहिं पसाहिउ ॥
जिणवइगुणवइवरजसवइहिं बंधुवग्गु संबोहिउ ॥ ध्रुवकं ॥

१

लोयवालु सा वसुमइ राणी पउरंदरियहि तियहिं समाणी ।
बारहविहदिक्खाइ समग्गइं बिण्णि वि सावयवइ दिढु लग्गइं ।
खंतिहिं कहियउं धम्मु णिरंतरु अरुहमग्गि लग्गउ अंतेउरु ।
णिच्चुच्छवमंगलणिग्घोसहु ताम कुबेरकंतवणिवासहु ।
चरियामग्गे णिग्गयरायउ जंघाचारणजुयलउं आयउं ।
पियदत्तावरइत्तें णवियउ छुडु जि तेण पंगणि पउ थवियउ ।
ताँ तहिं पक्खिजुयलु संपत्तउ पक्खहिं पहणइ पयरउ भत्तउ ।
दोहिं वि मुणिहिं गुणिहिं जोयंतहं धम्मबुद्धि होउ त्ति भणंतहं ।
रिसि पेच्छिवि भउ सुमरिवि मुच्छिउ महिहि पडंतु णरेहिं णियच्छिउ ।
सलिलें सिंचिउ थियउ सइत्तउ अवरोप्परहुं जि णवर विरत्तउ ।
भरई पक्खि किं कीरइ पक्खिणि कहिं रइवेय महारी पणइणि ।
सरइ संकोंति पुण्णससिकंतें किह जीवमि णिम्मुक्क सुकंतें ।
घत्ता—सोहापुरि वहुवरु एउ चिरु एवहिं दंपइ णहयर ॥
लोलंत पलोयवि धरणियले कउ अलाहु गय मुणिवर ॥१॥

२

वसुमईइ णवपंकयणेत्तइ बिण्णि वि पुच्छियाइं पियदत्तइ ।
चंचुइ पट्टियम्मि संणिहियइं दोहिं मि गयभवणामइं लिहियइं ।
णहयरियहि सकंतु जाणाविउ रइवेयागमु खयरहु दाविउ ।
मा विहडेवि चरह म विरप्पह बिण्णि वि सुहुं भुंजह कंदप्पह ।

MB give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza :—

णाइन्दणरिन्दसुरिन्दवन्दिया जणियजणमणाणन्दा ।
सिरिकुसुमदसणकइमुहणिवासिणी जयइ वाईसी ॥१॥

GK give this stanza as well as तन्त्रीवाद्यैरनिन्द्यैः etc. here for which see note on Samdhi XXIX.

१. १. MB तियहि । २. M सवाणी । ३. MBT °सिक्खाइ । ४. MB कहिउ । ५. MB णेरंतरु । ६. MB पियदत्ता । ७. MB ता तं पक्खिमिहुणु । ८. MB भणइ । ९. MB सुकंति; T सकंति ।

२. १. MB पियदत्तइ । २. MB पट्टयम्मि ।

सन्धि ३०

अमृतमती और अनन्तमती सतियों तथा जिनवती, गुणवती तथा श्रेष्ठ यशोवती आदि द्वारा शीलगुणोंसे प्रसाधित बन्धुवर्गको सम्बोधित किया गया।

१

वह राजा लोकपाल, वह रानी वसुमती, जो इन्द्राणी-जैसी स्त्रियोंके समान थी, बारह प्रकारकी दीक्षासे, वे दोनों श्रावकव्रतके अपने मार्गमें लग गये। शान्ति आर्यिकाने निरन्तर धर्मका आख्यान किया। अन्तःपुर जिनमार्गमें लग गया। इतनेमें जिसमें नित्य उत्सव मंगलका निर्घोष हो रहा है ऐसे कुबेरकान्तके निवासस्थानपर चरियामार्गमें रागसे रहित जंघाचारणयुगल आया। प्रियदत्ताके पति लोकपालने उसे नमस्कार किया, उसने भी शीघ्र उसके आँगनमें पैर रखा। इतनेमें वहाँ दो पक्षी आये, भक्त वे मुनिके चरणोंकी धूल अपने पंखोंसे झाड़ते हैं। दोनों गुणी मुनियोंने देखते हुए 'धर्मबुद्धि हो' यह कहा। ऋषिको देखकर और अपना पूर्वभव याद कर पक्षियोंका वह जोड़ा मूच्छित हो गया। धरतीपर गिरते हुए उसे लोगोंने देखा। पानी सींचे जानेपर जब वे सचेत हुए तो केवल एक दूसरेके प्रति विरक्त हो उठे। पक्षी याद करता है, पक्षिणी क्या करती है। मेरी प्रणयिनी रतिवेगा कहाँ है। पक्षिणी याद करती है कि पूर्णचन्द्रके समान कान्तिवाले सुकान्तके बिना मैं किस प्रकार जीवित रहूँगी?

घत्ता—पहले शोभापुरमें यह वधूवर थे और इस समय नभचर दम्पति हैं। धरतीतलपर पड़े हुए देखकर (और इसे) अन्तराय मानकर मुनिवर चले गये ॥१॥

२

नवकमलोंके समान नेत्रोंवाली प्रियदत्ता और वसुमतीके द्वारा पूछे जानेपर दोनोंने चोंचोंसे लिखे गये गत भवके नामोंको रख दिया। पक्षिणीके द्वारा अपना पति सुकान्त बता दिया गया, और पक्षीके लिए रतिवेगाका आगमन बता दिया गया। "अलग-अलग होकर मत विचरो, एक

वयणें तेण ताइं पुंणु[3] रत्तइं   कणु चुणंति खेलंति पर्सेत्तइं ।
रुप्पयगिरिसमीवि सुरवरगिरि   करिदंसणविरुद्धरुंजियहरि ।
ते तहिं जंघाचारण जइवर   जायवि थक्क तिणाणदिवायर ।
अमयमईहि अणंतमईहि वि   जायवि संजईहिं विहिं तीहिं वि ।
पुच्छिय ते कुसुमसरणिवारा   पारावयसंबंधु भडारा ।
घत्ता—माणवमिहुणुल्लउ तं मरिवि भवसंकडि संदाणिउं ॥
मुणि अक्खइ रक्खइ किं पि ण वि जिह णाणेण वियाणिउं ॥२॥

३

जिह वइसउलि पहूयइं बालइं   रइवेयासुकंतणामालइं ।
जिह जायउ विवाहु जिह णट्ठइं   जिह सामंतहु सरणु पइट्ठइं ।
जिह खलु मग्गलग्गु णिब्भच्छिउ   कण्णकडुयवयणेहिं दुगुंछिउ ।
पालिउ व्रउं जिह सज्जणसत्थें   जिह भउ लद्धउ सुहसामत्थें ।
जिह घरि रिउणा कयउ पलीवणु   जिह वहुवरु पत्तउ पक्खित्तणु ।
इयें जिह जिह साहिउ मुणिणाहें   मयणहरिणविद्धंसणवाहें ।
तिह तिह कंतियाहिं आवेप्पिणु   लोयवालपुरवरि पइसेप्पिणु ।
सुहसंजोयहु सिढिलियसोयहु   साहिउ सयलहु सावयलोयहु ।
घत्ता—इय णिसुणिवि जणवउ धम्मरुइ हूयउ वियंसियवत्तइ[3] ॥
गुणवइजसवइपायंतियइ लइयउ व्रउं मृगणेत्तइ ॥३॥

४

अज्जिय हूई सम्माइट्ठिणि   घरु मेल्लेपिणु धणवइसेट्ठिणि ।
अवर कुबेरसेण रायाणी   दिक्ख लेवि थिय सुट्ठु अदीणी ।
किंकरेण केण वि ण पलोइउ   तं विहिविहियविहाणें चोइउ ।
गयउ कवोयजुयलु सारामहु   कहिं मि भमंतु पुरंतिमगामहुं ।
कणु चंचुइ कड्ढइ णयगीवइ   जाम चरइ किर वइसामीवइ ।
सरदुंदुरसेढामिसभोयणु   णवमहुबिंदु व पिंगललोयणु ।
असुहरतिक्खकुडिलणहपंजरु   उट्टंटुउ तहिं जायउ मंजरु ।
वइविवराउ झत्ति णीसंरियउ[3]   तेण कंठि पारावउ लइयउ ।
पक्खिणि पासिहिं भमिवि झडप्पइ   णियपियपरिहवि णारि वि कुप्पइ ।
चिरभववइरें दसणकरालें   कसमसत्ति खगु खद्धु विरालें ।
घत्ता—मुइ वल्लहि दुहविद्दाणियए विहि बलवंतु पउत्तउ ॥
अप्पउ तणु मण्णिवि रिंछियँए विसदंसहु मुहि घित्तउ ॥४॥

---

३. MB पडिवत्तइं । ४. MB पमत्तइं । ५. MB °विरुद्धे रुंजिय° ।

३. १. MB वउ । २. MB इह । ३. MB विहसिय° । ४. MB वउ मिग° ।

४. १. K भवंतु । २. MB परंतिम° । ३. MB णीहरियउ । ४. K घरियउ । ५. K णारी कुप्पइ ।
६. M कसमसंतु; B कसमसतु । ७. T रिच्छियए ।

दूसरेपर विरक्त मत होओ, दोनों ही कामका सुख भोगो।" इन शब्दोंसे वे दोनों पुनः अनुरक्त हो गये। वे कण चुगते और दूसरेपर आसक्त होते हुए क्रीड़ा करते हैं। तीन ज्ञानरूपी दिवाकरवाले वे जंघाचारण मुनि जाकर सुमेरु पर्वतपर विजयार्ध पर्वतके निकट, जहाँ कि गजोंको देखकर सिंह उनके विरुद्ध दहाड़ते रहते हैं, स्थित हो गये। अमृतमती और अनन्तमती भी और वे तीनों आर्यिकाओंके द्वारा भी जाकर, कामदेवके बाणोंका निवारण करनेवाले आदरणीय मुनिवरसे पारावतके सम्बन्धके विषयमें पूछा।

घत्ता—जिस प्रकारसे वह मानव जोड़ा मरकर भवसंकटमें पड़ा था और जिस प्रकार उन्होंने केवलज्ञानसे जाना था, वह मुनि सब बताते हैं। कुछ भी छिपाकर नहीं रखा ॥२॥

३

किस प्रकार वैश्यकुलमें दो बालक उत्पन्न हुए थे—रतिवेगा और सुकान्ता नामसे। किस प्रकार उनका विवाह हुआ और किस प्रकार भागे, किस प्रकार सामन्त शक्तिषेणकी शरणमें गये। किस प्रकार दुष्ट पीछे लग गया, किस प्रकार उसे डाँटा गया और कर्णकटु अक्षरोंसे निन्दित किया गया। सज्जनकी संगतिसे किस प्रकार व्रतोंका पालन किया और किस प्रकार सुख सामर्थ्यसे जन्म लिया। किस प्रकार शत्रुने उनके घरको जला दिया और किस प्रकार वधूवर पक्षियोनिको प्राप्त हुए? कामरूपी हरिणके विध्वंसके लिए अखेटकके समान मुनिनाथने जिस-जिस प्रकार कहा, उस-उस प्रकार कान्ताओंने आकर और लोकपालके पुरवरमें प्रवेश कर शुभ संयोगवाले शिथिलित स्नेह समस्त श्रावकलोकसे यह सब कहा।

घत्ता—यह सुनकर जनपदकी धर्ममें रुचि हुई। विकसित मुखवाली मृगनयनी प्रियदत्ताने गुणवती और यशोवती आर्यिकाके चरणोंके मूलमें व्रत ग्रहण कर लिया ॥३॥

४

धनवती सेठानी भी घर छोड़कर सम्यक्दर्शनमें स्थित होती हुई आर्यिका हो गयी। और कुबेरसेना रानी भी दीक्षा लेकर अदीन हो गयी। एक बार किसी नौकरने नहीं देखा और विधिके विधानसे प्रेरित होकर कबूतर-कबूतरीका वह जोड़ा घूमता हुआ, उद्यानवाले नगरके सीमान्त ग्राममें चला गया। जबतक वह अपनी गर्दन झुकाकर चोंचसे कण निकालता है और बाड़के समीप चरता है, तभी वह दुष्ट, उन्मत्त (सरछुंदुर और सेठ) के आमिषका भोजन करनेवाले, नवमधुबिन्दुके समान पिंगल आँखोंवाले, अशुभ तीखे और कुटिल नखोंके शरीरवाले बिलावके रूपमें उत्पन्न हो गया। बाड़के विवरसे शीघ्र निकलकर उसने कबूतरको कण्ठमें पकड़ लिया। कबूतरी सब ओरसे घूमकर उसपर झपटती है। अपने पतिके पराभवपर स्त्री भी कुपित हो उठती है। पूर्वजन्मके वैरके कारण दाँतोंसे भयंकर उस बिलावने कसमसाते हुए उस कबूतरको खा लिया।

घत्ता—पतिके मर जानेपर दुःखसे विदारित कबूतरीने विधिको बलवान् कहा और अपनेको तृणवत् समझती हुई उसने साँपके मुँहमें डाल दिया ॥४॥

५

पक्खिहिँ पसुहुं वि पेम्मु पयट्टइ णरहु ण किं विरहेँ मणु फुट्टइ।
पुणु तहिँ पुक्खलवइदेसंतरि जीवदयाइलेण सुहसुंदरि।
रययसेलि खगदाहिणसेढिहि उसिरिहि णयरिहि मोक्खंणिसेणिहि।
दिणयरगइ णिवसइ खयरेसरु तेएं णं पच्चक्खु दिणेसरु।
तहु ससिपहदेविहि हुउ रइवरु तणउ हिरण्णवम्मु णं रइवरु।
तेत्थु जि गिरिवरि उत्तरसेढिहि गउरीविसयभोयपुरुरूढिहि।
चडियउ तहिँ राणउ विज्जाहरु मरुरहु माहवियहि देविहि वरु।
सा रइसेण मरिवि तहिँ पक्खिणि ताहं बिहिँ मि हूई णं जक्खिणि।
धूय पसिद्ध पहावइ णामें रूवें सलहिज्जइ सा कामें।
गयउ कहिं वि णंदणवणकीलइ दिट्ठु कवोयमिहुणु तहिँ लीलइ।
तेण हिरण्णवम्मणामालें परभउ सुमरिवि लिहियउ बालें।
पडि जं वित्तउ जम्मकहाणउं पँक्खिरूपविरइयसंमाणउं।
घत्ता—कैइ पिउणा पवरसयंवरए ताइ मयच्छिइ लक्खिउ॥
पारावयजुयलउ णियणियडे संचरंतु मुणिरिक्खिउ॥५॥

६

णियभवु बुज्झिवि णिवडिय महियलि सिंचिय पाणिएण सिरि उरयलि।
रइसेणाचरि मज्झें सामिय सा रइवरविरहें आयामिय।
कंचुइणा णरवइ विण्णवियउ दुहियहि देहु दुरोएं खवियउ।
होउ सयंवरेण किं किज्जइ आउ आउ खगवइ जाइज्जइ।
दइयइ चित्तपट्टु पट्ठाविउ सो वि ताइ णियहियवइ भाविउ।
मंदेरि जायवि गइरणु मंडिउ फुल्लदामु जं सइं तेँहि छड्डिउ।
सुरगिरि परियंचिवि उद्धाइय खयरहुं अग्गइ कुंउँरि पराइय।
लइयउ तं जाव सुह ण पावइ पुत्तिहि केरी गँइ को पावइ।
जाम जणणु हरिसें कंटइयउ मंतिवयणु अवलोयवि मुइयउ।
खेयरणियरु जाव छुडु जित्तउ ताव हिरण्णवम्मु तहिँ पत्तउ।
घत्ता—पुणु माल पवड्ढिय मंदरहो बिण्णि वि सह धावंतइं॥
दिट्ठइं फणिकिंणरससिरविहिँ तुरिउं पयाहिण दिंतइं॥६॥

५. १. MB उसिरहि। २. MBK सोक्ख°। ३. K चडिउ। ४. MB णं। ५. MB पक्खिणिभवविरइयसंमाणउं; K पक्खिरूवु विरइय°। ६. MB कय।

६. १. MB मंदरु। २. MB जं तहि सइं छंडिउ। ३. MB कुमरि। ४. MB को गइ।

५

जब पशुओं और पक्षियोंमें प्रेम होता है तो मनुष्यका मन क्या विरहसे विदीर्ण नहीं होता ? फिर वहीं जीवदयाफलसे सुन्दर पुष्कलावती देशमें विजयार्ध पर्वतकी दक्षिण श्रेणीमें मोक्ष-की नसैनी उशीरवती नगरीमें आदित्यगति नामका विद्याधर राजा निवास करता था। तेजमें वह मानो प्रत्यक्ष कामदेव था। उसको पत्नी शशिप्रभासे रतिवेग (कबूतर) हिरण्यवर्मा नामक कामदेवके समान सुन्दर पुत्र हुआ। उस पर्वतमें गौरी देश और भोगपुर नगरसे प्रसिद्ध उत्तर-श्रेणीमें वायुरथ नामका विद्याधर आरूढ़ था, जो स्वयंप्रभा नामक विद्याधरीका पति था। वहाँ-पर वह रतिषेणा नामकी पक्षिणी मरकर उन दोनोंसे इस प्रकार जन्मी, मानो यक्षिणी हो। वह कन्या प्रभावतीके नामसे प्रसिद्ध थी। रूपमें उसकी प्रशंसा कामदेवके द्वारा की जाती थी। एक दिन कुमार (हिरण्यवर्मा) नन्दनवनकी क्रीड़ाके लिए कहीं गया हुआ था। उसने देखा कि एक कबूतर-जोड़ा क्रीड़ा कर रहा है। उस युवा कुमारने पूर्वजन्मकी याद कर पट्टपर जो पक्षीरूपमें आचरित सम्माननीय बीता हुआ जन्म कथानक था, वह लिख डाला।

घत्ता—स्वयंवरवाली उस मृगनयनीने अपने प्रियको लक्षित नहीं किया। अपने पाससे जाते हुए उसने एक कबूतर-जोड़ा देखा ॥५॥

६

अपने पूर्वजन्मकी याद कर धरतीपर गिर पड़ी। उसे सिर और उरतलपर सींचा गया। रतिषेणाका जीव मध्यमें क्षीण प्रभावती रतिवर विरहसे पीड़ित हो उठी। कंचुकीने राजासे निवेदन किया कि कन्याकी देह खोटे रोगसे नष्ट हो गयी है। स्वयंवरसे क्या ? हे विद्याधर, आओ-आओ, चला जाये। प्रियने उसे चित्रपट भेजा है जो उसे अपने हृदयमें अच्छा लगा। मन्दिरमें जाकर उसने गति-प्रतियोगिता प्रारम्भ की है। जिस पुष्पमालाको वह स्वयं छोड़ती है, वह सुमेरु पर्वतकी प्रदक्षिणाके लिए दौड़ो, और विद्याधरोंके आगे कुमारी पहुँची, तथा जबतक वह उसे ले नहीं लेती, तबतक सुख नहीं पाती। पुत्रीकी गतिको कौन पा सकता है। जबतक पिता हर्षसे रोमांचित होता है और मन्त्रीके वचनको देखनेके लिए जाता है और जबतक विद्याधर समूह जीत लिया जाता है, तबतक हिरण्यवर्मा वहाँ पहुँचा।

घत्ता—फिर सुमेरु पर्वतसे पुष्पमाला गिरा दी जाती है और दोनों साथ दौड़ते हैं। शीघ्र ही परिक्रमा देते हुए उन्हें नाग, किन्नर, चन्द्रमा और सूर्यने देखा ॥६॥

७

रइवरचरु रइरइसें चोइउ घुलइ माल जहिं तहिं संप्रोइउ ।
तेण पडिच्छिय महिहि पडंती णहयलि खगकामिणि व णडंती ।
दिट्ठी कुसुमावलि अलिधारिणि णं कामें संधिय सरधोरणि ।
दोहिं वि धरियइं चप्पिवि चित्तइं घोलंतइं विवलंतइं णेत्तइं ।
दोहिं मि दिण्णउं दलियफणिंदहु दढलज्जंकुसु मयणगइंदहु ।
गंउ वरु तहिं जोयवि मणहारिणि तावंतरि संठिय पियकारिणि ।
पट्टउ ताइ तासु दक्खालिउ तेण वि तरलच्छीहिं णिहालिउ ।
जोइवि बुज्झिय पक्खिकहाणी एत्तहि सा खगतरुणि पहाणी ।
ससयण पिउहरु पत्त पहावइ जो णाईदहु वण्णहुं णावइ ।
कउ विवाहु बहुतूरणिणायहिं रविगइमारुयरहखगरायहिं ।
दोहिं वि कंताकंतहुं पयहुं पयलियपेवबंधपासेयहुं ।

घत्ता—परियलइ कालु कुलमंडणहं पसरियदिट्ठिवियारहं ॥
दंसणसंभासणगुणविणयदाणदिण्णसिंगारहं ॥७॥

८

अण्णहिं वासरि बे वि रमंतइं पत्तइं गयणुच्छंगि चडंतइं ।
हल्लियघंटाटंकारालउ सिद्धसिहरु णामेण जिणालउ ।
मोहंजालतरुजालहुयासहं तहिं पुज्जिवि पडिमाउ जिणेसहं ।
मुणि वम्महवम्मोहवियारणु पुणु वंदिवि सव्वोसहिचारणु ।
पुच्छिउ णियंय तेहिं जम्मंतरु रिसिणा कहियउ गयउ कहंतरु ।
वणिभवि मायापियरइं तुम्हहं जाइं ताइं एवहिं सुहंकम्महं ।
पुणु संजायइं केत्तिउ सीसइ भवसंसारहु छेउ ण दीसइ ।
जो भवदेवबप्पु चिरु वणिवरु इह उप्पण्णउ सो हउं णहयरु ।
पुव्वणामु सिरिवम्मु पयासिउ रिसि सव्वोसहिचारणु भासिउ ।
गयणगमणु तवतावें सिद्धउ तइयउ णाणु विसेसें लद्धउ ।
पणविवि पयजुयलउ रइसेणहु मुक्कउ दुक्कियदुक्खविहाणहु ।

घत्ता—गुरुवयणकुठारें तिक्खएण भवतरुवरु महं छिण्णउ ॥
विंधंतउ पंचहिं मग्गणहिं मयणु दिसावलि दिण्णउ ॥८॥

---

७. १. MB संपाविउ । २. MB खगकामिणि णिवडंती । ३. G चिघइं । ४. MB गउ वरु जोइवि बहु मणहारिणि । ५. MB दिक्खालिउ । ६. MB रविगय° । ७. MBK °पेम्मबंध° ।

८. १. MB चरंतइं । २. MB मोहमहातरुजाल° । ३. MB तेहिं णियय । ४. K सुकम्महं । ५. MBK °कुढारें ।

७

रतिके हर्षसे प्रेरित, रतिवरका जीव (हिरण्यवर्मा) जहाँ माला गिरनेवाली थी, वहाँ पहुँचा। उसने आकाशमें विद्याधरीके समान नृत्य करती हुई और धरतीपर गिरती हुई उस पुष्प-मालाको ग्रहण कर लिया। भ्रमरोंको धारण करनेवाली पुष्पमाला इस प्रकार दिखाई दी मानो कामने तीरोंकी मालाका सन्धान किया हो। दोनोंने चित्तोंको चाँपकर रख लिया, दोनोंने गिरते हुए और काँपते हुए नेत्रोंको धारण कर लिया, दोनोंने नागराजोंको दलित करनेवाले मदनरूपी गजेन्द्रको लज्जाका दृढ़ अंकुश दिया। तब वर उस सुन्दरीको देखनेके लिए गया, इस बीचमें प्रियकारिणी आकर स्थित हो गयी। उसने उसका पट्ट उसे दिखाया। उसने भी अपनी तिरछी निगाहोंसे उसे देखा। देखकर वह पक्षीकी कहानी समझ गया। यहाँ प्रमुख विद्याधर युवती प्रभावती स्वजनोंके साथ पिताके घर पहुँची। बहुतूर्योंके निनादोंके साथ आदित्यगति और वायु-रथ विद्याधर राजाओंने ऐसा विवाह किया कि नागेन्द्र भी उसका वर्णन नहीं कर सकता। प्रेम-सम्बन्धसे प्रगलित बह रहा है पसीना जिनसे, ऐसे—

घत्ता—कुलमण्डन और प्रसरित दृष्टि विकारवाले इन दोनोंका दर्शन, भाषण, गुणविनय-दान और श्रृंगार करते हुए समय बीतने लगा ॥७॥

८

एक दूसरे दिन क्रीड़ा करते हुए तथा आकाशकी गोदमें चढ़ते हुए वे दोनों हिलते हुए घण्टोंकी ध्वनियोंसे निनादित सिद्ध शिखर नामके जिनालयमें पहुँचे। वहाँपर मोहजालरूपी तरु-जालके लिए हुताशनके समान जिनेश्वरकी प्रतिमाको पूजकर, फिर कामदेवके व्यामोहका विदारण करनेवाले सर्वोषधि चारण मुनिकी वन्दना कर उन्होंने अपने जन्मान्तर पूछे। मुनिने उन्हें बीती हुई कहानी बता दी। वणिक्‌भवमें जो तुम्हारे माता-पिता थे (सुकान्तके अशोक और जिनदत्ता, रतिवेगाके श्रीदत्त और विमलश्री), इस समय शुभकर्मवाले तुम लोगोंके वे ही पुनः माता-पिता हुए हैं। कितना कहा जाये, भवसंसारका अन्त नहीं है। वह बेचारा भवदेवका जीव वणिक्‌वर, मैं यहाँ उत्पन्न हुआ। पहला नाम श्रीवर्मा प्रकाशित हुआ फिर सर्वोषधि चारण कहा गया। तपके प्रभावसे आकाशगमन सिद्ध है और विशेष रूपसे तीसरा अवधिज्ञान मुझे प्राप्त है। पाप दुःखोंका नाश करनेवाले रतिषेण भट्टारकके चरणयुगलको प्रणाम कर मैं मुक्त हुआ।

घत्ता—गुरुवचनरूपी तीखे कुठारसे मैंने संसाररूपी वृक्षको छिन्न-भिन्न कर दिया और पाँच बाणोंसे बिद्ध करते हुए मैंने कामको दिशाबलि दे दी ॥८॥

९

सुहमइ वइ्ढिय रमणिहि रमणहु तं आयण्णिवि गयइं सभवणहु ।
मेहकूडु जोइवि णिव्विण्णउ मारुयरहु पव्वज्ज पवण्णउ ।
पुत्तु मणोरहु रज्जि परिट्ठिउ दिणयरगइ वि जइत्तणि संठिउ ।
थिउ णिब्भउ सत्तंगपयारइ रज्जि हिरण्णवम्मु तहु केरइ ।
णियसुय रइवह तं सुहणिवहहु मणहरसुयहु दिण्ण[1] चित्तरहहु ।
अण्णहिं दिणि गयणंगणि रमियइं धण्णयमालवणंतरि भमियइं ।
सप्पसरोवरचिंधु णिएप्पिणु[2] बिण्णि वि पुव्वजम्मु जाणेप्पिणु[3] ।
आयइं णियपुरवरु हक्कारिउ रज्जि सुवण्णवम्मु वइसारिउ ।
पइ[4] हूवउ सिरिकुवलयचंदहु चरणमूलि सिरिपालमुणिंदहु ।
सहइ हिरण्णवम्मु चारणमुणि उण्णइं पावइ गुणगरुयउ गुणि ।
गुणवइयाइ पहावइ दिक्खिय करणचरणसत्थत्थइं सिक्खिय ।
सव्वइं भव्वइं कम्मुव्विण्णइं[5] ताइं पुंडरीकिणि अवइण्णइं ।
घत्ता—रिसि थिउ पुरबाहिरि[6] पवरवणि अज्जाजुयलविराइउ ॥
जुयमेत्तदिट्ठि वियरंतु तहि पियदत्तहि[7] घरु आयउ ॥९॥

१०

वणिणिइ विणयपणामें रुद्धउ तं भुंजाविउ[1] भोज्जु सुणिद्धउ ।
पुणु आसणु अणुरूवु[2] थवेप्पिणु ताइ पहावइ भणिय णवेप्पिणु ।
किं ण विमाणिउं पइं पइजोव्वणु किं तारुण्णइ संसेविउ वणु ।
हियपरिमियसुमहुरभासिणियइ तं णिसुणेवि भासिउ तवसिणियइ ।
एत्थु जि सज्जणणयणाणंदिरि अम्हइ माइ तुहारइ मंदिरि ।
अण्णहिं भवि होंताइं कवोयइं किं ण वियाणहि विहियविणोयइं ।
रइसेणाचररइवरणामइं कंठसहउक्कोइयकामइं ।
प्राणिदयाहल्लेण[3] मणुयत्तणु पत्तउ दोहिं मि तें णियमिउं मणु ।
अक्खु कुबेरकंतु वरु तेरउ कहिं सो अच्छइ सुहइं जणेरउ ।
सेट्ठिणि भणइ णिसुणि संजमधरि पियकह जिणपयपंकयमहुयरि ।
घत्ता—एक्कहिं दिणि भवणु पराइयहो जिणवरवइणिहि केरउ ॥
मइं भोयणु देवि णमंसियउ पयजुयलउं सुहगारउं ॥१०॥

९. १. MB दिण्णु । २. MB सच्छु सरो°; T सच्छु and gloss यस्य तीरे पूर्वजन्मनि शक्ति पुण्येन रक्षितस्तस्येदं नाम । ३ MB सुयरेप्पिणु । ४. B सइं । ५. MB कम्मुत्तिण्णइं । ६. MB पुरबाहिर । ७. MB पियदत्तहि ।

१०. १. MB भुंजाविवि । २. MB अणुरत्तु । ३. MB पाणि° ।

९

यह सुनकर पति और पत्नीकी सुमति बढ़ गयी और वे अपने घर गये। वायुरथ विद्याधर मेघशिखर देखकर विरक्त हो गया और उसने दीक्षा ग्रहण कर ली। उसका पुत्र मनोरथ गद्दीपर बैठा। आदित्यगति विद्याधर भी जैनत्वको प्राप्त हुआ। उसके सप्तांग प्रकारवाले राज्यमें हिरण्य-वर्मा स्थापित हो गया। अपनी पुत्री रतिप्रभा उसने सुखके समूह मनोहर पुत्र चित्ररथके लिए दे दी। एक दूसरे दिन उन्होंने आकाशके प्रांगणमें रमण किया और धान्यमालक वनके भीतर भ्रमण किया। सर्प सरोवरके चिह्नोंको देखकर और पूर्वजन्मको जानकर दोनों अपने नगर आये। उन्होंने सुवर्णवर्माको पुकारा और राज्यपर प्रतिष्ठित कर दिया। ऋषिकुलवलयके चन्द्र श्रीपाल मुनीन्द्रके चरणमूलमें चारणमुनि होकर पति (हिरण्यवर्मा) शोभित हैं। गुणी गुणोंसे महान् वह उन्नति पाते हैं। गुणवती आर्यिकासे प्रभावती दीक्षित हुई। उसने करणानुयोग और चरणानुयोग शास्त्रोंके अर्थोंको सीखा। कर्मोंसे विरक्त सभी भव्य पुण्डरीकिणीमें अवतीर्ण हुए।

घत्ता—आर्यायुगलसे विराजित मुनि नगरके बाहर प्रवर उद्यानमें ठहर गये। युगमात्र है दृष्टि जिसकी ऐसी आर्या गुणवती विहार करती हुई उस प्रियदत्ताके घर आयी ॥९॥

१०

सेठानीने विनय और प्रणामसे उन्हें रोक लिया और स्निग्ध भोजन कराया। फिर योग्य आसन देकर उसने प्रभावतीसे प्रणाम करके पूछा—"तुमने अपने पतियौवनका तिरस्कार क्यों किया? और तारुण्यमें तुमने वनका सेवन क्यों किया?" यह सुनकर हित, मित और सुमधुर बोलनेवाली तपस्विनीने कहा, "यहींपर सज्जनोंके नेत्रोंको आनन्द देनेवाले इस तुम्हारे ही घरमें, दूसरे जन्ममें हे आदरणीये, हम कबूतर थे विनोद करनेवाले हम दोनोंको (कबूतर-कबूतरी) क्या तुम नहीं जानती? रतिषेणा और रतिवर नामवाले, अपने कण्ठ शब्दोंसे कामको संकेत करनेवाले। जीवदयाके लाभसे हम दोनोंने मनुष्य जन्म पाया और इसीलिए हम दोनोंने अपना मन नियमित कर लिया। बताओ तुम्हारा कुबेरकान्त वर कहाँ है? सुखका जनक वह, इस समय कहाँ है?" इसपर सेठानी कहती है—हे संयमधारिणी और जिनके चरणकमलोंकी मधुकरी, प्रियकी कथा सुनिए।

घत्ता—एक दिन घरपर आयी हुई जिन संन्यासिनीको आहार देकर उनके शुभकारक दोनों चरणोंको नमस्कार किया ॥१०॥

११

जिह पइं तिह महु ताइ पयासिउ णियतवकारणु णिहिलु समासिउ ।
इह रइसेणु णाम आयउ चिरु भूमिविहारत्थिउ सुंदरगिरु ।
णंदणवणि चलंतहिंतालइ तालितालतालूरपियारइ ।
वेल्लीहरि पसुत्तु विज्जाहरु पायंगुट्ठइ लग्गउ विसहरु ।
णाहु वि तहिं जि भमंतु[1] पराइउ धाडिवि फणिवइ वगु अवलोइउ ।
कोएं वंक्षं हंसं ईरिउ गरु गरुलेण व तेणुत्तारिउ ।
हूयउ गाढु बिहिं वि मित्तत्तणु गउ खगु सणयरु वणिवइ सभत्तणु ।
आयउ खेयरु पुणरवि तं वणु अवलोयंविइ बहुणायरजणु ।
पत्तउं कंतइ एत्थु जि अच्छहुं कोडुं लोउ रमंतु णियच्छहुं ।
ता रइसेणहु तणियइ णारिइ महु पिययमु जोइउ गंधारिइ ।
घत्ता—हियउल्लउ कामें णिहएण तहि केरउ णिहलियउं ॥
वरकुंजरचरण चप्पियँउं[2] दिसिहिं जँलु[3] वुच्छलियउं ॥११॥

१२

मणि पवियंभिइ जलयरचिंधइ आउच्छिउ णियवइ पेम्मंधइ[1] ।
कवणु एहु पियँयम[2] किं किं णरु अक्खु[3] जक्खु किं किंणरु विसहरु ।
तेण पउत्तउ मित्तु महारउ वणिउ कुबेरकंतु गुणसारउ ।
एण मंतु गरलंतु विहाविउ फणिणा खद्धउ हउं जीवाविउ ।
बे वि समुँब्भियचीणवियाणइं[4] कंकेल्लीतरुतलि आसीणइं ।
किं रक्खमि तिक्खाइं णहग्गइं फुल्लइं चीणमि पिय तुह जोग्गइं ।
गय पिययम मिच्छुत्तरु संधिवि कंटएण करपल्लउ विंधिवि ।
हा हा उरयएण हउं डंकिय णिवडिय मिच्छाविसवेयंकिय ।
कंतें ओसहसयइं णिउत्तइं पियइ चडावियाइं सिरि णेत्तइं ।
महिलहि को ण भुवणि वेहाविउ कंतु विओय सोय संप्रोविउ[5] ।
गउ तेत्तहि तुरिएं पंजलियरु जहिं अच्छइ उवइट्ठउ महु वरु ।
घत्ता—तेणुत्तउ आवहि मित्त तुहुं विसु सव्वंगइं तावइ ॥
फणिदट्ठी घरिणि महुं तणिय तुह मंतें धुवु[6] जीवइ ॥१२॥

११. १. K मवंतु । २. M चप्पिय । ३. MB जलु व उच्छलियउं ।

१२. १. MB पेमंधइ । २. MB किं पिययम । ३. MB अक्कु सक्कु कि । ४. MB समुब्भियवीणवियाणइं; G समुब्भियवीणुवियाणइं, but gloss समुद्धृतचीनाम्बरध्वजो °वितानो वा । ५. MB संपाविउ । ६. MB धुउ ।

११

जिस प्रकार तुमने, उसी प्रकार उसने अपने तपका कारण थोड़ेमें बताते हुए कहा—पहले यहाँ रतिसेन नामका सुन्दर वाणीवाला विद्याधर भूमिविहारके लिए आया था। जिसमें हिंताल-वृक्ष आन्दोलित हैं, और जो ताली-ताल और तालूर वृक्षोंसे प्यारा है, ऐसे नन्दनवनके लताघरमें वहाँ सोया हुआ था, विषधरने उसके पैरके अँगूठेमें काट खाया। मेरा स्वामी भी घूमता हुआ वहाँ पहुँचा। चिल्लाकर उसने वनमें साँपको देखा। क्रोधसे उसने वं झं हं सं वं क्ष कहा। और गरुड़के समान उसने वह विष उतार दिया। उन दोनोंमें प्रगाढ़ मित्रता हो गयी। विद्याधर अपने नगर और सेठ अपने घर चला आया। वह विद्याधर दुबारा उस वनमें आया। वहाँ बहुत-से नगरजनोंको देखते हुए उसकी कान्ता गान्धारीने कहा कि मैं यहीं रहूँ और कौतुकसे क्रीड़ा करते हुए लोकको देखूँगी। तब रतिषेणा नामक विद्याधरकी स्त्री गान्धारीने मेरे प्रियतम-को देखा।

घत्ता—निर्दय कामदेवने उसके हृदयको विदीर्ण कर दिया, मानो श्रेष्ठ गजके चरणोंसे आहत जल दिशाओंमें उछल पड़ा ॥११॥

१२

मनमें कामदेवके बढ़नेपर प्रेमकी उस अन्धीने अपने पतिसे पूछा—हे प्रियतम, यह कौन है, क्या मनुष्य है, बताओ क्या यह यक्ष है क्या किन्नर है? क्या विषधर है? उसने कहा यह हमारा मित्र है। गुणश्रेष्ठ कुबेरकान्त सेठ। इसे गरुड़ मन्त्र याद था। मुझे साँपने काट खाया था, इसने मुझे जीवित किया। चीनांशुकको धारण किये हुए वे दोनों अशोक वृक्षके नीचे बैठ गये। मैं इन तीखे नाखूनोंका क्या करूँ? हे प्रिय, तुम्हारे योग्य पुष्पोंको चुनती हूँ। प्रियतमा चली गयी, और झूठ उत्तरकी खोजके लिए, और काँटेसे करपल्लवको बेधकर, हा-हा मुझे साँपने काट खाया, इस प्रकार विषकी झूठी वेदनासे अंकित होकर गिर पड़ी। प्रियने सैकड़ों दवाइयोंका प्रयोग किया परन्तु प्रियाने अपनी आँखें सिरपर चढ़ा ली। स्त्रीसे संसारमें कौन प्रवंचित नहीं हुआ। पति वियोग और शोकको प्राप्त हुआ। वह तुरन्त हाथ जोड़कर वहाँ गया, जहाँ मेरा पति (कुबेरकान्त) बैठा हुआ था।

घत्ता—उसने कहा—हे मित्र, तुम आओ। विष सब अंगोंको जला रहा है? मेरी पत्नीको नागने काट खाया है, तुम्हारे मन्त्रसे वह निश्चित रूपसे जीवित हो जायेगी ॥१२॥

१३

मित्तें मित्तहु णियमणु ढोइउ जावहि मुद्धहि पयणु पलोइउ।
पइणा गरलर्लिगु णो लक्खिउं खयरें मउलियणयणें अक्खिउं।
मंदरु जाइवि लहु दिव्वोसहि हउं आणमि तुहुं रक्खइ पियसहि।
एम कहिवि गउ सुंदरु जावहिं सुंदरि झत्ति वइट्ठी तावहिं।
भणइ ण खंजमि सविसभुयंगें हउं खद्धी पइं मुत्तभुयंगें।
जइ मम्मणमंतें तणु अंचहि जइ रइरसजलधारइ सिंचहि।
तो हउं मुवमि विरहविसोहें ता पडिजंपिउ पसमियमोहें।
पीयलु हरिवारुणिफलु जेहउ अंगु वियाणहि मेरउं तेहउं।
वम्महसरहं कयाइ ण भिज्जमि संढु पुरंधिहिं हउं ण रमिज्जमि।
परकुलउत्ती जणणिसमाणी तुहुं पुणु जाय विहिणि मित्ताणी।

घत्ता—रइसेणु वि आयउ मंदरहो वणि पुच्छिवि सकलत्तउ॥
गंधारणयरु सो अप्पणउं णहि विहरंतउ पत्तउ ॥१३॥

१४

तहु पुणु सहुं महिलइ वियरंतहु उप्पलखेडहु बाहि णहि जंतहु।
खलिउ विमाणु दिट्ठु मुणि उववणि वंदिउ भावें दोहिं वि तक्खणि।
पुच्छिउ धम्मु रिसिंदें भासिउ सावयमग्गु विसेसें देसिउं।
गुणवंतेण सुणिम्मलवइणा तहिं परयारु णिवारिउ जइणा।
परयारिउ लोएं णिंदिज्जइ असिधाराकरवत्तहिं छिज्जइ।
तित्ति ण पूरइ जूरइ सज्जणु वड्ढइ कामडाहु पसरइ मणु।
लोयणजुयलु वलइ कयणेहउ परयारियहु सोक्खु कहिं केहउ।
जइ वि लोउ णियकज्जु पैवुक्खइ संकालुहि तं तासु जि दुक्खइ।
मत्थयमुंडणु बिल्लणिबंधणु कुक्खरारोहणु णासाखंडणु।
जारु होइ तिहुयणि अपसंसउ मुउ पुणु दूहंउ दुट्ठु णसंसउ।

घत्ता—इय रिसिवयणाइं सुणंतियए गंधारिहि मणु तप्पइ॥
हा हा मइं दुट्ठइ दुट्ठु किउ इय णियहियइ वियप्पइ ॥१४॥

१५

मणिवि मुणिवरु बे वि पयट्टइं णहयलणिहियपायकंदोट्टइं।
कंतइ गुरुवयणइं चिंतंतिइ णारयविवरवडण संकंतिइ।
कंतहु सइं अहिमाणविणासउ कहिउ कुबेरकंतअहिलासउ।

---

१३. १. MB देहु। २. MB गरुल°। ३. MB मउलियवयणें। ४. MB सव्वोसहि। ५. MB खज्जउं। ६. MB जइ रसजलधारहिं मइं सिंचहि। ७. MB ण काइं वि। ८. MB माय बहिणि।
१४. १. MB महिलहि सहुं। २. MB सावयधम्मु। ३. MB दंसिउ। ४. MB पवुक्कइ; T बुक्कइ ब्रवीति। ५. MB तासु सुडुक्कइ। ६. M दूसउ। ७. MB तणु।
१५. १. BM णहयलि णिहिय°। २. णरयविवरणिवडण। ३. MB विणासिउ।

१३

मित्रने मित्रको अपना मन दे दिया। उसने जाकर उस मुग्धाका मुख देखा। मेरे पतिने विषका कोई चिह्न नहीं देखा, अपनी आँखें बन्द किये हुए विद्याधरने कहा—मन्दराचल जाकर मैं शीघ्र मैं दिव्यौषधि लेकर आता हूँ। तुम प्रिय सखीकी रक्षा करना। यह कहकर उसका प्रिय जैसे ही गया, वैसे ही वह सुन्दरी शीघ्र बैठ गयी। वह कहती है—मुझे विषवाले साँपने नहीं काटा है, मुझे तुम धूर्त भुजंग (विट) ने काटा है। यदि कामदेवके मन्त्रसे शरीरको अभिमन्त्रित्व कर दो, यदि रतिरसको जलधारासे सींच दो तो मैं विरहविषके समूहसे बच सकती हूँ। तब प्रशान्त मोह मेरे प्रियने कहा कि जिस प्रकार इन्द्रवारुणी फल पीला होता है तुम मेरे शरीरको उस प्रकारका समझो। मैं कामके तीरोंसे कभी विद्ध नहीं होता। मैं नपुंसक हूँ, मैं स्त्रियोंसे रमण नहीं कर पाता। दूसरेकी कुलपुत्री मेरे लिए माताके समान है। फिर तुम मेरी बहन और मित्र हो।

घत्ता—इतनेमें रतिषेण भी मन्दराचलसे आ गया। सेठ कुबेरकान्त पत्नी सहित उससे पूछकर आकाशमें विहार करते हुए अपने गन्धार नगर आ गया ॥१३॥

१४

अपनी पत्नीके साथ विहार करते हुए उत्पलखेडके बाहरी आकाशमें जाते हुए उसका विमान स्खलित हो गया। उसने उपवनमें मुनिको देखा। दोनोंने भावपूर्वक उनकी वन्दना की। पूछे जानेपर मुनिने धर्मका कथन किया, श्रावक मार्गका विशेष रूपसे उपदेश दिया। गुणवान् और पवित्र वचनवाले उन मुनिने परस्त्री-सेवनका विशेष रूपसे निवारण किया कि परस्त्री-सेवन करनेवालेकी लोक द्वारा निन्दा की जाती है, असिधारा और करपत्रसे उसका छेदन किया जाता है। उसको तृप्ति नहीं होती और सज्जन सन्तप्त होता है। कामदाह बढ़ता है। मन फैलता है। स्नेह करनेवाले दोनों नेत्र जलते हैं। परस्त्री-सेवन करनेवालेको सुख कहाँ? यद्यपि लोक अपने कार्यकी आलोचना करता है, परन्तु शंका करनेवालेको उससे भी दुःख होता है। सिरका मुण्डन, (बिल्लणि बन्धन) खोटे गधेपर आरोहण, नासिकाका खण्डन, इस प्रकार तीनों लोकके जार अप्रशंसनीय होता है। मरनेपर पुनः दुर्भग, दुष्ट, नपुंसक होता है।

घत्ता—इस प्रकार मुनिके उपदेशोंको सुनते हुए विद्याधरीका मन सन्तप्त हो उठता है। 'हा-हा, मुझ दुष्टाने दुष्ट काम किया।' वह अपने मनमें विचार करती है ॥१४॥

१५

मुनिवरका मान कर, आकाशतलमें अपने चरणकमल रखते हुए वे दोनों भी चल दिये। मुनिके वचनोंका विचार करती हुई और नरक पतनसे डरती हुई कान्ता विद्याधरीने अपने

हउं पाविट्ठ तुहारी दोही मा होज्जउ तियमइ मइं जेही ।
मुइ मुइ जामि देव पावज्जहि उत्तरु दइएं दिण्णु सभज्जइ ।
मणु जं पइं पररइमलमइलिउ तं आलोयणजलपक्खालिउ ।
एवहिं तुहुं महुं सुद्ध महासइ आउ जाहुं ता बहु पडिभासइ ।
जीवदयाघयधारासित्तें सुहपरिणामसमीरपलित्तें ।

घत्ता—घरमोहबहलधूमुज्झिएण जइ तवजलणें दज्झमि ॥
तो तत्तसुवण्णसलाय जिह हउं भत्तार विसुज्झमि ॥१५॥

१६

केम वि चाडुयसयहिं ण थक्की ता णाहेण णियंबिणि मुक्की ।
बेण्णि वि ताइं तेत्थु पावइयइं एउं णयरु विहरंतइं अइयइं ।
थिउ मुणि बाहिरदेसि रवण्णइ घरु आयइ अज्जाइ पसण्णइ ।
जिह जिह सा महु कहिय कहाणी गुज्झरहस्सें चारु विराणी ।
तिह तिह पिययमेण आयेण्णिय णिग्गच्छिवि सा तेण पमेण्णिय ।
भत्तिइ तहिं पणामु विरयंतें थुय गंधारि धीरधी कंतें ।
सव्वहिं जायवि हयसंसारउ वंदिउ सो रइसेणु भडारउ ।
सकुलक्कमु गुणवालहु दिण्णउ लोयवालु पव्वज्ज पवण्णउ ।
पुत्तचउक्कें सहुं भत्तारें णिप्पिहेण तोडियमयमारें ।
लइय दिक्ख बालियवयभारें मोहिय लेहुययरेण कुमारें ।
हउं कुबेरदइएं तेणच्छमि पुत्तहि मुह पंकपहसिउं पेच्छमि ।

घत्ता—गुणवालहु कयमंगलसयहिं भल्लिय कामिणि सेसहो ॥
पुणु दिण्णी ताइ कुबेरसिरि णियकुमारि धरणीसहो ॥१६॥

१७

मा कुबेरपिय तणुरुहु पुच्छिवि इंदियसुहसंबंधु दुगुंछिवि ।
पत्तइं पारावयइं णरत्तणु पेच्छिवि अरुहधम्मचारत्तणु ।
कयलीकंदलकोमलगत्तइ किउ णिक्खवणु तुरिउ पियदत्तइ ।
संतहि दंतहि बहुगुणगणिहि चरणमूलि तहि गुणवइगणिणिहि ।
कयजयवयणावंगालोयण पुणु वि कहाणउं कहइ सुलोयण ।

४. MB पाविट्ठु धिट्ठु तुह दोही । ५. BM पाविज्जहि । ६. MB सुद्धु । ७. M धारोसित्तें ।
८. M तो; B भो ।

१६. १. MB ताइं तेत्थु वि । २. MB इय जिह जिह महु । ३. M धुज्झहहस्यें; B गुज्झहरस्यें । ४. MBK विराणी । ५. M आयाणिय । ६. M पमाणिय । ७. MB पमाणु । ८. MB बालिय° । ९. MB लहुयरेण इह कुमारें । १० M मुहुं महु पहसिउं; B मुहुं पहपहसिउं ।

१७. १. MB कुबेरपिउ । २. MB पेच्छिवि । ३. MB मणुयत्तणु । ४. MB °धम्मु चारुत्तणु । ५. MB कयलीकोमलकंदलगत्तइ । ६. MB पियदत्तइ ।

अभिमानको खण्डित करनेवाली कुबेरकान्तसे सम्बन्धित अभिलाषा (पतिको) बता दी और बोली, "मैं पापात्मा तुमसे विद्रोह करनेवाली हूँ। मेरी जैसी स्त्री संसारमें न हो, हे प्रिय, मुझे छोड़िए, मैं प्रव्रज्याके लिए जाती हूँ।" तब पति अपनी पत्नीके लिए उत्तर देता है—"जो तुम्हारा मन दूसरेके प्रेमरूपी मलसे मैला था वह आलोचनारूपी जलसे प्रक्षालित हो गया। इस समय तुम मेरे लिए विशुद्ध महासती हो। आओ चलें।" इसपर वधू (विद्याधरी) कहती है— "जीवदयारूपी घीसे सिक्त एवं शुभ परिणामरूपी समीर से प्रदीप्त—

घत्ता—घर-मोहरूपी प्रचुर धूमसे रहित, तपरूपी ज्वालासे मैं दग्ध होती हूँ और हे प्रिय, तपी हुई स्वर्णशलाकाके समान मैं विशुद्ध होती हूँ।" ॥१५॥

१६

इस प्रकार वह सैकड़ों मनुहारोंसे नहीं थकी। तब प्रियने उस विद्याधरीको मुक्त कर दिया। वहाँ वे दोनों प्रव्रजित हो गये। और विहार करते हुए इस नगरमें आये हैं। मुनि बाहर सुन्दर स्थानमें ठहरे हुए हैं, और घर आयी हुई आर्यिका (विद्याधरी) ने जिस-जिस प्रकार गुह्य रहस्यसे सुन्दर और विरागिणी कहानी मुझसे कही है, उस-उस प्रकार प्रियतमने उसे सुना और निकलकर उसने उसे प्रणाम किया। भक्तिसे उसे प्रणाम करते हुए प्रियने धीर बुद्धि गान्धारीकी स्तुति की। सब लोगोंने जाकर संसारको नष्ट करनेवाले आदरणीय रतिषेण मुनिकी वन्दना की। उसने अपना कुलक्रम (उत्तराधिकार) गुणपालको दिया और लोकपाल प्रव्रजित हो गया। निःस्पृह मद और कामको नष्ट करनेवाले और व्रतोंके भारका पालन करनेवाले स्वामीने चार पुत्रोंके साथ दीक्षा ले ली। लेकिन मैं सबसे छोटे पुत्र कुमार कुबेरदयित मोहमें पड़कर यहाँ हूँ। मैं प्रभासे प्रहसित पुत्रका मुँह देखती हूँ।

घत्ता—उसे प्रियदत्ता (कुबेरकान्तकी पत्नी) ने दूसरे सभी राजाओंको छोड़ते हुए अपनी कन्या कुबेरश्री कामिनी सैकड़ों मंगल करते हुए दे दी ॥१६॥

१७

वह कुबेरप्रिया अपने पुत्रसे पूछकर, इन्द्रियोंके सुख-सम्बन्धकी निन्दा कर, कबूतर पर्यायसे मनुष्यत्व प्राप्त करनेवाले, अरहन्त धर्मका आचरण करनेवाले (हिरण्यवर्मा) को देखकर, केलेके वृक्षकी तरह कोमल शरीरवाली प्रियदत्ताने शान्त-दान्त बहुत-से गुणोंसे गणनीय (मान्य) गुणवती आर्यिकाके चरणमूलमें तुरन्त संन्यास ले लिया है। जयकुमारके मुखकी ओर अपांगलोचन

तहिं पुरि बहि मसाणि सो जइवरु थक्कु हिरण्णवम्मु लंबियकरु ।
णरवइ पुरु परियणु संखोहिउ मुणि पडिमाजोएं [7] संबोहिउ ।
सत्तमि दियहि पवण्णि पहावइ मुणिचरियाणुय गिरिणिब्बलमइ ।
थिय णिसि[8] णयरपओलिसमीवइ जिणु [9]थुवंति णियमणराईवइ ।
ए[10]त्तहिं जो रिउ वणि पुणु मंजरु सो णरु हूयउ तलवरकिंकरु ।
णिसिहि समागय गये[11]वरगामिणि तासु पासि पुर[12]वणिवइकामिणि ।
सा कुंदलय तेण परिपुच्छिय अज्जु सुइरु सुंदरि कहिं अच्छिय ।

घत्ता—मुणि पडिमाजोएं संठियउ तहु चलणाइं णरिंदें ॥
वंदियइं [13]असेसें पट्टणेण अम्हारएण वणिंदें ॥१७॥

१८

सावयवग्गें वज्जियविग्घें गुणवइजसवइगणणीसंघें ।
सव्वहिं संथुय जइवरपायइं तं पिउवणु मेल्लिप्पिणु आयइं ।
चिरु मुणिणाहहु केरी गेहिणि बु[1]द्धिविसुद्धसीलजलवाहिणि ।
वयधारिणि अत्थवियइ सूरइ एंति एंति थिय णयरदुवारइ ।
दुम्महवम्महसरसंधारी तणुविसग्गु विरएवि भडारी ।
ताइं बे वि पारावयजु[2]म्मइं सेट्ठिगेहि जाणियजिणधम्मइं ।
वणि लद्धइं खद्धइं मंज्जारें[3] जीयइं मणुयइं[4] सुहसंचारें ।
बे वि विरत्तइं धरियचरित्तइं तवतत्ताइं एत्थ संपत्तइं ।
ताहं णाहु गउ[5] वंदणहत्तिइ तेण समागय गरुयहि रत्तिहि ।
ता णिसुणियविसदंसपवंचें भवु[6] संभरियउ तलवरभिच्चें ।
ताइं बे वि जाणवि महु अहियइं मइं जि पुव्वजम्मंतरि वहियइं ।

घत्ता—मिच्छुत्तरु वेसहि वज्जरिवि गउ कोवग्गिपलित्तउ ॥
जहिं अच्छइ संजमधारिणिय तहि पुं[7]रि बाहिरि पत्तउ ॥१८॥

१९

सा जोइवि पुणु मुणि अव[1]लोइउ सिहि मसाणकट्ठहिं मंजोइउ ।
पडियाएण तेण पच्चारिय पाविट्ठेण ते वि धिक्कारिय ।
तुहुं महु पुव्वभवम्मि पलाणी जेण समउ अच्छिय सुहलीणी ।
सो वरइत्तु काइं पइं मुक्कउ अच्छइ तुह र[2]इरमणहु ढुक्कउ ।

७. MB पडिबोहिउ । ८. MB णिसियर° । ९. MB थवंति । १०. MB एत्तहि वइरिउ ।
११. MB वरगय° । १२. M पासि वणिवर पुरि कामिणि; B पासि पुरवणिवरकामिणि ।
१३. MB असेसइं ।

१८. १. MB बुद्ध विसुद्ध° । २. MB जम्मइ । ३. MB मंजारें । ४. MB जायइ मणुएं । ५. MB वंदण-गउ हसिइ । ६. MB भउ । ७. MB पुरबाहिरि ।

१९. १. MB अवलोयउ । २. MB रइमणहो मुक्कउ ।

जिसमें, ऐसी सुलोचना पुनः कहानी कहती है कि उस नगरमें बाहर मरघटमें अपने हाथ लम्बे किये हुए यतिवर हिरण्यवर्मा विराजमान थे। प्रतिमायोगके सात दिन पूरा होनेपर, मुनिने सम्बोधित किया। राजा, परिजन और नगरमें हलचल मच गयी। मुनिचरितका अनुगमन करनेवाली गिरिकी तरह निश्चलमति प्रभावती आर्यिका, रात्रिमें नगरके समीप प्रतोलिमें, अपने मनरूपी कमलमें जिनवरका ध्यान करती हुई स्थित थी। यहींपर वह शत्रु वणिक् (भवदेव) जो बादमें बिलाव हुआ वह मनुष्य होकर नगरका सेवक कोतवाल बना। नगरसेठकी गजवर-गामिनी स्त्री, रात्रिके समय उसके पास आयी। उस स्वर्णलतासे उसने पूछा, "हे सुन्दरी, इतनी देर कहाँ थी।"

घत्ता—(उसने कहा)—मुनि प्रतिमायोगमें स्थित थे, उनके चरणोंकी वन्दना अशेष नगर और हमारे सेठने की ॥१७॥

१८

विघ्नोंसे रहित श्रावक वर्ग, गुणवती और यशोवती आर्यिकाओंके संघ—सबने यतिवरके पैरोंकी संस्तुति की। उन्हें हम मरघटमें छोड़कर आये हैं। पहले जो मुनिनाथकी गृहिणी थी, बुद्धि और विशुद्ध शील गुणकी नदी व्रतोंको धारण करनेवाली आदरणीय वह आते-आते सूर्यके अस्त हो जानेपर नगरके द्वारपर कायोत्सर्ग कर ठहर गयी। उन दोनोंने सेठके घरमें ही कबूतर-कबूतरी जन्ममें जिनधर्मको जाना था। बिलावने उन्हें वनमें पाकर खा लिया। परन्तु पुण्यके योगसे वे मनुष्य हुए। दोनों विरक्त हो गये और उन्होंने चारित्र्य ग्रहण कर लिया। तप तपते हुए वे यहाँ आये हुए हैं। मेरा स्वामी उनकी वन्दनाभक्ति करनेके लिए गया हुआ था, इसीलिए इतनी रात बीत जानेपर मैं आयी। इस प्रकार सुनी है विषदंशकी प्रवंचना जिसने, ऐसे तलवर भृत्यको अपने पूर्वभवका स्मरण हो आया कि अपना अहितकर जानते हुए मैंने पूर्वजन्ममें उन दोनोंका वध किया था।

घत्ता—क्रोधकी आगसे जलता हुआ वह उस वेश्याको झूठा उत्तर देकर वहाँ गया, जहाँपर नगरके बाहर संयम धारण करनेवाली वह आर्यिका स्थित थी ॥१८॥

१९

उसे देखकर उसने फिर मुनिको देखा। और मरघटकी लकड़ियोंमें आग लगायी। वापस आकर उन दोनोंको पुकारा, और पापीने उन्हें धिक्कारा कि "पूर्वभवमें, जिसके साथ सुखमें लीन तुम नष्ट हुई थी, अपने उस वरको तुमने इस समय क्यों छोड़ दिया? तुम्हारा रतिरमण

आउ तुज्झु मेलणउं समारमि एवहिं हउं विवाहु अवयारमि।
एम भणेविणु खंधि चडाविय विरयहु णियडि विरय[3] संप्राविय।
आलिंगइ भणेवि रइलुद्धइं बिण्णि वि एक्कीकरिवि णिबद्धइं।
भीमें भीसणेर्णे खयथत्तिहि घित्तइं चियहि जलंतजलंतहि।
दड्ढइं बिण्णि वि सिमिसिमियंगइं णिग्गिणु णिहणेप्पिणु णीसंगइं।
रसवसवीसढ गंधालित्तउ आवेप्पिणु णियभवणि पसुत्तउ।
णिद्दंधँइयउ जंपइ वेरिउ चंगउ सहुं महिलइ मइं मारिउ।
तं णिसुणिवि वेसइ उवलक्खिउ रविउग्गमि जइजुयलु णिरिक्खिउ।
पेयालइ हुयवहेण पलीविउ राएं पउरयणें सिरु चालिउ।
घत्ता—मणि चिंतिउ ताइ विलासिणिए दुक्किउ कासु कहिज्जइ ॥
इह जम्मि अहव परजम्मि सइं पावें पाउ गिलिज्जइ ॥१९॥

२०

हाहासद्दें रुण्णु णरोहें अप्पाणउ णिंदिउ णरणाहें।
वहकारिहि लोयहिं गरिट्ठउ पायमग्गु पुरि गंपि पइट्ठउ।
खलु णाउं वि रूउ[3] वि पल्लट्टिवि णट्ठउ भयभावेण विसट्टिवि।
एक्कमेक्क खय करणें लइयइं वेण्णि वि मरिवि ताइं पावइयइं।
उप्पण्णाइं सग्गि सोहम्मइ मणिकूडइ विमाणि रुइरम्मइ।
सुरु मणिमालि देवि चूडामणि णं मेहहु सोहइ सोदामिणि।
आउ ताहं मुणि गणणासुद्धइं पल्लइं पंच पमाणणिबद्धइं।
उसिराणयरिहि कयपवणायहु कहिउ सुवण्णवम्मखयरायहु।
केण वि पालियसंजमणियरइं मारियाइं बिण्णि वि तुह पियरइं।
घत्ता—सा देव पुंडरिंकिणि णयरि हुयवहजालहिं डज्झइ ॥
रिसिमारय संगहयारि खलु गुणवालु वि रणि बज्झइ ॥२०॥

२१

तं णिसुणिवि सहुं सेण्णहिं णिग्गउ सो गलगज्जिवि णावइ[1] दिग्गउ।
साहणु सिद्धकूडु संप्राइउ[2] तं सुरमिहुणु वि तहिं जि पराइउ।
देवें देविहि कहिउ कहाणउं तुह तणएण विइण्णु पयाणउं।
अम्हहं मरणु[3] सुद्धि णिसुणेप्पिणु गुणवालहु उप्परि रूसेप्पिणु।
पुरवरु डहहुं पहु संचलियउ अम्हहुं दइववसेण जि[4] मिलियउ।

---

३. MB विरइ संपाइय। ४. B भीसंतेण। ५. M जलंतजलंतिहि; B omits जलंतजलंतहि।
६. M वीसरु। ७. M णिद्दंघउ इय जंपइ। ८. MB वइरिउ। ९. MB हुयवाहें पउलिउ।
२०. १ B गरिट्ठउ। २. MB पुह। ३. M णाउं रूव वि; B णाउं वि रूवें। ४. M कारणें; B करणे।
५. MB पव्वइयइं। ६. MB रहरम्मइ। ७. MB गणिणा। ८. M °णामहु।
२१. १. MB णाइं दिसागउ। २ MB संपाइउ। ३. MB सुद्धि मरणु। ४. M वि।

पास आया हुआ है। आओ मैं तुम्हारा मेल कराता हूँ। इस समय मैं तुम्हारे विवाहकी अवतारणा करता हूँ।" यह कहकर उसने उसे कन्धेपर चढ़ा लिया और विरत (मुनि) के पास विरता (आर्या) को ले गया। आलिंगन करो, यह कहकर रतिलुब्ध उन दोनोंको एक-एक करके बाँध दिया। क्षयको स्थिरता देनेवाली जलती हुई चितामें उस भयंकर भीमने उन्हें डाल दिया। सिकुड़ते हुए वे दोनों जल गये। और वह निर्दय अनासंग (मुनि आर्यिका) को जलाकर रस और मज्जासे विश्रब्ध और गन्धसे दुर्वासित आकर अपने घरमें सो गया। (रातमें) नींदमें सोया हुआ वह बकता है—"अच्छा हुआ महिलाके साथ मैंने दुश्मनको मार डाला।" यह सुनकर वेश्या जान गयी। सूर्योदय होनेपर मुनि युगलको मरघटमें जला हुआ देखा और राजा तथा पुरजनने अपना माथा पीटा।

घत्ता—उस वेश्याने अपने मनमें सोचा कि यह पाप किससे कहा जाये ? क्योंकि चाहे इस जन्ममें हो, या दूसरे जन्ममें, पाप पापको खा जाता है ॥१९॥

२०

हाहाकार कर नरसमूह रो पड़ा। राजाने अपनी निन्दा की। वध करनेवालेको लोगोंने खोजा। वह पापमार्गी नगरमें जाकर प्रवेश कर गया। दुष्टरूप और नाम मिटाकर, भव्यके भावसे काँपकर नष्ट हो गया। एक दूसरे (मुनि और आर्यिकाने) विनाशको करुणाभावसे लिया, वे दोनों ही संन्यासी मरकर सौधर्म स्वर्गमें उत्पन्न हुए, कान्तिसे सुन्दर मणिकूट विमानमें। देव मणिमाली था और देवी चूड़ामणि थी, मानो मेघोंमें बिजली शोभित हो रही हो। उनकी आयु मुनिगणके द्वारा बतायी पाँच पल्य प्रमाण थी। किसीने जाकर उशीरवतीके प्रजाके साथ न्याय करनेवाले, स्वर्णवर्मा नामके विद्याधर राजासे कहा कि संयमसमूहका पालन करनेवाले तुम्हारे दोनों माता-पिताको किसीने मार डाला।

घत्ता—हे देव, वह पुण्डरीकिणी नगरी आगकी लपटोंमें जल रही है, मुनिके घातक संग्रहकारी दुष्ट गुणपालको भी युद्धमें मार दिया गया है ॥२०॥

२१

यह सुनकर सेनाके साथ गरजकर वह चला जैसे दिग्गज हो। सेना सिद्धकूट पर्वतपर पहुँची। वह देवमिथुन भी वहाँ पहुँचा। देवने देवीसे कहानी कही कि तुम्हारे पुत्रने प्रयाण किया है। हे मुग्धे, हम लोगोंका मरण सुनकर और गुणपाल राजाके ऊपर क्रुद्ध होकर नगरवरको

एम्व भणेप्पिणु बिण्णि वि जायइं संजमधर संजमवरकायइं।
आसीणइं वसुहिहि पलियंकें वंदियाइं कुलकुमुयमियंकें।
कंचणवण्णें बिण्णि वि भावें उत्तउं मायामुणिवरदेवें।
किं कुइओ सि पुत्त उवसंतइं अम्हइं अच्छहुं बे वि जियंतइं।
सावउ विरयजुयलु किं मारइ अज्ज वि सो पहु हियइ विसूरइ।
घत्ता—जेणम्हइं पावइं मारियइं सो सव्वत्थ गवेसिउ॥
तणुरुह गुणपालणराहिवेण अप्पउ दुक्खें सोसिउ॥२१॥

२२

जइ वि मुयइं तो वि किर ण मुयइ अम्हइं बेण्णि वि भुंजियअमयइं।
जायइं देवइं दिव्वसरीरइं अणिमामहिमाईहिं गहीरइं।
वार वार भवसुकिउ पसंसिउ सुरमिहुणें णियरूउ पदंसिउ।
कणयवम्मु खमभावें लइयउ देवेंदिण्णभूसणचंचइयउ।
गउ णियवासहु सो खयरेसरु वच्छदेसि सिवघोसु जिणेसरु।
तं वंदहुं संपत्तु सुरेसरु अरुहदत्तु णामें चक्केसरु।
अवरु वि सा अच्छर सो सुरवरु संथुउ संभमेण तित्थंकरु।
जिणेंदिव्वज्झुणिरंजियकण्णइं छुडु छुडु सव्वइं जाम णिसण्णइं।
ता तहिं पच्छइ सयमहरामउ अवइण्णउ सइं मीणइणामउ।
जिणु चक्केसिं पुच्छिउ पायडु किं घरयम्मविहाणें वावडु।
समउ पुरंदरेण किं णायउ देविजुयलु दरिसियमुहरायउ।
केवलणाणपईवें दिट्ठउ चक्कीसहु जिणणाहें सिट्ठउ।
घत्ता—बिहिं मालायारिहिं दिट्ठु वणे वंदिउ मुणि हयकम्मउ॥
कर मउलिकरिवि आयण्णियउ भावें सावयधम्मउ॥२२॥

२३

लइउं वउ घरविहि परिवट्टइ जाहुं जिणिंदभवणु ण पयट्टइ।
उत्तमंगु भत्तिइ णावेप्पिणु देव णमोरहंत पभणेप्पिणु।
बे वि थिवंति चंदरविणयणइं पढमं चिय कुसुमंजलिगयणइं।
एण णिओएं गलियइ कालइ एक्कहिं वासरि लवलिलयालइ।
एक्कहि पाणिपोमि फणि लग्गउ हाहारउ वयणाउ विणिग्गउ।
सहि णियसहियहि पासु पधाइय सा वि भुयंगमेण आसाइय।
विसमविसाणलेण जलजलियइं बिहिं वि सरीरइं महियलि घुलियइं।

---

५. B वसुहहि। ६. MB कंचणवण्णें। ७. M उत्तमु। ८. साविउ।

२२. १. MB मुयाइं। २. MB दिव्व°। ३. GKT p संभवेण इति पाठेऽपि आदरेण। ४. M दिण्णदिव्व°।
५. MB तो। ६. M विण्णायउ। ७ MB णारिजुयलु।

२३. १. MB लइयउं। २. B घर घर°। ३. MB जाहं।

जलानेके लिए यह निकला है, और दैवके वशसे यह हम लोगोंके लिए मिल गया है। यह कहकर वे दोनों मुनि और आर्यिका बन गये और धरतीके आसनपर बैठ गये। अपने कुलरूपी कुमुदके चन्द्र स्वर्णवर्माने दोनोंकी भावपूर्वक वन्दना की। तब माया मुनिवरदेवने कहा—"हे पुत्र, तुम कुपित क्यों हो, हम दोनों तो जीवित हैं। वह श्रावक राजा मुनियुगलको क्या मार सकता है? वह राजा (गुणपाल) तो आज भी हृदयमें दुःखी है।

घत्ता—जिस पापीने हम लोगोंको मारा है उसको तो सर्वत्र खोज लिया गया। हे पुत्र, गुणपाल राजाने अपनेको शोकसे सुखा डाला है ॥२१॥

२२

यद्यपि हम लोग मर गये हैं तो भी मरे नहीं हैं, हम दोनों अमृतका भोग करनेवाले दिव्य शरीरवाले एवं अणिमा-महिमा आदिसे गम्भीर देव हुए। बार-बार उन्होंने संसारके पुण्यकी प्रशंसा की, और उन्होंने अपने रूपका प्रदर्शन किया। स्वर्णवर्माने क्षमाभाव धारण किया। और देव द्वारा दिये गये आभूषणोंसे अपनेको विभूषित किया। वह विद्याधर राजा अपने निवासके लिए चला गया। वत्सदेशमें शिवघोष जिनवर हैं उनकी वन्दनाके लिए देवेन्द्र आया। और अरुहदत्त नामका चक्रवर्ती। और भी, वह अप्सरा तथा वह देव। समीचीन उपशम भावसे उसने स्तुति की। जिनेन्द्र भगवान्की दिव्यध्वनिसे जिनके कान रंजित हैं ऐसे सब लोग जब बैठे हुए थे, तभी वहाँ बादमें इन्द्रकी शची और मेनका नामक स्त्रियाँ अवतरित हुईं। चक्रेश्वर अरुहदत्तने जिनसे प्रकट पूछा कि इन्होंने कौन-सा गृहकर्म विधान किया है, अपने मुखरागको प्रकट करनेवाला यह देवयुगल इन्द्रके साथ क्यों नहीं आया? तब केवलज्ञानरूपी दीपकसे देखी गयी बात जिननाथने चक्रवर्तीसे कही।

घत्ता—माला बनानेवाली इन दोनोंने वनमें कर्मको नष्ट करनेवाले मुनिको वनमें देखा, और उसकी वन्दना की। दोनों हाथ जोड़कर भावपूर्वक श्रावकधर्म सुना ॥२२॥

२३

उन्होंने यह व्रत लिया कि तबतक घरके कामसे निवृत्ति रहेगी कि जबतक जिनेन्द्र भवन नहीं जातीं। अपने सिरको भक्तिसे झुकाकर, देव-अरहन्तको नमस्कार कहकर वे दोनों चन्द्र और सूर्य हैं नेत्र जिसके ऐसे गगनको सबसे पहले मालाएँ अर्पित करतीं। इस नियमके साथ उनका बहुत-सा समय चला गया। एक दिन चन्दनलता-घरमें एक करकमलमें नागने काट खाया, उसके मुँहसे हा-हा शब्द निकला। सखी अपनी सखीके पास दौड़ी, वह भी साँपके द्वारा काट

दोहिं वि ऍरवेयण्हइं सरंतिहिं विहुव इंदागमणु मरंतिहिं ।
भोयाकंखइ करिवि णियाणउं कद्धउं सुरवइदेवीठाणउं ।
धरणिणाहु जुहु जुहु उप्पण्णउ तेण समागयाउ सुरकण्णउ ।
एयउ विण्णि वि णियवइपच्छइ पयहु केरउ अच्छइ कच्छइ ।
अज्जि वि णिवडिउ तणुजुयलुल्लउं लोएं जोइउ गयजीवल्लउं ।

घत्ता—कइ कहइ सुलोयण वहु जयहो भरहचरणणवियंगहो ॥
कंतीइ पयावें दुज्जयहो पुप्फयंतगुणतुंगहो ॥२३॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे जिणवित्तपुप्फंजलिफलं णाम तीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ ३० ॥

संधि ॥ ३० ॥

४. MB गर° । ५. MK सहंतिहिं; T सरंतिहिं । ६. MB भोयाकंख करेवि । ७. M गुणचंगहो ।

ली गयी। विषम विषकी आगसे जलते हुए उनके शरीर धरतीपर गिर पड़े। किंचित् वेदनासे जिनेन्द्रकी याद करते और मरते हुए इन्द्रका आगमन देखा। भोगकी आकांक्षासे निदान कर इन्होंने इन्द्रकी देवियोंका स्थान ग्रहण किया। हे राजन्, ये अभी-अभी उत्पन्न हुई हैं इसी कारणसे ये दोनों सुरकन्याएँ अपने पतिके पीछे आयीं। इनका गतजीव तनुयुगल आज भी पृथ्वीपर पड़ा हुआ है। लोगोंने उसे देखा।

घत्ता—इस प्रकार सुलोचना भरतके चरणोंमें अपना शरीर झुकानेवाले तथा कान्ति और प्रतापसे अजेय पुष्पदन्तके (सूर्य-चन्द्र) के गुणोंसे ऊँचे उस जयसे कहती है ॥२३॥

त्रेसठ महापुरुषोंके गुण और अलंकारोंवाले इस महापुराणमें महाकवि पुष्पदन्त द्वारा
विरचित और महाभव्य भरत द्वारा अनुमत महाकाव्यका जिनशिव पुष्पांजलि
फल नामका तीसवाँ परिच्छेद समाप्त हुआ ॥३०॥

संधि ३१

जिणवयणइं आयण्णिवि णियहियवल्लइ भण्णिवि ॥
मालइमालामालिउ सहुं कंतइ भणिमालिउ ॥ ध्रुवकं ॥

१

गउ सिरिमाणणु ण[1]वंकमलाणणु ।
णहि विहरंतउ का[2]णणु पत्तउ ।
उण्णयतालउ धण्णयमालउ ।
णाउं पसिद्धउ महिरुहरिद्धउ ।
हंसहिं धवलिउ चक्कहिं मुहलिउ ।
चलजलहल्लिउं कमलहिं फुल्लिउं ।
गयमयसामलु केस[3]रपिंगलु ।
पत्तहिं णीलिउ भमरहिं कालिउ ।
दिट्ठउ मणहरु सप्पं[4]सरोवरु ।
मणि विप्फुरियउ भव[5] संभरियउ ।
कय[6]रिसिसेवें भासिउं देवें ।
घत्ता—आसि जम्मि संचियधणु हउं सुकंतु वणिणंदणु ॥
तुहुं रं[7]इवेगपियारी होंती घरिणि महारी ॥१॥

२

दीसइ पुरि एह मुणालयइ जहिं हूई बिहिं वि विवाहरइ ।
णे[1] धरियइं कह व चोरंचलइ उट्टेंटउ लग्गउ पच्छलइ ।
इह प्राणे[2]हरणभयविहडियइं धावंतइं बिण्णि वि णिवडियइं ।
इह तुह पयलोहिउं पयलियउं इह महु उप्परियणु वियलियउं ।
इह कंटइ लग्गउ कंचुयउ इह दोहं मि देहकंपु हुयउ ।
एहु सो सरवरु खगभूसियउ जसु जलेण देहु आसासियउ ।
एत्थेत्थु जाम सो धरइ खलु तावेत्थु जि दिट्ठउ पव[3]लु बलु ।
सो सत्तिसेणु राणउ सुयणु संभरहि ण किं तुहुं हलि सुयणु ।
पुव्विल्लउ जम्मु णिहालियउ ता देविइ सिरु संचालियउ ।
इय वयणु[4] वियारिउ जाम [5]जहिं रिसि एक्कु णिरिक्खिउ ताम तहिं ।
अमरें विहुणेप्पिणु सिरकम[6]लु पुणु जंपिउ वण्णपंतिसरलु ।

---

१. १. B णं कमला° । २. MB काणणि । ३. M केसरि । ४. MB सच्छ° । ५. MB भउ । ६. B कयसिरिसेवें । ७. MBK रइवेयपियारी ।

२. १. MB णउ धरिय । २. MB पाण° ।३. MB पवर । ४. वण्णु । ५. M तहिं । ६. M °कवंलु ।

सन्धि ३१

१

जिन-वचनोंको सुनकर और अपने हृदयमें मानकर मालतीकी मालासे शोभित मणिमाली देव अपनी कान्ताके साथ गया। नवकमलके समान मुखवाला और श्रीको माननेवाला वह आकाशमें विहार करता हुआ, जिसमें ऊँचे तालवृक्ष हैं, ऐसे धान्यकमाल नामक काननमें पहुँचा, जो जगमें प्रसिद्ध और वृक्षोंसे समृद्ध था। हंसोंसे धवलित और चक्रवाकोंसे मुखरित था। उसने सुन्दर सर्पसरोवर देखा, जो चंचल जलसे आन्दोलित, कमलोंसे पुष्पित, गजमदसे श्यामल, केशरसे पिंगल, पत्तोंसे नीला और भ्रमरोंसे काला था। वह अपने मनमें चौंक गया, पूर्वजन्मकी उसने याद की। मुनिकी सेवा करनेवाले देवने कहा—

घत्ता—पूर्वजन्ममें मैं सुकान्त नामका वणिक् पुत्र था, धनसंचित करनेवाला। और तू रतिवेगा नामसे मेरी प्यारी घरवाली थी ॥१॥

२

यह मृणालवती नगर दिखाई देता है, जहाँ दोनोंका विवाह-प्रेम हुआ था। किसी प्रकार चोरांचलसे पकड़ा-भर नहीं था, और वह गुण्डा पीछे लग गया था। प्राणोंके हरणके भयसे विघटित, दौड़ते हुए हम लोग यहाँ गिर पड़े थे। यहाँ तुम्हारे पैरोंका खून गिरा था। यहाँ ऊपरी वस्त्र गिर गया था। यहाँ कंचुकसे काँटा लगा था। यहाँ हम दोनोंको कम्प उत्पन्न हुआ था। पक्षियोंसे विभूषित यह वह सरोवर है जिसके जलसे देह साफ होती है। यहाँपर वह दुष्ट जब हमें पकड़ना चाहता था, तो इतनेमें उसने वहींपर एक बल सेना देखी। वह सज्जन शक्तिषेण राजा था। हे सखी, क्या तुम्हें उसकी याद नहीं आ रही है। जब उसने पूर्व दिखला दिया, तब देवीने अपना सिर हिला दिया। जबतक उसने ये शब्द कहे तबतक उसने एक मुनिको देखा। देवने अपना सिर कमल हिलाकर, शब्दों और पंक्तियों सहित यह बात कही।

घत्ता—बेण्णि वि रमणरसड्ढइं जेण णिहेलणि दड्ढइं ॥
पारावयभंवु पत्तइं खद्धइं णिग्गयरत्तइं ॥२॥

३

पुणु उप्पण्णइं विज्जाहरइं हुणियाइं मसाणइ मुणिवरइं ।
भवदेवें बिडालउ तलवरउ जो होंतउ चिरु दुक्कियणिरउ ।
सो एवहिं जायउ एहु जइ उज्झहुं संसारु विचित्तगइ ।
परिभावहुं एयहु तणिय मइ किं रूसइ किं अम्हहं खमइ ।
इय जंपिवि हयवम्महसरहु आसण्णु णिसण्णउ जइवरहु ।
कय वंदण पुच्छिय धम्मविहि रिसि भासइ सुय सुयणाणणिहि ।
सत्थें सहुं लेसासंख मुणि ए एंति पपुच्छहि तव गुणि ।
हउं किं पि ण याणउं णवसवणु किं देवहु करमि धम्मसवणु ।
कयंगाहहु तियसहु णउ रहिउ पुणु तेण तासु तिजगु वि कहिउ ।
जिह जीवाजीवपुण्णगइउ जिह बज्झिवाउ पावयमइउ ।
जिह आसवसंवरणिज्जरइं जिह बंधमोक्खभावंतरइं ।
तिह मुणिणा सयलु पयासियउ तं णिसुणिवि तियसें भासियउ ।
पइं लइउ सिसुत्तणि तवयरणु भणु वइरायहु कारणु कवणु ।
घत्ता—तं णिसुणिवि हयरायइ मउगंभीरइ वायइ ॥
केवलिकहियउ वइयरु देवहु अक्खइ मुणिवरु ॥३॥

४

वरसिहराऊढरमियखयरि अत्थीह पुंडरिंकिणि णयरि ।
तहिं कुंभोयरु णिवसइ वणिउ णामेण भीमु णंदणु जणिउ ।
उव्विण्णउ णिलयहु णिद्धणहु हउं कीलइ गउ णंदणवणहु ।
जइ वंदिवि सावयवउ गहिउं घरु आयहु वप्पें णउ सहिउं ।
परवहियम्मेणुण्णिहियहो वउ किं सुंदरु दालिद्दियहो ।
जं दिण्णउं अप्पहि तासु सुय आवेहि जाहुं लहु दीहभुय ।
ताएण सहत्थें पेल्लियउ मुणिवासहु हउं पुणु चल्लियउ ।
परमारउ परधीदव्वहरु परमम्मविहट्टणु अलियसरु ।
लुद्धु वि पहि बद्धु णियच्छियउ जणणें एक्केक्कउ पुच्छियउ ।
तेहिं वि अक्खिउं णियणियचरिउं हिंसालियवयणहिं परियरिउं ।

७. MB °भउ ।

३. १. MB भवदेउ । २. MB मुणि । ३. K याणमि । ४. B समणु । ५. MB किय° । ६. MB तवचरणु ।

४. १. MB °वउ लयउ । २. BM °णुण्णिवयहो; G णुण्णिदियहो and gloss निद्रारहितस्य; K णुण्णिदियहो but corrects to °पुण्णिहियहो; T उण्णिहियहो । ३. MB वउ । ४. MB पुणु हउं । ५. MB read in place of this line: पावहरु अलियभासिरउ बेणु, परमहिलारउ मणमइलरेणु; T मणमइलरेणु मनसि मलं पापं रेणुरिव ज्ञानदर्शनावरणलक्षणं रजः ।

घत्ता—जिस कारणसे रमणरसमें दक्ष वे दोनों अपने घरमें जला दिये गये। पारावत जन्मको प्राप्त हुए बाहर जानेके प्रेममें अनुरक्त वे मार्जारके द्वारा (बिलाव द्वारा) खा लिये गये थे ॥२॥

३

फिर हम विद्याधर उत्पन्न हुए और हम मुनिवर आगमें होम दिये गये। भवदेव, मार्जार और कोतवाल, जो कि प्राचीन समयसे पापनिरत था, वह इस समय यति हो गया है, इस विचित्र गतिवाले संसारको बलानेके लिए। चलो इसकी बुद्धिकी परीक्षा करें कि यह हमसे क्रुद्ध होता है, या हमें क्षमा करता है। इस प्रकार विचारकर कामदेवके तीरोंको नष्ट करनेवाले यतिवरके आसनके निकट आकर वे बैठ गये। उन्होंने वन्दना की और धर्मकी विधि पूछी। मुनि कहते हैं—हे पुत्र, श्रुतज्ञानके निधि गुणी यह लेश्यासंख मुनि संघके साथ आ रहे हैं इनसे तत्त्व पूछो। मैं कुछ भी नहीं जानता, मैं नवश्रमण हूँ। देवके लिए मैं क्या धर्मश्रवण कराऊँ। पर आग्रह करनेवाले देवसे वह बच नहीं सका। तब उसने फिर उससे त्रिजगका कथन किया। जिस प्रकार जीव-अजीव, पुण्य गतियाँ, जिस प्रकार बढ़ी हुई पापबुद्धि, जिस प्रकार आस्रव-संवर और निर्जरा, जिस प्रकार बन्ध-मोक्ष और जन्मांतर हैं, वह उस मुनिने सब प्रकार कथन किया। यह सुनकर देव बोला—आपने बचपनमें तपश्चरण ग्रहण कर लिया है, उस वैराग्यका क्या कारण है।

घत्ता—यह सुनकर रागको नष्ट करनेवाली मृदु और गम्भीर वाणीमें वह मुनिवर केवलीके द्वारा कहा गया पूर्व वृत्तान्त उस देवको बताते हैं ? ॥३॥

४

जिसके शिखरोंपर आरूढ़ होकर देवता रमण करते हैं, वहाँ ऐसी पुण्डरीकिणी नगरी है। उसमें कुम्भोदर नामका बनिया निवास करता था। उसका भीम नामका पुत्र उत्पन्न हुआ। निर्धन घरसे विरक्त होकर मैं क्रीड़ाके लिए नन्दन वनमें गया। यतिकी वन्दना कर मैंने श्रावकव्रत स्वीकार कर लिये, घर आनेपर बापने यह सहन नहीं किया। दूसरोंके भारको ढोनेके कर्मसे निद्रा रहित दरिद्रके लिए क्या व्रत सुन्दर होता है ? हे पुत्र, जिसने ये व्रत दिये हैं उसीको सौंप दो। हे दीर्घबाहु, आओ जल्दी चलें।" पिताके अपने हाथसे प्रेरित मैं पुनः मुनिके निवासके लिए चला। दूसरेका हिंसक, परस्त्रीका अपहरण कर्ता, दूसरेके मर्मका उद्घाटन करनेवाला, झूठ बोलनेवाला, और लोभीको भी, रास्तेमें बँधा हुआ देखा। पिताने एक-एकसे पूछा। उन्होंने भी अपना-अपना चरित बताया कि जो हिंसा और झूठ वचनोंसे घिरा हुआ था।

घत्ता—जेँण जीवकुलु हिंसिउ जेँण असच्चु भासिउ ॥
जेँण परव्वसु हियउ जसु मणु परवहुरत्तउ ॥४॥

५

जो लोहकसाएं भावियउ सो कवणु ण विहुरेँ तावियउ ।
मइं भणिउं तायें एयइं वयइं मइं गहियइं वंदिवि रिसिपयइं ।
एएँ वयविवरंमुहु बद्ध जिह हउं रोएं बज्झमि जणण तिह ।
तं णिसुणिवि पिउणा इच्छियउ मइं देसचरित्तु पडिच्छियउ ।
गय बिण्णि वि णयरुज्जाणवरु पणविउ मुणि भुवणाणंदयरु ।
तहु वयणें वणिवरु उवसमिउ वरधम्मि जिणिंदसेट्ठि रमिउ ।
दोगेंचें किं वर करमि तवु किं णासमि लद्धउ मणुयभवु ।
मइं एमें णएण समुज्झियउ पिउहत्थहु अप्पउ मेल्लियउ ।
तसथावरजीवहं कयदयइं उद्धरियइं पंचमहव्वयइं ।
घत्ता—कयफणिसुरणरसेवहु पायमूलि जिणदेवहु ॥
दूसहदुक्खणिरंतरु णिसुणिउं णियजम्मंतरु ॥५॥

६

महु तिहुयणणाहेँ ईरियउ पइं वणि मिहुणुल्लउ मारियउ ।
णिसि चिरु भवदेवें विप्पिएण होंतेण कालकंदलपिएण ।
पुणु तं[3] चि वि जुयलउं लक्खियउं मज्जारें होइवि भक्खियउं ।
जइयहुं ताइं जि तवतत्ताइं पइं धरिवि हुयासणि हित्ताइं ।
तइयहुं होंतो सि तलाउ तुहुं ओसहिगुणेण णट्ठो सि लहुं ।
गुणवालें तुहुं अण्णेसियउ कह कह व ण जमउरि पेसियउ ।
आइवि अण्णेत्थ वासु रइउ सो णरवइ हुउ जं पावइउ ।
पइं पुणरवि णयरि पवेसु कउ अंजणगुणेण दिवाउ हउं ।
लोयहु केरउ धणु चोरियउ पउरें रायहु पुक्कारियउ ।
तें आरक्खियखलु गरहियउ तेण वि पडियंजणु साहियउ ।
तुहुं विज्जुचोरु दिट्ठउ धरिउ पइं वित्तणिवासु वि वज्जरिउ ।

---

६. MBK परस्सु विहित्तउ and gloss in MK on विहित्तउ विशेषेण हृतम्; T परस्सु वि परद्रव्यमपि ।

५. १. M reads this line as: मइं गहियइं वंदिवि रिसिपयइं, मइं भणिउं ताइ एयइं वयइं । २. MK ताइ । ३. MB वयइं । ४. MB ए. । ५. MB पावें । ६. MB दोगत्तें किंकर । ७. T एण णएण । ८. MB दूसहु ।

६. MBKT रिसि and gloss in T रिसि है भीमपुने । २. M °कंदलि° । ३. MBT तं चिय जुयलुल्लउं खियउं । ४. K हुयासें णिहित्ताइं । ५. MB अण्णत्थ । ६. MB हुयउ पव्वइउ । ७. MB कयउ । ८. MB हुउ; T हुअ ।

घत्ता—जिसने जीवकुलकी हिंसा की है, जिसने असत्य वचन कहा है। जिसने परधनका अपहरण किया है, और जिसका मन परवधूमें अनुरक्त है ॥४॥

५

"जो लोभ कषायसे अभिभूत हैं, वह कौन है, जो दुःखसे सन्तप्त नहीं हुआ।" मैंने कहा, "हे पिता, मैंने यही व्रत मुनिके चरणोंकी वन्दना करके ग्रहण किये हैं। ये लोग जिस प्रकार व्रतोंसे विमुख होकर बँधे हुए हैं, हे पिता, उसी प्रकार मैं रागसे बँधा हुआ हूँ।" यह सुनकर मेरे द्वारा स्वीकृत अणुव्रतोंकी पिताने इच्छा की। हम दोनों नगरके उद्यानवरमें गये और विश्वके आनन्द करनेवाले मुनिको प्रणाम किया। उनके वचनसे वणिग्वरको उपशान्त किया। वह जिनेन्द्र द्वारा उपदिष्ट गृहस्थ धर्मका पालन करने लगा। दरिद्रसे क्या? अच्छा है मैं तप करूँ। प्राप्त मनुष्य जन्मको क्यों नष्ट करूँ? मैंने इस प्रकार न्यायसे कहा, और पिताके हाथसे अपनेको मुक्त कर लिया। त्रस और स्थावर जीवोंके प्रति दया करनेवाले मैंने पाँच महाव्रतोंको ग्रहण कर लिया।

घत्ता—जिनकी सेवा सुर और नर करते है ऐसे जिनदेवके पादमूलमें असह्य दुःखोंसे निरन्तर भरपूर, अपने जन्मान्तरोंको मैंने सुना ॥५॥

६

मुझ (भीम) से मुनिनाथने कहा कि तुमने वनमें एक जोड़े (सुकान्त और रति वेगा) को मारा है रात्रिमें। जब तुम अप्रिय विनाश और कलहके प्रिय भवदेव थे। फिर तुमने उस जोड़ेको देखा और बिलाव होकर खा लिया। और जब वे लोग तप तप रहे थे, तब तुमने पकड़कर उन्हें आगमें डाल दिया। उस समय तुम कोतवाल थे। औषधिके गुणसे तुम शीघ्र नष्ट हो गये। राजा गुणपालने तुम्हें खोजा और किसी प्रकार तुम्हें यमपुरी नहीं भेजा। तुमने जाकर किसी दूसरी जगह अपना घर बसाया। वह राजा गुणपाल जब प्रव्रजित हो गया तो तुमने पुनः नगरमें प्रवेश किया और अंजनगुणसे तुमने दृष्टिके संचारको रोक लिया, (अदृश्य हो गये) तथा लोगोंका खूब धन चुराया। पौरने राजासे पुकार मचायी। उसने आरक्षक कुलकी निन्दा की। तब आरक्षक कुलने प्रतिअंजनकी सिद्धि कर ली। तुम विद्युच्चोरको उन्होंने देख लिया और पकड़ लिया। तुमने धनकी जगह बता दी।

घत्ता—कयरमणीयणकीलणि कंचणयारणिहेलणि ॥
पइं णिहियाइं जियक्कइं हरिवि सत्त माणिक्कइं ॥६॥

७

तं मंदिरु दाविउ णिवणरहुं करवालकोंतकंपणकरहुं[2] ।
सोण्णारु[3] वि मइं हक्कारियउ मग्गिउ ण देइ विहिवारियउ ।
पहुणा सो पुच्छिउ[4] भोयणउं तं घरणिहि भासिवि लंछणउं ।
आणाविय मणि गेहे णिहिय वणिमालइ ओलक्खिवि गहिय ।
जिम्व खाहि छाणु जिम देहु धणु जिम्व विसहहि मल्ल मुट्ठिहणणु ।
इय विमइहि दंडु वियारियउ मल्लें घायहिं ओसारियउ ।
गोमउ वि ण भक्खेहुं सक्कियउ बसु ढोयइ चित्ति चवंकियउ ।
पडिवाडिइ सो तिण्णि वि करिवि दुम्मइ दुग्गइ पत्तउ मरिवि ।
तुहुं पुणु चंडालहु ढोइयउ ओउ लइयउ तेण ण घाइयउ ।
कुद्धउ दोहिं मि पहु घणतिमिरि दोण्णि वि बंधिवि[10] घत्तिय विवरि ।
[11]पइं भणिउं पाण प्राणहं हरणु [12]हउं संप्राविउ किं णउ मरणु ।

घत्ता—ता चंडालें भासिउं[13] णिसुणहि कम्मु दुविलसिउं ॥
जं संसारइ पत्तउं मइं णियदेहें मुत्तउं ॥७॥

८

इह होंतउ गुणवालउ णिवइ राणी कुबेरसिरि सच्चवइ ।
पुरई वसु णामें धीरमण सच्चवियहि भायर तिण्णि जण ।
गेरुयत्तें सरिस मेरुगिरिहि एक्कु जि बंधउ कुबेरसिरिहि ।
अच्छंतहं ताहं तेत्थु सघरि णिवकरिवरिंदु कीलंतु सरि ।
वणि समवसरणि जिणदेवझुणि आयण्णवि जायउ झत्ति गुणि ।
अवलंबिउ हिंसविरत्तियउ जिउ जोयवि सणियउं दिण्णु पउ ।
अविसुद्धउ गासु ण अहिलसइ गयवालउ महिवालहु दिसइ ।
करि कवलु ण गिण्हइ प्राणपुत्त ता राएं पहिउ कुबेरपिउ ।
तें कलपिंडउ दरिसावियउ तं ण णियइ करि वरभावियउ ।
पुणु अण्णु वि सुद्दु पयच्छियउ तो हत्थिदेण पडिच्छियउ ।

७. १. M °णराह; B णरहं । २. M °कराहं; B करहं । ३. M सोणारु; B सुण्णारु । ४. MBK पुच्छिउ । ५ MBK मणि मणिगणि णिहिय । ६ M मल्लि । ७. MB मयल्लहिं । ८. MB चवंकियउ । ९. MB वउ; K वउ but व्रउ in second hand । १०. MB घल्लिय बंधिवि । ११. M मइं पभणिउं पाणु पाणहरणु; B मइं पहणिउं पाणु पाणहरणु । १२. MB संपाइउ । १३. MB भासियउं । १४ MB दुविलसियउं ।

८. १ MB गुरुयत्तें । २. MB हिंसविरत्ति जिउ । ३. MB जोयवि सणियउं पहि दिण्णु पउ । ४. MB पाणपिउ । ५. MB करिवरु भावियउ । ६. MBK सुद्दु ।

घत्ता—जहाँ रमणीजन क्रीड़ा करती हैं, ऐसे स्वर्णकारके घरमें तुमने सूर्यको जीतनेवाले सात माणिक्य हरणकर रखे थे ॥६॥

७

तलवार और भालोंसे जिनके हाथ काँप रहे हैं, ऐसे राजपुरुषोंको वह घर बता दिया। मैंने सुनारको भी खूब पुकारा। विधिसे निवारित वह माँगने पर भी हीरे नहीं देता। राजाने भोजनकसे पूछा कि उसकी गृहिणीको अभिज्ञान चिह्न बताकर घरमें रखे हुए मणि ले आओ। या तो किसी प्रकार गोबर खाओ या सब धन दो, या पहलवानोंका मुष्टि प्रहार सहो। इस प्रकार विमति (सुनार) के लिए दण्ड सोचा गया। मल्लने आघातोंसे उसे हटा दिया, वह गोबर भी नहीं खा सका, अपने चित्तमें चौंककर वह धन ढोता है। प्रतिवादीके द्वारा तीन काम कराये जाकर, वह विमति मरकर दुर्गतिको प्राप्त हुआ। तुम फिर चण्डालके पास ले जाये गये। उसने व्रत ले रखा था, इसलिए उसने मारा नहीं। राजा दोनोंसे नाराज हो गया। दोनोंको बँधवाकर उसने निविड़ अन्धकारवाले विवरमें डलवा दिया। तुमने कहा—हे चण्डाल, प्राणोंका हरण करनेवाले मरणको मैं क्यों नहीं पहुँचाया गया ?

घत्ता—तब चण्डालने कहा—दुर्विलसित कर्मको सुनो कि जो मैंने संसारमे पाया है और अपने शरीरसे भोगा है ॥७॥

८

यहाँ गुणपाल नामका राजा था। उसकी रानी कुबेरश्री और सत्यवती थी। पृथुधी और वसु नामक, धीरमनवाले उसके दो भाई थे। कुबेरश्री का एक ही भाई था, जो गुरुत्वमें सुमेरु पर्वतके समान था। जब वे अपने घरमें रह रहे थे तब राजा करिवर सरोवरमें क्रीड़ा कर रहा था। वनमें समवसरणमें जिनवरकी ध्वनि सुनकर वह शीघ्र गुणी हो गया। उसने हिंसासे निवृत्तिका सहारा ले लिया। जीव देखकर, वह धीरे-धीरे पग रखता, अविशुद्ध कौर की वह इच्छा नहीं करता। तब महावत राजासे कहता है कि प्राणप्रिय गज कौर नहीं खाता। तब राजाने कुबेरप्रियसे कहा।, उसने उसे मांसका पिण्ड बताया। उत्तम विचारवाला गज उसे देखता तक नहीं। फिर उसे खूब अन्न दिया गया, तो उस गजराजने उसे स्वीकार कर लिया।

घत्ता—वारणु दुण्णयवारउ हूयउ अणुव्वयधारउ ॥
इय मइवंतु वियाणिउ वणि पाणहु संमाणिउ ॥८॥

९

अण्णहिं दिणि णरणाहहु तणउ णडु णट्टमालि णवतोरणउ ।
घरु आयउ णच्चाविय दुहिय रसविब्भमहावभावसहिय ।
पुच्छिय राएं विरइयतिलय णामेणुप्पलमाला विलय ।
मयणाहिविसेसुब्भंतियए वणिवइसरूउ चिंतंतियए ।
मुद्धइ णीराउ पजंपियउ राएं णियहियइ वियप्पियउ ।
णियघरु जाएवि वणीसरहु वेसाइ णिउंजिय दूइ तहु ।
सा सुहएं पडिवयणेण हय पणयंगणरयहु णिवित्ति कय ।
संबोहिय सहियइ हंसगइ दुल्लहलंभेसु म करहि रइ ।
दुम्महवम्महमग्गणवहिय ता जंपइ पवरविलासिणिय ।
सहि वट्टइ चित्तु दुसंथवउ संभूयउ वल्लहु णवणवउ ।
हलि पंचमु सरेंसु समालवहि जइ सूहउ कह व ण मेलवहि ।
तो मरउं णिरुत्तउं कहिउ मइं असमक्खि रुवेवउं माइ पइं ।
घत्ता—सहि पभणइ अट्ठमदिणि थक्कइ जिणभवणंगणि ॥
हियवइ अरुहु धरेप्पिणु कायविसग्गु करेप्पिणु ॥९॥

१०

तइयहुं तुंहु संचियझाणरसु उव्वाइवि आणमि सो अवसु ।
इय तेहिं बिहिं वि आलोइयउ तो अट्ठमिणसु पराइयउ ।
थिउ ओलंबियकरु धीरु जहिं आलिइ जाएप्पिणु तुरिउ तहिं ।
उव्वाइवि आणिवि बालियहे पिउ अप्पिउ उप्पलमालियहे ।
मुद्धाइ सुरयविहि सयलु कउ वरु थक्कउ णावइ कट्ठमउ ।
हे णीरसत्तु दुव्वोल्लियउ जहिं अच्छिउ तहिं पुणु घल्लियउ ।
तं राएण वि आयण्णियउं वणिवरहु थिरत्तणु मण्णियउं ।
उवहसिय वेस णर परिहरिवि घरि थक्की बंभचेरु धरिवि ।
घत्ता—लूयासुत्तें बज्झइ मसउ ण हत्थि णिरुंज्झइ ॥
वेसहि जडयणु णिवडइ विउसहु तहिं मणु विहडइ ॥१०॥

---

७. MB अइमइ° ।

९. १. MB add before this the following lines : पुणु णिवएं तूसिवि दिण्णु वरु, सेट्ठि पउत्तु आणंदयरु; अच्छउ (M अच्चउ) वरु थवणीराय महु, जइया मग्गेसमि देसि पहु । २. MB पणियंगण° । ३. MB मग्गणवणिया; K °वणिय° । ४. MB °बिलासिणिया । ५. MB सरु सुसमा° । ६. MB सूहउ णउ महु मेलवहि । ७. MB मरमि । ८. MB काउविसग्गु ।

१०. १. MB तहु संचिय । २. MB तावट्ठमि° । ३. MB थिय । ४. MB वीरु । ५. M आवेप्पिणु । ६. MB अप्पउ । ७. MB हो णीरसु त्ति । ८. MB याणियउं । ९. M विरुज्झइ ।

घत्ता—वारण (गज) दुर्जयका निवारण करनेवाला और अणुव्रतोंका धारण करनेवाला हो गया है, इस प्रकार उसे बुद्धिमान् जाना, और सेठका प्राणसे भी अधिक सम्मान किया ॥८॥

९

दूसरे दिन राजाका नवतोरणक नाट्यमाली नट घर आया। और उसने रसविभ्रम हाव और भावोंसे सहित अपनी कन्यासे नृत्य करवाया। तब राजाने किया है तिलक जिसने ऐसी उत्पलमाला नामक वेश्यासे पूछा। कामरूपी सर्पके विषसे उद्विग्न और सेठका स्वरूप, अपने मनमें सोचती हुई उस मुग्धाने राजासे जो कुछ कहा उसने उसे अपने मनमें रख लिया। अपने घर जाकर उस वेश्याने उस सेठके घर दूती नियुक्त कर दी। वह, उस सुभग (सेठ) के प्रतिवचनोंसे आहत हो गयी। प्रणतांग नरकसे उसकी निवृत्ति की। सखीने उस हंसगामिनीको समझाया कि दुर्लभ लभ्योंमें प्रेम मत करो। तब दुर्लभ कामदेवके बाणोंसे आहत वह प्रवर विलासिनी कहती है, "हे सखी, चित्त दुःसंस्थित है। वह मेरा नया-नया प्रिय हुआ है। हे सखी! तुम पंचमकी तान गाओ, यदि वह प्रिय किसी प्रकार नहीं मिलाती हो। मैंने कह दिया कि मैं निश्चयसे मरती हूँ। तुम मेरे परोक्षमें रोओगी।

घत्ता—सखी कहती है कि आठवें दिन वह जिनभवनके आँगनमें अपने हृदयमें जिनवरको धारण कर कायोत्सर्ग धारण करता है ॥९॥

१०

"तब संचित किया है ध्यानरस जिसने, उसे उठाकर मैं अवश्य ले आऊँगी।" इस प्रकार उन दोनोंने आलोचना की। इतनेमें आठवाँ दिन आ गया। वह धीर जहाँ अपने हाथ लम्बे किये हुए स्थित था, सखीने तुरन्त जाकर उसे उठा लाकर बालिका उत्पलमालाके लिए समर्पित कर दिया। उस मुग्धाने कामकी सब चेष्टाएँ की परन्तु वर स्थित रहा, जैसे काठका बना हो। उसने यह दुर्वचन कहा कि हे नीरसत्व! वह जहाँ था, उसे वहीं स्थापित कर दिया। यह बात राजाने भी सुनी और वणिक्वरकी दृढ़ताकी सराहना की। नरको छोड़नेके लिए वेश्याका उपहास किया गया। वह ब्रह्मचर्य धारण कर अपने घरमें स्थित हो गयी।

घत्ता—कोलिक सूत्रसे मच्छर बाँधा जा सकता है, हाथी नहीं रोका जा सकता। वेश्यामें मूर्खजन गिरते हैं विद्वान्का वहाँ मन खण्डित हो जाता है ॥१०॥

११

तलवरसुउ अवरु वि मंतिसुउ मोयालउ णिवमोइणिहि सुउ ।
तहि मत्तमहंगयगामिणिहे एए घरु आया कामिणिहे ।
एक्कु जि एक्कु दक्खालियउ भयभावें मणु संचालियउ ।
परिवाडिइ दिण्णवयणणियल मंजूसहि पइसारिय सयल ।
पिहिइं वि तहि विहिणा आणियउ रईमग्गिरु तरुणिइ भाणियउ ।
जो दिण्णउ सुकियसास रसहि महु तणउ हारु पइं णियससहि ।
सो आणेप्पिणु महु देसि जइ तो देमि हउं मि तुह रमणरइ ।
मंजूस सक्खिकय गउ घरहु बीयइ दिणि उग्गमि दिणयरहु ।
जिह हारु तेण उच्छवि गहिउ जिह लोहिहुं पुणरवि रहिउ ।
सुरयाकंखइ पडिवण्णुं जिह रायहु वित्तंतु पउत्तु तिह ।
माणिणिइ मंति ओहामियउ णिज्जीवसक्खि आणावियउ ।

घत्ता—गहियंगारयहत्थहिं दासिहिं भणिउं समत्थहिं ॥
फुडु मंजूसि समासहि मा हुयवहमुहि पइसहि ॥११॥

१२

तोमायसवलयविहूसियए सहसा घोसिउ मंजूसियए ।
पडिवण्णु हारु गयदियहि पइं तुहुं कट्टु कट्टु किं भणहि मइं ।
दे देहि विहूसणु सुंदरिहे मा पडहि मंति णारयदरिहे ।
उप्पण्णु चोज्जु णियसिरु धुणिउं कहिं तरु चवंति पहुणा भणिउं ।
परधणहरगारउ साडियउ मंजूसहि मुहुं उग्घाडियउ ।
ते तिण्णि वि तहिं णिग्गय कुविड णारिहि के के णउ मलिय जड ।
णरणाहें पुच्छिय सच्चवइ सा भणइ भडारी सुद्धमइ ।
पिहिविहि अलद्धकंचणधवहु मइं हारु समप्पिउ बंधवहु ।
घत्ता—खलु दुव्वयणिहिं दोच्छिवि ता समंति णिब्भच्छिवि ॥
महिवइणा आणाविउ तहि भूसण देवाविउ ॥१२॥

१३

आणंदु पवड्ढिउ माणिणिहे मणि रोसु रायचूडामणिहे ।
तें दंडणु अणु पवियप्पियउ असहंतें एम पयंपियउ ।
भोइणि तलवर मंतिहि तणय तिण्णि वि धाडह दूसियविणय ।

११. १. MB णिवमोयणिहे । २. MB °महागय° । ३. MB पिहिविवि । ४. MB रउ मग्गिरु तरुणिय । ५. MB देहि । ६. K देंवि । ७. MB पडिदिण्णु । ८. M मणि णियए; B माणिणियए । ९. MB मंजूस । १०. M पयसहि ।

१२. १. MB ता आयस° । २. MBK गइ दिवहि । ३. MB महिवइ । ४. MBK भूसणु ।

१३. १. MB ते दंडणाणु परियप्पियउ; (B पवि°) ।

११

कोतवालका पुत्र, एक और मन्त्री-पुत्र तथा विलासी राजाकी रखैलका पुत्र, ये मतवाले महागजके समान गतिवाली उस वेश्याके घर आये। उसने एकको एक दिखलाया और डरकी भावनासे उनका मन चकित कर दिया। क्रमसे उसने वचनोंकी शृंखला देकर, सबको मंजूषामें बन्द कर दिया। भाग्यके द्वारा पृथुधी भी वहाँ लाया गया। रतिकी याचना करनेवाले उससे युवतीने कहा—"जो तुमने पुण्यरूपी धान्यका आस्वाद लेनेवाली अपनी बहनके लिए मेरा हार दे दिया है, यदि वह लाकर तुम मुझे दोगे, तो मैं भी तुम्हें रतिरमण दूँगी।" मंजूषाका साक्ष्य बनाकर पृथुधी घर गया। दूसरे दिन सूर्यका उद्गम होनेपर जिस प्रकार उसने उत्सवमें हार ग्रहण किया था और जिस प्रकार लोभसे पुनः वह ठगा गया और सुरतिकी आकांक्षासे जिस प्रकार उसने दे दिया, उस प्रकार सारा वृत्तान्त राजासे कह दिया। उस मानिनीने मन्त्रीको नीचा दिखा दिया, वह निर्जीव साक्षी—गवाह (मंजूषा) ले आयी।

घत्ता—तब समर्थ दासियोंने अपने हाथोंमें अंगारे लेकर कहा—हे मंजूषे! थोड़ेमें साफ-साफ कहो, आगके मुखमें मत जाओ ॥११॥

१२

तब लोहेके वलयोंसे विभूषित मंजूषाने घोषणा की कि गत दिवस तुमने हार देना स्वीकार किया था। तुम कठोर-कठोर यह मुझसे क्या कहते हो? सुन्दरीका आभूषण दे दो। हे मन्त्री, तुम नरककी घाटीमें मत पड़ो। राजाको आश्चर्य हुआ। उसने अपना माथा पीटा और कहा क्या कहीं काठ भी बोलता है। मंजूषाका मुँह खोल दिया गया, परधनका हरण करनेवाला नष्ट हो गया। वे तीनों विट उसमें-से निकले। स्त्रियोंके द्वारा कौन-कौन जड़-बुद्धू नहीं बनाये जाते? राजाने सत्यवतीसे पूछा। शुद्धमति आदरणीय वह स्वीकार करती है जिसे स्वर्णध्वज प्राप्त नहीं है ऐसे अपने भाई पृथुधीको मैंने हार दिया था।

घत्ता—तब उस दुष्टकी दुर्वचनोंसे भर्त्सना कर और अपने मन्त्रीको डाँटकर राजाने वह आभूषण बुलवाया और उसे दिलवा दिया ॥१२॥

१३

मानिनीका आनन्द बढ़ गया। परन्तु उस राजश्रेष्ठके मनमें क्रोध बढ़ गया। बादमें उसने दण्डकी कल्पना की और इसे सहन न करते हुए उसने कहा, "रखैल, तलवर और मन्त्रीका पुत्र ये

सिरकमलु लुणइ पुहइहि तणउं ता वणिवरु चवइ सुहावणउं ।
जइयहुं परिणामु विहावियउ जइयहुं कुंजरु मुंजावियउ ।
तइयहुं जो[2] पइं सइं दिण्णु तरु सो अज्जु वेहि णिव संतियरु ।
ए परदेसहु मा पिंडवहि[3] पहु वि मा खग्गें खंडवहि ।
ता तहिं धरणीसें किउं करुणु वारिउ विदेसवियेरणु मरणु ।
वणिवयणु णरिंदें जं कियउ तं पिहिविचित्तु रोसंकियउ ।
उवयारु खलहु दोसें सरिसु फणिदिण्णउं दुद्धु वि होइ विसु ।
संचिंतइ[5] सो मारमि मरमि सेट्ठिहि णिग्गहु अवसें करमि ।

घत्ता—पुणु गयणें णइतीरए तेण तुसारसमीरए ॥
विज्जाहरकरवियलिय अंगुत्थलिय णिहालिय ॥१३॥

१४

अंगुलियइ कय सुहदाइणिय ता खयरु पलोयइ मेइणिय ।
किं जोयहि मंतें पुच्छियउ तेणुत्तउं इह हउं अच्छियउ ।
महु कामरूवधरि मुद्दडिय एत्थेत्थु मित्त कत्थइ पडिय ।
णं[1] पियमम णाहासिक्खविय तें तहु सा विहसिवि दक्खविय ।
पुणु मग्गिय[2] खयरें दिण्ण तहो संतुट्ठउ गउ णियमंदिरहो ।
लहुयउ भायरु वसु सिक्खविउ मुद्दइ कुबेरपिउ सो जि किउ ।
एक्कासणि चडियउ राणियहे सव्ववइहि धम्मवियाणियहे ।
सा[3] पेक्खइ णिययसहोयरउ जणु पेक्खइ वेणि अयज्जणिरउ[4] ।
पिसुणें पुहवीसहु विण्णविउं परमेसर तुह कलत्तु रमिउं ।

घत्ता—णवजोव्वणमयमत्तें[5] धुउ धणवइयहि[6] पुत्तें ॥
मा परु[7] चरु संजोयहि जाइवि अप्पणु जोयहि ॥१४॥

१५

मायावइसत्तविलंबियउ[1] मुद्दइ डिंभउ सिरि चुंबियउ ।
दुप्पिच्छमच्छरुक्कोयणहिं[2] दिट्ठउ राएं सइं लोयणहिं ।
ण वियाणिउ कवडरूवरयणु किउ भिउडिभंगभंगुरवयणु ।
घरु जाइवि रायहु पेसणिण जमदूएण व जमसासणिण ।
पिहिं[3] वी चारित्तमहिड्डियउ पडिमाइ परिट्ठिउ कड्डियउ ।

२. MB पइं जो महु दिण्णु । ३. MBT पट्टवहि । ४. MB °विरयणु । ५. MB चिंतइ सो मारमि पुणु मरमि । ६. MB ठाइवि ।

१४. १. MB कंपियमइणा हासें खविय । २. B मग्गिवि । ३. M सो । ४. MB वणि णिवभज्जरउ । ५. K धणजोव्वण° । ६. M पियदत्तहि । ७. M वर जर ।

१५. १. MB °वइसत्तु । २. MB °क्कोवणहिं । ३. MB पिहिविवि चरित्त°; K पिहिवें चारित्त° ।

तीनों दूषितविनय हैं, इन्हें निकाल दिया जाये। मन्त्रीके पुत्रका सिर काट लो।" तब वह सेठ सुहावने स्वरमें कहता है—"जब मैंने परिणामका विचार किया था और हाथीको भोजन कराया था, उस समय तुमने जो वर मुझे दिया था, हे राजन्! शान्ति करनेवाला वह वर आप आज मुझे दें। इनको परदेश न भेजें, इसको तलवारसे खण्डित न करें।" राजाने इसपर करुणा की और देश निकाला और मृत्युदण्डको उठा लिया। राजाने जो सेठका कथन मान लिया, उसने मन्त्री पृथुधीको कुपित कर दिया। उपकार भी दुष्टके लिए दोषके समान होता है। नागको दिया गया दूध विष ही होता है। वह सोचता है कि मरूँगा या मारूँगा, सेठका प्रतिकार अवश्य करूँगा।

घत्ता—फिर जब वह हिम शीतल नदी किनारे गया हुआ था। वहाँ उसने विद्याधरके हाथसे गिरी हुई एक अँगूठी देखी ॥१३॥

१४

सुखदायिनी उसे उसने अपनी अँगुलीमें पहन लिया। इतनेमें विद्याधर धरती देखता है। मन्त्रीने पूछा—तुम क्या देखते हो? उसने उत्तर दिया—"मैं यहाँ था। मेरी कामरूप धारण करनेवाली अँगूठी, हे मित्र, यहीं कहीं गिर गयी है, मानो जैसे पतिके द्वारा नहीं सिखायी गयी प्रियतमा हो।" तब उसने वह अँगूठी हँसकर उसे दिखायी और पुनः उससे माँगी। विद्याधरने वह अँगूठी उसे दे दी। वह सन्तुष्ट होकर अपने घर गया। उसने अपने छोटे भाई वसुको सिखाया, उसने अँगूठीसे कुबेरप्रिय बना दिया। वह धर्मको जाननेवाली सत्यवती रानीके एकान्त आसनपर चढ़ गया। वह उसे अपना सगा भाई समझती है, लोग उसे अकार्य करता हुआ सेठ दिखाई देता है। किसी दुष्टने राजासे निवेदन किया, हे परमेश्वर, तुम्हारी स्त्रीसे रमण किया है—

घत्ता—नवयौवन मदसे मत्त धनवतीके पुत्रने निश्चय से। किसी दूतको मत भेजो खुद जाकर देखो ॥१४॥

१५

उस मुग्धाने उस मायावी वणिक्त्वको प्राप्त उस बालकको सिरपर चूम लिया। दुर्दर्शनीय ईर्ष्यासे उत्कण्ठित नेत्रोंसे राजाने स्वयं उसे देखा। वह नहीं जान सका कि यह कपटरूपकी रचना है। भौंहोंकी भंगिमासे उसका मुख टेढ़ा हो गया। पृथुधीने भी घर जाकर राजाके आदेशसे, यमशासनसे यमदूतके समान, चारित्र्यकी महाऋद्धिसे सम्पन्न प्रतिमायोगमें स्थित सेठको

वणिवइं मारहुं णेवावियउ उप्फालें जणु मेलावियउं ।
जूरइ सयवइ कुबेरसिरि हा किं चलु हूयउ मेरुगिरि ।
उण्हउ ससहरु रवि सीयलउ हा किं जायउ धम्महु पलउ ।
अहवा लइ एउं होइ जइ वि तहु भव्वहु सीलु सुदुघु तइ वि ।
तहिं अवसरि सो चंडालयहु अप्पिउ तोलियकरवालयहु ।

घत्ता—पाणें झत्ति विमुक्की वणिगलकंदलि ढुक्की ।
खग्गलट्ठि जमदूई सियहारावलि हूई ॥१५॥

१६

साहु त्ति भणिवि पणवियपयए पउमासणु किउ पुरदेवयए ।
सोवण्णभूमि मणिमंडविय तहु पाडिहेरसिरि णिम्मविय ।
णिक्करुणु साहु जो णिम्महइ भूएहिं णिबद्धउ सो पुहइ ।
अवरेक्कहिं मच्छरणिब्भरहिं णिद्दिवि सिरि चूरिउ टक्करहिं ।
अण्णेकइं वेवद्धाइयइं जहिं णरवइ तहिं संभाइयइं ।
बहु दिव्वहु अमरिसु वड्ढियउ पहु पायहिं धरिवि णियड्ढियउ ।
सो भणइ काइं मइं दोसु किउ भासइ पिसायगणु धम्मेहिउ ।
मुद्दापवंचु पररूवगइ सुहिवंधणु परकलत्तविरइ ।
गुणिवंधणु रायहु भिण्णमइ तं तोसिय पणविवि सयवइ ।
पइवय कुललच्छि कुबेरसिरि उवसामिवि गरहिवि णिययसिरि ।
गउ तहिं जहिं अच्छइ वइसवइ मउलियकरु सो पत्थिउ चवइ ।

घत्ता—पिसुणकवडु ण वियक्किउं मइं पावें किउं ढुक्किउं ॥
खमहि वप्प जं दूमिउ कसताडणहिं किलामिउ ॥१६॥

१७

वणि भणइ पुराइउ कम्मु महु णिक्कारणि जं कुइओ सि तुहुं ।
तं णासमि एवहिं तउ करमि णउ तुज्झुप्परि मच्छरु धरमि ।
पिउ भणिवि सभवणहु आणियउ णाहेण इट्ठु बहु माणियउ ।

---

४. MB add after this the following lines :—

पुणु हट्टहु मज्झें चालियउ सव्वेंहि जणेंहि णिहालियउ ।
णिज्जंतउ पेक्खिवि जणु रुवइ कु वि थामि थामि धाहउ मुयइ ।
कु वि सवइ राउ कु वि पुहइभउ सुंदरु सुसीलु दुहु पावियउ ।
जो दुरएहिं तुरएहिं जंतु चिरु जाणहिं जंपाणहिं गुणपवरु ।
उद्दहणु वेम वड्ढिउ जणेण रोवंतें सयलें परियणेण ।
सो एवहिं चरणहिं चरइ किह दुक्कम्महिं पायउ पुरिसु जिह ।

१६. १. M णिक्करणु । २. MB सिरु । ३. MB अण्णेक्कें । ४. MB संपाइयइं । ५. M वम्महिउ ।

१७. १. MB read this line as : णउ तुज्झुप्परि मच्छरु धरमि, तं णासमि एवहिं तउ करमि ।

निकाला। उसे मारनेके लिए ले आया गया। पटहध्वनिसे लोगोंको इकट्ठा कर लिया। सत्यवती और कुबेरश्री दुःखी होती हैं—हा! क्या सुमेरुपर्वत डिग सकता है? चन्द्रमा उष्ण और सूर्य क्या शीतल हो सकता है? हा! क्या धर्मका प्रलय हो गया है? अथवा यद्यपि यह इस प्रकार हो, तब भी उसका भव्यका शील शुद्ध है। उस अवसरपर तलवारको उठाये हुए चण्डालको वह सौंप दिया गया।

घत्ता—चाण्डालके द्वारा मुक्त वह तलवार सेठके गलेपर शीघ्र पहुँची और यमकी दूती वह खड्गलता श्वेतहारावलि बन गयी ॥१५॥

१६

'साधु' यह कहकर, और पैर पड़ते हुए पुरदेवताने पद्मासनकी रचना की, और उसके लिए मणिमण्डित स्वर्गभूमि तथा प्रातिहार्य-श्रीका निर्माण किया। निष्करुण जो साधुको मारता है वह पृथुधी भूतोंके द्वारा बाँध लिया गया, मत्सरसे परिपूर्ण, और दूसरोंने निन्दा कर टक्करोंसे सिर चकनाचूर कर दिया। अनेक क्रोधसे भरे हुए वहाँ पहुँचे जहाँ राजा था। उनका बहुत और दिव्य क्रोध बढ़ गया और राजाको पैरोंसे पकड़कर खींच लिया। राजा कहता है कि मैंने क्या दोष किया? तब धर्मका हित करनेवाला पिशाचगण बताता है—मुद्राका प्रपंच, दूसरेका रूप बनाना, परस्त्रीसे विरत होनेपर भी सुधिका बन्धन, गुणीजनका बन्धन और राजाकी विभिन्नमति करना। उसने प्रणाम करके सत्यवतीको सन्तुष्ट किया। पतिव्रता कुललक्ष्मी कुबेरश्रीको शान्त कर अपनी श्रीकी निन्दा कर राजा वहाँ गया, जहाँ सेठ था। हाथ जोड़कर वह राजा कहता है—

घत्ता—मैंने दुष्टके कपटकी कल्पना नहीं की थी, मुझ पापीने दुष्कृत किया है। हे सुभट, क्षमा करें जो मैंने तुम्हारे चित्तको खेद पहुँचाया और कोड़ोंके आघातोंसे तुम्हारे शरीरको सताया ॥१६॥

१७

सेठ कहता है कि यह मेरा पूर्वार्जित कर्म था कि जो तुम अकारण कुपित हुए। अब उस (कर्म) को नष्ट करूँगा, अब मैं तप करूँगा। तुम्हारे प्रति ईर्ष्याभाव धारण नहीं करूँगा। प्रिय

घंडालें अट्ठमिचउदसिहिं पालिय अहिंस दिण्णी रिसिहिं ।
पुणरवि पाणें चोरहु कहिउ जिह गुणवालें व्रउ[2] संगहिउ ।
तं वइसें वारिसेणदुहिय विण्णाण[3]रूवलक्खणसहिय ।
दिण्णी कुबेरसिरि णंदणहु वसुपालहु भुवणाणंदणहु ।
तहु जणणें भणिउ कुबेरपिउ किं मोक्खहु कारणु कहमि[4] पिउ ।
तेण जि पउत्तु[5] धम्मु जि भणमि सिवकारणु अण्णु ण परिगणमि[6] ।
णिव जामि होमि हउं जइचरिउ सो सिण्णि दियहं पहुणा धरिउ ।
सुयरक्खणु को वि णिरिक्खियउ दिणि तिज्जइ पंतुं[7] व लक्खियउ ।
पहु पुच्छहुं वणिउ पराइयउ मच्छियहि विसंभरु धाइयउ ।
घत्ता—कहिं सिणिसवु कहिं मक्खिय केणाणिय किं भक्खिय ॥
जीवहु कम्मु सहेज्जउ अण्णु ण किं पि दुइज्जउ ॥१७॥

१८

डिंभहुं सुहुं[1] दइवु जि करइ किं मायबप्पु[2] चिंतिवि मरइ ।
सिरिपालु सबवइदेहरुहु होसइ चक्कवइ पहुल्लमुहु ।
वइवण्णुएहिं आएसु कउ गुणवालु सवणि[3] मुणि होवि गउ ।
कह णिसुणिवि कुसुमालें दमिय मइ खंतिइ संतिइ संसमिय ।
णरयाउसु तेणोसारियउं[4] तइयाउ पढमि संधारियउं ।
जं सायरसंखहिं मेलविउ तं वरिसलक्खकोडिहिं थविउ ।
सिरिपालविवाहि सवंतवण वसुपालें मुक्का बे वि जण ।
सो चोरु मरिवि णिवडिउ णरइ पहिलारइ भीमदुक्खणिलइ[5] ।
बहुदियहहिं तेत्थहु णीसरिउ वणि कुंभोयरघरि अवयरिउ ।
इहु अच्छवि हउं संजमु वहमि जिणएवें[6] भासिउं सद्दहमि ।
घत्ता—ता देवेण समीरिउ जं जम्मंतरि मारिउ ॥
तं जइमिहुणु णियच्छहि ता किं रोसें पेच्छहि ॥१८॥

१९

किं खमहि भडारा फुडु कहहि किं अज्ज[1] वि वइरु चित्ति वहहि ।
तं णिसुणिवि रिसिणा बोल्लियउं पाविट्ठ जं मइं सल्लियउ ।
तं एवहिं णिस्सेलु[2] जि करमि तहु हियमियवयणइं वज्जरमि ।
ता तियसें जंपिउं णिसुणि रिसि अम्हइं जि ताइं बिण्णि वि सवसि ।

२. MB वउ । ३. MB विण्णायरूव । ४. MBK कहहि । ५. B वि उत्तु । ६. K पर गणमि । ७. MB यंतु ।

१८. १. MB सुहुं दुहुं दइउ । २. K माइबप्पु । ३. T सवणि श्रेष्ठिना सह । ४. MB तेणोहारियउं । ५. MB दुक्खभीमणिलए । ६. MB जिणदेवें ।

१९. १. MB अज्जे वि । २. K णीसल्लु ।

कहकर वह अपने भवन ले आया। राजाने इसे बहुत इष्ट माना। चाण्डालमें भी मुनियोंके द्वारा दी गयी अहिंसाका अष्टमी और चतुर्दशीके दिन पालन किया। फिर चाण्डालने चोर (विद्युत् चोर) से कहा कि किस प्रकार गुणपालने व्रत ग्रहण किये। उस सेठने अपनी कन्या वारिषेणा जो विज्ञान, रूप और लक्षणोंसे सहित थी, कुबेरश्रीके पुत्र भुवनको आनन्द देनेवाले वसुपालको दे दी। उसके पिताने कुबेरप्रिय (सेठ) से कहा कि मोक्षका क्या कारण है? हे प्रिय बताओ। उसने कहा, मैं धर्मको ही शिवका कारण मानता हूँ, अन्य किसी कारणको नहीं गिनता। हे राजन्, मैं जाऊँगा और मैं मुनिका चरित्रधारक बनूँगा? तब उसे तीन दिनके लिए राजाने रोक लिया। उसने पुत्रोंकी रक्षा करनेके लिए किसीको खोज लिया। तीसरे दिन आता हुआ-सा दिखाई दिया। राजासे पूछनेके लिए सेठ आया, (उसी समय) मक्खीके ऊपर छिपकली दौड़ी।

घत्ता—कहाँ छिपकली और कहाँ मक्खी! कणोंको खानेवाली किस प्रकार भक्षित कर ली गयी। जीवको कर्म सहना पड़ता है और कोई दूसरा नहीं है ॥१७॥

१८

सन्तानके लिए सुख देव करता है चिन्ता कर माँ-बाप क्यों मरते हैं? सत्यवतीका पुत्र श्रीपाल पहला चक्रवर्ती होगा। दैवज्ञोंने आदेश दिया। गुणपाल श्रमण मुनि होकर चला गया। कथा सुनकर चोरने शान्तिसे अपनी मतिको शान्त और संयत किया। उसने अपनी नरकायु हटायी और तीसरे नरकसे उसने पहले नरकका बन्ध कर लिया। जो सागरोंकी संख्यामें थी, वह लाख करोड़ वर्षोंमें रह गयी। श्रीपालके विवाहमें वसुपालने रिसते हुए घावोंवाले उन दोनों (चाण्डाल और चोर) को मुक्त कर दिया। वह चोर मरकर भयंकर दुःखोंके घर पहले नरकमें गया। बहुत दिनोंके बाद वहाँसे निकला और वनमें कुम्भोदरके घरमें उत्पन्न हुआ। यहाँ रहकर मैं संयमका पालन करता हूँ और जिनदेवके द्वारा कहे गये पर श्रद्धान करता हूँ।

घत्ता—तब देवने कहा—"जिसे तुमने जन्मान्तरमें मारा था, उस यतिके जोड़ेको देखो, क्या अब भी तुम उसे क्रोधसे देखते हो? ॥१८॥

१९

या क्षमा करते हो, हे आदरणीय! स्फुट कहिए, क्या आज भी वैर अपने मनमें धारण करते हो।" यह सुनकर मुनिने कहा—"पापिष्ठ, मैंने जो अपनेको पीड़ा दी, उससे अब मैं अपनेको निःशल्य करता हूँ और उससे हितमित वचन कहूँगा" इसपर देव बोला—"हे ऋषि, सुनिए।

पइं पइयइं देवइं जायाइं इय कहिं मि भवंतइ आयाइं।
तुम्हहं पयजुयलउ वंदियउ ता मुणिणा अप्पउ णिंदियउ।
हा दुट्ठु दुट्ठु मइं मंतियउ हा दुट्ठु दुट्ठु मइं चिंतियउ।
हा दुट्ठु दुट्ठु मइं भासियउ हा दुट्ठु दुट्ठु मइं ववसियउ।
खंतव्वु करहु पीसल्ल मुहुं एवहिं ण वहरु केणावि सहुं।
जिह तुम्हहुं तिह तिजगहु जि खमिउं हउं एवहिं भण्णमि संजमिउ।
घत्ता—ता दूरुज्झियमच्छरु अमरु सचामरु सच्छरु ॥
गउ गुरु वंदिवि सग्गहु ण ढलिउ जिणवरमग्गहु ॥१९॥

२०

सो भीमसाहु विहरेवि महि वसुपालणयरि उज्जाणवहि।
आवेवि सिवंकरि संठियउ तहु मोहु असेसु वि णिट्ठियउ।
उप्पण्णउं केवलणाणु खणे कंपावियसुरवरसुरभवणे।
तहु एक्कु छत्तु दो चामरइं णवियइं चउविहइं वरामरइं।
पोमासणु मणिमंडवु विउलु हेमुज्जलु छज्जइ धरणियलु।
पहुवज्जियाउ चउजक्खिणिउ आयउ अण्णाउ वियक्खणिउ।
तहिं अवसरि पवणुद्धयउ देवीउ अट्ठ समागयउ।
विणु पइणा ताहिं णियच्छियउ को पइ होही जइ पुच्छियउ।
जइणा पउत्तु भइमोहणिया इह पुरि सुरदेवहु गेहिणिया।
वसुसेण वसुंधरि धारिणिय अण्णेक्क पुहइ सुहकारिणिय।
सिरिमइ असोय संती विमल चोत्थी घरदासि तासु विमल।
एयहिं अट्ठहिं वि सुणिम्मियइं वणि मुणिहि पासि गहियइं वयइं।
कण्णउ मरिवि सुहसूइयउ अच्चुयवइ देविउ हूइयउ।
घत्ता—रइसेणा सुरकामिणि अवर सुसेण सुहाविणि ॥
सुहवइ कोमलहत्थी चित्तसेण सुपसत्थी ॥२०॥

२१

लंजियउ चयारि वि कयवयउ संभूइयाउ वणदेवयउ।
तहिं चित्तवेय जक्खेसरिय वंणवइ वणदेवी धणसिरिय।
अज्जु जि उप्पण्णउ दिव्वकुले इह एयउ पेच्छहु गयणयले।
सुरदेवें दाणु ण मण्णियउं रिसिदिज्जंतउं अवगण्णियउं।
मुउ हूयउ गहहु दुहंतु सढु पुणु वायसु पुणु उंदुरु सरढु।

३. MB करहि। ४. MB तुम्हहुं तिजग°। ५. MB चलिउ।
२०. १. K पउमासणु। २. MB मणिमंडउ। ३. MB विमलु। ४. MBK omit this line।
५. MB चयारि। ६. MB पवुत्तु। ७. MB सुणिम्मलइं। ८. MB कंताउ।
२१. १. MB चक्केसरिय। २. MB वणवइ वणदेवी। ३. MB गद्दहु हुउ।

हे स्ववशिन्, हम ही वे दोनों हैं। आपके द्वारा आहत होनेपर देव हुए और कहीं भी भ्रमण करते हुए यहाँ आ गये और आपके चरणकमलोंकी वन्दना की।" तब मुनिने अपनी निन्दा की—"हा-हा! मैंने दुष्ट सोचा, हा हा मैंने दुष्ट चिन्ता की। हा-हा मैंने दुष्ट भाषण किया। हा-हा मैंने दुष्ट चेष्टाएँ कीं। मैं क्षन्तव्य हूँ, मुझे निःशल्य बनाओ। इस समय किसीके भी साथ मेरा वैर नहीं है। जिस प्रकार तुम लोगोंके लिए उसी प्रकार त्रिजगके लिए मैंने क्षमा किया। इस समय मैं मुनि कहा जाता हूँ।"

घत्ता—तब दूर हो गया है मत्सर जिसका ऐसा वह देव चमरों और अप्सराके साथ गुरुकी वन्दना कर स्वर्ग चला गया, वह जिनवरके मार्गसे च्युत नहीं हुआ ॥१९॥

२०

वह भीम मुनि धरतीपर विहार करते हुए वसुपालके नगरके शिवंकर उद्यान पथमें आकर ठहर गये। वहाँ उनका अशेष मोह नष्ट हो गया। सुरवर भवनोंको कँपानेवाला एक क्षणमें उन्हें केवलज्ञान उत्पन्न हो गया। उनके एक छत्र और दो चामर थे। चारों ओरसे सुरवर झुक गये। पद्मासन विपुल मणिमण्डप और हेमोज्ज्वल धरतीमण्डल शोभित है। अपने स्वामीसे रहित, तथा एकसे एक विलक्षण चार व्यन्तर देवियाँ आयीं। उसी अवसरपर पवनसे उद्धत आठकी आधी (चार) देवियाँ और आयीं। पतिके बिना, उन्होंने दर्शन किये और यतिसे पूछा कि उनका पति कौन होगा? यतिने कहा कि इस नगरीमें मतिको मोहित करनेवाली तुम सुरदेवकी गृहिणियाँ थीं। वसुषेण, वसुन्धरा, धारिणी और पृथ्वी। ये शुभ करनेवाली थीं। श्रीमती, वीतशोका, विमला और वसन्तिका ये चार उनकी गृह दासियाँ थीं। इन आठोंने वनमें मुनिके पास पवित्र व्रत ग्रहण किये। कन्याएँ मरकर अच्युत स्वर्गके इन्द्रकी शुभसूचित करनेवाली देवियाँ हुईं।

घत्ता—सुरकामिनी रतिषेणा, सुहाविनी सुसेना (सुसीमा), कोमल हाथोंवाली सुखावती और सुप्रशस्त चित्रसेना ॥२०॥

२१

व्रत करनेवाली चारों दासियाँ भी वनदेवियाँ हुईं। (व्यन्तर देवियाँ हुईं), उनमें यक्षेश्वरी, चित्रवेगा, धनवती, धनश्री व्यन्तर देवियाँ आज भी दिव्यकुलमें उत्पन्न हुई हैं, यहाँ इनको आकाशतलमें देखो। ऋषिको दिये जाते हुए दानको सुरदेवने नहीं माना, उसकी अवहेलना की।

पुणु दाढा[4]भासुर घोणसउ पुणु हुउ चंडालु कुमाणुसउ ।
मइं समउ आसि सो घित्तु[5] बिले हुउं मरिवि पहूयउ णरयबिले ।
जिणधम्मु तिसुद्धिइ भावियउ बउलें चिरु जइवइ सेवियउ ।
तेण वि तहु आउ पयासियउ सत्त जि अहरत्तइं भासियउ ।
ओमारियदूसहभवरिणइं संणासु करिवि रिसिसमदिणइं ।
उप्पण्णउ एवहिं फुडु जि दिवि को पुसइ णें विहिणा विहिय लिवि ।
सो पइ तुम्हारउ णवियसुरु लइ सो जि महारउ धम्मगुरु ।
घत्ता—सुरदेवहु जा मायरि सा मरेवि तुच्छोयरि ॥
एत्थु जि देसि चिरंतणे उप्पलखेडइ पट्टणे ॥२१॥

२२

सिरिधम्म[1]पालणिवणंदियहे उप्पण्णी पुत्ति अणिंदियहे ।
मुणिदाणहलेण सुसीलिणिय जगसुंदरि मंदरमालिणिय ।
तहिं तहि विवाहि कयणिग्गहहो अम्हइं मुक्का[2] बंदिग्गहहो ।
रइसंभवसोक्खाकंखिणिहिं गुरु पुच्छिउ चउहुं मि जक्खिणिहिं ।
भणु भणु मुवि को अम्हहं रमणु ता कहइ कामभयविहँवणु[3] ।
जं[4] पाणें कय संणासगइ तहु तणउ पुत्तु अज्जुणु सुमइ ।
दरिसावियसीहवग्घमुहहे अणसणि थिउ सिद्धसेलगुहहे ।
सो होसइ तुम्हहं हिययहरु वरु सूहउ णावइ कुसुमसरु ।
घत्ता—माणवदेहु मुएप्पिणु जक्खु सुरिंद हवेप्पिणु ॥
गाढालिंगणु देसइ तुम्हहं पुलउ जणेसइ ॥२२॥

२३

अच्चुयपडिंदु सिंगारधरु हूयउ आयउ सो वडेलचरु[1] ।
तें वंदिउ णियगुरु गरुयगुणु सहियउ देविहिं गउ सग्गु पुणु ।
जक्खिहिं जाएवि जसेज्जुणहो[2] संणासु करंतहु अज्जुणहो ।
आगामिउं पुण्णु पसंसियउ तहु णियमहिलत्तणु भासियउ ।
तहिं अवसरि वणिवरदत्तु णरु लग्गउ देविहिं पसरंतकरु ।
जायाउ ताउ णिहंसणउ विडि खुत्तउ वम्महमग्गणउ ।
अंसहंतें[3] विरहविरोल्लियँउ[4] तेणप्पउ कक्करि घल्लियउ ।
मुउ णागदत्त[5]वणिवरहु सुउ सहसत्ति पिसल्लदेउ[6] हुउ ।
घत्ता—तेत्थु जि णयणाणंदणु पुरि सुकेउ वणिणंदणु ॥
गेहिणि तासु वसुंधरि वाहइ णाहु[7] वसुंधरि ॥२३॥

---

४. M दाढीभीसणु; B दाढा भीसणु । ५. MB वि ।
२२. १. MB °धम्मवालसिरिणंदियहे । २. MB मुक्कई । ३. MB विहुमणु । ४. MBK जें ।
२३. १. B वउलघरु । २. MB जसउजणहो । ३. B अलहंतें । ४. MB °विरोलियउ; T विरोलउ ।
५. MB णायदत्त° । ६. MB पिसल्लउ । ७. B णाहु ।

वह मरकर दो दाँतका गधा हुआ, फिर कौआ, फिर चूहा, फिर साँड़, फिर दाढ़ोंसे भयंकर सुअर, फिर चाण्डाल और कुमनुष्य। मेरे साथ वह भी नरकबिलमें डाला गया। मैं मरकर नरकबिलमें उत्पन्न हुआ। मन-वचन और कायकी शुद्धिसे जिनधर्मकी भावना की। फिर बकुल नामके चाण्डालने यतिवरकी सेवा की। उन्होंने भी उसको आयु प्रकाशित की कि उसके सात दिन-रात बचे हैं। असह्य भव-ऋणको हटानेवाले उन सात दिनोंमें संन्यास कर इस समय वह स्पष्ट रूपसे स्वर्गमें उत्पन्न हुआ है। विधिके द्वारा लिखी गयी लिपिको कौन मिटा सकता है? यह नया देवता तुम्हारा पति है, और लो, वही हमारा नया धर्मगुरु है।

घत्ता—सुरदेवकी जो माता थी वह कृशोदरी मरकर इस प्राचीन उत्पलखेट नगरमें—॥२१॥

२२

—श्री धर्मपाल राजाको आनन्द देनेवाली अनिन्दितासे पुत्री उत्पन्न हुई। मुनिके दानके फलसे मन्दरमालिनी नामकी वह कन्या अत्यन्त सुशील और विश्वसुन्दरी थी। वहाँ उसके विवाहके अवसर पर निग्रह करनेवाले बन्दीगृहसे हम लोग मुक्त हो गये। रतिसे उत्पन्न सुखकी इच्छा करनेवाली उन चारों यक्षिणियोंने गुरुसे पूछा—"बताओ-बताओ, संसारमें हमारा प्रिय कौन है?" तब काममदका नाश करनेवाले वह कहते हैं—"जो चाण्डालने संन्यासगतिसे मरण किया है उसका अर्जुन नामका सुमति पुत्र है। जिसके मुखपर सिंह और बाघ दिखाई देते हैं ऐसी सिद्ध शैलकी गुफामें वह अनशन कर रहा है। वह तुम्हारे हृदयका हरण करनेवाला सुन्दर वर होगा, कामदेवके समान।

घत्ता—मनुष्य शरीर छोड़कर यक्ष-सुरेन्द्र होकर वह तुम्हें प्रगाढ़ आलिंगन देगा और रोमांच उत्पन्न करेगा" ॥२२॥

२३

बकुल चण्डालका वह जीव आया और शृंगार धारण करनेवाला अच्युत प्रतीन्द्र हुआ। उसने आकर महान् गुणोंवाले अपने गुरुकी वन्दना की और देवियोंके साथ पुनः स्वर्ग चला गया। यक्षिणियोंने जाकर यशसे उज्ज्वल, संन्यास करते हुए अर्जुनके आगामी पुण्यकी प्रशंसा की और उसे बताया कि वे उसकी स्त्रियाँ होंगी। उस अवसर पर वरदत्त नामक वणिक् मनुष्य, अपने हाथ फैलाये हुए देवियोंके पीछे लग गया। वे देवियाँ अदृश्य हो गयीं। कामदेवके बाणोंसे वह धूर्त क्षुब्ध हो गया, विरहकी विडम्बनाको सहन नहीं करते हुए उसने स्वयंको पर्वतकी चोटीसे गिरा लिया। इस प्रकार सेठ नागदत्तका पुत्र मर गया और शीघ्र पिशाचदेवके रूपमें उत्पन्न हुआ।

घत्ता—उसी नगरीमें नयनोंको आनन्द देनेवाला सुकेतु नामका वणिक् पुत्र था। उसकी पत्नी वसुन्धरा थी। वह वसुन्धराका पालन करता था ॥२३॥

२४

अण्णु वि फणिदत्तु णामु वसइ तहु कंत सुणेत्त सुदत्तसइ ।
वणिउत्तें लोयदिट्ठिभवणु काराविउ तेण णायभवणु ।
पुरबाहिरि पइ किसि करइ जहिं अण्णहिं दिणि चल्लिय घरिणि तहिं ।
दहिओल्लिउं अल्लयमीसियउं भोयणु गेण्हवि सुइवासियउं ।
पहे जंतिइ साहु पलोइयउ आहारु तासु तहिं ढोइयउ ।
ससिवयणइ पडिवणिणायहरे भुत्तउ मुणिणा संणिहिउ करे ।
दाणेण तेण जणसंथुयइं जायइं पंच वि अच्चब्भुयइं ।
गिव्वाणहिं रयणइं घित्ताइं करकच्चुरियाइं विचित्ताइं ।
घत्ता—जोइवि मणिगणवुट्ठी पणइणि तसिय पणट्ठी ॥
गय घणकणिसहु छेत्तहु अक्खइ सा णियकंतहु ॥२४॥

२५

तुह कूरकरंबउ आणियउ जो तेण साहु मइं पीणियउ ।
केण वि तहिं फुल्लइं मुक्काइं पिययम महु मत्थइ थक्काइं ।
अण्णेत्तहि रइयरकिरणजडिय गयणंगणाउ पत्थर पडिय ।
अण्णेत्तहि काइं वि गज्जियउ णउ जाणउं वज्जेउं वज्जियउ ।
अण्णेत्तहि साहु साहु भणिउं अण्णेत्तहि वरिसिरयणझुणिउं ।
तं णिसुणिवि हउं णट्ठी सभय ता भणइ णाहु हलि तुहुं सदय ।
तुहुं महु केरी घरकमलसिरि पइ होंतिइ होसइ मज्झु सिरि ।
तुहुं गुणमाणिक्कहं तणिय खणि पइं कियउ धम्मु भुंजविउ मुणि ।
पत्थर ण होंति ते दिव्वमणि इय भणिवि अहीहरु ढुक्कु वणि ।
धरियउ विवक्खवइसेण घणु उत्तउ सुकेउ मा किं पि भणु ।
घत्ता—हिमगोखीराभासइं महु केरइ फणिवासइं ॥
पडियइं रइयरहियक्कइं महु जि होंति माणिक्कइं ॥२५॥

२६

इयरें पवुत्तु तुहुं खुद्दु खलु महु घरिणिहि केरउ दाणहलु ।
मा हरहि चोर रूसइ णिवइ ता दव्वु लएप्पिणु सो कुमइ ।
गउ तहिं जहिं अच्छइ धरणिवइ को पावइ धम्महु तणिय गइ ।
सो राणउ अवरु वि सो वणिउ विम्मूढगूढु लोहें वणिउ ।
जिह जिह मणि तं सीकरइ घणु तिह तिह जि होइ इंगालगणु ।

२४. १. MB वणिउ । २. M फणिदत्तें । ३. MB ओयणु । ४. MB ताइ तहु । ५. B मणगणवुट्ठी ।
६. MB घणकसणहु ।
२५. १. MB णं । २. M वज्जुउ । ३. BM पेच्छिवि । ४. MB तुहुं हलि ।
२६. १. MB विम्मूढु मूढु; K विम्मूढु गूढु ।

२४

वहाँ एक और नागदत्त सेठ रहता था, उसकी सुन्दर नेत्रोंवाली पत्नी सती सुदत्ता थी। उस वणिक्-पुत्रने लोगोंकी दृष्टिके लिए आश्रयस्वरूप (सुन्दरताके कारण) एक सुन्दर नाग भवन बनवाया। नगरके बाहर जहाँ उसका पति खेती करता था, दूसरे दिन उसकी पत्नी वहाँ जाती है। दहीसे गोला, अदरकसे मिश्रित सुन्दर बघारा हुआ भोजन लेकर रास्तेमें जाते हुए उसने एक साधुको देखा। उसने उसके लिए आहार दिया। उस प्रतिवनके नागघरमें चन्द्रमुखीके द्वारा हाथपर रखा हुआ भोजन मुनिने कर लिया। उस दानसे लोगोंके द्वारा संस्तुत पाँच आश्चर्य उत्पन्न हुए। देवताओंने रत्न बरसाये, रंगबिरंगे और विचित्र।

घत्ता—रत्नोंकी वर्षा देखकर प्रणयिनी त्रस्त होकर भागी। वह सघन कणोंवाले खेतमें जाती है और अपने पतिसे कहती है ॥२४॥

२५

"मैं जो तुम्हें दही-भात लायी थी, उससे मैंने साधुको सन्तुष्ट कर दिया। किसीने वहाँ फूल बरसाये, हे प्रियतम! वे मेरे माथेपर गिरे। एक और जगह सुन्दर किरणोंसे जड़े हुए पत्थर आकाशसे गिरे। एक और जगह भी कुछ गरजा, मैं नहीं जान सकी। बाजा बजा। एक और जगह साधु-साधु कहा गया, एक और जगह बरसनेवाले बादल गड़गड़ाये। वह सुनकर मैं डरकर भागी।" इसपर स्वामी कहता है, "हे सखी, तुम सदय हो। तुम मेरी गृहरूपी कमलकी लक्ष्मी हो, तुम्हारे रहते हुए मुझे लक्ष्मी प्राप्त होगी। तुम गुणरूपी माणिक्योंकी खदान हो। तुमने यह धर्म किया कि जो मुनिको आहार दिया। वे पत्थर नहीं दिव्यमणि हैं।" यह कहकर वह वणिक् शीघ्र नागभवन पहुँचा। लेकिन शत्रुवैश्य (सुकेतु) ने वह धन ले लिया। सुकेतु बोला—कुछ मत कहो।

घत्ता—हिमकिरण और क्षीरकी तरह भास्वर मेरे नागभवनमें गिरे हुए अत्यन्त कान्तिवाले माणिक्य मेरे ही होते हैं ॥२५॥

२६

दूसरेने कहा—"तुम क्षुद्र और दुष्ट हो। यह मेरी पत्नीके दानका फल है। हे चोर, उसका अपहरण मत कर, राजा नाराज होगा।" तब वह कुमति धन लेकर वहाँ गया जहाँ राजा था। धर्मकी गतिको कौन पा सकता है? वह राजा और वह बनिया भी अत्यन्त मूर्ख और लोभसे प्रवंचित थे। जैसे-जैसे वह मनमें वह धन स्वीकार करता, वैसे-वैसे वह ईंटोंका समूह होता

पुरदेवियमुक्कहिं दीहरहिं भेसाविय किंकर ढंढरहिं ।
णरणाहु वि हियवइ संकियउ संठिउ सुकेउ पुलयंकियउ ।
दिण्णउ रयणोहु दप्पु गलिउ भणु तववंतेण को ण मलिउ ।
घत्ता—अण्णहिं दिणि पण्णयघरि दिट्ठउ मणि तरुकोडरि ॥
आसाइयपरवित्तें एक्कु कहिं पि अहिदत्तें ॥२६॥

२७

तं कड्ढिउ कइ व कइ व धरिवि पुणु रोसहुयासें विप्फुरिवि ।
महु करि ण चडहि किं वज्जरिवि गुरुयं पाहाणें हुंकरिवि ।
पहरंतहु उच्छलिवि खयलि णिट्ठुरु तहु लग्गउ भालयलि ।
उग्गेयगंडेण वियारियउ वणिणागदत्तु हक्कारियउ ।
धणसंखइ ववहारेण जिउ अहरत्तु वसुंधरिवइहि णिउ ।
धणु वड्ढिमु जायउ जेत्तिउं जि हारिउ तहिं पिसुणें तेत्तिउं जि ।
कुपुरिसु वसुगव्वें वग्गियउ तं दव्वु सुकेउं मग्गियउ ।
तेणुत्तउं म धरहि भिउडिमुहुं देवाण पहायइ देमि तुहुं ।
पुणु तेण फणीसरु पुच्छियउ हउं पइं किं देव गलत्थियउ ।
मग्गंतहु किं पि ण दिण्णु वरु ता भणइ सप्पु भणु देवि वरु ।
घत्ता—वणि पभणइ सुयभूसणु वलु सुकेउविद्धंसणु ॥
भो भो विसहरसारा दिज्जउ मज्झु भडारा ॥२७॥

२८

पडिजंपइ फणि गंभीरसणु दविणेण ण जिप्पइ दिव्वधणु ।
प्राणावहारु तहु को करइ जसु पुण्णु सहेज्जउं संचरइ ।
मइं तो वि तासु तुहुं अल्लिवहि मज्जायवयणु एहउं लवहि ।
भणु फणिवइ कम्मभारु वहइ जइ णत्थि कम्मु तो पइं वहइ ।
ता जायवि चिंतियविप्पियउ फणि तेण सुकेउहि अप्पियउ ।
किउ णियमंतु विहावियउ अहि हियइच्छिउ कारावियउ ।
णीसेसइं कम्मइं णिट्ठियइं संसिद्धइं कज्जइं संठियइं ।
मग्गइ पेसणु उरजंगमउ वणि भणइ खंभु पाहाणमउ ।
आणिवि भवणंगणि लहु ठवहि गरुआरउ वाणरु तुहुं हवहि ।
तहिं बंधिवि खंभि सुघणघणइ गलि संखल लाइवि अप्पणइ ।

---

२. MB पुरदेविविमुक्कहिं; K पुरदेविइ मुक्कहिं । ३. M किं किर । ४. MB दिण्णउ । ५. M अहिदित्तें ।

२७. १. M गरुयं; B गरुएं । २. MB उग्गयखंडेण । ३. M अहररत्ति । ४. MBK जेत्तउं । ५. MBK तेत्तउं । ६. MB गब्वियउ; T वग्गियउ । ७. MB पत्थियउ । ८. MB भूभूसणु ।

२८. १. MB पाणाव° । २. MBT अल्लवहि । ३. MB केउं ।

जाता। नगरदेवीके द्वारा मुक्त राक्षसोंने अनुचरोंको डरवा दिया। राजा भी अपने मनमें आशंकित हो गया परन्तु सुकेतु रोमांचित हो उठा। उसने रत्नसमूह दे दिया। दर्प दूर हो गया। बताओ तपवालेसे कौन मलिन नहीं होता।

घत्ता—दूसरे दिन नागभवनके तरुकोटरमें दूसरेके धनका जिसे स्वाद लग गया है, ऐसे नागदत्तने कहीं एक मणि देखा ॥२६॥

२७

किसी प्रकार रखनेके लिए उसने उसे निकाला। फिर क्रोधकी ज्वालासे विस्फुरित होकर, और यह कहकर कि यह मेरे हाथपर क्यों नहीं आता, हुंकार भरते हुए उसके भारी पत्थरसे प्रहार करनेपर वह मणि आकाशमें उछलकर उसके भालतलसे जा लगा। उसके उठे हुए खण्ड (नोक) से वह विदारित हो गया। नागदत्तको बुलाया गया। धन-संख्य व्यवहारीसे जीता गया वसुन्धराका पति (सुकेतु) हारको प्राप्त हुआ। लेकिन जितना धन उसका बढ़ा, वह दुष्ट उतना ही धन हार गया (जुएमें) धनगर्वसे दुष्ट आदमी उद्दण्ड (उद्भट) हो जाता है। सुकेतुने वह धन माँगा। उसने कहा—"तुम अपनी भौंहें टेढ़ी क्यों करते हो, देवोंके प्रभावसे मैं तुम्हें दूँगा"। फिर उसने (नागदत्तने) नागराजसे पूछा—हे देव, आपने मुझे क्यों दरिद्र बना दिया है ? माँगते हुए भी कोई वर मुझे नहीं दिया। तब नाग कहता है, देता हूँ।

घत्ता—वणिक् कहता है—भो-भो ! विषधरश्रेष्ठ आदरणीय, सुकेतुका नाश करनेवाला और बाहुओंका भूषण बल मुझे दीजिए ॥२७॥

२८

गम्भीर ध्वनिवाला साँप कहता है—"धनसे दिव्य धन नहीं जीता जा सकता। जिसका पुण्य सहायक होकर चलता है उसके प्राणोंका अपहरण कौन कर सकता है ? लोभी तुम मुझे उसके लिए समर्पित कर दो, और यह मर्यादा वचन उससे कह दो। कहो कि नागराज कर्मभार धारण करना चाहता है। यदि कर्म नहीं है, तो तुम्हें धारण करना चाहता है।" तब बुरा सोचनेवाले उस साँपको उसने सुकेतुके लिए सौंप दिया। सुकेतुने अपना सोचा हुआ किया। उससे मनचाहा काम कराया। अशेष कामोंका उसे आदेश दिया गया। जब सब काम सिद्ध हो गये, तो साँप आदेश माँगता है। वणिक् कहता है कि पत्थरका एक खम्भा लाकर घरके आँगनमें स्थापित करो और तुम एक बहुत बड़े बन्दर बन जाओ। वहाँ मजबूत खम्भेसे एक जंजीर बाँधकर और

तुहुं तेत्थु वप्प सद्धेण विणु आरुहणुत्तरणहिं खवहि दिणु।
इय जिम्मइ भणियउ अइयहुं जि तुह अवरु देमि हउं तइयहुं जि।

घत्ता—ता विसहरु वि[4]हसेप्पिणु तुरिउ खंभु आणेप्पिणु ॥
मंकड[5]वेसु धरेप्पिणु थिउ अप्पउ बंधेप्पिणु ॥२८॥

२९

खंभग्गसिहरि चड्डिवि चडइ उत्तरइ सरइ धरणिहि पडइ।
अहि दिट्ठउ अहिदत्तेण[1] किह सज्झायहु लग्ग[2]उ साहु जिह।
णेरंतरु णिसिदियहइं[3] गमइ लइं विहिविहाणु सव्वहु भमइ।
विसि भणइ मित्त मइं मेल्लवहि पडिवक्खें सहुं णिम्मउ चवहि।
ता तेण माणु अवहत्थियउ धयणामु णवेप्पिणु पत्थियउ।
पइं मणुएं णाउ[4] वि वदूधु जहिं वण्णिज्जइ साहसु काइं तहिं।
बुद्धीइ धणेण वि[5] तुहुं जि गुरु भो वच्चउ[6] मेल्लहि णायसुरु।
तं णिसुणिवि मेल्लवि घल्लियउ फणिवइ वणिणा[7] मोकल्लियउ।
अवलोयवि दिणयरअत्थवणु णियसुयहु समप्पिवि णियभवणु।
संसेविउ गुणहर[8]गुरुचरणु चिंधंकें लइयउ तवचरणु।
णिम्मच्छराहि[9] णिरु णिब्भयहि [10]गणियहि पणवेप्पिणु सुव्वयहि।
दिक्खंकिय घरिणि वसुंधरिय परिपालिवि छावासयकिरिय।
मुणिवरु सुकेउ मुउ विहुरहरे उप्पण्णउ सग्गि सयारवरे।
थीलिंगु हणेप्पिणु णिरुवमिय तेत्थु जि सुरु[11] हूई तासु पिय।
सम्मत्तालंकिय भव्ववर रामासु विरायपे[12]णामयर।

घत्ता—भरहजणणविण्णायइ अपढे[13]मइ णरयणिकेयइ ॥
होंति ण वणभवणंतरि पुप्फदंतवासंतरि ॥२९॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे [14]वणिणागदत्तसुकेउकहासंबंधो णाम एक्कतीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ ३१ ॥

संधि ॥ ३१ ॥

---

४. B विसहेप्पिणु। ५. MB मक्कड°।

२९. १. M अहिदिसेण। २. MB लग्गइ। ३. MB °दिवसइं। ४. MBK देव। ५. MB जि। ६. MB मेल्लहि वच्चउ। ७. MB वणिवइ; T वणिणा। ८. M गुणहरु गुरु°। ९. MB गुणणिब्भराहि। १०. MB गणणिहि। ११. M सुर हूवउ। १२. B विराम°। १३. M अपढमणरय; K पढमइ णरय°। १४. MB मणि°।

उसे अपने गलेमें डालकर हे सुभट, तुम बिना किसी धूर्तताके चढ़कर और उतरकर अपना दिन बिताओ। और उसने कहा कि जब तुम इसे नियमित रूपसे करने लगोगे तभी मैं तुम्हें दूसरा काम दूँगा।

घत्ता—तब विषधर हँसकर तुरन्त खम्भा लाकर, बन्दरका रूप बनाकर और अपनेको बाँधकर स्थित हो गया ॥२८॥

२९

खम्भेके अग्र शिखरपर उठकर चढ़ता है, उतरता है, चलता है और धरतीपर गिरता है। नागदत्तने नागको इस प्रकार देखा जैसे कोई साधु सन्त ध्यानमें लगा हुआ है। लगातार वह दिन-रात बिताता है। लो, विधिका विधान सबको घुमाता है? साँप कहता है, हे मित्र, तुम मुझे छोड़ दो। प्रतिपक्षके साथ नम्रतासे बोलो। तब उसने मान छोड़ दिया और सुकेतुको प्रणाम कर प्रार्थना की कि जहाँ तुमने मनुष्य होकर भी नागको बाँध लिया, वहाँ मैं तुम्हारे साहसका क्या वर्णन करूँ। तुम बुद्धि और धन दोनोंसे बड़े हो, हे वच्चउ, तुम नागसुरको छोड़ दो।" यह सुनकर छोड़कर डाल दिया। सुकेतुने साँपको मुक्त कर दिया। एक दिन सूर्यका अस्त देखकर, अपने पुत्रको अपना भवन देकर सुकेतुने गुणधर गुरुके चरणोंकी सेवा की और तपश्चरण ले लिया। तथा मत्सरसे रहित निर्भय सुव्रता आर्याको नमस्कार कर उसकी गृहिणी वसुन्धराने दीक्षा ग्रहण कर ली। षड् आवश्यक क्रियाओंका परिपालन कर मुनिवर सुकेतु विधुरगृहमें मरकर श्रेष्ठ स्वर्गमें उत्पन्न हुआ। उसकी पत्नी वसुन्धरा भी स्त्रीलिंगका उच्छेद कर उसी स्वर्गमें अनुपम देव हुई, सम्यक्त्वसे अलंकृत और स्त्रियोंमें, वीतरागोंको प्रणाम करनेवाली।

घत्ता—भव्यजीव भरतके पिताके द्वारा विज्ञापित अन्तिम छह नरकों, भवनवासी और व्यन्तरवासी देवोंके विमानोंमें जन्म नहीं लेते ॥२९॥

इस प्रकार त्रेसठ महापुरुषोंके गुण-अलंकारोंसे युक्त महापुराणमें महाकवि पुष्पदन्त द्वारा विरचित और महाभव्य भरत द्वारा अनुमत महाकाव्यका वणिक् नागदत्त और सुकेतु कथा सम्बन्ध नामका इकतीसवाँ परिच्छेद समाप्त हुआ ॥३१॥

संधि ३२

णिसुरासुरविज्जाहरसरणे ओसीणें[1] आसि समवसरणे ॥
गुणपालजिणिंदें जं भणिउं जं मइं वि पइं वि सुंदरि सुणिउं ॥ ध्रुवकं ॥

१

देवि सुलोयणि वित्तु[2] कहाणउं तं वज्जरहि मज्झु अहिणाणउं ।
इय जएण पुच्छिय भासइ सइ सिरिपालहु[3] केरी गुणसंतइ ।
तेत्थु जि चारु पुंडरिंकिणिपुरि घरसोहाणिज्जियसुरवरघरि ।
ससिरिपालु[4] वसुपालु णरेसरु सहुं णिवसइ णं ससुरु सुरेसरु ।
ता चिंतिउ कुबेरसिरिमायइ जंपिउ मुहकुहरुग्गयवायइ[5] ।
दीसइ सव्वु लोउ सवियारउ एक्कु ण दीसइ णाहु महारउ ।
अण्णु वि सो कुबेरपिउ भायरु तेएं णिज्जिय चंदु दिवायरु ।
गय वेण्णि वि[6] ते पुणरवि णाया किं जाणहुं विहाय सिविजाया ।
एम भणंतिहि वामउ लोयणु फंदइ सुहिदंसणसंपायणु ।
हियवइ परमुच्छाहु ण माइउ ताम संमुहुं[7] वणवालु पराइउ ।
घत्ता—सो पभणइ मयणवियारहरु सुणि सामिणि केवलणाणधरु ॥
गुणवालु[8] देव सुरपरियरिउ उज्जाणि महारिसि अवयरिउ ॥१॥

२

अण्णेक्कु वि तिहिं गुत्तिहिं गुत्तउ झाणवसेण णिमीलियणेत्तउ ।
जो कुबेरपिउ जायउ मुणिवरु सो आयउ तुम्हारउ भायरु ।
तं णिसुणेवि देवि[1] रोमंचिय वेल्लि व अमयरसोहें सिंचिय ।
वंदणहत्तिइ गय परमेसरि हूई हयगयलालामयसरि ।
चल्लिय सुंदर चोइय संदण अण्णें पंथें बिण्णि वि णंदण ।

MB give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza :—

बम्भण्डाहण्डलसोणिमण्डलुच्छलियकित्तिपसरस्स ।
खण्डेण समं समसीसियाइ कइणो ण लज्जन्ति ॥१॥

GK do not give it.

१. १. MBK आसीणेणासि । २. MB वुत्तु । ३. MB सिरिवालहु । ४. सिरिपालें वसु°; B सो सिरिपालु वसु° । ५. G °कुहरग्गय°; K °कुहरग्गय° but corrects it to °कुहरुग्गय° । ६. K गय ते बिण्णि वि । ७. M समुहुं; B सुमुहुं । ८. M गुणवाल ।

२. १. B omits from देवि down to चल्लिय in *5 a*.

सन्धि ३२

मनुष्यों, सुरों, असुरों और विद्याधरोंके लिए शरण स्वरूप समोशरणमें विराजमान गुणपाल जिनेन्द्रने जो कहा था और जिसे मैंने और तुमने सुना था।

१

हे देवि सुलोचने! उस बीते हुए कथानकको मेरे अभिज्ञानके लिए कहिए।

इस प्रकार सती सुलोचना, जयकुमारके पूछनेपर श्रीपालकी गुण-परम्पराका कथन करती है। अपने घरोंकी शोभासे इन्द्रके विमानोंको जीतनेवाले सुन्दर पुण्डरीकिणी नगरमें श्रीपाल राजा वसुपालके साथ इस प्रकार रहता था मानो इन्द्र देवोंके साथ रहता हो। इस बीच कुबेरश्री माताने विचार किया और अपने मुख-गह्वरसे निकलनेवाली वाणीसे कहा—'सब लोग भावपूर्ण दिखाई देते हैं। अकेला मेरा स्वामी दिखाई नहीं देता। और एक दूसरा मेरा वह भाई कुबेर-प्रिय कि जिसने अपने तेजसे चन्द्रमा और सूर्यको जीत लिया है। वे दोनों गये और फिर लौटकर नहीं आये। क्या जाने वे मोक्ष चले गये?' ऐसा कहते हुए उसका सुधीजनको मिलानेवाला बायाँ नेत्र फड़क उठा। उसके हृदयमें परम-उत्साह नहीं समा सका। इतनेमें वनपाल सामने आ पहुँचा।

घत्ता—वह कहता है—हे स्वामिनी सुनिए। कामदेवके विकारका नाश करनेवाले केवल-ज्ञानके धारी, महाऋषि, गुणपाल देवताओंसे घिरे हुए उद्यानमें अवतरित हुए हैं ॥१॥

२

वहाँपर एक ओर तीन गुप्तियोंसे युक्त तथा ध्यानके कारण निमीलित नेत्र, जो कुबेरप्रिय मुनि हुआ था, वह तुम्हारा भाई आया है। यह सुनकर देवी रोमांचित हो उठी। मानो अमृत-रससे लताको सींच दिया गया हो। वह परमेश्वरी वन्दना-भक्तिके लिए गयी। अश्वों और गजोंकी लार और मदकी नदी बह गयी। दूसरे रास्तेसे दोनों सुन्दर पुत्र चले, जिन्होंने रथ

दिट्ठ तेहिं उववणि विहयायवु[2] सदलु सहलु कोमलु वडपायवु[3] ।
पत्थरघडिउ जडिउ बहुरयणहिं संथुउ णाणं बुहयणवयणहिं ।
तहु तलि जक्खु णाम जगपालउ[4] अवरु णिहालिउ णरवरमेलउ ।
घत्ता—जगपालणरिंदहु तवचरणें सुरु[5] लोएं तहिं संणिहिउ वणे ॥
तहु अग्गइ णच्चिउ णरमिहुणु वसुपालु भणइ सिरिपाल सुणु ॥२॥

३

बिण्णि वि णारिउ बिण्णि वि णरवर जइ णच्चंति[1] होंति ता मणहर ।
तं णिसुणेवि कुमारें उत्तउं[2] देव देव मइं मुणिउं णिरुत्तउं ।
णरवेसेण सरलसोमाली एह दुइज्जी णडइ महेली ।
तहि अवसरि कामें[3] सरु ढोइउ मायापुरिसें रमणु पलोइउ ।
ढिल्लीहूयउ णीवीबंधणु परिभमंति णयणइं कंपइ[4] मणु ।
फुरइ अहरु पासेउ पवियलइ केसभारु दढबंधु[5] वि वियलइ ।
सुसइ[6] वयणु खलियक्खरु भासइ ता कंचुइइ[7] सुहयहु सीसइ ।
पुक्खलवइविसयम्मि सुहम्मउ[8] रम्मउ देसु धणोहें रम्मउ ।
तहिं सिरिउरि[9] लच्छीहरु णरवइ तहु सुहकारिणि घरिणि जयावइ ।
जसमइ दुहिय महिय णिवचंदें[10] पुच्छिउ जइवइ णविवि णरिंदें ।
खयकंदप्पदप्पदुमकंदें अक्खिउ इंदभूइसवणिंदें ।
पुरिसवेस णच्चंती जाणइ जो सो पुत्तिहि जोव्वणु माणइ ।
तं णिसुणिवि महु गायणवायण दिण्णा राएं भाउप्पायण ।
दिट्ठउ मंतिहिं जं जिह जेहउ कज्जु पयासिउ तं तिह तेहउ ।
घत्ता—परियंचिवि पुरइं सधयवडइं णयराइं सखेडइं कव्वडइं ॥
णच्चावहि दावहि तणय तिह वरइत्तु णिहालहि तुरिउ जिह ॥३॥

४

पेक्खु पेक्खु पच्चक्ख णिरावय ता मइं आणिय णं वणदेवय ।
सुय णयराउ णयरि णच्चंती जणु णवरससलिलें सिंचंती ।
एवहिं एउ समागय पुरवरु तुहुं दिट्ठो सि होसि एयहि वरु ।
णच्चइ मुद्धहि सच्छ सहेज्जी णहपरमेसरपुत्ति[1] दुइज्जी ।
ताहं जुवेसें दिण्णइं वत्थइं आहरणइं मंदिरइं पसत्थइं ।
एत्थंतरि सुहिसुहइं[2] जणेरउ जणणियाइ पेसिउ हक्कारउ ।

२. MB विहियायउ; T विहयायउ । ३. MB °पायउ । ४. B जुगपालउ । ५. MB सुरलोएं ।

३. १. MB णच्चंत । २. MB वुत्तउं । ३. MB सरु कामें । ४. MB कंपिय तणु । ५. MB दढबंधु वि विलुलइ । ६. B सुसियवयणु । ७. MB कंचुइयाइ । ८. MB सहम्मउ । ९. MB सिरिउलि । १०. MB णिववंदें ।

४. १. MB णउ परमेसर° । २. B सुहइं अणियारउ ।

प्रेरित किया (हाँका) था ऐसे-उन्होंने उपवनमें कोमल वटका वृक्ष देखा जो घामको नष्ट करनेवाला, दलों और फलोंसे लदा हुआ था। वहाँ पत्थरसे निर्मित अनेक रत्नोंसे जड़ा हुआ, मनुष्योंके द्वारा बुधजनोंके वचनोंसे संस्तुत जगपाल नामके यक्ष और मनुष्योंके मेलेको देखा।

घत्ता—जगपाल राजाके तपश्चरणके कारण लोगोंने उस सुर (यक्ष) को वनमें स्थापित किया था। उस यक्षके आगे मनुष्योंका जोड़ा नृत्य कर रहा था। राजा वसुपाल कहता है कि हे श्रीपाल! सुनो— ॥२॥

३

यदि दोनों नर, नर या नारी, नारी होकर नाचते तो सुन्दर होता।

यह सुनकर कुमार श्रीपालने कहा कि हे देव-देव! मैंने निश्चित रूपसे जान लिया है कि यह दूसरी सरल और सुकुमार महिला है, जो मनुष्य रूपमें नाच रही है। उस अवसरपर कामने अपना तीर छोड़ा और मायावी पुरुषने सुन्दर कुमारको देखा। उसकी नीवीकी गाँठ ढीली पड़ गयी, नेत्र घूमने लगे और मन काँप उठा, ओठ फड़क गये, पसीना छूटने लगा, कसकर बँधा हुआ केशपाश भी छूट गया, मुख सूखने लगा और वह लड़खड़ाते शब्दोंमें बोलने लगी। तब कंचुकी उस सहृदयसे कहता है कि पुष्कलावती देशमें सुन्दर प्रासादोंवाला रम्यक नामका देश है जो धन-समूहसे रमणीय है। श्रीपुर नगरमें उसका राजा लक्ष्मीधर है, उसकी शुभ करनेवाली जयावती रानी है, उसकी आदरणीय 'यशोवती' नामकी लड़की थी। राजाओंमें श्रेष्ठ उस राजाने जगतपति मुनिको प्रणाम करके पूछा—जिन्होंने कामदेवके दर्परूपी वृक्षकी जड़ोंको नष्ट कर दिया है, ऐसे इन्द्रभूति मुनीन्द्रने कहा था—जो इस कन्याको पुरुषरूपमें नाचते हुए पहचान लेगा, वही इस कन्याके यौवनका आनन्द लेगा। यह सुनकर राजाने मुझे रसभाव उत्पन्न करनेवाले गायन और वादनकी शिक्षा दिलायी। मन्त्रियोंने जिस प्रकार जैसा देखा था, उस कामको उन्होंने आज प्रकाशित किया।

घत्ता—ध्वजपटवाले, गाँवों, नगरों, खेड़ों और कब्बड गाँवोंमें जा-जाकर इस कन्याको इस प्रकार नचाओ और दिखाओ, जिससे इसका वर शीघ्र देख ले ॥३॥

४

प्रत्यक्ष बिना किसी बाधाके उसे देखो-देखो। "तब एक नगरसे दूसरे नगरमें नाचती हुई और नीरसरूपी जलसे लोगोंको सींचती हुई, इस कन्याको लाया हूँ—जो मानो वन-देवताकी तरह है। इस समय इस नगरमें आया हूँ। तुम्हें मैंने देख लिया है, तुम इस कन्याके वर हो गये। और जो उस मुग्धाकी सुन्दर आँखोंवाली सहेली नृत्य करती है वह दूसरी नटराजकी पुत्री है। तब उस युवेशने उन लोगोंके लिए वस्त्र, आभरण और प्रशस्त घर दिये। इसी बीचमें सुधीजनों-

तहु वयणें चल्लिय बिण्णि वि जण   अग्गइ अणु[3]सरंति आ सज्जण ।
ताम णियच्छिउ तेहिं अरूढउ   णरवरु चंचलतुरयारूढउ ।
आसु पमग्गिउ सो सिरिपालें   दिण्णउं धणु लेप्पिणु हयवालें ।
घत्ता—सो तहि कयपरिणामें णडिउ   सहसा कुमारु हयवरि चडिउ ॥
आसण्णु जि सेण्णमज्झि चलिउ   हरि दूरु गंपि दूरुल्ललिउ ॥४॥

५

बाहपवाहजलोल्लियणयणहं   हाहारउ मेल्लंतहं सयणहं ।
तुरिउ तुरंगु अदंसणु जायउ   महिवइ माउसमीउ समायउ ।
इट्ठविओयसोयतवियंगउ   णं पक्खुज्झिउ पडिउ विहंगउ ।
जणणि वि सोउ करंति णिवारिय   मंतिहिं कह व कह व सा हारिय ।
गयइं तेत्थु जहिं जियवम्मीसरु   केवलणाणधारि जोईसरु ।
वंदिउ वंदारयसयवंदिउ   भत्तिइ भव्वलोउ आणंदिउ ।
भणिउं कुबेरसिरीइ दुरासें   पुत्तु महारउ णिउ मायासें ।
तहु भयवंत समागमु कइयहुं   पभणइ जिणु सत्तमु दिणु जइयहुं ।
तइयहुं आयउ पेक्खहि बालउ   ता पणवेप्पिणु मुणि गुणवालउ ।
सुरगिरितलि संठियइं सुरत्तइं   सिविरु मु[3]एप्पिणु मायापुत्तइं ।
घत्ता—बेयड्ढमहामहिहरणियडि   काणणि कुसुमियतरुवरि वियडि ॥
रिउणा तुरयत्तणु परिहरिय   भीयरु रयणीयररूवु धरिउ ॥५॥

---

३. MB अणुसरंत । ४. MB घणवालें ।

५. १. MB add after this the following lines :—

पेक्खेवि णंदणु सोयक्कंतउ   सयलु वि परियणु हिट्ठु भवंतउ ।
अवलोकंतु भमइ महि संतउ (B omits it)
हाहाकारु करंतउ देविए   पुच्छिय मंति जगत्तयसेविए ।
कहहु एहु किं मुच्छिउ णंदणु   जो जगचंदु (B जगवंदु) जेम वरचंदणु ।
केण वि कहिय वत्त परमेसरि   हरिवरेण हिउ णरवरकेसरि ।
तं णिसुणेवि वच्छ पभणंती   महियले णिवडिय देवि रुवंती ।
अंगु समोडइ दुक्खें राणी (B रोणी)   सप्पि व दंडाहय विहाणो ।
हा हा पुत्त मज्झु विच्छोइउ   केण दुरासें हयवरु ढोइउ ।
किं अवहरियइं रण्णि चरंतइं   पक्खिणिहरिणिवराहिहि पुत्तइं ।
हा किं पावें हिउ महु णंदणु   तिहुअणजणमणणयणाणंदणु ।
हा विहि दइव केण हरि ढोइउ   जें महु पुत्तजुयलु विच्छोइउ ।
पुहइणाहु गुणमणिरयणायरु   हा कहं मुक्कु (B कसु मुक्क) रुअंसउ भायरु ।
जेण अणंगहु हय बाणावलि   सो पइं पुत्त ण वंदिउ केवलि ।
कसु धाहावमि को आसंघमि   हा हा दइव कवण दिसि लंघमि ।

२. MB आवइ । ३. MB मुएविणु । ४. MB रयणियरत्तउ ।

को सुख देनेवाला माताके द्वारा हकारा आया। उसके कहने पर वे दोनों ही चल दिये और जो सज्जन थे वे उनका अनुसरण करने लगे। इतनेमें उन्होंने चंचल घोड़ेपर बैठे हुए एक अप्रसिद्ध आदमीको देखा, श्रीपालने उस घोड़ेको माँगा, अश्वपालने उसे धन लेकर दे दिया।

घत्ता—वहाँपर वह कुमार अपने किये हुए कर्मके परिणामसे प्रवंचित हुआ। जैसे ही कुमार घोड़ेपर चढ़ा, सेनाके बीचमेंसे जाता हुआ वह 'अश्व' दूर जाकर एकदम ओझल हो गया ॥४॥

५

आँसुओंके प्रवाह जलसे गीली आँखोंवाले, स्वजनोंके हाहाकार करते हुए भी वह घोड़ा शीघ्र अदृश्य हो गया। राजा वसुपाल माताके समीप आया, इष्ट-वियोगके शोकसे सन्तप्त शरीरवाला वह इस प्रकार गिर पड़ा, मानो पंखोंसे रहित पक्षी गिर पड़ा हो। शोक करती हुई माताको मन्त्रियोंने किसी प्रकार मना किया और उसे सान्त्वना दी। वे लोग वहाँ पहुँचे जहाँ कामदेवको जीतनेवाले केवलज्ञानधारी योगीश्वर थे। देवोंके द्वारा सैकड़ों बार वन्दनीय उनकी वन्दना की। भक्तिसे भव्यजन आनन्दित हो उठे। कुबेरश्रीने कहा कि—खोटी आशासे मायावी घोड़ा मेरे पुत्रको ले गया है। हे ज्ञानवान्! उसका समागम कब होगा। तब जिनवरने कहा कि सातवें दिन आये हुए बालकको तुम देखोगी। तब मुनि गुणपालको प्रणाम करके माँ और पुत्र उस शिविरको छोड़कर सुमेरुपर्वतके तलभागमें स्थित हो गये।

घत्ता—विजयार्ध नामक विशाल पर्वतके निकट खिले हुए वृक्षोंवाले जंगलमें शत्रुने अपना अश्वपन छोड़ दिया और भयंकर राक्षसका रूप धारण कर लिया ॥५॥

६

उरयलविलुलियविसहरहारो कडियलवंकइयघोणसघोरो ।
पंडुरपविरलदीहरदसणो वग्घचम्मवरविरइयवसणो ।
मंदरकंदरसंणिहतोंडो मणुयवसाचच्चिक्कियगंडो ।
सिसुससहरसमदाढाभीसो जलियजलणजालाणिहकेसो ।
णवघणसामलकुवलयकालो खयरो होऊणं वेयालो ।
भासइ हित्ता घरिणि महारी पइं गयजम्मि सुचंपयगोरी ।
कुद्धो तुज्झु दुरंतकयंतो जासि इदाणी कह जीयंतो ।
भंरइ कुबेरसिरीए पुत्तो अहमिह णियकम्मेण णिहित्तो ।
एण्हि भवजलसायरतरणं जिणवरकमकमलं मह सरणं ।
मामणिओ तुरएण कुमारो इय जणवत्तावुज्झियचारो ।
ता विहंगजाणियसुहिदुक्खो पत्तो तहिं जयपालो जक्खो ।

घत्ता—रणभरधुरधारियकंधरहो चंडासिदंडमंडियकरहो ॥
जुवरायहु कारणि दुद्धरहो अब्भिट्टु जक्खु रयणीयरहो ॥६॥

७

भणइ जक्खु खल रोसपरव्वस जाहि जाहि विज्जाहररक्खस ।
मा णिवडहि जलंति कालाणलि वइवसवयणविवरि जगधंघलि ।
मा ओहट्टउ आउ तुहारउ मा तासहि कुमारु महु केरउ ।
अमरिसरसवसु कहिं मि ण माइउ एम भणंतु महंतु महाइउ ।
सो रक्खें खग्गेण दुहाइउ वणसुरवरु बिहिं रूविहिं धाइउ ।
हय बिण्णि वि चत्तारि समुग्गय गलगज्जंत दिव्वें णं दिग्गय ।
पहय चयारि अट्ठ पडिआया अट्ठ वि हय सोलह संजाया ।
हय सोलह बत्तीस भयंकर बत्तीसहं चउसट्ठि मउद्धुर ।
चउसट्ठिहिं वेउव्विउ रूवउ अट्ठावीसउं सउं संभूयउ ।
तं पि दुवड्ढिउ ववगयसंखहिं जलु थलु णहयलु पिहियउ जक्खहिं ।

घत्ता—रयणियरहु मुयबलु णउ कलिउं देवहु हियउल्लउं संचलिउं ॥
किं होही कम्मु णियंतियउं भवियव्वु कुमारहु चिंतियउं ॥७॥

६. १. MB °विरइय° । २. MB °संणिहतुंडो । ३. MB गयजम्मे चंपयगोरो । ४. MB तुरंतु कयंतो । ५. MB एवहिं कहिं तुहु जासि जियंतो । ६. MB भणइ । ७. MB जाम णिहिउ; B सामणिओ; K माणिणिओ । ८. MB °सुहदुक्खो । ९. MB जगपालो । १०. M रणभरघरधारिय°; G रणभर-धारिय° ।

७. १. M मत्त । २. MB पडिमाया । ३. M अट्ठावीसा सउ । ४. MB य वड्ढिउ । ५. MB कम्मणियत्तियउ ।

६

वह वेताल जिसके उरतलपर सर्पोंका हार झूल रहा है। कटितलपर बँधे हुए सर्प विशेषसे जो भयंकर है, जो सफेद विरल लम्बे दाँतोंवाला है, जिसने बाघके श्रेष्ठ चमड़ेके वस्त्र धारण कर रखे हैं, जिसका मुख मन्दराचल पर्वतकी कन्दराके समान है, जिसका गण्डस्थल मनुष्योंकी चर्बीसे शोभित है, जो बालचन्द्रके समान (श्वेत) दाढ़से भयंकर है, जिसके बाल जलती हुई आगकी ज्वालाके समान हैं, जो नवघनके समान श्यामल और नीलकमलके समान काला है, ऐसा वह वेताल आकाशगामी विद्याधर बनकर उससे कहता है कि—तुमने चम्पेके समान गोरी मेरी घरवालीका पिछले जन्ममें अपहरण किया था। तुझपर इस समय दुर्दान्त यम क्रुद्ध हुआ है। इस समय जीता हुआ तू कहाँ जायेगा। तब कुबेर-श्रीका पुत्र अपने मनमें याद करता है कि यहाँ मैं अपने कर्मके द्वारा लाया गया हूँ। इस समय भवजलरूपी समुद्रसे तारनेवाले जिनवरके चरण-कमल ही मेरी शरण है। तब वहाँपर जिसने जनवार्तासे समाचार जान लिया है और जिसने विभंग अवधिज्ञानके द्वारा सुधीजनका दुःख ज्ञात कर लिया है ऐसा जगपाल नामका यक्ष वहाँ आ पहुँचा और बोला कि मेरा कुमार अश्वके द्वारा ले जाया गया है।

घत्ता—वह यक्ष युवराजके लिए, जिसके कन्धे युद्धभारकी धुरा धारण करनेमें समर्थ हैं तथा जिसका हाथ प्रचण्ड अस्थिदण्डसे मण्डित है, ऐसे दुर्धर निशाचरसे भिड़ गये ॥६॥

७

यक्ष कहता है कि—हे क्रोधसे अभिभूत विद्याधर राक्षस तू जा-जा। तू जलते हुए कालानल और विश्वके लिए संकटस्वरूप यमके मुखरूपी विवरमें मत पड़। तेरी आयु नष्ट न हो, मेरे कुमारको तू मत सता। इस प्रकार अमर्षके रससे वशीभूत महाआदरणीय वह महान् इस प्रकार कहता हुआ कहीं भी नहीं समा सका। राक्षसके द्वारा वह दो टुकड़े कर दिया गया। लेकिन वह व्यन्तर देव दो रूपोंमें होकर दौड़ा, उसने उन दोनोंको आहत किया वे चार हुए, मानो गरजते हुए दिव्य दिग्गज हों। चारोंको आहत करनेपर वे आठ हो गये, आठ आहत होनेपर सोलह हो गये, सोलहको आहत करनेपर भयंकर बत्तीस हो गये, बत्तीसको आहत करनेपर चौंसठ हो गये। चौंसठके दो टुकड़े करनेपर एक सौ अट्ठाईस हो गये। और वे भी दुगने बढ़ गये। इस प्रकार असंख्यात यक्षोंने जल-थल और आकाशको आच्छादित कर लिया।

घत्ता—निशाचरका बाहुबल कम नहीं हुआ। देव (यक्ष) का हृदय डिग गया, कि क्या होगा। उस कर्मको देखते हुए उसने कुमारके भविष्यकी चिन्ता की ॥७॥

८

तें तहु होंतउ सुहुं पडिवण्णउं | थिउ विरएवि हैवु पच्छण्णउं ।
रुप्पयसेलहु उप्परि थाइवि | ओयणसउ गयणंगणि जाइवि ।
रिउणा चित्तउ खयलोयरियउ | देविंदें[3] लहु विज्जइ धरियउ ।
सणिउं सणिउं सिरिसिहरइ ठवियउ | णिवणंदणु तहिं तणहइ खवियउ ।
फलिहसिलौयलु ढंकिउ सरवरु | दिट्ठउ जलु मैण्णिवि गउ सुंदरु ।
तोयाकंखइ धवलि पॅवित्थरि | पसरियकरयलँ लग्गा पत्थरि ।
चिंतइ बालउ विंभिउ णिब्भरु | देवसहावें सलिलु वि णिट्ठुरु ।
ता तहिं अवसरि कामकिसोरी | घडकडियल संप्रौइय गोरी ।
जलविवरंतरि सा पइसंती | दिट्ठी तरुणं णीरु भरंती ।
तेण वि मग्गं जायवि कोमलु | रसिउ तेण सुकुसुमरॅयपरिमलु ।
घत्ता—धॅवलेहिं चलंतिहिं लोयणिहिं | सो महिवइ मॅयणुक्कोवणिहिं ॥
कलसंकियकडिइ णियच्छियउ | पडिहाहयाइ णाउंछियउ ॥८॥

९

सरसमणुब्भवपणयसॅणिद्धइ | आइय भवणहु भासिउं मुद्धइ ।
हरि जइ तो तहु चक्कु ण लंछणु | वम्महु जइ तो तहु ण कोसुमॅधणु ।
ससि जइ तो तहु णत्थि कुरंगउ | रवि जइ तो सो ण वि अत्थं गउ ।
सुरवइ तो जइ कुलिसु ण तहु करि | तोयहु जंतिइ माइ महासरि ।
मई अवलोइउ एक्कु जुवाणउ | किं जाणहु तेल्लोकहु राणउ ।
किं जाणहुं जं जणवउ घोसइ | सो सिरिबालु णराहिउ होसइ ।
लइ आयउ पिययमु तुम्हारउ | घोलउ थणयलि णं मणिहारउ ।
ता संचलियउ पंच कुमारिउ | गयहु पासि णावइ गॅणियारिउ ।
णं कंदप्पें भल्लिउ मुक्कउ | ताउ तासु आसण्णउ ढुक्कउ ।
भासिउ भद्दें धवॅलियगयणहिं | किं जोयहु अॅहुड्ढहिं णयणहिं ।
किं महु आसण्णाउ णिविट्ठउ | आसि कालि किं कत्थइ दिट्ठउ ।
तं णिसुणेप्पिणु विहसिवि धिट्ठइ | दिण्णु पडुत्तरु जेट्ठकणिट्ठइ ।
घत्ता—पुक्खलवइमहिहि सुगोहणइ | पयॅडम्मि देसि दुज्जोहणइ ॥
सीहउरि सहइ णरवालणिवुँ | लच्छीकंतइ णं लच्छिर्धवु ॥९॥

८. १. MB सुह° । २. MB रूउ । ३. MB देवें दलु लहु; T दलदहु पणंलघु । ४. MB °सिलायलि । ५. MB मण्णेविणु सुंदरु । ६. MB सवित्थरि । ७. MB °करयलु । ८. MB विंभय° । ९. MB °संपाइय° । १०. MB °रयपरिमलु । ११. MB चवलचलंतहिं लोयणहिं; K वलंतहिं । १२. MB मयणुक्कोयणहिं । १३. MB पडिहाहय णायाउच्छियउ; T परिहाहय ।

९. १. MB °समिद्धइ । २. MB कुसुमधणु । ३. MB गणियारउ । ४. MB धवलियवयणहिं । ५. MB अद्धदहिं । ६. MB पायडवि । ७. MB °णिउ । ८. MB लच्छिधउ ।

८

उसने उसके होनेवाले शुभको स्वीकार किया। और वह अपना प्रच्छन्नरूप बनाकर स्थिर हो गया। विजयार्ध पर्वतके ऊपर स्थित होकर सौ योजन आकाशके आँगनमें जाकर शत्रुके द्वारा फेंके गये आकाशसे गिरते हुए कुमारको देवेन्द्रने शीघ्र अपनी विद्यासे धारण किया। धीरे-धीरे श्रीपर्वतके शिखरपर उसे स्थित (स्थापित) कर दिया। वह राजकुमार वहाँ भूखसे व्याकुल होने लगा। स्फटिक मणिकी चट्टानोंसे ढँका हुआ सरोवर था, उसने उसे देखा और जल समझकर वह सुन्दर वहाँ गया। जलकी इच्छासे विशाल श्वेत पत्थरपर फैलाये गये उसके हाथ पत्थरसे जा लगे। बालक अत्यन्त विस्मित होकर सोचता है कि देशके स्वभावके सदृश यहाँ पानी भी कठोर है। इतनेमें उस अवसरपर एक कामकिशोरी गोरी कमरपर घड़ा रखे हुए वहाँ आयी। उस तरुणने जलके विवर्तमें प्रवेश करती हुई और पानी भरती हुई उसे देखा। उसने भी उस मार्गसे आकर अच्छी कुसुम रजसे सुभाषित कोमल जलको पिया।

घत्ता—कलशको कमरमें लिये हुए कामकी उत्सुकतासे युक्त धवल चंचल नेत्रोंके द्वारा उस राजाको देखा और जिसकी प्रतिमा आहत है, ऐसी उस बालाने पूछा नहीं ॥८॥

९

जो सरस मनमें उत्पन्न प्रणयसे अत्यन्त स्निग्ध है, ऐसी उस भोली गोरीने भवनमें आकर पूछा—कि यदि वह विष्णु है तो उसके चक्र और चिह्न नहीं हैं, यदि वह कामदेव है तो उसके पास कुसुमधनु नहीं है, यदि वह चन्द्रमा है तो उसके हिरण चिह्न नहीं है। अगर वह सूर्य है तो उसका अस्त नहीं हुआ है। यदि वह इन्द्र है तो उसके हाथमें वज्र नहीं है। हे आदरणीय! महा-सरोवरमें पानीके लिए जाते हुए मैंने एक युवकको देखा है, क्या जानूँ कि वह त्रिलोकका राणा हो? क्या जानूँ कि जिसके बारेमें लोग कहते हैं वह वही श्रीपाल नामका राजा हो। लो, तुम्हारा प्रियतम आ गया और अपने स्तनों, मणिहारोंको घुमाओ। तब पाँचों कुमारियाँ चलीं, मानो हाथीके पास उसकी हथिनियाँ जा रही हों, मानो कामदेवने अपनी मल्लिकाएँ छोड़ी हों, वे उस कुमारके पास पहुँचीं। उस भद्रने कहा—आकाशको धवलित करनेवाले और आधे-आधे नेत्रोंसे आप क्यों देख रही हैं। मेरे पास आकर क्यों बैठीं? लगता है कि कहींपर आप लोगोंको मैंने देखा है। यह सुनकर ढीठ बड़ी कन्याने जवाब दिया।

घत्ता—पुष्कलावती भूमिपर अच्छे गोधनवाले दुर्योधन नामक प्रसिद्ध देशके सिन्धुपुर नगरमें लक्ष्मी नामकी अपनी पत्नीसे राजा नरपाल ऐसा शोभित था मानो विष्णु हो ॥९॥

१०

हउं सस रइकंतहि लहुयारी अयदत्ता एयहुं गरुयारी ।
मयणक्कंत मयणवइ कुमारिहि अयवइ जेट्ठहुं जणमणहारिहि ।
अवर वि विमल वयंसिय छट्ठी असणिवेयखयरिंदें दिट्ठी ।
अम्हहिं सहुं उववणि कीलंती कामुयमइणेहेणुब्भंती ।
मग्गिउ तें ताएण ण दिण्णउ पुच्छिउ जइ को परिणइ कण्णउ ।
भणिउ जणणु रिसिणा पिहुबोहें[३] एवहिं णरवइ काइं विवाहें ।
गेहिणीउ होसंति पिसक्किहु तुह पुत्तिउ सिरिवालहु चक्किहु ।
पुणु अम्हइं मग्गइ तडिवेयउ पिउवयणेण णिरुत्तउ जायउ ।
चोरिवि आणियाउ णिक्करुणें जलयसिगसंचोइयचरणें ।
तेण दुरासएण दुहंतें णिहियउ णिज्जणि रोसु वहंतें ।

घत्ता—णिवसहुं काणणि णिवच्छवि जणिउ तालूरजुयलसंणिहथणिउ ॥
अप्पउ हियवइ सोयंतियउ सिरिवालपंथु जोयंतियउ ॥१०॥

११

तुहुं जि णाहु पइं तवियइं अंगइं अण्णु कि णाहहु मत्थइ सिंगइं ।
लइ लइ घरिणि कंत रिउचंडहिं अवरुंडहि दीहहिं भुयदंडहिं ।
भासइ सूहउ जइ वि रवण्णउं कण्णारयणु होइ णादिण्णउं ।
अण्णेक्क वि कुमारि संप्राइ[३]य रक्खसिरूवें कहिं वि ण माइय ।
णियडी होंति अणंगें लुद्धी पंचहिं सरेंहिं उरत्थलि विद्धी ।
सवरें हय सारंगि व लोलइ सुहयहु केरउ वयणु णिहालइ ।
तहिं अवसरि गइयउ छ वि तरुणिउ वग्घिहि गंधें णावइ हरिणिउ ।
इयरइ पुणु पासाउ विरइयउ सयणमग्गु सोहइ अइसइयउ ।
सरसालाव तासु सुइ पाविय णयणंजुवल मीणा इव भाविय ।
जं वल्लहु मईइ अवरुंडिउ जं कण्णावउ कण्णइ खंडिउ ।
तं दोसेण विज्ज गय णासिवि थिय ससिमुहि अप्पाणउं दूसिवि ।
हूई कामगहें विवरेरी पुच्छइ सूहउ तुहुं कहु केरी ।

घत्ता—अचलत्तें णिज्जियमहिहरहु सा कहइ सवइयरु णरवरहु ॥
सिरिसिहरहु चउजोयणसयहिं रयणउरु अत्थि मंडिउ धयहिं ॥११॥

---

१०. १. MB मयणकंति । २. MB तेण ताउ णउ दिण्णउ । ३. M पहुबोहें । ४. B णियवयणेण । ५. M णिरुत्तउ । ६. MB मालूर° ।

११. १. MB परिणि । २. MB सुहउ जइ वि सुरवण्णउं । ३. MB संपाइय । ४. MB रक्खसरूविणि कह वि । ५. MB लुद्धी । ६. MB पंचसरेंहिं । ७. M णयणजुवल मीणी इव; B णयणकूव मीणी इव । ८. MB मंडइ । ९. MB ससिबिमुह ।

१०

मैं उसकी रतिकान्तासे छोटी कन्या हूँ। इनमें बड़ी जयदत्ता है। मदनकान्ता और मदनावती, जनमनके लिए सुन्दर कुमारी जयावती जेठी है और भी छठी सखी विमला है। जिसे हमारे साथ उपवनमें क्रीड़ा करते हुए अशनिवेग विद्याधरने देख लिया। उसकी कामुक वृत्ति स्नेहसे भंग हो गयी। उसने कन्याको माँगा, पिताने इनकार कर दिया। उसने मुनिसे पूछा कि कन्यासे विवाह कौन करेगा? पृथुबोध मुनिने पितासे कहा कि हे राजन्! इस समय विवाहसे क्या? तुम्हारी पुत्री बाणयुक्त श्रीपाल चक्रवर्तीकी गृहिणी हो गयी है। फिर अशनिवेगने हम लोगोंको माँगा, किन्तु पिताके वचनसे वह निरुत्तर हो गया। तब जलदके शिखरके समान अपने पैरको चलानेवाला वह निष्करुण हमें चुराकर ले आया और खोटे आशयवाले उस दुर्दान्तने मनमें क्रोध करते हुए हमें यहाँ रख दिया।

घत्ता—हम लोग राजकुमारियाँ होकर भी तालपत्रोंसे अपने स्तनको ढँकती हैं, और अपने मनमें सन्ताप करते हुए राजा श्रीपालका रास्ता देख रही हैं ॥१०॥

११

तुम्हीं मेरे स्वामी हो, क्योंकि तुमने हमारे अंगोंको सन्तप्त किया है। नहीं तो क्या? स्वामीके सिरपर सींग होगा। हे स्वामी! इस गृहिणीको लो और अपने शत्रुओंसे प्रचण्ड भुजाओंसे उसका आलिंगन करो। तब वह सुभग कहता है कि यद्यपि कन्यारत्न सुन्दर है—फिर भी बिना दिये हुए वह मेरा नहीं हो सकता। एक और कुमारी वहाँ आयी। राक्षसीके रूपमें जो कहीं भी नहीं समा पा रही थी। कामदेवसे आक्रान्त उसके निकट आती हुई वह (कामदेव) के पाँचों बाणोंसे उरस्थलमें विद्ध हुई भीलसे आहत हरिणीकी तरह वह चंचल थी। और उस सुभगका मुख देख रही थी। उस अवसरपर वे छहों तरुणियाँ चली गयीं। जिस प्रकार बाघकी गन्ध पाकर हरिणियाँ चली जाती हैं। दूसरीने एक प्रासाद बनाया। उसमें सोनेका पलंग अत्यन्त शोभित था। श्रीपालके कानोंमें सरस आलाप आने लगा और श्रीपालके नेत्रयुगल मछलीकी भाँति घूमने लगे। जैसे ही उस कन्याने प्रियका आलिंगन किया वैसे ही उसका कन्याव्रत खत्म हो गया। इस दोषके कारण विद्या नष्ट होकर चली गयी। और वह चन्द्रमुखी अपनेको दोष देती हुई कामग्रहसे विवर्ण हो गयी। सुन्दर कुमारने पूछा कि तुम कौन हो?

घत्ता—अचलतामें महीधरको जीतनेवाले नरश्रेष्ठ श्रीपालसे वह अपना वृत्तान्त कहती है—श्रीशिखरसे चार सौ योजन दूर और ध्वजोंसे मण्डित रत्नपुर नगर है ॥११॥

१२

थणियवेउ तहिं अत्थि णरेसरु जोइ[1]वेयदेविहि वल्लहु वरु ।
असणिवेउ तहु पुत्तु पमत्तउ तेणाणेप्पिणु ईह[2] तुहुं घित्तउ ।
हउं तहु तणिय वहिणि पिय तडिरय तें पेसिय पइं णियहुं समागय ।
किं जीवहि किं मुउ सिंचियसिलि णिवडेप्पिणु खयलि गिरिवरयलि ।
दूरहु जोइओ सि मइं रोसें किर पइं हणमि णिसा[3]यरिवेसें ।
णवर हउं जि हय वम्महकंडें इंदचंदणाइंदविहंडें ।
दे[4] सोहग्गभिक्ख मइं मग्गिउ मच्छरु मेल्लिवि तुहुं ओलग्गिउ ।
एक्कवार जइ कें[5]रि करु ढोयहि एक्कवार जइ मुहुं अवलोयहि ।
तो जीवियफलु मइं जगि लद्धउं तं तहिं भासिउ तेण णिसिद्धउ ।
महु[6] विणएं पारद्ध महुच्छव जइ पइं देंति मिलेविणुं[7] बंधव ।
तो गिण्हमि णं तो धुउ वज्जमि कण्णासाहसेण हउं लज्जमि ।
ता सा गय जवेण रयणउरहु भासइ भाइहि मा[8]रियवइरहु ।
मुउ सो णरु मग्गियपलसयलइं मइं दिट्ठइं भमियइं गिद्धउलइं ।

घत्ता—णीसासजलणजालियदिसइ असहंतिइ असणिवेयससइ ॥
जहिं णिवसइ थिरु वरु जित्तमहि तहिं पेसिय मयणवडाय सहि ॥१२॥

१३

ताइ गंपि सूहउ अब्भत्थिउ जो रक्खेसइ जणवउ दुत्थिउ ।
विज्जाहररायहिं रइधुत्तिउ थणियवेयमरुवेयहं पुत्तिउ ।
सो परिणेसइ रइहयरविरहु चक्कवट्टि सिरिपा[1]लु महापहु ।
रूवु[2] तुहारउ हियवइ भावइ विज्जुं[3]वेय पिय दुक्करु जीवइ ।
भणइ कुमारु काइं भासिज्जइ होंतउ केण कम्मु लंघिज्जइ ।
जाहि दूइ हउं पिययमु होसमि बालहि लीलालिंगणु देसमि ।
तं णिसुणिवि गय गेहहु दूई आलोइय कुमारि किस हूई ।
आइय पुणु विरहाउर तेत्तहि अच्छइ णरमयरद्धउ जेत्तहि ।
कुमारिउ रमणभावरसगिल्लउ संभासंतु ताउ पुलिल्लउ ।

घत्ता—अवलोइवि सुंदेरि[4] सुंदरिउ वणि णट्ठउ खणि छें[5] वि कुंयरिउ ॥
णं मुणिवरवित्तिहि दुग्गइउ णं सुकइमइहि जडकइमइउ ॥१३॥

---

१२. १. B जाइवेय° । २. MB तुहुं इह । ३. MB णिसायरवेसें । ४. M दिहि । ५. MB करु करि ।
६. MB बहुविणएं । ७. K मिलेप्पिणु । ८. MB मारोय° ।

१३. १. MB सिरिवालु । २. MB रूउ । ३. MBK विज्जवेय । ४. B सुंदरु । ५. MBT छउओयरिउ
and gloss in T क्षामोदराः ।

१२

वहाँपर स्तनितवेग नामका राजा है, जो ज्योतिवेगा देवीका प्रिय पति है। अशनिवेग उसका उद्दण्ड प्रमादी पुत्र था। उसने यहाँ लाकर तुम्हें डाल दिया है। मैं उसकी प्रिय बहन विद्युद्वेगा हूँ। उसके द्वारा भेजी गयी मैं तुम्हें देखने आयी हूँ कि तुम जीवित हो या आकाशसे पहाड़में चट्टानपर गिरकर मर गये। वह कहती है कि मैंने रोषपूर्वक दूरसे तुम्हें देखा कि जबतक मैं तुम्हें निशाचर रूपमें मारूँ, तबतक मैं कामदेवके बाणोंसे आहत हो उठी। (इन्द्र-चन्द्र-नागेन्द्र-को विखण्डित करनेवाले बाणसे) मैं सौभाग्यकी भीख माँगती हूँ। वह मुझे दो। ईर्ष्या छोड़कर मैं आपकी शरणमें हूँ। एक बार यदि तुम मेरा हाथ अपने हाथमें ले लो, एक बार यदि मेरा मुँह देख लो, तो मैं अपने जीवनका फल संसारमें पा जाऊँगी। तब उस कुमारने उसके कहे हुएका निषेध किया और कहा—"यदि तुम्हारे भाई लोग एकत्रित होकर बड़ा उत्सव प्रारम्भ करके विनयपूर्वक तुम्हें देते हैं तो मैं विवाह (ग्रहण) करूँगा। यह मैं निश्चयपूर्वक कहता हूँ। तुम्हारे इस कन्या सुलभ स्वभावसे मैं लज्जित हूँ।" तब वह वेगसे रत्नपुर चली गयी। और शत्रुओंको मारनेवाले अपने भाईसे कहती है कि वह आदमी मर गया। मैंने मांस-खण्डोंको खोजते हुए गिद्धोंके झुण्डको वहाँ घूमते हुए देखा है।

घत्ता—निःश्वासकी ज्वालाओंसे दिशाओंको प्रज्वलित करनेवाली अशनिवेगकी बहन वियोगको नहीं सहती हुई, अपनी सखी मदनपताकाको वहाँ भेजती है कि जहाँ पृथ्वीको जीतने-वाला वह स्थिर वर निवास कर रहा था ॥१२॥

१३

उसने वहाँ जाकर उस सुभगसे प्रार्थना की कि—जो इस दुःस्थित जनपद और विद्याधर राजाओंकी रतिसे व्याप्त पुत्रियोंको स्तनितवेग और पवनवेगसे रक्षा करेगा, अपनी कान्तिसे सूर्यके रथको आहत करनेवाला वह महाप्रभु श्रीपाल चक्रवर्ती उनसे विवाह करेगा। तुम्हारा रूप मुझे हृदयमें अच्छा लगता है। "प्रिय विद्युद्वेगा कठिनाईसे जीवित है। कुमार कहता है कि तुम क्या कहती हो ? होनेवाले कर्मका उल्लंघन कौन कर सकता है। हे दूती ! तुम जाओ। मैं उस बालाका प्रियतम हूँगा। और उस बालाको लीलापूर्वक आलिंगन दूँगा। यह सुनकर दूती घर चली गयी, और एकदम दुबली हुई कुमारीको देखा। फिर वह विरहातुर वहाँ आयी कि जहाँ वह कामदेव था। रमण भावके रससे आर्द्र वह कुमारी अपने पहलेके तातसे सम्भाषण करती हुई।

घत्ता—उस सुन्दर सुन्दरीको देखकर वे छहों कुमारियाँ एक क्षणको वनमें भाग गयी हैं, मानो सुकविकी मतिसे जड़ मतियाँ भाग गयी हों ॥१३॥

१४

आय णिसण्णी णियडि खगेसरि णाइं समुद्दासण्ण महासरि ।
थवइ सवयणु पिहेप्पिणु हत्थें पेत्थु जि घोरतवह सामत्थें ।
भो मणसियकणोहविस्थारा मरणु ण कासु वि होइ भडारा ।
हउं वि सणेहिं जंपिय पेक्खमि तं पइं पुण्णवंतु किर रक्खमि ।
तो वि देव वीसासु ण किज्जइ वणयरदुग्गउ भवणु रइज्जइ ।
एम चवेप्पिणु मरगयतोरणु खंभहु उप्परि कयउ णिहेलणु ।
तहिं कुबेरसिरितणुरुहु णिहियउ रत्तें कंबलेण संपिहियउ ।
अणुदिणु एंतिहिं रइरसतुरियहिं जिह णउ घिप्पइ भूगोयरियहिं ।
तिह तहिं दुद्धरि रमणु थवेप्पिणु गय पणइणि पेसणु भासेप्पिणु[3] ।
अरुणावरणच्छण्णु खरतोंडें मण्णिवि मासपिंडु भेरुंडें ।
णिउ णिवचंदु रुंदगयणयलहु अंगुत्थलिय घुलिय करकमलहु ।

घत्ता—आएसपुरिसणामंकधरि दूसहविओयसिहितावहरि ।
तां रक्खणभिक्खहि णिम्मलहु घरु आणिवि अप्पिय वप्पिलहु ॥१४॥

१५

णाणारयणफुरंतपईवइ सिद्धकूडजिण[1]णिलयसमीवइ ।
जाव पक्खि धरणियलि परिट्ठिउ ता पहु अंगु वेलेप्पिणु उट्ठिउ ।
तसिउ खयरु उड्डिउ णहि चंचलु तहुं पयणहलग्गउ गउ कंबलु ।
पडिउ धरहि किंकरहिं णियच्छिउ जाणवि मयणवईहि पयच्छिउ ।
पत्तेहि[3] एण वि दिट्ठउ जिणहरु दुक्कियदुक्खलक्खणिक्खयकरु ।
थुइ विरयंतहु दुण्णयसाडइं विहडियाइं दढकुलिसकवाडइं ।
जें दिट्ठें णट्ठइ संचिउ मलु जें दिट्ठें उप्पज्जइ केवलु ।
जें दिट्ठें कुदिट्ठि ओहट्टइ जें दिट्ठें सम्मइ परिवट्टइ ।
जें दिट्ठें उवसमु संपज्जइ जें दिट्ठें अप्पउ परु णज्जइ ।
जें दिट्ठें दुग्गइगइ णासइ जें दिट्ठें जगु सयलु वि दीसइ ।
सो दिट्ठउ दुक्कम्मणिवारउ[5] देवदेउ अरहंतु भडारउ ।
थोत्तवित्तु कइमग्गपसिद्धउ गुणवालंगरहें पारद्धउ ।

घत्ता—तुहुं मायबप्पु तुहुं संतियरु तुहुं णिरलंकारु वि हिययहरु ॥
जिण णिम्मय तेरी जेहिं तणु इह तिहुंयणि[6] तेत्तिय जि अणु ॥१५॥

१४. १. M अत्थु ज घोर° । २. MB भणेप्पिणु । ३. MB भावेप्पिणु । ४. MB सा । ५. MB घरि ।
१५. १. MB °जिणभवण° । २. M लेविणुउ विट्ठउ; B वलेविणु तुट्ठिउ । ३. MB एंतएण तें दिट्ठउ । ४. MB णिट्ठइ संचिय मलु । ५. M °णिवारिउ । ६. MB तिहुयणि फुडु तेत्तिय ।

१४

वह विद्याधरी पास आकर बैठ गयी। हाथसे अपने मुखको ढँककर वह कहती है कि यहाँ घोर तपकी सामर्थ्यसे हे कामदेवके बाण समूहका विस्तार करनेवाले, हे आदरणीय! किसीका भी स्मरण नहीं होता। मैं भी स्नेहसे कहीं गयी तुम्हें देखती हूँ। पुण्यात्मा तुम्हारी रक्षा करती हूँ। तब भी हे देव विश्वास नहीं करना चाहिए और वनचरोंके लिए दुर्गम भवन बनाना चाहिए। यह कहकर पन्नोंके तोरणवाला एक प्रासाद उसने खम्मेके ऊपर बनाया, उसमें 'कुबेर-श्री'के पुत्र 'श्रीपाल' को रख दिया और लाल कम्बलसे ढँक दिया। जिससे प्रतिदिन आनेवाली रतिरसरूपी घोड़ियाँ इन मनुष्यनियोंके द्वारा यह ग्रहण न कर लिया जाये इस प्रकार उस प्रियको उस दुर्ग्राह्य घरमें रखकर आज्ञा लेकर वह प्रणयिनी चली गयी। अरुण लाल कपड़ेसे ढँके हुए उसे मांसका पिण्ड समझकर तीखी चोंचवाला भेरुण्ड पक्षी राजाको ले गया। विशाल आकाशतलसे उसके करकमलसे अँगूठी गिर गयी।

घत्ता—आदर्श पुरुषके नामको अपनी गोदमें धारण करनेवाली, दुःसह वियोगकी आगके सन्तापको दूर करनेवाली, उसे रक्षा करनेवाले अनुचरोंने घर आकर निर्मल पवित्र बप्पिलाको सौंप दिया ॥१४॥

१५

नाना रत्नोंसे चमकते हुए सिद्धकूट जिनालयके समीप धरतीतलपर जैसे ही बैठा, वैसे ही अपने शरीरको हिलाकर राजा श्रीपाल उठा। वह चंचल पक्षी डरकर आकाशमें उड़ गया। कम्बल उसके पैरोंके नखसे लगा हुआ चला गया। धरतीपर पड़े हुए और मदनवतीका इच्छित समझकर अनुचरोंने उसे देखा। यहाँपर इस श्रीपालने भी दुष्कृत लाखों पापों और दुखोंका नाश करनेवाले जैन मन्दिरको देखा। स्तुति करते हुए, दुर्नयको नाश करनेवाले दृढ़वज्र-के किवाड़ खुल गये। जिसको देखनेसे संचित कुदृष्टि पाप नष्ट हो जाता है। जिसको देखनेसे केवल-ज्ञान उत्पन्न हो जाता है। जिसको देखनेसे सम्यक्-दर्शन प्राप्त हो जाता है। (त्रिरत्न) जिसको देखनेसे उपशम भाव प्राप्त होता है। स्व और परका विवेक होता है। जिसको देखनेसे दुर्गतिका नाश होता है। जिसको देखनेसे समग्र संसार दिखाई देता है। ऐसे उन दुष्कर्मोंका निवारण करनेवाले देवोंके देव आदरणीय अनन्त भगवान्को देखा और कवि मार्गमें प्रसिद्ध स्तोत्र व्रतको 'गुणपाल' के बेटे 'श्रीपाल' ने प्रारम्भ किया।

घत्ता—आप माँ-बाप हैं। आप शान्ति करनेवाले हैं, आप अलंकारोंसे रहित हृदयका धारण करनेवाले हैं। हे जिनेन्द्र! जिन परमाणुओंसे तुम्हारे शरीरकी रचना हुई है वे परमाणु तीनों लोकोंमें उतने ही थे ॥१५॥

१६

इय वंदिवि जिणु गुणहिँ विसिट्ठउ मुह[1]मंडवि कुमारु उवे[2]विट्ठउ ।
ता[3] तहिं संपत्तउ खेयरणरु भाहासइ सिरसंजोइयकरु ।
इह भोगउरि समुण्णयमाणउ अणिलवेउ णामें खगराणउ ।
पिय कंतवइ णाम तहु गेहिणि सुय भोयवइ भोयजलवाहिणि ।
को होहि त्ति पणयतणयहि वरु पुच्छिउ तेण को वि जोईसरु ।
गाढधरियसंजमसुहलीसें तं जाणिवि जंपियउ जईसें ।
जेणाएं विहडंति सुणिविडइं सिद्धकूडजिणभवणकवाडइं ।
होसइ सो वम्महसरभत्थहि वरु तुह सुयहि सुरुँव[4]पसत्थहि ।
हउं जोयहुं राएण णिवेइउ णरवइ तुहुं एवहिं संभोइउ[5] ।
णेच्छंतु वि कुमारु उच्चाइउ णहयरु तुरिउ णहेणुद्धाइउ ।
चिक्कमंति पासायहु उप्परि पुरु संपत्तें दाविय सुंदरि ।
सा भोयवइ तेण सुईलीणें[6] णिंदिय वंधवसोयविलीणें ।
एह णारि आसीविस णाइणि एह णारि असुभक्खिणि डाइणि ।
विणु आहारें एह विसूई विणु सिहिणा वि चुरुलि संभूई ।
घत्ता—खयराहिवपुरिसणियंविणिइ दुज्जणलीणइ मणँताविणिइ[7] ॥
थणजुयलउ णिवणिरूवियउं णियमणथद्धत्तणु[8] दावियउं ॥१६॥

१७

कंदरेण विणु वग्घि महेली गरलेसत्ति[1] णं मारणसीली ।
रयणि व मित्तहु पुरउ ण थक्कइ समलहु दोसायरहु पढुक्कइ ।
मईरा[2] इव णिच्चु जि मयमत्ती सौणि[3] व दाणमेत्तकयमेत्ती ।
हो हो उक्कंठिउ गिरु अच्छमि मायभाउ जइ वेण्णि वि पेच्छमि ।
तो हउं जीवमि दिट्ठें णाहें होउ पहुच्चइ मज्झु विवाहें ।
एम भणंतु रइयरिउभेयहु दरिसिउ सुंदरु मारुयवेयहु ।
अण्णु वि अक्खिउ जिह णउ इच्छिउ जिह तं णारीरयणु दुँगुंछिउ[4] ।
णियसुयणिंदावायविरुद्धें तं णिसुणिवि खयरेसें कुद्धें ।
उत्तउं उच्चाएप्पिणु णिज्झणि एहु गहिल्लउ घल्लउ पिउवणि ।
थेरीरूवु[5] रएवि दइच्चें घत्तिउ सो तहिं तेण जि भिच्चें ।
धत्ता—छुडु छुडु जि णिहित्तउ वालु तहिं[6] हँरिकेउ पवणजवपुत्तु जहिं[7] ॥
झायंतु मंतु वलणिज्जियउ सव्वोसहिविज्जइ तज्जियउ ॥१७॥

---

१६. १. MB सुहमंडवि । २. MB उवइट्ठउ । ३. MB तो । ४. MB सरूव° । ५. MB संभासिउ । ६. GK record a p सइलीणों इति पाठे सर्वेषां कर्णपरिचितेन; शास्त्रलीनेन वा । ७. MB परताविणिइ । ८. MB °थड्ढत्तणु ।

१७. १. MB गयसत्ति व णरमारण° । २. MB मयराइ व । ३. M साणि व दाणमत्तकय°; B साणिव-बाणकयमेत्ती । ४. MB दुगंछिउ । ५. MB °रूउ धरेवि । ६. MB जहिं । ७. MB ता हरिपवणंज-वपुत्तु तहिं ।

१६

इस प्रकार विशिष्ट गुणोंसे परम जिनेन्द्रकी वन्दना कर वह कुमार रंगमण्डपमें बैठ गया। तब एक विद्याधर पुरुष वहाँ आया। और अपने दोनों हाथ सिरसे लगाते हुए बोला—इस भोगपुरी नगरीमें उन्नत मानवाला 'अनिलवेग' नामका विद्याधर राजा है। उसकी कान्तिवती नामकी प्रिय गृहिणी है। उसकी भोगवती नामकी लड़की है। राजाने योगीश्वरसे पूछा कि इस प्रणय पुत्रीका वर कौन होगा? जो प्रगाढ़ धारण किये गये संयममें धुरन्धर हैं ऐसे योगीश्वरने विचार-कर कहा कि—जिसके आनेपर अच्छी तरह लगे हुए सिद्धकूट 'जिन-भवन' के किवाड़ खुल जायेंगे वह कामदेवके बाणोंको धारण करनेवाली स्वरूपमें प्रसिद्ध तुम्हारी कन्याका वर होगा। राजाके द्वारा निवेदित मैं यहाँ देखते हुए—हे राजन्! मैंने तुम्हें देखा। नहीं चाहते हुए भी उसने कुमारको उठा लिया और वह नभचर शीघ्र आकाशमार्गसे उड़ा। प्रासादके ऊपर खेलती हुई, नगर आनेपर कन्या उसे दिखायी। अपने बन्धुओंके शोकमें लीन तथा शास्त्रमें लीन उस 'श्रीपाल' ने 'भोगवती' की निन्दा की। यह नारी विषैले दाँतोंवाली नागिन है। यह नारी अशुभ कहने-वाली डाइन है। ये बिना आहारकी विषूची है, ये बिना ज्वालाओंकी आग है।

घत्ता—विद्याधर राजाकी वह लड़की उस दुर्जनमें लीन मनको सन्तप्त करनेवाली अपने नित्य सुन्दर अनुपम स्तनयुगलको तथा अपने मनमें ढीठपनेको उसे दिखाया ॥१६॥

१७

यह महिला बिना गुफाकी बाघिन है, ये मारनेवाली विषशक्ति है, रात्रिके समान यह मित्र (सूर्य) के सामने नहीं ठहरती, यह श्यामल दोषाकर (चन्द्रमा) के पास पहुँचती है। यह मदिराके समान नित्य मदमत्त रहनेवाली है, कुत्तोंके समान दानमात्रसे मित्रता करनेवाली है, "अच्छा-अच्छा मैं उत्कण्ठित यहाँ स्थित रहता हूँ, जिससे दोनोंका मायाभाव देख सकूँ। स्वामीके देखनेपर ही मैं जीवित रह सकता हूँ। विवाहसे मुझे क्या लेना-देना?" ऐसा सोचते हुए उस सुन्दरको जिसने शत्रुभेदन किया है, ऐसे मारुत वेगके लिए उसे दिखाया और उसने यह भी कहा कि जिस प्रकार उसने उसे नहीं चाहा, और उसने नारीजनकी निन्दा की। अपनी कन्याकी निन्दाकी बातसे विरुद्ध होकर उस क्रुद्ध विद्याधर राजाने वह सुनकर कहा कि—उठाकर इस पागलको प्रेतवनमें फेंक दो। तब 'दैत्य' ने श्रीपालको बुढ़ियाका रूप बनाया और उस अनुचरने उसे वहाँ फेंक दिया।

घत्ता—शीघ्र ही उस बालकको वहाँ फेंक दिया गया कि जहाँ 'पवनवेग' का पुत्र 'हरिकेतु' मन्त्रका ध्यान करता था। और बलसे जीते गये जिसे सर्वोपधि विद्याने डाँट दिया था ॥१७॥

१८

तंबिरणेत्तइ पिंगलकेसइ दाढा[1]भीसणरक्खसवेसइँ[2] ।
विज्जइ वंतेउं[3] जं जं जेहउं उड्डिवि अंजलि तं तं तेहउं ।
पिय पिय ताहि भणंतिहि पीयउ सुहडचित्तु ण वि किं पि वि भीयउ ।
पुच्छइ पहु तुहुं हिरि सिरि दिहि महि कहइ देवि हउं सा सव्वोसहि ।
सिद्धी तुज्झु वीर परमत्थें तो[4] पविलोइय वुड्ढावत्थें ।
लद्धदिव्वविज्जासामत्थें णियतणु पुसिय तेण णियहत्थें ।
सो जायउ पुणरवि णवजोव्वणु ता पत्तउ खयराहिवणंदणु ।
पभणइ सीहकेउ तुहुं सामिउ हउं तुह किंकरु पेसणगामिउ ।
जो कहिओ सि आसि रिसिवयणहिं सो दिट्ठो सि देव णियँ[5]णयणहिं ।
सुट्ठु दुसज्झइ णिरु[6] णिरवज्जइ जाणिओ सि मइं सिद्धइ[7] विज्जइ ।
घत्ता—बारह संवच्छर इह वसिउ फलकालि अज्ज विज्जहि वसिउ ॥
दइवेण लच्छि तुम्हारिसहं उज्जमु णिरत्थु अम्हारिसहं ॥१८॥

१९

एम भणिवि गउ णहयरु जावहिं पहर चयारि वि णिद्दिय तावहिं ।
गलिय रयणि उग्गमिउ दिवायरु संचल्लिउ वसुवालसहोयरु ।
रण्णि भवंतें[1] तेण णिविट्ठी जर[2]सीमंतिणि तरुतलि दिट्ठी ।
उग्गामिवि करु भिउँ[3]डिवि णयणइं देइ ताहि जणवउ दुव्वयणइं ।
चिंतइ णरवइ वैर[4] होज्जउ तणु णउ माणुसु विणिबंधु[5] विणिद्धणु ।
हा[6] किं णायरेहिं कलहिज्जइ थेरि भणेप्पिणु एह हसिज्जइ ।
ता चिरणारिइ णियतणु जेही विहिय कुमारहु तक्खणि तेही ।
तें हत्थें णियंगु पँरि[7]मट्ठउ जिह पुव्विल्लउ तिह पुणु दिट्ठउ ।
पुरमहिलइ रायहु विण्णवियउ मइं वरइत्तचरिउ सच्चवियउ ।
जं जिह देहि देव णिव्वत्तिउ तं तिह जरसँरूवु[8] परियत्तिउ ।
तासु गवेसा पेसिय राएं वणि जंतें कुबेरसिरिजाएं ।
सीहसरहसरपूरियदिप्पहि संठिय चउँ[9]दिसु मिलिय चउप्पहि ।
दिट्ठा सोलह सुहड महाबल सोलह पत्थर वट्टपवट्टुल ।
घत्ता—सो तेहिं[10] भणिउ सुमहुरगिरिहिं अग्गइ थाइवि पंजलियरिहिं ॥
भो भो कुमार किं[11] चिक्कमहि गोलयहु उवरि गोलउ थवहि ॥१९॥

---

१८. १. MB दाढी° । २. MB °भीसइ । ३. MB वमियउं । ४. MB ताए विलोइय । ५. MB बिहि णयणहिं । ६. MB णिव । ७. M संसिद्धइ ।

१९. १. MB भवंती । २. B जव । ३. MB भिउडिवि । ४. MB वरि होज्जइ । ५. MB णिब्बंधउ णिद्धणु; T विणिबंधउ । ६. MB हा किह । ७. MB पर मट्ठउ । ८. M जरसरूउ; B जरसतउ । ९. MB चउदिसि । १०. B तेण । ११. G कं ।

१८

लाल लाल आँखों और पीले बालोंवाली और दाढ़ोंसे भयंकर राक्षसका वेष धारण किये हुए विद्याने जैसे-जैसे वमन किया, पियो-पियो कहनेपर कुमारने अंजलीमें भरकर उस-उसको उसी प्रकार पिया। वह वीरचित्त उससे जरा भी नहीं डरा। राजा उससे पूछता है कि तुम ह्री-श्री-धृति-कीर्ति या मही क्या हो। वह देवी कहती है कि मैं वह सर्वोषधि विद्या हूँ कि हे वीर! जो तुम्हें परमार्थ भावसे सिद्ध हुई हूँ। तब उस वृद्धावस्थावालेने उसे देखा। प्राप्त है दिव्यविद्याकी सामर्थ्य जिसमें ऐसे अपने हाथसे उस कुमारने अपने शरीरको छुआ। उसका फिरसे नवयौवन हो गया और तब विद्याधर राजाका बेटा आया। वह सिन्धुकेतु बोला कि आप मेरे स्वामी हैं। और मैं आपका आज्ञाकारी सेवक। मुनि-वचनोंके द्वारा जो कुछ कहा गया था, उसे मैंने आज अपनी आँखोंसे देख लिया। दुःसाध्य निरवद्य सिद्धविद्याके द्वारा मैंने आपको अच्छी तरह जान लिया।

घत्ता—बारह वर्ष तक मैं यहाँ रहा और फलकालके समय आज विद्याने मुझे पीड़ित किया। देवने तुम-जैसे लोगोंके लिए लक्ष्मी दी और हम लोगोंका उद्यम (पुरुषार्थ) व्यर्थ गया ॥१८॥

१९

इस प्रकार कहकर जैसे ही वह विद्याधर वहाँसे गया, वैसे ही चार पहर बीत गये। रात बीती, सूर्य उदय हुआ और वसुपालका भाई चला। जंगलमें चलते हुए उसने एक वृक्षके नीचे बैठी हुई एक बूढ़ी स्त्रीको देखा। हाथ उठाकर, नेत्रोंको टेढ़ाकर, लोग उसे दुर्वचन कह रहे थे। राजा 'श्रीपाल' (उसे देखकर अपने मनमें सोचता है कि तिनका होना अच्छा लेकिन बन्धु-रहित गरीब होना अच्छा नहीं। अफसोस है कि नागरिकोंके द्वारा झगड़ा क्यों किया जाता है। बुढ़िया कहकर इसका उपहास क्यों किया जा रहा है) उस बुढ़िया स्त्रीके छूनेपर कुमार बुढ़िया-जैसा हो गया। कुमारने अपने अंगको अपने हाथसे छुआ, उसका शरीर जैसा पहले था, वैसा ही अब दिखाई दिया। उस अतिवृद्धाने राजासे निवेदन किया कि मैंने वरके चरित्रको सत्यापित कर लिया। हे देव! उसके शरीरमें जो मैंने वृद्धरूप निर्वर्तित किया था, उसी प्रकार उसने उस रूपको छोड़ दिया। तब राजाने उसके खोजनेवाले भेजे। वनमें जाते हुए 'कुबेरश्री' के बेटे 'श्रीपाल' ने सिंहों, सर्पोंसे पूरित हैं दिशापथ जिसके तथा जिसमें चारों दिशाएँ मिल रही हैं, ऐसे चतुष्पथमें सोलह महाबलशाली सुभट देखे और अत्यन्त गोल सोलह पत्थर देखे।

घत्ता—उन लोगोंने हाथ जोड़कर, आगे बैठकर अत्यन्त मधुरवाणीमें कुमारसे कहा कि हे कुमार! आप क्यों जाते हैं, इन गोल पत्थरोंको रख दीजिए ॥१९॥

२०

इयरहं पंथिय जाहुं ण लब्भइ रायाणइ गोसिंगु ण दुब्भइ ।
इय विहसेप्पिणु पंथिउ वुत्तइ वट्टहु उप्परि वट्टु ण थक्कइ ।
जामि बप्प किं एण पलावें रायविणोएं मिच्छागावें ।
एम्व भणंतु वि धरिउ णिरुंभिवि देवाइद्धें सत्तिइ थंभिवि ।
वट्टुत्तिविडि वि रइय छइल्लें पुच्छिय किंकर बुद्धिमेहिल्लें ।
कवणु देसु को णरवइ भुंजइ वट्टहि वट्टठवणु किं जुज्जइ ।
भिच्च कहंति महासिहरूढहु उत्तरसेढियाहि वेयड्ढहु ।
पवणवेउ णामें खयराहिउ एत्थ महीवइ अक्खयराहिउ ।
जो आवइ णरु वट्टपरिक्खहि सोलहखयरणरेसरसिक्खहि ।
उज्जलवण्णउ णवलायण्णउ सो परिणेसइ सोलह कण्णउ ।
गय अणुयर णियणियरायंतिउ कुवरें अग्गइ गमणु जि चिंतिउ ।
मेहविमाणसिहरि जोएप्पिणु भूयरमणु काणणु मेल्लेप्पिणु ।
थक्कु महाणयरहु बहि जाम्वहिं अवर वि वुड्ढ पराइय ताम्वहिं ।

घत्ता—जरकसरसिरइ लंबियथणिइ आवेप्पिणु थेरणियंबिणिइ ॥
हउं रीणी माइ किं पि चविउ कुवलीहलपिंडउल्लउ थविउ ॥२०॥

२१

पेसिढिलचम्मछिरालविवण्णी तरुतलि तासु जि णियडि णिसण्णी ।
णिववालहु केरउ सिरिमाणणु दिट्ठउ ओहल्लिउं कमलाणणु ।
छुहतण्हापहखेएं खीणउं अंगु णिहालवि णिरु विहाणउं ।
तिण्णि तिसाछुहपहसमणासइं दिण्णइं बोरइं अमयाभासइं ।
पासियाइं सुहएं रसेणिद्धइं बीयइं चीरंचलइं णिबद्धइं ।
वसुवालहु जाइवि दरिसेसमि णियपुरणंदणवणि पइरेसमि ।
इय चिंतंतु जाम सो अच्छइ णियबंधवसंजोउ णियच्छइ ।
ता वुड्ढइ कुंदुज्जलदंतिइ देहि मोल्लु भासिउ पहसंतिइ ।
महु फलाइं किं मुहियइ भक्खहि वयणु केम णिल्लज्ज णिरिक्खहि ।
चवइ णरिंदु असच्चु ण जंपमि जं मग्गहि तं सयलु समप्पमि ।
जइ आवहि तुहुं णयरु महारउ तो णिहणमि दालिद्दु तुहारउ ।
कवणु णयरु को तुहुं कें जायउ भणइ थेरि भो इहं किं आयउ ।

२०. १. MB वि । २. BK बुक्कइ । ३. MBT वेहाइद्धें; GK record *a p* वेहाइद्धें इति पाठेऽप्ययमेवार्थः; T हेवाइद्धें इति पाठेऽप्ययमेवार्थः । ४. MBK °महल्लें । ५. MB महासिहरइढहु; G महासिररूढहु । ६. MB परिणइ सोलह णिवकण्णउ । ७. MB गय णर णियणियरायहं मंतिउ; T अणुयर । ८. MB °सिहरु । ९. MB तेण चविउ ।
२१. १. MB पसढिल° । २. MB °विराल° । ३. MB ओहल्लउं; K ओहुल्लिउं । ४. MB पासियाइं । ५. MB रसविद्धइं । ६. MB दंसेसमि । ७. MB किं इह ।

२०

अन्यथा हे पथिक ! तुम जा नहीं सकते। तब पथिकने हँसते हुए कहा कि सजाकी आज्ञासे गायके सींगको नहीं दुहा जा सकता। हे सुभट ! मैं जाता हूँ। इस प्रलाप, राजविनोद और मिथ्याधर्मसे क्या ? ऐसा कहते हुए भी उसे रोककर पकड़ लिया। उसने कुपित होकर शक्तिसे स्तम्भित कर गोल पत्थरोंकी पीठिका उस शैलमें बना दी और बुद्धिसे श्रेष्ठ उसने अनुचरोंसे पूछा कि ये कौन-सा देश है ? कौन राजा राज्य करता है ? रास्तेमें गोल पत्थरोंकी स्थापना क्या उपयुक्त है ? तब अनुचर कहते हैं कि बड़ी-बड़ी शिखरोंसे युक्त विजयार्द्ध पर्वतपर 'पवनवेग' नामका विद्याधर राजा जो कि 'अक्षय' शोभावाला है, यहाँका राजा है। सोलह विद्याधर राजाओंके द्वारा सीखी गयी, इस पत्थरोंकी परीक्षामें जो मनुष्य सफल होगा उसको एक लड़की मिलेगी। वह गोरे रंगवाली नवलावण्यसे युक्त सोलह कन्याओंसे विवाह करेगा। अनुचर अपने-अपने राजाके पास चले गये। कुमारने भी आगे चलनेका विचार किया, और चल दिया। मेघ विमान शिखरको देखकर तथा भूतरमण वनको छोड़कर जिस समय कुमार महानगरके बाहर ठहरा हुआ था। इतनेमें एक ओर वृद्धा वहाँ आयी—अत्यन्त बूढ़ी अत्यन्त जीर्ण।

घत्ता—बुढ़ापेसे सफेद सिर और लम्बे स्तनोंवाली वृद्धा स्त्रीने आकर कहा कि हे आदरणीय ! मैं बहुत दुःखी हूँ। ऐसा कुछ भी कहा और बेरोंकी पिटारी रख दी ॥२०॥

२१

शिथिल चमड़ो और अत्यन्त विद्रूप, वह पेड़के नीचे निकट बैठी हुई थी। उसने राजकुमारका लक्ष्मीके द्वारा मान्य कमलरूपी मुख नीचे किया हुआ देखा। भूख-प्यास और पथके श्रमको शान्त करनेवाले अमृतका आभास देनेवाले उसने बेर दिये। उस सुभगने रससे स्निग्ध उनको खा लिया। और दूसरे बेरोंको अपने अंचलमें बाँध लिया। (यह सोचकर कि इन्हें राजा वसुपालको दिखाऊँगा और अपने नगरके नन्दनवनमें इन्हें बोऊँगा।) ऐसा सोचता हुआ जब वह बैठा था, तभी अपने भाईके संयोग की इच्छा करता है। तब जूहीके फूलके समान उज्ज्वल दाँतोंवाली उस वृद्धाने हँसते हुए कहा कि (मेरे बेरोंकी कीमत दो) मेरे फलोंको क्या तुम मुफ्त खाते हो ? निर्लज्जकी भाँति मेरा मुख क्यों देखते हो ? तब राजा कहता है कि मैं झूठ नहीं बोलता, जो तुम माँगती हो वो सब दूँगा। यदि तुम मेरे नगरमें आती हो तो मैं तुम्हारा दारिद्र्य नष्ट कर दूँगा। तब वह वृद्धा कहती है कि तुम्हारा कौन-सा नगर है ? तुम कौन हो ? तुम्हें किसने जन्म दिया ? और यहाँ किस लिए आये हो ?

घत्ता—तं णिसुणिवि भासइ चक्कवइ पुरि पुंडरिंकिणि दिण्णेरइ ॥
गुणपालु राउ तहु तणउ सुउ वसुपालहु भायरु हउं लहुउ ॥२१॥

२२

जगि सिरिपालु णामु जाणिज्जमि सुरवीणातंतिहिं गाइज्जमि ।
मायाहरिवरेण पत्थाणिउ जोइसिएहिं असेसेंहिं जाणिउ ।
गुरुविओयसंतावें णिट्ठिउ अच्छमि सुट्ठु इट्ठउक्कंठिउ ।
जइ भायरहु मिलमि तो जीवमि णं तो णिच्छउ जमघरि पावमि ।
भणइ वुड्ढ भो तुहुं णर दीणउ एण सहावें होसि ण राणउ ।
वोरट्ठिलियउ बंधिवि लइयउ कवणें दइवें तुहुं नृवु रइयउ ।
परदोगेंचु तुहुं वि किं णासहि अप्पाणउं णरणाहु पयासहि ।
तेरउ पुरु महियरहं अगोयरु कहिं तुहुं कहिं सो तुज्झु सहोयरु ।
णत्थि दविणु अलियउं जि म भासहि महु वाहिल्लहि वाहि विणासहि ।
आरा सरु सा भणिय महीसें णासिउ रोउ पाणिसंफासें ।
घत्ता—णवरुल्ललिवि पयणियपुलइ आलग्गी तहु गलकंदलइ ॥
जाणिय तेण वि भायाविणिय लइ एह खयरि मयणें वणिय ॥२२॥

२३

कहइ कुमारु म भंडहु चालहि हो हो केत्तिउ मइं खेरियालहि ।
कइयवेण किं पूउ आढप्पइ सब्भावेण मुद्धि धुवु घिप्पइ ।
ता जरकुड विमुक्कउ कण्णइ उत्तउं कोमलसामलवण्णइ ।
भो भो णिसुणि णरेसर णिक्कल पुव्वविदेहइ वसुमइ पुक्खल ।
तेत्थु धोयकलहोयमहीहरु तहिं रायउरि वसइ करिकरकरु ।
राउ अकंपणु विज्जाहरवइ ससिपह गेहिणि धुव सुहावइ ।
णामें हउं सुयणयलि पसिद्धी सा ण विज्ज जा महु णउ सिद्धी ।
णहयरणाहहिं मिलिवि सणिद्धउ महु विज्जाजयपट्टु णिबद्धउ ।
को वरु ताए पुच्छिउ जइवरु तेण वि कहिउं तासु चक्केसरु ।
अवरु वि णिसुणि देव तुहुं सुहहलु कच्छावइवसुहहि रयणायलु ।
तहि मेहउरइ मयगलगामिणि कंपणु खगयइ घरिणि विमाणिणि ।
ताहं पुत्ति वप्पिल महु पियसहि णं गोमिणिरंमणिहि वल्लह महि ।

---

८. MB सक्कवइ । ९. MB दिण्णरइ । १०. MB गुणवालु । ११. MB वसुवालहु ।

२२. १. MB सिरिवालु । २. MB अणेयहिं । ३. MB वुड्ढ तुहुं णरवर दीणउ । ४. MB णिउ । ५. MB °दोगत्तु । ६. B णासमि । ७. MB °संपरिसें ।

२३. १. MB खलियारहि; T खरियालहि । २. MB कइवएण । ३. MB पिउ । ४. MB धुउ । ५. MB गयउरि णिवसइ । ६. K मिलवि । ७. MB तुहुं जि । ८. MB रयणायलु । ९. B गोमिणिहि णवल्लवल्लह महि ।

घत्ता—यह सुनकर चक्रवर्ती कहता है—कान्तिसे युक्त पुण्डरिकिणी नगरीमें गुणपाल नामक राजा है इसका पुत्र वसुपाल है मैं उसका छोटा भाई हूँ ॥२१॥

२२

जगमें श्रीपालके नामसे जाना जाता हूँ और देव-वणिओंमें 'मैं' गाया जाता हूँ। एक मायावी घोड़े द्वारा मैं यहाँ लाया गया हूँ। यह बात समस्त ज्योतिषियोंके द्वारा जानी गयी है। गुरुके वियोगके सन्तापसे दुःखी अपने प्रियजनोंके वियोगमें अत्यन्त उत्सुक दुःखी 'मैं' यहाँ रह रहा हूँ। यदि मैं अपने भाईसे मिलता हूँ तो जीवित रहता हूँ। नहीं तो निश्चय ही मैं यमपुरके लिए चला जाऊँगा। वृद्धा कहती है कि अरे तुम तो दीन व्यक्ति मालूम होते हो। इस स्वभावसे तुम राजा नहीं मालूम होते हो। तुम बेर बाँधकर लाये। किस विधाताने तुम्हें राजा बनाया। तुम दूसरोंके दारिद्र्यका क्या नाश करोगे। तुम्हारा नगर धरती निवासीके लिए अगोचर है। कहाँ तुम ? और कहाँ तुम्हारा भाई ? धन नहीं है यह तुम झूठ कहते हो, तुम झूठ मत बोलो। तुम मेरे बाहरकी व्याधि नष्ट कर दो। राजाने कहा मेरे पास आओ और उसने अपने हाथके स्पर्शसे उसका रोग दूर कर दिया।

घत्ता—नव-सौन्दर्यसे उल्लसित होकर रोमांचको प्रकट करती हुई वह उसके गलेमें आकर लिपट गयी। उसने भी जान लिया कि यह मायाविनी कोई विद्याधरी है जो कामदेवसे आहत हो उठी है ॥२२॥

२३

कुमार कहता है कि हे देवि ! अपनी भौंहें मत चलाओ। अरे-अरे तुम मुझे कितना अपमानित करती हो। तुम कपटसे प्रियको क्यों अर्जित करना चाहती हो। निश्चयसे सद्भाव-पूर्वक तुम इसे छोड़ दो। तब कन्याने अपना वृद्धरूप छोड़ दिया और कोमल श्याम रंगवाली उसने कहा—हे राज-नरेश्वर—निष्कपट बात सुनिए ! पूर्व विदेहमें पुष्कलावती नामकी नगरी है। उसके राजपुर नगरमें जिसने स्वर्णके समान महीधरोंको धोया है ऐसा हाथीके सूँड़के समान हाथोंवाला अकम्पन नामका विद्याधरोंका स्वामी राजा है। उसकी 'शशिप्रभा' नामकी कन्या है। वहीं मैं भुवनतलमें इस नामसे प्रसिद्ध हूँ। ऐसी कोई विद्या नहीं है जो मुझे सिद्ध न हुई हो। समस्त विद्याधर राजाओंने मिलकर स्नेहके साथ मुझे विद्याओंको जीतनेका पट्ट बाँधा है। पिताने मुनिवरसे पूछा कि इसका कौन वर होगा ? उसने कहा कि उसका वर चक्रवर्ती राजा होगा। हे देव ! अब और भी सुनिए। तुम्हारे शुभ फलको कच्छावती धरतीपर रत्नाचल है। उसके मेघपुर नगरमें कम्पन नामका राजा है और उसकी हाथीके समान चालवाली मानसे रहित गृहिणी है। उसकी लड़की बप्पिला मेरी प्रिय सखी है। जो मानो पृथ्वीरूपी (लक्ष्मीरूपी) रमणीकी प्रिय सखी है।

घत्ता—अवलोयवि तुज्झंगुत्थलिय   सा तोएं तिम्मइ कंचुलिय ॥
उज्झइ विरहें वेल्लहल किह   दववहणें अहिणववेल्लि जिह ॥२३॥

२४

घेरु गइयहि मुहणिग्गयवायइ   मह अक्खिउ तहि तणियइ मायइ ।
को वि आएसपुरिसु तहु मुद्दिय   पेक्खिवि सुय मयणेण विमद्दिय ।
बालवयंसियाइ ण विकंप्पिउ   मज्झु वि ताइ संहियउं समप्पिउ ।
मइं धीरिय सा ससिरंयराहिं   मेलावकु करमि सहु णाहिं ।
चामीयरपुरवरि हरिदमणहु   मयणवेयसीमंतिणिरमणहु ।
तहिं जि देसि अण्णेक वि सुंदरि   मयणवइ त्ति दुहिय विज्जाहरि ।
जणणहु पुच्छंतहु रयणुज्जलु   जो जोइहिं भासिउ हयहिमदलु ।
आणिउं पेच्छेवि तेरउ कंबलु   वियलिउ तहि तरुणिहि मणि विहिबलु ।
सूहव तुज्झु विओएं पीडिय   चिंताचकें सा वि भमाडिय ।
कंदइ कणइ विमुक्कत्तंसी   दुक्करु जीवइ मज्झु वयंसी ।
घत्ता—तं तेरउ पेम्मपरव्वसइ   उद्दामकामकीलणरसइ ॥
सहिहत्थहु दीणइ मग्गियउ   पंगुरणु मइं वि आलिंगियउ ॥२४॥

२५

तुहुं पत्थाणिउ तडिजवखयरें   एव पजंपिउ णरवइणियरें ।
हउं णउ पत्तियंति गय तेत्तहि   तेरी णयरि णराहिव जेत्तहि ।
पयंकुवलयसंबोहणचंदहु   पयहिं पडिय गुणपालजिणिंदहु ।
सज्जणणयणाणंदजणेरउ   पुच्छिउ सो आगमणु तुहारउ ।
तेण पउत्तउ सिसुभूमीसरु   सत्तमि दिणि आवइ भाभासुरु ।
विज्जालाहें सहुं घरि पइसइ   पुरयणु सयलु जिं एउ जि भासइ ।
दिट्ठउ तुहं मायरु अलिकुंतल   दिट्ठी मायरि सोयविसंठुल ।
सुरमहिहरसमीवि विणसंतइं   हा सिरिपाल देव भणंतइं ।
कंदंतइं विमुक्कसिरकेसइं   दिट्ठइं परियणसयणसहासइं ।
पव्वइं पइसिहिंति पुरि तइयहुं   तुहुं मिलिहीसि णराहिव जइयहुं ।
घत्ता—णरतरु गयं गय जि गयागयउ   गणियाउ णाइं वणदेवयउ ॥
भो वल्लह पइं एक्केण विणु   जणसंकुलु पट्टणु णाइं वणु ॥२५॥

---

२४. १. MB घर । २. MB अमु । ३. MB वियप्पिउ । ४. MB सहिउ । ५. MB सिसिरयराहें । ६. M तेरउ पेच्छिवि; B तेरउ पुच्छिवि । ७. MB मण° । ८. MBT विमुक्कवयंसी; G*p* विमुक्कातंसीति पाठेऽप्ययमेवार्थः; K*p* विमुक्कतसीति पाठेऽप्ययमेवार्थः; T विमुक्कत्तंसीति पाठेऽप्ययमेवार्थः ।

२५. १. BK णरवर° । २. MB पिय° । ३. MB गुणवाल° । ४. MB वि । ५. MB मायरु तुह । ६. MB °विसंथुल । ७. MB सिरिवाल देव पभणंतइं । ८. MB सिरि । ९. MBK सव्वइं । १०. M गयगज्जिगयागउ; B गय मय जि गयागयहो ।

घत्ता—तुम्हारी अँगूठी देखकर वह अश्रुजलसे अपनी चोली गीली कर रही है। वह कोमल विरहसे उसी प्रकार जल रही है, जिस प्रकार दावानलसे नयी लता जल जाती है ॥२३॥

२४

घर जानेपर मुझसे—जिसके मुखसे वाणी निकल रही है, ऐसी उसकी माँने कहा—कोई आदर्श पुरुष है उसकी 'मुद्रा' देखकर लड़की कामसे पीड़ित हो उठी है। उस बालसखीने कुछ भी विचार नहीं किया और उसने मुझे अपना हृदय बता दिया। मैंने उसे धीरज बँधाया कि चन्द्रकिरणोंके समान शोभावाले प्रियसे तुम्हारा मिलाप करा दूँगी। उसी देशमें चामीकर (स्वर्णपुरमें) 'मदनवेगा' स्त्रीसे रमण करनेवाले हरिदमनकी 'मदनावती' नामकी विद्याधरी सुन्दरी लड़की थी। पिताके पूछनेपर मुनियोंने कहा था कि जो रत्नोंसे उज्ज्वल हिमदलकी कान्तिको आहत करनेवालेको लाये गये तुम्हारे कम्बलको देखकर विगलित हो जायेगा उस युवतीके मनमें वही उसका धैर्यबल (मन) होगा। हे सुभग! तुम्हारे वियोगमें वह पीड़ित है। और बेचारी तुम्हारी चिन्ता-वियोगमें पीड़ित है। उसने कर्णफूल छोड़ दिये हैं। और मेरी सखीका जीना कठिन है।

घत्ता—प्रेमके वशीभूत होकर तथा उत्कट कामक्रीड़ाके रससे भरी हुई उस दीनने वह तुम्हारा कम्बल माँगा और मैंने भी अपने हाथसे उस प्रावरणका आलिंगन किया ॥२४॥

२५

तुम यहाँपर अशनिवेग विद्याधर द्वारा लाये गये हो। नरपति समूहने ऐसा मुझसे कहा। उसपर विश्वास न करते हुए 'मैं' वहाँ गयी। हे राजन्! प्रजारूपी कमलोंका सम्बोधन विकसित करनेके लिए चन्द्रमाके समान गुणपाल जिनोंके पैरोंपर 'मैं' पड़ी थी। तथा सज्जनके नेत्रोंको आनन्द देनेवाले तुम्हारे आगमनको उसने पूछा—उन्होंने कहा कि बाल राजा जो प्रकाशसे भास्वर है, साँतवें दिन आयेगा। और विद्यालाभके साथ घरमें प्रवेश करेगा। समस्त पुरजन भी यही बात कहते हैं। मैंने भ्रमरके समान काले बालवाले तुम्हारे भाईसे भी बात की, शोकसे विह्वल मातासे भी मिली। सुमेरु पर्वतके निकट निवास करते हुए, हे देव! वे हा-हा श्रीपाल कहते हुए, उन्हें तथा आक्रन्दन करते हुए, जिनके सिरके बाल मुक्त हैं ऐसे सैकड़ों परिजन और स्वजनोंको भी मैंने देखा। वे सब नगरमें तभी प्रवेश करेंगे कि जब हे राजन्! तुम उन्हें मिल जाओगे।

घत्ता—नररूपी तरु चले गये, और गज भी गये और आ गये। जो गणिकाएँ हैं मानो वे वनदेवियाँ हैं। हे प्रिय! तुम्हारे एकके बिना लोगोंसे व्याप्त वह नगर भी वनकी भाँति मालूम होता है ॥२५॥

२६

गिरिसरिदरिवणसयइं णियंतिइ खयरावासहिं पइं जोयंतिइ ।
दिट्ठी मउलियच्छि डोलंती पंडुगंडघुलियालयवंती ।
विज्जुवेय तुह विरहें सोसिय मरणमणोरह मइं मंभीसिय ।
जइ तुह पियसंजोउ ण संधमि तो विज्जाहरपट्टु ण बंधमि ।
णियमालयलि किसोयरि जाणहि अप्पउ मा कलियंगि विमाणहि ।
भोयवइहि केरी वियलियमय रइयारिणि सहि तहिं जि समागय ।
वुत्तउं ताइ वयंसिइ दिट्ठउ अज्जु चंदु णिसि भवणि पइट्ठउ ।
णिग्गउ पुणु जाणिउं दुस्सिविणउं जिणपुज्जुच्छउ परइ सण्हवणउं ।
संतिअत्थु सयलहिं सुअरेव्वउ सिद्धकूडजिणणिलइ करेव्वउ ।

घत्ता—अवरहुं कण्णहु अवरउ सहियउ अवरहुं वि लेहु मुद्दइ सहियउ ॥
भोयवइहि तुहुं सहि गउरविय हक्कारी तुंह हउं पट्ठविय ॥२६॥

२७

एम कहेप्पिणु गय सा सुंदरि हउं आरूढी सिरिसिहरुप्परि ।
मणिमयकुंडलमंडियकण्णउ दिट्ठउ तहिं काणणि छण्णउ ।
सत्तावीसं जोयणवत्तउ भूगोयरियउ पिय तुह रत्तउ ।
असणिवेयखयरें वणि घित्तउ मइं कारुण्णएण मृगणेत्तउ ।
उच्चाइवि णियपुरवरु णीयउ अप्पियाउ णरवालहु धीयउ ।
हउं पइं दोदियहइं जोयंती अच्छमि खगणयरेसु चरंती ।
जाम ताम तेरी वित्थारें कहिय वत्त हरिकेउकुमारें ।
एत्थायइ तुहुं मइं अवलोइउ मयणें पंचेमु सरु मणि ढोइउ ।
कंचुइरूउ देव मइं धरियउ पिडउल्लउ कुवलीहलभरियउ ।
जाणिओ सि [3]णेमित्तिकिबंधें कहिय पुंडरिंकिणिपुरचिंधें ।

घत्ता—इय भरहणरेसरकिंकरहो जयरायहु तिजगभयंकरहो ॥
कह कहइ पुरंधि सुलोयणिय वरकुंदपुप्फदंताणणिय ॥२७॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे विज्जाहरकुमारीविरहोवण्णणं णाम बत्तीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ ३२ ॥

संधि ॥ ३२ ॥

---

२६. १. MB °दरिपट्टणइं भमंतिइ । २. MB मंभीसिय । ३. MB हउं तुह ।
२७. १. MB मिगणेत्तउ । २. MB पंचमसरु । ३. MBT णेमित्तिणिबंधें । ४. MB °पुरि° । ५. MB विरहवण्णणं ।

२६

सैकड़ों पहाड़ों, नदियों, घाटियों और वनोंको देखते हुए तब विद्याधर निवासोंमें तुम्हें देखते हुए मैंने आँखें बन्द किये हुए तथा जिसके सफेद गालोंपर अलकावली हिल रही है, ऐसी चंचल विद्युतवेगाको तुम्हारे वियोगमें शोषित देखा। मरणकी इच्छा रखनेवाली मैंने उसे अभय दान दिया कि मैंने यदि तुम्हारे प्रिय संयोगकी तलाश नहीं की तो 'मैं' विद्याधर पट्टको अपने भालस्तरपर नहीं बाँधूंगी। इस बातको तुम जान लो और हे लज्जितांगी! तुम अपनेको कष्ट मत दो। तब भोगवतीकी विगलित मदवाली तथा रति उत्पन्न करनेवाली सखी भी वहाँ आ गयी। उस सखीने कहा कि—आज मैंने रातमें चन्द्रमाको अपने गृहमें प्रवेश करते हुए देखा। और फिर वह निकल गया। सबने इसे दुःस्वप्न समझा और सोचा कि सवेरे सिद्धकूट जिनालयमें शान्तिके लिए 'जिनेन्द्र' की पूजाका अभिषेक करना चाहिए।

घत्ता—दूसरी सखियाँ जिनका मुद्रा सहित लेख है। भोगवतीकी तू सहेली अत्यन्त गौरवान्वित है, जो मुझे भेजकर तुझे बुलाया॥२६॥

२७

ऐसा कहकर वह सुन्दरी चली गयी। 'मैं' श्रीपर्वतके ऊपर चढ़ गयी। उस काननमें मणिमय कुण्डलोंसे मण्डित कानोंवाली छह कन्याओंको देखा कि तुममें अनुरक्त जिन मनुष्योंको अशनिवेग विद्याधरने सत्ताईस योजनवाले उस वनमें बन्द कर रखा है। मैंने करुणापूर्वक उन मृग-नेत्रियोंको उठाकर अपने नगरमें ले आयी हूँ। और उन कन्याओंको राजाके लिए सौंप दिया है। मैं दो दिनों तक बाट जोहती हुई, विद्याधर नगरोंमें घूमती रही थी। तब हरिकेतु कुमारने तुम्हारी कथा विस्तारसे कही थी। यहाँ आये हुए मैंने तुम्हें देखा। कामने मेरे मनमें अपना तीर चला दिया। हे देव! मैंने वृद्धाका रूप धारण किया और बेरोंसे भरी हुई यह पोटली रख दी। पुण्डरीकिणी नगरमें ज्योतिषीने इस बातको जाना था और कहा था"।

घत्ता—इस प्रकार श्रेष्ठ कुन्द-पुष्पोंके समान दाँतोंके मुखवाली सती सुलोचना यह कथा तीनों लोकोंके लिए भयंकर तथा भरत नरेश्वरके अनुचर राजा जयकुमारसे कहती है॥२७॥

त्रेसठ महापुरुषोंके गुण और अलंकारोंवाले इस महापुराणमें महाकवि पुष्पदन्त द्वारा विरचित और महाभव्य भरत द्वारा अनुमत महाकाव्यका विद्याधरकुमारी-विरह-वर्णन नामका बत्तीसवाँ परिच्छेद समाप्त हुआ॥३२॥

संधि ३३

सव्वोसहिसामत्थु तरुणें तेण पयासिउं ॥
कयउं सुहावइयाइ णियवुड्ढत्तु विणासिउं ॥ ध्रुवकं ॥

१

संसाहियविज्जासोसणेण[1] कोमलकरयलसंफासणेण ।
उद्दामकामकामणमईहि विहुणियउं जरत्तु सुहावईइ ।
बेण्णि वि तारुण्णालंकियाइं खगकण्णइ वयणइं जंपियाइं ।
तुह देउ महारउ प्राणेइट्ठु[2] तुहुं चक्कपाणि सयमेव दिट्ठ ।
विज्जाहर पिसुण हणंति जेम ण करेव्वउ पइं वि ण मइं वि तेम ।
महु कंचुइवेसुद्धारिणीहि चडु खंधइ से सुहकारिणीहि[3] ।
धरि थेररूउ सुविचित्तकूडु आवेहि जाहुं तं सिद्धकूडु ।
तहि वोर्द्दहीउ[4] पीवरथणीउ मिलिहिंति अज्ज तुह पणइणीउ ।
कंकेल्लिबालपल्लवभुयाउ अवलोयहि खेयरवइसुयाउ ।
ता खंधारोहणु कियउ तेण सा विज्जुचवल चल्लिय णहेण ।
उल्लंघिवि तुरिउ णहंगणंतु संपत्तइं[5] जिणहरपंगणंतु ।

घत्ता—वंदिउ तिहुयणणाहु थोत्तसयइं उग्घुट्ठइं ॥
बिण्णि वि वुड्ढइं ताइं मुहसालहि उवविट्ठइं ॥१॥

२

भोयवइ भडारी विज्जुवेय तहिं ढुक्की वप्पिल णिरुवमेय ।
मयणवइ समागय मयणलील रइरमणिहि केरी णाइं कील ।
अण्णाउ मणोहर[1]वण्णियाउ कण्णाउ अट्ठ अवइण्णियाउ ।
जरसरिधुयसिरकेसासियाइं कुंयरिहिं[2] थेरइं संभासियाइं ।
अवलोयवि तरुणिहिं तणिय रिद्धि पुणु कंचुइ थिउ विब्भंतबुद्धि[3] ।
छंडिवि[4] जरत्तु जाणियमईइ णियसिरि दक्खाविय सुहत्तईइ ।

MB give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza .—

विनयाङ्कुरशातवाहनादौ नृपचक्रे दिवमीयुषि क्रमेण ।
भरत तव योग्यसज्जनानामुपकारो भवति प्रशक्त (प्रसक्त ?) एव ॥१॥

GK do not give it.

१. १. MB °साहणेण । २. MB पाणइट्ठु । ३. MB सुहयारिणीहि । ४. MBT वोद्दहीउ । ५. MB संपत्तउ ।

२. १. MB मणोरम° । २. MB कुअरिहिं । ३. MB विसमंतबुद्धि । ४. MB छड्डिवि ।

सन्धि ३३

१

उस तरुण श्रीपालने अपनी सर्वोषधिकी सामर्थ्य प्रकाशित की। सुखावतीने जो उसका बुढ़ापा किया था उसने उसे नष्ट कर दिया। जिसने विद्याओंके शासनको सिद्ध किया है ऐसे श्रीपालने अपने कोमल करतलके स्पर्शसे उद्दाम कामकी इच्छाकी मति (बुद्धि) रखनेवाली उस सुखावतीके बुढ़ापेको भी नष्ट कर दिया। वे दोनों यौवनसे अलंकृत हो गये। विद्याधर कुमारीने ये शब्द कहे—हे देव ! तुम मेरे प्राण इष्ट हो, तुम साक्षात् चक्रधारी विष्णु भगवान् हो। दुष्ट विद्याधर जिस प्रकार दूसरोंको मारते है, कहीं वे तुम्हें और हमें न मार दें। इसलिए शुभ करनेवाली वृद्धाका वेश धारण करनेवाली मेरे कन्धेपर चढ़ जाइए। वृद्धरूप धारण कर आओ। विचित्र शिखरोंवाले उस सिद्धकूट पर्वतपर चलें। वहाँ युवाहृदय-पीन-स्थूल स्तनोंवाली तुम्हारी प्रणयिनियाँ आज मिलेंगी। अशोक वृक्षके नव-पल्लवोंकी तरह बाहुवाली विद्याधर कुमारीको वहाँ देखोगे। तब उस कुमारके कन्धेपर आरोहण किया। बिजलीकी तरह चंचल वह आकाश मार्गसे चली। नभके आँगनको लाँघती हुई, वह तुरन्त जिनेन्द्र मन्दिरके प्रांगणमें पहुँची।

घत्ता—उच्चरित सैकड़ों स्तोत्रोंसे त्रिभुवनके स्वामी जिनेन्द्र भगवान्‌की उन्होंने वन्दना की, और वे दोनों बूढ़े मन्दिरकी मुख्यशालामे बैठ गये ॥१॥

२

आदरणीय भोगवती, विद्युतवेगा और अनुपम वप्पिला वहाँ पहुँचीं। कामदेवकी लीला धारण करनेवाली मदनावती आयी। जो मानो रतिरूपी रमणीकी क्रीड़ा हो और भी मनोहर वर्णकी रंगवाली आठ कन्याएँ वहाँ अवतीर्ण हुईं। वृन्दावनरूपी नदीसे धोये गये हैं केश जिसके, ऐसे उन वृद्ध-वृद्धासे उन कुमारियोंने बातचीत की। उन युवतियोंकी ऋद्धि देखकर वृद्ध 'श्रीपाल'

थिय पुणु पच्छण्णी सा कुमारि दुब्भक्खचारु होएवि थेरि।
वरइत्तु ताइ दंसणरयाहि भूभंगें दरिसिउ तडिरयाहि।
ताइ वि वोल्लाविउ पिउ अणंगु मायाजराइ पच्छाइयंगु।
भोयवइइ तहिं पारद्धु हासु वुड्ढहु उप्परि पेम्माहिलासु।
हलि असणिवेय संसि काइं करहि लहु णवजुवाणु वरु को वि वरहि।

घत्ता—ता खयरायसुयाहिं बंभु महेसरु अच्चउ ॥
णिरलंकारु जिणिंदु सालंकारहिं संथुउ ॥२॥

३

रत्ताहराहिं भवसयविरत्तु चंचलचित्तहिं गिरिथिरचित्तु।
विरहें तत्तहिं तवचरणतत्तु मृगणेत्तहिं झाणणिलीणणेत्तु।
मज्झें खीणहिं संखीणपाउ थड्ढत्थणीहिं णित्थद्धभाउ।
कुडिलालयाहिं अकुडिलमइल्ल जणमणसल्लिहिं णिम्मुक्कसल्ल।
णहचारकमियमंदरदरीहिं वंदिवि परमेसरु सुंदरीहिं।
अहिसेउ कयउ पुज्जापयारु ता वंकगीउ णामें कुमारु।
संपत्तउ सहुं णियपरियणेण थेरेण थेरि पुच्छिय अणेण।
आहरणविसेसहिं विप्फुरंतु किं धावइ णरमेलउ तुरंतु।
ता हसिवि पवुत्तउ कंचुईइ के के ण वि हय विज्जाउईइ।
इय भोयवंति पुरि तिसिररराउ णिवसइ रइपहकंतासहाउ।
सुय तासु पहावइ जेट्ठु पुत्तु सिउ णामें गुणमंडणु णिउत्तु।
एयहि रयणिहिं रंजंतसाणि बहुरूविणि साहंतहु मसाणि।
विरइउ विज्जइ कोट्टग्गभंगु जरवेयं कंपावियउ अंगु।

घत्ता—आवेप्पिणु पणएण भिसयं भेसहु दिण्णउं ॥
वड्ढंतउ जरलिंगु रायकुमारहु छिण्णउं ॥३॥

४

णउ फिट्टइ कंठहु वंकभाउ आउच्छिउ जणणें वीयराउ।
किह होसइ सिसुगलउज्जुयत्तु तं णिसुणवि जइवइणा पउत्तु।
सव्वोसहि सिज्झइ भुवणि जासु तुह पुत्ति पहावइ पिययमासु।
करफंसें तहु चक्केसरासु होसइ सुयगीयाभंगणासु।
आवेसइ सो जिणणाहणीडु णामेण पसिद्धउ सिद्धकूडु।

५. MB सो जोइउ। ६. B सस; K ससे। ७. K खगराय°। ८. B °सुर्याहि।
३. १. B omits from गिरि° down to मृगणेत्तहि inclusive। २. M मिग°। ३. MB थड्ढ°। ४. MB णित्थड्ढ°। ५. MBK णिम्मुक्कु। ६. MB वंकगीउ। ७. M धावउ। ८. MBK तिसिरु राउ। ९. MB रविप्पह°। १०. MB सिउ। ११. MB °मंडणु।
४. १. M सिसुगलु उज्जुयत्तु। २. MBK °गीवा°। ३. MB सहसकूडु।

की बुद्धिको जाननेवाली सुखावतीने अपनी शीली उसे दिखाई फिर वह कुमारी छिपकर बैठ गयी। और दुर्लच्छ है आचरण जिसका ऐसी वृद्धा बनकर बैठ गयी। उसने दर्शनमें लीन विद्युत-वेगाके लिए भौंहके द्वारा वरको दिखाया। उसने भी उससे कहा कि प्रिय कामदेव है। लेकिन मायावी बुढ़ापेसे उसके अंग छिपे हुए हैं। तब भोगवतीने वहाँ मजाक करना शुरू किया कि तुम्हारी प्रेम अभिलाषा वृद्धके ऊपर है। हे विद्युतवेगा! सखि तुम क्या करती हो। शीघ्र ही किसी युवक लड़केसे अपनी शादी कर लो।

घत्ता—तब विद्याधरकी कन्याओंने अलंकार पहने हुए स्वयं ब्रह्मा, महेश्वर, आदि जिनेन्द्र-की संस्तुति की जो स्वयं बिना अलंकारोंके थे ॥२॥

३

लाल-लाल ओष्ठोंवाली (रक्ताधर) उन्होंने सैकड़ों संसारोंसे विरक्त जिनेन्द्र भगवान्‌की संस्तुति की। चंचल चित्तवाली, यौनगिरीके समान स्थिर चित्त जिन भगवान्‌की, विरहसे आर्द्र सन्तप्ताओंने तपश्चरणसे सन्तप्त जिनवर की, मृगनयनियोंने ध्यानमें लीन नेत्रवाले जिनेन्द्रकी, मध्यमें क्षीण स्त्रियोंने पापोंके क्षय करनेवाले जिनेन्द्र की, स्निग्ध स्तनोंवालियोंने स्नेहसे रहित जिनेन्द्र की, कुटिल आलाप करनेवालियोंने अकटुलोंमें श्रेष्ठ जिनवर की, जनमनको शल्य रखने-वालियोंने शल्योंसे रहित जिनवरकी तथा इस प्रकार अपने आकाशगमनसे मन्दराचलकी घाटियों-का उल्लंघन करनेवाली उन सुन्दरियोंने परमेश्वरकी वन्दना कर अभिषेक और तरह-तरहकी पूजाएँ कीं। इतनेमें बंकग्रीव नामका कुमार अपने परिजनोंके साथ वहाँ आया। इस वृद्धने उस वृद्धासे पूछा कि विशेष अलंकारोंसे चमकता हुआ यह मनुष्योंका मेला तुरन्त क्यों दौड़ रहा है। तब उस वृद्धाने हँसकर कहा कि विद्याके आकर्षण (कान्ति) से कौन-कौन लोग आहत नहीं हुए। इस भोगवती नगरीमें त्रिसिर नामका राजा है। उसकी सहायक रतिप्रभा नामकी पत्नी है। उसका प्रभावतीसे बड़ा बेटा हुआ, शिव नामका गुणोंसे मण्डित, रात्रिमें जिसमें कुत्ते भौंक रहे हैं, ऐसे मरघटमें विद्या सिद्ध करते हुए। इसका विद्याने कोटाग्र (गर्दन) को टेढ़ा कर दिया है, और ज्वरके आवेगसे इसका शरीर कँपा दिया।

घत्ता—प्रणयसे आकर वैद्यने इसे औषधि दी। और बढ़ते हुए कुमारके वृद्धापनको छीन लिया ॥३॥

४

लेकिन उसके कण्ठका टेढ़ापन नहीं गया। पिताने वीतराग मुनिसे पूछा कि हमारे पुत्रका गला सीधा कैसे होगा? यह सुनकर मुनिवरने कहा कि संसारमें जिसे सर्वौषधि विद्या सिद्ध होगी ऐसे तुम्हारी पुत्री कुमारी प्रभावतीके प्रियतम, उस चक्रवर्तीके छूनेसे लड़केकी गर्दनके टेढ़ेपनका नाश हो जायेगा। 'जिनेन्द्र भगवान्' का घर जो सिद्धकूट नामका प्रसिद्ध मन्दिर है

लहु दिवसहु लग्गिवि मइसमेउ अवयरइ एहु सररिउणिकेउ ।
जो णासइ कंधरभंगुरत्तु सो चुंबइ कण्णहि तणउं वत्तु ।
अण्णेक्कु लहइ मंडलु हयारि ता पभणइ घोरु[4] परोवयारि ।
किं कण्णइ किं देसेण मज्झ धम्मेण करमि सामत्थ[5] सज्झ ।
ता वेज्ज[6] वेज्ज घोसिउ णिवेणँ आरा सरु हो भासिउ णिवेण[7] ।
णलिणीह[8]करग्गें छित्तु जाम गलमोडि[9] पणट्ठी तासु ताम ।
गउ मंदिरु[10] तणुरुहु सरलगीउ अवलोयवि सुट्ठु पहिट्ठु[11] ताउ ।
परमेट्ठिघरंगणसंठिएण परकज्जारंभुक्कंठिएण ।
केण वि कंचुइणा वाहि महिय इय मंतिहिं वत्त पवित्त कहिय ।

घत्ता—विरइयकवडजराए ढंकियणवययकायहो ॥
चल्लिउ तुरिउ णरिंदु पासु तासु[12] जांवायहो ॥४॥

५

छुडु छुडु करि चोइउ दाणवासु जिणहरु छज्जीवदयाणिवासु[1] ।
अवइण्णउ[2] जाम खगिंदु तिसिरु सुहिसुहदंसणु[3] पाणीयतिसिरु ।
ता मायाविइ वंचणमईइ णिउ सुंदरु णावइ मउ मईइ ।
पियजीवधण्ण[4]रक्खणमईइ मणिवाविहि णिहिउ सुहावईइ ।
पल्लट्टउ तिसिरु अपेक्खमाणु जलहरवहजववाहियविमाणु ।
एत्तहि मुद्धइ अहिणववरासु तडिवेयायारु णरेसरासु ।
करसाहाणिहियइ मुद्दियाइ कउ माणवणयणविमोहियाइ[5] ।
गय पत्त सुहावइ अवर का वि णामेण सुहोदय जेत्थु वावि ।

घत्ता—णवइंदीवरणेत्त रायहंससहवासिणि ॥
पाणियवत्थणियत्थ सोहइ वाविविलासिणि ॥५॥

६

कण्णउ हक्कारइ जाम तेत्थु जलकीलहिं देंतिउ कमलहत्थु ।
तामेक्क वि तरुणि ण दिट्ठ ताइ गइयउ मरु परियाणिउं इमाइ ।
एत्तहिं राएं उद्दामतेय अप्पाणउं दिट्ठउ विज्जुवेय ।
अवणियउ समाहप्पंगुलीउ णियरूवधारि थिउ मंतु गीउ ।
ता[1] तहिं अवसरि तहिं चेडियाइ किं मुदइ हत्थहु फेडियाइ ।

---

४. MB वोरु । ५. MB सामत्थु सज्झु । ६. M विज्जु विज्जु; G वेज्झु वेज्झु but gloss वैद्य वैद्य । ७. MB सिवेण । ८. MB णरणाह । ९. MB गलमोडिय फिट्टिय । १०. MB मंदिर तणुरुह । ११. MB पहिट्ठु । १२. MB जामायहो ।

५. १. MB °दयावक्वासु; T °दयाणुवासु । २. B अइवण्णउ । ३. M सुहमुहदंसणपीणीय°; B सुहिमुह-पाणीय° । MB °धम्म° । ५. MB °विमुद्दियाइ ।

६. १. MB तो ।

वहाँ वह आयेगा। उस दिनसे लेकर इस 'जिन मन्दिर' में वह योद्धाओं सहित अवतरित होगा। वह कुमारके कन्धेके टेढ़ेपनको दूर करेगा। और कन्याका मुख चूमेगा, और भी वह शत्रुओंको मारनेवाले मण्डलको प्राप्त करेगा। तब वह धीर परोपकारी कहता है कि मुझे कन्यासे क्या उद्देश्य ? मैं धर्मसे अपनी सामर्थ्य और सिद्धिको प्राप्त करूँगा। तब आचार्यने उसे वैद्य घोषित किया। राजाने कहा कि पास आइए। श्रीपालके निकट आओ। कमलके समान जब उसने हाथसे उसे छुआ। जैसे ही उसने छुआ, वैसे ही उस लड़केका टेढ़ापन दूर हुआ। सीधी गर्दनका वह पुत्र मन्दिरमें गया, पिता उसे देखकर प्रसन्न हुआ। परमेश्वरीके घरके आँगनमें जिन मन्दिरमें स्थित, दूसरोंका काम करनेके लिए उत्कण्ठित किसी कंचुकीने व्याधि नष्ट कर दी। मन्त्रियोंने यह पवित्र बात राजासे कही।

घत्ता—रची गयी कपट मायाके द्वारा जिसने अपनी नयी काया ढँक रखी है, ऐसे उस दामादके पास राजा चला ॥४॥

५

शीघ्र ही उसने मद झरनेवाले हाथीको प्रेरित किया। और जिसमें छह जीवोंकी दया निवास करती है, ऐसे जिन-मन्दिरमें पहुँचा। जिन-मन्दिरमें जबतक सुधीजनोंके लिए दर्शनके लिए तिसिर नामका विद्याधर पहुँचता है, तबतक प्रवंचना बुद्धि रखनेवाली मायाविनी वह शोभावती उस सुन्दरको उसी प्रकार ले गयी जिस प्रकार हरिणी हिरणको ले जाये। प्रियके जीवनरूपी धान्यकी रक्षाके विचारसे उस सुखावतीने उसे एक मणि बागोंमें रख दिया। जिसने आकाशमें पवनवेगसे अपने विमानका संचालन किया है, ऐसा वह निसिर विद्याधर कुमारको नहीं देखकर लौट आया। यहाँपर उस मुग्धाने अभिनव वर उस राजाको हाथकी अँगुलीमें पहनी गयी तथा मनुष्योंके नेत्रोंका मर्दन करनेवाली अँगूठीसे विद्युतवेगाके आकारका बना दिया। वह वहाँसे चली गयी और वहाँ पहुँची जहाँ सुखोदय नामकी दूसरी बावड़ी थी।

घत्ता—वह बावड़ीरूपी विलासिनी शोभित थी। नव नीलकमल ही उसके नेत्र थे। राजहंसोंके साथ निवास करनेवाली और जलरूपी वस्त्र उसने पहन रखा था ॥५॥

६

वह कन्या जलक्रीड़ाके लिए अपने कर-कमलको बढ़ाती हुई जैसे ही कन्याओंको पुकारती है वैसे ही उसे एक भी कन्या दिखाई न दी। इसने जान लिया कि वे तालाबसे चली गयी हैं। या वे सरोवरको चली गयी हैं। यहाँ राजा 'श्रीपाल' ने उद्दाम वेगवाले अपने विद्युत्-रूपको देखा। अपने महत्त्ववाली अंगुलीको उसने हटा लिया और अपना रूप धारण करके स्थित हो गया। उसने अपना मन्त्र पढ़ा, उस अवसरपर उसकी दासीने कहा कि तुमने अपने हाथसे मुद्रिका क्यों हटा दी।

घयरट्टसिलिंध[2]यगामिणीइ सुसुं[3]हावईइ मह सामिणीइ ।
जलरमणकज्जसंकेइयाउ इह खगवइधीयउ णाइयाउ ।
अलिचुंबियगय[4]लंबियधयाउ अण्णेत्तहिं कत्थइ जहिं गयाउ ।
तहिं गय हउं णिहिय समीवि तुज्झु अवरु वि णरिंद वज्जरमि गुज्झु ।
कण्णाकारणि मच्छरु वहंति असमंजसु ध्रुवु[5] पइं ते वहंति ।
एहउ जाणिवि महु राणियाइ उव्वसिआहल्लसमाणियाइ ।

घत्ता—अत्थि वइरि खयरिंद ताहं णाणु[6] दलवट्टिउ ॥
अंगुत्थलियइ णाह तुह सरूवु[7] पल्लट्टिउ ॥६॥

७

जो जो आवइ तहु तहु ससाहि णियतणुसरिच्छससिसियजसाहि ।
चिंतेज्जसु अज्जु महाणुभाव वंचेज्जसु पिसुण संमुद्दराव[1] ।
सविमाणविलंबियविविहकेउ एत्थंतरि पत्तउ असणिवेउ ।
ससहोयरिरूउ णिहालमाणु गउ सो णहेण खरमाणुभाणु ।
खेयर तहिं पउर वि णउ मुणंति महु महु जि बहिणि सयल वि भणंति ।
अण्णेक्कें मुणियपवचएण तावक्खिउ तहिं कुसुमंचएण ।
सुपरिट्ठियदिट्ठिअमूढएण गय णयरें रुक्खारूढएण ।
दट्ठुव्वसोक्खउप्पायणेहिं मइं दिट्ठउ अप्पणु लोयणेहिं ।
विणु मुद्दइ[2] कण्ण जि पुरिसरयणु सच्चउ णउ भासमि अलियवयणु ।
जं वज्जरंति गुणवंत साहु गंभीरु धीरु रिउ सोमराहु ।
जो अग्गइ होसइ[3] चक्कणाहु णिच्छउ सो पहु सिरिपालु[4] एहु ।

घत्ता—धम्मा[5]रूढगुणग्गि जो आरूढउ भावइ ॥
इहु सो वम्महबाणु णारिसरीरइं तावइ ॥७॥

८

ता धाइय भड आहवसमत्थ[1] हणु हणु भणंत हलमुसलहत्थ ।
लद्धउ वइरिउ कहिं जाइ अज्जु कहिं होइ राउ कहिं करइ रज्जु ।
इय भणिवि पवेढिउ खेयरेहिं णं पिउ पुण्णालिहिं उत्तरेहिं ।
णं सिहरि पलंबिर[2]जलहरेहिं णं दिवसु दिवसणाहा[3]करेहिं ।
णं चंदणतरुवरु विसहरेहिं हम्मइ ण जाम फुरियाहरेहिं ।
जोएप्पिणु सरवरु सारणालु हंसीमुहचुंबिय सिसु मरालु ।

---

२. MB °सिलिंधय° । ३. M सुसहावईइ । ४. MB °गयलंबिय° । ५. MB धुउ । ६. MB माणु ।
७. M सुरूउ; B सरूउ ।

७. १. M समुद्दभाव; B सुद्दभाव; T समुद्दराव । २. MB मुद्दिइ । ३. MB होहइ । ४. MB सिरिवालु ।
५. M धम्मारूढु गुणग्गे ।

८. १. MB आहवि समत्थ । २. MB पलंबिय° । ३. MBK दिवसणाहहं ।

हंस-शावकके समान गतिवाली मेरी स्वामिनी सुखावती, जो जलक्रीड़ाके कामके लिए संकेतित विद्याधर कुमारियाँ यहाँ नहीं आयी हैं तथा भ्रमरसे चुम्बित गजोंपर अवलम्बित ध्वजाओंवाली वह कहीं और चली गयी हैं—वहाँ गयी है और मुझे तुम्हारे पास छोड़ा है। हे राजन् ! एक और गुप्त बात सुनिए कन्याके लिए ईर्ष्या प्रदान करनेवाले वे दोनों विद्याधर निश्चय ही तुम्हारे साथ असामंजस्य करेंगे। यह जानकर उर्वशीसे भी अधिक मेरी रानी सुखावतीने—

घत्ता—विद्याधर राजा शत्रु है, इसलिए उनका ज्ञान नष्ट कर दिया और हे स्वामी ! इस अंगूठीके द्वारा तुम्हारा स्वरूप बदल दिया ॥६॥

७

हे महानुभाव ! जो-जो आता है, उसे अपने शरीरके समान तथा चन्द्रमाके समान श्वेत यशसे युक्त बहनके रूपमें अपनेको सोचना और इस प्रकार समुद्रके समान गर्जनवाले दुष्टोंको प्रवंचित करना। इसी बीच जिसके अपने विमानमें तरह-तरहके ध्वज लगे हुए हैं, ऐसा अशनिवेग आया, और अपनी बहनका रूप देखकर तीव्र सूर्यके समान प्रवाहवाला वह आकाश-मार्गसे चला गया। वहाँपर दूसरे बहुत-से प्रचुर विद्याधर भी नहीं जान पाते हैं, और सब उसे मेरी बहन है मेरी बहन है, यह कहते हैं। तब एकने जिसने इस प्रवचनको जान लिया है, ऐसे कुसुमचक्र मालीने उस समय कहा कि सुपरिस्थितिको देखनेमें अभ्रान्त है तथा जो पेड़पर चढ़ा हुआ है ऐसे उस नागरिकने जानेवाले गये विद्याधरोंसे कहा कि मैंने देखने योग्य चीजमें सुख उत्पन्न करनेवाले अपने नेत्रोंसे स्वयं देखा है कि वह कन्या बिना मुद्राके पुरुषरत्न है। मैं सच कहता हूँ—झूठ वचन नहीं बोलता। जो गुणवान् साधु, गम्भीर तथा चन्द्रमाके लिए राहुके समान शत्रु कहा जाता है और जो आगे चक्रवर्ती होगा निश्चयसे यह वही राजा श्रीपाल है।

घत्ता—धनुषकी डोरीके अग्रभागपर स्थित यह वही कामदेवका बाण है, जो स्त्रियोंके शरीरको सन्तप्त करता है ॥७॥

८

आज हमने शत्रु पा लिया। अब वह कहाँ जायेगा ? वह कहाँका राजा है ? और कहाँ राज्य करता है ? यह कहकर विद्याधरोंने उसे उसी प्रकार घेर लिया, जैसे पुंश्चलियोंने प्रियको घेर लिया हो। मानो मेघोंसे अवलम्बित सूर्यकी किरणोंने, दिवसको घेर लिया है, मानो चन्दनके श्रेष्ठ वृक्षको सर्पोंने घेर लिया हो। और जबतक फड़कते हुए ओठोंवाले उन विद्याधरोंसे वह आहत नहीं होता तबतक कमलोंके सरोवरको देखकर कि जिसमें हंसनियोंके मुखों द्वारा हंस

कण्णउ गयाउ कीलवि समत्त सा पियवयंसि भणिवावि पत्त।
अवलोयवि रिउसेणाविवाउ बालइ अहंसणु किउ कुमारु।
णउ दिट्ठु तेहिं सो तेत्थु केम अण्णाणिएहिं सव्वण्हु जेम।
घत्ता—उव्वाइवि परिहत्थु अहिणवकंचणवण्णइ ॥
पुव्वुत्तइ जिणगेहि वरु संणिहियउ कण्णइ ॥८॥

९

करिणि व्व कहिं वि कीलीवणासु गय सुंदरि णियेयणिहेलणासु।
णियमुहओहामियचंदकंति पेच्छंतउ फलिहसिलायलंति।
धरणीसु ताइ मुद्दाइ रहिउ णं कामु कामकामिणिहिं कहिउ।
अवलोयवि बप्पिल सालएण परियाणिउं उण्णयभालएण।
इहु सो णरिंदु गुणपालतणउ जो पणइणीहिं संजणियपणउ।
जो गिज्जइ देवेहिं धरिवि वेणु जो दुत्थियसज्जणकामधेणु।
णं पलइ समुग्गउ धूमकेउ इय चिंतिवि धाइउ धूमकेउ।
जिणपंगणाउ रायाहिराउ उक्खित्तउ गरुडें णाइं णाउ।
णिउ रिउणा उसिरावइसमीवि कालइरिहिं णवियणीलगीवि।
कालक्खगुहहि कालाहिवासि घित्तउ हरिवाहिणिसेज्जदेसि।
घत्ता—दाहिणॅदइवारंभि खयकालेण विवज्जिउ ॥
सेज्जहिं णाहु णिसण्णु कालमुयंगें पुज्जिउ ॥९॥

१०

उसिरावइपुरवरि हेमवम्मु तहु भिच्चहिं भासिउ तासु कम्मु।
जिह चडिउ सेज्जि जिह णविउ णाउ जिह णिग्गउ पत्तउ धूमकेउ।
जिह णिउ णरवइ अण्णत्थ झत्ति जिह केण वि ण मुणिय पुण वि थत्ति।
तिह णिसुणिवि उसिरावइपुरेसु किंकरहं कुइउ किं कियउ दोसु।
णउ रक्खिउ किं आएसपुरिसु किं आउंचिउ मह्रु होंतु हरिसु।
तावेत्तहि रइसुहलुद्धएण बप्पिलमेहुणएं कुद्धएण।
चंदउरि णिसिहि तमजालणीलि पेयालइ पहु णिक्खित्तु सूलि।
ताडिउ खग्गें पुणु मोग्गरेण पुण्णाहिउ णउ घिप्पइ गरेण।
णउ भिज्जइ सूलें सव्वलेण णउ खज्जइ णरु रक्खसकुलेण।
घत्ता—घित्तउ जलणि जलंति तहिं वि परिट्ठिउ अवियलु ॥
जिणपयपोमरयासु अग्गि वि जायउ सीयलु ॥१०॥

---

४. B अण्णाणिइ हिंस व एहु जाम। ५. B पुव्वत्तइ।
९. १. MB णियसुणिहेलणासु। २. MB णियुमुहं ओहा°। ३. MB गुणवाल°। ४. B °सज्जस°।
५. B पंगणाहि। ६. B उक्खिण्णउ। ७. MB दाहिणि। ८. MB विसज्जिउ।
१०. १. B किं रक्खिउ। २. MB °लद्धएण।

शिशु चूमे जा रहे हैं। यह देखकर कि कन्याएँ जलक्रीड़ा समाप्त करके चली गयी हैं। वह प्रिय सखी अपनी मणि वापिकापर आ गयी। शत्रुसेनाके उपद्रवको देखकर उस बालाने कुमारको छिपा दिया। उन विद्याधरोंको वह विद्याधर उसी प्रकार दिखाई नहीं दिया, जिस प्रकार अज्ञानियोंको सर्वज्ञ दिखाई नहीं देते।

घत्ता—अभिनव स्वर्णकी तरह रंगवाली उस कन्याने शीघ्र ही कुमारको उठाकर 'जिन मन्दिर' की पूर्व दिशामें रख दिया ॥८॥

९

हथिनीकी तरह वे विद्याधरियाँ क्रीड़ा वनसे अपने-अपने घर चली गयीं। अपने मुखसे जिसने चन्द्रमाकी कान्तिको पराजित किया है, ऐसे स्फटिक मणिकी चट्टानको देखते हुए राजाको उसने मुद्रासे रहित इस प्रकार देखा, मानो रतिके द्वारा पूजित कामदेव हो। उसे देखकर उन्नत भालवाले बप्पप्रिय सालेने जान लिया कि यह वही गुणपालका बेटा राजा है कि जिसे प्रणयिनियोंके द्वारा प्रणय उत्पन्न किया गया है। देवताओंके द्वारा जो वीणा लेकर गाया जाता है, जो सज्जन-रूपी कामधेनुको दुहनेवाला है। यह विचार करके धूमकेतु विद्याधर इस प्रकार दौड़ा मानो प्रलयकालमें पुच्छल तारा उठा हो। और उस जिन मन्दिरके आँगनसे वह राजाधिराज इस प्रकार ले जाया गया जैसे गरुड़ने नागको उठाकर फेंक दिया हो। शत्रु उसे उसरावतीके समीप ले गया और जिसमें नीलमयूर नृत्य करते हैं, कालगिरिकी ऐसी कालगुहामें, यमके अधिवास हरि-वाहिणी देशमें उसे फेंक दिया।

घत्ता—देवोंके अनुकूल होनेपर क्षयकालसे रहित वह स्वामी सेजपर बैठ गया और काल-भुजंगने उसकी पूजा की ॥९॥

१०

उसरावती नगरीमें हेमवर्मा था। उसके अनुचरोंने उसका कर्म उसे बताया कि किस प्रकार वह शय्यापर चढ़ा और जिस प्रकार वह सेजपर चढ़ा, नागको चढ़ाया, नवाया और धूमकेतु निकल गया। जिस प्रकार राजा अन्यत्र ले जाया गया और जिस प्रकार उसे स्थापित कर दिया गया कि कोई नहीं जान सका। यह सुनकर उसरावती नगरीके राजा नौकरों, अनुचरोंपर क्रुद्ध हुआ कि तुमने गलती क्यों की? तुमने उस आदर्श पुरुषकी रक्षा क्यों न की। तुमने मेरे होते हुए उसके हर्षको क्यों छीन लिया? तब वहाँपर रतिसुखके लोभी बप्पिल सालेने क्रुद्ध होते हुए कहा कि चन्द्रपुरमें अन्धकारके समूहसे नीली रातमें, मरघटमें उस राजाको सूलीपर चढ़ा दिया तथा तलवार, मोगरीसे उसे आहत किया गया। लेकिन जो पुण्यादि थे वह विष द्वारा ग्रहण नहीं किया जा सकता, शूल, सब्बल से न भेदा जा सकता। वह मनुष्य नहीं राक्षस कुलसे खाया जा सकता है।

घत्ता—जलती आगमें डाला वह भी उसीमें अविकल स्थित रहा। जिनेन्द्र भगवान्‌के चरण-कमलोंके लिए अग्नि भी ठण्डी हो गयी ॥१०॥

११

जिणु सुमरंतहं सीहु वि ण खाइ विसुदुम्महु फणि संमुहु ण थाइ ।
असिघडणहुयवहुग्गमियजालि ओवडियसुहडसंगामकालि ।
जिणु सुमरंतहं रिउ थरहरंति धीरें वि पच्छाउहुं ओसरंति ।
करडयलगलियमयजलपवाहु गुमुगुमुगुमंतचलेंमहुयरोहु ।
धावंतु एंतु गिरिवरसमाणु उरि देंतु वेहुं बद्धयविसाणु ।
रयपिंजरु कुंजरवरु वि खलइ जिणसुमरणंकुसंकुसिउ वलइ ।
वणगलियरुहिरें करसडियणास अविणट्ठकट्ठकुट्ठाविसेस ।
खंयखासजलोयरजणियसोय जिणु सुमरंतहु णासंति रोय ।
णित्थाहसंलिलि सरहयदियंति करिसियरमच्छपुच्छुच्छलंति ।
माणिक्ककिरणमालाविचित्ति कल्लोलंदोलियजाणवत्ति ।
जिणु सुमरंतहं जलयररउद्दि बुड्डिज्जइ ण कयाइ वि समुद्दि ।
जिणु सुमरंतहं मंगलइं होंति पयसंखलवलयइं परियलंति ।

घत्ता—सत्तु वि मित्त हवंति विट्ठि वि मल्लउ वासरु ॥
जिणु सुमरंतहं होइ खग्गु वि कमलु सकेसरु ॥११॥

१२

णीसरिउ हुयासहु अहयपिंडु सोहइ णिउ णं सोवण्णपिंडु ।
आसीणु सिलायलि रायहंसु णं भिसिणीदलयलि रायहंसु ।
अइबलु णामें पुरि वसइ तेत्थु विज्जाहरु विज्जाबलसमत्थु ।
णं वम्महरायहु तणिय सेण तहु घरिणि कुसीलिणि चित्तसेण ।
मुहकुहरुग्गयफरुसक्खरेण सा सइरिणि णिसि गरहिय वरेण ।
आगय पिउवणहु तहि णिभाणु दिट्ठउ सिहि मुहणिग्गच्छमाणु ।
चिंतिउ अणाइ जयलच्छिगेहु ण पलित्तउ एयहु तणउ देहु ।
जं तं होएवउं कारणेण काइं वे संबंधवियारणेण ।
इय भणिवि महिल कोऊहलेण तहिं सा पविट्ठ णवराणलेण ।
णउ दड्ढी जालाचारिएण सव्वोसहिरसहयवीरिएण ।
णीसरिवि णिसण्णी णिवहु पासि अवइण्णउ ता पिउवणणिवासि ।
अइबलु गेहिणिचरणयलवडिउ हउं मंदबुद्धि पिसुणेहिं णडिउ ।
आवेहि कंति वच्चहुं णिकेउ ता चवइ धुत्ति संभरिवि हेउ ।

घत्ता—हक्कारहि णियबंधु दोवु धरेप्पिणु गच्छमि ॥
असंइत्तणमलेणेण मइलिय केत्तिउ अच्छमि ॥१२॥

११. १. M सुमरंतहु; B सुमिरंतहु । २. MB वीर । ३. MB पच्छामुहुं । ४. MB °वरमहु° । ५. MB लोहबद्धउ । ६. MB रुहिरु । ७. MB खरखास°; G खरखाय° । ८. MB °सलिलसरसय° । ९. MB परिसंखल° । १०. MB परिगलंति ।

१२. १. MB वि । २. T भेउ । ३. MB दीउ । ४. MB असइत्तणयकलंकु ।

११

जिनेन्द्र भगवान्‌का स्मरण करनेवालोंको सिंह नहीं खाता। विषसे कर्बुर नाग भी उसके समक्ष नहीं ठहरता। जिसमें तलवारोंके संघर्षसे उत्पन्न आगसे ज्वालाएँ उत्पन्न हो रही हैं ऐसे सुभट संग्रामका क्षण आनेपर भी 'जिन भगवान्' का स्मरण करनेवालोंसे शत्रु थरथर काँपते हैं और धीर होते हुए भी पीछे हट जाते हैं। जिसके गण्डस्थलसे मदजलकी धारा बह रही है, चंचल भ्रमर-समूह गुन-गुना रहा है, जो गिरिवरके समान दौड़ता हुआ आता है, जिसके दाँत बँधे हुए (नियन्त्रित) हैं, जो हृदयपर आघात कर रहा है, ऐसा परागसे पीला गजवर भी जिनवरके स्मरणरूपी अंकुशसे नियन्त्रित होकर लड़खड़ा उठता है और मुड़ जाता है। जिसमें घावोंसे रक्त बह रहा है, हाथ और नाक सड़ चुके हैं, ऐसा नष्ट नहीं होनेवाला कष्टकर बचा हुआ कुष्ठ रोग, क्षय, खाँसी और जलोदरके द्वारा शोक उत्पन्न करनेवाले रोग जिन भगवान्‌का स्मरण करनेसे नष्ट हो जाते हैं। जिसमें अथाह पानी है, जिसमें स्वरोंसे दिगन्त आहत है, जिसमें गजों, मगरों और मत्स्योंकी पूँछे उछल रही हैं, जो माणिक्योंकी किरणमालासे विचित्र है, जिसकी लहरोंसे बड़े-बड़े यानपात्र विचलित हो उठते हैं, जो जलचरोंसे भयंकर है, ऐसे समुद्रमें भी जिनवरका स्मरण करनेवाले कभी नहीं डूबते।

घत्ता—शत्रु भी मित्र हो जाते हैं। वर्षा भी अच्छी और दिन भी अच्छा रहता है। जिनका स्मरण करनेसे तलवार भी परागवाले कमलकी तरह हो जाती है ॥११॥

१२

वह राजा आगसे अक्षत शरीर निकल आया। वह स्वर्णपिण्डके समान ऐसा शोभित है। वह राजहंस शिलातलपर बैठ गया मानो कमलिनी दलमें राजहंस हो। उस नगरीमें अतिबल नामका विद्याधर रहता है जो विद्याबलसे सामर्थ्यवाला है। उसकी चित्रसेना नामकी दुराचारिणी स्त्री ऐसी थी मानो कामदेवकी सेना हो। जिसके मुखरूपी कुहरसे कठोर अक्षर निकल रहे हैं ऐसे विद्याधर पतिने उस स्वेच्छाचारिणी पत्नीको रातमें डाँटा। वह उस मरघटमें आयी। उसने राजा श्रीपालको आगके मुँहसे निकलते देखा। उसने विचार किया कि विजयलक्ष्मीके घर इस राजाका शरीर इस आगमें जो नहीं जला तो इसके लिए कोई कारण होना चाहिए। अथवा इस कारणका विचार करनेसे क्या? यह विचारकर वह पापी महिला कुतूहलसे उस आगमें घुस गयी। जिसकी सर्वौषधिसे शक्ति आहत हो गयी है ऐसी ज्वालाओंको धारण करनेवाली उस विशाल आगसे वह जली नहीं। वह निकलकर उस राजा श्रीपालके पास आकर बैठ गयी। तब मरघटके निवासमें विद्याधर अतिबल आया और अपनी पत्नीके चरणतलपर गिर पड़ा, और बोला कि मैं मूर्ख बुद्धि दुष्टों द्वारा ठगा गया। हे प्रिय! आओ, हम घर चलें। तब कारणका विचारकर वह धूर्त बोली।

घत्ता—अपने भाइयोंको बुलाओ, मैं दीप धारण करके जाऊँगी। क्योंकि असतीत्वके मलसे मैली मैं (बदनाम) होकर कब तक रहूँगी ॥१२॥

१३

सा महिलारइरसे[1]वंभलेण मेलाविय बंभव अइबलेण।
उवचिट्ठी सइरिणि धगधगंति हुयव[2]हि दूसहि विद्धत्थधंति।
सा तेण ण दट्ठी कह[3] वि केम मायाविणि वेस जडे[4]ण जेम।
वंदिय लोएण महासईहि हूयउ सिहि सीयलु सुहमईहि।
दुच्चारिणिचरिउ णियच्छमाणु पवियप्पइ रिउमहिरुहकिसाणु।
णिग्गंठ[5]वसीलु को संपयाइ पारद्धिउ को सेविउ दयाइ।
भणु सोसिउ[6] रायपसा[7]उ कासु सघरत्थु वि कं[8] ण डहइ हुयासु।
वसणेण ण किउ[9] को जगि णिरत्थु असईयणें वंचिउ को ण एत्थु।

घत्ता—अविवंचिउ[10] णारीहिं महियलि को वि ण वसइ ॥
भरहपुप्फदंतेहिं पेच्छेउ[11] जणु जिह रुवइ ॥१३॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे विज्जाहरीमायापवंचणो णाम तेत्तीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ ३३ ॥

संधि ॥ ३३ ॥

१३. १. MB °रसविभलेण। २. MB हुयवहदूसहि विद्धत्थवंति। ३. MB कहि। ४. MB विडेण। ५. MB णिग्गंथसीलु। ६. MB सासउ। ७. M पसाय। ८. MB किं। ९. MB जगि को। १०. MB अविअंचिउ। ११. MB पेच्छिउ।

१३

तब स्त्रीप्रेमके रससे व्याकुल अतिबल विद्याधरने भाइयोंको एकत्रित किया। वह स्वेच्छाचारिणी अन्धकारको नष्ट करनेवाली धक-धक जलती हुई उस आगमें प्रविष्ट हुई। उस आगमें वह उसी प्रकार नहीं जली, जिस प्रकार मूर्खके द्वारा मायाविनी वेश्या दग्ध नहीं होती। लोगोंने उसकी वन्दना की। शुद्धमतिवाली इस महासतीके लिए आग ठण्डी हो गयी। उस दुश्चारिणीके चरित्रको देखनेवाला वह कुमार जो कि शत्रुरूपी वृक्षोंके लिए कृशानु (आग है), विचार करता है। गर्वहीन शीलको कौन सम्पादित कर सकता है। दयासे सेवित भी शिकारी नहीं हो सकता। बताओ कि राजाका प्रसाद हमेशा किसे मिलता है। घरकी आग किसे नहीं जलाती है। व्यसनसे संसारमें कौन व्यर्थ नहीं हुआ। असतीजनसे संसारमें कौन वंचित नहीं हुआ।

घत्ता—इस धरतीपर नारियोंसे वंचित नहीं होते हुए कोई नहीं बचा। भरत और पुष्पदन्त दोनोंने देखा कि लोगोंको क्या अच्छा लगता है ॥१३॥

इस प्रकार त्रेसठ महापुरुषोंके गुणालंकारोंसे युक्त इस महापुराणमें महाकवि पुष्पदन्त द्वारा विरचित एवं महाभव्य भरत द्वारा अनुमत इस काव्यका विद्याधरीमाया-प्रवंचन नामका तैंतीसवाँ अध्याय समाप्त हुआ ॥३३॥

संधि ३४

सा कवडपइं[1]वइय आलुंचियवय णियपियभवणि पइट्ठी ॥
कामिणिमणहारें तहिं जि कुमारें कण्णपिसल्लिय दिट्ठी ॥ ध्रुवकं ॥

१

जियसत्तु विमलमइ देविसुय कमलवइ णाम सोहग्गजुय ।
विज्जासंसाहणि गहगहिय आणिय पिउवणु ससयणि महिय ।
जियरिउणा सुंदरु पत्थियउ इह तिहुयणि जो जो दुत्थियउ ।
तहु तहु तुहुं बंधवु[2] देहि सुय[3] महु तणयहि करहि सणाहक्रिय[4] ।
ता तरुणें मंतवसिल्लियहि पिसउल्लउ पुसिउ पिसल्लियहि ।
अवरोप्परु हियवउं ढोइयउं दोहिं वि अहिलासें जोइयउं ।
ईसावसेण रूसिवि वरहो गय झ त्ति सुहावइ णियघरहो ।
बुज्झिउ णरणाहें चक्कवइ आणिउ णियभ[5]वणहु भुवणवइ ।
घत्ता—पुज्जिवि मणिहारहिं जणियवियारहिं कण्णंतेउरि णिहियउ ॥
तेहिं वि पूय[6] मुद्धहिं रूवालुद्धहिं णियणियमणि संणिहियउ ॥१॥

२

ससुरेण भणिउं भो चंदमुह कीरइ विवाहकल्लाणु तुह ।
तेण वि तहु वयणु पलोइयउ हियउल्लउं बंधुविओइयउं ।
हे माम ताम मई णेहि तहिं वसु[1]पालु सहोयरु वसइ जहिं ।
तहु मिलिवि धरमि करु सुंदरिहि सुरणरणयणंतरंगहरिहि ।
तं णिसुणिवि सज्जणमणु मुणिउं जिय[2]सत्तुं स[3]ल्लिलसेणु भणिउ ।
सुंदरु लएवि बहुसोक्खयरि लें[4]हु जाहि पुंडरिंकिणिणयरि ।
ता सुहउ लएप्पिणु भमिये[5]गहे गउ वारिसेणु वारिहरवहे ।

MB give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza :—

तीव्रापद्दिवसेषु बन्धुरहितेनैकेन तेजस्विना
संतानक्रमतो गतापि हि रमा कृष्टा प्रभोः सेवया ।
यस्याचारपदं वदन्ति कवयः सौजन्यसत्यास्पदं
सोऽयं श्रीभरतो जयत्यनुपमः काले कलौ सांप्रतम् ॥

GK do not give it.

१. १. MB °पइव्वय । २. MB बंधउ । ३. MB सिय । ४. MB किय । ५. MB °भुवणहु । ६. MB पिय । ७. MB सुद्धु विसुद्धहिं; B सुट्ठुविसुद्धहि ।

२. १. B वसुवालु । २. MB जियसत्तु । ३. M सलिलासणु । ४. MB लुहुं । ५. MB भणिय गहे ।

सन्धि ३४

नियमोंका त्याग करनेवाली वह मायाविनी पतिव्रता अपने प्रियके भवनमें प्रविष्ट हुई। वहींपर कामिनियोंके लिए सुन्दर कुमारने एक कन्या देखी, जिसे 'भूत' लगा हुआ था।

१

जितशत्रु और विमलावती देवीकी कमलावती नामकी सौभाग्यसे युक्त कन्या थी। विद्या-सिद्धि करते समय वह 'भूत' से ग्रस्त हो गयी। अपनी बहनोंमें आदरणीय उसे मरघट ले आया। जितशत्रुने सुन्दर कुमारसे प्रार्थना की कि इस त्रिभुवनमें जो-जो दुःस्थित है, पीड़ित है। उसके लिए आप बन्धु हो। आप इतनी श्री दो, और मेरी लड़कीके स्वामी बननेकी कृपा करो। तब कुमारने मन्त्रोंसे वशीभूत पिशाचीसे ग्रसित कन्याका पिशाच दूर कर दिया। दोनोंने अपना हृदय एक दूसरेको दे दिया। अभिलाषाके साथ दोनोंने एक-दूसरेको देखा। ईर्ष्यावश कुमारसे अप्रसन्न होकर सुखावती अपने घर चली गयी। राजाने समझ लिया कि यह चक्रवर्ती है और उस विश्वपतिको अपने घर ले आया।

घत्ता—लोगोंमें क्षोभ उत्पन्न करनेवाले मणिहारोंसे उसकी पूजा कर राजाने कन्याओंको अन्धपुरमें रख दिया। रूपकी लोभी उन मुग्धाओंने अपने-अपने मनमें उसे प्रियरूपमें स्थापित कर लिया ॥१॥

२

ससुरने कहा कि हे चन्द्रमुख, तुम विवाह कर लो। उसने भी उसका वचन देखा, उसका मुख देखा और कहा कि मेरा हृदय बन्धु-वियोगसे दुःखी है। हे ससुर! इसलिए आप मुझे वहाँ ले जाइए कि जहाँ मेरा भाई वसुपाल रहता है। उससे मिलकर मैं देवता और मनुष्योंके नेत्रों तथा हृदयको चुरानेवाली इस सुन्दरीका हाथ पकड़ूँगा। यह सुनकर सज्जन मन जितशत्रुने वारिसेनसे कहा कि इस सुन्दर कुमारको लेकर तुम अनेक सुखोंको करनेवाली पुण्डरीकिणी नगरीकी ओर शीघ्र जाओ। तब उस सुभगको लेकर जिसमें ग्रह घूम रहे हैं, ऐसे आकाशपथसे

णिसि णिवइ तिसइ सोसियवयणु पत्तउ विमलउरुत्तुंगतणु ।
जलु जोयहुं चलिउ खगाहिवइ जा दिट्ठि कमलवाविहि थिवइ ।
ता सुक्क णिरिक्खिय तेण किह णिण्णेह विलासिणिकील जिह ।
घत्ता—दूसिय[6]देहुण्हइ लइयउ तण्हइ धायमलक्कइ रीणउ ॥
णवसत्तच्छयतलि खगकोलाहलि जहिं अच्छइ आसीणउ ॥२॥

३

विज्जाहरेण आसासियउ तहिं जायवि पहु संभासियउ ।
आहिंडिवि देव असेसु वणु मा बीहहि आणे[1]वि सिसिरु वणु ।
इय भणिवि वेयवाहिणि सरिया[2] गउ दिट्ठ तेण पाणियभरिया[3] ।
अइअविहयहरिणु[4]त्तण्हियहि अणुहरिय सा वि मायण्हियहि ।
रायाहिराय दलियावईइ सोसिय कण्णाइ सुहावईइ ।
पिउ जाइवि मालइ ताडियउ तण्हाकिलेसु णिद्धाडियउ ।
अलहंतु सलिलु विडवुं[5]भडहु आयउ सरसेणु सरीयडहु ।
छण्णइ कण्णइ बोल्लावियउ तुहुं केण इय्य वेहावियउ[6] ।
किं पाविज्जइ वरु रमणु[7] पइं जज्जाहि तुरिउ भणिओ सि मइं ।
एयहु रिउ दुज्जय अत्थि जइ मा करहि वित्तु अहिमाणमइ ।
तं णिसुणिवि सो पल्लट्टु णरु णिविसेण[8] पराइउ णिययघरु ।
सयणहं संबंधु समासियउ णंद[9]वाविजलोहउ सोसियउ ।
सइं पुहइणरिंदु परिग्गहिउ हउं एत्थु कुमारिइ [10]संपहिउ[11] ।
घत्ता—तहि तणियइ [12]मोलिइ चलभसं[13]लोलिइ पहु छुह तण्ह ण पावइ ॥
जसु घरिणि सुहावइ हियवउ रावइ तासु दुक्खु [14]केहिं आवइ ॥३॥

६. M दूणिय° ।

३. १. MB आणउं । २. MB सरिय । ३. भरिय । ४. MB हरिणु व तण्हियहि । ५. MB वियडुंभडहु; T विडउंभडहु ।

६. MB add after this the घत्ता couplet :—

घत्ता—खरतावविमोसें गिंभविसेसें कच्छवमच्छवहूहइ ॥
असिलट्ठि व दीसइ किं किर सीसइ णिण्णाणिय णइ हूई ॥३॥

and number the कडवक as 3 and subsequent कडवकs as 4 etc., upto 13 । ७. MB रमण । ८. M णिवसेण; B णिमिसेण । ९. MB णयवावि° । १०. MB संपिहिउ । ११. MB add after this the following three lines : हरिणुल्लउ वहइ ससंकु जलु, संजणइ सबिंबहु तेण मलु; मुहससहरु मिगणयणइं वहइ, अब्भंत आहि पोढिम वहइ; कय उसिम जासु वियक्खणिय, जहिं दीसइ तहिं जि सलक्खणिय । १२. MB मालइ; K मालिइ but corrects it to मालइ । १३. MBK °भसलाकइ । १४. M किं ।

वारिसेन ले गया। रात्रिमें राजाका मुख प्यासमे सूख गया। वह विमलपुर नगरकी ऊँचाईपर पहुँचा। विद्याधर राजा पानी देखने चला और जैसे ही उसने कमल वापिकापर दृष्टि डाली वैसे ही उसे उसी प्रकार सूखा देखा जिस प्रकार कि विलासी वेश्याकी स्नेहहीन क्रीड़ा हो।

घत्ता—असह्य शरीरकी उष्णतावाली, प्यासमे सन्तप्त तथा दौड़नेके आवेगसे श्रान्त कुमार 'श्रीपाल' सप्तपर्णीके पत्तोंके नीचे पक्षियोंके कोलाहलके बीच जब बैठा हुआ था ॥२॥

३

वहाँ विद्याधरने जाकर उसे आश्वासन दिया और कहा कि हे देव! तुम डरो मत मैं शीतल जल लेकर आता हूँ। यह कहकर वह गया, और उसने वेगसे बहनेवाली पानीसे भरी हुई नदी देखी। लेकिन वह नदी भी, जिसने हरिणोंके लिए अत्यन्त वितृष्णा उत्पन्न कर दी है, ऐसी मृगमरीचिकाके समान दिखाई दी। राजाधिराज राजा श्रीपालकी आपत्तियोंका दलन करनेवाली सुखावती कन्याने उस नदीको सुखा दिया। उसने जाकर प्रियको मालतीकी मालासे ताड़ित किया और उसके प्यासकी पीड़ाको नष्ट कर दिया। विकट और उद्भट नदी तटसे पानी न पाकर वारिसेन लौट आया। तब प्रच्छन्न कन्या (सुखावती) बोली—तुम बेचारे किसके द्वारा प्रवंचित हुए हो, तुम अपने सुन्दर घरको किस प्रकार पा सकते हो, तुम फौरन चले जाओ मैंने कह दिया। इसका शत्रु यदि अजेय है, तो तुम व्यर्थ अपने चित्तमें अभिमान बुद्धि मत करो। यह सुनकर वारिसेन लौट पड़ा और पलमात्रमें अपने घर आ गया। थोड़ेमें उसने अपने लोगों और बन्धुओंको बता दिया कि किस प्रकार बावड़ी और नदीका जलसमूह कुमारीने सोख लिया और स्वयं पृथ्वीनरेश (श्रीपाल) को ग्रहण कर लिया है, और मुझे यहाँ भेज दिया है।

घत्ता—उसकी चंचल भ्रमरोंसे सुन्दर मालतीसे राजाको भूख और प्यास नहीं लगती। जिसकी गृहिणी सुखावती हृदयको रंजित करती हो, उसे आपत्ति कहाँसे आ सकती है? ॥३॥

४

तं णिसुणिवि सयणहिं बोल्लियउ कण्णइ विजगु वि उच्छल्लियउ।
सिरिपाल[1] कप्पतरुवरवइहि सामत्थु पघुट्ठु सुहावइहि।
एत्तहि णंदणवणि संठियउ णरणाहु णरहुं उक्कंठियउ।
सुमरंतु सहायहु दुज्झियइ हुउ कुसुमहिं मायाखुज्झियइ।
चिंतइ कुमारु मुणिमणमहहु मग्गण पडंति किं वम्महहु।
पइरत्तइ[2] पुव्ववहुल्लियइ णिहंसणरूवु समुल्लियइ।
लक्खणपमाणमाणें भविउ कण्णासरूउ तहु णिम्मविउ।
चिंतइ चिंताउलु भुवणवइ संचिय[3]संसयसंमूढमइ।
महु केण कुमारिरूवुं[4] ठविउ विणु मुद्दइ पुणु किह संभविउ।
घत्ता—तं रूवुं णिएप्पिणु महिल भणेप्पिणु दूसहमयणें भग्गा॥
णियगोत्तदिवायर बिण्णि वि भायर विज्जाहर[5] तहु लग्गा॥४॥

५

एक्कहि भिसिणिहि दो हंसवर एक्कहि किसकलियहि दो भमर।
जइ होंति होंतु ण घडइ अवरु सरु संधउ विंधउ कुसुमसरु।
एक्कहि तरुणिहि किं बिण्णि जण मउकरयलेहिं माणंति थण।
इय चिंतिवि रणु पारंभियउ सुयणत्तणु बिहि वि णिसुंभियउ।
सिरिधूमवेयहरिवाहणहं[1] अंबरोप्परु कड्ढियपहरणहं।
अंतरि गरुयारउ भाइ थिउ बिहि पेम्मणिबंधु रउद्दु किउ।
मित्तत्तणु विहडइ बंधवहं किं पुण इह अवरहं अहिणवहं।
इय भणिवि णिवारिय बे वि वर उक्खय[2]करवालकरालकर।
कप्पयरहरायहु तणउं घरु णियमायाकुंयरिउ[3]त्तुंगसिरु।
राएं[4] तहिं चारु वियप्पियउ तणयाहरि सिविरु[5] समप्पियउ।
घत्ता—जुवयणमणचोरिहि भणिउं कुमारिहि एह कासु किं आइय॥
ता पीवरथणियइ खगं[6]वामणियइ विहसिवि वत्त णिवेइय॥५॥

६

एह माइ सामिणी महंगुणेहि जुत्तिया पुंडरिं[1]गिणीपुरीणराहिवस्स पुत्तिया।
एत्थ कामलंपडेण खेयरेण आणिया भूपसिद्ध मुद्ध भूमिगोयरी वियाणिया।
हारदोर[2]भूसियंगि तारतंबणेत्तिया जंपए ण भाउमाउआविओयतत्तिया।

४. १. MB सिरिवाल। २. MB पइरत्तइ कामगहिल्लियइ, ता पहसिवि पुव्ववहुल्लियइ। ३. M सिंचियसंपय°; B संचियसंपय°; T संचिय°। ४. MB °रूउ। ५. B विज्जाहरहो।

५. १. MB रहसेण पवाहियावाहणहं। २. MB उक्खयसुकरालकिवाणकर। ३. M °कुयरिउ तुंगसिरु। B °कुवरिउत्तुंगसिरु। ४. B रायहु तहु चारु समप्पियउ। ५. B सवरु। ६. MB खगकामिणियइ।

६. १. MB पुंडरिकिणी°। २. MB °भूसियंग।

४

यह सुनकर स्वजनोंने कहा कि इस लड़कीने तो तीन लोकोंको उछाल दिया है। श्रीपाल-रूपी कल्पवृक्ष जिसका पति है, ऐसी सुखावतीने अपनी सामर्थ्यका डंका बजा दिया है। यहांपर नन्दनवनमें स्थित वारिसेनके लिए राजा उत्कण्ठित हो उठा। सहायताका स्मरण करते हुए उसे उस दुर्जेय मायाकी कुब्जाने फूलोंसे आहत कर दिया। वह कुमार अपने मनमें सोचता है कि क्या मुनिमनका नाश करनेवाले कामदेवके ये तीर पड़ रहे हैं। पतिमें अनुरक्त पूर्वकी वधूमें अदृश्य रूपसे युक्त उसका (श्रीपालका) लक्षण और प्रमाणसे युक्त कन्या स्वरूप बना दिया। जिसकी मति संचित संशयसे मूढ़ है, ऐसा चिन्ताकुल वह भुवनपति अपने मनमें सोचता है कि मेरा यह कन्या रूप किसने बना दिया? बिना अंगूठीके यह दुबारा कैसे सम्भव हुआ।

घत्ता—उसके उस रूपको देखकर और महिला समझकर, असह्य कामवेदनासे नष्ट (भग्न) अपने-अपने गोत्रोंके दिवाकर दोनों विद्याधर भाई उसके पीछे लग गये।

५

एक कमलिनी लेकिन उसके लिए दो-दो हंस, एक दुबली-पतली कली उसके लिए दो-दो भ्रमर यदि होते हैं तो यह होना घटित नहीं होता। केवल कामदेव वेधता है। और सर सन्धान करता है। क्या दो-दो आदमी एक तरुणीके स्तनोंका अपने कोमल करतलोंसे आनन्द ले सकते हैं। यह विचारकर उन्होंने युद्ध प्रारम्भ किया। दोनोंने सज्जनताका नाश कर दिया। एक-दूसरेके ऊपर जिन्होंने अपने शस्त्रका प्रहार किया है ऐसे उन विद्याधरोंके बीचमें बड़ा भाई आकर स्थित हो गया और बोला कि (दोनोंने प्रेम सम्बन्धको भयंकर बना लिया इससे भाइयों-की मित्रता विघटित होती है। फिर दूसरे नये लोगोंका क्या होगा?) यह कहकर उसने अपने हाथमें भयंकर तलवार उठाये हुए उन लोगोंको मना किया। तब वह माया-कुमारी, जिसका उत्तुंग शिखर ऐसे अपने विजयार्ध पर्वतवाले घरपर उसे ले गयी। रागसे उसने उसे सुन्दर समझा और तृणकी सेजपर उसे निवास दिया।

घत्ता—युवजनके मनको चुरानेवाली उस कुमारीसे कहा कि यह किसकी है और क्यों आयी है? तब पीन स्तनोंवाली उस विद्याधर स्त्रीने हँसकर यह बात निवेदित की ॥५॥

६

हे स्वामिनी, यह अनेक गुणोंसे युक्त पुण्डरीकिणी नगरीके राजाकी लड़की है। कामसे लम्पट विद्याधरके द्वारा धरतीमें प्रसिद्ध भोली पण्डित यह मानविका कन्या यहाँ लायी गयी है। स्वच्छ और लाल आँखोंवाली हारडोरसे विभूषित शरीरवाली यह भाई और माताके वियोगसे

ताम जक्खदेवएण वड्ढिमा वियारिया लच्छिवाल चक्कवट्टि एस णो कुमारिया ।
खुज्जिया वि खेयरी सुहावई सुहंकरी ता रइप्पहाइ भासिया इणं मणोहरी ।
दक्खवेहि वल्लहं विलास[3]भासियाण संगहं सूहवं समा[4]णिणी अदीणमाणणिग्गहं ।
तं मुणेवि[5] सुंदरीइ एणलंछणाणणो रूवि[6] वम्महो गहीररायरिद्धिमाणणो ।
मंतिऊण चिंतिऊण दिव्वमंतसंगमं दूसिऊण णासिऊण णारिरूवविब्भमं ।
दंसिओ वहुल्लियाण पुंडरिंकिणीवई तं पलोइऊण ताण वड्ढिया मणे रई ।
का वि कामसल्लिया महीयले णिवाइया का वि णीससंतिया वयंसियाहिं जोइया ।
पं[7]जरंतसोणिया सहीयणस्स लज्जिया का वि मुच्छिया चलंतचामरेहिं विज्जिया ।

घत्ता—इय कण्णंतेउरु पेच्छंतउ वरु मयणें उप्पहि थवियउ ॥
भिच्चहि जाएप्पिणु पणउ करेप्पिणु पुररायहु विण्णवियउ ॥६॥

७

जा तरुणी बाला लइ थविय सा अम्हहं खुज्जाइ[1] दक्खविय ।
सा कण्ण ण होइ मरालगइ सिरिवालु णाम रायाहिवइ ।
ता खयरकुमार वीरपवर धाइय अणंत इच्छियसवर[2] ।
असिकणयकोंतविप्फुरियदिस वग्गिय मग्गियसंगाममिस ।
सुंदरु पेक्खिवि उवसंत किह जिणणाहु णिहालवि भव्व जिह ।
तहिं समइ खगिंदु पराइयउ[3] जामाउ सिणेहें[4] जोइयउ ।
जाणिउ परमेसरु चक्कवइ संतोसिउ विज्जाहरणिवइ ।
संमाणिउ कंकणकुंडलेहिं वरहारदोरमणिउज्जलेहिं ।
तियसाहिव[5]जयसिरिलंपडेहिं हरिवाहणधूमवेयभडेहिं ।
चिंतिउ दोहिं पि समेहलहिं अम्हहिं किं कियउ समेहलहिं ।

घत्ता—सिउ कण्णारूवें मायाभावें रिउ णउ संचारिउ ॥
गयें[6] विज्ज पणासिवि गुणगणु दूसिवि अप्पउ पर वेयारिउ ॥७॥

८

गयदिणि जं अम्हहिं कलहियउ[1] तं केण वि कहिं मि ण संलहियउ ।
खगणाहें णेवरु[2] पुच्छियउ तुहुं महिलायारु णियच्छियउ ।
पुणरवि संजायउ पुरिसु[3] जिह वित्तंतु असेसु वि कहहि[4] तिह ।
तं णिसुणिवि तेण समासियउ बालासामत्थइ[5] विलसियउ ।

---

३. MB विलासहाससंगहं । ४. M समाणमाणिणीए माणणिग्गहं; T अदीण । ५. MBK सुणेवि । ६. MB रूव° । ७. MBK add का वि before this ।

७. १. MB जक्खइ । २. MB इच्छियसमर । ३. MB समाइयउ । ४. M सणेहें जोइयउ; B सणेहें पुज्जियउ । ५. MB तियसाहिव° । ६. MB गय वज्जेवि णासिवि ।

८. १. M सालहियउ; B मलहियउ । २. MB णरवरु । ३. B पुरिस । ४. BM कहिउ । ५. MB °सामत्थु पविलसियउ]।

दुःखी होकर बोलती नहीं। तब यक्षदेवने उसके बुढ़ापेको नष्ट कर दिया। ये चक्रवर्ती लक्ष्मी श्रीपाल और ये नौ कुमारियाँ हैं। कुब्जा, विद्याधरी, सुखावती भी सुन्दर हो गयीं तब रतिप्रभा आदि नौ कन्याओंने यह सुन्दर बात कही कि हजारों विलासोंसे युक्त अदीनोंके भावोंका निग्रह करनेवाले सुन्दर प्रियको हे माननीय हमें दिखाइए। यह विचार कर सुन्दरीने चन्द्रमाके समान मुखवाले तथा रूपमें कामदेवके समान गम्भीर रागऋद्धिका उपभोग करनेवाले उस राजाको धीरे-धीरे दिव्य-चिन्तन और रूपके विभ्रमको नष्ट कर, उस पुण्डरीकिणीका राजा श्रीपाल बन्धुओंको दिखा दिया। उसे देखकर उनके मनमें रति उत्पन्न हो गयी। कोई-कोई कामसे पीड़ित होकर धरतीपर गिर पड़ी, कोई निःश्वास लेती सखी द्वारा देखी गयी। कोई शुक्रके पतन-से सखीजनों द्वारा लजायी गयी। किसी मूच्छितपर हिलते हुए चँवरोंसे हवा की गयी।

घत्ता—इस प्रकार कन्याके अन्तःपुरको देखते हुए कामने वरको खोटे मार्गपर स्थापित कर दिया। अनुचरोंने जाकर प्रणाम करते हुए नगरके राजासे जाकर कहा ॥६॥

७

जो युवती बाला यहाँ रखी गयी है, जिसे उस कुब्जाने हमें दिखाया है वह हंसगामिनी कन्या नहीं है। अपितु श्रीपाल नामका राजा है। तब युद्धकी इच्छा रखनेवाले अनेक वीर और प्रबल विद्याधर कुमार दौड़े। अपनी तलवारों और कनक तोपोंसे दिशाओंको आलोकित करनेवाले तथा युद्धका बहाना चाहते हुए वे भड़क उठे। लेकिन उस सुन्दर कुमारको देखकर वे वैसे ही शान्त हो गये जैसे जिन भगवान्‌को देखकर भव्य लोग शान्त हो जाते हैं। उस समय विद्याधर राजा आया और बड़े स्नेहसे उसने जँवाईको देखा। उसने समझ लिया कि ये परमेश्वर चक्रवर्ती हैं, विद्याधर राजा सन्तुष्ट हो गया। उसने कंगन-कुण्डलसे सम्मान किया। बड़े-बड़े हार-डोर मणियोंसे उज्ज्वल तथा देव संग्रामकी विजयश्रीके लिए लम्पट तथा हरिवाहन तथा देव धूमवेग दोनों योद्धाओंने विचार किया कि मेखला धारण करनेवाले तथा शान्त भावकी इच्छा रखनेवाले हम लोगोंने यह क्या किया।

घत्ता—कपटी मायावी कन्या रूपमें युद्धमें स्थित शत्रुको भी हमने नहीं मारा। इसका नतीजा क्या हुआ? विद्या नष्ट होकर चली गयी और गुणगणको दूषित कर हमने केवल अपनेको नष्ट किया ॥७॥

८

गत दिन हम लोगोंने जो कलह किया, उसकी कहीं भी किसीने सराहना नहीं की। उस विद्याधर राजाने नरवरसे पूछा कि तुमको महिला रूपमें देखा था, फिर तुम जिस तरह इस पुरुष रूपमें हो गये वह समस्त वृत्तान्त कहिए। तब उसने संक्षेपमें कहा कि यह सब इस कन्याकी

गउ विज्जावइ णियमंदिरहु णिहंगि रमिय तहु सुंदरहु ।
सुहसुत्तु[6] जि खयरिहिं हरवि णिउ भणु काम्रु ण रुचइ प्राणप्रिउ[7] ।
गुलखंडु[8] रसायणु जेरिसउं सुहयहु सुहयत्तणु तेरिसउं ।
किं वण्णमि विहुयणसुहियउ जिज्जंतहु तासुण्णिहियउ[9] ।
मुहु[10] तामरसु व आयासरि दीसइ वियसिउ चवलंबुहरि ।
जगगरुयउ गयणु विराइयउ[11] अरहंतु व तेण पलोइयउ ।

घत्ता—पुणु णियसीमंतिणि तंतिणि [12]मंतिणि चिंतिय तेण सुहावइ ॥
पइं विणु मणहारिए देवि भडारिए को रक्खइ महु आवइ ॥८॥

९

हउं णिज्जम्मि[1] लग्गउ केण कहिं किं जीवमि किं ध्रुवु[2] मरमि जहिं ।
रवियरपज्जालियमउडमणि ता[3] पयड परिट्ठिय णहरमणि ।
पभणइ किं जूरहि पुरिसहरि ओहच्छमि हउं तुह विहुरहरि ।
जं भणसि तं जि हेलइ करमि पलयक्कु वि गयणि जंतु धरमि ।
कमलवइहि दिण्णी दिट्ठि जहिं ईसाइ ईस मुक्को सि तहिं ।
कण्णाकारुण्णें पुण वि मइं विरहें जलियउ जोयंतु पइं ।
उव्वाइवि णेंतु णिहेलणउं हरिसेण करंतु व मेलणउं ।
हउं णिविसु वि पिययम जइ मुयमि तो किं णिसि णिद्दइ सुहुं सुअमि ।

घत्ता—इह जणवइ खलसंकुलि कयरणकलयलि अण्णु ण णयणहिं पेक्खमि ॥
दिट्ठादिट्ठसरीरी[4] होइवि धीरी पइं[5] वि भडारा रक्खमि ॥९॥

१०

वल्लहंतरंगंगकंपणं एम जाम जायं पयंपणं ।
माणिमाणवित्थारसंथणं सित्थपंथ[1]संणिहियमग्गणं ।
जाणिऊण भयणं खलं घणं सुंदरीहिं विहियं खलंघणं ।
णहघरित्तिदिब्भित्तिलग्गओ ताम भीमसद्दो समुग्गओ ।
सिहरिकुहरहरिणा वि णिग्गया भयवसेण दूरं गया गया ।
झाणमेव महमुणिहिं जुंजियं सकलुसं मइंदेहिं हंजियं ।
पडिय विडवि फुडियं रसायलं घुलिय महियलं[2] भीरुभंभलं[3] ।
रूवरिद्धिणिज्जियसईरई संकिया मणे सा सुहावई ।
तुट्ठिपुट्ठिकल्लाणदाइणा गयणपंगणत्थेण राइणा ।
सइं णिरिक्खिओ सुरहिपरिमलो करडगलियओहुलिय[4]मयजलो ।

६. B सुहसुत्तु जि । ७. MB पाणपिउ; K प्राणिप्रिउ । ८. B °खंड । ९. MBT तासु विणिहियउ ।
१०. B मुह तामरसु । ११. MB णिराइयउ । १२. मित्तिणि; T मंतिणि ।
९. १. BM णिज्जमि । २. MB धुउ । ३. MB तो । ४. दुादिट्ठिसरीरी । ५. MB पइं जि ।
१०. १. MBT सियपंथ°; K सिक्कपंथ । २. MB महिउलं । ३. MB भीरु बेंभले । ४. MB °अविहुलिय° ।

सामर्थ्यसे घटित हुआ। विद्याधर राजा अपने घर गया। और उस कुमारके शरीरसे नींद रमण करने लगी। सुखसे सोते हुए उसे विद्याधरियाँ उड़ाकर ले गयीं। बताओ कि अपना प्रिय किसे अच्छा नहीं लगता। गुड़ और रसायन जैसे मीठे लगते हैं। ले जाते हुए मैं क्या वर्णन करूँ? त्रिभुवनको प्रसन्न करनेवाला वह उठ गया। चंचल मेघोंको धारण करनेवाली आकाशरूपी नदीमें उसका मुख खिले हुए रक्त कमलकी तरह दिखता है। जगमें श्रेष्ठ, महान् शोभित आकाशको उसने अनन्त भगवान्‌की तरह देखा।

घत्ता—फिर उसने तन्त्र-मन्त्रवाली अपनी स्त्री सुखावतीका ध्यान किया। हे सुन्दरी! देवी आदरणीया!! तुम्हारे बिना इस आपत्तिमें मेरी कौन रक्षा करता है ॥८॥

९

मैं किसीके द्वारा कहीं ले जाया जा रहा हूँ। यहाँ मैं जीवित रहूँगा या मर जाऊँगा। यहाँ मैं यह नहीं कह सकता। तब जिसका मुकुट मणि सूर्यसे प्रज्वलित है ऐसी विद्याधर स्त्री प्रकट हुई और बोली—हे पुरुषश्रेष्ठ, तुम्हारे कष्टोंको दूर करनेवाली तुम्हारी मैं यहाँ स्थित हूँ। तुम जो कहते हो उसे मैं अनायास कर देती हूँ। मैं आकाशमें जाते हुए प्रलयके सूर्यको भी पकड़ सकती हूँ। कमलावतीके लिए तुमने जब अपनी दृष्टि दी थी तब ही ईर्ष्याके कारण हे स्वामी! कन्याको दयासे तुम्हें विरहमें जलते हुए देखकर अपने घर ले जाते हुए और हर्षसे मिलते हुए हे प्रियतम, तुम्हें यदि मैं एक पलके लिए भी छोड़ती हूँ तो क्या मैं रातको सुखसे सो सकती हूँ।

घत्ता—दुष्टोंसे व्याप्त तथा जिसमें युद्धके लिए कोलाहल किया जा रहा है ऐसे जनपदमें, 'मैं' किसी दूसरेको अपनी आँखोंसे न देखूँगी और दृष्टिसे अदृश्य शरीर होकर धैर्य धारण करते हुए मैं हे आदरणीय! तुम्हारी रक्षा करूँगी ॥९॥

१०

जबतक प्रियके अन्तरंग अंगको कँपानेवाली यह बातचीत हुई। तबतक जिसने अपनी प्रत्यंचापर तीर चढ़ा लिये हैं तथा जो माननीय स्त्रीके माननीय विस्तारको नष्ट करनेवाला है ऐसे दुष्ट मेघको कामदेव जानकर सुन्दरियोंने आकाशका उल्लंघन कर लिया। इतनेमें नभ और धरती तथा दिशारूपी दिवालोंको हिलानेवाला भयंकर शब्द उत्पन्न हुआ। गज पहाड़की गुफामें रहनेवाले हरिणोंके समान भयके कारण दूर चले गये। महामुनिने अपना ध्यान केन्द्रित कर लिया। मृगेन्द्रोंने क्रोधके साथ गर्जना की। वृक्ष गिर पड़े। रसातल फूट गया और भयसे विह्वल भूमितल हिल गया। तब अपनी रुचि ऋद्धिसे इन्द्राणीको जीतनेवाली सुखावतीको मनमें शंका हुई। पुष्टि और कल्याणको देनेवाले आकाशके आँगनमें स्थित राजा श्रीपालने स्वयं देखा। एक हाथी जो सुरभित गन्धवाला था, 'जिसकी सूँड़से अविकलित मदकी जलधारा बह रही थी, जिस

लुलियचंलियपडिवलियअलिउलो चरणचप्पणो णवियमहियलो ।
णियपधवलिमाधोयणहयलो चलविरुद्धजंभारिमयगलो ।
सीयरंभसिंचियदिसाणणो चडविसाणणिद्दलियकाणणो ।
पंचदंडउच्छेहदेहओ ताण दूण परिहाणसोहओ ।
लंबमाणचलकण्णपल्लवो दीहतालवट्टो महारवो ।
तंबु ताल आयंबमुहणहो चिक्कवंतकेलाससच्छहो ।
लच्छिरमणु सिरिपालु धाइओ भद्दहत्थि गेहुंणे पलोइओ ।
घत्ता—पडिवक्खवियारणु पेक्खिवि वारणु रायहु हरिसु ण माइउ ॥
णं विउलसिलालहु हरिवरु सेलहु गलगज्जंतु पधाइउ ॥१०॥

११

दावंतु दंत करु करि घिवइ आलिंगइ सव्वंगइं छिवइ ।
मेणु रक्खइ मेलेप्पिणु दमइ पुणु ढुक्कइ चउपासहिं भमइ ।
सरयणु बहुरयणविहूसणहु अणुहरइ हत्थि कामिणिजणहु ।
चलु चउचरणंतरि पइसरइ हक्कइ हुंकारइ णीसरइ ।
लंघइ आसंघइ कुंभयलु पावइ पुच्छुप्पलु वच्छयलु ।
दसदिसिहिं वि हिंडइ कुंजरहु पहु विज्जुपुंजु णं जलहरहु ।
णिम्महइ गहीरसरेण सरु रंगंतु धरेइ करेण करु ।
आकुंचियतणु वंचणकुसलु अक्कमिवि कमेण दसणमुसलु ।
बलिणा बलेण णिव्वूढबलु जुज्झेप्पिणु मुइरु महंतबलु ।
घत्ता—सो करिमयणिब्भरु लीलामंथरु णरणाहें संभाइउ ॥
णं पविउलकंदरु मंदरमहिहरु भुयदंडहिं उच्चाइउ ॥११॥

१२

मयरेहासोहापरियरिउ जं जुज्झिवि दंति तेण धरिउ ।
तं गयणहु कुसुमणियरु घुलिउ रुणुरुणुरुणंतमहुलिहचलिउ ।
जाणेप्पिणु पुण्णपुरिसु पवरु परिहरिवि भुवणभीयरु समरु ।
करिणा सुंदरु कंधरि थविउ विज्जाहरकिंकरेहिं णविउ ।
णिउ तहिं जहिं अच्छइ खयरवइ सो पभणइ पुलयपसण्णमइ ।

५. MB बलियपयपडिय° । ६. MBKT परिणाह° । ७ MB तंबतालु पायंब° । ८. MB चिक्कवंतु ।
९. MB लच्छिरमणे सिहरिव्व धाइयो । १०. MB गयणे ।
११. १. MB तणु । २. MB चुक्कइ । ३. B चउदिसिहिं । ४. MB बहु° । ५. M °तणु वारणकुसलु; B तणुवरवरणकुसलु । ६. M मंदरु ।

पर चंचल भ्रमर समूह आ-जा रहा था, जो चरणोंसे चाँपनेवाला और धरतीको झुकानेवाला था, जिसने अपनी धवलतासे आकाशको धवलित कर दिया था। जिसने अपने बलसे ऐरावत हाथीको क्रुद्ध कर दिया है, जो शीतल मदजल बिन्दुसे दिशामुखको सींच रहा है, जिसने अपने चार दाँतोंसे जंगलको उजाड़ दिया है। जो पंचदन्त ऊँचे शरीरवाला है, रक्षकोंसे त्रस्त जो परिधानसे शोभित है, जिसके लम्बे चंचल कान पल्लवके समान हैं, लम्बी पूँछवाला, महाशब्द करता हुआ, लाल-तालुवाला लालमुख, नखवाला, कैलास पर्वतकी तरह चमकता हुआ स्वच्छ कान्तिवाला, लक्ष्मीसे रमण करनेवाला श्रीपाल दौड़ा। उसने जंगलमें भद्र नामक हाथीको देखा।

घत्ता—शत्रुपक्षका नाश करनेवाले उस हाथीको देखकर राजाका मन हर्षसे फूला नहीं समाया। बड़ी-बड़ी चट्टानोंवाले पर्वतसे गरजता हुआ वह राजा ऐसा दौड़ा, मानो गरजता हुआ सिंह दौड़ा ॥१०॥

११

उसके दाँतोंको दबाता हुआ वह हाथीपर अपना हाथ डालता है। उसके सब अंगोंका आलिंगन करता और छूता है, शरीरकी रक्षा करता है और फिर मिलनेके लिए करता है, फिर पास पहुँचता है, चारों ओर घूमता है। श्वेत दाँतोंवाला वह हाथी अनेक रत्नोंके आभूषणवाले कामिनी जनका अनुकरण करता है। वह चंचल श्रीपाल उसके चारों पैरोंके नीचेसे जाता है। हकलाता और हुंकारता है और निकल आता है, उसे लाँघता है, कुम्भस्थलपर बैठता है, पूँछ, सूँड़ और वक्षस्थलपर प्राप्त करता है। वह हाथीको दसों दिशाओंमें घुमाता है। वह स्वामी ऐसा मालूम होता है, मानो मेघोंमें विद्युत् पुंज हो। अपने गम्भीर स्वरसे उसके भयंकर स्वरको पराजित करता और क्रीड़ा करता हुआ उसकी सूँड़को अपने हाथसे पकड़ लेता है। जिसका शरीर आकुंचित है ऐसा प्रवंचनामें कुशल वह क्रमसे उसके दाँतोंरूपी मूसलका अतिक्रमण कर बलवान् बलका निर्वाह करनेवाले महाबलशाली उससे खूब समय तक लड़कर—

घत्ता—गजमदसे परिपूर्ण, लीलासे मन्थर उस हाथीको राजा श्रीपालने प्रसन्न कर लिया। मानो प्रबल गुफाओंवाले मन्दराचल पहाड़को उसने अपने बाहुदण्डसे उठा लिया हो ॥११॥

१२

मदरेखाकी शोभासे परिपूर्ण उस हाथीको जब राजा श्रीपालने युद्ध करके पकड़ लिया तो आकाशसे जिसमें चंचल भँवरे गुनगुना रहे हैं, ऐसा सुमन समूह गिरा। उसे प्रबल उच्च पुरुष जानकर तथा विश्व-भयंकर युद्धको छोड़कर उस हाथीने उसे अपने सुन्दर कन्धेपर चढ़ा लिया। और विद्याधरके अनुचरोंने उसे नमस्कार किया और वे उसे वहाँ ले गये जहाँ विद्याधर रहता

कंतावइग्गिय[1] सुकंतरमणा रइकंता सिरिकंता मयणा ।
वणवाला वाळहुं तुहुं जि वरु जामाइउ महु जियकुसुमसरु[2] ।

घत्ता—करि खंभि णिबद्धउ कंतिसंणिद्धउ[3] भरहसयणसुविणीयउ ॥
सिंदूरें पिंजरु आसाकुंजरु पुप्फयंतु[4] णं वीयउ ॥१२॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे महाकरिरयणेकंमं[5] णाम चउदसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ १४ ॥

संधि ॥ १४ ॥

---

१२. १. MB पिय । २. MB add after this : इय पभणिवि धरि पइसारियउ, पुरणरणारिहिं जयकारियउ । ३. K °सिणिद्धउ । ४. MB पुप्फवंतु । ५. MB रयणालंभं ।

था। रोमांचसे प्रसन्न बुद्धिवाले उस विद्याधर राजाने कहा कि अपने प्रिय पतिसे रमण करनेवाली कान्तावतीको प्रिय मेरी रतिकान्ता, श्रीकान्ता, मदनावती, वनमाला कन्याएँ हैं। तुम उनके वर हो और कामदेवको जीतनेवाले मेरे दामाद।

घत्ता—कान्तिसे स्निग्ध वह महागज खम्भेसे बाँध दिया गया। भरत और स्वजनोंके लिए विनीत सिन्दूरसे पीला, फूलोंके समान दाँतोंवाला वह गज मानो दूसरा दिग्गज हो ॥१२॥

इस प्रकार त्रेसठ महापुरुषोंके गुणों और अलंकारोंसे युक्त इस महापुराणमें महाकवि पुष्पदन्त द्वारा विरचित और महाभव्य भरत द्वारा अनुमत इस महाकाव्यमें महाकरिरत्नकाम नामका चौंतीसवाँ परिच्छेद समाप्त हुआ ॥३४॥

संधि ३५

ता चक्कु णिबंधिवि खेयरहं तिजगुत्तिमलायण्णइ[1] ॥
राणउ तहिं होंतउ अवहरिवि णियउ सुहावइकण्णइ ॥ ध्रुवकं ॥

१

चंडकिरणकरदिण्णालिंगणि पुच्छइ पुत्त[2] गच्छंतु णहंगणि ।
कहसु सुहावइ किं सरयब्भइं णं णं घरइं णहग्गणिसुंभइं ।
किं दीसंति बलायउ[3] पंतिउ णं णं धयमालउ[4] घोलंतिउ ।
किं सुरचावइं भद्दि विचित्तइं णं णं पिय तोरणइं पवित्तइं ।
किं णक्खत्तइं णं णं रयणइं मंदिरलग्गइं णं पुरणयणइं[5] ।
किं णहु एहु धरग्गि णिसण्णउं णं णं णागणयरु वित्थिण्णउं ।
देव णायवलु णामें राणउ एत्थु वसइ बलवंतु अदीणउ ।
एम चवंतइं बिण्णि वि तुरियइं जहिं जणु मिलियउ तहिं अवयरियइं ।
पभणइ पिययमु हलि किं जणवउ कहइ कुमारि एत्थु णिवसइ हउ ।
सहियदुसहसलिलेहाविरहहं गंधवाहरुप्पयचित्तरहहं ।
सो हरि धरहुं ण जाइ णरिंदहु चंचलु मणु णावइ कुमुणिंदहु ।

घत्ता—णिरुरियणयणु[6] णिम्मंसमुहु लक्खणलक्खविसिट्ठउ ॥
सुणिउब्भक्खुब्भक्खुरु वियडउरु राएं हयवरु दिट्ठउ ॥१॥

२

धाइउ दुद्धरु खरखुरखयधरु[1] ।
भरगयणिहतणु कंपावियजणु[2] ।
तंबिरणयणउ भंगुरवयणउ ।
दसणभयंकरु[3] अरिअमरिसहरु ।
भुवणविमद्दें लिहिलिहिसद्दें[4] ।
बहिरियदसदिसु मग्गियरणमिसु ।

MB give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza :—

इति भरतस्य जिनेश्वरसामायिकशिरोमणेर्गुणान् वक्तुम् ।
मातुं च वार्धितोयं चुलुकैः कस्यास्ति सामर्थ्यम् ॥

GK do not give it.

१. १. MBK तिजगुत्तम° । २. MB पिउ । ३. MB बलायापंतिउ । ४. MB धयमालाउ भुलंतिउ ।
५. MB पुररयणइं । ६. B णिरियणयणु ।

२. १. MB °खुरखयधरु । २. M कंपावियतणु । ३. MB दंसणभयकरु । ४. MBK हिलिहिलिसद्दें ।

सन्धि ३५

तब विद्याधरोंकी आँखोंको अवरुद्ध कर तीनों लोकोंमें श्रेष्ठ सौन्दर्यवाली वह सुखावती कन्या वहाँसे ले गयी।

१

जिसमें सूर्यकी किरणोंसे आलिंगन किया है ऐसे आकाशके आँगनमें जाता हुआ प्रिय पूछता है कि हे सुखावती, बताओ कि क्या आकाशमें ये शरद्के बादल हैं। वह कहती है— नहीं-नहीं, ये आकाशको छूनेवाले घर हैं। क्या ये आती हुई बलाकाएँ दिखाई देती हैं? नहीं-नहीं ये हिलती हुई ध्वज-मालाएँ हैं। हे कल्याणी, क्या ये रंग-बिरंगे इन्द्रधनुष हैं? नहीं-नहीं, प्रिय ये पवित्र तोरण हैं। क्या ये नक्षत्र हैं? नहीं-नहीं ये रत्न हैं। या नगरकी आँखें मन्दिरपर लगी हुई हैं, क्या ये धरती के अग्रभागपर आकाश स्थित हैं? नहीं-नहीं, यह नागनगर फैला हुआ है। हे देव! यह नागबल नामका राजा है। बलवान् और अदीन इस नगरमें रहता है। इस तरह बात-चीत करते वे दोनों वहाँ उतरे जहाँ लोगोंका मेला लगा हुआ था। प्रियतम पूछता है क्या यह कोई जनपद है। कुमारी कहती है, यहाँपर हय (घोड़ा) निवास करता है। जिन्होंने शशिलेखाका असह्य विरह दुःख सहन किया है, ऐसे गन्धवाह रूप्यक और चित्ररथका वह अश्व राजासे पकड़ा नहीं जा सकता, उसी प्रकार जिस प्रकार खोटे मुनि अपना चंचल मन नहीं पकड़ पाते।

घत्ता—डरावने नेत्रों और बिना मसोंवाला लाखों लक्षणोंसे विशिष्ट और लोहोंके नालसे रचित खुरोंवाला विशाल वक्षका वह घोड़ा राजा श्रीपालने देखा ॥१॥

२

तीखे खुरोंसे धरती खोदनेवाला, मरकतके समान शरीरवाला, लोगोंको कँपानेवाला, लाल-लाल नेत्रोंवाला, टेढ़े मुखवाला, दाँतोंसे भयंकर, शत्रुके क्रोधको चूर करनेवाला वह घोड़ा दौड़ा। विश्वका मर्दन करनेवाले कुमारने लिहिलिहि शब्दके द्वारा दसों दिशाओंको बहरा बनानेवाले

णवर णरिंदें चवलु मइंदें।
णं सारंगउ धरिउ तुरंगउ।
कुंकुमपिंजरु चलु पसरवि करु।
भुयबलपोढें पुणु आरूढें।
रायहं पीलिउ वग्गइ चालिउ।
अवलोइवि केसु हरि हूयउ वसु।
पुलइयकायं खगसंघायं।
पयडियमंगलु घुट्ठउ कलयलु।
घत्ता—ता[7] बुज्झिवि महिवइ अतुलबलु अहिवलेण सुरवण्णी॥
वरचंदणपरिमलचंदमुहि चंदलेह तहु दिण्णी॥२॥

३

चंदलेह आउच्छिवि णिग्गउ णियउ सुहावईइ णिविसें[1] गउ।
तेत्तहि जेत्तहि सीमामहिहरु विउलणियंबुग्गोयणवसुरतरु[2]।
बे वि चारुचामीयरवण्णइं तेत्थु लयाहरि जाम णिसण्णइं।
ता सखग्ग खग बेण्णि समागय णं णहि णिसियर णिसिहर उग्गय।
महुरगिराइ पउंजियविणयं पुच्छिय ते[3] वणितणयातणयं।
दीसइ बे वि सुहु सुच्छाया कहइ कासु किं कारणु आया।
तेहिं पवुत्तउ णियपुरु छंडिवि गयणु पायपुंडरियहिं मंडिवि।
अम्हइं आया पइं जि गवेसहुं दइउ बुद्धि पोरिसु विण्णासहुं।
लेंइ लइ लहु णिसिसु पचंदहि[4] एहु पंहीणखंभु जइ छिंदहि।
तो तुहुं होसि[5] बप्प चक्केसरु विज्जाहरभूगोयरईसरु।
घत्ता—तं णिसुणिवि असिवरु करि करिवि खंभु कुमारें घाइउ॥
असिजलधारइ सो णिट्ठुरु वि पत्थरु तइ वि दुहाविउ[6]॥३॥

४

तुहुं सो चक्कवट्टि जयसिरिहर इय अहिणंदिवि गय ते णहयर[1]।
सुहवईइ मंतें[2] आराहिवि तं करवालु करालु[3] पसाहिवि।
तरुणतरणिणिहु तरुणहुं ढोइउ पीडिवि मुट्ठिइ तेण पलोइउ।
बहुविज्जासामत्थसमग्गइ[4] मुद्धइ मुद्धयंदसोहग्गइ।

५. MB पसरियकरु; K पसरेवि करु। ६. B किसु। ७. MB तो।
३. १. MB णिवसें। २. MB °ग्गयसुरतरुवरु। ३. B तेण तेणयातणएं। ४. MB read for this *line*: लइ णिसिसु देव भुयदंडें; परबलबलदलणेण पयंडें; and add the following: एहु पाहाणखंभु जइ छिंदहि, अम्हहं हियवउ कहु साणंदहि (B आणंदहि)। ५. MB बप्प होसि। ६. K दोहाविउ।
४. १. K णरवर। २. MB मंतेणाराहिवि। ३. MB करालु करवालु। ४. MB °समत्थसामग्गइ।

और युद्धका बहाना खोजनेवाले उस घोड़ेको उसी प्रकार पकड़ लिया जैसे सिंह हरिणको पकड़ लेता है। और फिर अपना केशरसे पीला चंचल हाथ फैलाकर। फिर उसपर बैठा हुआ अपने बाहुबलसे प्रबुद्ध राजाने उसे प्रेरित किया। राजाके द्वारा लगामसे चालित कोड़ा देखकर वह घोड़ा वशमें हो गया। पुलकित शरीर विद्याधर समूहने मंगल शब्दको प्रकट करनेवाला कल-कल शब्द किया।

घत्ता—तब राजा अहिबलने उसे अतुल बलशाली राजा समझकर देवताओंके रंगकी तथा सुन्दर चन्दनसे सुभाषित अपनी चन्द्रलेखा नामकी कन्या उसे दे दी ॥२॥

३

चन्द्रलेखासे पूछकर वह चल दिया। सुखावतीके द्वारा ले जाया गया, वह पल-भरमें वहाँ गया जहाँ कि वह सीमान्त महीधर था, कि जिसके कटिबन्धपर बड़े-बड़े कल्पवृक्ष लगे हुए थे। स्वर्णके रंगवाले वे दोनों जब लताकुंजमें बैठे हुए थे तब दो विद्याधर तलवार अपने हाथमें लिये हुए आये। मानो आकाशमें सूर्य और चन्द्रमा उग आये हों। तब विनयका प्रयोग करते हुए कुबेरश्रीके पुत्र श्रीपालने मधुर वाणीमें उनसे पूछा कि—आप दोनों सुन्दर कान्तिवाले दिखाई देते हैं। बताइए आप किस कारण, किसके लिए आये हैं। उन्होंने कहा कि अपना नगर छोड़कर तथा चरण-कमलोंसे आकाश मण्डित करते हुए हम लोग आपको खोजने तथा द्वय बुद्धि और पौरुषकी परीक्षा करने आये हैं। लो-लो यह तलवार और इसे नमस्कार करो। यदि तुम पत्थरके इस खम्भेको तोड़ देते हो तो तुम विद्याधरों और मनुष्योंके ईश्वर चक्रवर्ती सम्राट् होंगे।

घत्ता—यह सुनकर तलवार अपने हाथमें लेकर कुमारने खम्भेपर आघात किया। उसकी तलवाररूपी जलधारासे वह पत्थर भी दो टुकड़े हो गया ॥३॥

४

वे दोनों विद्याधर—तुम्हीं विजयश्रीका वरण करनेवाले चक्रवर्ती हो, इस प्रकार अभिनन्दन कर चले गये। सुखावतीके मन्त्रसे आराधना कर, उस भयंकर तलवारको सिद्धकर, कुमारके लिए जो तरुण सूर्यके समान उपहारमें दी गयी उस तलवारको उसने अपनी मुट्ठीसे दबाकर देखा। हर एक विद्याओंकी सामर्थ्यसे सम्पूर्ण मुग्धजनोंके लिए सौभाग्यस्वरूप मुग्धा सुखावती

पुणु पहु णहयलेण णिउ महियलु दिट्ठउ मणुयजुयलु अमलियबलु ।
चरणरहिउ णं तवसि कुसीलउ रयणरहिउ णावइ रयणालउ ।
दूरु मुक्ककंचुउ णं कयरणु दूसहविसु णं पलयमहाघणु ।
दुरसणु छिहण्णेसिउ णं खलु पुहइपालु णं विरइयमंडलु ।
परतीरु व आयंधिरणेत्तउ कालें कालेंवासु णं चित्तउ ।
अण्णु वि णं जँउँ जगसंप्रासणु दिट्ठु महोरउ दाढाभीसणु ।
घत्ता—दिट्ठु[9] पुंछि धरिवि पुहईसरिण प्राण[10] हरंतु पमत्तउ ॥
सो विसहरु भामिवि गयणयलि महियलि झत्ति णिहित्तउ ॥४॥

५

जायउ रयण सो ज्जि हयगयघड जं[2] जिप्पंति समरि पडुपडिभड ।
अंगुलीउ अंगुलियहि दिण्णउ अण्णेक्कु वि अरिणरु अवइण्णउ ।
तेण भणिउ कवडें पणवेप्पिणु एहु डावि कुलिसमय लएप्पिणु ।
जइ तुहुं एयइं रयणइं घट्टहि तो जाणमि तिहुयणु वि पलोट्टहि ।
तो तें ताइं णिहिट्ठइं रयणइं मउलावियइं दुसीलहं णयणइं ।
सिद्धइं भणिवि णमंसिउ लोयं[6] मणिणउं वण्णिउं दिण्णविहोयं ।
अच्छिहिं अंधसहासें दिट्ठउ बेहिरहं बहिरत्तणु णट्ठउ ।
जंपिउ मूयहिं महुरालावें मुउ जीवइ सिरिवालपहावें ।
घत्ता—परियाणिवि गुणगणु हरिसिएण कुवलयच्छि कुवलयभुय ॥
सिरिसेणें तहु सिरिउरवइणा वीयसोय दिण्णी सुय ॥५॥

६

विजयणयरि जसकिसलयकंदें कित्तिमई वरकित्तिणरिंदें ।
पुणु धण्णउरि धणाहिवराएं विमलसेण ढोइय अणुराएं ।
उप्पण्णा सेणावइ घरवइ सपुरोहिय णिवणयपरिणयमइ ।
पुणु वि सुहावईइ पंहु चालिउ धूमवेउ गयणद्धि णिहालिउ ।
दससिरु मच्छरजलणुप्पायणु वीस पाणि परं[3] वीस वि लोयणु ।
हरगलगरलतमालु व कालउ भिउडिभंगभंगुरभालालउ ।
कण्णकडुयवयणाइं भणंतें णारिवराइं तणु व गणंतें ।
पच्चारिय रणि तेण सुहावइ मेल्लि मेल्लि सिरिवालु रसावइ ।
मा महु अग्गइ धरहि सरासणु मा वच्चहि हयासि जमसासणु ।

५. MB मयरालउ । ६. MB कालपासु । ७. M जमु । ८. MB °संपासणु । ९. दिट्ठु पुच्छे; B दिट्ठु पुच्छि । १०. MB पाण ।

५. १. MB सो ज्जि रयणु । २. MBK जे । ३. MB दावि । ४. MB ताम्व णिहट्टइं । ५. MB मुणिवि । ६. MB लोयइं । ७. MB दिण्णविहोयइं । ८. MB °सहासहिं । ९. बहिरंतहि । १०. MB कामलच्छि कोमलभुय ।

६. १. B णिउ । २. MB मच्छउ; T मच्छरजलण° । ३. MBK परं । ४. MB °वराइय तणुव गणंतें ।

फिर नभतलसे ले गयी। फिर उसने धरती-तल और अमलिन बलवाला एक युगल पुरुष देखा। जो पैरोंसे रहित कुशल तपस्वीकी तरह था। जैसे रत्नोंसे रहित समुद्र हो। मानो जिसने अपना कवच छोड़ दिया है, ऐसा युद्ध करनेवाला योद्धा हो। मानो असह्य विषवाला प्रलयित महाघन हो, मानो दूसरोंके दोष देखनेवाला दो जिह्वावाला दुष्ट हो, मानो जिसने मण्डलकी रचना की हो ऐसा राजा हो। जो शत्रुके तीरकी तरह लाल-लाल नेत्रवाला है जो मानो कालके द्वारा कालपाशकी तरह फेंका गया है, जो मानो दूसरा यम है, इस संसारको निगलनेके लिए ऐसा दहाड़ोंसे भयंकर महानाग उसने देखा।

घत्ता—उस पृथ्वीश्वरने प्राण हरनेवाले उस साँपको उसकी मजबूत पूँछ पकड़कर आकाश-तलमें घुमाकर शीघ्र ही पृथ्वी-तलपर पटक दिया ॥४॥

५

वही सर्प असु और गजघण्टारूपी रत्न हो गया। जिससे युद्धमें चतुर शत्रु-योद्धा जीते जाते हैं। अंगुलीमें अँगूठी पहना दी गयी। एक और शत्रु पुरुष वहाँ अवतीर्ण हुआ। उसने कपटसे प्रणाम कर कहा कि यदि आप इस वज्रमय मुद्राको लेकर इन रत्नोंको नष्ट कर दो तो मैं समझूँगा कि तुम त्रिभुवनको उलट-पुलट सकते हो तब उसने उन रत्नोंको नष्ट कर दिया। उससे दुर्जनोंके नेत्र बन्द हो गये। लोगोंने रत्नसिद्ध हुए कहकर नमस्कार किया। और जिन्हें ऐश्वर्य धन दिया गया है, ऐसे उन लोगोंने उसे माना और उसकी प्रशंसा की। हजारों लोग आँखोंसे देखने लगे, बहरेका बहरापन दूर हुआ, गूँगे लोग सुन्दर आलापमें बोलने लगे, मृत व्यक्ति श्रीपालके प्रतापसे जीवित हो उठा।

घत्ता—उसके गुणगानको देखकर श्रीपुरके स्वामी राजा श्रीशयन हर्षित होकर कमलके समान नेत्रों और हाथोंवाली अपनी वीतशोका नामकी लड़की उसे दे दी ॥५॥

६

विजयनगरमें यशरूपी कोंपलका अंकुर यशकीर्ति अंकुर, वरकीर्ति राजाने कीर्तिमती कन्या और धान्यपुरके धनादित राजाने अनुरागसे विमलसेना कन्या उपहारमें दी। उसे राजनीति-विज्ञानमें परिपक्व मति पुरोहितके साथ सेनापति और गृहपति भी प्राप्त हुए। सुखावती फिर भी पतिको ले चली। उसने आकाशमें फिर धूमवेगको देखा। दस सिरोंवाला ईर्ष्याकी ज्वाला उत्पन्न करता हुआ, बीस हाथ और बीस आँखवाला, शिवके गलेके विष और तमालकी तरह काला, भौंहकी वक्रतासे युक्त भालवाला, कानोंको कटु लगनेवाले वचनोंको बोलते हुए उस स्त्रीने श्रीपाल और सुखावतीको तिनकेके समान समझते हुए युद्धके लिए ललकारा और कहा कि हे रसावति ! तू श्रीपालको छोड़-छोड़। मेरे सामने धनुष धारण मत कर। हे हताश, तू यमके शासनसे भी नहीं बच सकती।

घत्ता—जसु हियवइ मडहंकारु णवि हलि महुं हासउ दिज्जइ ॥
रक्खिज्जइ पई वि महेलियइ सो किह संढु रमिज्जइ ॥६॥

७

चवइ किसोयरि एउं ण जुत्तउं रे रे धूमवेय पइं वुत्तउं ।
सप्पमग्गु जइ सप्पु जि वुज्झइ खयरें सहुं जइ खयरु जि जुज्झइ ।
एहु धरायरु तुहुं गयणायरु वज्जिवि विज्जउं पसरहि णियँयरु ।
जइ तुह एहु किं पि आसंकइ विवरीयँणणु पाउ वि कंपेइ ।
जइ तुहुं ण मरहि एयहु भुयबलि तो हउं पइंसउं जलियमहाणलि ।
खल दलँवट्टिवि हरिसें णच्चमि वइरिमारि हउं णारि ण वुच्चमि ।
आउ आउ णियणाहु ण मेल्लमि तिक्खतिसूलें पइं उरि सल्लमि ।
एम चवंति तेण सा घाइय करवालेण दुलंघ दुहाइय ।

घत्ता—ता जायउ बिण्णि सुहावइउ उक्खयँखग्गविहत्थउ ॥
हणु हणु पभणंतिउ हुंकरिवि थक्कउ जुज्झसमत्थउ ॥७॥

८

अक्कु वि सक्कु वि चित्ति चवक्कइ सुहडु हणंतु ण णिविसु वि थक्कइ ।
दूण दूण वड्ढिय संजायउ कण्णउ कण्णावेस जायउ ।
वेढिउ धूमवेउ चउपासहिं आहउ जिगिजिगंत णिस्तिसहिं ।
विप्फुरंतु जयसिरिउक्कंठिउ सो वि जाम बिहिं रूवहिं संठिउ ।
ता वुत्तउ णिवेण मा घायहि बहुय होंति रिउ कज्जु विवेयहि ।
अण्णु वि मुइ मइं कहिं मि वणंतरि आवेज्जसु पुणु जित्तइ संगरि ।
एक्कहियय होएप्पिणु भंडहि अरिसिरकमलइं खग्गें खंडहि ।
ता मुद्धइ पिउ घल्लिउ महिहरि थिउ लंबियतणु कक्करतरुवरि ।
दूरु णिरुद्धचंडकिरणायवि बाहहिं लंबमाणु तहिं पायवि ।
दिट्ठउ विज्जाहरिइ णरेसरु णं गुणि संधिउ मयरद्धयसरु ।

घत्ता—तं पेक्खिवि वम्महबाणहय सीमंतिणि तहिं ढुक्की ॥
जंपइ पयडइं विब्भाडुयइं कुलमज्जायइ मुक्की ॥८॥

---

७. १. MB अजुत्तउं । २. MB मयणेसरु । ३. MB णियकरु । ४. MB विवरीयायणु । ५. MBK वंकइ । ६. MB पइसमि । ७. MB दलवट्टमि । ८. MB पेल्लमि । ९. MB लवंति । १०. MB संघाइय । ११. MB दुहाविय । १२. MB उग्गय° ।

८. १. MB चमक्कइ । २. MBT विहुअंसहिं । ३. MBK कज्ज । ४. MB वित्तइ । ५. MB संठिउ । ६. MB °मज्जायपमुक्की ।

घत्ता—जिसके हृदयमें योद्धाका अहंकार नहीं है। मुझे हँसी आती है कि वह तुम महिला द्वारा रखा जाता है। वह तुम्हारे द्वारा कैसे रमण किया जायेगा ॥६॥

७

वह कृशोदरी सुखावती कहती है कि हे धूमवेग ! जो तुमने कहा वह ठीक नहीं है। साँपकी मारको साँप ही जानता है। यदि विद्याधरके साथ विद्याधर लड़ता है तो यह ठीक है। यह धरतीका निवासी है और तुम आकाशचारी। इसलिए विद्या छोड़कर तुम अपना हाथ फैलाओ। यदि यह तुमसे कुछ भी आशंका करता है, और उलटा मुँह करके थोड़ा भी काँपता है, यदि तुम इसके भुजबलसे नहीं मरते तो मैं जलती आगमें प्रवेश कर जाऊँगी। हे दुष्ट, तुझे चकनाचूर कर मैं हर्षसे नाचूँगी। शत्रुको मारनेवाली मैं कहती हूँ कि मैं शत्रुओंको मारनेवाली हूँ। आओ-आओ मैं अपने स्वामीको नहीं छोड़ती। तीखे त्रिशूलसे तुम्हारे छातीके शरीरको छेद दूँगी। ऐसा कहकर धूमवेगने आक्रमण किया और तलवारसे अलंध्य दो टुकड़े कर दिये।

घत्ता—तब जिनके हाथमें उठी हुई तलवार है ऐसी सुखावती दो हो गयी। और मारो-मारो कहती हुई युद्धमें समर्थ वह स्थित हो गयी ॥७॥

८

उसे देखकर सूर्य और इन्द्र भी अपने मनमें चौंक गये। वह सुभट भी मारता हुआ एक पलके लिए नहीं ताकता। वह कन्या भी दूनी-दूनी बढ़ती गयी। कन्यारूपमें उत्पन्न उस युद्धमें चमकती हुई तलवारोंसे धूमवेग चारों ओरसे घिर गया। तब विजयश्रीके लिए उत्कण्ठित, फड़कता हुआ, वह भी जब दो रूपोंमें स्थित हो गया तो राजा श्रीपालने कहा कि तुम आक्रमण मत करो। बहुतसे शत्रु पैदा हो जायेंगे। अपने कामका विचार करो। किसी वनान्तरमें मुझे छोड़ दो, युद्ध जीतनेपर फिर आ जाना। एक हृदय होकर तुम लड़ो। और शत्रुके सिर कमलोंको तलवारसे खण्डित करो। तब उस मुग्धाने प्रियको पहाड़पर रख दिया। वह भी रुककर वृक्षके नीचे अपना शरीर लम्बा करके लेट गया। जिसमें दूरसे सूर्यके प्रतापको रोक दिया गया है वृक्षके नीचे हाथोंसे लम्बे होते हुए राजा श्रीपालको उस विद्याधरीने देखा। मानो कामदेवने अपनी प्रत्यंचाका सन्धान कर लिया हो।

घत्ता—यह देखकर कामदेवके बाणोंसे आहत एक सीमन्तिनी वहाँ पहुँची। कुलमर्यादासे मुक्त वह स्पष्ट चापलूसीके शब्दोंमें बोली ॥८॥

९

भो भो पुरिससीह दुहसल्लिउ   एत्थु केण तुहुं आणिवि घल्लिउ ।
सुहव कह व जइ मुयहि महीरुहु   तो णियडहि णिरुत्तु हेट्ठामुहु ।
हड्डइं कसमसंति[1] भज्जंतइं   अट्ठ वि अंगइं पलयहु जंतइं ।
मा उप्पेक्खहि छणचंदाणण   भो पत्थिवपउमाणण माणण ।
इच्छ इच्छ मइं पइं ण पयारमि   घोरहु कंतारहु उत्तारमि ।
भणइ[2] कुमारवीरु किं खिज्जहि   परपुरिसहु मणु देंति ण लज्जहि ।
वर[3] एत्थु जि तरुसाहहि सुक्खेंमि[4]   णउ परघरिणिहि वयणु णिरिक्खमि ।
वर णक्खाइं सिलायलि भग्गइं   णउ परणारीउरयलि लग्गइं ।
दंतपंति वर जाउ दिसंतरि   मा खुप्पउ परवहुबिंबाहरि ।
केसभारु वर वाएं[5] णिज्जउ   मा परपणयणीहिं कड्डिज्जउ ।
वच्छत्थलु वर पक्खिहिं खज्जउ   मा परतृयं[6]थणेहिं पेल्लिज्जउ ।

घत्ता—णयणइं [7]घोलंति णिवारियाइं हियवउ जाइ वियारहु ॥
संताउ पवड्ढइ रयणिदिणु तित्ति ण पूरइ जारहु ॥९॥

१०

गेह[1]दुवारि णिरोहु करेसइ   पिसुणु को वि संगहणु धरेसइ ।
लहु[2] आलिंगिवि मुक्क[3]णिबंधणु   लहु उट्ठइ संवरइ[4] पइंधणु ।
आसंकियमणु किं किर कीलइ   दुज्जसु[5] धूमें अप्पउ णीलइ ।
अण्णु अण्णु जइ काइ वि मंतइ   तो परयारिउ णियमणि चिंतइ ।
एयहिं सविवेयहिं हउं जाणिउ   एवहिं कहिं वच्चमि संदाणिउ ।
इहभवपरभवदुण्णयगारउ   पर[6]तृयरमणु सुट्ठु विरुयारउ ।
जाहि[7] ण इच्छमि परघरसामिणि   उव्वसि जइ[8] वि रंभ सुरकामिणि ।
रमणीयइ पररमणालुद्धइ   तं णिसुणिवि णहणारिइ कुद्धइ ।
णरणाहें पियसहि वणि मेल्लिय   साहिसाह सा छिंदिवि घल्लिय ।

घत्ता—थरहरियपाणिपयसिरकमलु विहुरयालि सुहजणणियइ ॥
णिवडंतउ धरिउ सइं[9] मुयहिं जक्खइ चिरभवजणणिइ ॥१०॥

---

९. १. M कसमसत्ति । २. B omits this line । ३. B omits this foot । ४. M अक्खमि । ५. MB वायइ । ६. MB परतिय । ७. MB घोलंत; T घोलंति ।

१०. १. MB गेहि दुवारि । २. MB लइ । ३. MB मुक्कु । ४. M संवरियउ; B संवरिउ । ५. MB दुज्जस । ६. MB परतिय° । ७. MB जहि । ८. MB रंभ जइ वि । ९. M सयंमुयहिं; B सयंमुवहि ।

९

हे पुरुष श्रेष्ठ ! दुःखसे प्रेरित तुम्हें यहाँ किसने लाकर डाल दिया। हे सुन्दर ! अगर इसी तरह वृक्षसे तुम छोड़ दिये जाओ तो तुम नीचा मुँह किये हुए निश्चय ही गिर पड़ोगे। कसमसाती तुम्हारी हड्डियाँ टूट जायेंगी, सम्पूर्ण अंग चकनाचूर हो जायेंगे। राजलक्ष्मीको माननेवाले हे राजा, तुम मुझ चन्द्रमुखीको उपेक्षा न करो। तुम मुझे चाहो-चाहो, मैं तुम्हें धोखा न दूँगी और इस भयानक जंगलसे उद्धार करूँगी। तब वह कुमार बोला कि तुम खिन्न क्यों होती हो। परपुरुषको अपना मन देते हुए शर्म नहीं आती। ये अच्छा है कि 'मैं' इस कल्पवृक्षकी डालपर ही सूख जाऊँ। परस्त्रीका मुख न देखूँगा। मेरे अंग चट्टानपर नष्ट हो जायें, पर वे परस्त्रीके उरस्थलमें न लगेंगे। अच्छा है मेरे दाँतोंकी पंक्ति नष्ट हो जाये, वह दूसरेकी स्त्रीके बिम्बाधरोंको न काटे। अच्छा है केशभाग नष्ट हो जायें, पर वे दूसरेकी प्रेमिकाओं द्वारा न खींचे जायें। अच्छा है इस वक्षस्थलको पक्षी खा जायें, लेकिन दूसरोंकी स्त्रियोंके स्तनोंसे यह न रगड़ा जाये।

घत्ता—निवारण किये हुए भी नेत्र हिलते रहते हैं। हृदय-विकारको प्राप्त होता है। और रातदिन सन्ताप बढ़ता रहता है। किन्तु दुष्ट प्रेमीकी तृप्ति पूरी नहीं होती ॥९॥

१०

वह गृहद्वारको निरुद्ध करता है और दुष्ट किसी पुंश्चल जोड़ेको पकड़ता है। ऐसा वह शीघ्र उठता है कि आलिंगन करके कण्ठश्लेष छोड़ता है। वह शीघ्र उठता है और अपनी धोती पहनता है। इस प्रकार आशंकित मनवाला वह क्या क्रीड़ा करता है, केवल अपयशके धुएँसे अपनेको कलंकित करता है। और वह यदि किसी दूसरेसे मन्त्रणा करता है तो परस्त्री लम्पट अपने मनमें विचार करता है तो वह कि इन विवेकशील लोगों द्वारा मैं जान लिया गया हूँ। इस समय अब 'मैं' किसके सहारे बचूँ ? इस प्रकार परस्त्रीका रमण इस लोक और परलोकमें दुर्नय करनेवाला तथा अत्यन्त विद्रूप है। यदि परघरकी स्वामिनी, रम्भा, उर्वशी और देवबाला भी हो तब भी मैं उसे पसन्द नहीं करता। यह सुनकर दूसरेके साथ रमण करनेवाली उस विद्याधरी स्त्रीने क्रुद्ध होकर श्रीपालके साथ प्रिय सखीको वनमें भेज दिया, और पेड़की डाल काटकर ऊपर डाल दी।

घत्ता—जिसके हाथ-पैर और सिररूपी कमल थरथर काँप रहा है, ऐसे उस गिरते राजाको संकटकालमें सुरभवकी पुरजनीने अपने हाथोंमें ग्रहण कर लिया ॥१०॥

११

वइसारिउ सोवण्णसिलायलि भणिउं णिसुणि हुई अक्खडुं कुलि ।
हउं तुह मायं पुत्त पोमावइ पुव्वजम्मि होंती पाडलगइ ।
एम्व चवेप्पिणु णेहपयासें बालु पसाहिउ करसंफासें ।
सुक्खंतण्हणिद्दालसु णट्ठउ तणउ पवुत्तु ताइ संतुट्ठउ ।
फुरियविविहमणिकिरणणिरंतरि पइसहि गिरि गुहविवरब्भंतरि ।
तं णिसुणिवि सो तेत्थु पइट्ठउ तावेत्तहि संगामि पणट्ठउ ।
धूमवेउ सज्झियसरजालहि विज्जाछेउ करंतिहि बालहि ।
पुणु उप्पण्णु वियप्पु विहीसरु जिह देविइ उद्धरिउ णिहीसरु ।
गय णियवासहु वीणालाविणि एत्तहि राउ रायचूडामणि ।

घत्ता—पइसंतु विसंठुलि विवरवहि सलिलमहाद्रहि पडियउ ॥
तहिं जंतु तरंतु सिलामयहु खंभहु उप्परि चडियउ ॥११॥

१२

तावत्थइरि सूरु संपत्तउ णं दिणराएं झेंदुउ घित्तउ ।
सहइ जंतु वरुणासालाणिहि मणि व पडंतु महण्णवखाणिहि ।
कुंकुमकुसुमामेलु व रत्तउ णं चउपहर रुहिररसलित्तउ ।
णं णवदलु णहरुक्खहु लहसियउ रत्तहलु व दिसतरुणिइ हसियउ ।
भाणुबिंबु किरणावलिजडियउ उग्गत्तेण अहोगइवडियउ ।
मंदतमालणीलि पसरियतमि तहि विवरंतरि रयणिसमागमि ।
णक्कचक्कभयपसरविसण्णउं णीलसिलायलखंभि णिसण्णउं ।
सिरिअरहंतसिद्ध आयरियहुं उज्झायहुं साहुहुं कयकिरियहुं ।
पंचहुं संचियसम्मयदिट्ठिहिं सुयरइ पहुचरणइं परमेट्ठिहिं ।

घत्ता—असियाउसाइं पंचक्खरइं झायंतहु साणंदइं ॥
चोरारिमारिसिहिपाणियइं उवसमंति मुग्गेवंदइं ॥१२॥

१३

ताम पहाइ कालि रवि उग्गउ णं महिउयरु वियारिवि णिग्गउ ।
णीरु तरेप्पिणु तेण तुरंतें तीरि परिट्ठिय तहिं जि भमंतें ।
राएं णयणाणंदजणेरी दिट्ठी पडिम जिणिंदहु केरी ।
णिव्वियार णिग्गंथ मणोहर पहरणवज्जिय ओलंबियकर ।
लक्खणलक्खुवलक्खियदेही हउं सा भणमि अहिंसा जेही ।
हउं सा भणमि कुहिणि अपवग्गहु कढिणमुयग्गल णारयमग्गहु ।

११. १. MB पुत्त माय । २. B °तिण्ह° । ३. B पइट्ठउ । ४. B धूमकेउ । ५. MB °महद्दहि । ६. MB तुरंतु । ७. T विसंकलि ।
१२. १ MB दिसतरुणिइ । २. MB °गइपडियउ । ३. MB °सिलायलि । ४. MB मिग° ।
१३. १. MBK पहायकालि । २. MB अववग्गहु ।

११

उसे स्वर्ण सिंहासनपर बैठाया, उसने कहा—सुनो, यक्ष कुलमें उत्पन्न हुई मैं पद्मावती, हे पुत्र! तुम्हारी हंसकी तरह चलनेवाली तुम्हारी माता थी। यह कहकर स्नेहको प्रकट करनेवाले हाथके स्पर्शसे बालकको सज्जित किया। उसकी भूख, निद्रा और आलस्य नष्ट हो गया। उस सन्तुष्ट बालकसे उसने कहा—विविध प्रकारके किरणोंसे भरपूर गिरिगुहाके विवरमें तुम प्रवेश करो। यह सुनकर राजा वहाँ गया। इतनेमें यहाँ संग्रामसे धूमवेग भाग खड़ा हुआ। शरजालको सज्जित करती हुई उसके लिए दैवी वाणी हुई कि किस प्रकार उस निधीश्वरका उद्धार हुआ। वीणाके समान आलाप करनेवाली वह देवी अपने घर चली गयी। यहाँ वह राजश्रेष्ठ राजा—

घत्ता—उस ऊँचे-नीचे विवरमें प्रवेश करते हुए एक महासरोवरके जलमें गिर पड़ा। उसमें जाते हुए और तिरते हुए शिलासे बने खम्भेपर चढ़ गया ॥११॥

१२

इतनेमें सूर्य अस्ताचलपर पहुँच गया। मानो दिनराज द्वारा फेंकी गयी गेंद पश्चिम दिशाकी परिधिमें जाती हुई शोभित हो रही हो। या महासमुद्रकी खदानमें पड़े हुए मणिकी तरह वह कुंकुम और फूलोंके समूहकी तरह रक्त है। मानो रक्तरूपी रससे लाल चतुष्प्रहर है। मानो आकाशरूपी वृक्षसे नवदल गिर गया है। मानो दिशारूपी युवतीने लाल फलको खा लिया है। किरणावलीसे विजड़ित सूर्यका वह बिम्ब मानो उग्रताके कारण अधोगतिमें पड़ गया है। स्थूल तमाल वृक्षोंसे नीले, जिसमें रत्नोंका समागम है ऐसे विवरके भीतर कि जिसमें अन्धकार फैल रहा है। श्रीपाल नील-शिलातलके खम्भेपर बैठा हुआ, मगर समूहके भयके प्रतारसे उदास होकर श्री अरहन्त, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और आचरणनिष्ठ साधुओं, पाँचों सम्यग्दृष्टिको संचित करनेवाले परमेष्ठियोंके प्रभु चरणोंका ध्यान करता है।

घत्ता—पाँच अक्षरोंवाले णमोकार मन्त्रका आनन्दसे ध्यान करनेवालेके सम्मुख चोर, शत्रु, महामारी, आग, पानी और पशु, जलचर समूह सानन्द शान्त हो जाते हैं ॥१२॥

१३

इतनेमें सवेरे सूर्योदय हुआ, मानो धरतीका उदर विदारित करके निकला हो। उस राजाने तुरन्त पानीमें तैरकर घूमते हुए, किनारे पर स्थित नेत्रोंको आनन्द देनेवाली, जिनेन्द्र भगवान्की प्रतिमा देखी। निर्विकार निर्ग्रन्थ सुन्दर, प्रहरणोंसे रहित, हाथोंका सहारा लिये हुए जो लाखों लक्षणोंसे उपलक्षित थी। मैं (कवि) कहता हूँ कि वह अहिंसाके समान थी। मैं कहता हूँ कि वह अपवर्गकी पगडण्डी थी, और नरकमार्गके लिए कठिन भुजारूपी अर्गला थी। स्वामी

सा णाहिं सरसलिलहिं सिंचिय[3] वियसियधवलहिं कमलहिं अंचिय।
पुणु[4] जिणतणुसिरि संथुय भत्तिइ सव्वभूयगणविरइयमेत्तिइ।
भ[5]इपसत्थइत्थगुणराइय ताम तहिं जि जक्खिणि संप्राइय[6]।

घत्ता—संभासिवि णिहिलणिहीसरिइ हरिसुप्फुल्लियणेत्तउ ॥
वइसारिवि[7] पट्टि पयाहिवइ मंगलकलसिहिं सित्तउ ॥१३॥

१४

भूसणपरिहाणाइं रवण्णइं[1] छत्तदंडरयणइं तहु दिण्णइं।
गयणगमण पाउयजुयलुल्लउ दिण्णउ अण्णु[2] वि जं जं भल्लउ।
ताम तहिं जि परिभमिवि समायइ रयकारण[3]संभूयकसायइ।
खइरिइ सइरिणीइ[4] पहु जोइउ पाहाणोहु णहाउ णिवाइउ[5]।
सो पडंतु सयलु वि णिद्दलियउ दिव्वछत्तरयणें पडिखलियउ।
पुप्फयंतफणिफुक्कारियसरि मइं ण रमंतु मरउ विवरंतरि।
एम भणिवि ताए वित्थिण्णी सेलगुहादुवारि सिल दिण्णी।
णवर चंडदंडें सा खंडिय कुवलयवइणा कणु कणु खंडिय।

घत्ता—उग्घाडिवि दारु णराहिवइ पाउयजुयलें गच्छइ ॥
णहि जंतु पुंडरिंकिणिणियडि सुरमहिहरवणु पेक्खइ ॥१४॥

१५

पेच्छइ खंधावारु विमुक्कउ सत्तमु दिवसु अज्जु सो ढुक्कउ।
माइ तुहारउ लहुउ थणद्धउ मणुयवेसु[1] णावइ[2] मयरद्धउ।
तिजगबंधु महु बंधउ णीइउ एम भणिवि जलहरवहु जोइउ[3]।
वसुवालेण भणिउं किं ससहरु णं णं छत्तु[4] णं णिसिहरु।
किं दीसइ[5] णवसंझाजलहरु पक्खि को वि णं णं णिच्छउ णरु।
सोदामिणि णं णं दंडासणि तारावलि णं णं भूसणमणि।
एम वियप्पिवि राएं वुत्तउ एइ सहोयरु एहु णिरुत्तउ।
इय पलवंतहु तहिं जि पराइउ विहिणा सोक्खपुंजु णं ढोइउ[6]।
सुहिपरियणु हरिसें रोमंचिउ तं णउ माणसु जं णउ णच्चिउ।
पणविउ पहु णिलयणु[7] णिय तायहु जगतायहु पच्चक्खविहायहु।
तेहिं बिहिं वि तेण[8] जिणु पेच्छिवि भवसंसरणावत्थ[9] दुगुंछिवि।

३. MB संचिय। ४. B omits this line। ५. B omits this foot। ६. MB संपाइय।
७. T बहिसारिवि।

१४. १. M °परिहाणइं बहुवण्णइं; B °परिहाणइं वरवण्णइं। २. MB अवरु। ३. MB रइकारण[?]। ४. MB खयरिइ सइरिणियइ। ५. MB णिवायउ।

१५. १. MB मयणवेसु। २. MB णावइ। ३. MB जोयइ। ४. MBK णउ ससिहरु। ५. MBK दीसइ। ६. MB ढोइयउ। ७. MB णिउ णिलयणु। ८. MB तेण वि। ९. MB °संसारावत्थ।

भरतने उसे सरके जलसे अभिसिंचित किया, सफेद खिले हुए कमलोंसे अर्चित किया, फिर उसने जिनके शरीरकी श्रीकी भक्तिभावसे स्तुति की कि जो सब प्राणियोंसे मित्रताका भाव स्थापित करनेवाली थी। इतनेमें भद्र प्रशस्त और हस्त गुणोंसे शोभित यक्षिणी तत्काल वहाँ आयी।

घत्ता—अखिल निधियोंकी स्वामिनीने बात करके, जिसके नेत्र हर्षसे उत्फुल्ल हैं, ऐसे प्रजाधिपति भरतको वहांपर बैठाकर मंगल कलशोंसे अभिषेक किया ॥१३॥

१४

सुन्दर अलंकार, वस्त्र, छत्र और दण्ड रत्न दिये तथा आकाशमें गमन करनेवाली खड़ाउँओंकी जोड़ी दी। जो-जो सुन्दर था, वह-वह दिया। तब जिसे रतिके कारण ईर्ष्या उत्पन्न हुई है ऐसी विद्याधरी घूमती हुई वहाँ आयी। उस स्वेच्छाचारिणीने राजाको देखा और आकाशसे पत्थरका समूह गिराया। लेकिन दिव्य शत्रुरत्नसे प्रस्खलित होकर वह गिरती हुई चट्टान चूर-चूर हो गयी। मुझसे रमण नहीं करते हुए पुष्पदन्त नागकी फुंकारका जिसमें स्वर है ऐसे विवरके भीतर तुम मरो। इस प्रकार कहकर उस स्वेच्छाचारिणीने उस शेरगुहाके द्वारपर एक बड़ी चट्टान फेला दी। लेकिन उस पृथ्वीपतिने अपने प्रचण्ड-दण्डसे खण्डित करके उसके टुकड़े-टुकड़े कर दिये।

घत्ता—द्वार खोलकर राजा पादुका युगलसे जाता है। आकाशमें जाते हुए पुण्डरीकिणी नगरके निकट वह विजयार्ध पर्वतको देखता है ॥१४॥

१५

वहाँ विमुक्त स्कन्धावार देखता है कि आज वह सातवाँ दिन भी आ पहुँचा। हे माँ! तुम्हारा छोटा बेटा कामदेवके समान कामदेव नहीं आया। तीनों जगका मेरा भाई नहीं आया। ऐसा कहकर उसने आकाशकी ओर देखा। तब वसुपालने कहा—क्या यह चन्द्रमा है? क्या यह नभ-सन्ध्या मेघ दिखाई देता है? या कोई पक्षी है? नहीं-नहीं यह निश्चय ही मनुष्य है। क्या यह बिजली है? नहीं-नहीं यह रत्नदण्ड है। क्या तारावली है? नहीं-नहीं ये अलंकारोंके मणि हैं। इस प्रकार विचार कर राजा वसुपालने कहा कि यह निश्चयसे हमारा भाई आ रहा है। इस प्रकार उनके बात करते श्रीपाल वहाँ आ पहुँचा मानो विधाताने उनके लिए सुखपुंज दिया हो। सुधीजन और परिजन हर्षसे रोमांचित हो उठे। वहाँ एक भी मानव ऐसा न था जो नाचा न हो। उसे विश्वके पिता और प्रत्यक्ष विधाता—पिताके समूह—शरणमें ले जाया गया। उन्होंने स्वामीको प्रणाम किया। उन दोनोंने उसी प्रकार जिनेन्द्र भगवान्के दर्शन कर संसारमें परिभ्रमण करनेकी अवस्थाकी निन्दा की।

घत्ता—सिरिवालें गुरुगुणवालु लहिं मउलवलावियहत्थें ॥
वंदिउ परमेसरु परममुणि परमप्पउ परमत्थें ॥१५॥

१६

जेण विणासिवि घल्लिउ ईसरु पुच्छिउ देविइ सो जोईसरु ।
पुत्तु महारउ केण विहूसिउ चंदु व पवरपहाइ पयासिउ ।
पभणइ जिणु गयजम्मि किसोयरि एयहु हुयमेत्तहु सुय मायरि ।
हूई काणणि जक्खसुरेसरि बहुविब्भमविलास णं सुरसरि ।
जाणवि णंदणु अप्पणु देहें ताइ एहु पुज्जिउ बहुणेहें ।
आय सुहावइ कहिउ कुमारें एयइ रक्खिउ हउं बलसारें ।
विज्जाहरहं पयासियवसणहं मायावियहं अणेयहं पिसुणहं ।
एह मज्झु हूई विहडंतहु लग्गणवल्लरि अवडि पडंतहु ।
एह मज्झु हूई चिंतामणि कामधेणु कप्पद्दुमगोमिणि ।
एह मज्झु संजीवणि ओसहि विहुरसमुद्दणाव णिरु पियसहि ।

घत्ता—हउं एयइ रक्खिउ सुंदरिइ एयहि जीउ वि दिज्जइ ।
जसु पुत्तु कलत्तु ण मित्तु सुहि सो दुहसलिले मज्जइ ॥१६॥

१७

पइं सेहुं महु उग्गयमुहरायउ माइ माइ मेलावउ जायउ ।
जं तं एयहि तणउं विजंभिउ एयहि परबलु बलिण णिसुंभिउ ।
तं णिसुणिवि विणएं पणयंगिय सासुयाइ कुलवहु आलिंगिय ।
पुत्ति पुत्ति पइं काइं पसंसमि सिहिसिह किं रविपडिमहि दंसेमि ।
चक्कवट्टिलक्खणसंपुण्णउ पुत्तु महारउ पइं महु दिण्णउ ।
तुहुं जि एक्क महु आसाऊरी तुहुं संगरि सूराहं वि सूरी ।
जुवईमहउ हलि कहिं तेरउ कहिं पोरिसु परचीरवियारउ ।
तुह केरउ जियकरिकुंभत्थलु धणुगुणकणियउं जयउ थणत्थलु ।
महु तणयहु वम्महपासा इव तुह सुय रिउहुं कालपासा इव ।
पभणइ कण्ण पुण्णसामत्थें गिरि चुउ धरिउ धणेसरिहत्थें ।
सूलें भिण्णु ण भिज्जइ अंगउ जहिं तुह सुउ तहिं सयलु वि चंगउ ।
पुणु कुबेरलच्छिइ परिपुच्छिउ केहउं भवि सुय तहिं कम्म[10] णियच्छिउ ।

घत्ता—ता कहइ महामुणि राणियहे घोरवीरु[11] तवु तत्तउ ॥
चिरभवि दोहिं वि तुह तणुरुहहिं अणसणु किउ जिणवुत्तउ ॥१७॥

---

१६. १. MB चिरु णेहें । २. MB दुहसलिलि णिमज्जइ ।

१७. १. G सुहुं । २. MB वियंभिउ । ३. B पबलबलेण । ४. MB वेसमि । ५. M °संपण्णउ । ६. MB महु पइं । ७. B सूरहं । ८. MB धणेसर° । ९. B सूलिण । १०. MB कम्मु । ११. M घोरु वीर तव; B घोरवीर तव ।

घत्ता—श्रीपालने अपने दोनों हाथ मुकुटपर चढ़ाते हुए महान् गुणोंके पालन परममुनी परमात्मा परमेश्वरकी परमार्थ भावसे वन्दना की ॥१५॥

१६

जिन्होंने कामदेवको नष्ट करके डाल दिया है, ऐसे योगीश्वरसे माताने पूछा कि मेरे पुत्रको किसने अलंकृत किया। यह चन्द्रमाके समान महान् आभासे आलोकित क्यों है? जिनेन्द्र-भगवान् कहते हैं कि हे कृशोदरी, पूर्वजन्ममें इसके पैदा होते ही इसकी माँ मर गयी। जो जंगलमें यक्ष-देवी हुई। जो मानो गंगाकी तरह अनेक विभ्रम और विलासवाली थी। शरीरसे इसे अपना पुत्र समझकर उसने अत्यन्त स्नेहसे इसकी पूजा की। इतनेमें सुखावती आ गयी। कुमारने कहा कि—इसने अपनी शक्तिसे मेरी रक्षा की है। दुःख प्रकट करनेवाले विद्याधरों और मायावी अनेक दुष्टोंसे घूमते हुए और आपत्तियोंमें पड़ते हुए मेरी यह आधारभूत लता रही है। यह मेरे लिए चिन्तामणि, कामधेनु, कल्पवृक्षकी भूमि सिद्ध हुई है। वह मेरे लिए संजीवनी औषधि कष्टरूपी समुद्रकी नाव-जैसी है। मेरी प्रिय सखी—

घत्ता—इसने मुझे बचाया है। इसके लिए मुझे अपना जीव भी दे देना चाहिए। इस संसारमें जिसका न पुत्र, कलत्र और न सुधीजन ऐसा व्यक्ति दुःखरूपी जलमें डूब जाता है ॥१६॥

१७

तुम्हारे साथ ही मेरे मुखका राग चमक सका और हे आदरणीय, मेरा मिलाप हो सका। जो-जो है, वह सब इसकी चेष्टा है। इसीके बलसे मैंने शत्रुबलका नाश किया। यह सुनकर विनय-से प्रणतांग होती हुई कुलवधूको सासने गले लगाया और वह बोली—हे बेटी! 'मैं तुम्हारी क्या प्रशंसा करूँ। क्या मैं सूर्य प्रतिमाके लिए आगकी ज्वाला दिखाऊँ। तुमने मुझे चक्रवर्ती लक्षणोंसे सम्पूर्ण मेरा बेटा दिया। तुम्हीं एक मेरी आशा पूरी करनेवाली हो। युद्धमें तुम सूर हो। कहाँ तुम्हारी युवती सुलभ कोमलता? और कहाँ शत्रुको विदीर्ण करनेवाला पौरुष? जिसने हाथियोंके गण्डस्थलोंको जीता है ऐसा तुम्हारा स्तन युगल जो धनुषकी डोरीसे आच्छन्न धनुषकी तरह है। मेरे पुत्रके लिए कामदेवके पाशकी तरह तुम्हारी दोनों भुजाएँ शत्रुके लिए कालपाशके समान हैं। तब कन्या कहती है कि पुण्यके सामर्थ्यसे यक्षिणीने अपने हाथसे गिरते हुए पहाड़को उठा लिया। और त्रिशूलसे भेदे जानेपर भी शरीर भग्न न हुआ। हे आदरणीय! जहाँ तुम्हारा बेटा है वहाँ सब कुछ भला होता है। कुबेरलक्ष्मी फिर पूछती है कि किस कर्मसे मैंने ऐसा पुत्र और कर्म देखा।

घत्ता—तब महामुनि रानीसे कहते हैं कि पूर्वजन्ममें तुम्हारे दोनों पुत्रोंने जिनेन्द्रके द्वारा कहा गया अत्यन्त कठिन तप और अनशन किया था ॥१७॥

१८

सग्गसिहरि सुरवरसिरि भुंजिवि जिणपडिबिंबहु पुज्ज पउंजिवि ।
दिव्वु[1] देहु मेल्लेप्पिणु आया ए बिण्णि वि तुह सुय संजाया ।
वसुवालहु सिरिवालहि केरी पुण्णपवित्ति गरुयसुहगारी ।
मुणि वंदिवि सयलइं संतुट्टइं उच्छवेण णियणयरु पइट्ठइं ।
पुज्जिवि पत्तावलिविण्णासहिं चेल्लियरयणाहरणविसेसहिं ।
मुक्क सुहावइ पियपम मायइ धणुधारिणि सम पाउसछायइ ।
गय सुंदरि णियमंदिरु जामहिं वसुवालहु विवाहु कउ तामहिं ।
करपल्लवि लग्गउ रइजुत्तिहिं अट्ठोत्तरु सउ णरवइपुत्तिहिं ।
घत्ता—पुणु कहइ सुलोयण णियचरिउ सइ परिपुरिसपरंमुह[2] ॥
भरहाहिवभिच्चहु घणरवहु पुप्फयंतसोहियमुह[3] ॥१८॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे पहुसिरिपाल[4]संगमो णाम पंचतीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ ३५ ॥

संधि ॥ ३५ ॥

---

१८. १. MB दिव्वदेहु । २. M परंमुहं; B परंमुहहो । ३. M °मुहं; B °मुहहो । ४. MB °सिरिवाल° ।

१८

स्वर्गमें इन्द्रकी विभूतिका भोग कर, जिनप्रतिमाकी पूजा कर, दिव्यदेहको छोड़कर वे दोनों यहाँ आये और दोनों तुम्हारे पुत्र हुए। वसुपाल, श्रीपालकी अत्यन्त महान् शुभकारी पुण्यप्रवृत्ति-को सुनकर तथा मुनिवन्दना कर सब लोग सन्तुष्ट हुए। और उत्साहके साथ अपने नगरको चल दिये। मायासे रहित प्रियतमा सुखावती ऐसी मालूम होती थी, जैसे पावसकी छायासे इन्द्रधनुषी। जब वह सुन्दरी अपने घर गयी तब तक वसुपालका विवाह कर दिया गया। रतिसे युक्त एक सौ आठ रत्न युवतियाँ उसके कर-पल्लवसे लगीं।

घत्ता—इस प्रकार पर पुरुषसे पराङ्मुख, पुष्पदन्तके समान शोभित मुखवाली सती सुलोचना अपना चरित्र राजावर्गके अनुचर जयकुमारसे कहती है ॥१८॥

इस प्रकार त्रेसठ महापुरुषोंके गुण-अलंकारोंसे युक्त महापुराणका महाकवि भरत द्वारा अनुमत महाकाव्यमें प्रभु श्रीपाल संगम नामका पैंतीसवाँ परिच्छेद समाप्त हुआ ॥३५॥

संधि ३६

छ वि लेप्पिणु कण्णउ वरतणुवण्णउ खगहु अकंपहु सा सुय ॥
सत्तमदिणि[1] सुहमइ पत्त सुहावेंइ[2] णविय ताइ सइं सासुय ॥ ध्रुवकं ॥

१

भासिउं भद्दइ गुणजुत्तियउ पयँउ तुह सुय कुलउत्तियउ ।
होहिंति भणिवि मृगणेत्तियउ तडिवेयं गहणि णिहित्तियउ ।
संमाणहि मइं संमाणियउ एवहि तुह मंदिरु आणियउ ।
ता लच्छिइ ताउ पसाहियउ णवमालइमालावाहियउ ।
पुव्वं चिय तेत्थु परिट्ठियहिं भूगोयरेहिं उक्कंठियहिं ।
हयदइवें कहिं वि विओइयउ मायापियरेहिं वि जोइयउ ।
पहिलारउ परिणिय सेट्ठिसुय जसवइ णामें जसकंतिजुय ।
अणु अवरउ थोरथणुद्धणिउ रइकंताइयउ सुहासिणिउ ।
विरहग्गितावणीवावणउं अट्ठहिं तरुणिहिं सहुं मेलणउं ।
दिट्ठउ करंतु सो पूउ[10] ललिउ [11]गुत्तिहिं समिइहिं णं जिणु मिलिउ ।
घत्ता—जोएवि सवत्तिहि मुहुं[12] वणिउत्तिहि णीससेवि[13] दुहहणणहु ॥
ईसावसकुद्धइ तक्खणि मुद्धइ आसंचिउ घरु जणणहु ॥१॥

२

सुहवेंइयहि[1] तायहु वज्जरिउ भूगोयरभूगोयेरचरिउ[2] ।
मण्णंति ण अम्हइं खेयरइं अणुरत्तइं गुणविहियायरइं ।
मेरउ मेल्लिवि रिउ जीवहरु पहिलउ जि किराडिहि धरिउ करु ।
अविसेसविवाहें किं करमि वर[3] णिवलु कण्णावउ धेरमि ।

M has, at the commencement of this Samdhi, the following couplet in the margin :—

पुप्फयंतदिण्णउं धणुहुं सरु दिण्णउ सरु सत्ति ।
मारिउ मिच्छमयाहिवइ गुणु पुणु तिहुयणकित्ति ॥१॥

BGK do not give it.

१. १. K सत्तमे दिणे । २. B सुहामइ । ३. M एयहि । ४. MB मिग° । ५. MB परिट्ठियउ । ६. MB उक्कंठियउ । ७. MB पियरहिं विच्छोइयउ । ८. MBK पुणु । ९. MB °थद्ध° । १० MB पिउ । ११. MB गुत्तीसमीइहिं । १२. B महु । १३. M णीसेसवि ।

२. १. K °वइयइ । २. MB °भूगोयरि°; GK add second °भूगोयर° in the margin; T भूगोयरचरिउ । ३. M वरु । ४. G करउ ।

सन्धि ३६

विद्याधर राजा अकम्पनकी वह पुत्री शुभमतिवाली सुखावती, उत्तम रूपरंगवाली छहों कन्याओंके साथ सातवें दिन वहाँ पहुँची। उसने स्वयं अपनी सासको नमस्कार किया।

१

वह भद्रा बोली—"गुणोंसे युक्त तथा हरिणके समान नेत्रोंवाली ये पुत्रियाँ तुम्हारी कुल-पत्नियाँ होंगी—यह सोचकर अशनिवेग विद्याधरने इन्हें जंगलमें छिपा रखा था। मेरे द्वारा सम्मानित इनका आप सम्मान करें। इस समय मैं इन्हें तुम्हारे मन्दिरमें ले आयी हूँ।" तब कुबेरश्रीने मालती मालाओंको धारण करनेवाली उन कन्याओंका प्रसाधन किया। हतदैवने पहलेसे ही वहाँ स्थित और उत्कण्ठित इन मनुष्यनियोंसे वियोग करवा दिया, ये माता-पितासे भी विमुक्त हुईं। सबसे पहले श्रीपालने यश और कान्तिसे युक्त सेठकी यशोवती कन्यासे विवाह किया। उसके बाद दूसरी स्थूल और सघन स्तनोंवाली तथा सुमधुर बोलनेवाली रतिकान्ता आदिसे। उन आठों कन्याओंके साथ विरहाग्निके सन्तापको शान्त करनेवाला मिलाप करता हुआ वह सुन्दर प्रिय श्रीपाल, उसी प्रकार देखा गया, जिस प्रकार गुप्तियों और समितियोंसे मिले हुए जिन भगवान् देखे जाते हैं।

घत्ता—अपनी सौत वणिक् पुत्री यशस्वतीका मुख देखकर ईर्ष्याके कारण क्रुद्ध होकर और उच्छ्वास लेकर, सुखावती दुःखका हनन करनेवाले पिताके घर तत्काल चल दी ॥१॥

२

सुखावतीने मनुष्यनी यशस्वती आदिका चरित अपने पिताको बताया कि वे गुणोंके कारण आदर करनेवाले तथा अनुरक्त हम विद्याधरोंको कुछ भी नहीं मानते। उसने (श्रीपालने) शत्रुके प्राणोंका अपहरण करनेवाले मेरे हाथको छोड़कर उस किराती (यशस्वती) का हाथ पहले पकड़ा। इस अति सामान्य विवाहसे मैं क्या करूँगी? अच्छा है कि मैं अचल कन्याव्रत ग्रहण

णउ अण्णणारिरयरंजियहु आलिंगणु देवि[5] तासु प्रियहु[6] ।
पडिलवइ जणणु मुइ कलमलउ विडु[7] होइ सहावें चंचलउ ।
अण्णण्णहिं कुसुमहिं दिणु गमइ किं एक्कहि वेल्लिहि अलि रमइ ।
एत्थंतरि सिरिवालें णयरि मग्गिय मृग[8]लोयण घरि जि घरि ।
णालोयंतें पुणु जाणियउं हा पूय[9]माणुसु अवमाणियउं ।
अंईं लज्जिवि णियभवणहु गयउ किं जंतु[11] जंतु वि विरहें मयउ ।
इय चिंतिवि णहयरु एक्कु णरु पेसिउ लहु[10] लेलिएं[12] लेहधरु ।
संपत्तउ गेहु[13] अकंपणहु जिणचरणभत्तिभाविय[14]मणहु ।

घत्ता—लेहें सहुं पाहुडु ढोइवि खगभडु पडिउ खगिंदहु पायहिं ॥
तुहुं मण्णिउ सज्जणु विणिहयदुज्जणु वसुसिरिवालहिं रायहिं ॥२॥

३

तेण वि णियहत्थि णिवेइयउ आलिहियउ पत्तु पलोइयउ ।
तं सोहइ[1] वण्णइं पंतियहिं अलवंतीहिं वि पलवंतियहिं ।
कंचुइवइणाइं[2] सुणेवि सइ जं परिणिय वणिवरतणय मइ ।
तं[3] पालिय कुलपरिहा[4] सकुलि मणु पुणु तुह पुत्तिहि मुहकमलि ।
चंपयकुसुमावलिगोरियहि[5] संभरेमि सुयाहि तुहारियहि ।
जिह कढिण[6] थणत्थलु तिह पहरु[7] जिह रत्त[8] रत्तरणु तिह अहरु ।
कण्णंतु समागय णयण जिह परमारणसीला[9] बाण तिह ।
जिह मज्झु खीणु तिह विरहियणु जिह धणु गुणमंडिउ तिह जि तणु ।
जणणंकासणइ णिसण्णियइ कण्णियइ कुसुमसरंछण्णियइ[10] ।
तं णिसुणिवि णिब्भरु चिंतियउ महु णाहें माणु णियत्तियउ ।
तहि पिउणा तं जि पवोल्लियउं[11] हयगमणभेरिथलु चल्लियउं[12] ।
ताएण समउ गय कुमरि तहिं णिवसइ सुहउ वरइत्तु जहिं ।

घत्ता—संपत्तु अकंपणु सकरि ससंदणु पेच्छिवि छण्णु णहंगणु ॥
गय बिण्णि वि सायर संमुह भायर मग्गमाण आलिंगणुं[13] ॥३॥

---

५. MB देमि ण तासु । ६. MB पियहु; K पुयहु । ७. M विड । ८. MB मिगलोयणि । ९. MB पिय° । १०. MBK लइ । ११. जणु जंतु वि । १२. M ललियं । १३. MB लेहु । १४. B °भावियरणहु ।

३. १. MB साहइ । २. MB वयणाइं । ३. MB ता । ४. MB हासमले । ५. MB read for this foot : लडहंगहि मुणिमणचोरियहि । ६. M कढिणु । ७. B adds after this : महु आवइसयइं णिवारियइं, संभरमि सुयाहि तुहारियाइ । ८. B रत्तु रत्तरणु । ९. M सीहा । १०. M °सरसंणियइ; B °सरकण्णियइ; T °कण्णियइ । ११. B adds after this : णियपुत्तिहि मणु णीसल्लियउ । १२. MB add after this : तहु सद्दें तिहुयणु हल्लियउ । १३. MK आलिंगिणु ।

कर लूँ। दूसरी स्त्रियोंमें रत होकर रंजित करनेवाले उस प्रियको आलिंगन नहीं दे सकती। तब पिताने कहा—हे पुत्री, तुम ईर्ष्याजनित खेदको छोड़ो। विट स्वभावसे चंचल होते हैं। भ्रमर दूसरे-दूसरे फूलोंमें दिन गँवाता है। क्या वह एक लतामें रमण करता है? इस बीचमें श्रीपालने सुखावतीको घरों-घर ढुँढ़वाया। उसे नहीं देखते हुए वह समझ गया और अफसोस करने लगा कि मैंने अपने प्रिय मनुष्यको अपमानित किया। वह अत्यन्त लज्जित होकर अपने भवनमें गया। प्रत्येक प्राणी विरहसे पीड़ित होता है। यह विचारकर सुन्दर श्रीपालने एक लेखधर विद्याधर मनुष्यको भेजा। जिनवरके चरणोंमें भावित मन विद्याधर राजा अकम्पनके घर वह लेखधर पहुँचा।

घत्ता—लेखके साथ उपहार देकर वह विद्याधर योद्धा विद्याधर राजाके चरणोंमें पड़ गया। (और बोला) दुर्जनोंका नाश करनेवाले आप सज्जन, वसुपाल और श्रीपाल दोनों राजाओंके द्वारा मान्य हैं ॥२॥

३

उसने भी अपने हाथमें निवेदित लिखा हुआ पत्र देखा। वह पत्र नहीं बोलती हुई भी, बोलती हुई शब्दोंकी पंक्तियोंके द्वारा शोभित था। कंचुकीके वचनोंसे स्वयं सुनकर जो मैंने सेठकी कन्यासे विवाह किया है वह मैंने अपने कुलमें मर्यादाका पालन किया है। परन्तु मेरा मन, तुम्हारी पुत्रीके मुखकमलमें है। मैं तुम्हारी चम्पक कुसुमावलिके समान गोरी कन्याकी याद करता हूँ। जिस प्रकार उसके स्तनतल कठोर, उसी प्रकार उसका प्रहार। जिस प्रकार रक्तरण लाल होता है उसी प्रकार उसके अधर लाल हैं। जिस प्रकार उसके कान नेत्रों तक समागत हैं, उसी प्रकार उसके बाणोंका स्वभाव दूसरोंको मारना है। जिस प्रकार उसका मध्यभाग क्षीण है, उसी प्रकार यह विरहीजन; जिस प्रकार धनुष गुण (डोरी) से मण्डित है उसी प्रकार उसका शरीर गुणमण्डित है। पिताके निकट आसनपर बैठी हुई कामदेवके तीरोंसे घायल कन्याने यह सुनकर अपने मनमें अच्छी तरह विचार किया कि मेरे स्वामीने मान छोड़ दिया है। उसके पिता-ने भी उससे यही कहा। कूचका नगाड़ा बजाकर सेना चल दी। अपने पिताके साथ कुमारी वहाँ गयी जहाँ उसका प्रिय वर निवास करता था।

घत्ता—अपने हाथी और घोड़ोंके साथ अकम्पन वहाँ पहुँचा। नभके आँगनको आच्छन्न देखकर दोनों ही भाई आलिंगन माँगते हुए आदरपूर्वक सम्मुख आये ॥३॥

४

घरि आसीणाइं सणेहवय लहु अब्भागयपडिवत्ति कय ।
हेट्ठामुह वहु वरेण भणिय किं हूई तुहुं मलिणाणणिय ।
घणु सोहइ एक्कइ विज्जुलइ वणु सोहइ एक्कइ कोइलइ ।
इह सोहमि हउं एक्काइ पइं गुरुवयणु करेवउ तो वि पइं ।
मा रूसहि सज्जणवच्छलिइ अलिणीलकुडिलमउकोंतलिइ ।
तें वयणें रोसेंणियत्तणउं जायउं तहि रम्मु पेम्मु घणउं ।
वप्पिल संपाइय रमणवसा तडिरयतडिवेयहु तणिय ससा ।
चलणयणजुयलणिज्जियहरिणि रइकंता मयणवई तरुणि ।
पंचहुँसहासइं राणियहं परिणियइं तेण खयराणियहं ।
पुणु पच्छइ णिरुवमभोयवइ खगवइसुय णामें भोयवइ ।

घत्ता—सेणावइगहवइहयगयतियमइथवइपुरोहियजुत्तइं ॥
सज्जीवइं रयणइं रंजियणयणइं सत्त तासु संपण्णइं[10] ॥४॥

५

रोसेण सुहावइ हुंकरइ ईसाइ ण पियपुरि पइसरइ ।
सुरमणियवणियवणसिरिहि थिय भवणु रएप्पिणु सुरगिरिहि ।
घरदासिहिं जसवइरूवु किउ अण्णेक्कइ रायहु विण्णविउ ।
परमेसर वणिसुय परिहविय घरलंजियवेसें घरि थविय ।
तं णिसुणिवि णरवइ संचलिउ हरिखुरधूलीरउ णहि मिलिउ ।
पइभत्तहि झत्ति महासइहि संपत्तु णिवासु सुहावइहि ।
प्रियवयणहिं तिह तिह जंपियउ जिह जिह मणु मुद्धहि कंपियउ ।
ईसालुय पइणा उवसमिय जाइवि वणितणय ताइ णविय ।
विज्जाहरि विक्कमहरिहरिहि थिय सा वि पुंडरिंकिणिपुरिहि ।
पहरणसालहि मुहलियतवहु उप्पण्णउं चक्कु णराहिवहु ।
णवणिहिवइ जायउ चक्कवइ किं वण्णइ अम्हारिसु कुकइ ।

घत्ता—तलिमयलि रवण्णइ ससहरवण्णइ पडिवज्जिवि एक्कासणु ॥
असवइयइ राएं सहुं सपसाएं किउ सुहदुहसंभासणु ॥५॥

---

४. १. G रोसु । २. MB संपाइउ । ३. MB °वस । ४. MB सस । ५. MB चउवट्ठु° । ६. MB राणियाहं । ७. MB °राणियाहं । ८. B पुच्छइ । ९. MB णिहु° । १०. MB संपत्तइं ।

५. १. MB °रूउ । २. MB पइभत्तिहि । ३. MB पिय° । ४. B ईसालुद्ध । ५. MB जसवइ महिराएं । ६. MB सुहदुहं संभासणु ।

४

स्नेह और दयासे परिपूर्ण वे घरमें ठहरा दिये गये। शीघ्र ही उन्होंने अभ्यागतोंका अतिथि-सत्कार किया। नीचा मुख कर बैठी हुई वधूसे कुमारने कहा कि तुम्हारा मुख मलिन क्यों है? घन एक बिजलीसे शोभा पाता है, और वन कोयलसे शोभित है। यहाँ मैं शोभित हूँ तुम्हारे एकके द्वारा। तब भी मुझे गुरुजनोंसे वचन करने होते हैं। इसलिए सज्जनोंके प्रति वत्सल रखनेवाली तथा भ्रमरके समान नीले घुँघराले और कोमल बालोंवाली तुम मुझसे रूठो मत। इन शब्दोंसे उसके क्रोधका नियन्त्रण हो गया और उसका प्रेम सघन तथा सुन्दर हो उठा। इतनेमें प्रियकी वशीभूत बप्पिला आ गयी, विद्युद्रव और विद्युत्वेगकी बहन भी आ गयी। अपने चंचल नेत्रोंसे हरिनीको जीतनेवाली रतिकान्ता और मदनावती युवतियाँ भी आ गयीं। इस प्रकार उसने आठ हजार विद्याधर रानियोंसे विवाह किया। फिर बादमें उसने अनुपम भोगवाली विद्याधर पुत्री भोगवतीसे विवाह किया।

घत्ता—सेनापति, गुरुपति, अश्व-गज-स्त्री-स्थपति और पुरोहितसे युक्त तथा आँखोंको रंजित करनेवाले सात जीवित रत्न उसे प्राप्त हुए ॥४॥

५

सुखावती क्रोधसे हुँ करती है, और ईर्ष्याके कारण प्रियके नगरमें प्रवेश नहीं करती। जिसकी वनश्री देवोंके द्वारा मान्य और वर्ण्य है ऐसे सुमेरु पर्वतपर घर बनाकर वह रहने लगी। गृह-दासियोंके द्वारा यशस्वतीका रूप बना लिया गया। एक औरतने आकर राजासे निवेदन किया—"हे परमेश्वर! वणिक् कन्याका अपमान किया गया है, उसकी गृहदासीके रूपमें घरमें स्थापना की गयी है।" यह सुनकर राजा चला, अश्वोंके खुरोंकी धूल आकाशसे जा मिली। शीघ्र वह पतिभक्ता महासती सुखावतीके निवासपर पहुँचा। प्रिय शब्दोंमें वह इस प्रकार बोला कि उससे उस मुग्धाका मन काँप उठा। पतिके द्वारा ईर्ष्या करनेवाली वह शान्त कर दी गयी, उसने जाकर वणिक् कन्याको नमस्कार किया। वह विद्याधरी (सुखावती) इन्द्रके पराक्रमका हरण करनेवाली पुण्डरीकिणी नगरीमें जाकर स्थित हो गयी (रहने लगी)। जिसका तप सुफलित है ऐसे उस राजाको आयुधशालामें चक्ररत्नकी प्राप्ति हुई। वह चक्रवर्ती नौ निधियोंका स्वामी हो गया। हमारे-जैसा कुकवि उसका वर्णन कैसे कर सकता है।

घत्ता—चन्द्रमाके समान रंगवाले (सफेद) और सुन्दर तलभागमें एकासन स्वीकार कर, यशस्वतीके साथ राजाने प्रसादपूर्वक सुख-दुःखकी बातें कीं ॥५॥

६

अरि असणिवेउ चिरु मच्छरिउ मायाहएण हउं अवहरिउ ।
घल्लिउ तेहि रयणायलि विउलि हिंडिउ तहिं काणणि गिरिगुहिलि ।
गइलंघियणहयलजलहरहं दिट्ठइं कवडइं विज्जाहरहं ।
मइं रइयइं पसरियअमरिसइं अवलोइवि णाणासाहसइं ।
चलकरयललुलियसूलमुसल आरुट्ठ दुट्ठ दप्पिट्ठ खल ।
उद्दहणपयंडपलयपिहिर रिउ विज्जुमालि हरिवर खयर ।
दूसासण दुम्मुह कालमुह हरिवाहणधूमवेयपमुह ।
ए पिसुणियपिसुण मयच्छि महुं ता चवइ कंत कंतेण सहुं ।
कीरइ रिउबलमयणिम्महणु तुप्पेण समइ किं दवदहणु ।
उवसमइ खमाइ ण खलहियउं असिचावहिं जाम ण कलहियउं ।

घत्ता—पुरिसेण महंतें एत्थु जियंतें जेण दीणु ण भरिज्जइ ॥
णंदंति ण सज्जण जंति ण दुज्जण खयहु तेण किं किज्जइ ॥६॥

७

महएविइ कज्जु णियच्छियउं इय एहउ राएं इच्छियउं ।
भोयवइहि बंधतु कुलधवलु णामें हरिकेउ विसालबलु ।
अहिसिंचिवि पट्टणिबंधु कउ सेणावइ खगवइ होवि गउ ।
रणि जिणिवि णिबंधिवि सत्तु तिणा आणिय णं विसहर पवरविणा ।
सो तुइयारूढउ दंडकरु पणवंतु पलोइउ णिवेण णरु ।
बहलंसुजलोल्लियणेत्तियहिं विलवंतिहिं खेयरपुत्तियहिं ।
णियणाहहु दीणवयणु लविउ बहिणिहिं बंधवउलु मेल्लविउ ।
सयल वि ते परिवड्ढियकिवहु चरणारविंद णिवडिय णिवहु ।
राएं कारुण्णु ताहं करिवि पेसिय देसहु अब्भुद्धरिवि ।

घत्ता—महियलु पालिज्जइ मग्गिउ दिज्जइ पणविज्जइ जिणयंदहु ॥
पयवडिउ ण हम्मइ मग्गें गम्मइ एउ चरित्तु णरिंदहु ॥७॥

---

६. १. MB रययालिइ तहि । २. MB °पलयरहं । ३. MBK ॑तुलिय° । ४. MK पलयमिहिर; B मलयमिहर; G पलयपिहिर but originally पलयमिहिर which is corrected to पिहिर by yellow pigment । ५. MB दूसह । ६. MB तिम्महणु ।

७. १. B पुच्छियउ । २. MB बंधउ । ३. MB होइ । ४. MB मेलाविउ । ५. MB चरणारविंदु । ६. B पाविज्जइ । ७. MB जिणइंदहु ।

६

पहले अशनिवेग मुझसे ईर्ष्या रखता था। मायावी अश्वके द्वारा मेरा अपहरण किया गया। मुझे विजयार्ध पर्वतपर छोड़ दिया गया। मैं उस गम्भीर जंगलमें घूमा। फिर मैंने अपनी गतिसे आकाशतल और मेघोंका अतिक्रमण करनेवाले विद्याधरोंके छल-कपट देखे। मैंने ईर्ष्याजनक कितने ही साहसी कार्य किये। उन्हें देखकर, जो अपने चंचल हाथोंमें चंचल हल और मूसल घुमा रहे हैं, ऐसे वे गर्वीले दुष्टजन अप्रसन्न हो उठे। जलानेमें प्रचण्ड प्रलयकालके सूर्यके समान, शत्रु विद्युद्‌माली और अश्ववेग विद्याधर, दुःशासन, दुर्मुख, कालमुख, हरिवाहन और धूमवेग प्रमुख, दुष्टोंके लिए भी दुष्ट ये मेरे दुश्मन हैं (हे मृगनयनी)। तब प्रिया अपने प्रियसे कहती है—शत्रुके बल और मदका दमन किया जाता है क्या घीसे दावानलकी ज्वाला शान्त होती है। जबतक तलवार और धनुषसे न लड़ा जाये, तबतक दुष्ट हृदय क्षमासे शान्त नहीं होता।

घत्ता—इस संसारमें जीवित रहते हुए जिस महापुरुषने दीनका उद्धार नहीं किया, जिससे सज्जन आनन्दमें नहीं हुए और दुर्जन विनाशको प्राप्त नहीं होते, उससे क्या किया जाये (वह किसी कामका नहीं है) ॥६॥

७

महादेवीने कार्य निश्चित किया। राजाने भी इस प्रकार उसकी इच्छा की। भोगावतीको कुलश्रेष्ठ विशाल बलवाले हरिकेतु नामक भाईका अभिषेक कर पट्ट बाँध दिया। वह विद्याधर राजा सेनापति होकर चला गया। वह शत्रुओंको जीतकर और बाँधकर ले आया मानो गरुड़ साँपोंको पकड़कर लाया हो। अश्वपर आरूढ़, हाथमें दण्ड लिये हुए और प्रणाम करते हुए उन मनुष्योंको राजाने देखा। जिनके नेत्र आँसुओंकी प्रचुरताके कारण आर्द्र है ऐसी विलाप करती हुई विद्याधर पुत्रियोंने अपने स्वामीसे दीन शब्द कहे, और इस प्रकार बहनोंने अपने बन्धु समूहको मुक्त करा दिया। वे सबके सब बढ़ रही कृपासे युक्त राजाके चरणाग्रमें गिर पड़े। राजाने उनपर करुणा कर और उनका उद्धार कर अपने-अपने दिशोंमें भेज दिया।

घत्ता—महीतलका पालन किया जाये, याचकको दान दिया जाये, जिनेन्द्रके चरणोंमें प्रणाम किया जाये, पैरोंमें पड़े हुए व्यक्तिको न मारा जाये, और अच्छे मार्गपर चला जाये, राजाओंका यही चरित्र है ॥७॥

८

चउरासीलक्खइं कुंजराहं तेत्तिय सहसइं रहवराहं[1] ।
छण्णवइ सहासइं[3] राणियाहं बत्तीस णिवेहं[4] संताणियहं ।
सोलहसहसइं[5] सिद्धहं सुरहं[6] आणायराहं पंजलियराहं ।
घरि चोद्दह रयणइं णव वि णिहि महि एयछत्त अणुकूलवहि[7] ।
सिरिपालहु पुण्णु[8] पवित्थरिउं जणु वण्णइ पुव्वभवायरिउं ।
जं णयरायरउप्पण्णु धणु तं जसवइ पइसारइ भवणु ।
ता सकलुसु चवित्र सुहावइए लुद्धइ संचियउ जसोवइए ।
वसु पउ वि ण वच्चइ मरणदिणे एक्केण जि भीसणि पेयवणे ।
डज्झेवउं सहुं विहिं कप्पडेहिं[9] किं पुत्तकलत्तहिं लंपडेहिं[10] ।

घत्ता—ता मंति[11] भासिउं गुज्झु पयासिउं एवमाइ मा भासहि ॥
जसवइयहि केरी तिहुयणसारी सीलवित्ति मा दूसहि ॥८॥

९

जसवइकुच्छिहि[1] जिणु संभविही जसवइयहि होही परमदिही ।
जसवइयहि जसु महियलि भमिही जसवइयहि पय[2] इंदु वि णविही ।
परियाणिवि दिव्वमुणिंदु[3] मुणि छम्मासहिं होही एत्थु गुणि ।
देविउ पेसणसंभाइयउ सिरिहिरिदिहिकित्तउ आइयउ ।
वसुहार पडिय घरंप्रंगणइ[4] सुर मिलिय अणेय णहंगणइ ।
हरि करि रवि जलणरासि जलिय दिट्ठी सोलह सिविणावलिय ।
थिउ चंदपुरंदरथुयचलणु[5] जिणु देविहि देहइ कयकलुणु ।
सा सुंदरि णविय सुरासुरहिं[6] भावणवंतरहिं सविसहरहिं[7] ।
तहिं अवसरि माणमरट्टु चुउ मणि धम्माणंदु अणंतु हुउ ।
आवेप्पिणु णिम्मच्छरमइइ जसवइ सइं णविय सुहावइइ ।
दिसं[8] कवण सुरासहि अणुहरइ किं अवरहि रवि उग्गउं करइ ।
का पुज्ज णारि पइं माइ[9] विणु अण्णाइ उयरि किं धरिउ जिणु ।

घत्ता—अमुणियमंबंधइ चिरु रोसंधइ फरुसक्खरु जं जंपियउं[10] ॥
तं अमरं[11]पियारिइ खमहि भडारिइ मइं बालइ दुक्किउ कियउं[12] ॥९॥

---

८. १. M तेत्तियइं जि लक्खइं संदणाहं; B omits this foot; K तेत्तियइं सहासइं रहवराहं । २. MB add after this : तहु अत्थि सुट्ठु संदणवराहं । ३. B महस । ४. MB सहस संताणियाहं । ५. B °सहासइं । ६. MB सुराहं । ७. MB अणुकूलविहि; K °वहि but corrects it to विहि । ८. MB पुण्ण । ९. MBK कप्पडहिं । १०. MBK लंपडहिं । ११. MB मंतिहि ।

९. १. MB जसवइहि कुच्छि । २. MB पयइं वि इंदु णविही । ३. MBT °मुणिंद° । ४. MB घरपंगणइ । ५. MBK चंद° । ६. MB सुरासुरेहिं । ७. MB सविसहरेहिं । ८. MB दिसि कम्वण । ९. MB मुएवि अण्णु । १०. MB जंपिउ । ११. MB अरुह° । १२. MB किउ ।

८

चौरासी लाख हाथी, तेंतीस हजार श्रेष्ठ रथ, छियानबे हजार रानियाँ, कुल-परम्पराके बत्तीस हजार राजा, आज्ञाकारी और हाथ जोड़े हुए सोलह हजार देव उसे सिद्ध हुए। घरमें चौदह रत्न और नौ निधियाँ सिद्ध हो गयीं। अनुकूल पथमें उसे एकछत्र भूमि प्राप्त थी। लोग कहते हैं कि पूर्व जन्ममें अर्जित, श्रीपालके पुण्यका विस्तार हो गया। तब सुहावतीने यह कीचड़ उछालनी शुरू की कि नगरकी खदानोंसे जो धन निकलता है उसे यशस्वती अपने घरमें प्रविष्ट करा लेती है, लेकिन यशस्वतीके द्वारा संचित धन मृत्युके दिन एक पग भी उसके साथ नहीं जायेगा। भीषण मरघटमें उसे अकेले ही जलना होगा, दूसरे, कपड़ोंके साथ। लम्पट पुत्र-कलत्रसे क्या ?

घत्ता—तब मन्त्रीने कहा और यह गुप्त बात प्रकट कर दी, इस प्रकार मत कहो। यशस्वतीकी तीनों लोकोंमें श्रेष्ठ शीलवृत्तिको दोष मत लगाओ ॥८॥

९

यशस्वतीको कोखसे जिन भगवान्‌का जन्म होगा, यशस्वतीका परम सौभाग्य होगा। यशस्वतीका यश संसारमें घूमेगा। यशस्वतीके चरणोंमें इन्द्र प्रणाम करेगा। यह जानकर कि गुणी दिव्य मुनीन्द्र छह माहमें होंगे। आज्ञादानके सम्मानसे सम्मानित श्री-ह्री-कीर्ति आदि देवियाँ सेवाकी सम्भावनासे आयीं। घरके आँगनमें धनकी वर्षा हुई। उसने सिंह, गज, सूर्य, समुद्र और जल आदि सोलह सपनोंकी आवलि देखी। जिन्होंने करुणा की है, और जिनके चरण प्रचण्ड इन्द्रोंके द्वारा संस्तुत हैं, ऐसे जिन भगवान् देवीकी देहमें स्थित हो गये। सुर, असुरों तथा विषधरों सहित भवनवासी और व्यन्तरोंने उसे प्रणाम किया। उस अवसरपर सुखावतीका मान-अहंकार च्युत हो गया, उसके मनमें अनन्त धर्मानन्द हुआ। सुखावतीने ईर्ष्यासे रहित होकर, स्वयं आकर यशस्वतीको नमस्कार किया, और कहा—पूर्व दिशाका अनुकरण कौन दिशा कर सकती है ? क्या किसी दूसरी दिशामें सूर्यका उदय हो सकता है। हे आदरणीय, तुम्हारे बिना कौन स्त्री जिनवरको अपने उदरमें धारण कर सकती है।

घत्ता—क्रोधसे अन्धी, मैंने सम्बन्धको नहीं जानते हुए जो कठोर शब्दोंका प्रयोग किया उन्हें हे देवताओंकी प्रिय आदरणीये, आप क्षमा कर दें। मुझ मूर्खाने बहुत बड़ा पाप किया था ॥९॥

१०

णामेण विलासिणि रंगसिरि अकमलकरि णं सयमेव सिरि।
गच्छंति पलोइय वणिवइणा पहि जंति भणिय वड्डियरइणा।
मुहयंदु[1]ज्जोइयसयलदिस किं णच्चहि[2] वच्चहि पुलयवस।
ता कहिउ ताइ वणिणाह लहु देवीपयफासें[3] णट्ठ महु।
बारहँ[4]वारिसियउ खासु किह जिणदंसणेण जणदुरिउ जिह।
पुट्टउ णं अमिएं सिंचियउ तेणंगु मज्झु रोमंचियउ।
जसवइपयगलियजलेण जरु णासइ गहभूयपिसायडरु।
सा धूमवेय वइरिणि खगइ अवर वि गुरुहार जाय जुवइ।
जुवराय[5] हवेसइ पोट्टि तहि जुयरायपट्टे[6] बद्धउ अणहि।
तो[7] जणणिइ जणियउ तित्थयरु भइयइ थरहरियउ पंचसरु।
उत्तारिउ धणु ल्हिक्किवि सरं[8] जिणजम्मणि कम्महु[9] णत्थि धर।
णिउ मेरुहि तियसहिं जिणधवलु जाणमि सिवसिरिकण्णहि धवलु।
घत्ता—सइं ण्हवइ पुरंदरु आसणु मंदरु [10]कायकोंडु रयणायरु॥
जहिं ण्हाइ जिणेसरु तं ण्हवणउं णरु कहइ को वि जइणायरु॥१०॥

११

भावणवेंतर[1]कप्पाहिवहिं देवहिं इच्छियसासेय[2]सुहहिं।
गुणवालु णाउं किउ जिणवइहि आणिवि अप्पियउ जसोवइहि।
णवमासहिं अवरु महासइहि संभूयउ पुत्तु सुहावइहिं।
ससहोयरु भोयवईइ सहुं खयरहुं णियकेर समुद्दिसहुं।
गउ णरवइ[3] सणरु सकरि सरहु अरिवरहरिजूहहु णं सरहु।
वेयड्डमहीहरि संचरइ विज्जाहररायहं महि हरइ।
साहिय फणि जक्ख वि किंणर वि तहु भइयइ[4] कंपइ किं ण रवि।
परमप्पउ हूयउ जासु घरि णिवसइ सिरि अवसें तासु करि।
भुंजंतहु कामभोयसंगयइं[5] लक्खाइं तीस पुव्वहुं गयइं।
एक्कहिं दिणि जिणु णिव्वेइयउ लोयंतियहिं संबोहियउ।
घत्ता—तें ढोइवि णीसहं धणु णीसेसहं दुक्खायामियकायहं॥
पच्छइ पडिवण्णउं गुणसंपुण्णउं सुचरिउं खीणकसायहं॥११॥

---

१०. १. M मुहि इंदुज्जोइय°; BK मुहइंदुज्जोइय°। २. MB वच्चहि णच्चहि। ३. MB पयफंसें। ४. MB बारहवरिसियउ वि। ५. MBK जुवराउ। ६. MB °पट्टु। ७. K ता। ८. M सिर। ९. MBK कामहु। १०. MB कायकुंडु।

११. १. MB °वितर°। २. MB सासयसिवहिं। ३. MB णरवइ सकरि सहरि सरहु। ४. B भइएं। ५. M °सुहइं; B सहइं।

१०

विलासिनी नामकी एक रंगश्री (नर्तकी) थी जो कमलसे उत्पन्न न होते हुए भी स्वयं लक्ष्मी थी। सेठने उसे जाते हुए देखा। जिसे कामवासना बढ़ रही है ऐसे उस सेठने रास्तेमें जाते हुए उससे पूछा—"अपने मुखचन्द्रसे दिशाओंको आलोकित करनेवाली तुम रोमांचित होकर नाचती हुई क्यों जा रही हो ?" उसने सेठसे कहा—देवीके चरण-स्पर्शसे मेरी बारह वर्षकी खाँसी मिट गयी है, उसी प्रकार, जिस प्रकार जिनदेवके दर्शनसे लोगोंके पाप मिट जाते हैं। मेरा पृष्ठभाग मानो अमृतसे सिंचित हो। इसीसे मेरा शरीर रोमांचित है। यशस्वतीके पैरोंसे प्रगलित जलसे ज्वर और ग्रहभूत-पिशाचोंका नाश हो जाता है। वह धूमवेगा वैरिन विद्याधरी नष्ट हो गयी। और भी उस युवतीका पैर भारी हो गया। उसके उदरसे युवराजका जन्म होगा, इसलिए एक दूसरीने उसे युवराज-पट्ट बाँध दिया। तब माताने तीर्थंकरको जन्म दिया। भयसे कामदेव डर गया। उसने अपना धनुष उतार लिया और तीर छिपा लिये। जिनवरके जन्मके समय कामदेवके लिए रक्षा नहीं रह जाती। देवोंके द्वारा जिनेन्द्र श्रेष्ठ सुमेरु पर्वतपर ले जाये गये, मैं जानता हूँ कि वह शिवलक्ष्मीरूपी कन्याके भर्ता हैं।

घत्ता—देवेन्द्र स्वयं स्नान कराता है, मन्दराचल आसन है, समुद्र शरीरके लिए कुण्ड है (जलपात्र है), स्नानगृह वही है जहाँ जिन स्नान करते हैं ऐसा कोई चतुर मनुष्य-गणधर आदि कहते हैं ॥१०॥

११

शाश्वत् सुखकी इच्छा रखनेवाले भवनवासी, व्यन्तर और कल्पवासी देवोंने जिनपतिका नाम गुणपाल रखा और लाकर यशस्वतीके लिए सौंप दिया। महासती सुखावतीके भी नौ माहमें एक और पुत्र हुआ। भोगवतीके साथ तथा अपने भाईके साथ वह विद्याधर राजाओंमें अपनी आज्ञा स्थापित करनेके लिए अनुचरों, घोड़ों, गजों और रथोंके साथ गया, मानो शत्रुरूपी हाथियों-के झुण्डपर सिंह टूट पड़ा हो। वह विजयार्धं पर्वतपर परिभ्रमण करते हुए विद्याधर राजाओंकी धरतीका अपहरण करता है। वह सिद्धों और किन्नरोंको सिद्ध कर लेता है। उसके भयसे सूर्य काँपता है, जिसके घरमें परमात्माका जन्म हुआ है, उसकी गोदमें लक्ष्मीका निवास अवश्य होगा। सैकड़ों कामभोगोंको भोगते हुए उसके तीस लाख वर्ष बीत गये। एक दिन जिन भगवान्‌को वैराग्य उत्पन्न हो गया। लौकान्तिक देवोंने आकर उसे सम्बोधित किया।

घत्ता—निर्धन और दुःखसे झुकी हुई कायावाले समस्त दीन-दुखियोंको धन दिया। फिर बादमें उसने क्षीणकषायवालोंका गुणोंसे परिपूर्ण समस्त चारित्र स्वीकार कर लिया ॥११॥

१२

चउतीसातिसयविसेसधरु संजायउ केवलि तित्थयरु ।
गुणवालु भडारउ गुणमहिउ विहरइ महियलि देवहिं सहिउ ।
संबोहियबहुभवियंबुरुहु जिणसूरु देउ महु मोक्खु लहु ।
दुयसीलक्खइं पुव्वहं सधरं सिरिवालु वि भुंजिवि सयल धर ।
पप्फुल्लियबालकमलमुहहु सिरि पट्टु णिबंधिवि तणुरुहहु ।
परिचिंतिवि जम्मजरामरणु णियतणयजिणिंदहु गउ सरणु ।
सोलहसहासधरणीसरहं तें सहुं पव्वइय महासरहं ।
संसारघोरमारें लइउ वसुवालु णरिंदु वि पावइउ ।
सहुं पुत्तसहासें सो सहइ तं संजमु तं व्रउ को वहइ ।
देविहिं परमत्थवियाणियहं पण्णाससहासइं राणियहं ।
बुज्झियधम्मइ उज्झियरइए तवि संठिउं समउं सुहावइए ।
घत्ता—सा चरिउ चरेप्पिणु तेत्थु मरेप्पिणु सइं अमराहिवु हुई ॥
णासियदुक्कम्में जिणवरधम्में धावइ पुरउ विहूई ॥१२॥

१३

जहिं भुक्ख ण तण्ह ण णिद्दडिय णउ देह सत्तधाउहुं घडिय ।
जहिं सत्तु ण मित्तु ण घरिणि घरु जहिं लोहु ण कोउ ण कामजरु ।
णउ माणु ण माय ण मोहु मउ जहिं केवलु जीउ जि णाणमउ ।
मणु इंदिय पंच वि णत्थि जहिं सिरिपालु वि गउ कालेण तहिं ।
वसुवालु वि गुणवालु वि परमु अरहंतु करउ महु रइविरमु ।
इय सुणिवि कहंतरु अप्पणउं घणरवेण दिण्णु आलिंगणउं ।
तूसेप्पिणु ताहि सुलोयणहि रायवसविरोल्लियलोयणहि ।
पुणु भणिउं देवि हियवइ धरंवि हउं खगजम्मंतरु संभरमि ।
तहिं अवसरि हरिसुद्धाइयउ जम्मंतरविज्जउ आइयउ ।
गंधारिगोरिपण्णत्तियउ गयणयलविहारपवित्तियउ ।
णियसोहाणिज्जियकमलसिरि तं पेक्खिवि भणइ पियंगुसिरि ।
घत्ता—हउं जाणउं भाविणि अइमायाविणि कंतहु चाडुयकारिणि ॥
अलियउ जि कहंतरु भवणंतरु कहइ दुट्ठ दुचारिणि ॥१३॥

---

१२. १. M गुणवाल । २. GK °यंबुरहु but gloss कमलम् । ३. MB सोक्खु । ४. M सकेर । ५. MBK पट्टु । ६. B पर चिंतिवि । ७. MB महीसरहं । ८. MB पव्वइउ । ९. MB वउ । १०. MB देवहिं परमत्थु वियाणियहं । ११. MB °सहस रायाणियहं । १२. MB संठिय । १३. MB अमराहिउ ।

१३. १. MB सिरिवालु गयउ । २. MB °विरोलिय° । ३. MB धरमि । ४. B वज्जिउ । ५. MB आणमि । ६. MB भवणे णिरंतरु ।

१२

वह चौंतीस अतिशयोंको धारण करनेवाले केवलज्ञानी तीर्थंकर हो गये। गुणोंसे महान् आदरणीय गुणपाल देवोंके साथ धरतीपर विहार करते हैं। भव्यरूपी कमलोंको सम्बोधित करनेवाले हे जिनदेवरूपी सूर्य, आप मुझे शीघ्र मोक्ष प्रदान करें। बयासी लाख वर्ष पूर्व तक, पर्वतों सहित समस्त धरतीका उपभोग कर श्रीपाल भी खिले हुए बालकमलके समान मुखवाले बालकके सिरपर पट्ट बाँधकर जन्म, जरा और मृत्युका विचार कर अपने पुत्रोंके साथ तीर्थंकर गुणपालको शरणमें चले गये। उसके साथ सोलह हजार गम्भीर घोषवाले राजा प्रव्रजित हो गये। संसारके घोरभारसे विरक्त होकर वसुपाल राजा भी प्रव्रजित हो गया। वह हजारों पुत्रोंके साथ शोभित है, वैसे संयम और व्रतको कौन धारण कर सकता है। परमार्थको जाननेवाली पचास हजार रानियाँ भी रतिको छोड़कर, धर्मको जानती हुई, सुखावतीके साथ तपमें लीन हो गयीं।

घत्ता—वह भी तपश्चरण कर, और मरकर वहाँसे स्वर्गमें इन्द्र हुई। कर्मोंको नाश करनेवाले जिनवरके धर्मके प्रभावसे ऐश्वर्य आगे-आगे दौड़ता है ॥१२॥

१३

जहाँ न भूख है, न प्यास है और न नींद है, जहाँ शरीर सात धातुओंसे रचित नहीं है, न शत्रु है, न मित्र है, न गृहिणी है, न घर है, जहाँ न लोभ है और न कोप है, जहाँ न काम है, न ज्वर है, न मान है, न माया है, न मोह है, न मद है, जहाँ जीव केवल ज्ञानमय है, जहाँ पाँचों इन्द्रियाँ और मन भी नहीं हैं, समय आनेपर श्रीपाल भी वहाँ पहुँचा। वसुपाल, गुणपाल तथा परम अरहन्त भी मेरी रतिका विराम करें। इस प्रकार अपना कथान्तर सुनकर प्रेमके वशसे अपनी आँखोंको घुमानेवाली उस सुलोचनाको सन्तोष देनेके लिए जयकुमारने उसे आलिंगन दिया। उसने कहा कि हे देवी, मैं तुम्हें हृदयमें धारण करता हूँ। मैं विद्याधरके जन्मान्तरको याद करता हूँ। उसी अवसरपर हर्षसे उछलती हुई पूर्व जन्मकी विद्याएँ आयीं, गान्धारी, गौरी और प्रज्ञप्ति जो आकाशतलमें विहार करनेकी प्रवृत्तिवाली थीं। अपनी शोभासे कमलश्रीको जीतनेवाली प्रियंगुश्री उसे देखकर कहती है—

घत्ता—मैं समझती हूँ यह भामिनी अत्यन्त मायाविनी और प्रियकी चापलूसी करनेवाली है। यह दुष्ट दुराचारिणी झूठमूठ कथान्तर और भवजन्म-परम्परा कहती है ॥१३॥

१४

तुहुं देवि सुलोयणि अवयरिय हउं पोवसवत्ति खारहं भरिय ।
पइं कहिउ कहंगुं[2] ण सद्दहंवि[3] लइ दिट्ठउ एवहिं किं रैहंवि ।
रमणीयणसिर[5]चूडामणिहिं णीसल्लु कयउ दोहि वि जणिहिं ।
लहुभाइहि रज्जु समप्पियउं घणघोसें सहरिसु जंपियउं ।
हउं गच्छमि गयणे अज्जु तहिं जिणु बंभु सयंभु सइं वसइ जहिं ।
रयणालंकारहिं विच्छुरिउ विज्जाहरवेसु तेण धरिउ ।
जं होंतउ आसि पहावइहि तं रूवुं धरेप्पिणु णियवइहि ।
थिय पासि सुलोयण जलयवहि बिण्णि वि उल्ललियइं झत्ति णहि ।
जणु जोयइ उद्धदिट्ठि मुयइ असहंतु विओउ कलुणु रुयइ ।
अंतेउरु परियणु णीससइ बंधवयणु संभरंतु सुसइ ।

घत्ता—उल्लंघियजलहरि सुरवरमहिहरि भद्दासालवणंतरि ॥
तं पइसइ वहुवरु चलकिसलयकरु जिणवरभवणब्भंतरि ॥१४॥

१५

बिण्णि वि वंदेप्पिणु जिणधवलु तं भद्दासालु सालसरलु ।
परिहरिवि ताइं उप्परि गयइं तेत्थाउ पंचजोयणसयइं ।
तेहिं[2] णंदणि पुज्जिवि चेइयउ[3] वणि चउदिसु अकयणिकेइयउ[4] ।
पुणरवि तिसट्ठिसहसइं उवरि जोयणहं चडेप्पिणु सुरसिहरि ।
वणु दिट्ठउ णामें सउमणसु करिदसणाहयतरुगलियरसु ।
पणवेवि[5] तहिं मि जयतिजगुत्तमउ जिणवरपडिमाउ अकित्तिमउ ।
पुणु पंचतीससहसइं घणहं पंचसयालंकियजोयणहं ।
लंघिवि पंडुयवणि पइसरिवि अहिसेउ अरुहबिंबहं करिवि ।
जोइवि चूलिय मेरुहि तणिय चालीस जि जोयण परिगहिय ।
जोइय उत्तरकुरु देवकुरु अवलोइय दहविह कप्पतरु ।
छ वि कुलपव्वय चोद्दह णइउ दिट्ठउ बहुभूमिभेयगइउ ।

घत्ता—जेहिं वसइ सगुणगणु णिरु णिरुवमतणु जंबुदेउ रंजियजणु ॥
जंबूनरु जोइउ रयणुज्जोइउ जंबूदीवहु लंछणु ॥१५॥

१४, १. MB पावसत्ति । २. T कहग्गु । ३. MB सद्दहमि । ४. MB कहमि । ५. MB °सिरि । ६. MB संभु । ७. MB रूउ णिएप्पिणु ।

१५. १. B सालहिं सरलु । २. MB णंदणवणि पुज्जिवि । ३. MB चेइयइं । ४. MB °णिकेइयइं । ५. M पणवि तहिं मि जयजगुत्तमउ; B पणवेवि तेहिं वि तिजगुत्तमउ । ६. B वणहं । ७. MBK परिगणिय । ८. MB °भूमिभोय° । ९. MB जहि णिवसइ गुणगणु ।

१४

"हे देवी सुलोचने ! तुम अवतरित हुई और मैं पापी सौत खारसे भर गयी। तुमने जो कथांग कहा, उसमें मैं श्रद्धा नहीं करती। लो मैंने सब देख लिया, अब क्या छिपाऊँ।" तब रमणी-जनोंके लिए चूड़ामणिके समान उन दोनोंने उसे शल्यरहित बना दिया। जयकुमारने अपने छोटे भाईके लिए राज्य सौंप दिया और मेघके स्वरमें घोषणा की कि आज मैं आकाशमें वहां-वहां जाता हूँ जहां जिन, ब्रह्मा और स्वयम्भू स्वयं निवास करते हैं। उसने रत्नालंकारोंसे विच्छुरित विद्याधरका स्वरूप बनाया। जो प्रभावतीका रूप था, अपने पतिके लिए उस रूपको धारण कर सुलोचना आकाशपथमें प्रियके पास स्थित हो गयी। दोनों शीघ्र आकाशपथमें उछल गये। जन उन्हें देखता है और अपनी ऊपरकी दृष्टि छोड़ देता है। वियोगको सहन नहीं करता हुआ रोता है। अन्तःपुर और परिजन निःश्वास लेता है, बान्धव जन याद करता हुआ शुष्क होता है।

घत्ता—जिसने मेघोंका अतिक्रमण किया है ऐसे सुमेरु पर्वत और भद्रशाल वनके भीतर जिन-मन्दिरोंमें चंचल कोंपलोंके समान हाथवाले वधूवर प्रवेश करते हैं ॥१४॥

१५

दोनों जिनश्रेष्ठकी वन्दना कर, सालवृक्षोंसे सरल उस भद्रशाल वनका परित्याग कर उनके ऊपर पाँच योजन गये। वहाँ नन्दनवनमें चारों दिशाओंमें अकृत्रिम चैत्यालयों और चैत्योंकी पूजा कर, फिर त्रेसठ हजार योजन ऊपर चढ़कर सुमेरु पर्वतके शिखरपर उन्होंने सौमनस नामका वन देखा, जिसमें हाथियोंके सूँड़ोंसे आहत वृक्षोंसे रस रिस रहा है। वहाँपर भी जयसे भुवनत्रयमें उत्तम अकृत्रिम जिनवर प्रतिमाओंको प्रणाम कर फिर पैंतीस हजार पाँच सौ योजन ऊपर मेघोंको लाँघकर पाण्डुक वनमें प्रवेश कर, अर्हन्त बिम्बोंका अभिषेक कर, मेरुपर्वतकी चूलिका देखकर, चालीस योजन और जाकर उत्तरकुरु और दक्षिणकुरुके दर्शन किये और दस प्रकारके कल्प-वृक्षोंको देखा। छहों कुलपर्वत, चौदह नदियाँ और भेदगतिवाली अनेक नदियाँ देखीं।

घत्ता—जहाँ अपने गुणों और गणोंसे युक्त लोगोंको रंजित करनेवाला अनुपम शरीर जम्बू स्वामी रहता है, ऐसा रत्नोंसे उद्योतित जम्बूद्वीपका चिह्न जम्बू वृक्ष देखा ॥१५॥

१६

तं जोयवि आयइं तुहिणइरि | जहिं हुई सहि सिरिविहसिरि ।
तणुणवलइय मणिमयभूसणिय | सोहम्मसुरिंदविलासिणिय ।
जहिं जोयणमेत्तु अत्थि कमलु | जं[1]बुण्णयणिम्मियविमलदलु ।
जहिं सुरहं वि चोज्जुप्पायणइं | णालु वि [2]हवेइ वहजोयणइं ।
तवणीयविणिम्मिय णं णविय | कण्णिय गव्वूइपरिट्ठविय ।
जहिं कोसपमाणु विमाणु तहे | लच्छीदेविहि अरविंददहे ।
तं पेच्छिवि णहयलि चल्लियइं | बिण्णि वि णियमणि गंजोल्लियइं ।
गंगासिंधूसिहरइं णिइवि | त[3]हिं तणउ सलिलु परिमलु पिइवि ।
स[4]वरवलणिसेवियमेहलहो | पुणु आयइं वेयड्ढायलहो ।
जयरूवणलिणलंपे[5]डि भमरि | थिय[6] पंथु णिरोहिवि तहिं खयरि ।
सा भणइ वसइ इह तुलियजगु | गंधा[7]रिपिंगु णामेण खगु ।

घत्ता—हउं तहु केरी सुय णवकुवलयमुय पइं णियंति जणरामें ॥
गुं[8]णि मग्गणु संधिवि ठाणु णिबंधिवि विद्धी हियवइ कामें ॥१६॥

१७

णमिणहयरणाहहु गेहिणिय | हउं जगि पसिद्ध तडिमालिणिय ।
विज्जासहाससंपयधरहं | रणि दुज्जे[1]य हउं विज्जाहरहं ।
मइं इच्छहि सुहय अज्जु जइ | तुह दुल्लहु काइं वि णत्थि तइ ।
तं णिसुणिवि भरहसेणाहिवइ | भासइ तुहुं सुंदरि मूढमइ ।
ओसरु सरु पंथहु सइरिणिए | किं जंपहि वोमविहारिणिए ।
महु जणणिसमाणी परघरिणि | जो पइ[2]सिवि सक्कइ वइतरिणि ।
सो पइं सेवें[3]उ णिरु णिग्घिणउ | हउं पुणु तुह होमि माइ तणउ ।
ता रूसिवि पिंगलकेसियउ | अ[4]सइइ रयणियरिउ पेसियउ ।
सिसुससिसंणिहदाढालियउ | णवघणणीलंजणकालियउ ।
चलजीहापल्लववयणियउ | गुंजापुंजारुणणयणियउ ।
लंबियघोणसफणिमेहलउ | किलिकिलिसद्दें कयकलयलउ ।

घत्ता—सुरधणुविण्णासहिं विज्जु[5]विलासहिं थिरसरधारामेहहिं ॥
आढत्त अणेयहिं पहरणभेयहिं भिण्णमहाभडदेहहिं ॥१७॥

---

१६. १. MB जंबूणय° । २. MB वि पविमउ । ३. M तहि तणउ सुपविमलु जलु पिइवि; B तह तणउ जि पविमलु जलु पिइवि । ४. M सुरवरउलसेविय°; B सुरणरउलसेविय° । ५. MB °लंपड । ६. B पियपंथु । ७. MB गंधारपिंगु । ८. MB गुणमग्गणु ।

१७. १. M दुज्जिय । २. MB पइसइ । ३. MB गेण्हउ । ४. M असइयइ रयणिइ रिउ पेसिउ; B असईए रयणियरउ पेसियउ । ५. K विज्जुसहासहिं ।

१६

उसे देखकर वे हिमगिरि पर्वतपर आये, जहाँ सखी विन्ध्यश्री देवी हुई थी, शरीर बलित, मणिमय भूषणोंवाली और सौधर्म स्वर्गकी विलासिनी। जहाँ एक योजनका कमल है, जिसके विमल कमलदल स्वर्णसे निर्मित हैं, जिसमें देवोंमें भी आश्चर्य उत्पन्न करनेवाला दस योजनका कमल नाल है तथा सोनेसे निर्मित एक गव्यूति प्रमाण नयी कणिका है, अरविन्द सरोवरमें उस लक्ष्मीदेवीका एक कोश प्रमाण विमान है। उसे देखकर वे लोग आकाशतलपर चले। दोनों ही अपने मनमें पुलकित थे। गंगा और सिन्धु नदीके शिखरोंको देखकर, उनका सुगन्धित जल पीकर वे लोग शवरकुलसे सेवित मेखलावाले विजयार्ध पर्वतपर आये। वहाँपर जयकुमारके रूपरूपी कमलकी लम्पट एक विद्याधरी रास्ता रोककर बैठ गयी। वह कहती है कि यहाँपर तीनों विश्वोंको तोलनेवाला गान्धार पिंग नामका विद्याधर रहता है।

घत्ता—मैं उसकी कन्या हूँ। नवकमलके समान भुजाओंवाली तुम्हें देखते हुए जग-सुन्दर कामदेवने प्रत्यंचापर तीर चढ़ाकर तथा अपने स्थानको लक्ष्य बनाकर मुझे विद्ध कर दिया है ॥१६॥

१७

नमि विद्याधरकी गृहिणी मैं विश्वमें तडित्मालिनीके नामसे प्रसिद्ध हूँ। हजारों विद्याओंको सम्पत्ति धारण करनेवाले विद्याधरोंके युद्धमें अजेय हूँ। हे सुन्दर, यदि तुम आज चाहते हो तो तुम्हारे लिए कुछ भी दुर्लभ नहीं होगा? यह सुनकर भरतके सेनापति जयकुमारने कहा—"हे सुन्दरी, तुम मूढ़मति हो। हे स्वैरचारिणी, मार्गसे हट। हे व्योमविहारिणी! तू क्या कहती है? परस्त्री मेरे लिए माताके समान है। जो वैतरिणी नदीमें प्रवेश कर सकता है वह अत्यन्त निर्धन तुम्हारा सेवन करे। हे माता, मैं तुम्हारा पुत्र होता हूँ।" तब उस असतीने क्रुद्ध होकर पीले बालोंवाले निशाचरको भेजा, जो बालचन्द्रके समान दाढ़ोंवाला, नवमेघ और अंजनके समान काला, चंचल जीभरूपी पल्लवके मुखवाला, भुजा समूहके समान आँखोंवाला, लम्बे घोणस साँपकी मेखलावाला, किल-किल शब्दसे कलकल करता हुआ।

घत्ता—इन्द्रधनुषके विन्यासों, बिजलियोंके विलासों, स्थिर जलधारावाले मेघों तथा बड़े-बड़े सुभटोंके शरीरोंका भेदन करनेवाले नाना प्रकारके अनेक शस्त्रोंके द्वारा उसने उसे घेर लिया ॥१७॥

१८

जयसीलविसुद्धि ण तेहिं हया[1] हियंएं[2] जएण गुरुखंति कया[3] ।
थिय णियमियचित्त सुलोयण वि जाणंति तो वि खललोय ण वि ।
तो तें अंदुलियइ बुज्झियउ हा किं मइं णिप्फलु जुज्झियउ ।
जइ मंदरु णियठाणहु चलइ तो तुज्झु वि चित्तवित्ति खलइ ।
मं रूसेज्जसु जं मइं दूमियइ विज्जउ पेसिवि आयामियउ ।
गय एम भणेप्पिणु गयणयरि अमरहिं पुज्जिउ अरिहरिणहरि ।
दुंदुहिसरु महुरु समुच्छलिउ रइपहु णामें सुरवरु मिलिउ ।
तेणुत्तउ इंदें पेसियउ मइं तुह सुंइमाउ[4] गवेसियउ ।
जा पइं रोहिवि[5] थिय वणथणिय सा ण हवइ खेयरि सुरगणिय ।
तुह सीलु णिहालहुँ पट्टविय पइं णियजणणी विव चिंतविय[6] ।

घत्ता—कुरुकुलणहयलससि णाणुब्भववसि कंपावियदसदिव्वइ ॥
चारित्तु तुहारउ भवभयहारउ भणु किर केण ण थुव्वइ ॥१८॥

१९

जो रुच्चइ सो तुहुं मग्गि वरु तं णिसुणिवि पभणइ णरु[1] पवरु ।
वरु मग्गमि णाणपवित्तियरु वरु मग्गमि हउं संसारहरु ।
अवरें वरेण महुं कज्जु ण वि पुणु णिवडइ सुरवइ चंदु रवि ।
जहिं सोक्खु कयाइ[3] ण संचलइ जहिं कामहुयासु[4] ण पज्जलइ ।
सो मोक्खु णिहेलणु जिणवरहो हउं तत्ति करेमि[5] सुर तहु वरहो ।
ता वंदिवि जयरायहु चरिउ गउ अमरु अमरलोयहु तुरिउ ।
तं देवपसंसइ राइयउ बहुवरु कैलासु पराइयउ ।
दीणउ गइ विरइवि णहयलइ आसीणउ रयणसिलायलइ ।
कणयमयकोणताडणखमहं ता णिसुंउ[6] सद्दु सुरडिंडिमहं ।
सद्देण तेण आयड्ढियइं बिण्णि[7] वि गयाइं महियड्ढियइं ।
सुरसरितरंगससियरसियइं जहिं भरहणराहिवणिम्मियइं ।

घत्ता—चामीयरघडियइं मणिगणजडियइं दिट्ठइं घरइं जिणेसरहं[8] ॥
पयपणवियसीसहं[9] तहिं चउवीसहं दिक्खादमियदुरासहं ॥१९॥

---

१८. १. MB हय । २. MB हियवइ । ३. MB कय । ४. MB जयमाउ । ५. B रोहिय ।
६. MB चितविय । ७. MB दह° ।

१९. १. MB पवरणरु । २. M सहुं । ३. MB ण काइं वि । ४. MB हुयासणु पज्जलइ । ५. B करउं । ६. MB सुणिउ । ७. MB बिण्णि वि विगयाइं महड्ढियइं । ८. M जिणेसहं । ९. MB °पणमिय° ।

१८

उनसे भी जयकुमारके शीलकी पवित्रता नष्ट नहीं हुई। अपने हृदयमें जयने महान् शान्ति धारण की। सुलोचना भी अपना मन नियमित करके स्थित हो गयी। तब भी दुष्ट लोक नहीं समझ सका। तब उस पुंश्चलीको समझमें आया कि मैंने व्यर्थ युद्ध क्यों किया। यदि मन्दराचल अपने स्थानसे चलित होता है, जो तुम्हारी (जयकुमारकी) चित्तवृत्ति चलित हो सकती है। मैंने तुम्हें जो पीड़ा पहुँचायी है, और विद्या भेजकर कष्ट दिया है, उससे क्रुद्ध मत होना। यह कहकर वह विद्याधरी चली गयी। शत्रुरूपी हरिणोंके सिंह उसकी देवोंने पूजा की। मधुर दुन्दुभि स्वर उछल पड़ा। रतिप्रभ नामका सुरश्रेष्ठ उससे आकर मिला। उसने कहा कि इन्द्रके द्वारा प्रेषित मैंने तुम्हारे पवित्रभावका अनुसन्धान कर लिया। सघन स्तनोंवाली जो तुम्हें रोककर स्थित थी वह विद्याधरी नहीं, अप्सरा थी, जो तुम्हारे शीलकी परीक्षा करनेके लिए भेजी गयी थी। लेकिन तुमने अपने मनमें उसे अपनी माताके समान माना।

घत्ता—हे कुरुकुलरूपी आकाशके चन्द्र, इन्द्रियोंको वशमें करनेवाले दसों दिग्गजोंको कँपानेवाले हे जयकुमार, संसारके भयका हरण करनेवाले तुम्हारे चारित्र्यकी प्रशंसा किसके द्वारा नहीं की जाती ॥१८॥

१९

जो अच्छा लगे वह वर माँग लो। यह सुनकर वह श्रेष्ठ मनुष्य कहता है, "मैं ज्ञानकी पवित्रता करनेवाला वर माँगता हूँ। मैं संसारका हरण करनेवाला वर माँगता हूँ। किसी दूसरे वरसे मुझे काम नहीं है। इन्द्र, चन्द्रमा और सूर्यका पतन होता है। जहाँ सुख कभी भी विचलित नहीं होता, जहाँ कामकी ज्वाला प्रज्वलित नहीं होती, जिनवरका वर वह मोक्ष मुझे चाहिए। मैं उसी वरसे सन्तुष्टि पा सकता हूँ।" इस प्रकार जयकुमार राजाके चरितको वन्दना कर वह देव तुरन्त देवलोक चला गया। देवप्रशंसासे शोभित वधू और वर कैलास पर्वत पहुँचे। आकाशतलमें अपनी गति क्षीण कर वे रत्नोंसे निर्मित शिलातलपर स्थित हो गये। तब उन्होंने, स्वर्णदण्डोंके ताड़नसे सक्षम देव-दुन्दुभियोंका शब्द सुना। उस शब्दसे आकर्षित होकर, वे दोनों वहाँ गये जहाँ महाऋद्धियोंसे सम्पन्न, देव गंगाकी जल लहरोंसे शीतल, भरत राजाके द्वारा निर्मित,

घत्ता—स्वर्णरचित मणिसमूहसे विजड़ित, जिनके पैरोंपर इन्द्रादि प्रणत हैं, जो दीक्षाके द्वारा संसारकी दुराशाओंका दमन करनेवाले हैं ऐसे चौबीस जिनेश्वरोंके मन्दिरोंको देखा ॥१९॥

२०

रिसहं रिसिमग्गपयासयरं अजियं जियवम्महमुक्खसरं ।
संभवदेवं संभवमहणं अहिणंदणमहिणंदियभुवणं ।
अदुगुंछियइच्छियमोक्खगइं सुमइं सुमइं वज्जियकुमइं ।
पोमप्पहंमवि पोमाहरणं गयपासं णमह सुपासजिणं ।
चंदप्पहमहिहियचंदविहं सुविहिं सुविहिं जसपुंजणिहं ।
सीयलवयणंभहयंगरुहं सीयलणाहं वंदे अरुहं ।
सेयंसं सेयपवित्तियरं वासवपुज्जं तिहुयणपियरं ।
सिरिवासुपुज्जणामं णिरहं विमलं विमलं तवतावसहं ।
वंदे भयवंतमणंतमहं मणभमिरभूरिभीसणतमहं ।
धम्मं दहधम्मुवदेसयरं पणमामि जिणं जाणियसवरं ।
संतं[9] संतिं जगसंतियरं सोलहमं परमं तित्थयरं ।
कुंथुं कुंथुसुं वि दयोविरयं बहुगंथियगंथपंथविरयं[12] ।
पणमामि अरं संणिहियसमं [13]अरमयलं मूलियमोहदुमं ।
मल्लिं मल्लियदामंचिययं मुणिसुव्वयमुणिरायं सुवयं ।
णिणमिय णमिणाहं जगसामिं गुणरहणेमिं वंदे णेमिं ।
पासं पासासिकरेण हियं सत्तूण वि दरिसियधम्मसूयं ।
वंदे वयवड्ढमाणणियमं सिरिवड्ढमाणवीरं चरमं ।

घत्ता—जिह भरहणरिंदें कुवलयचंदें वंदिय सयल जिणेसर ॥
तिह तं जयराएं समियकसाएं पुप्फयंत जोईसर ॥२०॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे जयसुलोयणातित्थवंदणं णाम छत्तीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ ३६ ॥

संधि ॥ ३६ ॥

---

२०. १. MB मोक्खरयं । २. M सुमयं । ३. M कुमयं । ४. MB पोमप्पहं पवि । ५. K सुविहं । ६. MB °पवित्तयरं । ७. MB °धम्मपयासयरं । ८. MB कम्मट्ठगंठिणिण्णासयरं; T °सयरं °स्वपरम् । ९. M संतं । १०. MB कुंथेसु दया° । ११. MB दयावहरं; K दयावरयं । १२. MB °विहरं; T °विरयं । १३. MB अरमयलुम्मूलिय°; T °उम्मूलिय° । १४. B °करण° । १५. MB दरसियधम्मसिय । १६. MB चरिमं ।

२०

मुनिमार्गका प्रकाशन करनेवाले ऋषभको, कामदेवके द्वारा मुक्त बाणोंके विजेता अजितनाथको, संसारका नाश करनेवाले सम्भवनाथको, संसार और धरतीको आनन्द प्रदान करनेवाले अभिनन्दनको, अनिन्दित मोक्षगतिको चाहनेवाले तथा कुमतिको छोड़नेवाले सुमतिको, केवलज्ञान-रूपी लक्ष्मीको धारण करनेवाले पद्मप्रभ भगवान्‌को, बन्धनसे रहित सुपार्श्वको नमस्कार करो। चन्द्रमाकी विशिष्ट कान्तिको नष्ट करनेवाले चन्द्रप्रभको, यशःसमूहके समान बुद्धिवाले सुविधिको, अपने शीतल वचनोंसे संसारके रोगोंको दूर करनेवाले शीतलनाथकी मैं वन्दना करता हूँ। कल्याण-प्रवृत्तिके विधाता श्रेयांसको, त्रिभुवनके पिता इन्द्रके द्वारा पूज्य, पूजनीय श्रीवासुपूज्यको, तपके तापके सहनकर्ता पवित्र विमलनाथको, मनको घुमानेवाले प्रचुर और भयंकर अज्ञान अन्धकारके नष्ट करनेवाले ऐश्वर्य सम्पन्न अनन्तनाथको मैं नमस्कार करता हूँ। दस धर्मोंके उपदेशक और स्व-परको जाननेवाले धर्मनाथको मैं प्रणाम करता हूँ। स्वयं शान्त और विश्वमें शान्तिके विधाता सोलहवें तीर्थंकर शान्तिनाथको, अत्यन्त सूक्ष्म जीवोंके प्रति दया करनेवाले, तरह-तरह-की (अन्तः-बाह्य) ग्रन्थियोंसे परिपूर्ण पन्थोंको दूर करनेवाले कुन्थुनाथको, शमभावके धारक, अचल मोहवृक्षको उखाड़नेवाले अरहनाथको, मालती पुष्पकी मालाओंसे अंचित मल्लिनाथको, सुव्रती मुनि सुव्रतको, चक्रवर्तियोंके द्वारा प्रणम्य विश्वस्वामी नमिनाथको, गुणरूपी रथकी नेमि नेमिनाथको, पाशोंके लिए हाथमें तलवार लेनेवाले पार्श्वनाथको तथा शत्रुओंके लिए भी धर्मकी श्री दिखानेवाले, व्रतोंसे नियमोंकी उत्तरोत्तर वृद्धि करनेवाले, अन्तिम तीर्थंकर वर्धमानको मैं प्रणाम करता हूँ।

घत्ता—जिस प्रकार पृथ्वीमण्डलके चन्द्र भरतराजाने समस्त जिनेश्वरोंकी वन्दना की, उसी प्रकार शान्त कषाय जयकुमार राजाने पुष्पदन्त योगीश्वरों (तीर्थंकरों) की वन्दना की ॥२०॥

त्रेसठ महापुरुषोंके गुणालंकारोंसे युक्त इस महापुराणमें महाकवि पुष्पदन्त द्वारा विरचित और महाभव्य भरत द्वारा अनुमत महाकाव्यका जयसुलोचना तीर्थवन्दन नामका छत्तीसवाँ परिच्छेद समाप्त हुआ ॥३६॥

संधि ३७

जयराएं रयणविणिम्मियइं पसरियकरणि[1]ठंबइं ॥
तेवीस[2]हं जिणहं अणा[3]गयहं वंदियाइं पडिबिंबइं ॥ ध्रुवकं ॥

१

वंदइ सुंद[4]रि चेइयइं जाम तहिं अच्छिय मुणिवर बिण्णि ताम ।
ते तियसहिं गय सहुं समवसरणु जहिं णिवसइ रिसहु तिलोयसरणु ।
बहुवरइं णवेप्पिणु गुरुपयाइं मग्गेण तेण ताइं वि गयाइं ।
पत्तेहिं तेहिं दोहिं वि जणेहिं जिणदंसणवंदणकयमणेहिं ।
वरविजयवइजयंताइयाइं दारइं चत्तारि पलोइयाइं ।
तोरणइं माणमंदरणिसुंभ माणिक्करु[6]ज्जलमाणखंभ[7] ।
सरवरपविमलजलखाइयाउ पप्फुल्लियवेल्लिउ वेइयाउ ।
पायारु णडिंदणिहेलणाइं मुणिणाहघरइं सुरतरुवणाइं ।
जोयंतहिं जोयणमेत्तु दिट्ठु मणिमंडउ जहिं जगजणु णिविट्ठु ।
बत्तीस सुरिंद णरिंदु[8] एक्कु भरहेसरु बीयउ णाइ सक्कु ।
जोइसवइ आणिय चंदसूर सप्पुरिसमहापुरिसारिजूर ।
किंणरवइ दोण्णि महोरईस ते कायमहाकायंकभीस ।

घत्ता—किंपुरिसहं राणा बिण्णि जण कहिय पुरिस किंपुरिस[9] वि ॥
घरिणिहि सोमप्पहतणुरुहेण अवलोयवि णवं[10]रविछवि ॥१॥

२

गंधव्वहं पहु समविसमणाम रक्खसहं भीम अवंतभीम ।
जक्खिद पुण्ण मणिभद्द भणिय भूयाहिव रूव विरूव भणिय[1] ।
तहिं काल महाकाल वि पिसाय दाविय गेहिणिहि पिसायराय ।

MB give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza :—

गुरुधर्मोद्भवपावनमभिनन्दितकृष्णमर्जुनोपेतम् ।
भीमपराक्रमसारं भारतमिव भरत तव चरितम् ॥ १ ॥

GK do not give it.

१. १. MB °णिउरुंबइं । २. MB तेवीसइं । ३. M अणागयहं । ४. B सुंदरु । ५. B omits this foot । ६. G करुज्जलु । ७. MB °थंभ । ८. MB णरिंद । ९. MB किंपुरिसा । १०. M णवरच्छवि; B अवरविछवि ।

२. १. MB मुणिय ।

सन्धि ३७

राजा जयकुमारने अनागत (आगामी) तेईस तीर्थंकरोंके, जिनसे किरणोंका समूह प्रसारित हो रहा है, ऐसी रत्ननिर्मित प्रतिमाओंको वन्दना की।

१

जबतक सुन्दरी चैत्योंकी वन्दना करती है कि वहाँ दो मुनिवर विद्यमान थे। वे दोनों देवोंके साथ उस समवसरणके लिए गये, जहाँ त्रिलोकशरण ऋषभ निवास करते थे। वधूवर भी गुरु चरणोंको नमस्कार कर उसी मार्गसे वहाँ गये। जिन भगवान्‌के दर्शनोंकी इच्छा रखनेवाले उन दोनोंने भी वहाँ पहुँचकर वर विजय वैजयन्तादि चारों दरवाजों और तोरणोंको देखा। मानरूपी मन्दराचलका नाश करनेवाले तथा माणिक्यकी किरणोंसे उज्ज्वल मानस्तम्भ, सरोवरों-की स्वच्छ खाइयों, खिली हुई लताओंवाली वेदिकाओं, प्राकारों, नटराजोंके घरों, मुनिनाथोंके निवासों, कल्पवृक्षोंके वन और एक योजनका बना हुआ मण्डप देखा, जिसमें विश्वजन समूह बैठा हुआ था। बत्तीस इन्द्र, (कल्पवासी १२, भवनवासी १०, व्यन्तर ८ और चन्द्र तथा सूर्य) एक भरतेश्वर चक्रवर्ती, जो मानो दूसरा इन्द्र था, ज्योतिषपति और चन्द्रसूर्य कि जो सत्पुरुषों और महापुरुषोंको पीड़ा उत्पन्न करनेवाले हैं, किन्नरपति दोनों महानागराज, कि जो काय और महाकायांकसे अत्यन्त भयानक थे।

घत्ता—किंपुरुषोंके दो इन्द्र थे जो पुरुष और किंपुरुष कहे जाते हैं। सोमप्रभके पुत्रने अपनी गृहिणीकी नये सूर्यके समान छवि देखकर ॥१॥

२

गन्धर्वोंका समविषम नामका राजा। राक्षसोंके भीम और अत्यन्त भीम, यक्षेन्द्र पुनः पुण्यभद्र और मणिभद्र कहे जाते हैं। भूतोंके राजा रूप और विरूप हैं। पिशाचोंमें वहाँ काल और

बल वइरोयण दणुइंद कहिय   णाइंद[2] धरण फणिवइ ण रहिय ।
पइ वेणुणालि पुणु वेणुदेउ   सोवण्णकुमारहं सोक्खहेउ ।
दीवहिं दीवंगउ दीवचक्खु   जलहिहिं जलकंतु जलप्पहक्खु[3] ।
अमियगइ अमियवाहण दिसेस   हरि हरिकंत वि सोदामणीस ।
गज्जंत एंति[4] अलिणीलदेह   थणियाहिव मेह महंतमेह ।
अग्गिव[5] अग्गि हुयवहसिहाहं   वेलंब पहंजण पवणणाहं ।
इय पेक्खिवि वीस वि भावणिंद   धम्माहिणंद वंदिय मुणिंद ।

घत्ता—विंभयपूरियहियउल्लएण हरिसुप्फुल्लियवयणें ॥
जय जय पभणंतें जयणिवेण चउदिसु पेसियणयणें ॥२॥

३

पाहेयपायणियडइ पइट्ठु[1]   पुणु वसहसेणु गणणाहु दिट्ठु ।
पुणु बीयउ गणहरु जइवरिंदु[2]   अवलोयउ कुंभु महारिसिंदु ।
दढरहु दिट्ठिपरियउ सत्तुदमणु   गणि देवसम्मु धणदेउ समणु ।
धम्माणंदणु इसिणंदणक्खु   जइ सोमयंतु[3] सुरदत्तु भिक्खु ।
गुंणि[4] वाउसम्मु झाणोवविट्ठु   देवग्गि अग्गिदेउ वि वरिट्ठु ।
रिसि[5] अग्गिगुत्तु अण्णेकु[6] गोत्तु   तेयंसिउ सत्तुहुयासगुत्तु ।
हलहरु महिहरु माहिंदु धीरु   वसुएउ वसुंधरु अचलु[7] मेरु ।
विण्णाणवंतु विण्णायणेउ   मुणि मयरकेउ हयमयरकेउ[8] ।
थिरचित्तु पवित्तु धरित्तिगुत्तु   सयलोसहिगुत्तु वि विजयगुत्तु ।
पुणु जण्णगुत्तु[9] पुणु सव्वगुत्तु   पुणु[10] सव्वत्थि आयमि पउत्तु ।
पुणु विजयभडारउ विजयमित्तु   विजइल सिरिअवराइउ णिरुत्तु ।
अवर वि परमेसर परमजोइ   चउरासी गणहर एवमाइ ।

घत्ता—विहिणा लिहिया[11] इव भित्तियले झाणलीण मणधीरा ॥
जोइय जएणं[12] जियजमकरणें[13] सव्व वि साहु भडारा ॥३॥

४

उग्गतवमहातवतत्ततवहं   दित्ततव तवंतहं घोरतवहं ।
तवसिद्धपुज्जविज्जाहराहं   अणिमाइगुणड्ढहं गुणहराहं ।
आहारयतणुलयधारयाहं   मयरहियहं मोक्खासारयाहं ।

---

२. MB णागिंद । ३. B जुलपहक्खु । ४. MB एंत । ५. MB अग्गिवइ ।

३. १. MB णिविट्ठु । २. MB जसयरिंदु । ३. MB सोमयत्त । ४. M मुणि चाउसम्मु; B मुणि चाउ समुज्झाणो° । ५. MB सिरि अग्गिगोत्तु । ६. MB सत्त° । ७. MB अचल । ८. M भय; B सय° । ९. MB जणयगुत्तु । १०. MB सव्वउत्तु आयम° । ११. MB लिहियाइ वि । १२. MB जण्ण । १३. B °करणा ।

महाकाल राजा हैं। बल और वैरोचन दानवेन्द्र कहे जाते हैं। नागराज धरणेन्द्र और फणीन्द्र भी बाकी नहीं बचे। स्वर्णकुमारोंके सुखके कारण उनके राजा वेणुवालि और वेणुदेव हैं। द्वीप-कुमारके दीपांग और दीपचक्षु हैं, समुद्रोंमें अलकान्त और जलप्रभ। दिक्कुमारोंके अमितगति और अमितवाहन। विद्युत्कुमारोंके हरि और हरिकान्त। भ्रमरके समान कृष्णशरीर स्तनितोंके देव मेघ और महन्तमेघ थे। अग्निज्वालाओंके अग्नि और अग्निदेव, पवनोंके स्वामी वेलम्ब और प्रभंजन इस प्रकार बीस भवनवासी इन्द्रोंको देखकर उन्होंने धर्मसे अभिनन्दनीय मुनियोंकी वन्दना की।

घत्ता—आश्चर्यसे भरे हुए हृदय और हर्षसे खिले हुए जय राजाने जय-जय कहते हुए तथा चारों ओर दृष्टि घुमाते हुए—॥२॥

३

वह नाभेय (ऋषभ) के चरणोंके निकट बैठ गया। फिर उसने प्रमुख गणधर वृषभनाथके दर्शन किये। फिर दूसरे गणधर यतिवरेन्द्र और महाऋषीन्द्र कुम्भको देखा। फिर धैर्यके समूह शत्रुदमन गणधर देवशर्मा, श्रमण, धनदेव, धर्मनन्दन, ऋषिनन्दन, यति सोमदत्त, भिक्षु सुरदत्त, ध्यानमें स्थित मुनि वायुशर्मा, देवाग्नि और वरिष्ठ अग्निदेव, मुनि अग्निगुप्त एक और दूसरे गोत्रके तेज अंशवाले अग्निगुप्त। हलधर, महीधर, धीर माहेन्द्र, वसुदेव, वसुन्धर, अचल मेरु, विज्ञानवान, विज्ञाननेय, कामदेवको नष्ट करनेवाले मुनि मकरकेतु, स्थिर चित्त, पवित्र, धरित्रीगुप्त, सकल औषधिगुप्त और विजयगुप्त भी, फिर यज्ञगुप्त और फिर सर्वगुप्त, फिर सर्वार्थगुप्त जैसा कि आगममें कहा गया है; फिर भट्टारक विजय, विजयमित्र, विजइल (विजयदत्त) और श्री अप-राजित और भी परमेश्वर परमज्योति इत्यादि चौरासी गणधर थे।

घत्ता—विधाताके द्वारा भित्तितलपर लिखे हुएके समान, ध्यानमें लीन और मनसे धीर, सभी यमको जीतनेवाले आदरणीय गणधरोंको जयने देखा ॥३॥

४

उग्र तप और महातप तपनेवाले, दीप्त तप तपनेवाले, घोर तपवाले, तपसे सिद्ध पूज्य विद्याओंको धारण करनेवाले, अणिमादि गुणोंसे सम्पन्न गणधरों, आहारक शरीरको धारण

अंचियलसुयसायरपारयाहं[1] णग्गाहं णीसंगहं णीरयाहं ।
पयचीयकोट्ठबुद्धीसराहं तेजेइ[2]यरिद्धिसिद्धिभासुराहं ।
पंचविहणाणउप्पा[3]ययाहं बुज्झियपयत्थपज्जायाहं ।
छम्मासवरिसउववासयाहं तरुको[4]डरकंदरवासियाहं ।
कंदप्पदप्पविणिवारणाहं जलसेढितं[5]तुणहचारणाहं ।
समसत्तुमित्तकंचणतणाहं पासायदीवणिच्चलमणाहं ।
दुज्जयपरवाइगिराहराहं[6] पेलियंकत्थहं लंबियकराहं[7] ।
खंचियक्खपक्खभिक्खारयाहं चउरासीसहसइं जईवराहं[8] ।

घत्ता—इहु सो सोमप्पहु दिव्वु मुणि इहु सेयंसु[9] वि समियमणु ॥
इहु पेक्खु[10] सुलोयणि तुज्झु पिउ रायरिसिंदु अकंपणु ॥४॥

५

इहु जोयहि भायसहासु[1] तुज्झु थिउ जाणिवि धम्महु तणउं गुज्झु ।
जेणासि सयंवरि सूरदित्ति रूसाविय महरणि अक्ककित्ति ।
इहु सो दुम्मरिसणु णरवरिंदु समभावि परिट्ठिउ हुउ मुणिंदु ।
सम्मत्तसुद्धिसोहियमईहिं णाणुग्गमणिज्झरियरईहिं ।
एकं[2]बरछइयथणत्थलीहिं दलवट्टियकलिमलकंदलीहिं ।
जल्लमलविलित्तं[3]गोयरीहिं विज्जाहरीहिं भूगोयरीहिं ।
सुइसीलसलिलसंगहसरीहिं सेवियकाणणमहिहरदरीहिं ।
आसंघियबंभीसुंदरीहिं लक्खाइं तिण्णि संजमधरीहिं ।
अज्जियसंखहि कहियाइं जाइं पण्णाससहसअहियाइं ताइं ।
तेत्तियइं जि लक्खइं सावयाहं परिपालियबारहविहवयाहं ।
जीवहं अदिण्णहिंसावईहिं तहिं पंचेवं[4] य लक्खइं सावईहिं ।

घत्ता—कागणिकरु[5] सुरगुरु फणिवइ वि परिगणन्तु मणि मुज्झइ ॥
पणवंतहं देवहं दाणवहं मिगहं[6] संख को बुज्झइ ॥५॥

६

अचंततत्ततवणीयवण्णु कंकेल्लिकुरुहछाहीणिसण्णु ।
पेच्छिवि सहमंडवि जगजणेरु णं जंबूदीवहु मज्झि मेरु ।
इच्छियभवभ[1]मणविणिग्गमेण सकलत्तं विलसियववसमेण ।

४. १. MB अचिलय° । २. MB ते जाय° । ३. MB °उप्पायणाहं । ४. M तवकोडर° । ५. M °सेढिय-तंतु° । ६. M reads this foot as 11 *a* । ७. M reads theis foot as 10 *b* । ८. B जईसराहं । ९. M सयंसु । १०. MB पेक्खि ।

५. १. MB भाइसहासु; K भायसहासु but corrects it to भायरसहासु । २. MB एकंबर° । ३. MB °विलित्तं° । ४. MB पंच जि लक्खइं; K पडच्चच वि लक्खइं । ५. MB °कर । ६. MB मिगहं ।

६. १. MB भवभवण° ।

करनेवाले मदसे रहित, मोक्षकी आशामें लीन रहनेवाले, अविचल श्रुतरूपी सागरको पार करनेवाले, नग्न-अनासंग-निष्पाप, कोष्ठ बुद्धीश्वरोंको पदोंमें प्रणत करानेवाले, तेजमें ऋद्धियों और आगसे भास्वर, पाँच प्रकारके ज्ञानको प्राप्त करनेवाले, पदार्थ और उनके पर्यायोंको जाननेवाले, छह माह और एक वर्षमें उपवास करनेवाले वृक्षोंकी कोटरों और पहाड़ी कन्दराओंमें निवास करनेवाले, कामदेवके दर्पको चूर-चूर करनेवाले, जलश्रेणी-तन्तु और आकाशमें विचरण करनेवाले, शत्रु-मित्र, काँच और कंचनमें समताभाव धारण करनेवाले, प्रासादमें रखे हुए दीपक समान निश्चल मनवाले, अजेय पर-सिद्धान्तवादियोंकी वाणीका अपहरण करनेवाले, पर्यंकासनपर हाथ लम्बे कर बैठे हुए इन्द्रियोंके पक्षका नाश करनेवाले, भिक्षामें रत चौरासी मुनिवरोंको देखा।

घत्ता—यह वह दिव्य मुनि सोमप्रभ हैं। यह वह मनको शान्त करनेवाले राजा श्रेयांस हैं। यह देखो सुलोचने, तुम्हारे पिता राजर्षि अकम्पन हैं ॥४॥

५

यह देखो तुम्हारे एक हजार भाई हैं जो धर्मका रहस्य जानकर स्थित हैं। जिसने स्वयंवरमें सूर्यके समान दीप्तिवाले अर्ककीर्तिको महायुद्धमें रुष्ट किया था, यह वह दुर्मर्षण नरवरेन्द्र समभावमें स्थित मुनीन्द्र हो गया है। सम्यक्त्व और शुद्धिसे शोभित बुद्धिवाली ज्ञानके उद्गमसे रतिको नष्ट करनेवाली, अपनी स्तनरूपी स्थलीको एक वस्त्रसे आच्छादित करनेवाली, पापमलके अंकुरोंको नष्ट करनेवाली, प्रस्वेदमलसे विचित्र अंगसे गोचरी करनेवाली, पवित्र शीलरूपी जलके संग्रहकी नदी, कानन और महीधरोंकी घाटियोंमें निवास करनेवाली, ब्राह्मी और सुन्दरीकी शरण लेनेवाली, संयम धारण करनेवाली, विद्याधरियों और मनुष्यनियोंकी संख्या तीन लाख थी। जितनी आर्यिकाओंकी संख्या कही गयी है, उसमें पचास हजार अधिक और उतने ही लाख—अर्थात् साढ़े तीन लाख बारह प्रकारके व्रतोंको धारण करनेवाले श्रावक थे। जीवमात्रको हिंसाकी आपत्ति नहीं देनेवाली वहाँ पाँच लाख श्राविकाएँ थीं।

घत्ता—कागणिकर, बृहस्पति, नागराज भी संख्या गिनते हुए मनमें मूर्च्छित हो जाते हैं। उन्हें प्रणाम करते हुए देवों, दानवों और पशुओंकी संख्या कौन समझ सकता है ॥५॥

६

अत्यन्त तपे हुए सोनेके रंगके समान, अशोकवृक्षकी छायामें विराजमान सभामण्डपमें जगत्पिताको देखकर, मानो जम्बूद्वीपके बीचमें सुमेरुपर्वत हो, भवभ्रमणसे निवृत्तिकी इच्छा रखने-

इह चक्कवट्टिसेणाहिवेण पारद्धु थुणहुं जयपत्थिवेण ।
जय देव दिण्णपविमलमणीस जय जिण तिहुयेण[2]चूडामणीस ।
जय जीवलोयबंधव दयाल जय पुरुतित्थंकर सामिसाल ।
जय कप्परुक्ख जय कामधेणु जय चिंतामणि भयतरुकरेणु ।
जय सयरायरलोयावलोय संसारमहण्णवतरणपोय ।
घत्ता—पइं एयाणेयवियप्पणयणाएं वारियँ[3] परमपय ॥
पइं जीवहं थावरजंगमहं खयभीयहं भासिय जीवदय ॥६॥

७

वड्ढं[1]वियमिच्छामोहरयइं समयहं तेसट्ठइं तिण्णि सयइं ।
पइं जिणिवि णाह जं तच्चु सिट्ठु तं मुणइ ण बंभु ण रुद्दु विट्ठु ।
सयलहं मणि णिवसइ सामलंगि[2] विड संभरंति किं सत्तभंगि ।
तुहुं जाणहि तिजगु वि वीयराउ तुहुं इंदमउड[3]मणिघडियपाउ ।
तुहुं परमप्पउ देवाहिदेव हउं करेवी तुहारी चरणसेव ।
इय वंदिवि जिणु जियतरुणिविरहु पणविवि संभासिउ तेण भरहु ।
पहु मेल्लहि गच्छमि करि पसाउ तवचरणु लेमि भंजमि विसाउ ।
तं सुणिवि चवइ[4] रायाहिराउ लइ रज्जु तुहुं जि जय होहि राउ ।
ण पहुच्चइ जइ तुह गयउरेण तो पूरइ किं ण धरायलेण ।
एएं सयलेण वि सरयणेण आयड्ढियणवणिहिहडधणेण ।
हउं अच्छमि अंतेउरि पइट्ठु तुहुं भुंजहि महि आसणि णिविट्ठ[5] ।
घत्ता—मा जाहि तवोवणु चगुपमुह वेहाविउ रिउ रायहि ॥
पइं जेहउ वीरु[6] महाभडु वि जिप्पइ विसयकसायहिं ॥७॥

८

जिणण्हवणवारिधुयमंदरेण[1] ता विहसिवि चविउ पुरंदरेण ।
मेल्लिहि[2] भरहाहिव जाउ एहु हासइ गणहरु तवलच्छिगेहु ।
तियसिदहु तं पडिवण्णु तेण णियपणइणि आउच्छिय जएण ।
जं चिरु पि[3]उणिलयहु णिग्गयाइं जं णासिवि सरवासहु[4] गयाइं ।
जं सत्तिसेणपरिपालियाइं अरिणा घरि सिहिणा जालियाइं ।
जं भंगुरणहरहिं दारियाइं बिण्णि वि मज्जारें मारियाइं ।
मुणिवरइं खलेण णिहालियाइं जं पिउवणजलणें पउलियाइं ।
वेउव्वियतणुसोहाहराइं जायाइं सग्गि जं वहुवराइं ।
जं वणि पचारिउ भीमसाहु जं हूयउ सो तेलोक्कणाहु ।
तं सुयरमि सुंदरि जामि अज्ज साहेवउं मइं परलोयकज्ज ।

---

२. T तिहुवण° । ३. MB धारिय; T निवारिता निराकृता ।
७. १. K वड्ढारिय° । २. MB भणिघिट्ठय° (घिट्ठ ?) । ३. MB करमि । ४. B भणइ । ५. MB बइट्ठु । ६. MB धीर ।
८. १. G मंदिरेण । २. MB मेल्लहि । ३. MB पिय° । ४. MK सरवाहहु ।

वाले उपशमभावसे शोभित अपनी पत्नीके साथ चक्रवर्ती भरतके सेनापति राजा जयकुमारने स्तुति प्रारम्भ की—"विमल बुद्धि देनेवाले हे देव, आपकी जय हो, त्रिभुवन श्रेष्ठ आपकी जय हो, जीवलोकके बन्धु और दयालु आपकी जय हो, पुरुतीर्थंकर स्वामिश्रेष्ठ आपकी जय हो, हे कल्पवृक्ष, हे कामधेनु, जय हो। हे चिन्तामणि और मदरूपी वृक्षके लिए गज, आपकी जय हो। सचराचर लोकका अवलोकन करनेवाले आपकी जय हो, संसाररूपी समुद्रके सन्तरण पोत (जहाज) आपकी जय हो।

घत्ता—हे परमपद, आपने एकानेक (अद्वैत-क्षणिक आदि विकल्प) के विकल्पवाले नयके न्यायसे परमतका निवारण किया है, आपने क्षयसे भयभीत स्थावर-जंगम जीवोंके लिए जीवदयाका कथन किया है ॥६॥

७

मिथ्यामोह और रतिको बढ़ानेवाले तीन सौ त्रेसठ मतोंको जीतकर, हे स्वामी, आपने जिस तत्त्वकी रचना की है, उसे ब्रह्मा, विष्णु और शिव नहीं जानते। सभीके मनमें श्यामलांगी (सुन्दरी) निवास करती है, वे विट, सप्तभंगोको क्या याद कर सकते हैं। हे वीतराग, आप तीनों लोकोंको जानते हैं। तुम परमात्मा और देवाधिदेव हो। मैं तुम्हारी चरणसेवा करूँगा। इस प्रकार जिनकी वन्दना कर, रमणीके विरहको जीतनेवाले भरतको प्रणाम कर उसने उनके साथ सम्भाषण किया—"हे प्रभु, छोड़ दीजिए, मैं जाता हूँ। प्रसाद करिए, मैं तपश्चरण लूँगा और दुःखका नाश करूँगा?" यह सुनकर राजाधिराज भरत कहता है—"हे जय, लो तुम्हीं राज्य ले लो, तुम्हीं राजा हो जाओ। यदि तुम्हें गजपुर पर्याप्त नहीं है, तो धरतीतल तथा रत्नों सहित इस समस्त नवनिधिरूपी घड़ोंमें संचित धनसे भी क्या पूरा न पड़ेगा। मैं अन्तःपुरमें प्रवेश करके रहता हूँ। तुम सिंहासनपर बैठकर धरतीका भोग करो।

घत्ता—हे सेना प्रमुख, तुम तपोवनके लिए मत जाओ, शत्रुराजाओंसे विजय वृद्धिको प्राप्त तुम-जैसा वीर महासुभट भी (क्या ?) विषय कषायोंसे जीता जा सकता है ? ॥७॥

८

तब जिन भगवान्‌के अभिषेक-जलसे मन्दराचलको धोनेवाले इन्द्रने हँसकर कहा—हे भरताधिप, आप इसे छोड़ दें, यह जाये। तपलक्ष्मीका घर यह गणधर होगा। तब भरतने देवेन्द्रके लिए इसकी स्वीकृति दे दी। जयकुमारने अपनी पत्नीसे पूछा—"जो पहले हम पिताके घरसे निकले थे, और जब सरोवरवासपर भागकर गये थे और (सामन्त) शक्तिषेणने हमारा पालन किया था, और घरमें शत्रुके द्वारा आगसे जलाये गये थे, जो भंगुर नखोंसे हम विदीर्ण किये गये थे, और दोनों मार्जारके द्वारा मारे गये थे, हम मुनिवर उस दुष्टके द्वारा देखे गये थे, और जो मरघटमें जलाये गये थे, और जो वैक्रियिक शरीरकी शोभा धारण करनेवाले स्वर्गमें वधूवर हुए थे, और जो हमने वनमें भीमसाधुको पुकारा था, और जो वह त्रिलोकनाथ हुआ, हे सुन्दरी, मैं उस

घत्ता—आयण्णिवि चल संसारगइ विहुणियसव्वसरीरए ॥
आमेल्लिय पिययमु पणइणिए कन्नु वि गिरिधीरए ॥८॥

९

लहुयहिं विजयाइहिं भायरेहिं दिज्जंतु वि धम्मकयायरेहिं ।
अवगण्णिउं तेणु जिह पुहइरज्जु भयभावजणणु णं पीयमज्जु ।
हक्कारिउ पुत्तु अणंतवीरु गुरुविणयवंतु परलोयभीरु ।
तहु पट्टु णिबंधिवि जेयरवेण जिणवरु जयकारिवि घणरवेण ।
आउच्छिवि जीवाजीवभेय परियाणिवि णाणाणाणणेय ।
अरिमित्ति पउंजिवि सरिस दिट्ठि सिरि लोउ विइण्णउ पंचमुट्ठि ।
दव्वें भावेण वि मुक्कगंथु णिग्गंथु णियच्छियमोक्खपंथु ।
जउ दिक्खंकिउ पणविउ जईहिं अट्ठहिं सएहिं सह णरवईहिं ।
तेणंगइं बारह सिक्खियाइं चोद्दह पुव्वइं उवलक्खियाइं ।
सो मुणिवरु मेल्लिवि मोहवासु जायउ गणहरु रिसहेसरासु ।
घत्ता—संभरमि पुव्वभवसंचरिउ वम्महपसरणिवारा ॥
अणुगामिणि तुम्हहु होमि हउं संजमु धरमि भडारा ॥९॥

१०

जइयहुं वणिवरकुलि वणिवराइं रिउभइयइं छड्डियमंदिराइं ।
कयकम्मपहावें विणडियाइं णासंतइं काणणि णिवडियाइं ।
णियकंतइ सहुं सुहिहियययेणु जइयहुं सरि मिलियउ सत्तिसेणु ।
जइयहुं मुणिवेज्जावच्चु कियउ हियउल्लउं काइं वि धम्मि थियउ ।
जइयहुं जायइं पारावयाइं लइयइं दोहिं वि सावयवयाइं ।
जइयहुं उप्पण्णइं खेयराइं लीलालंघियविउलंबराइं ।
रिसिदंसणेण विंभियमणाइं जइयहुं सुराइं बिण्णि वि जणाइं ।
तइयहुं लग्गिवि वट्टइ णिरुत्तु भो तुज्झु चरित्तु जि सहुं चरित्तु ।
णीसेसजीवसंतीयरेण तं वयणु समिच्छिउ मुणिवरेण ।
सज्जणगुणगेहणाणंदियाइ अप्पिय सुंदरिइ सुहद्दियाइ ।
घल्लिउ सकेसु लुंचिवि सणेहु वयसीलगुणहिं भूसियउ देहु ।
उम्मुक्कवियारपलोयणाइ लइयउ तवचरणु सुलोयणाइ ।
घत्ता—घुसिणारुण जे थणहारमणि मंडिय ते मलमइलिय ॥
णं वम्महपहुअहिसेयघड रयपंगुत्त णिहालिय ॥१०॥

---

९. १. MB तिणु । २. MB हक्कारिवि पुणु । ३. MB जयवरेण । ४. MB जयकारेण । ५. M दिव्वें । ६. M तुम्हहं होमि; K तुम्हहुं होमि ।

१०. १. MB णिवडियाइं । २. MB तुहुं पइं । ३. M भज्जु । ४. MB °गहणें णंदियाइ । ५. MB सकेस । ६. MB वय° । ७. MB उम्मुक्कपियारयलोयणाइ ।

सबको याद करता हूँ, आज मैं अब जाता हूँ। मैं अब अपना परलोक कर्म सिद्ध करूँगा।'

घत्ता—संसारकी चंचल गति सुनकर, अपने समस्त शरीरको कँपाते हुए, पर्वतकी तरह धीर उस प्रणयिनीने चाहते हुए भी प्रियतमको मुक्त कर दिया ॥८॥

९

धर्मका आदर करनेवाले विजय आदि छोटे भाइयोंने भी दिये जाते हुए पृथ्वीराज्यको तृणके समान समझा और पिये गये मद्यके समान मदभावको उत्पन्न करनेवाला समझा। उसने अनन्तवीर्य पुत्रको बुलाया, जो गुण और विनयसे युक्त परलोक-भीरु था। जयकुमारने उसे राज-पट्ट बाँधकर, मेघस्वरवाले उसने जिनकी जय-जयकार कर, जीव-अजीवके भेदको जानकर, नाना ज्ञानोंसे ज्ञेय जानकर, शत्रु और मित्रमें समान दृष्टि कर, पाँच मुट्ठियोंसे सिरके बाल उखाड़ लिये, और द्रव्य तथा भावकी दृष्टिसे परिग्रहमुक्त हो गया। निर्ग्रन्थ और मोक्षपथको देखनेवाले दीक्षासे अंकित जयको आठ सौ राजाओंके साथ मुनियोंने प्रणाम किया। उसने बारह अंगोंको सीखा और चौदह पूर्वोंको उपलक्षित किया। वह मुनिवर मोहपाश छोड़कर, ऋषभेश्वरका गणधर हो गया।

घत्ता—हे कामदेवके प्रसारका निवारण करनेवाले आदरणीय, मैं पूर्वभवकी गतियोंको स्मरण करती हूँ, मैं तुम्हारी अनुगामिनी बनूँगी, मैं संयम धारण करूँगी ॥९॥

१०

जब वणिग्वरके कुलमें हम वणिक् थे और शत्रुसे भयभीत होकर हमने अपना घर छोड़ा था, अपने किये गये कर्मके प्रभावसे प्रतारित हम भागते हुए जंगलमें गये। उस समय सुधीजनोंके हृदयका चोर (सामन्त) शक्तिषेण अपनी कान्ताके साथ सरोवरपर मिला। जब हम लोगोंने मुनिकी वैयावृत्य की और किसी प्रकार हृदय धर्ममें स्थित हुआ। जब हम कबूतर हुए, हम दोनोंने श्रावक व्रत ग्रहण किये। जब हम लीलासे विशाल आकाशका उल्लंघन करनेवाले विद्याधर हुए, जब मुनिदर्शनसे विस्मितमन हम दोनों सुर हुए। तबसे लेकर हम वधू और पति रहे। अरे, तुम्हारा चरित्र ही हमारा चरित्र है। (सुलोचनाके) ये वचन, निःशेष जीवोंको शान्ति प्रदान करनेवाले मुनिवरने पसन्द किये। सज्जनोंके गुणोंको ग्रहण करनेमें आनन्दित होनेवाली आर्यिका सुभद्राके लिए अर्पित उस सुन्दरी सुलोचनाने स्नेहके साथ अपने केश उखाड़कर फेंक दिये और व्रत तथा शीलगुणोंसे अपने शरीरको भूषित कर लिया। उन्मुक्त विचारसे देखनेवाली सुलोचना-ने तपश्चरण ले लिया।

घत्ता—केशरसे अरुण तथा स्तनहार-मणियोंसे मण्डित जो स्तन मानो कामदेवरूपी राजाके अभिषेकके घट थे, धूल-धूसरित वे अब मलसे मैले दिखाई दिये ॥१०॥

११

गंधारिगोरिपण्णत्तियाउ चिरभवविज्जउ परिचत्तियाउ[1] ।
विच्छड्डियघरवावारतत्ति अपरिग्गह थिय जयरायपत्ति ।
ता पियविओयसिहितवियकाय जूरइ अणंतवरवीरमाय ।
हा पुत्त पडिच्छिउ काइं पट्टु विणु पिउणा रज्जें को मरट्टु ।
इंदियइं पंच णेउ[2] पीलियाइं झाणेण ण णयणइं मीलियाइं ।
मई पावइ काइं जियंतियाइ पइविच्छोएं तप्पंतियाइ ।
इय सा जंपंति मुयंति रिद्धि णियसुयहु देंति परलोयबुद्धि ।
मंतिहिं विणिवारिय दिण्णकामि थिय रायसासणाणंदधामि ।
घणरवघरिणिउ वयपयणईउ अवरे[3]उ संजायउ संजईउ ।
चयारसंगसुयधारिणीइ णाणापुरगामविहारिणीइ ।
देवीइ अकंपणु तणुरुहाइ रॅयणहिं[4] सकहंतरु कहिउ ताइ ।
घत्ता—गुरु पुच्छिउ बंभीसुंदरिहिं देव तिलोयालोयण ॥
अग्गइ कहिं संभउ जयरिसिहि होसइ केत्थु सुलोयण ॥११॥

१२

भुवणत्तयलोयसुहंकरेण ता भणिउं पढमतित्थंकरेण ।
उप्पाइवि केवलु विमलु णाणु जाएसइ जउ णिव्वाणठाणु ।
होइवि अहमिंदु सुलोयणा वि सुहभावें भावाभावभावि ।
माणियणिव्वाणरईरमाइ सुहुं भुंजिवि बहुसायरसमाइ ।
होही कणयद्धउ[1] णाम राउ तउ चरिवि पणासिवि रोसु[2] राउ ।
लहिही सुहुं[3] अमरणु अकरणालु जेवड्डु सलिलु तेवड्डु णालु ।
णिप्पज्जइ णलिणहु णत्थि भंति जिणधम्मि पंसु वि[4] सुरिंद होंति ।
जिणधम्मि छिज्जइ मोहमूलु[5] जिणधम्मु सव्वकल्लाणमूलु ।
घत्ता—जिणधम्मु पमाइवि[6] मूढमइ जो परधम्महु लग्गइ ॥
चउरासीजोणिलक्खविहुरि णिवडिउ सो कहिं णिग्गइ ॥१२॥

१३

मागहमंडलपरमेसरासु चेलिणिकमलिणिणवणेसरासु ।
खाइयसम्मत्तणिहीसरासु आगामि[1]तइयभवजिणवरासु ।
सेणियहु कहइ रिसि पुंसियसंकु[2] गोत्तमु दियँ[3]गोत्तंबरमियंकु ।
गणहरु रिसिसंघहु तिलयभूउ जयराउ एक्कहत्तरिमु हूउ ।

११. १. MB पत्तत्तियाउ । २. MB ण णिवीलियाइं । ३. MB अवर वि । ४. MB रयणिहि ।
१२. १. B कणयद्धउ । २. MB सो सुराउ । ३. MB सुहुं अमणु अकरणालु । ४. MB पुण वि ।
५. MB मोहजालु । ६. B मुएवि ।
१३. १. MB आगम्मि । २. MB असियसंकु । ३. MB दियगोत्तें वर° ।

११

चिरभवमें अर्जित गन्धारी, गौरी और प्रज्ञप्ति विद्याएँ उसने छोड़ दीं। गृह व्यापारकी तृप्तिको छोड़नेवाली जयकी पत्नी परिग्रहसे हीन होकर स्थित हो गयी। तब प्रियके वियोगकी ज्वालासे सन्तप्तकाय अनन्तवीरकी माता पीड़ित हो उठती है—'हे पुत्र, तुमने राजपट्ट क्यों स्वीकार किया? पिताके बिना राज्यमें क्या अहंकार? तुमने पंच इन्द्रियोंको पीड़ित नहीं किया। ध्यानके द्वारा अपने नेत्रोंको निमीलित नहीं किया। पति-वियोगमें तड़पती हुई और जीती हुई मुझसे क्या पाया जायेगा?' इस प्रकार कहती हुई और अपने पुत्रको परलोककी बुद्धि देती हुई समस्त ऋद्धि छोड़ देती है। परन्तु मन्त्रियोंके मना करनेपर, कामनाओंकी पूर्ति करनेवाले राज्य-शासनके केन्द्र हस्तिनापुरमें वह स्थित हो गयी। व्रतरूपी जलकी नदी, जयकुमारकी वह पत्नी एक दूसरी आर्यिका हो गयी। ग्यारह अंगश्रुतोंको धारण करनेवाली' तथा नाना पुरों और ग्रामोंमें विहार करनेवाली राजा अकम्पनकी पुत्री उस देवीने रत्ना श्राविकाको अपना कथान्तर बताया।

घत्ता—ब्राह्मी और सुन्दरी देवियोंने गुरुसे पूछा—"त्रिलोकको देखनेवाले हे देव, जयमुनिका अगला जन्म कहाँ होगा, और सुलोचना कहाँ होगी?" ॥११॥

१२

तब भुवनत्रयलोकके लिए कल्याणकर प्रथम तीर्थंकरने कहा—"जय केवल विमलज्ञान उत्पन्न कर निर्वाणस्थानको प्राप्त करेगा। यह सुलोचना भी, भावाभावका विचार करनेवाला अच्युतेन्द्र देव होगी। माना है देवोंकी रति और लक्ष्मीको जिनमें ऐसे अनेक वर्षों तक सुखका भोगकर, यह कनकध्वज राजा होगी, और तपकर तथा रागद्वेषका नाश कर, इन्द्रियशून्य और मृत्यु रहित सुख प्राप्त करेगी। जितना बड़ा पानी, उतना बड़ा नाल कमलके उत्पन्न होता है, इसमें भ्रान्ति नहीं है। जिनधर्मसे पशु भी देवेन्द्र होते हैं। जिनधर्मसे मोह की जड़ नष्ट होती है। जिनधर्म सबके कल्याणका मूल है।

घत्ता—जो मूढ़मति जिनधर्मको छोड़कर परधर्ममें लगता है, चौरासी लाख योनियोंके संकटमें पड़ा हुआ वह कहाँ निकल पाता है? ॥१२॥

१३

मागध मण्डलके परमेश्वर चेलनारूपी कमलिनीके लिए नये सूर्यके समान क्षायिक सम्यक्त्वरूपी निधिका ईश्वर, आगामी तीसरे भवमें तीर्थंकर होनेवाले राजा श्रेणिकसे, शंकाको पोंछ देनेवाले, ब्राह्मणरूपी आकाशके चन्द्र गौतम ऋषि कहते हैं—"मुनिसंघमें श्रेष्ठ जयराजा

सईसिद्धु भडारउ दुहविणासु संपत्तउ सो तिजगग्गवासु ।
गेहिणि हूई अच्चुइ सुरिंदु कालें महि विहरइ जिणवरिंदु ।
णिरँसणभूसणभूसिउ अणंतु दीसइ सुरयणु तं सहुं चलंतु ।
आयासहु णिवडइ पुप्फविट्ठि चउअहियइं चमरइं चारु सट्ठि ।
जहिं पाउ देइ तहिं तहिं जि कमलु सुरवइ जुंजइ गुरुभत्तिविमलु ।
जहिं वसइ तहिं कासु वि ण दुक्खु जहिं वसइ तहिं जि कंकेल्लिरुक्खु ।
सीहासणु छत्तइं तिण्णि थंति तिहुयणपहुत्तु णाहहु कहंति ।

घत्ता—जाणिज्जइ सूयरसंवरहिं मृगमायंगतुरंगहिं ॥
जिणणाहहु भासिउ परिणवइ सयलजीवभासंगहिं ॥१३॥

१४

सुव्वेइ दुंदुहि णहि वज्जमाणु पणवइ जणवउ पुलइज्जमाणु ।
देसोहिव उच्चायंति चरुउ बहुकुसुमगंधपरिमलिउ मरुउ ।
भामंडलु णवरविमंडलाहु गच्छंति समउं बहुभेय साहु ।
पुव्वंगधारि तवतणुसरीर मणपज्जवणाणि सँहावधीर ।
देसावहिपरमावहिसमेय केवलिकेवलणाणेक्कतेय ।
णवदिक्खिय सिक्खुयं संत दंत[13] वेउव्वियाइं बहुरिद्धिवंत ।
णिहयक्खयअक्खयपयसमीह कइगमयवाइ वाईहं सीह ।
जहिं गच्छइ तहि गच्छंति भव्व जहिं अच्छइ तहिं अच्छंति सव्व ।
माणव तिरिक्ख सुरवर असंख हू हू हुयंति चउदिसिहिं संख ।
झं झं करंति झुणि झल्लरीउ णच्चंति णरामरसुंदरीउ ।
तुंबुरु णारय गायंति मिट्ठु भरहें दिट्ठउ पिउं सुहुं णिविट्ठु ।

घत्ता—आउच्छिउ धम्मु महीसरेण जं जिह जेहउ पेक्खइ ॥
केवलि परमप्पउ णिक्कलुसु तं तिह तेहउ अक्खइ ॥१४॥

---

४. MB णिवसण°; K णिवसण but corrects it to णिरसण° । ५. MB सीहासण । ६. MB मिग° ।

१४. १. M सुम्मइ; B सव्वइ । २. B दोसाहिव । ३. B चारु । ४. M °मलियगरुउ; B °मलिउ गारु । ५. M adds after this in second hand and in the margin : चउसहसदलमयसयविहीर । ६. B °णाण । ७. M दुइदहसहास । ८. M adds after this in second hand and in the margin : रिसि सयपण्णास विमुक्कु वास । ९ M adds after this in second hand and in the margin : तेरंचसहस पयडियविवेय; B adds : मुणिरंचसहस पयडियविवेय । १०. M °केवलणाणक्क°; B °केवलिणाणक्क° । ११. M adds after this in second hand and in the margin : णयणग्गई चउसुण्णहिं समेय; B adds : णयणग्गई चउसुण्णसमेय । १२. MB °सिक्खिय° । १३. M adds after this in second hand and in the margin : दहविउणसहसरिउसयमहंत; B adds : दहविउणसहस रिउसयसहंत, ण हु चयभयदोएक्कु वि णिरीह । १४. B णिहिअक्खयसुअक्खय° । १५. MB सव्व । १६. MB जिणु । १७. B सुहणिविट्ठु ।

इकहत्तरवें गणधर हुए। स्वयंसिद्ध आदरणीय, दुःखका नाश करनेवाले वह तीनों लोकोंके अग्रवास (मोक्ष) में स्थित हुए। उनकी गृहिणी सुलोचना अच्युत स्वर्गमें देवेन्द्र हुई। समयके साथ जिनवरेन्द्र धरतीपर विहार करते हैं, वह अनन्त अनाहारके आभूषणसे भूषित हैं। उनके साथ चलता हुआ सुरजन दिखाई देता है। आकाशसे फूलोंकी वर्षा होती है, चौसठ चमर ढुराये जाते हैं, वह जहाँ भी पैर रखते हैं वहाँ-वहाँ कमल होते हैं, गुरुभक्तिसे विमल देवेन्द्र उन्हें जोड़ता है। वह जहाँ चलते हैं, वहाँ किसीको दुःख नहीं होता। वह जहाँ ठहरते हैं, वहाँ अशोक वृक्ष होता है, सिंहासन और तीन छत्र होते हैं और वे नाथकी त्रिभुवनप्रभुता घोषित करते हैं।

घत्ता—जिनवरका कहा हुआ समस्त जीवोंकी भाषाके अंगस्वरूप परिणमित हो जाता है। सुअर, साँभरों, मृग,'मातंग और अश्वोंके द्वारा वह जान लिया जाता है" ॥१३॥

१४

आकाशमें बजती हुई दुन्दुभि सुनाई देती है; पुलकित होकर लोक प्रणाम करता है। उनके अर्घ-पात्रको देश-देशके राजा उठाते हैं, प्रचुर कुसुम गन्धसे मिली हुई हवा बहती है। नवसूर्य मण्डलके समान आभावाला भामण्डल तथा अनेक प्रकार साधु साथ चलते हैं। पूर्वांगको धारण करनेवाला, तपसे कृश शरीर, मनःपर्यय ज्ञानवाला, स्वभावसे धीर, देशावधि और परमावधि-ज्ञानसे युक्त केवली, केवलज्ञानरूपी सूर्यसे तेजस्वी, नवदीक्षित, शिक्षक, शान्त और दांत। विक्रियाऋद्धिसे बहु-ऋद्धियोंसे सम्पन्न। इन्द्रियोंके नाशक अक्षयपदमें इच्छा रखनेवाला और कैतव आगमवादियोंमें सिंह। वे जहाँ जाते हैं, वहाँ भव्य चलते हैं, वे जहाँ हैं, वहाँ सब रहते हैं। मानव, तिर्यंच, असंख्य सुरवर तथा चारों दिशाओंमें शंखोंकी हूँ-हूँ ध्वनि होने लगी। झालरें झं-झं ध्वनि करती हैं, नर और अमरोंकी सुन्दरियाँ नृत्य करती हैं। तुम्बुर और नारद मीठा गान करते हैं। भरतने पिता जिनको वहाँ बैठे हुए देखा।

महीश्वर भरतने धर्म पूछा। निष्कलुष परम केवली परमपदमें स्थित वह, जो जैसा देखते हैं उसको उसी प्रकारसे वह कहते हैं ॥१४॥

१५

गुणु मोक्खु तउ वि पोग्गोलु वि दुविहु   णिज्जरु[2] वि दुविह वज्जरइ अरहु ।
भुवणाइं तिण्णि रयणाइं तिण्णि   सल्लाइं तिण्णि गुत्तीउ तिण्णि ।
जीवहं गईउ कहियाउ[3] तिण्णि   जगवेढणमरु गारव वि तिण्णि ।
गुणवयइं तिण्णि जगि जोय तिण्णि   हयकालें भासिय काल तिण्णि ।
चउविहु चउगइ संसारसरणु[4]   बालाइउ चउविहु भणिउं मरणु ।
चउविहु पमाणु चउविहु जि दाणु   चउविहु दव्वाइउ दीसमाणु ।
चउ झाणइं चउ देवहं णिकाय   चउभिण्णा[5] चउविह चउकसाय ।
चउविहु जि बंधु चउविहु जि णासु   विणउ वि चउविहु गुणगणणिवासु ।
चत्तारि वि बंधविणासहेउ   भासइ णिज्जियजलजायकेउ ।

घत्ता—सज्झाय पंच आयारविहि णाणइं पंच वेरिट्ठइं[6] ॥
णिग्गंथ पंच जोइसकुलइं[7] पंचेंदियइं वि सिट्ठइं ॥१५॥

१६

अणगारागारिवयाइं पंच   पंचत्थिकाय समिदीउ पंच ।
आसवणिबंधहेऊ उ पंच   लद्धीउ महाणरया वि पंच ।
संसार सरीरइं होंति पंच   गुरु पंच मेरु गिरिवर वि पंच ।
छज्जीवकाय छकाल समय   छल्लेसाभाव वि समय वि मय ।
छद्दव्वइं छावासयविहीउ   सत्त वि भय सत्ताहोमहीउ ।
पयईउ अट्ठ पुहईउ अट्ठ   (वणदेव जीवगुण ते वि अट्ठ ।)
णव णारायण णव सीरधारि   पडिसत्तु वि णव णिहि दुक्खहारि ।
णवविह पयत्थ दहभेउ[2] धम्मु   वेज्जावच्चु वि दहविहु सुकम्मु ।
दह भावणसुर भवणंतवासि   फणिससिसह दह दिसिगय सुहासि ।
एयारह रुद रउद्दभाव   एयारहविह सावय विगाव ।
पच्छित्तइं अणुवेक्खावयाइं[3]   बारह जिणवयणविणिग्गयाइं ।
बारह णरिंद पालियरहंग   बारह[4] तव बारहविह सुयंग ।

घत्ता—तेरह चरियंगइं अक्खियइं[5] तेरह किरियाठाणइं ॥
चउदह गुणठाणारोहणइं चउदह मग्गणठाणइं ॥१६॥

---

१५. १. MB पोग्गलु दुविहु । २. MB णिज्जर । ३. MB कहियाइं । ४. MB संसारगमणु । ५. MB चउचउभिण्णा चउविह कसाय । ६. MB विसिट्ठइं । ७. MB जोयस° ।

१६. १. MB °गारवयाइं । २. MB दहभेय । ३. B अणुवेहावयाइं । ४. MB बारह तव बारहविह सुयंग । ५. MB रक्खियइं ।

१५

गुण, मोक्ष, तप और पुद्गल भी दो प्रकारका है। अरहन्त निर्जराको भी दो प्रकारका बताते हैं। भुवन तीन हैं, रत्न तीन हैं, शल्य तीन हैं, गुप्तियाँ भी तीन हैं, जीवकी गतियाँ भी तीन कही गयी हैं। जगको घेरनेवाले गर्व भी तीन हैं, गुरुव्रत तीन हैं, जगमें भोग भी तीन हैं, समयको नष्ट करनेवालोंने काल भी तीन प्रकारका कहा है। चार गतियाँ, चार प्रकारका संसारका संचरण; बालादि चार प्रकारका मरण भी कहा गया है। प्रमाण चार प्रकारका है, दान चार प्रकारका है; दिखाई देनेवाले द्रव्य भी चार हैं, चार ध्यान हैं, देवोंके निकाय चार हैं, चार-चार प्रकार की, चार-चार कषायें हैं। बन्ध चार प्रकारका है, उनका नाश चार प्रकारका है, गुणगणकी निवास विनय भी चार प्रकारकी है? बन्ध और विनाशके कारण चार हैं। इस प्रकार कामदेवका नाश करनेवाले जिन कहते हैं।

घत्ता—सत् ध्यान पाँच हैं, आचार विधि और श्रेष्ठ ज्ञान भी पाँच हैं, निर्ग्रन्थ मुनि पाँच प्रकारके हैं, ज्योतिषकुल पाँच हैं, इन्द्रियाँ भी पाँच कही गयी हैं ॥१५॥

१६

मुनि और श्रावकके व्रत पाँच-पाँच हैं। पाँच अस्तिकाय हैं, समितियाँ पाँच हैं, आश्रव और बन्धके हेतु पाँच हैं। लब्धियाँ और महानरक पाँच हैं। सांसारिक शरीर पाँच होते हैं; गुरु पाँच होते हैं, सुमेरुपर्वत भी पाँच होते हैं। जीवकाय छह होते हैं। समयकाल छह होते हैं। लेश्याभाव छह होते हैं, सिद्धान्त और मद भी छह होते हैं। द्रव्य छह हैं, आवश्यक विधियाँ छह होती हैं। भय भी सात,...प्रकृतियाँ आठ हैं, पृथिवियाँ आठ हैं, व्यन्तर देव और जीवगुण भी आठ हैं। नौ नारायण, नौ बलभद्र, प्रतिनारायण भी नौ, दुःखका हरण करनेवाली निधियाँ भी नौ। पदार्थ नौ प्रकारके। दस प्रकारका धर्म। सुकर्मा वैयावृत्य भी दस प्रकारका। भवनान्तवासी भावनसुर दस प्रकारके होते हैं, धरणेन्द्र और चन्द्रमाके साथ दस दिग्गज शोभित होते हैं। रुद्र ग्यारह हैं, रुद्रभाव भी ग्यारह हैं। गर्वरहित श्रावक भी ग्यारह प्रकारके हैं। जिन-वचनोंसे उत्पन्न पश्चात्ताप और अनुप्रेक्षाएँ बारह। चक्रका पालन करनेवाले चक्रवर्ती बारह। बारह प्रकारके तप। और श्रुतांग भी बारह प्रकार का।

घत्ता—चारित्र्यके प्रकार तेरह और क्रियाके स्थान भी तेरह कहे गये हैं। गुणस्थानोंका आरोहण चौदह प्रकारका है, और मार्गणाके स्थान भी चौदह हैं ॥१६॥

१७

अरहंतें सिद्धंतें[1]सियाइं चउदह पुव्वाइं पयासियाइं ।
चउदह मल चउदह चित्तगंथ चउदह कुलयर कयमणुयसंथ ।
चउदह रयणइं गुणिगोहियणाम[2] चउदह दक्खालिय भूयगाम ।
पण्णारह कम्मधराविहाय पण्णारह उवएसिय पमाय ।
सोलह वयणइं दुहदारणाइं सोलह जिणजम्महु कारणाइं ।
संजम दहसत्त दहट्ठ दोस [3]णाहज्झाणइं एकूणवीस ।
असमाहिणिलय वज्जरिय वीस कयमणमल सयल[4] वि एक्कवीस ।
बावीस परीसह कुमुणिभीस सुहँय[5]कुज्झयणाइं वि[6] तिवीस ।
तित्थयर भणिय चउवीस ईस मुणिवयमायउ पुणु पंचवीस ।
छव्वीस समासिय वसुहभेय गुण सत्तवीस जइवरविहेय ।
आयारकप्प पवरट्ठवीसँ[7] अघसुत्ताइं वि एऊणतीस ।
भणियाइं मोहमंदिरइं तीस ।

घत्ता—एयाहिय[8] तीस विवायरस कम्महं कहिय जिणेसें ॥
बत्तीसुवएस मुणीसरहं कुडिलाउंचियकेसें ॥१७॥

१८

जं जलि थलि णहि पायालमूलि जं थूलु सुहुमु तिजगंतरालि ।
तं पुच्छंतहु पणवियसिरासु भासिउं जिणेण भरहेसरासु ।
गुरु वंदिवि णिंदिवि दुरिउ दुट्ठु गउ णिउ णियपुरु णिलयणि पइट्ठु ।
णरणाहें रयणिहि सुत्तएण सिविणंतरि गुरुपयभत्तएण ।
सूयरदाढाखंडियकसेरु हल्लुलिउ णिहालिउ तेण मेरु ।
अक्खिउ पहाइ सुयणहु हिएण सिविणेय[1]विवरणउं पुरोहिएण ।
किउ णयणगलियजलबिंदुएहिं वच्छत्थले[2]हारोवरि चुएहिं ।
तिट्ठारयणियरिविलु[3]क्कमाणु कालाहिमहामुहि णिवडमाणु[4] ।
उद्धरिवि लोउ अण्णाणु[5] दीणु चउदह दिण[6] वरिससहासहीणु ।
महि विहँरिवि[7] पुव्वहं एक्कु लक्खु केलासु पराइउ णाणचक्खु ।
पावणवणकुसुमामोयमहुरु आरुहिवि पसिद्धउ सिद्धसिहरु[8] ।

घत्ता—दससं[9]दहसहिं समउ महारिसिहिं कामकोहणिण्णासणु ॥
थिउ पुण्णिमदियहि जिणाहिवइ बंधिवि पलियंकासणु ॥१८॥

---

१७. १. MB सिद्धंताइयाइं । २. MB मुणिगणियणाम । ३. MB णाहाझाणइं । ४. MBK सवल । ५. MB सुहयज्झडयणाइं । ६. B तिण्णि वीस । ७. M adds after this : वयसमिदिपमुह जंपइ जईस । ८. MB एयाहितसि ।

१८. १. MB सुविणय° । २. MB वच्छत्थलु । ३. MB °पाणु । ४. MB णिविडमाणु । ५. MB अण्णाण । ६. MB °दिणु । ७. G विवरिवि । ८. MB सिद्धिसिहरु : ९. K दह° ।

१७

अरहन्तके द्वारा सिद्धान्तपर आश्रित चौदह पूर्व प्रकाशित किये गये हैं। चौदह मल हैं, चित्तग्रन्थ भी चौदह हैं, चौदह कुलकर, जो मानव संस्थाका निर्माण करनेवाले हैं। गुणियोंके द्वारा जिनका नाम लिया जाता है, ऐसे चौदह रत्न बताये गये हैं; भूतग्राम भी चौदह बताये गये हैं। कर्मभूमिका विभाग पन्द्रह है, पन्द्रह प्रमादोंका भी उपदेश किया गया है। दुःखका नाश करनेवाले सोलह वचन होते हैं, जिनके जन्मके कारण भी सोलह होते हैं। संयम सत्तरह होते हैं, दोष अठारह हैं, नाथ—ध्यान उन्नीस होते हैं, कुमुनियोंको डरानेवाले बाईस परिग्रह होते हैं···नाथ—ध्यान तेईस होते हैं। तीर्थंकर ईश चौबीस होते हैं, मुनिपदको प्राप्त पच्चीस होते हैं; वसुधाके भेद छब्बीस हैं, यतिवरके भेद करनेवाले गुण सत्ताईस हैं। आचार कल्पके अट्ठाईस भेद हैं, और अर्थसूत्रोंके उनतीस। मोहरूपी मन्दिरके तीस भेद कहे गये हैं।

घत्ता—कुटिल और आकुंचित केशवाले जिनेश्वरने कर्मोके इकतीस विकार-रस कहे हैं, और मुनीश्वरोंके लिए बत्तीस उपदेश ॥१७॥

१८

जो जल, थल, नभ, पातालमूल और तिजगके भीतर स्थूल और सूक्ष्म है, प्रणतसिर उसे पूछते हुए भरतेश्वरके लिए आदि जिनने सब बताया। गुरुको वन्दना कर, और दुष्ट पापकी निन्दा कर भरत अपने नगरके लिए गया, और उसने अपने घरमें प्रवेश किया। रात्रिमें सोते हुए जिनवरके चरण-कमलोंके भक्त भरतने स्वप्न देखा कि जिसका शिखर सुअरकी दाढ़से खण्डित है, ऐसा सुमेरुपर्वत धरतीपर लुढ़क रहा है। सवेरे भरतने यह स्वजनोंसे कहा। हितकारी पुरोहितने, वक्षःस्थलके हारपर गिरती हुई, नयनोंसे झरती हुई अश्रुबिन्दुओंकी धारा द्वारा स्वप्नका विवरण बता दिया। तृष्णारूपी निशाचरीके द्वारा विलुप्त, कालरूपी महासर्पके मुखमें पड़ते हुए, दीन-अज्ञानी लोकका उद्धार कर, जब एक हजार वर्षसे कम चौदह दिन शेष बचे, तब एक लाख पूर्व धरतीपर विहार कर ज्ञाननयन ऋषभनाथ कैलास पर्वतपर पहुँचे। पवित्र वनके पुष्पोंके आमोद-से मधुर प्रसिद्ध सिद्ध शिखरपर आरोहण कर—

घत्ता—काम और क्रोधका नाश करनेवाले जिनाधिप ऋषभ दस हजार महामुनियोंके साथ पूर्णिमाके दिन पर्यंकासन बाँधकर बैठ गये ॥१८॥

घिप्पंतिहिं णवकुसुमंजलीहिं उब्भियउल्लोवधयावलीहिं ।
सहलक्खयधूववविलेवणेहिं भिंगारहिं कलसहिं दप्पणेहिं ।
आढत्तचित्तथुइकलयलेहिं अवरेहिं वि णाणामंगलेहिं ।
कप्पूरचंदणागुरुतुरुक्क[3] सलु[4] विरइय खंडिवि विविह रुक्ख ।
अंचेप्पिणु रिसिपरमेसरासु तहिं णिहियउ अंगु अणंगणासु ।
पय पणवंतहिं तंविरंतिडिक्कु अग्गिदहिं मउडाणलु विमुक्कु ।
घत्ता—अलहंतु णरत्तणु थरहरिउ भवपरिभवणहु भग्गउ ॥
सिहि णं संसारें तासियउ[5] जिणकमकमलहुं लग्गउ ॥२१॥

२२

उल्ललिउ[1] धूमु घणजणियसंकु णं सिहिणा मुक्कउ मलकलंकु ।
पुणु मिलिउ गयणि जालाकलाउ तणु पत्तु खणद्धें भप्फभाउ[2] ।
तहु कुंडहु गणहरजमदिसाइ मुणिवर सक्कारिय पच्छिमाइ ।
तिण्णि वि सिहि पुज्जिय सोत्तिएहिं घय जव[3] तिल घल्लिवि खत्तिएहिं ।
तं भणिवि पुण्णज्जणु पवित्तु अण्णेक्कहिं लइयउ अग्गिहोत्तु ।
भालेयलि[4] कंठि भुजेजुयलसिहरि[5] हिप्पंकइ णिहियउ णाहिविवरि ।
अणु मुद्धेपसि[6] मउडग्गभाइ जसमंडणुं जिह तं सहइ काइ ।
घत्ता—जं तुम्हहं जायउ मोक्खु[7] सुहुं तं महु होउ पियारउ ॥
इय भणिवि तियाउसु वंदियउ इंदें रिसहहु केरउ ॥२२॥

२३

जेही तुह तेही होउ बोहि अम्हहं वि भडारा मेणि[1] समाहि ।
इय घोसंतहिं कप्पामरेहिं वंदियउ तियाउसु खेयरेहिं ।
विंतरदेतहिं जोइसगणेहिं वंदियउ तियाउसु भावणेहिं ।
णंदादेवीइ महासईइ वंदियउ तियाउसु जसवईइ ।
भरहेण दुक्खदूमियमणेण वंदियउ तियाउसु परियणेण ।
केसरिकिसोरसरि सिहरिवासि घणतुहिणकणाउलि माहमासि ।
सूरंग्गमि[2] कसण[3]चउद्दसीहि णिव्वुइ तित्थंकरि पुरिससीहि ।
रोवइ सोयाउरु सयणविंदु सइं सोयइ भरहु महाणरिंदु ।
तेलोक्कमंदिराधारखंभु कहिं पेच्छमि देउ जुगाइबंभु ।
घत्ता—पईं विणु जिण अंधइं लोयणइं दिसउ असेसउ सुण्णियउ[4] ॥
उब्भिवि हत्थ ओम्मोहियउ[5] पयउ वरायउ रुण्णियउ[6] ॥२३॥

---

२. MB धूम° । ३. B पुरुक्क । ४. M सयल विहय खंडिवि; B सलु विय रयवि खंडिवि ।
५. BM ताविियउ ।

२२. १. B जलिय° । २. K भप्प° । ३. MB घय तिल जव । ४. G भायलि । ५. MBK भुयजुयल° ।
६. MB मुद्धएस । ७. MB मोक्खसुहुं ।

२३. १. MB मणसमाहि । २. MB सूरुग्गमि । ३. B किसण° । ४. B सुण्णउ । ५. MB ओमाहियउ ।
६. MB रुल्लियउ ।

गिरती हुई कुसुमांजलियों, ऊपर उड़ती हुई ध्वजावलियों, फल-अक्षत-धूप और विलेपनोंसे युक्त भिंगारों, कलशों और दर्पणों, प्रारम्भ की गयी विचित्र स्तुतियोंके कलकल शब्दों और दूसरे नाना मंगलोंके साथ कपूर-चन्दन-अगुरुसे मिश्रित विभिन्न वृक्षोंको काटकर चिता बनायी गयी; फिर ऋषि परमेश्वरकी पूजा कर, कामदेवका नाश करनेवाले उनके शरीरको उसपर रख दिया गया। चरणोंमें प्रणाम करते हुए, अग्नीन्द्रने मुकुटरूपी अनलसे लाल स्फुलिंग छोड़ा।

घत्ता—मनुष्यत्व नहीं पानेके कारण थरथर काँपता हुआ, संसारके परिभ्रमणसे भग्न एवं संसारसे त्रस्त होकर मानो अग्नि जिनवरके चरण-कमलोंसे जा लगी ॥२१॥

२२

मेघकी आशंका उत्पन्न करनेवाला धुआँ उठा, मानो आगने अपना मल कलंक छोड़ दिया हो। फिर उसका ज्वालासमूह आकाशसे जा मिला और उसका शरीर आधे क्षणमें वाष्परूपमें बदल गया। उस कुण्डका (चितास्थान) गणधरोंने यमकी दिशा (पूर्व दिशा) से सत्कार किया, मुनिवरोंने पश्चिम दिशासे, और ब्राह्मणों और क्षत्रियोंने घी, जौ तथा तिल डालकर तीन दिशाओंसे आगकी पूजा की। उसे पवित्र पुण्यार्जन मानकर, दूसरे कई लोगोंने अग्निहोत्र यज्ञ स्वीकार कर लिया। भालतल, कण्ठ, दोनो बाहुओंके बाजुओं, हृदयकमल और नाभिविवरपर, बादमें मस्तक प्रदेश और मुकुटके अग्रभागपर विहित वह भस्म ऐसा मालूम देता है, जैसे शरीर यशसे मण्डित हो।

घत्ता—जिस प्रकार तुम्हें मोक्ष-सुख प्राप्त हुआ है, वह प्यारा सुख मुझे भी हो, यह विचारकर इन्द्रने ऋषभके उस भस्मकी वन्दना की ॥२२॥

२३

"हे आदरणीय, जिस प्रकार तुम्हें बोधि प्राप्त हुई, वैसी हमारे मनमें भी समाधि हो।" यह कहते हुए कल्पवासी देवों और विद्याधरोंने भस्मकी वन्दना की। व्यन्तरदेवों, ज्योतिषगणों और भवनवासियोंने भी भस्मकी वन्दना की। महासती नन्दादेवी और यशोवतीने भस्मकी वन्दना की। दु:खसे पीड़ित मन भरतने और परिजनोंने भी भस्मकी वन्दना की। जिसमें सिंहके शावकोंका शब्द है ऐसे पर्वतपर निवास करनेवाले माह माघमें कृष्ण चतुर्दशीके दिन सूर्योदयकालमें पुरुष-श्रेष्ठ तीर्थंकर ऋषभके निर्वाण प्राप्त करनेपर शोकसे व्याकुल स्वजन समूह रोने लगता है, महा-नरेन्द्र भरत स्वयं शोकमें डूब जाता है कि त्रैलोक्यरूपी मन्दिरके आधार-स्तम्भ और युगके आदि ब्रह्मदेवको मैं कहाँ देखूँगा।"

घत्ता—हे जिन, आपके बिना नेत्र अन्धे हैं, अशेष दिशाएँ सूनी हैं। बेचारी उत्कण्ठित प्रजा अपने दोनों हाथ ऊपर कर रो पड़ी ॥२३॥

२४

तुहुं मज्झ बप्पु जगडिंभबप्पु पइं विणु को कहइ कलावियप्पु ।
पइं विणु को पालइ इट्ठु सिट्ठु को विसहइ गुरुतवचरणणिट्ठु ।
पइं विणु को जाणइ तच्चभेउ को होइ देव देवहिं वि देउ ।
पइं विणु अणाहु सामिय तिलोउ ता गणहरु भणइ म करहि सोउ ।
इह सो मुउ जो मुउ गब्भि वसइ छिज्जइ भिज्जइ दुहदलिउ रसइ ।
तुहु ताउ देउ तित्थयरु पवरु परमप्पउ हूयउ अजरु अमरु ।
सक्केण जि तं जि पउत्तु तासु जो सुयरंतहं णासइ किलेसु ।
सो तुहुं किं सोयहि जणणु भणिवि जो जायहु सिद्धु तमोहु धुणिवि ।
अरहंतु सरंतहं होइ धम्मु मा मोहें तुहुं संचहि दुकम्मु ।
तं णिसुणिवि राएं दुण्णिरिक्खु मड्डइ साहारिउ तायदुक्खु ।
घत्ता—गउ सुरवइ सग्गहु ससुरयणु वंदिवि परमजिणेसरु ॥
मंडलियमहामंडलियवइ साकेयहु भरहेसरु ॥२४॥

२५

सोमप्पहु हयसुहदुक्खहेउ सेयंसराउ बाहुबलि देउ ।
गय णिव्वाणहु तिजगुत्तिमंगि थिय तिण्णि वि अट्ठमधरणिरंगि ।
सहुं गणणाहहिं उव्वारुएहिं णासियभयमोहमहारुएहिं ।
णिद्धाडियसाडियकम्मरेणु कालेण गलंतें वसहसेणु ।
गउ मोक्खहु उववणरमियखयरि एंत्तहि वि तेत्थु साकेयणयरि ।
कुंकुमविलेउ ढोयंतएण दप्पणयलि मुहुं जोयंतएण ।
अवलोइवि पंडुरु एक्कु केसु णिंदिवि णरजम्मु सुणिव्विसेसु ।
णयरायरपुरवरपउरदेस णियसुयहु समप्पिवि महि असेस ।
भूएसु भूरिपसरियकिवेण तवचरणु लइउ भरहाहिवेण ।
परिवडइ ण चिहुरुप्पाडु जाम उप्पण्णउं केवलु तासु ताम ।
हूयउ परमेट्ठि परमप्पताणु चउदेवणिकायहिं थुव्वमाणु ।
फेडिवि भव्वहं मणमोहयालु महिमंडलि विहरिवि दीहकालु ।
घत्ता—गउ भरहु वि मोक्खु विसुद्धमइ विविहकम्मबंधणचुउ ॥
[10]फणिविसहरकिंणरपवरणरपुप्फयंतगणसंथुउ ॥२५॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे सगणहररिसहणाहभरहणिव्वाणगमणं णाम सत्ततीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ ३७ ॥

संधि ॥ ३७ ॥

॥ समाप्तमादिपुराणम् ॥

---

२४. १. M दुहमलिउ । २. MB मंडइ । ३. MB हिययदुक्खु ।

२५. १. MB तिजगुत्तमंगि । २. MB उच्चारुएहिं । ३. MB °महाभएहिं । ४. MB °सारिय°; T साडिय । ५. MB गणंतें । ६. MB उववणि । ७. B एत्तहि तेत्थु । ८. M परस्स ताणु; B परप्पताणु । ९. M °कम्मबंधेहिं चुउ; B कम्मबंधेहिं चुव । १०. MB फणिखेयर° ।

२४

"विश्वरूपी बालकके पिता, तुम मेरे पिता हो। तुम्हारे बिना कलाविकल्प कौन बतायेगा? तुम्हारे बिना इष्ट प्रजाका पालन कौन करेगा? महान् तपश्चरणकी निष्ठा कौन सहन करेगा? तुम्हारे बिना तत्त्वका रहस्य कौन जानेगा? हे देव, देवोंका देव कौन होगा? हे स्वामी, तुम्हारे बिना यह त्रिलोक अनाथ हो गया।" तब गणधर कहते हैं—"तुम मत शोक करो। यह जो मर गया, वह मरकर गर्भमें बसता है, छीजता है, भेदको प्राप्त होता है और दुःखसे पीड़ित होकर चिल्लाता है। तुम्हारा पिता, हे देव, महान् तीर्थंकर, अजर-अमर परमात्मा हो गये हैं। इन्द्रने भी उससे यही कहा कि जो स्मरण करनेवालोंके क्लेशका नाश करते हैं, तुम पिता कहकर, उनके लिए शोक क्यों करते हो? जो तमःसमूहका नाश कर सिद्ध हो गये हैं। अरहन्तको स्मरण करनेवालोंका धर्म होता है, तुम मोहके द्वारा दुष्कर्मका संचय मत करो।" यह सुनकर राजा भरतने बलपूर्वक पिताके दुःखको सहन किया।

घत्ता—परमजिनेश्वरकी वन्दना कर इन्द्र देवों सहित स्वर्ग चला गया, तथा माण्डलीक और महामाण्डलीकपति भरतेश्वर साकेत चला गया ॥२४॥

२५

सुख-दुःखके कारणको नष्ट करनेवाले सोमप्रभ, राजा श्रेयांस और देव बाहुबलि भी निर्वाणको प्राप्त हुए, और त्रिलोकके उत्तमांग आठवीं धरतीकी भूमिपर तीनों स्थित हो गये। मदमोहरूपी महारोगका नाश करनेवाले, उद्धार करनेवाले, गणधरोंके साथ, पूर्वार्जित कर्मरजको नाश करनेवाले गण वृषभसेन, समय बीतनेपर मोक्ष गये। यहीं, जहाँ उपवनमें विद्याधरियाँ रमण करती हैं, ऐसे साकेत नगरमें भी केशरविलेप लगाते हुए, दर्पणतलमें मुख देखते हुए भरतने एक सफेद बाल देखकर निरवशेष मनुष्य जन्मकी निन्दा कर, नगर आकर पुरवर प्रचुर देश और अशेष धरती अपने पुत्रको समर्पित कर प्राणिमात्रमें कृपाका प्रसार करनेवाले उसने तपश्चरण स्वीकार कर लिया। उखाड़े हुए बाल जबतक धरतीपर गिरें, इतनेमें उसे केवलज्ञान प्राप्त हो गया। वह स्वपरका रक्षक परमेष्ठी हो गया। चारों निकायोंके देवोंके द्वारा स्तूयमान वह भव्यजनोंके मनके मोहजालको नष्ट कर और लम्बे समय तक धरतीपर विहार कर—

घत्ता—विशुद्धमति विविध कर्मबन्धनोंसे रहित, नागों, किन्नरों, प्रवर नरों और ज्योतिष-गणोंके द्वारा संस्तुत भरत भी मोक्ष चले गये ॥२५॥

इस प्रकार त्रेसठ महापुरुषोंके गुण-अलंकारोंसे युक्त महापुराणमें महाकवि पुष्पदन्त द्वारा विरचित एवं महाभव्य भरत द्वारा अनुमत महाकाव्यका सगणधर ऋषभनाथ भरत निर्वाण गमननामका सैंतीसवाँ परिच्छेद समाप्त हुआ ॥३७॥

NOTES

[The references in these Notes are to Saṁdhis in Roman figures and Kaḍavakas and lines in Arabic figures. T. stands for Tippaṇa of Prabhācandra]

XIX.

[Bharata then thought that the wealth he acquired would be of no use if it was not given to worthy persons, popularly known as Brahmins. These Brahmins, according to him, were persons who observed the vows laid down by the Jinas. He gave largely and liberally to such persons presents such as clothes etc.

One day Bharata saw a bad dream towards the end of the night. He was very much disturbed by the dream and hence went to see Risaha the next morning. After offering prayers to him Bharata asked him to tell him how and by what meritorious act Risaha became a Jina and Bharata as cakravartin, Bāhubali a strong man, Śreyāṃsa a liberal donor, and Somaprabha a meritoriors ruler. Risaha then narrated to him how there would come hard times of Duḥṣamā when all notions of morality would be completely changed.]

8. 13 अवसवणउं, अपस्वप्नः, a bad dream.

10. 12–13 धीवरिखरिपुत्तहं देहिति पहुत्तणु, they will give full powers to persons like व्यास who is the son of a fisherwoman and दुर्वासस् who is the son of a female ass. व्यास is known to be the son of सत्यवती by पराशर, but the origin of दुर्वासस् as the son of a female ass I am not able to trace.

12. 2*a* पंचमजुगि, i.e., in दुष्षमा.

XX.

[Risaha first refutes various theories of creation and states that the elements that constitute the universe are earth, air, fire and water, and that these are beginningless and endless. The universe is not created by either Brahmā, Viṣṇu or Siva. In the midst of this universe is situated the human world called Tiriyaloya with many islands and oceans. There on the western side of the mountain Meru there is a region named Gandhela with its capital Alayā (Alakā). There ruled a king named Aibala (Atibala) with his queen

Manoharā. A son named Mahābala was born to them and as soon as he attained youth king Atibala decided to place him on the throne and renounced the worldly life. King Mahābala thereafter began to rule the earth. He had four ministers named Mahāmai (Mahāmati), Saṃbhinnamati, Satamati and Saiṃbuddha (Svayaṃbuddha). Now one day this Svayaṃbuddha told the king the futility of pleasures of the world, and advised him to practise the pious life as recommended in Jainism. Then Mahāmati, championing the cause of the Cārvāka school, advocated the doctrine of the identity of the body and the soul. The minister Svayaṃbuddha refuted the doctrine of Mahāmati, when Saṃbhinnamati advocated the doctrine of momentariness advanced by the Buddhists. This doctrine of momentariness was also refuted by Svayaṃbuddha when Satamati came forward with his doctrine of illusion. Svayaṃbuddha refuted this doctrine also.

Svayaṃbuddha then narrated to king Mahābala a story of one of his ancestors, viz. Aravinda. This Aravinda had two sons named Haricandra and Kuruvinda. One day Aravinda suffered from a terrible burning sensation in his body, and, when he found that it did not alleviate by any remedy, asked his son Kuruvinda to prepare a pool of blood of animals, bathing in which, he said, would stop his sufferings. Kuruvinda obeyed his father's command, but prepared a pool of artifical blood (liquid lac). When Aravinda entered it he tasted the liquid and found that his son had deceived him. He then ran after his son to kill him, but stumbled on the way and was killed by his own sword.

There was another ancestor of Mahābala named Daṇḍaka. His son was named Maṇimāli. He amassed a large fortune and having died became an ajagara (a kind of non-poisonous snake) and kept a watch over his wealth. One day Maṇimāli came to the house and saw the snake. The snake recollected his former birth and recognising his son did him no harm. Maṇimāli was surprised to see this, went to the sage and asked him who the snake was. On learning that he was his father, Maṇimāli came home and instructed him in the Jain doctrine. The snake practised it and was born as a god in the next birth. The god came to his son Maṇimāli and offered him a present of a necklace which Mahābala had been wearing.]

17. 2–5 अणिहणइं etc. The four elements, viz., the earth, the air, the fire and the water have no beginning, no end and are not caused by any. Whenever these four elements combine, marks of cetanā become visible. Life comes into existence in the elements as intoxicating element does by the com-

bination of raw sugar, water and flour. There is thus no difference between the body and the soul. This is the doctrine of the Cārvāka school.

18. 9*b* पउरंदरिय वित्ति, the doctrine of Puraṃdara, i. e., Indra, who along with Bṛhaspati is mentioned as founder of the Cārvāka school. 10–11. विणु जीवें etc. If elements combine without jīva or soul and form themselves into a body, then let there be a body in a jar where a concoction of herbs is kept; in other words living bodies may come into being even in test-tubes.

19. 11 रिसिसमयहु भत्तएण, by one who was the devotee of the doctrine of the sage i. e. Jina. 12. णिरण्णउ, निरन्वयम्, without continuity.

21. 3. आयासु etc. A Ṭiṭṭibha bird, saying that the sky will fall, is frightened, and rests raising up its legs (to support the falling sky).

XXI.

[Svayaṃbuddha further told Mahābala that his father, grand-father and great–grandfather had all attained auspicious places as a result of their pious life. On hearing this he also went to the Mandara mountain to pay homage to the Jine. Just at this juncture there arrived a pair of Cāraṇamunis. Svayaṃbuddha saluated them and asked them about the future of his master Mahābala. They thereupon told him that he was destined in the tenth birth to be a Tīrthaṃkara; but in his past life he was the son, named Jayavarman, of king Srīṣeṅa and queen Sundarī. As the king gave his throne to his younger son Srīvarman, Jayavarman felt that he should turn out to be a monk. He therefore went to Tīrthaṃkara Svayaṃprabha of the past age and became a monk. Now at this juncture there arrived a Vidyādhara king with a huge paraphernalla. The young monk Jayavarman was so much impressed by the king's fortune that he formed a hankering to have, as a result of his penance, royal fortune similar to that of the king in his next life. It was on this account that in the subsequent birth he was born as Mahābala, Svayaṃbuddha then went to Mahābala, saved him from his other ministers who were misleading him. As Mahābala had only one more month of life left to him, he decided to die a saṃnyāsa maraṇa. He was born in the Īśāna heaven after death, as a god named Lalitāṅga and had as his consorts Svayaṃprabhā and Kanakaprabhā]

2. 12 करु णिउ सेसासयदलहो, he stretched his hand (to pick up) a lotus flower from among those that were offered to the images of the Jinas.

4. 4*b* कि भव्वु अभव्वु व वज्जरहु, tell me whether Mahābala is bhavya, i. e., capable of attaining emancipation or no.

8. 1a बद्धउ णियाणु, he formed a hankering or cherished a desire that his ascetic life should bring him some reward in the following birth. 9 मणकुडिलत्तें, i. e., on account of मायाशल्य.

XXII.

[One day Lalitāṅga saw some signs such as the withering of flowers on his body which indicated that his period of life as a god was to come to an end soon. He was very much frightened but was advised that he should better spend the rest of his life in doing some pious acts. He thereupon went to worship the Jinas. In course of time he died and was born as son named Vajrajaṃgha to king Vajrabāhu. Now while Vajrajaṃgha had been growing on the earth, his consort Svyaṃprabhā wept bitterly for the loss of her husband, and after her death, was born as daughter named Śrīmatī to king Vajradanta and queen Lakṣmīmatī of Pundariṅkiṇī. One day when this Śrīmatī was half asleep, she saw a dream of a visit of a Jina with a large number of gods attending on him. She was immediately reminded of her former brith and former husband and fell on the ground in a swoon. She was soon brought round and her parents were called in. The king soon discovered that his daughter was love-sick. He therefore put her under the care of a wise nurse and asked her to ascertain the person loved by her.

At this juncture a report was brought to him that Jasahara attained Kevalajñāna and Cakra made its appearance in his armoury. The king immediately went to pay homage to the Jina, and as a result of this act he obtained Avadhijñāna. He came home and told his daughter the story of her former life in heaven and assured her by saying that she would soon meet her former lover, and then went away on his conquest of the world.

One day the nurse attending on her asked her to speak out her mind. Thereupon Śrīmatī told her that she was in the third previous birth the youngest daughter named Nirṇāmikā of a poor merchant named Nāgadatta who had a large family of ten. One day while this Nirṇāmikā was returning from the forest where she had picked some fruit, she saw a large crowd of people going to meet the Jina. She also went there, paid homage to the Jina and asked him why she was born poor. Thereupon the Jina told her that in her previous birth she put the dead body of a dog on a monk, but as the monk was unaffected by it, she removed it on the third day out of compassion. As a result of this act she was born poor. The Jina thereafter explained to her the true nature of Dharma and asked her to observe one hundred and fifty-eight fasts so that she would get rid of her inauspicious acts. She did accor-

dingly and after death was born in Īśāna heaven as wife of Lalitāṅga. Six months after his death, she also came to the earth and was born as Śrīmatī. On recollecting her love to Lalitāṅga she fainted. Having narrated the story of her past lives, Śrīmatī drew on canvas the portrait of Lalitāṅga and asked her nurse to find him out.]

9. 11*b* सवलहणउं सवलहणु व दिहिहरु, the scented paste (सवलहणउं, समालम्भनम्) takes away my courage as it destroys force (स्वबलहृन्) or as if it is like a bath to the dead (शव + लम्भन).

11. 8*b* अतियालउ संबुद्धतियालउ, although he (i. e. Jina) is destitute of wife or consort (तियाल-स्त्रीसहित, अतियाल-स्त्रीरहित) he knows the three times, viz., past, present and future (तियाल, त्रिकाल).

15. 6*a* अम्हइं दहजणाइं, we ten people, i. e., father, mother, five sons, viz., नंद, नंदिमित्त, नंदिषेण, वरसेण and विजयसेण, and three daughters, viz , सिरिवहा, सिरिहरा and णिण्णामिया. Note the use of जण with numerals which is preserved in Marathi. Compare : आम्ही दहा जण, दहा जणी, दोघे जण, पाच जण etc. 10*b* मइं उच्चोलि भरिय माहुरयहु, I filled the cavity of my clothes (particularly of the कटीवस्त्र) with a vegetable called माहुरय which is similar to spinach (माठ or पोकळा). This माहुरय seems to be a common article of food as vegetable available to poor people.

18. 9*a* धम्मु होइ घइ णियमुहदंसणि, there is merit, i. e., one acquires merit by looking his face into ghee. This line and several others in this kaḍavaka mention some of the beliefs or superstitions of Brahmanic religion.

19. 11 पण्णासट्ठुत्तरु, etc. If, O young girl (बालि), you observe one hundred and fifty eight fasts on the fifth day of the bright half (सियपंचमि, शुक्लपंचमी) of the month, you shall get rid of your past sins. शुक्लपञ्चमीनामष्टपञ्चाशदधिकशतपरिणामोपवासैः (परिमाणोपवासैः ?) श्रुतसागरविधिर्भवति तासामेव समषष्टिभिरुपवासैः जिनगुणसंपत्तिविधिरिति, T.

XXIII.

[The nurse of Śrīmatī then took the portrait painted on canvas and went to the temple of the Jinas, and announced to the people that the person who would read correctly the events painted on the canvas, would marry the princess Śrīmatī. A crowd of princes from different countries arrived there to try their luck, but to no purpose. Now her father returned from his conquest of the world and narrated to her the story of his former lives.

Vajradanta said : In my fifth previous birth I was born as son named Candrakīrti of an Ardhacakravartin. I had a friend named Jayakīrti. We both of us enjoyed the kingdom for a long time, and having practised penance,

were born next in the Māhendra heaven. After that we were both born as Baladeva and Vāsudeva named Srīvarman and Vibhīṣaṇa to king Srīdhara and queen Manoharā of the town of Ratnasaṃca. When we attained youth, our father handed over the kingdom to us, practised penance and obtained kevalajñāna. Our mother remained at home, but spent her time in doing pious acts. She was born next as god Lalitāṅga. In course of time my brother Vibhīṣaṇa died, but not knowing that he was dead I carried on my shoulder his body and wandered form place to place. God Lalitāṅga, i. e., my mother in the previous birth, saw this, and in order to bring me round, stood on the way crushing sand to extract oil from it. I asked him what he was doing, and on hearing from him his objective, told him that he would not get oil from sand. The god then asked me why I had been carrying the dead body of my brother as it would not regain life. Then I realised that my brother was dead. I did the funeral rites for my brother, gave my kingdom to my son, practised penance, and after death was born as Indra in the Acyuta heaven.

Vajradanta narrates further the various births of Lalitāṅga till he is born in Utpalakheḍa as Vajrajaṃgha.]

3. 2 सो सरसरविहिण्णु सा ण लहइ, he, being hit (विहिण्णु, विभिन्नः) by the arrows (सर, शर) of the god of love (सर, स्मर), does not secure her (सा). Note that सा is used here as Acc. sing. feminine, which is very rare in Apabhraṃśa.

5. Note the शृंखलायमक or दामयमक here. Note particularly *7a* which line looks apparently incomplete as there is no *7b* in any of the Mss. The occurrence of such half lines seems to be justified and correct, and we need not suppose that *b* is lost, for the यमक here 'गिहे—गिह°—णियरे—णियराय°' in *6b*, *7a* and *8a* remains in tact.

8. *9b* सीहणिक्कीडियउ—This is a kind of penance or a series of fasts which Jains observe. Similarly सव्वभद्दु in *10a* ; मुत्तावलि in 9. *9a* and रयणावलि in 9. *14a*, कणयावलि in 11. *9a* are fasts the details of which can be seen in any dictionary.

21. 2 इंदवयाउ, इन्द्रपदात्, from the place of इन्द्र. *13a* अणामिया i. e., णिण्णामिया.

XXIV.

[In the meanwhile the wise nurse of Śrīmatī went out with the picture and while wandering over different countries came to Utpalakheḍa. There she kept the picture in the temple. Vajrajaṃgha came to that place, saw the picture and fell into a swoon. When he recovered he was asked what the matter was and told his friends that he saw in the picture the events of his past life including his love to Svayaṃprabhā. He was unable to stand the

pangs of separation from her and asked the nurse where his former beloved was born. Vajrabāhu, the father of Vajrajaṃgha was informed of the happenings, and having assured his son that he would secure Śrīmatī for him, started for Puṇḍariṅkiṇī. He was received well by Vajradanta, and was asked why he came to his house. After having heard of the picture incident, Vajradanta offered his daughter Śrīmatī to Vajrajaṃgha, and thus brought about the union of lovers].

4. & 5. Note the events drawn in a picture as also those that could not be and had not been drawn in the picture.

8. 8*b* को तं पुसइ णिडालइ लिहियउ, who can wipe off what is written on the forehead ? This has became a proverb in M.

XXV.

[After marriage Vajrajaṃgha and Śrīmatī returned to Utpalakheḍa. Fifty-one twin sons were born to them. One day Vajrab¯hu saw in the sky a cloud in the autumn which disappeared in a moment. He then thought that everything in the universe was momentary and hence decided to renounce the worldly life. Vajradanta also saw in a lotus a dead bee as it was fond of lotus-odour and did not leave the lotus even though it was closing in the evening. On seeing this he also was disgusted with pleasures which brought death to creatures and renounced the worldly life. His son Amitatejas then did not like to rule over the earth and followed his father. Thus Puṇḍarīka, the grand-son of Vajradanta came to the throne. As he was young, his mother thought that he should be helped by friends like Vajrajaṃgha, and therefore sent a letter to him. He proceeded to her place, and while camping in a forest, met a pair of young monks who were no other than his own youngest sons, and asked them to narrate to him the story of his previous births, viz. those as Jayavarman, Mahābala, Lalitāṅga and Vajrajaṃgha. They then narrated the four previous births of Śrīmatī, viz., those as Dhanaśrī, Nirnāmikā, Svayaṃprabhā and Śrīmatī. They also narrated the previous births of his priest, minister, friends and servants. He was also told that in his eighth birth he would become a Tīrthaṃkara, and Śrīmatī would become prince Śreyāṃsa. After listening to this he proceeded to Puṇḍarinkiṇī, saw there his sister Aṇuṃdharī and the young prince Puṇḍarīka, and after having arranged for the proper government of his kingdom, returned home.]

12. 6*b* दूसावासु, a camp in tents (दूस, दूष्य, पटगृह).

19. 11*a* कंदुवि, a sweet-meat seller, a baker.

XXVI.

[Vajrajaṃgha and Śrīmatī were then born in the Uttarakurus as twins to Aṇinda and Ajjavā. There they recollected their previous birth when a pair of Cāraṇamunis arrived there. One of them was no other than Svayaṃbuddha, the minister of king Mahābala. This Cāraṇamuni then explained to him the subsequent births of Mahābala as also his own, and advised him to follow the Jain doctrine. Vajrajaṃgha was then born as Śrīdhara in the Īśāna heaven, and Śrīmatī, changing her sex, was born as god Svayaṃprabha in the same heaven. The Cāraṇamuni also narrated the subsequent lives of the three other ministers of Mahābala. Now god Śrīdhara was next born as prince Suvidhi of king Subhadṛṣṭi and queen Nandā. Suvidhi married Manoramā, the daughter of king Abhayaghoṣa. God Svayaṃprabha was now born as son to Suvidhi and was named Keśava. Suvidhi was next born in Acyuta heven as Indra, and Keśava was born as Pratīndra in the same heaven.]

1. 11b कव्वयं पाययं—It appears that the study of Prakrit poems was considered to be a fashion of the day.

7. 10b विउ णाणम्मि धाउ सुपसिद्धउ—The root विद् (विउ in Prakrit) is widely known to mean "to know", so the term Veda means knowledge. Now, as our text says, the Veda should preach kindness to creatures, and therefore those books which preach the doctrine of हिंसा cannot be called वेद but a करवाल, i. e., sword.

XXVII.

[Acyutendra and Pratīndra were next born as prince Vajranābhi and merchant Dhanadeva. Vajranābhi became a monk after having handed over his kingdom to his son Pavidanta or Vajradanta. Dhanadeva also became a follower of Vajranābhi. Now Vajranābhi, by his hard penance, acquired the acts which secured for him the Tīrthaṃkara nāma and gotra, and in due course was born in the Sarvārthasiddha heaven as Ahamindra. Dhanadeva also was born as Ahamindra in the same heaven. In the following birth Vajranābhi was born as Risaha and became the first Tīrthaṃkara and Dhanadeva was born prince Seyaṃsa. Similarly Risaha narrated the births of several others of his followers including his sons. Bharata than asked the Tīrthaṃkara as to how many Tīrthaṃkaras, Vāsudevas, Baladevas, Prativāsudevas and Cakravartins would there be in future. Risaha mentioned their number. Bharata then offered a prayer to Risaha.]

8. Note that this kaḍavaka summarises the ten previous births of Risaha. They are :—जयवर्मन्, विद्याधरेन्द्र, महाबल, ललिताङ्ग, वज्रजंघ, श्रीधर, सुविधि, अच्युतेन्द्र, वज्रनाभि and सर्वार्थसिद्धाहमिन्द्र. Similarly the previous births of Seyaṃsa are summarised here.

12. 5-8 मह णत्तिउ तुह तणुरुहु मरीइ—The passage says that मरीचि, the son of भरत, will be the twentyfourth Tīrthaṃkara named वर्धमान. On hearing this prophecy मरिचि was delighted and danced out of joy. This exhibition of pride and joy on his part was responsible for his long wanderings in Saṃsāra. He was destined to be the teacher of Kapila, the author of Sāṃkhyasūtras. Compare Hemacandra, Triṣaṣṭi. VI. 373–390.

XXVIII.

Bharata then returned to Ayodhyā and performed some propitiatory rites for his dreams. He made gifts to the needy and the poor and led a pious life. He ruled as a good and noble king, explained to his feudatories how they should behave as kings.

Gautama, the pupil of Mahāvīra, continued the narration further and said to Śreṇika as follows :—King Somaprabha had fourteen sons. The eldest of them was called Jaya. He was crowned and placed on the throne. His father and his uncle Seyaṃsa became monks. When one day King Jaya went to the pleasure-garden he saw a monk preaching and a snake and its mate listening to it. King Jaya came to that very place next year when he found that the snake had left the female snake which then formed friendship with a low class snake called Dīvaḍa. The king touched them with the lotus-flower in his hand. The king narrated the event to his wife at night, when there arrived a god and told the king that he was the snake and that his wife, the female snake, after being touched by the king, was killed by his attendants and became a goddess. The god thereafter gave to king Jaya heavenly garments and went away.

Now a minister of Jaya came and told him that there was a beautiful princess named Sulocanā, daughter of king Akampana and queen Suprabhā. Her father saw her in youth and thought he should find out a suitable husband for her. He accordingly arranged to hold a Svayaṃvara. King Jaya attended this and was chosen by Sulocanā there. Arkakīrti got angry because he was rejected and wanted to fight with Jaya. At this juncture Sulocanā went to the Jina and took a vow that if any of the two, viz., Arkakīrti or Jaya dies on her account in the fight she would die by renouncing food. In the fight however king Jaya defeated Arkakīrti and arrested him. Sulocanā therefore

returned home. In the meanwhile Jaya also approached Arkakīrti and coaxed him to give up his anger towards him.]

20. 11*b* मेहेसर वि हक्कारिउ राएं, king Jaya was called मेहेसर or मेघस्वर because his voice resembled that of a cloud. Our text gives मेहेसर here and also in 28. 4*a*, but elsewhere we find the name as घणरव in 21. 15; जलहरसर in 23. 7*b*; जीमूयणाय in 28. 9*b*. Metrically मेहेसर here is not good, but in 28. 4*b* it is quite right. In T. also under 30. 10*b* we get मेघेश्वरमित्र:.

XXIX.

[King Jaya returned home and paid homage to his father. While returning home he stopped on the bank of the Ganges, when an elephant attacked Sulocanā, but her life was saved by the guardian deity of the forest who gave her presents. Sulocanā then asked her who she was. She then told her that she was called Vindhyaśrī, the daughter of Vindhyaketu and Priyaṅguśrī, and obtained her present position because of the fact that Sulocanā taught her the mantra of five Parameṣṭhis. Now the female snake touched by king Jaya and killed by his servants became a crocodile in the Ganges and sent out of enmity the elephant to attack Sulocanā.

One day when king Jaya was seated in the court, he saw a couple of divine beings. He recollected his previous birth, and fell into a swoon saying "O, where is Prabhāvatī ?" Sulocanā also fainted saying "Rativara, where are you ?" On recovering from the faint, she said that she was a female pigeon and Jaya was her lord then. When king Jaya asked her to narrate their former life, Sulocanā said :

In the town of Śobhāpura there was a king named Vratapāla and queen Devaśrī. There lived the minister Śaktiṣeṇa and his wife Aṭavīśrī. One day a beautiful orphan came to him. The minister asked him why he had been wandering in the childhood. The boy then told the minister that he was driven out by his step-mother from the house as he did not keep watch well on the house. The minister Śaktiṣeṇa therefore adopted him as his son and named him Satyadeva. Sulocanā continues the narrative of her past lives and also of the boy, Satyadeva].

5. 2*a* सुयावइ, daughter Sulocanā and her husband Jaya. 8*a* पडकुडिहि, in the tent.

9. 10*a* असिआउसाइं i. e. five letters अ, सि, आ, उ and सा, standing for the initial letters of the five परमेट्ठिs, viz. अरहन्त, सिद्ध, आयरिय, उवज्झाय and साहू. Thus असिआउसा becomes a sort of मन्त्र which the Jains put on par with ओंकार and

such other mystic syllables. Compare XXXV. 12. 10 where also the same mantra occurs.

11. 11–12 पारावइ हउं etc. Sulocanā says that she was a female pigeon named Raviṣeṇā, while king Jaya was a male pigeon called Rativara. 14 कइयवेण जणु खज्जइ, people are overcome (खज्जइ, lit. swallowed) by tricks. The co-wives of Sulocanā did not believe the story as narrated by her and therefore said that it was a trick by her to win the love of king Jaya.

12. 4 The story of the former lives of Jaya and Sulocanā begins here. 8*a* अडइसिरि is mentioned in the sequel as वणसिरि (See 13. 7*a*). 13 परमायए, by my step-mother.

16. 4*a* चारण is a class of ascetics. This class has two types, viz., Jaṃghācāraṇa and Vidyācāraṇa. Both the classes are capable of flying through the sky. Jaṃghācāraṇa acquires the art of flying as a result of his fast of four days and the Vidyācāraṇa does it as a result of his learning and fast of three days.

21. 8–9 The pair of pigeons was asked by their master as to where the sinners go and the pair would show by their beaks the region underground, viz., the hell; and as to where the meritorious go, the region above, viz., the heaven.

24. 4 तहि एक्कु etc. There is one plate containing five jewels. He who discovers it will marry Priyadattā.

XXX.

[Sulocanā continues the narrative of her previous births, particularly of her birth as Prabhāvatī and of Jaya as Hiraṇyavarman. There they practised penance as ascetics and passed through several births on the earth as well as in heaven. In one such births they were born as gardener and his wife when they used to offer flowers to the Jinas. One day they were both bitten by a snake and died but cherished a hankering for the enjoyment of pleasures. They were born next as Sukānta and Rativegā.]

6. 10*b* हिरण्णवम्मु—This name occurs elsewhere, e. g., 20. 8*b*, 20. 8*a* and 22. 4*a* as सुवण्णवम्म, कंचणवम्म, and कणयवम्म.

12. 9*b* पियइ चडावियाइं सिरि णेत्तइं, the lady raised her eyes or pupils of her eyes, towards her head. This is considered to be a sign of approaching death. Compare डोळे वर चढविणें or फिरविणें in Marathi.

15. 4*b* तियमइ, i. e., स्त्रीमति, i. e., wicked mind of a woman or a woman.

XXXI.

[Sukānta and Rativegā recollected then their former life. They met in that birth a monk, who had but recently renounced the worldly life and said he did not know much of the sacred Law, but he told them the salient features of the Jain faith. Sukānta then asked the monk the reason why in youth he became an ascetic. Thereupon the monk gave him the story of his life.

Incidentally there is a mention of a story of a merchant named Suketu and his rival Nāgadatta. Nāgadatta had a wife named Sudattā. One day, while Suketu's wife was carrying food for her husband, she met a monk to whom she served it at the nāgagṛha of her husband's rival. There appeared, as a result of this gift five wonders, particularly a shower of gold and gems. Nāgadatta then said that the wealth belonged to him as it fell in the nāgagṛha belonging to him. Thereupon Suketu said to Nāgadatta that the wealth really belonged to his wife as it was due to gift made by her. Nāgadatta thereupon took all the wealth and went to the king, but the wealth handled by Nāgadatta immediately turned into charcoal, and his servants were frightened by goblins. Nāgadatta then handed over the wealth to Suketu. The next day Nāgadatta discovered one more gem in the temple and in anger tried to crush it with a big piece of stone, but the stone hit him instead. Nāgadatta propitiated the Snake in the temple and asked a boon to have an army that would defeat Suketu. The snake however said that it was not possible to kill Suketu. Suketu subsequently renounced the worldly life, and after death was born as a god. His wife, Vasumdharā became a nun, and was born as a god in heaven changing her sex.]

3. 8*a* णवसवणु, a monk who has been but recently admitted to the Order.

10. 9 लूयासुत्तें etc. A fly is caught up in the web of a spider and not an elephant. A fool falls a victim to a courtesan, but a wise man becomes disgusted with her.

24. 1*a* फणिदत्तु, i. e., merchant Nāgadatta.

25. 10*a* विवक्खवक्खसेण, i. e., by Nāgadatta. 12 कइरहिययक्कइं gems that put into background the lustre of the sun.

27. 5*a* धणसंखइ etc. Nāgadatta thus become inferior to Suketu, the husband of Vasumdharā, in point of wealth.

XXXII

[Jaya asked Sulocanā again to narrate to him the happenings of their previous life, particularly those which were told by the Jina Guṇapāla. Thereupon she gave the narrative of Śrīpāla and his adventures. Śrīpāla and Vasupāla were the sons of king Guṇapāla and queen Kuberaśrī. Guṇapāla renounced the worldly life and became a monk. One day a report was brought to her that a sage named Guṇapāla had arrived in the grove and the queen went to see him. Under a banyan tree in the grove there was a temple of a yakṣa, and people were engrossed in festivities. A pair of ladies, of whom one was dressed as male, were dancing there. King Vasupāla did not like the dance of a man and woman when his brother Śrīpāla said that they were not man and woman but both women. It was prophecied that the person who would recognise the lady in man's dress was destined to be her husband. This was the starting point of numerous adventures of Śrīpāla who took a horse that disappeared in the sky. It was prophecied that Śrīpāla would return safe on the seventh day. Now Śrīpāla was really removed by a demon in the form of a horse. When the demon began to fight with Śrīpāla there arrived a yakṣa named Jayapāla to help him. After escaping from the demon, Śrīpāla met six Vidyādhara girls whom he ultimately married as also Vidyudvegā, a Vidyādhara girl, Sukhāvatī, and Vappilā.]

11. 1*a-b* तुहुं जि णाहु etc.—You yourself are my lover; for you have caused the pangs in my body. Are there other signs of a lover such as a horn on the head ? To have a horn on the head was considered to be an extra-ordinary sight and hence proverbs in the vernaculars डोक्यावर शिंगें असणें etc.

XXXIII

[Sukhāvatī, mentioned in the previous Saṃdhi, was a Vidyādhara girl, and possessed miraculous powers. She first showed herself to be an old lady and as soon as Śrīpāla showed to her that he possessed powers to cure any ailment, she gave up the form of an old lady. Both of them then went to Siddhakūṭa and offered prayers to the Jina. All the young girls who loved Śrīpāla arrived there. In their presence Sukhāvatī showed her powers once more, made Śrīpāla an old man and still loved him, thus causing her friends to laugh at her. There he cured the bend in the neck of a prince and married his sister Prabhāvatī. In the meanwhile Aśanivega, the brother of Vidyudvegā, arrived there, recognised Śrīpāla, attacked him, but he disappeared from there with the help of Vidyudvegā.]

11. Note effects of devotion to the Jina mentioned in the Kaḍavaka. 13 विट्ठि वि भल्लउ वासरु, even a rainy day becomes a fair day on account of the devotion to the Jina. 14 खग्गु वि कमलु सकेसरु, a sword becomes like a lotus full of filaments.

XXXIV

[Sukhāvatī came back home and her father thought of arranging her marriage with Śrīpāla, but he desired to see his elder brother before that event. He was accordingly being taken to Puṇḍariṅkiṇī. He met a number of adventures on the way, and got an excellent elephant in the forest. The elephant had first a mind to attack him, but it was ultimately overcome by Śrīpāla.]

2. 5*b* जियसत्तु सलिलसेणु भणिउ Jitaśatru, the father of Sukhāvatī said to his son Salilasena, i. e, Vāriṣeṇa, to escort Śrīpāla to his town. सलिलसेण and सरसेण in 3. 7*b* are only synonyms of वारिषेण.

9. 15 दिट्ठादिट्ठसरीरी, one, i. e. Sukhāvatī, who makes her person appear and disappear as the occasion demands.

XXXV.

[Sukhāvatī now took Śrīpāla, in the presence of the crowd, towards Puṇḍariṅkiṇī through the sky, and brought him to the region where the wicked horse left him. Nāgabala then offered the hand of his daughter Śaśilekhā to him. After marrying her, Śrīpāla was led further by Sukhāvatī. In the meanwhile two Vidyādharas met him and asked him to strike a stone pillar, saying that if he could cut the pillar into two with his sword, he would become a Cakravartin. Śrīpāla did cut it into two. On his way many kings offered him their daughters and in course of time he secured all the gems that a Cakravartin should possess. On the way he fought with Dhūmavega, a wicked Vidyādhara, met his mother in one of his previous births, viz., Satyavatī, who had now become a yakṣiṇī. After having gone through many adventures he arrived on the seventh day at his capital, met his mother Kuberaśrī, and brother Vasupāla. Śrīpāla told them that the powers that he attained had been entirely due to the good offices of Sukhāvatī, who was his wife.]

16. 11 एयहि जीव वि दिज्जइ—Note the corresponding saying in Marathi : इच्यासाठीं जीव सुद्धां द्यावा, I shall even sacrifice my life for her.

XXXVI.

[Śrīpāla was thereupon married to all the girls; but Vappilā did not like that her husband should marry so many; hence she returned to her father's house, Śrīpāla however went there and persuaded her to return home. Similarly he caused Sukhāvatī also to return to him. Thereafter he got the seven living gems of the Cakravartin such as senāpati etc., and in due course the cakra also made its appearance in his armoury. All the wealth that came to the king was in the charge of Jasavaī, but Sukhāvatī thought her to be a miser. The minister however told her that Jasavaī was destined to be the mother of a Jina. In course of time Jasavaī gave birth to the Jina who was named Guṇapāla Śrīpāla, in course of time, placed the son of Sukhāvatī on the throne and went to practise penance under Guṇapāla, his son.

Sulocanā narrated the above story to King Jaya. He then remembered fully his previous lives and obtained all the vidyās that he then possessed. Priyaṅguśrī however thought that Sulocanā had been giving a story which was not true. In order to convince her king Jaya and Sulocanā went up into the sky to offer worship to Risaha. On their way Indra put a temptation to trap king Jaya, but he stood the test well. Indra was pleased with him and offered him a boon. King Jaya thereupon arrived at Kailāsa, and offered a hymn to all the twenty four Jinas whose temples were built by King Bharata.]

4. 21 सज्जीवइं रयणइं the seven living gems of a cakravartin, viz., सेनापति, गृहपति, अश्व, गज, स्त्री, रथपति and पुरोहित as opposed to lifeless gems such as चक्र etc.

8. 9*a* हज्झेवडं सहुं बिहि कप्पडेहि, the dead body is burnt along with two pieces of cloth, which is the only property that the dead take with them.

XXXVII.

[King Jaya with his queen saluted the images of the coming Jinas and then went to Samavasaraṇa where Risaha was seated in the midst of gods, men, women, monks and nuns. He saw there his father and uncle who had also become monks and came to stay there. Sulocanā saw her father Akampana who also had become a monk and her several other relatives. Jaya then recited a hymn to praise Risaha, at the end of which he requested Bharata to allow him to be a monk. Bharata at first did not like it, but at the intervention of Indra allowed him to do so. Sulocanā also allowed him to be a monk. He was then admitted to the Order of monks and studied the sacred books. Sulocanā became a nun after him.

Now Risaha explained to Bharata all the principles of the Jain faith. Bharata then returned home and saw the same night a dream in which Meru was shaken. Next morning he asked his priest what the dream signified. The priest said that Risaha was about to attain emancipation. Bharata then immediately went to Kailāsa. Indra also came there to arrange for the celebration of the nirvāṇakalyāṇa of the Jina. Indra and other gods made a funeral pile of several fragrant trees, Agni-kumāras produced fire to light the pile, and his body was burnt to ashes which were saluted by all gods. Risaha attained emancipation on the fourteenth day of the dark half of the month of Māgha.

Bharata returned to Ayodhyā. One day he found a gray hair on his head. At this indication he handed over his kingdom to his son, renounced the world, soon attained kevalajñāna and obtained emancipation from saṃsāra.]

6. 9 एयाणेयवियप्पणणाएं, by the law which has modes of expression such as एकत्व and अनेकत्व. I take this to refer to the famous सप्तभङ्गीनय in the form स्यादस्ति एकम् etc. See 7. 3*b* below where we get express mention of सप्तभङ्गी.

7. 1*b* समयहं तेसट्ठइं तिण्णि सयइं, i. e., three hundred and sixty-three systems of heretics. There are frequent references to this number of the systems of heretics in Jain literature. This number is made up as is mentioned in the famous stanza :—

असिदिसदं[१८०] किरियाणं अक्किरियाणं च आहु चुलसीदी[८४] ।
सत्तट्ठी[६७] अण्णाणी वेणइयाणं च होदि बत्तीसं[३२] ॥१॥

12. 6*b* जेवड्डु सलिलु तेवड्डु णालु णिप्पज्जइ णलिणहु, the lotus plant has as much (length of its) stalk as (the depth of) water in which it grows, neither more nor less. Similarly Jīva has the same period or extent of saṃsāra as its acts have made it to be.

15–17. These three kaḍavakas mention some of the tenets of Jainism arranged in consecutive and increasing numbers as in XVIII. 10–11. The terms or items are not entirely identical, but a number of them are repeated. I therefore do not give exhaustive treatment of these terms as I did there, but I think some of them require explanation which I quote chiefly from T.

15. 1 गुणु मोक्खु तउ वि पोग्गलु वि दुविहु, णिज्जर वि दुविह वज्जरइ अरुहु—गुणु जीवगुणः पुद्गलगुणश्च, मूलोत्तरगुणा वा; मोक्ख् अर्हदवस्था सिद्धावस्था च; त उ बाह्यमाभ्यन्तरं च; पोग्गलु अणु स्कन्धं च; णि ज्ज र विपाकजा इतरा च. 3*a* जी व हं ग ई उ क हि या उ ति ण्णि पाणिमुक्ता लाङ्गली गोमूत्रिका च. 3*b* ज ग वे ढ ण म रु घनोदधि-घननिलय-तनुवाताः. 4*a* ज गि जो यं ति ण्णि कायवाङ्मनो-योगाः. 5*b* बा ला इ उ च उ वि हु भ णि उं म र णु बालमरणं बालपण्डितमरणं पण्डितमरणं पण्डित-पण्डितमरणं च, बालबालमरणस्य बालमरणान्तर्भावात्. 6*a* च उ वि हु प माणु प्रत्यक्षानुमानागमोपमानानि.

It is rather strange that a Jain writer should mention these four प्रमाणs as against प्रत्यक्ष and परोक्ष. च उ वि हु जि दा णु अभयाहारौषधशास्त्रदानानि. 6*b* च उ वि हु द व्वा इ उ द्रव्यक्षेत्रकालभावाः. 7*a* च उ भि ण्णा मन्दमन्दतरतीव्रतीव्रतरस्वभावैश्चतुर्धा भिन्नाः, च उ वि ह क सा य अनन्तानुबंधिअप्रत्याख्यानप्रत्याख्यानसंज्वलनानि एकैकस्य भेदाः. 8*a* च उ वि हु जि ब न्धु प्रकृतिस्थित्यनुभवप्रदेशाः. च उ वि हु जि णा सु नामस्थापनाद्रव्यभावभेदेन चतुर्विधो न्यासः निक्षेपः. 8*b* वि ण उ वि च उ वि हु ज्ञानदर्शनचारित्रौपचारिका विनयाः. 9*a* च त्ता रि वि वं ध वि णा स हे उ ज्ञानदर्शनचारित्रतपांसि. 10 स ज्झा य पं च वाचनाप्रच्छनानुप्रेक्षाम्नायधर्मोपदेशाः. (पंच) आ या र वि हि ज्ञानदर्शनचारित्रतपोवीर्याणि. 11 णि ग्गं थ पं च पुलाकबकुसकुशीलनिर्ग्रन्थस्नातकाः. जो इ स कु ल इं पं च सूर्याचन्द्रमसौ ग्रहनक्षत्रप्रकीर्णतारकाश्च.

16. 2*a* आ स व णि ब न्ध हे ऊ उ पंच मिथ्यात्वाविरतिप्रमादकषाययोगाः. 2*b* ल द्धी उ दानलाभभोगोपभोगवीर्याणि. म हा ण र या वि पंच रौरवासिपत्रकूल्मलिकुम्भीयाः (?). 3*a* सं सा र द्रव्यक्षेत्रकालभवभावाः; स री र इं हों ति पंच औदारिकवैक्रियकाहारकतैजसकार्मणानि. 4*b* स म य षड् दर्शनानि. 5*b* स त्ता हो म ही उ सप्तनरकभूमयः. 6*a* प य ई उ अ ट्ठ अष्ट कर्मप्रकृतयः. 6*b* व ण दे व व्यन्तरदेवाः अष्ट किन्नरकिंपुरुषमहोरगगन्धर्वयक्षराक्षसभूतपिशाचाः. जी व गु ण ते वि अट्ठ सम्यग्दर्शनादयः; अथवा, अणिमामहिमालघिमाप्राप्तिप्राकाम्येशित्ववशित्वकामरूपित्वमिति. 8*b* वे उज्जा व च्चु वि द ह वि हु आचार्योपाध्यायतपस्विशैक्षग्लानगणकुलसंघसाधुमनोज्ञानाम्. 9*a* द ह भा व ण सु र असुरनागविद्युत्सुपर्णाग्निवातस्तनितोदधिद्वीपदिक्कुमाराः. 9*b* फ णि स म्मि स ह द ह दि सि ग य सु हा सि धरणेन्द्रचन्द्रसहिताः अष्ट लोकपालाः.

17. 1*a* सि द्धं ता सि या इं 2*a* च उ द ह म ल चतुर्दश मलादयः द्वात्रिंशज्जिनोपदेशपर्यन्ता बाहुबलिकेवलज्ञानोत्पत्तिसमये व्याख्याताः.

20. 6*b* णिच्चालियाइं निष्परिस्पन्दानि कृतानि, were rendered inactive. 10*a* अच्छंतु वि अगु ण छिवइ देउ, Risaha, although he still existed as a soul, had given up all contact with body. At the time of मोक्ष the soul exists, but it is not in any way connected with physical body. 11 वसुमगहिं सिद्धगुणहिं—for the eight qualities of a सिद्ध, see page 630, (8) (b).



अँगरेजी टिप्पणियों का हिन्दी अनुवाद

इन टिप्पणियोंमें सन्धियोंके सन्दर्भ रोमन अंकोंमें हैं, जब कि कड़वकों और पंक्तियोंके अरबिक अंकोंमें। 'टी' प्रभाचन्द्रके टिप्पणों की संकेतक है!

XIX.

भरतने, तब, सोचा कि मैंने जो धन अर्जित किया है, उसका कोई उपयोग नहीं है, यदि मैं इसे योग्य व्यक्तियोंको नहीं देता, जो कि विशुद्धरूपसे ब्राह्मणके नामसे ज्ञात हैं। भरतके अनुसार ये ब्राह्मण वे हैं, जो जिनेन्द्र भगवान् द्वारा बनाये गये व्रतोंका पालन करते हैं। ऐसे व्यक्तियोंको उसने उदारतापूर्वक बड़ी मात्रामें वस्त्रादि कई उपहार दिये।

एक दिन भरतने रातके अन्तिम प्रहरमें बुरा सपना देखा। वह बहुत अधिक चिन्तित हो गया। और दूसरे दिन सवेरे ऋषभ जिनसे मिलने गया। प्रार्थना और भक्ति करनेके बाद, उसने ऋषभनाथसे पूछा कि यह बताइये कि किस पुण्यकर्मसे आप ऋषभ तीर्थंकर हुए, और भरत चक्रवर्ती, बाहुबलि वीर व्यक्ति, श्रेयांस दानवीर, और सोमप्रभ योग्य शासक हुए। ऋषभस्वामी ने उन्हें बताया कि किस प्रकार दुष्षमा काल आयेगा कि जब नैतिकताके सब मूल्य पूरी तरह बदल जाएँगे।

8. बुरा स्वप्न।

10. 12-13 वे व्यास जैसे लोगोंको पूरे अधिकार दे देंगे। जो कि धीवर स्त्रीका पुत्र है, और दुर्वासाको, जो कि एक गधीका पुत्र है। व्यास, पराशरसे सत्यवतीके पुत्र बताये जाते हैं। परन्तु मैं इस बातके स्रोतका पता नहीं लगा सका, कि दुर्वासाका गर्दभीका पुत्र क्यों कहा गया।

12. पंजमजुगि=दुष्षमा

XX.

सबसे पहले भरत सृष्टिकी रचनाके विभिन्न सिद्धान्तोंका खण्डन करते हैं और बताते हैं—धरती पवन और पानी वे तत्त्व हैं जिनसे विश्वकी रचना हुई और यह कि ये आरम्भ और अन्तसे रहित है। विश्वकी रचना न तो ब्रह्माने की है, और न विष्णु या महेश ने। इस सृष्टिके बीचमें मानवलोक स्थित है जो 'तिरिय लोक' कहलाता है, जिसमें कई द्वीप और समुद्र हैं"। सुमेरुपर्वतकी पश्चिम दिशामें गन्धिल देश है। उसकी राजधानी अलका है। वहाँ राजा अतिबल शासन करता था। उसकी रानी मनोहरा थी। उनका महाबल नामका पुत्र हुआ। जैसे ही वह यौवनको प्राप्त हुआ, अतिबलने उसे गद्दी पर बैठाकर संन्यास लेनेका निश्चय कर लिया। उसके बाद राजा महाबल शासन करने लगा। उसके चार मन्त्री थे महामति, सम्भिन्नमति, सत्यमति और स्वयंबुद्ध। एक दिन स्वयंबुद्धने राजासे सांसारिक आनन्दकी व्यर्थताके बारेमें कहा और उससे जैनधर्मके अनुसार पवित्र जीवन बितानेके लिए अनुरोध किया। तब महामतिने चार्वाकमतका समर्थन करते हुए; शरीर और आत्माके एक होनेके सिद्धान्तका प्रतिपादन किया। स्वयंबुद्धने महामतिके सिद्धान्तका खण्डन किया। सम्भिन्नमतिने बौद्धोंके क्षणिकवादके सिद्धान्तका समर्थन किया। स्वयंबुद्धने इस मतका भी खण्डन किया। जब सत्यमतिने अपने माया सिद्धान्तका प्रतिपादन किया, स्वयंबुद्धने इस सिद्धान्तका भी खण्डन किया।

स्वयंबुद्धने तब राजा महाबलको उसके पूर्वज अरविन्दकी कथा सुनायी। उसके हरिश्चन्द और कुरुविन्द नामके दो पुत्र थे। एक दिन अरविन्दके शरीरमें भयानक जलन हुई। और उसने पाया कि यह किसी भी दवाईसे ठीक नहीं हो सकती; तो उसने अपने पुत्र कुरुविन्दसे पशुओंके रक्तका तालाब बनानेके लिए कहा कि जिसमें नहानेसे उसका रोग शान्त हो जायेगा। कुरुविन्दने अपने पिताकी आज्ञाका पालन किया, परन्तु उसने कृत्रिम रक्त (लाक्षारस) के तालाबका निर्माण कराया। अरविन्दने जब तालाबमें प्रवेश किया और रक्तका स्वाद लिया तो उसने पाया कि उसके पुत्र ने उसे धोखा दिया। वह उसे मारनेके लिए दौड़ा परन्तु रास्तेमें गिर पड़ा और अपनी ही तलवारसे मारा गया।

महाबलका एक और पूर्वज था दण्डक नामका राजा। उसके पुत्रका नाम मणिमाली था। दण्डकने बहुत-सा धन इकट्ठा किया और मरकर अजगर हुआ। वह धनकी रखवाली करता था। एक दिन मणिमाली घर आया और उसने द्वार पर साँपको देखा। साँपको भी पूर्वभवका स्मरण हो आया और मणिमालीको अपना पुत्र समझते हुए उसने उसे नहीं काटा। यह देखकर मणिमालीको आश्चर्य हुआ। वह मुनिके पास गया और उसने पूछा कि साँप कौन है ? यह जानकर कि वह उसके पिता हैं, वह घर आया और साँपको जैनधर्मका उपदेश दिया। उसने इसका अभ्यास किया और अगले जन्ममें देवके रूपमें उत्पन्न हुआ। देव, मणिमालीके पास आया और उसे एक हार दिया कि जो महाबल पहनते थे।

17. 2-5 चार तत्त्व (धरती, पवन, अग्नि और जल) का न कोई आदि है और न अन्त, इन्हें किसीने उत्पन्न नहीं किया। जब ये चार तत्त्व आपसमें मिलते हैं तब चेतनाका चिह्न प्रगट होता है। इन तत्त्वोंमें चेतना उसी प्रकार आती है जिस प्रकार गुड़, जल और मिट्टीसे मदशक्ति उत्पन्न होती है, इसलिए शरीर और आत्मामें कोई अन्तर नहीं है यह चार्वाक सम्प्रदायका सिद्धान्त है।

18. 9 *b* पौरन्दरका सिद्धान्त अर्थात् इन्द्रका सिद्धान्त, जो बृहस्पतिके साथ, चार्वाक सिद्धान्तके संस्थापक माने जाते हैं। 10-11 यदि ये तत्त्व बिना जीव और आत्माके अपने आप चेतनाका निर्माण करते हैं और एक जारमें शरीरकी रचना कर लेते हैं। तब उस जारमें शरीर उत्पन्न होना चाहिये कि जिसमें उक्त चीजोंका मिश्रण है। दूसरे शब्दोंमें जीवित शरीर ट्यूबमें उत्पन्न हो सकते हैं।

19. वह जो ऋषभ मुनिके सिद्धान्तका भक्त है। अर्थात् जिन। 12 बिना निरन्तरता के।

21. टिट्टिभ पक्षी यह कहते हुए कि आकाश गिर पड़ेगा, डर जाता है और अपनी टाँगें उठाकर स्थित हो जाता है गिरते हुए आकाशको सहारा देनेके लिए!

XXI.

स्वयंप्रबुद्धने आगे महाबलको बताया कि उसके पिता पितामह बड़े महापितामहने अपने पवित्र जीवनसे विशिष्ट स्थान प्राप्त किया है। यह सुनकर वह भी मन्दराचलपर जिनकी वन्दना करनेके लिए गया। ठीक इसी अवसरपर, दो चारणमुनि आये। स्वयंबुद्धिने उन्हें प्रणाम किया। और उसने अपने स्वामी महाबलके विषयमें पूछा। इसपर उन लोगोंने कहा, कि दसवें भवमें वह निश्चित रूपसे तीर्थंकर होनेवाले है। लेकिन अपने अतीत कालमें वह राजा श्रीषेण और रानी सुन्दरीका जयवर्मा नामका पुत्र था। चूँकि राजाने अपने छोटे पुत्र श्रीवर्माको राज्य दे दिया, इसलिए जयवर्माने मुनि दीक्षा ग्रहण कर ली। इसी अवसर-पर एक विद्याधर खूब ठाटबाटसे आया। नव मुनि जयवर्मा उससे अत्यधिक प्रभावित हुआ, और उसने यह संकल्प किया कि तपस्याके फल स्वरूप वह भी उसी राजाकी तरह सम्पन्न हो। यही कारण है कि आगामी जन्ममें वह महाबलके रूपमें उत्पन्न हुआ। स्वयंबुद्ध तब महाबलके पास गया, और उसकी दूसरे मन्त्रियोंसे सुरक्षा की कि जो उसे गलत रास्तेपर ले जा रहे थे। महाबलके पास केवल एक वर्ष की आयु बची थी।

उसने संन्यासमरणसे मरनेका निश्चय किया। मृत्युके बाद, वह ईशान स्वर्गमें उत्पन्न हुआ, ललितांगनाम देवके रूपमें। उसकी प्रेयसियाँ स्वयंप्रभा और कनकप्रभा भी थीं।

2. 12 जिनवरको जो कमल चढ़ाये जा रहे थे, उसने उनमें से एकको लेनेके लिए अपना हाथ बढ़ाया।

4. 40 मुझे बताइए कि क्या महाबल भव्य है ? क्या वह संन्यासग्रहण करने लायक है ! या नहीं।

8. उसने यह इच्छा की कि उसे संन्यासी जीवन के कारण, अगले जन्ममें कुछ विशेष चीज मिले।

XXII.

एक दिन ललितांग ने अपने शरीरपर पड़ी हुई मालाके फूल कुम्हलाये हुए देखे जो इस बातका संकेत था कि उसके जीवनका अन्त निकट आ पहुँचा है। वह बहुत भयभीत हुआ; उसे यह सलाह दी गयी कि उसे अपना अधिकसे अधिक जीवन पवित्र कार्योंमें बिताना चाहिए। तब वह जिनकी वन्दना करनेके लिए गया। समय बीतनेपर वह मरकर, वज्रबाहु राजाका वज्रजंघ नामका पुत्र हुआ। जब वज्रजंघ धरतीपर बड़ा हो रहा था, उसकी प्रियतमा स्वयप्रभा अपने पतिके निधनपर खूब रोयी, अपनी मृत्युके बाद वह वज्रदन्त राजाकी श्रीमती नामकी पुत्री हुई। उसकी माँ पुण्डरीकिणीकी रानी लक्ष्मीमती थी। एक दिन वह श्रीमती आधी नींदमें थी, उसने स्वप्नमें देखा कि वह जिनदर्शनको जा रही है कि जिसमें कई देवता उपस्थित हो रहे हैं। उसे शीघ्र ही अपने पूर्वभव और पूर्वपतिकी याद हो आयी और वह धरतीपर बेहोश गिर पड़ी। उसे शीघ्र होशमें लाया गया और उसके अभिभावकोंको बुलाया गया। पिता शीघ्र समझ गये कि कन्या प्रेमासक्त है। इसलिए उसने एक चतुर धायकी देख-रेखमें उसे रख दिया, यह पता लगानेके लिए कि वह किससे प्रेम करती है। इसी अवसरपर राजाको यह खबर मिली कि यशोधरको केवलज्ञान प्राप्त हुआ है। उसे आयुधशालामें चक्ररत्नकी प्राप्ति हुई है। राजा शीघ्र ही जिनकी वन्दना करनेके लिए गया और इस कार्यके परिणामस्वरूप उसे अवधिज्ञान प्राप्त हो गया। वह घर आया और उसने कन्याको उसके पूर्वभव (स्वर्ग) की कहानी सुनायी। उसे यह कहकर आश्वासन दिया कि वह अपने पूर्वभवके प्रेमी से शीघ्र मिलेगी। इसके बाद, वह विश्व यात्राके लिए निकल पड़ा। एक दिन धायने, जो उसकी देख-रेख कर रही थी, उससे अपने मनकी बात बतानेके लिए कहा। इसपर श्रीमती-ने उसे बताया कि वह तीसरे पूर्वभवमें एक गरीब व्यापारीकी निर्नामिका नामकी सबसे छोटी कन्या थी। उसकी बड़े परिवारमें कुल 10 सन्तानें थीं। एक दिन जब निर्नामिका जंगलसे लौट रही थी तो उसने कुछ फल तोड़े। उसने बहुत बड़ी भीड़को देखा, जो जिनकी वन्दना करनेके लिए जा रही थी। वह भी वहाँ गयी, और उसने जिनकी वन्दना की और पूछा कि वह गरीब क्यों हुई ? इसपर जिनमुनिने बताया कि उसने पूर्वजन्ममें एक मुनिपर कुत्तेका शव रखा था, परन्तु वह इससे अप्रभावित रहे, तीसरे दिन दयाके कारण उन्होंने उस शवको हटा दिया।

इस कृत्यके फलस्वरूप वह गरीब हुई है। इसके बाद जिनने उसे धर्मका सही स्वरूप बताया और उससे 150 उपवास करनेके लिए कहा कि जिससे वह इस पापसे मुक्त हो सके। उसने ऐसा ही किया। मृत्युके बाद वह, ईशान स्वर्गमें ललितांगकी पत्नी हुई। उसकी मृत्युके छह माह बाद, वह भी धरतीपर आयी और श्रीमतीके रूपमें उत्पन्न हुई। ललितांगके प्रति अपने प्रेमको याद करते हुए वह बेहोश हो गयी। अपने अतीत जीवनकी कहानीका वर्णन करनेके अनन्तर उसने ललितांगका चित्रपट बनाया और धायको देकर उसका पता लगानेके लिए कहा।

XXIII.

तब श्रीमतीकी धायने ललितांगका चित्रपट ले लिया और वह जिनमन्दिर गयी। वहाँ उसने लोगों से कहा कि जो इस चित्रपटपर अंकित घटनाओंको सही-सही पढ़ देगा वह श्रीमतीसे विवाह करेगा। विभिन्न देशोंके राजकुमारोंकी भीड़ वहाँ इकट्ठी हुई, उन्होंने अपना-अपना भाग्य आजमाया, पर व्यर्थ। इस बीच श्रीमतीके पिता विजययात्रासे लौट आये। उसने उसे पूर्वजन्मकी कहानी बतायी। वज्रदन्तने कहा—मेरे पाँचवें पूर्वजन्ममें मैं अर्धचक्रवर्तीका चन्द्रकीर्ति नामका पुत्र था। जयकीर्ति मेरा एक मित्र था। लम्बे समय तक हमने राज्यका उपभोग किया, उसके बाद तपस्या की। मृत्युके बाद अगले भवमें स्वर्गमें देवेन्द्र हुए। उसके बाद हम दोनों बलदेव और वासुदेव हुए; क्रमशः श्रीवर्मन्, विभीषण, श्रीधर और मनोहरा हमारे माता-पिता थे। जब हम युवक हुए हमारे पिताने हमें राज्य सौंप दिया। उन्होंने तपकर केवलज्ञान प्राप्त किया। माँ घरपर रही। परन्तु वे पवित्र धार्मिक कार्य करती रहीं। वह मरकर ललितांग देव हुई। कुछ समयके भीतर, हमारे छोटे भाई, 'विभीषण' की मृत्यु हो गयी। मैं उसके शवको कन्धेपर लादकर एक स्थानसे दूसरे स्थानपर भटकता रहा। ललितांग देव (हमारी पूर्वमाता) ने यह देखा और मुझे समझानेके लिए वह सामने खड़ा होकर रेतमें-से तेल निकालने लगा। मैंने पूछा—तुम क्या कर रहे हो ? और उससे उसका उद्देश्य जानकर मैंने कहा, "तुम रेतसे तेल नहीं निकाल सकते ?" देवने पूछा—"तुम शवको लेकर क्यों घूम रहे हो ? क्योंकि यह मुर्दा जीवित नहीं हो सकता ?" तब मैंने अनुभव किया कि मेरा भाई मर गया है। मैंने उसका दाह-संस्कार किया। मैंने राज-पाट पुत्रको देकर संन्यास ग्रहण कर लिया। और मरकर अच्युत स्वर्गमें उत्पन्न हुआ। वज्रदन्त फिर ललितांगके पूर्वजन्म बताता है, अन्तमें वह उत्पलखेडमें वज्रजंघ नामसे जन्म लेता है।

XXIV

इस बीच श्रीमतीकी बुद्धिमती धाय चित्रपट लेकर बाहर गयी और कई देशोंका परिभ्रमण करनेके बाद उत्पलखेड आयी। वहाँ उसने मन्दिरमें चित्रपट रखा। वज्रजंघने उसे देखा और वह बेहोश हो गया। अब वह होशमें आया तो उससे पूछा गया कि क्या मामला है ? उसने अपने मित्रोंसे कहा कि चित्रपटमें उसके पिछले जन्मकी घटनाओंका अंकन है जिसमें स्वयंप्रभासे उसके प्रेमका भी चित्रण है। वह प्रेम-वेदनाके दुःखको सहनेमें असमर्थ है। उसने धायसे पूछा कि उसकी पूर्वजन्मकी प्रेयसी कहाँ उत्पन्न हुई है ? वज्रजंघके पिता वज्रभानुको यह समाचार दिया गया। उसने आश्वासन दिया कि वह उसके लिए उक्त कन्याका प्रबन्ध करेगा। वह पुण्डरीकिणी नगरी गया। वज्रदन्तने उसका स्वागत किया और आनेका कारण पूछा। चित्रपटकी घटना सुननेके बाद उसने अपनी कन्या श्रीमती वज्रजंघके लिए दे दी। इस प्रकार दोनों प्रेमी-प्रेमिकाओंका संगम हो गया।

XXV.

विवाहके बाद वज्रजंघ और श्रीमती उत्पलखेड लौट आये। उनके 51 युगल बच्चे उत्पन्न हुए। एक बार शरद् ऋतुमें वज्रभानुने एक बादलको एक क्षणमें लुप्त होते देखा। उसने अनुभव किया कि संसार में प्रत्येक वस्तु क्षणिक है। उसने दीक्षा लेनेका निश्चय किया। वज्रदन्तने भी एक कमल देखा जिसमें एक भ्रमरी मरी हुई थी। वह कमलकी शौकीन थी, वह कमलको नहीं छोड़ सकी हालाँकि सन्ध्या समय वह संकुचित हो रहा था। यह देखकर वह उस आनन्दके प्रति उदास हो गया कि जो जीवनमें मृत्युका कारण होता है। उसका पुत्र अमिततेजने भी धरतीपर शासन नहीं करना चाहा और उसने अपने पिताका अनुकरण किया। तब वज्रदन्तका पोता पुण्डरीक गद्दीपर बैठा। चूँकि वह छोटा था इसलिए उसकी

मौने चाहा कि वज्रजंघ-जैसे मित्र उसकी सहायता करें और इसलिए उसने पत्र भेजा। वह उसके स्थान-पर आया। जब वह जंगलमें पड़ाव डाले हुए था उसे युवक साधुओंका जोड़ा मिला जो उसके ही लड़के थे? उसने उनको अपने पूर्व जन्मोंको बतानेके लिए कहा, (जैसे जयवर्मन, महाबल, ललितांग और वज्र-जंघ)। तब उन्होंने श्रीमतीके चार पूर्वभव बताये—धनश्री, निर्नामिका, स्वयंप्रभा और श्रीमती। उन्होंने उसके पूर्वभवके मन्त्री, पुरोहित, मित्रों और भृत्योंके भी पूर्वभवोंका वर्णन किया। उन्होंने यह भी कहा कि आठवें भवमें वह तीर्थंकर होगा। श्रीमती श्रेयासे राजकुमार होगी। यह सुननेके बाद वह पुण्डरीकिणी नगर गया। वहाँ उसने अपनी बहन अनुन्धरीको और युवराज पुण्डरीकको देखा। राज्यकी उचित प्रशासन-की व्यवस्थाके बाद वह घर लौट आया।

XXVI.

वज्रजंघ और श्रीमती उत्तर कुरुमें अनिन्द और अज्जवा नामसे युगल सन्तानके रूपमें उत्पन्न हुए। वहाँ उन्हें अपने पूर्वभवका स्मरण हो आया, जबकि चारणमुनियोंका जोड़ा वहाँ आया था। उनमें-से एक, और कोई नहीं, महाबलका मन्त्री स्वयंबुद्ध था। इन चारणमुनियोंने भी महाबलके तीन मन्त्रियोंकी परवर्ती भवपरम्परा बतायी। श्रीधर देव अगले भवमें राजा सुभदर्शी और नन्दाके सुविधि नामका राजकुमार हुआ। उसने मनोरमासे विवाह किया जो राजा अभयघोषकी कन्या थी। देव स्वयंप्रभा सुविधिका केशव नामक पुत्र हुआ। सुविधि फिर अच्युत स्वर्गमें इन्द्र उत्पन्न हुआ, और केशव प्रतीन्द्र हुआ उसी स्वर्गमें।

7. विद् धातु (प्राकृत विउ) का अर्थ जानना है, अतः वेदका अर्थ ज्ञान है; अतः वेदोंको जीवों-के प्रति दयाकी शिक्षा देनी चाहिए। और इसलिए जो ग्रन्थ जीवहिंसाका उपदेश देते हैं, उन्हें वेदके बजाय तलवार कहना चाहिए!

XXVII

अच्युतेन्द्र और प्रतीन्द्र दोनों ही क्रमशः राजकुमार वज्रनाभि और वणिक् धनदेवके नामसे उत्पन्न हुए। वज्रनाभि अपने पुत्र वज्रदन्तको राज्य देकर संन्यासी हो गया, धनदेव उसका शिष्य हो गया। कठोर तपश्चरण-द्वारा वज्रनाभिने तीर्थंकर नाम और गोत्रका बन्ध कर लिया, और उचित समयमें सर्वार्थसिद्धिमें अहमेन्द्र उत्पन्न हुआ। उसके बादके जन्ममें वज्रनाभि ऋषभ तीर्थंकर हुए और धनदेव श्रेयांसके रूपमें। इसी प्रकार ऋषभके बहुत-से अनुयायियों, (जिनमें उनके पुत्र भी सम्मिलित थे) के पूर्वजन्मोंका वर्णन किया। तब भरतने पूछा कि अभी भविष्यमें कितने तीर्थंकर, बलभद्र, वासुदेव, प्रतिवासुदेव तथा चक्रवर्ती होंगे। ऋषभने उनकी संख्या बतायी। भरतने ऋषभकी विनय की।

12. 5-8 यह अवतरण बताता है कि मरीचि (भरतका पुत्र) चौबीसवाँ तीर्थंकर होगा। यह सुनकर वह आनन्दके मारे नाच उठा। उसके आनन्द और घमण्डका प्रदर्शन ही लम्बे समय तक संसारमें घूमनेका कारण था। उन्हें कपिलका गुरु होना पड़ा कि जिसने सांख्य शास्त्रकी रचना की।

XXVIII.

भरत तब अयोध्या लौट आये। और स्वप्नोंके लिए पौरोहित्य अनुष्ठान किया। उसने पवित्र जीवन बिताया और जरूरतमन्द तथा गरीब लोगोंको दान दिया। उसने उदार और अच्छे राजाके रूपमें शासन किया। महावीरके शिष्य गौतमने आगे भी वर्णन जारी रखते हुए श्रेणिकसे इस प्रकार कहा, राजा सोमप्रभके चौदह पुत्र थे। उनमें सबसे बड़े का नाम जय था। उसे मुकुट बाँधकर, राजगद्दीपर बैठा दिया गया। एक दिन राजा जय जब नन्दन वनमें गया तो उसने एक मुनिको उपदेश देते और नाग-

नागिनको उसे सुनते हुए देखा। अगले वर्ष भी राजा उसी स्थानपर आया तो उसने पाया कि नाग उसे छोड़कर चला गया और यह कि उसकी पत्नीने एक निम्न जातिके साँप (डवहुड) से मित्रता कर ली। राजाने अपने हाथके कमलके पुष्पसे उन दोनोंको छुआ। राजाने रातमें पत्नीसे इस घटनाका उल्लेख किया। इसी बीच एक देव आया और उसने राजासे कहा वह साँप, और उसकी पत्नी नागन राजा के द्वारा छुई जाने और उसके नौकरोंके द्वारा मारी जानेपर स्वर्गमें देवी हुई। इसलिए देव राजाको स्वर्गीय अलंकार देकर चला गया।

जयका मन्त्री आया और उसने कहा, सुलोचना एक सुन्दर राजकुमारी है जो राजा अकम्पन और रानी सुप्रभा की कन्या है। उसके पिताने कन्याको यौवनमें देखकर सोचा कि इसके लिए सुन्दर युवा वर ढूँढना चाहिए। तदनुसार उसने स्वयंवरका आयोजन किया। जयकुमार भी उसमें उपस्थित हुआ और सुलोचनाने उसका वरण कर लिया। राजा अर्ककीर्ति बहुत क्रुद्ध हुआ क्योंकि उसे नापसन्द कर दिया गया था। उसने जयसे युद्ध करना चाहा। इस अवसरपर सुलोचना जिनके पास गयी और उसने प्रतिज्ञा की कि यदि उसके कारण जय और अर्ककीर्ति, दोनोंमें-से एक भी मरता है तो वह अनशन द्वारा मर जायेगी। युद्धमें, किसी तरह जयने अर्ककीर्तिको हरा दिया और उसे गिरफ्तार कर लिया। इसलिए सुलोचना घर चली आयी। इस बीच जय अर्ककीर्तिके पास गया उसे समझाया कि वह उसके प्रति क्रोधको भूल जाये।

XXIX.

राजा जय घर लौट आया और उसने अपने पिताको नमन किया। लौटते हुए वह गंगानदीके तटपर ठहरा। एक हाथीने सुलोचनापर आक्रमण किया परन्तु वनदेवीने उसकी रक्षा की। सुलोचनाने उस देवीका परिचय पूछा। उसने बताया कि उसे विन्ध्याश्री कहते हैं, वह विन्ध्यकेतु और प्रियंगुश्रीकी कन्या है और वह अपनी वर्तमान स्थितिको इसलिए प्राप्त कर सकी क्योंकि सुलोचनाने उसे पाँच णमोकार मन्त्र सिखाया था। जयने जिस नागनको छुआ था, और उसके बाद उसके नौकरोंने जिसे मार डाला था, वह गंगामें मगर हुई, और शत्रुताके कारण उसने सुलोचनाको मारनेके लिए हाथी भेजा था। एक दिन जय दरबारमें बैठा हुआ था उसने दैवी जोड़ेको देखा। उसे अपने पूर्वजन्मका स्मरण हो आया। वह यह कहते हुए बेहोश हो गया "रतिवेगा, तुम कहाँ हो।" बेहोशी दूर होनेपर, सुलोचनाने कहा कि वह मादा कबूतर है और जय उसका स्वामी है। पूर्वभव में।

शोभापुर नगरमें व्रतपाल नामका राजा था। देवश्री उसकी रानी थी। शक्तिषेण उसका मन्त्री था। उसकी पत्नी अटवीश्री थी। एक दिन एक अनाथ बालक आया। उसने पूछा कि वह बचपनमें क्यों घूम रहा है। लड़केने मन्त्रीसे कहा कि उसकी सौतेली माँने उसे घरसे निकाल दिया है। मन्त्रीने उसे पुत्रके रूपमें गोदमें ले लिया, और उसका नाम सत्यदेव रखा।

11–12. सुलोचना कहती है कि पूर्वभवमें वह रतिसेना नामकी कबूतरी थी जब राजा जय पुरुष कबूतर था रतिवर नामका। लोग कपटके द्वारा ठगे जाते हैं। सुलोचनाने पूर्वभवकी जो कहानी सुनायी, उसकी सौतोंने उसपर विश्वास नहीं किया और कहा कि यह उसकी चाल है जिसके द्वारा वह पतिके प्रेमपर विजय प्राप्त करना चाहती है।

12. जय और सुलोचनाके पूर्वजन्मोंकी कहानी यहाँसे प्रारम्भ होती है।

16. चारण मुनियोंकी एक श्रेणी है। इसके दो प्रकार हैं—जंघाचारण और विद्याचारण। दोनों प्रकारके मुनि आकाशमें विचरण कर सकते हैं। जंघाचारणको उड़नेकी विद्या चार दिनोंके उपवासोंके परिणामस्वरूप प्राप्त होती है। जबकि विद्याचारण अपनी विद्या से तीन दिनके उपवाससे उड़ सकते हैं।

XXX.

सुलोचना पूर्वभवोंकी कहानी जारी रखती है खासकर उस भवकी जब वह प्रभावतीके नामसे उत्पन्न हुई और जय हिरण्यवर्मा। वहाँ उन्होंने साधु-जीवनकी तपस्या की और संसार तथा स्वर्गमें कई जन्मोंको धारण किया। इन जन्मोंमें-से वे एक जन्म माली और उसकी पत्नी बने। वे वहाँ जिनके फूल चुराते थे। एक दिन दोनोंको साँपने काट खाया। वे मर गये। पर उनमें भोगकी अतृप्त कामना बनी रही। अगले जन्ममें वे सुकान्त और रतिवेगाके रूपमें उत्पन्न हुए।

XXXI.

सुकान्त और रतिवेगा को अपने पूर्वभवका स्मरण हो आया। उस भवमें वे एक मुनिसे मिले थे कि जिन्होंने हाल ही में सांसारिक जीवनका परित्याग किया था और कहा था कि पवित्र नियमोंके विषयमें वे अधिक नहीं जानते। फिर भी उन्होंने उन्हें जैनधर्मकी कुछ मुख्य बातें बतायी थीं। सुकान्तने तब मुनिसे पूछा, कि यौवनावस्थामें उन्होंने दीक्षा क्यों ली। इसपर मुनिने अपनी जीवनकथा उसे बतायी। प्रसंगवश उसमें सुकेतु व्यापारी और उसके प्रतिद्वन्द्वी नागदत्तकी कहानी आती है। नागदत्तकी सुदत्ता नामकी पत्नी थी। एक बार सुकेतुकी पत्नी अपने पतिको भोजन ले जा रही थी उसे एक मुनि मिले, उसने उन्हें भोजन दे दिया। उसने नागगृहके पास भोजन दिया जो उसके पतिके शत्रुका घर था। इस दानके परिणामस्वरूप वहाँ पाँच आश्चर्य हुए। विशेष रूपसे स्वर्ण और हीरोंकी वर्षा हुई। नागदत्तने कहा कि यह धन मेरा है क्योंकि यह नागगृहमें बरसा है। तब सुकेतुने नागदत्तसे कहा कि धन वस्तुतः उसकी पत्नीका है क्योंकि यह उसके दानका फल है। नागदत्तने सारा धन इकट्ठा किया और वह राजाके पास ले गया। वह वहाँ नागदत्तके हाथमें राख हो गया, उसके अनुचर डर गये। नागदत्तने तब वह धन सुकेतुको दे दिया। दूसरे दिन नागदत्तको मन्दिरमें एक और रत्न मिला। क्रोधमें उसने उसके टुकड़े करने चाहे, परन्तु रत्नने उलटा उसपर आघात कर दिया। नागदत्तने मन्दिरमें नागदेवताकी पूजा की, और उससे सेनाका वरदान माँगा जिससे वह सुकेतुको पराजित कर सके। नागने कहा कि सुकेतुको मारना असम्भव है। इसके फलस्वरूप सुकेतुने संन्यास ग्रहण कर लिया। मृत्युके बाद वह देवता बना। उसकी पत्नी अणुव्रत पालकर स्त्री बन गयी और मरकर लिंग परिवर्तनके साथ स्वर्गमें देव हुई।

XXXII.

जयने सुलोचनासे उनके पूर्वभवोंकी घटनाओंको पूछा, खासकर उन घटनाओंको, कि जिनका कथन गुणपालने किया था। तब उसने श्रीपाल और उसके साहसिक कार्योंका वर्णन किया। श्रीपाल और वसुपाल राजा गुणपालके पुत्र थे, कुबेरश्री गुणपालकी रानी थी। गुणपालने सांसारिक जीवन छोड़कर संन्यास ले लिया। एक दिन कुबेरश्रीको यह खबर दी गयी कि गुणपाल नामक मुनि उद्यानमें ठहरे हुए हैं। रानी उनके दर्शन करनेके लिए गयी। वटवृक्षके नीचे उद्यानमें एक यक्षका मन्दिर था, जहाँ लोग उत्सवके कार्योंमें व्यस्त थे। वहाँ दो स्त्रियोंका जोड़ा, जिनमें एककी वेशभूषा मनुष्यकी थी, नाच रहा था। राजा वसुपालने आदमी और औरतके नृत्यको पसन्द नहीं किया जब कि उसके भाई श्रीपालने कहा कि वे दोनों स्त्रियाँ हैं। यह भविष्यवाणी की गयी थी कि जो दोनोंमें-से पुरुषकी वेशभूषावाली महिलाको पहचान लेगा वह उसका निश्चित रूपसे पति होगा। श्रीपालने जो बहुतसे साहसिक कार्य किये यह उसका प्रारम्भिक बिन्दु था। वह एक घोड़ेपर बैठा जो आकाशमें गायब हो गया। यह भविष्यवाणी की गयी कि श्रीपाल सात दिनमें सुरक्षित लौट आएगा। वस्तुतः श्रीपाल अश्वके रूपमें एक देवीके द्वारा ले जाया गया था। जब श्रीपालसे देवीने संघर्ष शुरू किया तो उसकी सहायताके लिए जयपाल नामका एक विद्याधर आया। उस देवसे

बचकर श्रीपालने छह विद्याधर कन्याओंसे भेंट की, जिनसे उसने अन्तमें विवाह कर लिया। इसी प्रकार उसने विद्युद्वेगा, विद्याधरी सुखावती और विप्पलासे विवाह कर लिया !

XXXIII.

सुखावती, पहली सन्धिमें जिसका वर्णन है, एक विद्याधर कन्या थी। उसके पास चामत्कारिक शक्तियाँ थीं। पहले उसने अपनेको एक वृद्ध महिलाके रूपमें प्रदर्शित किया। लेकिन श्रीपालने जब यह कहा कि उसके पास ऐसी विद्या है जिससे वह किसी भी बीमारीका उपचार कर सकता है, तब उसने वृद्ध महिला-का रूप छोड़ दिया। वे दोनों सिद्धकूट गये और वहाँ जिनकी वन्दना की। सभी नयी कन्याएँ जो श्रीपालको प्यार करती थीं, वहाँ आयीं। उनके सामने सुखावतीने फिर अपनी विद्याका प्रदर्शन किया। उसने श्रीपालको वृद्ध बना दिया और उससे प्रेम करती रही। इससे उसकी मित्र कन्याएँ उसका उपहास करने लगीं। उसने राजकुमारके गलेके मोड़का उपचार किया और अपनी बहन प्रभावतीका विवाह कर दिया। इसी बीचमें अशनिवेग (विद्युद्वेगाका भाई) वहाँ आया। उसने श्रीपालको पहचान लिया। उसपर आक्रमण किया और विद्युद्वेगाकी सहायतासे वह वहाँसे गायब हो गया।

XXXIV.

सुखावती वापस घर आयी, उसके पिताने श्रीपालसे उसका विवाह करनेकी बात सोची, परन्तु श्रीपालने इसके पूर्व अपने बड़े भाईको देखनेकी इच्छा प्रगट की। इसलिए उसे पुण्डरीकिणी ले जाया गया। रास्तेमें उसने कई साहसिक कार्य किये। उसे जंगलमें एक बढ़िया हाथी मिला। हाथीने पहले श्रीपालपर आक्रमण करना चाहा परन्तु श्रीपालने अन्तमें उसे जीत लिया।

XXXV.

सुखावती श्रीपालको साथ लेकर भीड़के सामनेसे पुण्डरीकिणी नगरकी ओर ले गयी, आकाश-मार्ग से। वह उसे उस क्षेत्रमें ले आयी जहाँसे दुष्ट घोड़ा उसे छोड़ गया था। नागबलने अपनी कन्या शशिलेखाका विवाह श्रीपालसे कर दिया। उससे विवाह करनेके बाद श्रीपालको सुखावती आगे ले गयी। इस बीचमें दो विद्याधर उसे मिले और उन्होंने पत्थरके खम्भेपर आघात करनेके लिए अनुरोध किया यह कहते हुए कि यदि वह तलवारसे खम्भेके दो टुकड़े कर देगा, तो वह चक्रवर्ती होगा। श्रीपालने दो टुकड़े कर दिये। अपने मार्गपर जाते हुए उसे कई राजाओंने अपनी कन्याएँ दीं। समय बीतनेपर उसने वे सब रत्न प्राप्त कर लिये जो एक चक्रवर्तीके पास होना चाहिए। धूम्रवेग नामक एक दुष्ट विद्याधरसे लड़नेके लिए जाते हुए—श्रीपालने पूर्वभवकी अपनी एक माँ (सत्यवती) से भेंट की जो इस समय यक्षिणी हो गयी थी। इस प्रकार कई साहसिक कार्योंको सम्पादित करनेके बाद, श्रीपाल सातवें दिन अपनी राजधानीमें पहुँचा। उसने अपनी माता कुबेरश्री और भाई वसुपालसे भेंट की। श्रीपालने उन्हें बताया कि जो शक्तियाँ उसे प्राप्त हुई हैं, वे सुखावतीके सुचारु कार्य सम्पादनके कारण, और वह उसकी पत्नी है।

XXXVI.

इसपर श्रीपालसे सभी कन्याओंका विवाह कर दिया गया। परन्तु विप्पलाने यह पसन्द नहीं किया कि उसका पति इतनी सारी कन्याओंसे विवाह करे इसलिए वह अपने पिताके घर आ गयी। श्रीपाल, फिर भी, उसके घर गया और उसने वापस चलनेके लिए उसे मना लिया। इसी प्रकार सुखावतीको भी उसने अपने पास रहनेके लिए राजी कर लिया। इसके बाद उसे चक्रवर्तीके सात रत्न प्राप्त हुए। उचित

समयमें उसके यहाँ आयुधशालामें चक्र भी प्रकट हुआ। उसे जो कुछ सम्पत्ति मिली, वह जसवइकी देखरेखमें थी। परन्तु सुखावतीने उसे कंजूस समझा। परन्तु मन्त्रीने कहा कि जसवइ, जिनकी माँ होनेवाली है, उनका नाम गुणपाल है। समय आनेपर जसवइने गुणपालको जन्म दिया। समयकी अवधिमें श्रीपालने सुखावतीके पुत्रको गद्दीपर बैठाया, और अपने पुत्र जिन गुणपालके आश्रयमें तप किया।

सुलोचनाने यह कथा जयको सुनायी। उसने तब पूर्वभवोंके जीवनका अच्छी तरह अनुभव किया, और उसे समस्त विद्याएँ प्राप्त हो गयीं कि जो उसे तब प्राप्त थीं। प्रियगुप्तीने यह सोचा कि सुलोचनाने जो कहानी कही है वह सच नहीं है। उसे विश्वास दिलानेके लिए, जय राजा और सुलोचना ऋषभ जिनकी वन्दना-भक्ति करनेके लिए गये। उनके रास्तेमें इन्द्रने जयको भ्रमित करनेका प्रलोभन दिया, परन्तु वह उसमें खरा उतरा। इन्द्रने प्रसन्न होकर उसे वरदान दिया। जय कैलास पर्वतपर आया। उसने चौबीसों जिनोंकी वन्दना की जिनके मन्दिरोंका निर्माण भरतने कराया था।

XXXVII

राजा जयने सुलोचनाके साथ होनेवाले जिनोंकी प्रतिमाओंको नमस्कार किया, और तब ऋषभ जिनके समवशरणमें गया। ऋषभ देवों, साधु-साध्वियों, मनुष्यों और मनुष्यनियोंके बीचमें बैठे हुए थे। उसने वहाँ अपने पिता और चाचाको देखा कि जो साधु बनकर वहाँ बैठे हुए थे। सुलोचनाने अपने पिता अकम्पनके दर्शन किये, जो और उनके साथ दूसरे कई सम्बन्धी मुनि हो गये थे। जयने ऋषभकी प्रशंसामें एक गीत कहा जिसके बाद उसने भरतसे मुनि बननेके लिए अनुमति माँगी। भरतने पहले तो इसे स्वीकार नहीं किया, परन्तु इन्द्रके हस्तक्षेप करनेपर उसने अनुमति दे दी। सुलोचनाने भी साध्वी बननेकी अनुमति दे दी। उसे मुनिकी दीक्षा दी गयी। उसने पवित्र ग्रन्थोंका अध्ययन किया। उसके बाद सुलोचना भी साध्वी बन गयी।

अब, ऋषभ जिनने भरतके लिए जैनधर्मके सभी सिद्धान्तोंकी व्याख्या की। भरत घर लौट आया और उसने उसी रात एक सपना देखा जिसमें मेरु कम्पायमान हो रहा था। अगले दिन सवेरे उसने पुरोहितसे स्वप्नका आशय पूछा। पुरोहित ने कहा—ऋषभ मोक्ष प्राप्त करनेवाले हैं। भरत शीघ्र कैलाश पर्वतपर गया। इन्द्र भी वहाँ निर्वाण कल्याणका उत्सव मनानेके लिए आया। इन्द्र और दूसरे देवोंने अग्निवृक्षोंकी चिनगारियाँ ले ली। अग्निकुमार देवोंने सुलगानेके लिए आग जलायी। उनका शरीर जलकर राख हो गया। देवोंने उसकी वन्दना की। माघ माहके शुक्ल चतुर्दशीको उनका निर्वाण हो गया। भरत अयोध्या वापस आ गये। एक दिन अपने सिरके एक बालको सफेद देखकर भरतने अपने पुत्रको राज्यभार सौंप कर संसारका परित्याग कर दिया। उसे केवलज्ञान प्राप्त हुआ और उसने मोक्ष प्राप्त कर लिया।



शुद्धि-पत्र

सन्दर्भ		अशुद्ध रूप	शुद्ध रूप
पृष्ठ	पंक्ति		
९	२	श्रेष्ठ किनारे	नदियोंके दूरवर्ती किनारे
१३	५	चौबीसवां वह तुमने···	वह तुमने अन्तिम चौबीसवें तीर्थंकरको
१३	१७	शुभ लम्पट	सुख लम्पट
२३	२२	गुड और जलके पिंडमें	गुण जल और मिट्टीमें
५३	४	एक मारमें	एक माहमें
७७	१४	कृष्णाइन	कृष्णाइन (कृष्णाजिन—काले मृगका चमड़ा)
१०३	४	पत्थ को	पंकको
१०५	११	मुगन्धर	गगन्धर
१११	४	निन्दितोको	निन्दितोंकी निन्दा करनेवाले
१२१	१३	तब धनुपसे	तब धनुपसे शका उत्पन्न करनेवाला
१२१	१८	दुर्लभ होती है	दुर्लभ होता है
१४७	१०	अपने घर ले आया	अपने घर उठवा ले गया
१६५	१८	नित्य निणोदमें	नित्य निगोदमें
१६९	११	लक्ष्मीरूपी बधूकी	लक्ष्मीरूपी बधूको
१९३	१४	तलवा	तलवार
२८५	१५	एक बल सेना	एक प्रबल सेना देखी
२८५	१८	सहित्त	सहित
२९१	१७	राजा करिवर	राजाका करिवर
२९३	२०	कि है नीरसत्व	कि यह नीरस है
३०७	३	उसका पति	उसका (वसुन्धराका) पति
३०७	५	उस प्रतिवनके नामधरमे	उस शत्रुवणिक्के नागधरमें
३३१	११	हे वत्सउ	हे वत्स, तुम नागसुरको छोड दो
३८३	६	दयामे सेवित भिखारी नही	कौन शिकारी दयासे सेवित हो सकता है

●